सहायफ़े-अंबिया

असल इबरानी और अरामी मतन से नया उर्दू तरजुमा

उर्दू जियो वरझ़न

The Prophets in Modern Urdu
Translated from the Original Hebrew and Aramaic
Urdu Geo Version (Hindi script)

© 2021 Urdu Geo Version
www.urdugeoversion.com

This work is licensed under a Creative Commons Attribution - NonCommercial - NoDerivatives 4.0 International Public License.
https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/legalcode

For permissions & requests regarding printing & further formats contact info@urdugeoversion.com.

सहायफ़े-अंबिया

यसायाह	1
यरमियाह	71
नोहा	148
हिज़क़ियेल	156
दानियाल	224
होसेअ	244
योएल	255
आमूस	259
अबदियाह	268
यूनुस	270
मीकाह	273
नाहूम	280
हबक़्क़ूक़	283
सफ़नियाह	287
हज्जी	291
ज़करियाह	294
मलाकी	306

हरफ़े-आग़ाज़

अज़ीज़ क़ारी! आपके हाथ में किताबे-मुक़द्दस का नया उर्दू तरजुमा है। यह इलाही किताब इनसान के लिए अल्लाह तआला का कलाम है। इसमें इनसान के साथ अल्लाह की मुहब्बत और उसके लिए उस की मरज़ी और मनशा का इज़हार है।

किताबे-मुक़द्दस पुराने और नए अहदनामे का मजमुआ है। पुराना अहदनामा तौरेत, तारीख़ी सहायफ़, हिकमत और ज़बूर के सहायफ़, और अंबिया के सहायफ़ पर मुश्तमिल है। नया अहदनामा इंजीले-मुक़द्दस का पाक कलाम है।

पुराने अहदनामे की असल ज़बान इबरानी और अरामी और नए अहदनामे की यूनानी है। ज़ेरे-नज़र मतन इन ज़बानों का बराहे-रास्त तरजुमा है। मुतरजिम ने हर मुमकिन कोशिश की है कि असल ज़बानों का सहीह सहीह मफ़हूम अदा करे।

पाक कलाम के तमाम मुतरजिमीन को दो सवालों का सामना है : पहला यह कि असल मतन का सहीह सहीह तरजुमा किया जाए। दूसरा यह कि जिस ज़बान में तरजुमा करना मक़सूद हो उस की ख़ूबसूरती और चाशनी भी बरक़रार रहे और पाक मतन के साथ वफ़ादारी भी मुतअस्सिर न हो। चुनाँचे हर मुतरजिम को फ़ैसला करना होता है कि कहाँतक वुह लफ़्ज़ बलफ़्ज़ तरजुमा करे और कहाँतक उर्दू ज़बान की सेहत, ख़ूबसूरती और चाशनी को मद्दे-नज़र रखते हुए क़दरे आज़ादाना तरजुमा करे। मुख़्तलिफ़ तरजुमों में जो बाज़ औक़ात थोड़ा-बहत फ़रक़ नज़र आता है उसका यही सबब है कि एक मुतरजिम असल अलफ़ाज़ का ज़्यादा पाबंद रहा है जबकि दूसरे ने मफ़हूम को अदा करने में उर्दू ज़बान की रिआयत करके क़दरे आज़ाद तरीक़े से मतलब को अदा करने की कोशिश की है। इस तरजुमे में जहाँ तक हो सका असल ज़बान के क़रीब रहने की कोशिश की गई है। याद रहे कि सुर्ख़ियाँ और उनवानात मतन का हिस्सा नहीं हैं। उनको महज़ क़ारी की सहूलत की ख़ातिर दिया गया है।

चूँकि असल ज़बानों में अंबिया के लिए इज़्ज़त के वुह अलक़ाब इस्तेमाल नहीं किए गए जिनका आज-कल रिवाज है, इसलिए इलहामी मतन के एहतराम को मलहूज़े-ख़ातिर रखते हुए तरजुमे में अलक़ाब का इज़ाफ़ा करने से गुरेज़ किया गया है।

किताबे-मुक़द्दस में मज़कूर जवाहरात का तरजुमा जदीद साइंसी तहक़ीक़ात के मुताबिक़ किया गया है।

चूँकि वक़्त के साथ साथ नाप-तोल की मिक़दारें क़दरे बदल गईं इसलिए तरजुमे में उनकी अदायगी में ख़ास मुश्किल पेश आई।

जहाँ रूह का लफ़्ज़ सीग़ाए-मुज़क्कर में अदा किया गया है वहाँउससे मुराद रूहुल-क़ुद्स यानी ख़ुदा का रूह है। जब वुह और मानों में मुस्तामल है तब मामूल के मुताबिक़ सीग़ाए-मुअन्नस इस्तेमाल हुआ है।

इंजीले-मुक़द्दस में बपतिस्मा देने का लुग़वी मतलब ग़ोता देना है। जिस शख़्स को बपतिस्मा दिया जाता है उसे पानी में ग़ोता दिया जाता है।

बारी तआला के फ़ज़ल से इंजीले-मुक़द्दस के कई उर्दू तरजुमे दस्तयाब हैं। इन सबका मक़सद यही है कि असल ज़बान का मफ़हूम अदा किया जाए। इनका आपस में मुक़ाबला नहीं है बल्कि मुख़्तलिफ़ तरजुमों का एक दूसरे के साथ मुवाज़ना करने से असली ज़बान के मफ़हूम की गहराई और वुसअत सामने आती है और यों मुख़्तलिफ़ तरजुमे मिलकर कलामे-मुक़द्दस की पूरी तफ़्हीम में मुअविन साबित होते हैं।

अल्लाह करे कि यह तरजुमा भी उसके ज़िंदा कलाम का मतलब और मक़सद और उस की वुसअत और गहराई को ज़्यादा सफ़ाई से समझने में मदद का बाइस बने।

नाशिरीन

यसायाह

1 ज़ैल में वह रोयाएँ दर्ज हैं जो यसा-
याह बिन आमूस ने यहूदाह और यरूशलम
के बारे में देखीं और जो उन सालों में मुंक़शिफ़ हुईं
जब उज़्ज़ियाह, यूताम, आख़ज़ और हिज़क़ियाह
यहूदाह के बादशाह थे।

इसराईली अपने आक़ा को जानने से इनकार करते हैं

2ऐ आसमान, मेरी बात सुन! ऐ ज़मीन, मेरे
अलफ़ाज़ पर कान धर! क्योंकि रब ने फ़रमाया
है,
“जिन बच्चों की परवरिश मैंने की है और जो मेरे
ज़ेरे-निगरानी परवान चढ़े हैं, उन्होंने मुझसे रिश्ता
तोड़ लिया है। 3बैल अपने मालिक को जानता
और गधा अपने आक़ा की चरनी को पहचानता
है, लेकिन इसराईल इतना नहीं जानता, मेरी क़ौम
समझ से ख़ाली है।”
4ऐ गुनाहगार क़ौम, तुझ पर अफ़सोस! ऐ
संगीन क़ुसूर में फँसी हुई उम्मत, तुझ पर
अफ़सोस! शरीर नसल, बदचलन बच्चे! उन्होंने
रब को तर्क कर दिया है। हाँ, उन्होंने इसराईल के
क़ुद्दूस को हक़ीर जानकर रद्द किया, अपना मुँह
उससे फेर लिया है। 5अब तुम्हें मज़ीद कहाँ पीटा
जाए? तुम्हारी ज़िद तो मज़ीद बढ़ती जा रही है गो
पूरा सर ज़ख़्मी और पूरा दिल बीमार है। 6चाँद से
लेकर तल्वे तक पूरा जिस्म मजरूह है, हर जगह
चोटें, घाव और ताज़ा ताज़ा ज़रबें लगी हैं। और न
उन्हें साफ़ किया गया, न उनकी मरहम-पट्टी की
गई है।
7तुम्हारा मुल्क वीरानो-सुनसान हो गया है,
तुम्हारे शहर भस्म हो गए हैं। तुम्हारे देखते देखते
परदेसी तुम्हारे खेतों को लूट रहे हैं, उन्हें यों उजाड़
रहे हैं जिस तरह परदेसी ही कर सकते हैं। 8सिर्फ़
यरूशलम ही बाक़ी रह गया है, सिय्यून बेटी अंगूर
के बाग़ में झोंपड़ी की तरह अकेली रह गई है।
अब दुश्मन से घिरा हुआ यह शहर खीरे के खेत में
लगे छप्पर की मानिंद है। 9अगर रब्बुल-अफ़वाज
हममें से चंद एक को ज़िंदा न छोड़ता तो हम
सदूम की तरह मिट जाते, हमारा अमूरा की तरह
सत्यानास हो जाता।
10ऐ सदूम के सरदारो, रब का फ़रमान सुन
लो! ऐ अमूरा के लोगो, हमारे ख़ुदा की हिदायत
पर ध्यान दो! 11रब फ़रमाता है, “अगर तुम
बेशुमार क़ुरबानियाँ पेश करो तो मुझे क्या? मैं
तो भस्म होनेवाले मेंढों और मोटे-ताज़े बछड़ों की
चरबी से उकता गया हूँ। बैलों, लेलों और बकरों
का जो ख़ून मुझे पेश किया जाता है वह मुझे पसंद
नहीं। 12किसने तुमसे तक़ाज़ा किया कि मेरे हुज़ूर
आते वक़्त मेरी बारगाहों को पाँवों तले रौंदो?
13रुक जाओ! अपनी बेमानी क़ुरबानियाँ मत
पेश करो! तुम्हारे बख़ूर से मुझे घिन आती है। नए
चाँद की ईद और सबत का दिन मत मनाओ, लोगों
को इबादत के लिए जमा न करो! मैं तुम्हारे बेदीन
इजतिमा बरदाश्त ही नहीं कर सकता। 14जब तुम

नए चाँद की ईद और बाक़ी तक़रीबात मनाते हो
तो मेरे दिल में नफ़रत पैदा होती है। यह मेरे लिए
भारी बोझ बन गई हैं जिनसे मैं तंग आ गया हूँ।
15बेशक अपने हाथों को दुआ के लिए उठाते
जाओ, मैं ध्यान नहीं दूँगा। गो तुम बहुत ज़्यादा
नमाज़ भी पढ़ो, मैं तुम्हारी नहीं सुनूँगा, क्योंकि
तुम्हारे हाथ ख़ूनआलूदा हैं। 16पहले नहाकर अपने
आपको पाक-साफ़ करो। अपनी शरीर हरकतों से
बाज़ आओ ताकि वह मुझे नज़र न आएँ। अपनी
ग़लत राहों को छोड़कर 17नेक काम करना सीख
लो। इनसाफ़ के तालिब रहो, मज़लूमों का सहारा
बनो, यतीमों का इनसाफ़ करो और बेवाओं के
हक़ में लड़ो!"

अल्लाह अपनी क़ौम की अदालत करता है

18रब फ़रमाता है, "आओ हम अदालत में
जाकर एक दूसरे से मुक़दमा लड़ें। अगर तुम्हारे
गुनाह लहू-रंग हो जाएँ तो क्या वह बर्फ़ जैसे
उजले हो जाएँगे? अगर वह क़िरमिज़ी जैसे लाल
हो जाएँ तो क्या वह ऊन जैसे सफ़ेद हो जाएँगे?
19अगर तुम सुनने के लिए तैयार हो तो मुल्क की
बेहतरीन पैदावार से लुत्फ़अंदोज़ होगे। 20लेकिन
अगर इनकार करके सरकश हो जाओ तो तलवार
की ज़द में आकर मर जाओगे। इस बात का
यक़ीन करो, क्योंकि रब ने यह कुछ फ़रमाया है।"
21यह कैसे हो गया है कि जो शहर पहले इतना
वफ़ादार था वह अब कसबी बन गया है? पहले
यरूशलम इनसाफ़ से मामूर था, और रास्ती उसमें
सुकूनत करती थी। लेकिन अब हर तरफ़ क़ातिल
ही क़ातिल हैं! 22ऐ यरूशलम, तेरी ख़ालिस चाँदी
ख़ाम चाँदी में बदल गई है, तेरी बेहतरीन मै में पानी
मिलाया गया है। 23तेरे बुज़ुर्ग हटधर्म और चोरों
के यार हैं। यह रिश्वतख़ोर सब लोगों के पीछे पड़े
रहते हैं ताकि चाय-पानी मिल जाए। न वह परवा
करते हैं कि यतीमों को इनसाफ़ मिले, न बेवाओं
की फ़रियाद उन तक पहुँचती है।
24इसलिए क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़-
वाज जो इसराईल का ज़बरदस्त सूरमा है
फ़रमाता है, "आओ, मैं अपने मुख़ालिफ़ों और
दुश्मनों से इंतक़ाम लेकर सुकून पाऊँ। 25मैं
तेरे ख़िलाफ़ हाथ उठाऊँगा और ख़ाम चाँदी की
तरह तुझे पोटाश के साथ पिघलाकर तमाम
मैल से पाक-साफ़ कर दूँगा। 26मैं तुझे दुबारा
क़दीम ज़माने के-से क़ाज़ी और इब्तिदा के-से
मुशीर अता करूँगा। फिर यरूशलम दुबारा दारुल-
इनसाफ़ और वफ़ादार शहर कहलाएगा।"
27अल्लाह सिय्यून की अदालत करके उसका
फ़िद्या देगा, जो उसमें तौबा करेंगे उनका वह
इनसाफ़ करके उन्हें छुड़ाएगा। 28लेकिन बाग़ी
और गुनाहगार सबके सब पाश पाश हो जाएंगे,
रब को तर्क करनेवाले हलाक हो जाएंगे।
29बलूत के जिन दरख़्तों की पूजा से तुम
लुत्फ़अंदोज़ होते हो उनके बाइस तुम शर्मसार
होगे, और जिन बाग़ों को तुमने अपनी बुतपरस्ती
के लिए चुन लिया है उनके बाइस तुम्हें शर्म
आएगी। 30तुम उस बलूत के दरख़्त की मानिंद
होगे जिसके पत्ते मुरझा गए हों, तुम्हारी हालत
उस बाग़ की-सी होगी जिसमें पानी नायाब हो।
31ज़बरदस्त आदमी फूस और उस की ग़लत
हरकतें चिंगारी जैसी होंगी। दोनों मिलकर यों
भड़क उठेंगे कि कोई भी बुझा नहीं सकेगा।

यरूशलम अबदी अमनो-अमान का मरकज़ होगा

2 यसायाह बिन आमूस ने यहूदाह और
यरूशलम के बारे में ज़ैल की रोया देखी,
2आख़िरी ऐयाम में रब के घर का पहाड़
मज़बूती से क़ायम होगा। सबसे बड़ा यह पहाड़
दीगर तमाम बुलंदियों से कहीं ज़्यादा सरफ़राज़
होगा। तब तमाम क़ौमें जौक़-दर-जौक़ उसके
पास पहुँचेंगी, 3और बेशुमार उम्मतें आकर
कहेंगी, "आओ, हम रब के पहाड़ पर चढ़कर
याक़ूब के ख़ुदा के घर के पास जाएँ ताकि वह
हमें अपनी मरज़ी की तालीम दे और हम उस की
राहों पर चलें।"

क्योंकि सिय्यून पहाड़ से रब की हिदायत
निकलेगी, और यरूशलम से उसका कलाम
सादिर होगा। 4रब बैनुल-अक़वामी झगड़ों को
निपटाएगा और बेशुमार क़ौमों का इनसाफ़
करेगा। तब वह अपनी तलवारों को कूटकर फाले
बनाएँगी और अपने नेज़ों को काँट-छाँट के औज़ार
में तबदील करेंगी। अब से न एक क़ौम दूसरी पर
हमला करेगी, न लोग जंग करने की तरबियत
हासिल करेंगे।

5ऐ याक़ूब के घराने, आओ हम रब के नूर में
चलें!

अल्लाह की हैबतनाक अदालत

6ऐ अल्लाह, तूने अपनी क़ौम, याक़ूब के
घराने को तर्क कर दिया है। और क्या अजब!
क्योंकि वह मशरिक़ी जादूगरी से भर गए हैं।
फ़िलिस्तियों की तरह हमारे लोग भी क़िस्मत का
हाल पूछते हैं, वह परदेसियों के साथ बग़लगीर
रहते हैं। 7इसराईल सोने-चाँदी से भर गया है,
उसके ख़ज़ानों की हद ही नहीं रही। हर तरफ़ घोड़े
ही घोड़े नज़र आते हैं, और उनके रथ गिने नहीं
जा सकते। 8लेकिन साथ साथ उनका मुल्क बुतों
से भी भर गया है। जो चीज़ें उनके हाथों ने बनाईं
उनके सामने वह झुक जाते हैं, जो कुछ उनकी
उँगलियों ने तश्कील दिया उसे वह सिजदा करते
हैं। 9चुनाँचे अब उन्हें ख़ुद झुकाया जाएगा, उन्हें
पस्त किया जाएगा। ऐ रब, उन्हें मुआफ़ न कर!

10चट्टानों में घुस जाओ! ख़ाक में छुप जाओ!
क्योंकि रब का दहशतअंगेज़ और शानदार जलाल
आने को है। 11तब इनसान की मग़रूर आँखों को
नीचा किया जाएगा, मर्दों का तकब्बुर ख़ाक में
मिलाया जाएगा। उस दिन सिर्फ़ रब ही सरफ़राज़
होगा। 12क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज ने एक ख़ास
दिन ठहराया है जिसमें सब कुछ जो मग़रूर, बुलंद
या सरफ़राज़ हो ज़ेर किया जाएगा। 13लुबनान
में देवदार के तमाम बुलंदो-बाला दरख़्त, बसन
के कुल बलूत, 14तमाम आली पहाड़ और
ऊँची पहाड़ियाँ, 15हर अज़ीम बुर्ज और क़िलाबंद
दीवार, 16समुंदर का हर अज़ीम तिजारती और
शानदार जहाज़ ज़ेर हो जाएगा। 17चुनाँचे इनसान
का ग़ुरूर ख़ाक में मिलाया जाएगा और मर्दों का
तकब्बुर नीचा कर दिया जाएगा। उस दिन सिर्फ़
रब ही सरफ़राज़ होगा, 18और बुत सबके सब
फ़ना हो जाएंगे।

19जब रब ज़मीन को दहशतज़दा करने के लिए
उठ खड़ा होगा तो लोग मिट्टी के गढ़ों में खिसक
जाएंगे। रब की महीब और शानदार तजल्ली को
देखकर वह चट्टानों के ग़ारों में छुप जाएंगे। 20उस
दिन इनसान सोने-चाँदी के उन बुतों को फेंक देगा
जिन्हें उसने सिजदा करने के लिए बना लिया था।
उन्हें चूहों और चमगादड़ों के आगे फेंककर 21वह
चट्टानों के शिगाफ़ों और दराड़ों में घुस जाएंगे
ताकि रब की महीब और शानदार तजल्ली से
बच जाएँ जब वह ज़मीन को दहशतज़दा करने
के लिए उठ खड़ा होगा। 22चुनाँचे इनसान पर
एतमाद करने से बाज़ आओ जिसकी ज़िंदगी दम-
भर की है। उस की क़दर ही क्या है?

यहूदाह की तबाही

3 क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज य-
रूशलम और यहूदाह से सब कुछ
छीनने को है जिस पर लोग इनहिसार करते
हैं। रोटी का हर लुक़मा और पानी का हर
क़तरा, 2सूरमे और फ़ौजी, क़ाज़ी और नबी,
क़िस्मत का हाल बतानेवाले और बुज़ुर्ग, 3फ़ौजी
अफ़सर और असरो-रसूख़वाले, मुशीर, जादूगर
और मंत्र फूँकनेवाले, सबके सब छीन लिए
जाएंगे। 4मैं लड़के उन पर मुक़र्रर करूँगा, और
मुतलव्विनमिज़ाज ज़ालिम उन पर हुकूमत करेंगे।
5अवाम एक दूसरे पर ज़ुल्म करेंगे, और हर एक
अपने पड़ोसी को दबाएगा। नौजवान बुज़ुर्गों पर
और कमीने, इज़्ज़तदारों पर हमला करेंगे।

6तब कोई अपने बाप के घर में अपने भाई को
पकड़कर उससे कहेगा, “तेरे पास अब तक चादर
है, इसलिए आ, हमारा सरबराह बन जा! खंडरात
के इस ढेर को सँभालने की ज़िम्मेदारी उठा ले!”

7लेकिन वह चीख़कर इनकार करेगा, “नहीं, मैं
तुम्हारा मुआलजा कर ही नहीं सकता! मेरे घर में
न रोटी है, न चादर। मुझे अवाम का सरबराह मत
बनाना!”

8यरूशलम डगमगा रहा है, यहूदाह धड़ाम से
गिर गया है। और वजह यह है कि वह अपनी
बातों और हरकतों से रब की मुख़ालफ़त करते
हैं। उसके जलाली हुज़ूर ही में वह सरकशी
का इज़हार करते हैं। 9उनकी जानिबदारी उनके
ख़िलाफ़ गवाही देती है। और वह सदूम के बाशिंदों
की तरह अलानिया अपने गुनाहों पर फ़ख़र करते
हैं, वह उन्हें छुपाने की कोशिश ही नहीं करते। उन
पर अफ़सोस! वह तो अपने आपको मुसीबत में
डाल रहे हैं।

10रास्तबाज़ों को मुबारकबाद दो, क्योंकि वह
अपने आमाल के अच्छे फल से लुत्फ़अंदोज़ होंगे।
11लेकिन बेदीनों पर अफ़सोस! उनका अंजाम
बुरा होगा, क्योंकि उन्हें ग़लत काम की मुनासिब
सज़ा मिलेगी।

12हाय, मेरी क़ौम! मुतलव्विनमिज़ाज तुझ पर
ज़ुल्म करते और औरतें तुझ पर हुकूमत करती हैं।
ऐ मेरी क़ौम, तेरे राहनुमा तुझे गुमराह कर रहे
हैं, वह तुझे उलझाकर सहीह राह से भटका रहे
हैं।

रब अपनी क़ौम की अदालत करता है

13रब अदालत में मुक़दमा लड़ने के लिए खड़ा
हुआ है, वह क़ौमों की अदालत करने के लिए उठा
है। 14रब अपनी क़ौम के बुज़ुर्गों और रईसों का
फ़ैसला करने के लिए सामने आकर फ़रमाता है,
“तुम ही अंगूर के बाग़ में चरते हुए सब कुछ खा
गए हो, तुम्हारे घर ज़रूरतमंदों के लूटे हुए माल
से भरे पड़े हैं। 15यह तुमने कैसी गुस्ताख़ी कर
दिखाई? यह मेरी ही क़ौम है जिसे तुम कुचल
रहे हो। तुम मुसीबतज़दों के चेहरों को चक्की में
पीस रहे हो।” क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज
यों फ़रमाता है।

यरूशलम की ख़वातीन की अदालत

16रब ने फ़रमाया, “सिय्यून की बेटियाँ कितनी
मग़रूर हैं। जब आँख मार मारकर चलती हैं तो
अपनी गरदनों को कितनी शोख़ी से इधर-उधर
घुमाती हैं। और जब मटक मटककर क़दम उठाती
हैं तो पाँवों पर बँधे हुए घुंघरू बोलते हैं टन टन,
टन टन।”

17जवाब में रब उनके सरों पर फोड़े पैदा करके
उनके माथों को गंजा होने देगा। 18उस दिन रब
उनका तमाम सिंगार उतार देगा : उनके घुंघरू,
सूरज और चाँद के ज़ेवरात, 19आवेज़े, कड़े,
दोपट्टे, 20सजीली टोपियाँ, पायल, ख़ुशबू की
बोतलें, तावीज़, 21अंगूठियाँ, नथ, 22शानदार
कपड़े, चादरें, बटवे, 23आईने, नफ़ीस लिबास,
सरबंद और शाल। 24ख़ुशबू की बजाए बदबू
होगी, कमरबंद के बजाए रस्सी, सुलझे हुए बालों
के बजाए गंजापन, शानदार लिबास के बजाए
टाट, ख़ूबसूरती की बजाए शरमिंदगी।

25हाय, यरूशलम! तेरे मर्द तलवार की ज़द
में आकर मरेंगे, तेरे सूरमे लड़ते लड़ते शहीद
हो जाएंगे। 26शहर के दरवाज़े आहें भर भरकर
मातम करेंगे, सिय्यून बेटी तनहा रहकर ख़ाक में
बैठ जाएगी।

4 तब सात औरतें एक ही मर्द से लिपट-
कर कहेंगी, “हमसे शादी करें! बेशक हम
ख़ुद ही रोज़मर्रा की ज़रूरियात पूरी करेंगी, ख़ाह
खाना हो या कपड़ा। लेकिन हम आपके नाम से
कहलाएँ ताकि हमारी शरमिंदगी दूर हो जाए।”

यरूशलम की बहाली

2उस दिन जो कुछ रब फूटने देगा वह शानदार
और जलाली होगा, मुल्क की पैदावार बचे हुए
इसराईलियों के लिए फ़ख़र और आबो-ताब का
बाइस होगी। 3तब जो भी सिय्यून में बाक़ी रह
गए होंगे वह मुक़द्दस कहलाएँगे। यरूशलम के
जिन बाशिंदों के नाम ज़िंदों की फ़हरिस्त में दर्ज
किए गए हैं वह बचकर मुक़द्दस कहलाएँगे। 4रब
सिय्यून की फ़ुज़्ला से लतपत बेटियों को धोकर

पाक-साफ़ करेगा, वह अदालत और तबाही की
रूह से यरूशलम की ख़ूनरेज़ी के धब्बे दूर कर
देगा। 5फिर रब होने देगा कि दिन को बादल
सिय्यून के पूरे पहाड़ और उस पर जमा होनेवालों
पर साया डाले जबकि रात को धुआँ और दहकती
आग की चमक-दमक उस पर छाई रहे। यों उस
पूरे शानदार इलाक़े पर सायबान होगा 6जो उसे
झुलसती धूप से महफ़ूज़ रखेगा और तूफ़ान और
बारिश से पनाह देगा।

बेफल अंगूर का बाग़

5 आओ, मैं अपने महबूब के लिए गीत गाऊँ,
एक गीत जो उसके अंगूर के बाग़ के बारे
में है।

मेरे प्यारे का बाग़ था। अंगूर का यह बाग़
ज़रख़ेज़ पहाड़ी पर था। 2उसने गोडी करते करते
उसमें से तमाम पत्थर निकाल दिए, फिर बेहतरीन
अंगूर की क़लमें लगाईं। बीच में उसने मीनार
खड़ा किया ताकि उस की सहीह चौकीदारी कर
सके। साथ साथ उसने अंगूर का रस निकालने के
लिए पत्थर में हौज़ तराश लिया। फिर वह पहली
फ़सल का इंतज़ार करने लगा। बड़ी उम्मीद थी
कि अच्छे मीठे अंगूर मिलेंगे। लेकिन अफ़सोस!
जब फ़सल पक गई तो छोटे और खट्टे अंगूर ही
निकले थे।

3“ऐ यरूशलम और यहूदाह के बाशिंदो, अब
ख़ुद फ़ैसला करो कि मैं उस बाग़ के साथ क्या
करूँ। 4क्या मैंने बाग़ के लिए हर मुमकिन कोशिश
नहीं की थी? क्या मुनासिब नहीं था कि मैं अच्छी
फ़सल की उम्मीद रखूँ? क्या वजह है कि सिर्फ़
छोटे और खट्टे अंगूर निकले?

5पता है कि मैं अपने बाग़ के साथ क्या करूँगा?
मैं उस की काँटेदार बाड़ को ख़त्म करूँगा और
उस की चारदीवारी गिरा दूँगा। उसमें जानवर घुस
आएँगे और चरकर सब कुछ तबाह करेंगे, सब
कुछ पाँवों तले रौंद डालेंगे!

6मैं उस की ज़मीन बंजर बना दूँगा। न उस की
बेलों की काँट-छाँट होगी, न गोडी की जाएगी।
वहाँ काँटेदार और ख़ुदरौ पौदे उगेंगे। न सिर्फ़ यह
बल्कि मैं बादलों को भी उस पर बरसने से रोक
दूँगा।”

7सुनो, इसराईली क़ौम अंगूर का बाग़ है
जिसका मालिक रब्बुल-अफ़वाज है। यहूदाह
के लोग उसके लगाए हुए पौदे हैं जिनसे वह
लुत्फ़अंदोज़ होना चाहता है। वह उम्मीद रखता
था कि इनसाफ़ की फ़सल पैदा होगी, लेकिन
अफ़सोस! उन्होंने ग़ैरक़ानूनी हरकतें कीं। रास्ती
की तवक़्क़ो थी, लेकिन मज़लूमों की चीख़ें ही
सुनाई दीं।

लोगों की ग़ैरक़ानूनी हरकतें

8तुम पर अफ़सोस जो यके बाद दीगरे घरों
और खेतों को अपनाते जा रहे हो। आख़िरकार
दीगर तमाम लोगों को निकलना पड़ेगा और तुम
मुल्क में अकेले ही रहोगे। 9रब्बुल-अफ़वाज ने
मेरी मौजूदगी में ही क़सम खाई है, “यक़ीनन
यह मुतअद्दिद मकान वीरानो-सुनसान हो जाएंगे,
इन बड़े और आलीशान घरों में कोई नहीं बसेगा।
10दस एकड़[a] ज़मीन के अंगूरों से मै के सिर्फ़
22 लिटर बनेंगे, और बीज के 160 किलोग्राम
से ग़ल्ला के सिर्फ़ 16 किलोग्राम पैदा होंगे।”

11तुम पर अफ़सोस जो सुबह-सवेरे उठ-
कर शराब के पीछे पड़ जाते और रात-भर मै पी
पीकर मस्त हो जाते हो। 12तुम्हारी ज़ियाफ़तों
में कितनी रौनक़ होती है! तुम्हारे मेहमान मै
पी पीकर सरोद, सितार, दफ़ और बाँसरी की
सुरीली आवाज़ों से अपना दिल बहलाते हैं।
लेकिन अफ़सोस, तुम्हें ख़याल तक नहीं आता
कि रब क्या कर रहा है। जो कुछ रब के हाथों
हो रहा है उसका तुम लिहाज़ ही नहीं करते।
13इसी लिए मेरी क़ौम जिलावतन हो जाएगी,
क्योंकि वह समझ से ख़ाली है। उसके बड़े

[a]लफ़्ज़ी मतलब : जितनी ज़मीन पर बैलों की दस जोड़ियाँ एक दिन में हल चला सकती हैं।

अफ़सर भूके मरेंगे, और अवाम प्यास के मारे
सूख जाएंगे। 14पाताल ने अपना मुँह फाड़कर
खोला है ताकि क़ौम की तमाम शानो-शौकत,
शोर-शराबा, हंगामा और शादमान अफ़राद उसके
गले में उतर जाएँ। 15इनसान को पस्त करके
ख़ाक में मिलाया जाएगा, और मग़रूर की आँखें
नीची हो जाएँगी।

16लेकिन रब्बुल-अफ़वाज की अदालत उस
की अज़मत दिखाएगी, और क़ुद्दूस ख़ुदा की
रास्ती ज़ाहिर करेगी कि वह क़ुद्दूस है। 17उन
दिनों में लेले और मोटी-ताज़ी भेड़ें जिलावतनों के
खंडरात में यों चरेंगी जिस तरह अपनी चरागाहों
में।

18तुम पर अफ़सोस जो अपने क़ुसूर को
धोकेबाज़ रस्सों के साथ अपने पीछे खींचते और
अपने गुनाह को बैलगाड़ी की तरह अपने पीछे
घसीटते हो। 19तुम कहते हो, “अल्लाह जल्दी
जल्दी अपना काम निपटाए ताकि हम इसका
मुआयना करें। जो मनसूबा इसराईल का क़ुद्दूस
रखता है वह जल्दी सामने आए ताकि हम उसे
जान लें।”

20तुम पर अफ़सोस जो बुराई को भुला और
भलाई को बुरा क़रार देते हो, जो कहते हो
कि तारीकी रौशनी और रौशनी तारीकी है, कि
कड़वाहट मीठी और मिठास कड़वी है।

21तुम पर अफ़सोस जो अपनी नज़र में
दानिशमंद हो और अपने आपको होशियार
समझते हो।

22तुम पर अफ़सोस जो मै पीने में पहलवान हो
और शराब मिलाने में अपनी बहादुरी दिखाते हो।

23तुम रिश्वत खाकर मुजरिमों को बरी करते
और बेक़ुसूरों के हुक़ूक़ मारते हो। 24अब तुम्हें
इसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी। जिस तरह भूसा
आग की लपेट में आकर राख हो जाता और सूखी
घास आग के शोले में चुरमुर हो जाती है उसी तरह
तुम ख़त्म हो जाओगे। तुम्हारी जड़ें सड़ जाएँगी
और तुम्हारे फूल गर्द की तरह उड़ जाएंगे, क्योंकि
तुमने रब्बुल-अफ़वाज की शरीअत को रद्द किया
है, तुमने इसराईल के क़ुद्दूस का फ़रमान हक़ीर
जाना है।

असूरी फ़ौज का हमला

25यही वजह है कि रब का ग़ज़ब उस की क़ौम
पर नाज़िल हुआ है, कि उसने अपना हाथ बढ़ाकर
उन पर हमला किया है। पहाड़ लरज़ रहे और
गलियों में लाशें कचरे की तरह बिखरी हुई हैं।
ताहम उसका ग़ुस्सा ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका
हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

26वह एक दूर-दराज़ क़ौम के लिए फ़ौजी
झंडा गाड़कर उसे अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ खड़ा
करेगा, वह सीटी बजाकर उसे दुनिया की इंतहा
से बुलाएगा। वह देखो, दुश्मन भागते हुए आ
रहे हैं! 27उनमें से कोई नहीं जो थकामाँदा हो
या लड़खड़ाकर चले। कोई नहीं ऊँघता या सोया
हुआ है। किसी का भी पटका ढीला नहीं, किसी
का भी तसमा टूटा नहीं। 28उनके तीर तेज़ और
कमान तने हुए हैं। उनके घोड़ों के खुर चक़माक़
जैसे, उनके रथों के पहिये आँधी जैसे हैं। 29वह
शेरनी की तरह गरजते हैं बल्कि जवान शेरबबर
की तरह दहाड़ते और ग़ुर्राते हुए अपना शिकार
छीनकर वहाँ ले जाते हैं जहाँ उसे कोई नहीं बचा
सकता।

30उस दिन दुश्मन ग़ुर्राते और मुतलातिम
समुंदर का-सा शोर मचाते हुए इसराईल पर टूट
पड़ेंगे। जहाँ भी देखो वहाँ अंधेरा ही अंधेरा और
मुसीबत ही मुसीबत। बादल छा जाने के सबब से
रौशनी तारीक हो जाएगी।

यसायाह की बुलाहट

6 जिस साल उज़्ज़ियाह बादशाह ने वफ़ात
पाई उस साल मैंने रब को आला और
जलाली तख़्त पर बैठे देखा। उसके लिबास के
दामन से रब का घर भर गया। 2सराफ़ीम फ़रिश्ते
उसके ऊपर खड़े थे। हर एक के छः पर थे। दो से
वह अपने मुँह को और दो से अपने पाँवों को ढाँप
लेते थे जबकि दो से वह उड़ते थे। 3बुलंद आवाज़

से वह एक दूसरे को पुकार रहे थे, “क़ुद्दूस, क़ुद्दूस,
क़ुद्दूस है रब्बुल-अफ़वाज। तमाम दुनिया उसके
जलाल से मामूर है।”
4उनकी आवाज़ों से दहलीज़ें[a] हिल गईं और रब
का घर धुएँ से भर गया। 5मैं चिल्ला उठा, “मुझ
पर अफ़सोस, मैं बरबाद हो गया हूँ! क्योंकि गो
मेरे होंट नापाक हैं, और जिस क़ौम के दरमियान
रहता हूँ उसके होंट भी नजिस हैं तो भी मैंने अपनी
आँखों से बादशाह रब्बुल-अफ़वाज को देखा है।”
6तब सराफ़ीम फ़रिश्तों में से एक उड़ता हुआ
मेरे पास आया। उसके हाथ में दमकता कोयला
था जो उसने चिमटे से क़ुरबानगाह से लिया था।
7इससे उसने मेरे मुँह को छूकर फ़रमाया, “देख,
कोयले ने तेरे होंटों को छू दिया है। अब तेरा क़ुसूर
दूर हो गया, तेरे गुनाह का कफ़्फ़ारा दिया गया
है।”
8फिर मैंने रब की आवाज़ सुनी। उसने पूछा,
“मैं किस को भेजूँ? कौन हमारी तरफ़ से जाए?”
मैं बोला, “मैं हाज़िर हूँ। मुझे ही भेज दे।” 9तब
रब ने फ़रमाया, “जा, इस क़ौम को बता, ‘अपने
कानों से सुनो मगर कुछ न समझना। अपनी
आँखों से देखो, मगर कुछ न जानना!’ 10इस
क़ौम के दिल को बेहिस कर दे, उनके कानों और
आँखों को बंद कर। ऐसा न हो कि वह अपनी
आँखों से देखें, अपने कानों से सुनें, मेरी तरफ़
रुजू करें और शफ़ा पाएँ।”
11मैंने सवाल किया, “ऐ रब, कब तक?”
उसने जवाब दिया, “उस वक़्त तक कि मुल्क के
शहर वीरानो-सुनसान, उसके घर ग़ैरआबाद और
उसके खेत बंजर न हों। 12पहले लाज़िम है कि
रब लोगों को दूर दूर तक भगा दे, कि पूरा मुल्क
तने-तनहा और बेकस रह जाए। 13अगर क़ौम का
दसवाँ हिस्सा मुल्क में बाक़ी भी रहे लेकिन उसे
भी जला दिया जाएगा। वह किसी बलूत या दीगर
लंबे-चौड़े दरख़्त की तरह यों कट जाएगा कि मुढ
ही बाक़ी रहेगा। ताहम यह मुढ एक मुक़द्दस बीज
होगा जिससे नए सिरे से ज़िंदगी फूट निकलेगी।”

अल्लाह आख़ज़ को तसल्ली देता है

7 जब आख़ज़ बिन यूताम बिन उज़्ज़ियाह,
यहूदाह का बादशाह था तो शाम का
बादशाह रज़ीन और इसराईल का बादशाह
फ़िक़ह बिन रमलियाह यरूशलम के साथ लड़ने
के लिए निकले। लेकिन वह शहर पर क़ब्ज़ा करने
में नाकाम रहे। 2जब दाऊद के शाही घराने को
इत्तला मिली कि शाम की फ़ौज ने इफ़राईम के
इलाक़े में अपनी लशकरगाह लगाई है तो आख़ज़
बादशाह और उस की क़ौम लरज़ उठे। उनके दिल
आँधी के झोंकों से हिलनेवाले दरख़्तों की तरह
थरथराने लगे।
3तब रब यसायाह से हमकलाम हुआ, “अपने
बेटे शयार-याशूब[b] को अपने साथ लेकर आख़ज़
बादशाह से मिलने के लिए निकल जा। वह उस
नाले के सिरे के पास रुका हुआ है जो पानी को
ऊपरवाले तालाब तक पहुँचाता है (यह तालाब
उस रास्ते पर है जो धोबियों के घाट तक ले जाता
है)। 4उसे बता कि मुहतात रहकर सुकून का
दामन मत छोड़। मत डर। तेरा दिल रज़ीन, शाम
और बिन रमलियाह का तैश देखकर हिम्मत न
हारे। यह बस जली हुई लकड़ी के दो बचे हुए टुकड़े
हैं जो अब तक कुछ धुआँ छोड़ रहे हैं। 5बेशक
शाम और इसराईल के बादशाहों ने तेरे ख़िलाफ़
बुरे मनसूबे बाँधे हैं, और वह कहते हैं, 6‘आओ हम
यहूदाह पर हमला करें। हम वहाँ दहशत फैलाकर
उस पर फ़तह पाएँ और फिर ताबियेल के बेटे
को उसका बादशाह बनाएँ।’ 7लेकिन रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है कि उनका मनसूबा नाकाम
हो जाएगा। बात नहीं बनेगी! 8क्योंकि शाम का
सर दमिश्क़ और दमिश्क़ का सर महज़ रज़ीन है।
जहाँ तक मुल्के-इसराईल का ताल्लुक़ है, 65
साल के अंदर अंदर वह चकनाचूर हो जाएगा, और

[a]लफ़्ज़ी मतलब : दहलीज़ों में घूमनेवाली दरवाज़ों की चूलें।

[b]शयार-याशूब से मुराद है ‘एक बचा-खुचा हिस्सा वापस आएगा।’

क़ौम नेस्तो-नाबूद हो जाएगी। 9इसराईल का सर सामरिया और सामरिया का सर महज़ रमलियाह का बेटा है।

अगर ईमान में क़ायम न रहो, तो ख़ुद क़ायम नहीं रहोगे।”

रब आख़ज़ को निशान देता है

10रब आख़ज़ बादशाह से एक बार फिर हमकलाम हुआ, 11“इसकी तसदीक़ के लिए रब अपने ख़ुदा से कोई इलाही निशान माँग ले, ख़ाह आसमान पर हो या पाताल में।”

12लेकिन आख़ज़ ने इनकार किया, “नहीं, मैं निशान माँगकर रब को नहीं आज़-माऊँगा।”

13तब यसायाह ने कहा, “फिर मेरी बात सुनो, ऐ दाऊद के ख़ानदान! क्या यह काफ़ी नहीं कि तुम इनसान को थका दो? क्या लाज़िम है कि अल्लाह को भी थकाने पर मुसिर रहो? 14चलो, फिर रब अपनी ही तरफ़ से तुम्हें निशान देगा। निशान यह होगा कि कुँवारी उम्मीद से हो जाएगी। जब बेटा पैदा होगा तो उसका नाम इम्मानुएल[a] रखेगी। 15जिस वक़्त बच्चा इतना बड़ा होगा कि ग़लत काम रद्द करने और अच्छा काम चुनने का इल्म रखेगा उस वक़्त से बालाई और शहद खाएगा। 16क्योंकि इससे पहले कि लड़का ग़लत काम रद्द करने और अच्छा काम चुनने का इल्म रखे वह मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाएगा जिसके दोनों बादशाहों से तू दहशत खाता है।

यहूदाह भी तबाह हो जाएगा

17रब तुझे भी तेरे आबाई ख़ानदान और क़ौम समेत बड़ी मुसीबत में डालेगा। क्योंकि वह असूर के बादशाह को तुम्हारे ख़िलाफ़ भेजेगा। उस वक़्त तुम्हें ऐसे मुश्किल दिनों का सामना करना पड़ेगा कि इसराईल के यहूदाह से अलग हो जाने से लेकर आज तक नहीं गुज़रे।”

18उस दिन रब सीटी बजाकर दुश्मन को बुलाएगा। कुछ मक्खियों के ग़ोल की तरह दरियाए-नील की दूर-दराज़ शाख़ों से आएँगे, और कुछ शहद की मक्खियों की तरह असूर से रवाना होकर मुल्क पर धावा बोल देंगे। 19हर जगह वह टिक जाएंगे, गहरी घाटियों और चट्टानों की दराड़ों में, तमाम काँटेदार झाड़ियों में और हर जोहड़ के पास। 20उस दिन क़ादिरे-मुतलक़ दरियाए-फ़ुरात के परली तरफ़ एक उस्तरा किराए पर लेकर तुम पर चलाएगा। यानी असूर के बादशाह के ज़रीए वह तुम्हारे सर और टाँगों को मुँडवाएगा। हाँ, वह तुम्हारी दाढ़ी-मूँछ का भी सफ़ाया करेगा।

21उस दिन जो आदमी एक जवान गाय और दो भेड़-बकरियाँ रख सके वह ख़ुश-क़िसमत होगा। 22तो भी वह इतना दूध देंगी कि वह बालाई खाता रहेगा। हाँ, जो भी मुल्क में बाक़ी रह गया होगा वह बालाई और शहद खाएगा।

23उस दिन जहाँ जहाँ हाल में अंगूर के हज़ार पौदे चाँदी के हज़ार सिक्कों के लिए बिकते हैं वहाँ काँटेदार झाड़ियाँ और ऊँटकटारे ही उगेंगे। 24पूरा मुल्क काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों के सबब से इतना जंगली होगा कि लोग तीर और कमान लेकर उसमें शिकार खेलने के लिए जाएंगे। 25जिन बुलंदियों पर इस वक़्त खेतीबाड़ी की जाती है वहाँ लोग काँटेदार पौदों और ऊँटकटारों की वजह से जा नहीं सकेंगे। गाय-बैल उन पर चरेंगे, और भेड़-बकरियाँ सब कुछ पाँवों तले रौंदेंगी।

जल्द ही लूट-खसोट

8 रब मुझसे हमकलाम हुआ, “एक बड़ा तख़्ता लेकर उस पर साफ़ अलफ़ाज़ में लिख दे, ‘जल्द ही लूट-खसोट, सुरअत से ग़ारतगरी’।” 2मैंने ऊरियाह इमाम और ज़करियाह बिन यबरकियाह की मौजूदगी में ऐसा ही लिख दिया, क्योंकि दोनों मोतबर गवाह थे।

[a]इम्मानुएल से मुराद है ‘अल्लाह हमारे साथ है।’

3उस वक़्त जब मैं अपनी बीवी नबिया के पास
गया तो वह उम्मीद से हुई। बेटा पैदा हुआ, और
रब ने मुझे हुक्म दिया, “इसका नाम ‘जल्द ही
लूट-खसोट, सुरअत से ग़ारतगरी’ रख। 4क्योंकि
इससे पहले कि लड़का ‘अब्बू’ या ‘अम्मी’ कह
सके दमिश्क़ की दौलत और सामरिया का मालो-
असबाब छीन लिया गया होगा, असूर के बादशाह
ने सब कुछ लूट लिया होगा।”

शिलोख़ का पानी रद्द करने का बुरा अंजाम

5एक बार फिर रब मुझसे हमकलाम हुआ,
6“यह लोग यरूशलम में आराम से बहनेवाले
शिलोख़ नाले का पानी मुस्तरद करके रज़ीन और
फ़िक़ह बिन रमलियाह से ख़ुश हैं। 7इसलिए
रब उन पर दरियाए-फ़ुरात का ज़बरदस्त सैलाब
लाएगा, असूर का बादशाह अपनी तमाम शानो-
शौकत के साथ उन पर टूट पड़ेगा। उस की
तमाम दरियाई शाख़ें अपने किनारों से निकल कर
8सैलाब की सूरत में यहूदाह पर से गुज़रेंगी। ऐ
इम्मानुएल, पानी परिंदे की तरह अपने परों को
फैलाकर तेरे पूरे मुल्क को ढाँप लेगा, और लोग
गले तक उसमें डूब जाएंगे।”

9ऐ क़ौमो, बेशक जंग के नारे लगाओ। तुम
फिर भी चकनाचूर हो जाओगी। ऐ दूर-दराज़
ममालिक के तमाम बाशिंदो, ध्यान दो! बेशक
जंग के लिए तैयारियाँ करो। तुम फिर भी पाश
पाश हो जाओगे। क्योंकि जंग के लिए तैयारियाँ
करने के बावुजूद भी तुम्हें कुचला जाएगा। 10जो
भी मनसूबा तुम बान्धो, बात नहीं बनेगी। आपस
में जो भी फ़ैसला करो, तुम नाकाम हो जाओगे,
क्योंकि अल्लाह हमारे साथ है।[a]

रब नबी को क़ौम के बारे में आगाह करता है

11जिस वक़्त रब ने मुझे मज़बूती से पकड़
लिया उस वक़्त उसने मुझे इस क़ौम की राहों पर
चलने से ख़बरदार किया। उसने फ़रमाया, 12“हर
बात को साज़िश मत समझना जो यह क़ौम
साज़िश समझती है। जिससे यह लोग डरते हैं
उससे न डरना, न दहशत खाना 13बल्कि रब्बुल-
अफ़वाज से डरो। उसी से दहशत खाओ और उसी
को क़ुद्दूस मानो। 14तब वह इसराईल और यहूदाह
का मक़दिस होगा, एक ऐसा पत्थर जो ठोकर का
बाइस बनेगा, एक चट्टान जो ठेस लगने का सबब
होगी। यरूशलम के बाशिंदे उसके फंदे और जाल
में उलझ जाएंगे। 15उनमें से बहुत सारे ठोकर
खाएँगे। वह गिरकर पाश पाश हो जाएंगे और फंदे
में फँसकर पकड़े जाएंगे।”

रब का कलाम शागिर्दों के हवाले करना है

16मुझे मुकाशफ़े को लिफ़ाफ़े में डालकर
महफ़ूज़ रखना है, अपने शागिर्दों के दर-
मियान ही अल्लाह की हिदायत पर मुहर लगानी
है। 17मैं ख़ुद रब के इंतज़ार में रहूँगा जिसने अपने
चेहरे को याक़ूब के घराने से छुपा लिया है। उसी
से मैं उम्मीद रखूँगा।

18अब मैं हाज़िर हूँ, मैं और वह बच्चे
जो अल्लाह ने मुझे दिए हैं, हम इसराईल
में इलाही और मोजिज़ाना निशान हैं जिन-
से रब्बुल-अफ़वाज जो कोहे-सिय्यून पर सुकूनत
करता है लोगों को आगाह कर रहा है।

19लोग तुम्हें मशवरा देते हैं, “जाओ, मुरदों
से राबिता करनेवालों और क़िस्मत का हाल
बतानेवालों से पता करो, उनसे जो बारीक
आवाज़ें निकालते और बुड़बुड़ाते हुए जवाब देते
हैं।” लेकिन उनसे कहो, “क्या मुनासिब नहीं कि
क़ौम अपने ख़ुदा से मशवरा करे? हम ज़िंदों की
ख़ातिर मुर्दों से बात क्यों करें?”

20अल्लाह की हिदायत और मुकाशफ़ा की
तरफ़ रुजू करो! जो इनकार करे उस पर सुबह
की रौशनी कभी नहीं चमकेगी। 21ऐसे लोग
मायूस और फ़ाक़ाकश हालत में मुल्क में मारे
मारे फिरेंगे। और जब भूके मरने को होंगे तो

---

[a]इबरानी में ‘इम्मानुएल’ लिखा है, देखिए 7:14 का फ़ुटनोट।

झुँझलाकर अपने बादशाह और अपने ख़ुदा पर लानत करेंगे। वह ऊपर आसमान 22और नीचे ज़मीन की तरफ़ देखेंगे, लेकिन जहाँ भी नज़र पड़े वहाँ मुसीबत, अंधेरा और हौलनाक तारीकी ही दिखाई देगी। उन्हें तारीकी ही तारीकी में डाल दिया जाएगा।

आनेवाले मसीह की रौशनी

9 लेकिन मुसीबतज़दा तारीकी में नहीं रहेंगे। गो पहले ज़बूलून का इलाक़ा और नफ़ताली का इलाक़ा पस्त हुआ है, लेकिन आइंदा झील के साथ का रास्ता, दरियाए-यरदन के पार, ग़ैरयहूदियों का गलील सरफ़राज़ होगा।

2अंधेरे में चलनेवाली क़ौम ने एक तेज़ रौशनी देखी, मौत के साये में डूबे हुए मुल्क के बाशिंदों पर रौशनी चमकी। 3तूने क़ौम को बढ़ाकर उसे बड़ी ख़ुशी दिलाई है। तेरे हुज़ूर वह यों ख़ुशी मनाते हैं जिस तरह फ़सल काटते और लूट का माल बाँटते वक़्त मनाई जाती है। 4तूने अपनी क़ौम को उस दिन की तरह छुटकारा दिया जब तूने मिदियान को शिकस्त दी थी। उसे दबानेवाला जुआ टूट गया, और उस पर ज़ुल्म करनेवाले की लाठी टुकड़े टुकड़े हो गई है। 5ज़मीन पर ज़ोर से मारे गए फ़ौजी जूते और ख़ून में लतपत फ़ौजी वरदियाँ सब हवालाए-आतिश होकर भस्म हो जाएँगी।

6क्योंकि हमारे हाँ बच्चा पैदा हुआ, हमें बेटा बख़्शा गया है। उसके कंधों पर हुकूमत का इख़्तियार ठहरा रहेगा। वह अनोखा मुशीर, क़वी ख़ुदा, अबदी बाप और सुलह-सलामती का शहज़ादा कहलाएगा। 7उस की हुकूमत ज़ोर पकड़ती जाएगी, और अमनो-अमान की इंतहा नहीं होगी। वह दाऊद के तख़्त पर बैठकर उस की सलतनत पर हुकूमत करेगा, वह उसे अदलो-इनसाफ़ से मज़बूत करके अब से अबद तक क़ायम रखेगा। रब्बुल-अफ़वाज की ग़ैरत ही इसे अंजाम देगी।

रब का ग़ज़ब नाज़िल होगा

8रब ने याक़ूब के ख़िलाफ़ पैग़ाम भेजा, और वह इसराईल पर नाज़िल हो गया है। 9इसराईल और सामरिया के तमाम बाशिंदे इसे जल्द ही जान जाएंगे, हालाँकि वह इस वक़्त बड़ी शेख़ी मारकर कहते हैं, 10"बेशक हमारी ईंटों की दीवारें गिर गई हैं, लेकिन हम उन्हें तराशे हुए पत्थरों से दुबारा तामीर कर लेंगे। बेशक हमारे अंजीर-तूत के दरख़्त कट गए हैं, लेकिन कोई बात नहीं, हम उनकी जगह देवदार के दरख़्त लगा लेंगे।" 11लेकिन रब इसराईल के दुश्मन रज़ीन को तक़वियत देकर उसके ख़िलाफ़ भेजेगा बल्कि इसराईल के तमाम दुश्मनों को उस पर हमला करने के लिए उभारेगा। 12शाम के फ़ौजी मशरिक़ से और फ़िलिस्ती मग़रिब से मुँह फाड़कर इसराईल को हड़प कर लेंगे। ताहम रब का ग़ज़ब ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

13क्योंकि इसके बावुजूद भी लोग सज़ा देनेवाले के पास वापस नहीं आएँगे और रब्बुल-अफ़वाज के तालिब नहीं होंगे। 14नतीजे में रब एक ही दिन में इसराईल का न सिर्फ़ सर बल्कि उस की दुम भी काटेगा, न सिर्फ़ खजूर की शानदार शाख़ बल्कि मामूली-सा सरकंडा भी तोड़ेगा। 15बुज़ुर्ग और असरो-रसूख़वाले इसराईल का सर हैं जबकि झूटी तालीम देनेवाले नबी उस की दुम हैं। 16क्योंकि क़ौम के राहनुमा लोगों को ग़लत राह पर ले गए हैं, और जिनकी राहनुमाई वह कर रहे हैं उनके दिमाग़ में फ़ुतूर आ गया है। 17इसलिए रब न क़ौम के जवानों से ख़ुश होगा, न यतीमों और बेवाओं पर रहम करेगा। क्योंकि सबके सब बेदीन और शरीर हैं, हर मुँह कुफ़र बकता है। ताहम रब का ग़ज़ब ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

18क्योंकि उनकी बेदीनी की भड़कती हुई आग काँटेदार झाड़ियाँ और ऊँटकटारे भस्म कर देती है,

बल्कि गुंजान जंगल भी उस की ज़द में आकर धुएँ
के काले बादल छोड़ता है। 19रब्बुल-अफ़वाज के
ग़ज़ब से मुल्क झुलस जाएगा और उसके बाशिंदे
आग का लुक़मा बन जाएंगे। यहाँ तक कि कोई
भी अपने भाई पर तरस नहीं खाएगा। 20और
गो हर एक दाईं तरफ़ मुड़कर सब कुछ हड़प
कर जाए तो भी भूका रहेगा, गो बाईं तरफ़ रुख़
करके सब कुछ निगल जाए तो भी सेर नहीं होगा।
हर एक अपने पड़ोसी को खाएगा, 21मनस्सी
इफ़राईम को और इफ़राईम मनस्सी को। और
दोनों मिलकर यहूदाह पर हमला करेंगे। ताहम रब
का ग़ज़ब ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका हाथ मारने
के लिए उठा ही रहेगा।

10 तुम पर अफ़सोस जो ग़लत
क़वानीन सादिर करते और ज़ा-
लिम फ़तवे देते हो 2ताकि ग़रीबों का हक़ मारो
और मज़लूमों के हुक़ूक़ पामाल करो। बेवाएँ
तुम्हारा शिकार होती हैं, और तुम यतीमों को
लूट लेते हो। 3लेकिन अदालत के दिन तुम क्या
करोगे, जब दूर दूर से ज़बरदस्त तूफ़ान तुम पर
आन पड़ेगा तो तुम मदद के लिए किसके पास
भागोगे और अपना मालो-दौलत कहाँ महफ़ूज़
रख छोड़ोगे? 4जो झुककर क़ैदी न बने वह
गिरकर हलाक हो जाएगा। ताहम रब का ग़ज़ब
ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका हाथ मारने के लिए
उठा ही रहेगा।

असूर की भी अदालत होगी

5असूर पर अफ़सोस जो मेरे ग़ज़ब का आला
है, जिसके हाथ में मेरे क़हर की लाठी है। 6मैं उसे
एक बेदीन क़ौम के ख़िलाफ़ भेज रहा हूँ, एक
क़ौम के ख़िलाफ़ जो मुझे ग़ुस्सा दिलाती है। मैंने
असूर को हुक्म दिया है कि उसे लूटकर गली की
कीचड़ की तरह पामाल कर।

7लेकिन उसका अपना इरादा फ़रक़ है। वह
ऐसी सोच नहीं रखता बल्कि सब कुछ तबाह
करने पर तुला हुआ है, बहुत क़ौमों को नेस्तो-
नाबूद करने पर आमादा है। 8वह फ़ख़र करता है,
"मेरे तमाम अफ़सर तो बादशाह हैं। 9फिर हमारी
फ़ुतूहात पर ग़ौर करो। करकिमीस, कलनो,
अरफ़ाद, हमात, दमिश्क़ और सामरिया जैसे
तमाम शहर यके बाद दीगरे मेरे क़ब्ज़े में आ गए
हैं। 10मैंने कई सलतनतों पर क़ाबू पा लिया है
जिनके बुत यरूशलम और सामरिया के बुतों से
कहीं बेहतर थे। 11सामरिया और उसके बुतों को
मैं बरबाद कर चुका हूँ, और अब मैं यरूशलम और
उसके बुतों के साथ भी ऐसा ही करूँगा!"

12लेकिन कोहे-सिय्यून पर और यरूशलम में
अपने तमाम मक़ासिद पूरे करने के बाद रब
फ़रमाएगा, "मैं शाहे-असूर को भी सज़ा दूँगा,
क्योंकि उसके मग़रूर दिल से कितना बुरा काम
उभर आया है, और उस की आँखें कितने ग़ुरूर
से देखती हैं। 13वह शेख़ी मारकर कहता है, 'मैंने
अपने ही ज़ोरे-बाज़ू और हिकमत से यह सब कुछ
कर लिया है, क्योंकि मैं समझदार हूँ। मैंने क़ौमों
की हुदूद ख़त्म करके उनके ख़ज़ानों को लूट लिया
और ज़बरदस्त साँड की तरह उनके बादशाहों को
मार मारकर ख़ाक में मिला दिया है। 14जिस तरह
कोई अपना हाथ घोंसले में डालकर अंडे निकाल
लेता है उसी तरह मैंने क़ौमों की दौलत छीन ली
है। आम आदमी परिंदों को भगाकर उनके छोड़े
हुए अंडे इकट्ठे कर लेता है जबकि मैंने यही सुलूक
दुनिया के तमाम ममालिक के साथ किया। जब
मैं उन्हें अपने क़ब्ज़े में लाया तो एक ने भी अपने
परों को फड़फड़ाने या चोंच खोलकर चीं चीं करने
की जुर्रत न की'।"

15लेकिन क्या कुल्हाड़ी उसके सामने शेख़ी
बघारती जो उसे चलाता है? क्या आरी उसके
सामने अपने आप पर फ़ख़र करती जो उसे
इस्तेमाल करता है? यह उतना ही नामुमकिन
है जितना यह कि लाठी पकड़नेवाले को घुमाए
या डंडा आदमी को उठाए।

16चुनाँचे क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज
असूर के मोटे-ताज़े फ़ौजियों में एक मरज़ फैला
देगा जो उनके जिस्मों को रफ़्ता रफ़्ता ज़ाया
करेगा। असूर की शानो-शौकत के नीचे एक

भड़कती हुई आग लगाई जाएगी। 17उस वक़्त इसराईल का नूर आग और इसराईल का क़ुद्दूस शोला बनकर असूर की काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों को एक ही दिन में भस्म कर देगा। 18वह उसके शानदार जंगलों और बाग़ों को मुकम्मल तौर पर तबाह कर देगा, और वह मरीज़ की तरह घुल घुलकर ज़ायल हो जाएंगे। 19जंगलों के इतने कम दरख़्त बचेंगे कि बच्चा भी उन्हें गिनकर किताब में दर्ज कर सकेगा।

इसराईल का छोटा-सा हिस्सा बच जाएगा

20उस दिन से इसराईल का बक़िया यानी याक़ूब के घराने का बचा-खुचा हिस्सा उस पर मज़ीद इनहिसार नहीं करेगा जो उसे मारता रहा था, बल्कि वह पूरी वफ़ादारी से इसराईल के क़ुद्दूस, रब पर भरोसा रखेगा। 21बक़िया वापस आएगा, याक़ूब का बचा-खुचा हिस्सा क़वी ख़ुदा के हुज़ूर लौट आएगा। 22ऐ इसराईल, गो तू साहिल पर की रेत जैसा बेशुमार क्यों न हो तो भी सिर्फ़ एक बचा हुआ हिस्सा वापस आएगा। तेरे बरबाद होने का फ़ैसला हो चुका है, और इनसाफ़ का सैलाब मुल्क पर आनेवाला है। 23क्योंकि इसका अटल फ़ैसला हो चुका है कि क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज पूरे मुल्क पर हलाकत लाने को है।

24इसलिए क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "ऐ सिय्यून में बसनेवाली मेरी क़ौम, असूर से मत डरना जो लाठी से तुझे मारता है और तेरे ख़िलाफ़ लाठी यों उठाता है जिस तरह पहले मिसर किया करता था। 25मेरा तुझ पर ग़ुस्सा जल्द ही ठंडा हो जाएगा और मेरा ग़ज़ब असूरियों पर नाज़िल होकर उन्हें ख़त्म करेगा।" 26जिस तरह रब्बुल-अफ़वाज ने मिदियानियों को मारा जब जिदाऊन ने ओरेब की चट्टान पर उन्हें शिकस्त दी उसी तरह वह असूरियों को भी कोड़े से मारेगा। और जिस तरह रब ने अपनी लाठी मूसा के ज़रीए समुंदर के ऊपर उठाई और नतीजे में मिसर की फ़ौज उसमें डूब गई बिलकुल उसी तरह वह असूरियों के साथ भी करेगा। 27उस दिन असूर का बोझ तेरे कंधों पर से उतर जाएगा, और उसका जुआ तेरी गरदन पर से दूर होकर टूट जाएगा।

यरूशलम की तरफ़ फ़ातेह की तरक़्क़ी

फ़ातेह ने यशीमोन की तरफ़ से चढ़कर 28ऐयात पर हमला किया है। उसने मिजरोन में से गुज़रकर मिकमास में अपना लशकरी सामान छोड़ रखा है। 29दर्रे को पार करके वह कहते हैं, "आज हम रात को जिबा में गुज़ारेंगे।" रामा थरथरा रहा और साऊल का शहर जिबिया भाग गया है। 30ऐ जल्लीम बेटी, ज़ोर से चीख़ें मार! ऐ लैसा, ध्यान दे! ऐ अनतोत, उसे जवाब दे! 31मदमीना फ़रार हो गया और जेबीम के बाशिंदों ने दूसरी जगहों में पनाह ली है। 32आज ही फ़ातेह नोब के पास रुककर सिय्यून बेटी के पहाड़ यानी कोहे-यरूशलम के ऊपर हाथ हिलाएगा।[a]

33देखो, क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज बड़े ज़ोर से शाख़ों को तोड़नेवाला है। तब ऊँचे ऊँचे दरख़्त कटकर गिर जाएंगे, और जो सरफ़राज़ हैं उन्हें ख़ाक में मिलाया जाएगा। 34वह कुल्हाड़ी लेकर घने जंगल को काट डालेगा बल्कि लुबनान भी ज़ोरावर के हाथों गिर जाएगा।

मसीह की पुरअमन सलतनत

11 यस्सी[b] के मुढ से कोंपल फूट निकलेगी, और उस की बची हुई जड़ों से शाख़ निकलकर फल लाएगी। 2रब का रूह उस पर ठहरेगा यानी हिकमत और समझ का रूह, मशवरत और क़ुव्वत का रूह, इरफ़ान और रब के ख़ौफ़ का रूह। 3रब का ख़ौफ़ उसे अज़ीज़

[a]एक और मुमकिना तरजुमा : आज ही फ़ातेह नोब के पास रुककर कोहे-यरूशलम के ऊपर हाथ हिलाएगा ताकि उसे बड़ा बनाए।

[b]यस्सी से मुराद हज़रत दाऊद की नसल है (यस्सी हज़रत दाऊद का बाप था)।

होगा। न वह दिखावे की बिना पर फ़ैसला करेगा,
न सुनी-सुनाई बातों की बिना पर फ़तवा देगा
4बल्कि इनसाफ़ से बेबसों की अदालत करेगा
और ग़ैरजानिबदारी से मुल्क के मुसीबतज़दों का
फ़ैसला करेगा। अपने कलाम की लाठी से वह
ज़मीन को मारेगा और अपने मुँह की फूँक से
बेदीन को हलाक करेगा। 5वह रास्तबाज़ी के
पटके और वफ़ादारी के ज़ेरजामे से मुलब्बस
रहेगा।

6भेड़िया उस वक़्त भेड़ के बच्चे के पास
ठहरेगा, और चीता भेड़ के बच्चे के पास आराम
करेगा। बछड़ा, जवान शेरबबर और मोटा-ताज़ा
बैल मिलकर रहेंगे, और छोटा लड़का उन्हें
हाँककर सँभालेगा। 7गाय रीछ के साथ चरेगी,
और उनके बच्चे एक दूसरे के साथ आराम करेंगे।
शेरबबर बैल की तरह भूसा खाएगा। 8शीरख़ार
बच्चा नाग की बाँबी के क़रीब खेलेगा, और
जवान बच्चा अपना हाथ ज़हरीले साँप के बिल
में डालेगा।

9मेरे तमाम मुक़द्दस पहाड़ पर न ग़लत और न
तबाहकुन काम किया जाएगा। क्योंकि मुल्क रब
के इरफ़ान से यों मामूर होगा जिस तरह समुंदर
पानी से भरा रहता है। 10उस दिन यस्सी की
जड़ से फूटी हुई कोंपल उम्मतों के लिए झंडा
होगा। क़ौमें उस की तालिब होंगी, और उस की
सुकूनतगाह जलाली होगी।

रब अपनी क़ौम को वापस लाएगा

11उस दिन रब एक बार फिर अपना हाथ
बढ़ाएगा ताकि अपनी क़ौम का वह बचा-खुचा
हिस्सा दुबारा हासिल करे जो असूर, शिमाली
और जुनूबी मिसर, एथोपिया, ऐलाम, बाबल,
हमात और साहिली इलाक़ों में मुंतशिर होगा।
12वह क़ौमों के लिए झंडा गाड़कर इसराईल के
जिलावतनों को इकट्ठा करेगा। हाँ, वह यहूदाह
के बिखरे अफ़राद को दुनिया के चारों कोनों से
लाकर जमा करेगा। 13तब इसराईल का हसद
ख़त्म हो जाएगा, और यहूदाह के दुश्मन नेस्तो-
नाबूद हो जाएंगे। न इसराईल यहूदाह से हसद
करेगा, न यहूदाह इसराईल से दुश्मनी रखेगा।
14फिर दोनों मग़रिब में फ़िलिस्ती मुल्क पर
झपट पड़ेंगे और मिलकर मशरिक़ के बाशिंदों
को लूट लेंगे। अदोम और मोआब उनके क़ब्ज़े
में आएँगे, और अम्मोन उनके ताबे हो जाएगा।
15रब बहरे-क़ुलज़ुम को ख़ुश्क करेगा और साथ
साथ दरियाए-फ़ुरात के ऊपर हाथ हिलाकर उस
पर ज़ोरदार हवा चलाएगा। तब दरिया सात
ऐसी नहरों में बट जाएगा जो पैदल ही पार
की जा सकेंगी। 16एक ऐसा रास्ता बनेगा जो
रब के बचे हुए अफ़राद को असूर से इसराईल
तक पहुँचाएगा, बिलकुल उस रास्ते की तरह
जिसने इसराईलियों को मिसर से निकलते वक़्त
इसराईल तक पहुँचाया था।

बचे हुओं की हम्दो-सना

12 उस दिन तुम गीत गाओगे,
“ऐ रब, मैं तेरी सताइश करूँगा!
यक़ीनन तू मुझसे नाराज़ था, लेकिन अब तेरा
ग़ज़ब मुझ पर से दूर हो जाए और तू मुझे तसल्ली
दे।

2अल्लाह मेरी नजात है। उस पर भरोसा
रखकर मैं दहशत नहीं खाऊँगा। क्योंकि रब ख़ुदा
मेरी क़ुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी नजात बन
गया है।”

3तुम शादमानी से नजात के चश्मों से पानी
भरोगे।

4उस दिन तुम कहोगे, “रब की सताइश करो!
उसका नाम लेकर उसे पुकारो! जो कुछ उसने
किया है दुनिया को बताओ, उसके नाम की
अज़मत का एलान करो।

5रब की तमजीद का गीत गाओ, क्योंकि उसने
ज़बरदस्त काम किया है, और इसका इल्म पूरी
दुनिया तक पहुँचे।

6ऐ यरूशलम की रहनेवाली, शादियाना
बजाकर ख़ुशी के नारे लगा! क्योंकि इसराईल

का क़ुद्दूस अज़ीम है, और वह तेरे दरमियान ही सुकूनत करता है।”

बाबल के ख़िलाफ़ एलान

13 दर्जे-ज़ैल बाबल के बारे में वह एलान है जो यसायाह बिन आमूस ने रोया में देखा।

2नंगे पहाड़ पर झंडा गाड़ दो। उन्हें बुलंद आवाज़ दो, हाथ हिलाकर उन्हें शुरफ़ा के दरवाज़ों में दाख़िल होने का हुक्म दो। 3मैंने अपने मुक़द्दसीन को काम पर लगा दिया है, मैंने अपने सूरमाओं को जो मेरी अज़मत की ख़ुशी मनाते हैं बुला लिया है ताकि मेरे ग़ज़ब का आलाए-कार बनें।

4सुनो! पहाड़ों पर बड़े हुजूम का शोर मच रहा है। सुनो! मुतअद्दिद ममालिक और जमा होनेवाली क़ौमों का ग़ुल-ग़पाड़ा सुनाई दे रहा है। रब्बुल-अफ़वाज जंग के लिए फ़ौज जमा कर रहा है। 5उसके फ़ौजी दूर-दराज़ इलाक़ों बल्कि आसमान की इंतहा से आ रहे हैं। क्योंकि रब अपने ग़ज़ब के आलात के साथ आ रहा है ताकि तमाम मुल्क को बरबाद कर दे।

6वावैला करो, क्योंकि रब का दिन क़रीब ही है, वह दिन जब क़ादिरे-मुतलक़ की तरफ़ से तबाही मचेगी। 7तब तमाम हाथ बेहिसो-हरकत हो जाएंगे, और हर एक का दिल हिम्मत हार देगा। 8दहशत उन पर छा जाएगी, और वह जान-कनी और दर्दे-ज़ह की-सी गिरिफ़्त में आकर जन्म देनेवाली औरत की तरह तड़पेंगे। एक दूसरे को डर के मारे घूर घूरकर उनके चेहरे आग की तरह तमतमा रहे होंगे।

9देखो, रब का बेरहम दिन आ रहा है जब उसका क़हर और शदीद ग़ज़ब नाज़िल होगा। उस वक़्त मुल्क तबाह हो जाएगा और गुनाहगार को उसमें से मिटा दिया जाएगा। 10आसमान के सितारे और उनके झुरमुट नहीं चमकेंगे, सूरज तुलू होते वक़्त तारीक ही रहेगा, और चाँद की रौशनी ख़त्म होगी।

11मैं दुनिया को उस की बदकारी का अज्र और बेदीनों को उनके गुनाहों की सज़ा दूँगा, मैं शोख़ों का घमंड ख़त्म कर दूँगा और ज़ालिमों का ग़ुरूर ख़ाक में मिला दूँगा। 12लोग ख़ालिस सोने से कहीं ज़्यादा नायाब होंगे, इनसान ओफ़ीर के क़ीमती सोने की निसबत कहीं ज़्यादा कमयाब होगा।

13क्योंकि आसमान रब्बुल-अफ़वाज के क़हर के सामने काँप उठेगा, उसके शदीद ग़ज़ब के नाज़िल होने पर ज़मीन लरज़कर अपनी जगह से खिसक जाएगी। 14बाबल के तमाम बाशिंदे शिकारी के सामने दौड़नेवाले ग़ज़ाल और चरवाहे से महरूम भेड़-बकरियों की तरह इधर-उधर भागकर अपने मुल्क और अपनी क़ौम में वापस आने की कोशिश करेंगे। 15जो भी दुश्मन के क़ाबू में आएगा उसे छेदा जाएगा, जिसे भी पकड़ा जाएगा उसे तलवार से मारा जाएगा। 16उनके देखते देखते दुश्मन उनके बच्चों को ज़मीन पर पटख़ देगा और उनके घरों को लूटकर उनकी औरतों की इसमतदरी करेगा।

17मैं मादियों को उन पर चढ़ा लाऊँगा, ऐसे लोगों को जिन्हें रिश्वत से नहीं आज़माया जा सकता, जो सोने-चाँदी की परवा ही नहीं करते। 18उनके तीर नौजवानों को मार देंगे। न वह शीरख़ारों पर तरस खाएँगे, न बच्चों पर रहम करेंगे।

बाबल जंगली जानवरों का घर बन जाएगा

19अल्लाह बाबल को जो तमाम ममालिक का ताज और बाबलियों का ख़ास फ़ख़र है रूए-ज़मीन पर से मिटा डालेगा। उस दिन वह सदूम और अमूरा की तरह तबाह हो जाएगा। 20आइंदा उसे कभी दुबारा बसाया नहीं जाएगा, नसल-दर-नसल वह वीरान ही रहेगा। न बद्दू अपना तंबू वहाँ लगाएगा, और न गल्लाबान अपने रेवड़ उसमें ठहराएगा। 21सिर्फ़ रेगिस्तान के जानवर खंडरात में जा बसेंगे। शहर के घर उनकी आवाज़ों से गूँज उठेंगे, उक़ाबी उल्लू वहाँ ठहरेंगे, और बकरानुमा

जिन उसमें रक़्स करेंगे। 22जंगली कुत्ते उसके
महलों में रोएँगे, और गीदड़ ऐशो-इशरत के क़सरों
में अपनी दर्द भरी आवाज़ें निकालेंगे। बाबल का
ख़ातमा क़रीब ही है, अब देर नहीं लगेगी।

इसराईली वापस आएँगे

14 क्योंकि रब याक़ूब पर तरस खाएगा,
वह दुबारा इसराईलियों को चुनकर
उन्हें उनके अपने मुल्क में बसा देगा। परदेसी भी
उनके साथ मिल जाएंगे, वह याक़ूब के घराने से
मुंसलिक हो जाएंगे। 2दीगर क़ौमें इसराईलियों
को लेकर उनके वतन में वापस पहुँचा देंगी। तब
इसराईल का घराना इन परदेसियों को विरसे
में पाएगा, और यह रब के मुल्क में उनके
नौकर-नौकरानियाँ बनकर उनकी ख़िदमत करेंगे।
जिन्होंने उन्हें जिलावतन किया था उन्हीं को वह
जिलावतन किए रखेंगे, जिन्होंने उन पर ज़ुल्म
किया था उन्हीं पर वह हुकूमत करेंगे। 3जिस दिन
रब तुझे मुसीबत, बेचैनी और ज़ालिमाना ग़ुलामी
से आराम देगा 4उस दिन तू बाबल के बादशाह
पर तंज़ का गीत गाएगा,

बाबल पर तंज़ का गीत

“यह कैसी बात है? ज़ालिम नेस्तो-नाबूद और
उसके हमले ख़त्म हो गए हैं। 5रब ने बेदीनों की
लाठी तोड़कर हुक्मरानों का वह शाही असा टुकड़े
टुकड़े कर दिया है 6जो तैश में आकर क़ौमों
को मुसलसल मारता रहा और ग़ुस्से से उन पर
हुकूमत करता, बेरहमी से उनके पीछे पड़ा रहा।
7अब पूरी दुनिया को आरामो-सुकून हासिल हुआ
है, अब हर तरफ़ ख़ुशी के नारे सुनाई दे रहे हैं।
8जूनीपर के दरख़्त और लुबनान के देवदार भी
तेरे अंजाम पर ख़ुश होकर कहते हैं, ‘शुक्र है! जब
से तू गिरा दिया गया कोई यहाँ चढ़कर हमें काटने
नहीं आता।’

9पाताल तेरे उतरने के बाइस हिल गया है। तेरे
इंतज़ार में वह मुरदा रूहों को हरकत में ला रहा
है। वहाँ दुनिया के तमाम रईस और अक़वाम के
तमाम बादशाह अपने तख़्तों से खड़े होकर तेरा
इस्तक़बाल करेंगे। 10सब मिलकर तुझसे कहेंगे,
‘अब तू भी हम जैसा कमज़ोर हो गया है, तू भी
हमारे बराबर हो गया है!’ 11तेरी तमाम शानो-
शौकत पाताल में उतर गई है, तेरे सितार ख़ामोश
हो गए हैं। अब कीड़े तेरा गद्दा और केंचुए तेरा
कम्बल होंगे।

12ऐ सिताराए-सुबह, ऐ इब्ने-सहर, तू
आसमान से किस तरह गिर गया है! जिसने दीगर
ममालिक को शिकस्त दी थी वह अब ख़ुद पाश
पाश हो गया है। 13दिल में तूने कहा, ‘मैं आसमान
पर चढ़कर अपना तख़्त अल्लाह के सितारों के
ऊपर लगा लूँगा, मैं इंतहाई शिमाल में उस पहाड़
पर जहाँ देवता जमा होते हैं तख़्तनशीन हूँगा। 14मैं
बादलों की बुलंदियों पर चढ़कर क़ादिरे-मुतलक़
के बिलकुल बराबर हो जाऊँगा।’ 15लेकिन तुझे
तो पाताल में उतारा जाएगा, उसके सबसे गहरे
गढ़े में गिराया जाएगा।

16जो भी तुझ पर नज़र डालेगा वह ग़ौर से
देखकर पूछेगा, ‘क्या यही वह आदमी है जिसने
ज़मीन को हिला दिया, जिसके सामने दीगर
ममालिक काँप उठे? 17क्या इसी ने दुनिया
को वीरान कर दिया और उसके शहरों को ढाकर
क़ैदियों को घर वापस जाने की इजाज़त न दी?’

18दीगर ममालिक के तमाम बादशाह बड़ी
इज़्ज़त के साथ अपने अपने मक़बरों में पड़े हुए
हैं। 19लेकिन तुझे अपनी क़ब्र से दूर किसी बेकार
कोंपल की तरह फेंक दिया जाएगा। तुझे मक़तूलों
से ढाँका जाएगा, उनसे जिनको तलवार से छेदा
गया है, जो पथरीले गढ़ों में उतर गए हैं। तू पाँवों
तले रौंदी हुई लाश जैसा होगा, 20और तदफ़ीन
के वक़्त तू दीगर बादशाहों से जा नहीं मिलेगा।
क्योंकि तूने अपने मुल्क को तबाह और अपनी
क़ौम को हलाक कर दिया है। चुनाँचे अब से अबद
तक इन बेदीनों की औलाद का ज़िक्र तक नहीं
किया जाएगा। 21इस आदमी के बेटों को फाँसी
देने की जगह तैयार करो! क्योंकि उनके बापदादा
का क़ुसूर इतना संगीन है कि उन्हें मरना ही है।

ऐसा न हो कि वह दुबारा उठकर दुनिया पर क़ब्ज़ा
कर लें, कि रूए-ज़मीन उनके शहरों से भर जाए।”

रब के हाथों बाबल का अंजाम

22रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “मैं उनके
ख़िलाफ़ यों उठूँगा कि बाबल का नामो-निशान
तक नहीं रहेगा। मैं उस की औलाद को रूए-
ज़मीन पर से मिटा दूँगा, और एक भी नहीं बचने
का। 23बाबल ख़ारपुश्त का मसकन और दलदल
का इलाक़ा बन जाएगा, क्योंकि मैं ख़ुद उसमें
तबाही का झाड़ू फेर दूँगा।” यह रब्बुल-अफ़वाज
का फ़रमान है।

असूरी फ़ौज की तबाही

24रब्बुल-अफ़वाज ने क़सम खाकर फ़र-
माया है, “यक़ीनन सब कुछ मेरे मनसूबे के
मुताबिक़ ही होगा, मेरा इरादा ज़रूर पूरा हो
जाएगा। 25मैं असूर को अपने मुल्क में चकनाचूर
कर दूँगा और उसे अपने पहाड़ों पर कुचल
डालूँगा। तब उसका जुआ मेरी क़ौम पर से दूर हो
जाएगा, और उसका बोझ उसके कंधों पर से उतर
जाएगा।” 26पूरी दुनिया के बारे में यह मनसूबा
अटल है, और रब अपना हाथ तमाम क़ौमों
के ख़िलाफ़ बढ़ा चुका है। 27रब्बुल-अफ़वाज
ने फ़ैसला कर लिया है, तो कौन इसे मनसूख़
करेगा? उसने अपना हाथ बढ़ा दिया है, तो कौन
उसे रोकेगा?

फ़िलिस्तियों का अंजाम क़रीब है

28ज़ैल का कलाम उस साल नाज़िल हुआ जब
आख़ज़ बादशाह ने वफ़ात पाई।

29ऐ तमाम फ़िलिस्ती मुल्क, इस पर ख़ुशी
मत मना कि हमें मारनेवाली लाठी टूट गई है।
क्योंकि साँप की बची हुई जड़ से ज़हरीला साँप
फूट निकलेगा, और उसका फल शोलाफ़िशाँ
उड़नअज़दहा होगा। 30तब ज़रूरतमंदों को
चरागाह मिलेगी, और ग़रीब महफ़ूज़ जगह पर
आराम करेंगे। लेकिन तेरी जड़ को मैं काल से
मार दूँगा, और जो बच जाएँ उन्हें भी हलाक कर
दूँगा।

31ऐ शहर के दरवाज़े, वावैला कर! ऐ शहर,
ज़ोर से चीख़ें मार! ऐ फ़िलिस्तियो, हिम्मत
हारकर लड़खड़ाते जाओ। क्योंकि शिमाल से
तुम्हारी तरफ़ धुआँ बढ़ रहा है, और उस की सफ़ों
में पीछे रहनेवाला कोई नहीं है। 32तो फिर हमारे
पास भेजे हुए क़ासिदों को हम क्या जवाब दें?
यह कि रब ने सिय्यून को क़ायम रखा है, कि उस
की क़ौम के मज़लूम उसी में पनाह लेंगे।

मोआब के अंजाम का एलान

15 मोआब के बारे में रब का फ़र-
मान :
एक ही रात में मोआब का शहर आर तबाह हो गया
है। एक ही रात में मोआब का शहर क़ीर बरबाद
हो गया है। 2अब दीबोन के बाशिंदे मातम करने
के लिए अपने मंदिर और पहाड़ी क़ुरबानगाहों की
तरफ़ चढ़ रहे हैं। मोआब अपने शहरों नबू और
मीदबा पर वावैला कर रहा है। हर सर मुंडा हुआ
और हर दाढ़ी कट गई है। 3गलियों में वह टाट से
मुलब्बस फिर रहे हैं, छतों पर और चौकों में सब
रो रोकर आहो-बुका कर रहे हैं। 4हसबोन और
इलियाली मदद के लिए पुकार रहे हैं, और उनकी
आवाज़ें यहज़ तक सुनाई दे रही हैं। इसलिए
मोआब के मुसल्लह मर्द जंग के नारे लगा रहे हैं,
गो वह अंदर ही अंदर काँप रहे हैं।

5मेरा दिल मोआब को देखकर रो रहा है।
उसके मुहाजिरीन भागकर ज़ुग़र और इजलत-
शलीशियाह तक पहुँच रहे हैं। लोग रो रोकर
लूहीत की तरफ़ चढ़ रहे हैं, वह होरोनायम तक
जानेवाले रास्ते पर चलते हुए अपनी तबाही पर
गिर्याओ-ज़ारी कर रहे हैं। 6निमरीम का पानी
सूख गया है, घास झुलस गई है, तमाम हरियाली
ख़त्म हो गई है, सब्ज़ाज़ारों का नामो-निशान तक
नहीं रहा। 7इसलिए लोग अपना सारा जमाशुदा
सामान समेटकर वादीए-सफ़ेदा को उबूर कर रहे
हैं। 8चीख़ें मोआब की हुदूद तक गूँज रही हैं, हाय

हाय की आवाज़ें इजलायम और बैर-एलीम तक
सुनाई दे रही हैं। 9लेकिन गो दीमोन की नहर ख़ून
से सुर्ख़ हो गई है, ताहम मैं उस पर मज़ीद मुसीबत
लाऊँगा। मैं शेरबबर भेजूँगा जो उन पर भी धावा
बोलेंगे जो मोआब से बच निकले होंगे और उन पर
भी जो मुल्क में पीछे रह गए होंगे।

मोआब इसराईलियों से मदद माँगेगा

16 मुल्क का जो हुक्मरान रेगिस्तान के
पार सिला में है उस की तरफ़ से
सिय्यून बेटी के पहाड़ पर मेंढा भेज दो। 2मोआब
की बेटियाँ घोंसले से भगाए हुए परिंदों की तरह
दरियाए-अरनोन के पायाब मक़ामों पर इधर-
उधर फड़फड़ा रही हैं। 3“हमें कोई मशवरा दे,
कोई फ़ैसला पेश कर। हम पर साया डाल ताकि
दोपहर की तपती धूप हम पर न पड़े बल्कि रात
जैसा अंधेरा हो। मफ़रूरों को छुपा दे, दुश्मन को
पनाहगुज़ीनों के बारे में इत्तला न दे। 4मोआबी
मुहाजिरों को अपने पास ठहरने दे, मोआबी
मफ़रूरों के लिए पनाहगाह हो ताकि वह हलाकू
के हाथ से बच जाएँ।”

लेकिन ज़ालिम का अंजाम आनेवाला है।
तबाही का सिलसिला ख़त्म हो जाएगा, और
कुचलनेवाला मुल्क से ग़ायब हो जाएगा। 5तब
अल्लाह अपने फ़ज़्ल से दाऊद के घराने के लिए
तख़्त क़ायम करेगा। और जो उस पर बैठेगा वह
वफ़ादारी से हुकूमत करेगा। वह इनसाफ़ का
तालिब रहकर अदालत करेगा और रास्ती क़ायम
रखने में माहिर होगा।

मोआब की मुनासिब सज़ा पर अफ़सोस

6हमने मोआब के तकब्बुर के बारे में सुना है,
क्योंकि वह हद से ज़्यादा मुतकब्बिर, मग़रूर,
घमंडी और शोख़चश्म है। लेकिन उस की डींगें
अबस हैं।

7इसलिए मोआबी अपने आप पर आहो-ज़ारी
कर रहे, सब मिलकर आहें भर रहे हैं। वह
सिसक सिसककर क़ीर-हरासत की किशमिश
की टिक्कियाँ याद कर रहे हैं, उनका निहायत
बुरा हाल हो गया है। 8हसबोन के बाग़ मुरझा
गए, सिबमाह के अंगूर ख़त्म हो गए हैं। पहले तो
उनकी अनोखी बेलें याज़ेर बल्कि रेगिस्तान तक
फैली हुई थीं, उनकी कोंपलें समुंदर को भी पार
करती थीं। लेकिन अब ग़ैरक़ौम हुक्मरानों ने यह
उम्दा बेलें तोड़ डाली हैं। 9इसलिए मैं याज़ेर के
साथ मिलकर सिबमाह के अंगूरों के लिए आहो-
ज़ारी कर रहा हूँ। ऐ हसबोन, ऐ इलियाली, तुम्हारी
हालत देखकर मेरे बेहद आँसू बह रहे हैं। क्योंकि
जब तुम्हारा फल पक गया और तुम्हारी फ़सल
तैयार हुई तब जंग के नारे तुम्हारे इलाक़े में गूँज
उठे। 10अब ख़ुशी-ओ-शादमानी बाग़ों से ग़ायब
हो गई है, अंगूर के बाग़ों में गीत और ख़ुशी के नारे
बंद हो गए हैं। कोई नहीं रहा जो हौज़ों में अंगूर
को रौंदकर रस निकाले, क्योंकि मैंने फ़सल की
ख़ुशियाँ ख़त्म कर दी हैं।

11मेरा दिल सरोद के मातमी सुर निकाल-
कर मोआब के लिए नोहा कर रहा है, मेरी जान
क़ीर-हरासत के लिए आहें भर रही है। 12जब
मोआब अपनी पहाड़ी क़ुरबानगाह के सामने
हाज़िर होकर सिजदा करता है तो बेकार मेहनत
करता है। जब वह पूजा करने के लिए अपने मंदिर
में दाख़िल होता है तो फ़ायदा कोई नहीं होता।

13रब ने माज़ी में इन बातों का एलान किया।
14लेकिन अब वह मज़ीद फ़रमाता है, “तीन साल
के अंदर अंदर[a] मोआब की तमाम शानो-शौकत
और धूमधाम जाती रहेगी। जो थोड़े-बहुत बचेंगे,
वह निहायत ही कम होंगे।”

शाम और इसराईल की तबाही

17 दमिश्क़ शहर के बारे में अल्लाह का
फ़रमान :

“दमिश्क़ मिट जाएगा, मलबे का ढेर ही रह
जाएगा। 2अरोईर के शहर भी वीरानो-सुनसान
हो जाएंगे। तब रेवड़ ही उनकी गलियों में चरेंगे

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : मज़दूर के-से तीन साल के अंदर अंदर।

और आराम करेंगे। कोई नहीं होगा जो उन्हें
भगाए। 3इसराईल के क़िलाबंद शहर नेस्तो-
नाबूद हो जाएंगे, और दमिश्क़ की सलतनत जाती
रहेगी। शाम के जो लोग बच निकलेंगे उनका और
इसराईल की शानो-शौकत का एक ही अंजाम
होगा।” यह है रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान।

4“उस दिन याक़ूब की शानो-शौकत कम और
उसका मोटा-ताज़ा जिस्म लाग़र होता जाएगा।
5फ़सल की कटाई की-सी हालत होगी। जिस
तरह काटनेवाला एक हाथ से गंदुम के डंठल को
पकड़कर दूसरे से बालों को काटता है उसी तरह
इसराईलियों को काटा जाएगा। और जिस तरह
वादीए-रफ़ाईम में ग़रीब लोग फ़सल काटनेवालों
के पीछे पीछे चलकर बची हुई बालियों को चुनते
हैं उसी तरह इसराईल के बचे हुओं को चुना
जाएगा। 6ताहम कुछ न कुछ बचा रहेगा, उन
दो-चार ज़ैतूनों की तरह जो चुनते वक़्त दरख़्त की
चोटी पर रह जाते हैं। दरख़्त को डंडे से झाड़ने के
बावुजूद कहीं न कहीं चंद एक लगे रहेंगे।” यह है
रब, इसराईल के ख़ुदा का फ़रमान।

7तब इनसान अपनी नज़र अपने ख़ालिक़ की
तरफ़ उठाएगा, और उस की आँखें इसराईल के
क़ुद्दूस की तरफ़ देखेंगी। 8आइंदा न वह अपने
हाथों से बनी हुई क़ुरबानगाहों को तकेगा, न
अपनी उँगलियों से बने हुए यसीरत देवी के खंबों
और बख़ूर की क़ुरबानगाहों पर ध्यान देगा।

9उस वक़्त इसराईली अपने क़िलाबंद शहरों
को यों छोड़ेंगे जिस तरह कनानियों ने अपने
जंगलों और पहाड़ों की चोटियों को इसराईलियों
के आगे आगे छोड़ा था। सब कुछ वीरानो-सुनसान
होगा। 10अफ़सोस, तू अपनी नजात के ख़ुदा को
भूल गया है। तुझे वह चट्टान याद न रही जिस पर
तू पनाह ले सकता है। चुनाँचे अपने प्यारे देवताओं
के बाग़ लगाता जा, और उनमें परदेसी अंगूर की
क़लमें लगाता जा। 11शायद ही वह लगाते वक़्त
तेज़ी से उगने लगें, शायद ही उनके फूल उसी
सुबह खिलने लगें। तो भी तेरी मेहनत अबस है।
तू कभी भी उनके फल से लुत्फ़अंदोज़ नहीं होगा
बल्कि महज़ बीमारी और लाइलाज दर्द की फ़सल
काटेगा।

दीगर क़ौमों के बेकार हमले

12बेशुमार क़ौमों का शोर-शराबा सुनो जो
तूफ़ानी समुंदर की-सी ठाठें मार रही हैं। उम्मतों
का ग़ुल-ग़पाड़ा सुनो जो थपेड़े मारनेवाली मौजों
की तरह गरज रही हैं। 13क्योंकि ग़ैरक़ौमें
पहाड़नुमा लहरों की तरह मुतलातिम हैं। लेकिन
रब उन्हें डाँटेगा तो वह दूर दूर भाग जाएँगी।
जिस तरह पहाड़ों पर भूसा हवा के झोंकों से
उड़ जाता और लुढ़कबूटी आँधी में चक्कर खाने
लगती है उसी तरह वह फ़रार हो जाएँगी। 14शाम
को इसराईल सख़्त घबरा जाएगा, लेकिन पौ
फटने से पहले पहले उसके दुश्मन मर गए होंगे।
यही हमें लूटनेवालों का नसीब, हमारी ग़ारतगरी
करनेवालों का अंजाम होगा।

एथोपिया की अदालत

18 फड़फड़ाते बादबानों[a] के मुल्क पर
अफ़सोस! एथोपिया पर अफ़सोस
जहाँ कूश के दरिया बहते हैं, 2और जो अपने
क़ासिदों को आबी नरसल की कश्तियों में
बिठाकर समुंदरी सफ़रों पर भेजता है। ऐ
तेज़रौ क़ासिदो, लंबे क़द और चिकनी-चुपड़ी
जिल्दवाली क़ौम के पास जाओ। उस क़ौम के
पास पहुँचो जिससे दीगर क़ौमें दूर-दराज़ इलाक़ों
तक डरती हैं, जो ज़बरदस्ती सब कुछ पाँवों तले
कुचल देती है, और जिसका मुल्क दरियाओं से
बटा हुआ है।

3ऐ दुनिया के तमाम बाशिंदो, ज़मीन के तमाम
बसनेवालो! जब पहाड़ों पर झंडा गाढ़ा जाए तो
उस पर ध्यान दो! जब नरसिंगा बजाया जाए तो
उस पर ग़ौर करो! 4क्योंकि रब मुझसे हमकलाम
हुआ है, “मैं अपनी सुकूनतगाह से ख़ामोशी से

[a]एक और मुमकिना तरजुमा : फड़फड़ाती टिड्डियों।

देखता रहूँगा। लेकिन मेरी यह ख़ामोशी दोपहर की चिलचिलाती धूप या मौसमे-गरमा में धुंध के बादल की मानिंद होगी।” 5क्योंकि अंगूर की फ़सल के पकने से पहले ही रब अपना हाथ बढ़ा देगा। फूलों के ख़त्म होने पर जब अंगूर पक रहे होंगे वह कोंपलों को छुरी से काटेगा, फैलती हुई शाख़ों को तोड़ तोड़कर उनकी काँट-छाँट करेगा। 6यही एथोपिया की हालत होगी। उस की लाशों को पहाड़ों के शिकारी परिंदों और जंगली जानवरों के हवाले किया जाएगा। मौसमे-गरमा के दौरान शिकारी परिंदे उन्हें खाते जाएंगे, और सर्दियों में जंगली जानवर लाशों से सेर हो जाएंगे।

7उस वक़्त लंबे क़द और चिकनी-चुपड़ी जिल्दवाली यह क़ौम रब्बुल-अफ़वाज के हुज़ूर तोहफ़ा लाएगी। हाँ, जिन लोगों से दीगर क़ौमें दूर-दराज़ इलाक़ों तक डरती हैं और जो ज़बरदस्ती सब कुछ पाँवों तले कुचल देते हैं वह दरियाओं से बटे हुए अपने मुल्क से आकर अपना तोहफ़ा सिय्यून पहाड़ पर पेश करेंगे, वहाँ जहाँ रब्बुल-अफ़वाज का नाम सुकूनत करता है।

मिसर की अदालत

19 मिसर के बारे में अल्लाह का फ़रमान :

रब तेज़रौ बादल पर सवार होकर मिसर आ रहा है। उसके सामने मिसर के बुत थरथरा रहे हैं और मिसर की हिम्मत टूट गई है। 2“मैं मिसरियों को एक दूसरे के साथ लड़ने पर उकसा दूँगा। भाई भाई के साथ, पड़ोसी पड़ोसी के साथ, शहर शहर के साथ, और बादशाही बादशाही के साथ जंग करेगी। 3मिसर की रूह मुज़तरिब हो जाएगी, और मैं उनके मनसूबों को दरहम-बरहम कर दूँगा। गो वह बुतों, मुरदों की रूहों, उनसे राबिता करनेवालों और क़िस्मत का हाल बतानेवालों से मशवरा करेंगे, 4लेकिन मैं उन्हें एक ज़ालिम मालिक के हवाले कर दूँगा, और एक सख़्त बादशाह उन पर हुकूमत करेगा।” यह है क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान।

5दरियाए-नील का पानी ख़त्म हो जाएगा, वह बिलकुल सूख जाएगा। 6मिसर की नहरों से बदबू फैलेगी बल्कि मिसर के नाले घटते घटते ख़ुश्क हो जाएंगे। नरसल और सरकंडे मुरझा जाएंगे। 7दरियाए-नील के दहाने तक जितनी भी हरियाली और फ़सलें किनारे पर उगती हैं वह सब पज़मुरदा हो जाएँगी और हवा में बिखरकर ग़ायब हो जाएँगी। 8मछेरे आहो-ज़ारी करेंगे, दरिया में काँटा और जाल डालनेवाले घटते जाएंगे। 9सन के रेशों से धागा बनानेवालों को शर्म आएगी, और जूलाहों का रंग फ़क़ पड़ जाएगा। 10कपड़ा बनानेवाले सख़्त मायूस होंगे, तमाम मज़दूर दिल-बरदाश्ता होंगे।

11ज़ुअन के अफ़सर नासमझ ही हैं, फ़िरौन के दाना मुशीर उसे अहमक़ाना मशवरे दे रहे हैं। तुम मिसरी बादशाह के सामने किस तरह दावा कर सकते हो, “मैं दानिशमंदों के हलक़े में शामिल और क़दीम बादशाहों का वारिस हूँ”? 12ऐ फ़िरौन, अब तेरे दानिशमंद कहाँ हैं? वह मालूम करके तुझे बताएँ कि रब्बुल-अफ़वाज मिसर के साथ क्या कुछ करने का इरादा रखता है। 13ज़ुअन के अफ़सर अहमक़ बन बैठे हैं, मेंफ़िस के बुज़ुर्गों ने धोका खाया है। उसके क़बायली सरदारों के फ़रेब से मिसर डगमगाने लगा है। 14क्योंकि रब ने उनमें अबतरी की रूह डाल दी है। जिस तरह नशे में धुत शराबी अपनी क़ै में लड़खड़ाता रहता है उसी तरह मिसर उनके मशवरों से डाँवाँडोल हो गया है, ख़ाह वह क्या कुछ क्यों न करे। 15उस की कोई बात नहीं बनती, ख़ाह सर हो या दुम, कोंपल हो या तना।

16मिसरी उस दिन औरतों जैसे कमज़ोर होंगे। जब रब्बुल-अफ़वाज उन्हें मारने के लिए अपना हाथ उठाएगा तो वह घबराकर काँप उठेंगे। 17मुल्के-यहूदाह मिसरियों के लिए शर्म का बाइस बनेगा। जब भी उसका ज़िक्र होगा तो वह दहशत खाएँगे, क्योंकि उन्हें वह मनसूबा याद आएगा जो रब ने उनके ख़िलाफ़ बाँधा है।

मिसर, असूर और इसराईल मिल कर इबादत करेंगे

18उस दिन मिसर के पाँच शहर कनान की
ज़बान अपनाकर रब्बुल-अफ़वाज के नाम पर
क़सम खाएँगे। उनमें से एक 'तबाही का शहर'
कहलाएगा।[a]

19उस दिन मुल्के-मिसर के बीच में रब के
लिए क़ुरबानगाह मख़सूस की जाएगी, और उस
की सरहद पर रब की याद में सतून खड़ा किया
जाएगा। 20यह दोनों रब्बुल-अफ़वाज की हुज़ूरी
की निशानदेही करेंगे और गवाही देंगे कि वह
मौजूद है। चुनाँचे जब उन पर ज़ुल्म किया जाएगा
तो वह चिल्लाकर उससे फ़रियाद करेंगे, और
रब उनके पास नजातदहिंदा भेज देगा जो उनकी
ख़ातिर लड़कर उन्हें बचाएगा। 21यों रब अपने
आपको मिसरियों पर ज़ाहिर करेगा। उस दिन
वह रब को जान लेंगे, और ज़बह और ग़ल्ला की
क़ुरबानियाँ चढ़ाकर उस की परस्तिश करेंगे। वह
रब के लिए मन्नतें मानकर उनको पूरा करेंगे।
22रब मिसर को मारेगा भी और उसे शफ़ा भी
देगा। मिसरी रब की तरफ़ रुजू करेंगे तो वह
उनकी इल्तिजाओं के जवाब में उन्हें शफ़ा देगा।

23उस दिन एक पक्की सड़क मिसर को असूर
के साथ मुंसलिक कर देगी। असूरी और मिसरी
आज़ादी से एक दूसरे के मुल्क में आएँगे, और
दोनों मिलकर अल्लाह की इबादत करेंगे। 24उस
दिन इसराईल भी मिसर और असूर के इत्तहाद
में शरीक होकर तमाम दुनिया के लिए बरकत
का बाइस होगा। 25क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज उन्हें
बरकत देकर फ़रमाएगा, "मेरी क़ौम मिसर पर
बरकत हो, मेरे हाथों से बने मुल्क असूर पर मेरी
बरकत हो, मेरी मीरास इसराईल पर बरकत हो।"

यसायाह की बरहनगी और मिसर और एथोपिया का अंजाम

20 एक दिन असूरी बादशाह सरजून ने
अपने कमाँडर को अशदूद से लड़ने
भेजा। जब असूरियों ने उस फ़िलिस्ती शहर पर
हमला किया तो वह उनके क़ब्ज़े में आ गया।

2तीन साल पहले रब यसायाह बिन आमूस से
हमकलाम हुआ था, "जा, टाट का जो लिबास तू
पहने रहा है उतार। अपने जूतों को भी उतार।"
नबी ने ऐसा ही किया और इसी हालत में फिरता
रहा था। 3जब अशदूद असूरियों के क़ब्ज़े में आ
गया तो रब ने फ़रमाया, "मेरे ख़ादिम यसायाह
को बरहना और नंगे पाँव फिरते तीन साल हो
गए हैं। इससे उसने अलामती तौर पर इसकी
निशानदेही की है कि मिसर और एथोपिया का
क्या अंजाम होगा। 4शाहे-असूर मिसरी क़ैदियों
और एथोपिया के जिलावतनों को इसी हालत में
अपने आगे आगे हाँकेगा। नौजवान और बुज़ुर्ग
सब बरहना और नंगे पाँव फिरेंगे, वह कमर
से लेकर पाँव तक बरहना होंगे। मिसर कितना
शरमिंदा होगा।

5यह देखकर फ़िलिस्ती दहशत खाएँगे। उन्हें
शर्म आएगी, क्योंकि वह एथोपिया से उम्मीद
रखते और अपने मिसरी इत्तहादी पर फ़ख़र करते
थे। 6उस वक़्त इस साहिली इलाक़े के बाशिंदे
कहेंगे, 'देखो उन लोगों की हालत जिनसे हम
उम्मीद रखते थे। उन्हीं के पास हम भागकर आए
ताकि मदद और असूरी बादशाह से छुटकारा मिल
जाए। अगर उनके साथ ऐसा हुआ तो हम किस
तरह बचेंगे'?"

[a]ग़ालिबन इससे मुराद सूरज का शहर यानी Heliopolis है।

बाबल की तबाही का एलान

21 दलदल के इलाक़े[a] के बारे में अल्लाह का फ़रमान :

जिस तरह दश्ते-नजब में तूफ़ान के तेज़ झोंके बार बार आ पड़ते हैं उसी तरह आफ़त बयाबान से आएगी, दुश्मन दहशतनाक मुल्क से आकर तुझ पर टूट पड़ेगा। 2रब ने हौलनाक रोया में मुझ पर ज़ाहिर किया है कि नमकहराम और हलाकू हरकत में आ गए हैं। ऐ ऐलाम चल, बाबल पर हमला कर! ऐ मादी उठ, शहर का मुहासरा कर! मैं होने दूँगा कि बाबल के मज़लूमों की आहें बंद हो जाएँगी।

3इसलिए मेरी कमर शिद्दत से लरज़ने लगी है। दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की-सी घबराहट मेरी अंतड़ियों को मरोड़ रही है। जो कुछ मैंने सुना है उससे मैं तड़प उठा हूँ, और जो कुछ मैंने देखा है, उससे मैं हवासबाख़्ता हो गया हूँ। 4मेरा दिल धड़क रहा है, कपकपी मुझ पर तारी हो गई है। पहले शाम का धुँधलका मुझे प्यारा लगता था, लेकिन अब रोया को देखकर वह मेरे लिए दहशत का बाइस बन गया है।

5ताहम बाबल में लोग मेज़ लगाकर क़ालीन बिछा रहे हैं। बेपरवाई से वह खाना खा रहे और मै पी रहे हैं। ऐ अफ़सरो, उठो! अपनी ढालों पर तेल लगाकर लड़ने के लिए तैयार हो जाओ!

6रब ने मुझे हुक्म दिया, "जाकर पहरेदार खड़ा कर दे जो तुझे हर नज़र आनेवाली चीज़ की इत्तला दे। 7ज्योंही दो घोड़ोंवाले रथ या गधों और ऊँटों पर सवार आदमी दिखाई दें तो ख़बरदार! पहरेदार पूरी तवज्जुह दे।"

8तब पहरेदार शेरबबर की तरह पुकार उठा, "मेरे आक़ा, रोज़ बरोज़ मैं पूरी वफ़ादारी से अपनी बुर्जी पर खड़ा रहा हूँ, और रातों मैं तैयार रहकर यहाँ पहरादारी करता आया हूँ। 9अब वह देखो! दो घोड़ोंवाला रथ आ रहा है जिस पर आदमी सवार है। अब वह जवाब में कह रहा है, 'बाबल गिर गया, वह गिर गया है! उसके तमाम बुत चकनाचूर होकर ज़मीन पर बिखर गए हैं'।"

10ऐ गाहने की जगह पर कुचली हुई[b] मेरी क़ौम! जो कुछ इसराईल के ख़ुदा, रब्बुल-अफ़वाज ने मुझे फ़रमाया है उसे मैंने तुम्हें सुना दिया है।

अदोम की हालत : सुबह होने में कितनी देर है?

11अदोम[c] के बारे में रब का फ़रमान :

सईर के पहाड़ी इलाक़े से कोई मुझे आवाज़ देता है, "ऐ पहरेदार, सुबह होने में कितनी देर बाक़ी है? ऐ पहरेदार, सुबह होने में कितनी देर बाक़ी है?" 12पहरेदार जवाब देता है, "सुबह होनेवाली है, लेकिन रात भी। अगर आप मज़ीद पूछना चाहें तो दुबारा आकर पूछ लें।"

मुल्के-अरब का अंजाम

13मुल्के-अरब[d] के बारे में रब का फ़रमान : ऐ ददानियों के क़ाफ़िलो, मुल्के-अरब के जंगल में रात गुज़ारो। 14ऐ मुल्के-तैमा के बाशिंदो, पानी लेकर प्यासों से मिलने जाओ! पनाहगुज़ीनों के पास जाकर उन्हें रोटी खिलाओ! 15क्योंकि वह तलवार से लैस दुश्मन से भाग रहे हैं, ऐसे लोगों से जो तलवार थामे और कमान ताने उनसे सख़्त लड़ाई लड़े हैं।

16क्योंकि रब ने मुझसे फ़रमाया, "एक साल के अंदर अंदर[e] क़ीदार की तमाम शानो-शौकत ख़त्म हो जाएगी। 17क़ीदार के ज़बरदस्त तीरअंदाज़ों में से थोड़े ही बच पाएँगे।" यह रब, इसराईल के ख़ुदा का फ़रमान है।

यरूशलम का अंजाम

22 रोया की वादी यरूशलम के बारे में रब का फ़रमान :

[a]यानी बाबल।
[b]लफ़्ज़ी तरजुमा : गाही गई।
[c]इब्रानी में दूमा जिस का मतलब अदोम या ख़ामोशी है।
[d]या बयाबान।
[e]लफ़्ज़ी तरजुमा : मज़दूर के-से एक साल के अंदर अंदर।

क्या हुआ है? सब छतों पर क्यों चढ़ गए हैं?
2हर तरफ़ शोर-शराबा मच रहा है, पूरा शहर बग़लें
बजा रहा है। यह कैसी बात है? तेरे मक़तूल न
तलवार से, न मैदाने-जंग में मरे। 3क्योंकि तेरे
तमाम लीडर मिलकर फ़रार हुए और फिर तीर
चलाए बग़ैर पकड़े गए। बाक़ी जितने लोग तुझमें
थे वह भी दूर दूर भागना चाहते थे, लेकिन उन्हें
भी क़ैद किया गया।

4इसलिए मैंने कहा, "अपना मुँह मुझसे फेरकर
मुझे ज़ार ज़ार रोने दो। मुझे तसल्ली देने पर
बज़िद न रहो जबकि मेरी क़ौम तबाह हो रही
है।" 5क्योंकि क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज
रोया की वादी पर हौलनाक दिन लाया है। हर
तरफ़ घबराहट, कुचले हुए लोग और अबतरी
नज़र आती है। शहर की चारदीवारी टूटने लगी
है, पहाड़ों में चीख़ें गूँज रही हैं।

6ऐलाम के फ़ौजी अपने तरकश उठाकर रथों,
आदमियों और घोड़ों के साथ आ गए हैं। क़ीर के
मर्द भी अपनी ढालें ग़िलाफ़ से निकालकर तुझसे
लड़ने के लिए निकल आए हैं। 7यरूशलम के
गिर्दो-नवाह की बेहतरीन वादियाँ दुश्मन के रथों से
भर गई हैं, और उसके घुड़सवार शहर के दरवाज़े
पर हमला करने के लिए उसके सामने खड़े हो गए
हैं। 8जो भी बंदोबस्त यहूदाह ने अपने तहफ़्फ़ुज़
के लिए कर लिया था वह ख़त्म हो गया है।

उस दिन तुम लोगों ने क्या किया? तुम
'जंगलघर' नामी सिलाहख़ाने में जाकर असला
का मुआयना करने लगे। 9-11तुमने उन मुतअद्दिद
दराड़ों का जायज़ा लिया जो दाऊद के शहर की
फ़सील में पड़ गई थीं। उसे मज़बूत करने के लिए
तुमने यरूशलम के मकानों को गिनकर उनमें से
कुछ गिरा दिए। साथ साथ तुमने निचले तालाब
का पानी जमा किया। ऊपर के पुराने तालाब से
निकलनेवाला पानी जमा करने के लिए तुमने
अंदरूनी और बैरूनी फ़सील के दरमियान एक
और तालाब बना लिया। लेकिन अफ़सोस, तुम
उस की परवा नहीं करते जो यह सारा सिलसिला
अमल में लाया। उस पर तुम तवज्जुह ही नहीं देते
जिसने बड़ी देर पहले इसे तश्कील दिया था।

12उस वक़्त क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़-
वाज ने हुक्म दिया कि गिर्याओ-ज़ारी करो, अपने
बालों को मुँडवाकर टाट का लिबास पहन लो।
13लेकिन क्या हुआ? तमाम लोग शादियाना
बजाकर ख़ुशी मना रहे हैं। हर तरफ़ बैलों और
भेड़-बकरियों को ज़बह किया जा रहा है। सब
गोश्त और मै से लुत्फ़अंदोज़ होकर कह रहे हैं,
"आओ, हम खाएँ-पिएँ, क्योंकि कल तो मर ही
जाना है।"

14लेकिन रब्बुल-अफ़वाज ने मेरी मौजूद-
गी में ही ज़ाहिर किया है कि यक़ीनन यह क़ुसूर
तुम्हारे मरते दम तक मुआफ़ नहीं किया जाएगा।[a]
यह क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान
है।

रब शिबनाह की जगह इलियाक़ीम को महल का निगरान मुक़र्रर करेगा

15क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज फ़र-
माता है, "उस निगरान शिबनाह के पास चल जो
महल का इंचार्ज है। उसे पैग़ाम पहुँचा दे, 16'तू
यहाँ क्या कर रहा है? किसने तुझे यहाँ अपने
लिए मक़बरा तराशने की इजाज़त दी? तू कौन है
कि बुलंदी पर अपने लिए मज़ार बनवाए, चट्टान
में आरामगाह खुदवाए? 17ऐ मर्द, ख़बरदार!
रब तुझे ज़ोर से दूर दूर तक फेंकनेवाला है। वह
तुझे पकड़ लेगा 18और मरोड़ मरोड़कर गेंद की
तरह एक वसी मुल्क में फेंक देगा। वहीं तू मरेगा,
वहीं तेरे शानदार रथ पड़े रहेंगे। क्योंकि तू अपने
मालिक के घराने के लिए शर्म का बाइस बना
है। 19मैं तुझे बरतरफ़ करूँगा, और तू ज़बरदस्ती
अपने ओहदे और मंसब से फ़ारिग़ कर दिया
जाएगा।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : यक़ीनन इस क़ुसूर का कफ़्फ़ारा
तुम्हारे मरते दम तक नहीं दिया जाएगा।

20उस दिन मैं अपने ख़ादिम इलियाक़ीम बिन ख़िलक़ियाह को बुलाऊँगा। 21मैं उसे तेरा ही सरकारी लिबास और कमरबंद पहनाकर तेरा इख़्तियार उसे दे दूँगा। उस वक़्त वह यहूदाह के घराने और यरूशलम के तमाम बाशिंदों का बाप बनेगा। 22मैं उसके कंधे पर दाऊद के घराने की चाबी रख दूँगा। जो दरवाज़ा वह खोलेगा उसे कोई बंद नहीं कर सकेगा, और जो दरवाज़ा वह बंद करेगा उसे कोई खोल नहीं सकेगा। 23वह खूँटी की मानिंद होगा जिसको मैं ज़ोर से ठोंककर मज़बूत दीवार में लगा दूँगा। उससे उसके बाप के घराने को शराफ़त का ऊँचा मक़ाम हासिल होगा।

24लेकिन फिर आबाई घराने का पूरा बोझ उसके साथ लटक जाएगा। तमाम औलाद और रिश्तेदार, तमाम छोटे बरतन प्यालों से लेकर मरतबानों तक उसके साथ लटक जाएंगे। 25रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि उस वक़्त मज़बूत दीवार में लगी यह खूँटी निकल जाएगी। उसे तोड़ा जाएगा तो वह गिर जाएगी, और उसके साथ लटका सारा सामान टूट जाएगा'।" यह रब का फ़रमान है।

सूर और सैदा की तबाही

23 सूर के बारे में अल्लाह का फ़रमान :

ऐ तरसीस के उम्दा जहाज़ो,[a] वावैला करो! क्योंकि सूर तबाह हो गया है, वहाँ टिकने की जगह तक नहीं रही। जज़ीराए-क़ुबरुस से वापस आते वक़्त उन्हें इत्तला दी गई। 2ऐ साहिली इलाक़े में बसनेवालो, आहो-ज़ारी करो! ऐ सैदा के ताजिरो, मातम करो! तेरे क़ासिद समुंदर को पार करते थे, 3वह गहरे पानी पर सफ़र करते हुए मिसर[b] का ग़ल्ला तुझ तक पहुँचाते थे, क्योंकि तू ही दरियाए-नील की फ़सल से नफ़ा कमाता था। यों तू तमाम क़ौमों का तिजारती मरकज़ बना।

4लेकिन अब शर्मसार हो, ऐ सैदा, क्योंकि समुंदर का क़िलाबंद शहर सूर कहता है, "हाय, सब कुछ तबाह हो गया है। अब ऐसा लगता है कि मैंने न कभी दर्दे-ज़ह में मुब्तला होकर बच्चे जन्म दिए, न कभी बेटे-बेटियाँ पाले।"

5जब यह ख़बर मिसर तक पहुँचेगी तो वहाँ के बाशिंदे तड़प उठेंगे।

6चुनाँचे समुंदर को पार करके तरसीस तक पहुँचो! ऐ साहिली इलाक़े के बाशिंदो, गिर्याओ-ज़ारी करो! 7क्या यह वाक़ई तुम्हारा वह शहर है जिसकी रंगरलियाँ मशहूर थीं, वह क़दीम शहर जिसके पाँव उसे दूर-दराज़ इलाक़ों तक ले गए ताकि वहाँ नई आबादियाँ क़ायम करे? 8किसने सूर के ख़िलाफ़ यह मनसूबा बाँधा? यह शहर तो पहले बादशाहों को तख़्त पर बिठाया करता था, और उसके सौदागर रईस थे, उसके ताजिर दुनिया के शुरफ़ा में गिने जाते थे। 9रब्बुल-अफ़वाज ने यह मनसूबा बाँधा ताकि तमाम शानो-शौकत का घमंड पस्त और दुनिया के तमाम ओहदेदार ज़ेर हो जाएँ।

10ऐ तरसीस बेटी, अब से अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी कर, उन किसानों की तरह काश्तकारी कर जो दरियाए-नील के किनारे अपनी फ़सलें लगाते हैं, क्योंकि तेरी बंदरगाह जाती रही है। 11रब ने अपने हाथ को समुंदर के ऊपर उठाकर ममालिक को हिला दिया। उसने हुक्म दिया है कि कनान[c] के क़िले बरबाद हो जाएँ। 12उसने फ़रमाया, "ऐ सैदा बेटी, अब से तेरी रंगरलियाँ बंद रहेंगी। ऐ कुँवारी जिसकी इसमतदरी हुई है, उठ और समुंदर को पार करके क़ुबरुस में पनाह ले। लेकिन वहाँ भी तू आराम नहीं कर पाएगी।"

[a]'तरसीस का जहाज़' न सिर्फ़ मुल्के-तरसीस के जहाज़ के लिए बल्कि हर उम्दा क़िस्म के तिजारती जहाज़ के लिए इस्तेमाल होता था। देखिए आयत 14।

[b]इबरानी में 'सैहूर' मुस्तामल है जो दरियाए-नील की एक शाख़ है।

[c]कनान से मुराद लुबनान यानी क़दीम ज़माने का Phoenicia है।

13मुल्के-बाबल पर नज़र डालो। यह क़ौम
तो नेस्तो-नाबूद हो गई, उसका मुल्क जंगली
जानवरों का घर बन गया है। असूरियों ने बुर्ज
बनाकर उसे घेर लिया और उसके क़िलों को ढा
दिया। मलबे का ढेर ही रह गया है।
14ऐ तरसीस के उम्दा जहाज़ो, हाय हाय करो,
क्योंकि तुम्हारा क़िला तबाह हो गया है!
15तब सूर इनसान की याद से उतर जाएगा।
लेकिन 70 साल यानी एक बादशाह की मुद्दतुल-
उम्र के बाद सूर उस तरह बहाल हो जाएगा जिस
तरह गीत में कसबी के बारे में गाया जाता है,
16“ऐ फ़रामोश कसबी, चल! अपना सरोद
पकड़कर गलियों में फिर! सरोद को ख़ूब बजा,
कई एक गीत गा ताकि लोग तुझे याद करें।”
17क्योंकि 70 साल के बाद रब सूर को बहाल
करेगा। कसबी दुबारा पैसे कमाएगी, दुनिया के
तमाम ममालिक उसके गाहक बनेंगे। 18लेकिन
जो पैसे वह कमाएगी वह रब के लिए मख़सूस
होंगे। वह ज़ख़ीरा करने के लिए जमा नहीं होंगे
बल्कि रब के हुज़ूर ठहरनेवालों को दिए जाएंगे
ताकि जी भरकर खा सकें और शानदार कपड़े
पहन सकें।

रब तमाम दुनिया की अदालत करता है

24 देखो, रब दुनिया को वीरानो-सुनसान
कर देगा, रूए-ज़मीन को उलट-पलट
करके उसके बाशिंदों को मुंतशिर कर देगा।
2किसी को भी छोड़ा नहीं जाएगा, ख़ाह इमाम
हो या आम शख़्स, मालिक या नौकर, मालिकन
या नौकरानी, बेचनेवाला या ख़रीदार, उधार लेने
या देनेवाला, क़र्ज़दार या क़र्ज़ख़ाह। 3ज़मीन
मुकम्मल तौर पर उजड़ जाएगी, उसे सरासर
लूटा जाएगा। रब ही ने यह सब कुछ फ़रमाया
है। 4ज़मीन सूख सूखकर सुकड़ जाएगी, दुनिया
ख़ुश्क होकर मुरझा जाएगी। उसके बड़े बड़े लोग
भी निढाल हो जाएंगे। 5ज़मीन के अपने बाशिंदों
ने उस की बेहुरमती की है, क्योंकि वह शरीअत
के ताबे न रहे बल्कि उसके अहकाम को तबदील
करके अल्लाह के साथ का अबदी अहद तोड़ दिया
है।
6इसी लिए ज़मीन लानत का लुक़्मा बन गई
है, उस पर बसनेवाले अपनी सज़ा भुगत रहे हैं।
इसी लिए दुनिया के बाशिंदे भस्म हो रहे हैं और
कम ही बाक़ी रह गए हैं। 7अंगूर का ताज़ा रस
सूखकर ख़त्म हो रहा, अंगूर की बेलें मुरझा रही
हैं। जो पहले ख़ुशबाश थे वह आहें भरने लगे
हैं। 8दफ़ों की ख़ुशकुन आवाज़ें बंद, रंगरलियाँ
मनानेवालों का शोर बंद, सरोदों के सुरीले नग़मे
बंद हो गए हैं। 9अब लोग गीत गा गाकर मै
नहीं पीते बल्कि शराब उन्हें कड़वी ही लगती
है। 10वीरानो-सुनसान शहर तबाह हो गया है,
हर घर के दरवाज़े पर कुंडी लगी है ताकि अंदर
घुसनेवालों से महफ़ूज़ रहे। 11गलियों में लोग
गिर्याओ-ज़ारी कर रहे हैं कि मै ख़त्म है। हर ख़ुशी
दूर हो गई है, हर शादमानी ज़मीन से ग़ायब है।
12शहर में मलबे के ढेर ही रह गए हैं, उसके
दरवाज़े टुकड़े टुकड़े हो गए हैं।
13क्योंकि मुल्क के दरमियान और अक़-
वाम के बीच में यही सूरते-हाल होगी कि चंद
एक ही बच पाएँगे, बिलकुल उन दो-चार ज़ैतूनों
की मानिंद जो दरख़्त को झाड़ने के बावुजूद उस
पर रह जाते हैं, या उन दो-चार अंगूरों की तरह
जो फ़सल चुनने के बावुजूद बेलों पर लगे रहते
हैं। 14लेकिन यह चंद एक ही पुकारकर ख़ुशी
के नारे लगाएँगे। मग़रिब से वह रब की अज़मत
की सताइश करेंगे। 15चुनाँचे मशरिक़ में रब को
जलाल दो, जज़ीरों में इसराईल के ख़ुदा के नाम
की ताज़ीम करो। 16हमें दुनिया की इंतहा से गीत
सुनाई दे रहे हैं, “रास्त ख़ुदा की तारीफ़ हो!”
लेकिन मैं बोल उठा, “हाय, मैं घुल घुलकर
मर रहा हूँ, मैं घुल घुलकर मर रहा हूँ! मुझ पर
अफ़सोस, क्योंकि बेवफ़ा अपनी बेवफ़ाई दिखा
रहे हैं, बेवफ़ा खुले तौर पर अपनी बेवफ़ाई दिखा
रहे हैं!” 17ऐ दुनिया के बाशिंदो, तुम दहशतनाक
मुसीबत, गढ़ों और फंदों में फँस जाओगे। 18तब
जो हौलनाक आवाज़ों से भागकर बच जाए वह

गढ़े में गिर जाएगा, और जो गढ़े से निकल जाए
वह फंदे में फँस जाएगा। क्योंकि आसमान के
दरीचे खुल रहे और ज़मीन की बुनियादें हिल रही
हैं। 19ज़मीन कड़क से फ़ट रही है। वह डगमगा
रही, झूम रही, 20नशे में आए शराबी की तरह
लड़खड़ा रही और कच्ची झोंपड़ी की तरह झूल
रही है। आख़िरकार वह अपनी बेवफ़ाई के बोझ
तले इतने धड़ाम से गिरेगी कि आइंदा कभी नहीं
उठने की।

21उस दिन रब आसमान के लशकर और
ज़मीन के बादशाहों से जवाब तलब करेगा।
22तब वह गिरिफ़्तार होकर गढ़े में जमा होंगे,
उन्हें क़ैदख़ाने में डालकर मुतअद्दिद दिनों के
बाद सज़ा मिलेगी। 23उस वक़्त चाँद नादिम
होगा और सूरज शर्म खाएगा, क्योंकि रब्बुल-
अफ़वाज कोहे-सिय्यून पर तख़्तनशीन होगा। वहाँ
यरूशलम में वह बड़ी शानो-शौकत के साथ अपने
बुज़ुर्गों के सामने हुकूमत करेगा।

नजात के लिए अल्लाह की तारीफ़

25 ऐ रब, तू मेरा ख़ुदा है, मैं तेरी ताज़ीम
और तेरे नाम की तारीफ़ करूँगा।
क्योंकि तूने बड़ी वफ़ादारी से अनोखा काम करके
क़दीम ज़माने में बँधे हुए मनसूबों को पूरा किया
है।

2तूने शहर को मलबे का ढेर बनाकर हमलों
से महफ़ूज़ आबादी को खंडरात में तबदील कर
दिया। ग़ैरमुल्कियों का क़िलाबंद महल यों ख़ाक
में मिलाया गया कि आइंदा कभी शहर नहीं
कहलाएगा, कभी अज़ सरे-नौ तामीर नहीं होगा।
3यह देखकर एक ज़ोरावर क़ौम तेरी ताज़ीम
करेगी, ज़बरदस्त अक़वाम के शहर तेरा ख़ौफ़
मानेंगे। 4क्योंकि तू पस्तहालों के लिए क़िला और
मुसीबतज़दा ग़रीबों के लिए पनाहगाह साबित
हुआ है। तेरी आड़ में इनसान तूफ़ान और गरमी
की शिद्दत से महफ़ूज़ रहता है। गो ज़बरदस्तों
की फूँकें बारिश की बौछाड़ 5या रेगिस्तान में
तपिश जैसी क्यों न हों, ताहम तू ग़ैरमुल्कियों
की गरज को रोक देता है। जिस तरह बादल के
साये से झुलसती गरमी जाती रहती है, उसी तरह
ज़बरदस्तों की शेख़ी को तू बंद कर देता है।

यरूशलम में बैनुल- अक़वामी ज़ियाफ़त

6यहीं कोहे-सिय्यून पर रब्बुल-अफ़वाज
तमाम अक़वाम की ज़बरदस्त ज़ियाफ़त करेगा।
बेहतरीन क़िस्म की क़दीम और साफ़-शफ़्फ़ाफ़
मै पी जाएगी, उम्दा और लज़ीज़तरीन खाना
खाया जाएगा।

7इसी पहाड़ पर वह तमाम उम्मतों पर का
निक़ाब उतारेगा और तमाम अक़वाम पर का परदा
हटा देगा। 8मौत इलाही फ़तह का लुक़्मा होकर
अबद तक नेस्तो-नाबूद रहेगी। तब रब क़ादिरे-
मुतलक़ हर चेहरे के आँसू पोंछकर तमाम दुनिया
में से अपनी क़ौम की रुसवाई दूर करेगा। रब ही ने
यह सब कुछ फ़रमाया है। 9उस दिन लोग कहेंगे,
"यही हमारा ख़ुदा है जिसकी नजात के इंतज़ार में
हम रहे। यही है रब जिससे हम उम्मीद रखते रहे।
आओ, हम शादियाना बजाकर उस की नजात की
ख़ुशी मनाएँ।"

रब मोआब के क़िलों को ढा देगा

10रब का हाथ इस पहाड़ पर ठहरा रहेगा।
लेकिन मोआब को वह यों रौंदेगा जिस तरह भूसा
गोबर में मिलाने के लिए रौंदा जाता है। 11और
गो मोआब हाथ फैलाकर उसमें तैरने की कोशिश
करे तो भी रब उसका ग़ुरूर गोबर में दबाए रखेगा,
चाहे वह कितनी महारत से हाथ-पाँव मारने की
कोशिश क्यों न करे। 12ऐ मोआब, वह तेरी बुलंद
और क़िलाबंद दीवारों को गिराएगा, उन्हें ढाकर
ख़ाक में मिलाएगा।

हमारा ख़ुदा मज़बूत चट्टान है

26 उस दिन मुल्के-यहूदाह में गीत गाया
जाएगा,

“हमारा शहर मज़बूत है, क्योंकि हम अल्लाह
की नजात देनेवाली चारदीवारी और पुश्तों से घिरे
हुए हैं।
2शहर के दरवाज़ों को खोलो ताकि रास्त क़ौम
दाख़िल हो, वह क़ौम जो वफ़ादार रही है।
3ऐ रब, जिसका इरादा मज़बूत है उसे तू
महफ़ूज़ रखता है। उसे पूरी सलामती हासिल है,
क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।
4रब पर अबद तक एतमाद रखो! क्योंकि रब
ख़ुदा अबदी चट्टान है।
5वह बुलंदियों पर रहनेवालों को ज़ेर और ऊँचे
शहर को नीचा करके ख़ाक में मिला देता है।
6ज़रूरतमंद और पस्तहाल उसे पाँवों तले
कुचल देते हैं।”

दुआ

7ऐ अल्लाह, रास्तबाज़ की राह हमवार है,
क्योंकि तू उसका रास्ता चलने के क़ाबिल बना
देता है।
8ऐ रब, हम तेरे इंतज़ार में रहते हैं, उस वक़्त
भी जब तू हमारी अदालत करता है। हम तेरे नाम
और तेरी तमजीद के आरज़ूमंद रहते हैं।
9रात के वक़्त मेरी रूह तेरे लिए तड़पती, मेरा
दिल तेरा तालिब रहता है। क्योंकि दुनिया के
बाशिंदे उस वक़्त इनसाफ़ का मतलब सीखते हैं
जब तू दुनिया की अदालत करता है।

10अफ़सोस, जब बेदीन पर रहम किया जाता
है तो वह इनसाफ़ का मतलब नहीं सीखता बल्कि
इनसाफ़ के मुल्क में भी ग़लत काम करने से बाज़
नहीं रहता, वहाँ भी रब की अज़मत का लिहाज़
नहीं करता।
11ऐ रब, गो तेरा हाथ उन्हें मारने के लिए उठा
हुआ है तो भी वह ध्यान नहीं देते। लेकिन एक
दिन उनकी आँखें खुल जाएँगी, और वह तेरी
अपनी क़ौम के लिए ग़ैरत को देखकर शरमिंदा
हो जाएंगे। तब तू अपनी भस्म करनेवाली आग
उन पर नाज़िल करेगा।
12ऐ रब, तू हमें अमनो-अमान मुहैया करता है
बल्कि हमारी तमाम कामयाबियाँ तेरे ही हाथ से
हासिल हुई हैं।
13ऐ रब हमारे ख़ुदा, गो तेरे सिवा दीगर मालिक
हम पर हुकूमत करते आए हैं तो भी हम तेरे ही
फ़ज़ल से तेरे नाम को याद कर पाए। 14अब
यह लोग मर गए हैं और आइंदा कभी ज़िंदा नहीं
होंगे, उनकी रूहें कूच कर गई हैं और आइंदा कभी
वापस नहीं आएँगी। क्योंकि तूने उन्हें सज़ा देकर
हलाक कर दिया, उनका नामो-निशान मिटा डाला
है।

15ऐ रब, तूने अपनी क़ौम को फ़रोग़ दिया है।
तूने अपनी क़ौम को बड़ा बनाकर अपने जलाल
का इज़हार किया है। तेरे हाथ से उस की सरहद्दें
चारों तरफ़ बढ़ गई हैं।

16ऐ रब, वह मुसीबत में फँसकर तुझे तलाश
करने लगे, तेरी तादीब के बाइस मंत्र फूँकने लगे।
17ऐ रब, तेरे हुज़ूर हम दर्दे-ज़ह में मुब्तला
औरत की तरह तड़पते और चीख़ते-चिल्लाते रहे।
18जनने का दर्द महसूस करके हम पेचो-ताब खा
रहे थे। लेकिन अफ़सोस, हवा ही पैदा हुई। न
हमने मुल्क को नजात दी, न दुनिया के नए बाशिंदे
पैदा हुए।

19लेकिन तेरे मुरदे दुबारा ज़िंदा होंगे, उनकी
लाशें एक दिन जी उठेंगी। ऐ ख़ाक में बसनेवालो,
जाग उठो और ख़ुशी के नारे लगाओ! क्योंकि
तेरी ओस नूरों की शबनम है, और ज़मीन मुरदा
रूहों को जन्म देगी।

रब इसराईल के दुश्मनों से बदला लेगा

20ऐ मेरी क़ौम, जा और थोड़ी देर के लिए
अपने कमरों में छुपकर कुंडी लगा ले। जब तक
रब का ग़ज़ब ठंडा न हो वहाँ ठहरी रह। 21क्योंकि
देख, रब अपनी सुकूनतगाह से निकलने को है
ताकि दुनिया के बाशिंदों को सज़ा दे। तब ज़मीन

अपने आप पर बहाया हुआ ख़ून फ़ाश करेगी और
अपने मक़तूलों को मज़ीद छुपाए नहीं रखेगी।

27 उस दिन रब उस भागने और पेचो-
ताब खानेवाले साँप को सज़ा देगा जो
लिवियातान कहलाता है। अपनी सख़्त, अज़ीम
और ताक़तवर तलवार से वह समुंदर के अज़दहे
को मार डालेगा।

अंगूर के बाग़ का नया गीत

2उस दिन कहा जाएगा,
"अंगूर का कितना ख़ूबसूरत बाग़ है! उस की
तारीफ़ में गीत गाओ! 3मैं, रब ख़ुद ही उसे
सँभालता, उसे मुसलसल पानी देता रहता हूँ।
दिन-रात मैं उस की पहरादारी करता हूँ ताकि कोई
उसे नुक़सान न पहुँचाए।
4अब मेरा ग़ुस्सा ठंडा हो गया है। लेकिन अगर
बाग़ में ऊँटकटारे और ख़ारदार झाड़ियाँ मिल जाएँ
तो मैं उनसे निपट लूँगा, मैं उनसे जंग करके
सबको जला दूँगा। 5लेकिन अगर वह मान जाएँ
तो मेरे पास आकर पनाह लें। वह मेरे साथ सुलह
करें, हाँ मेरे साथ सुलह करें।"

सज़ा के बावुजूद इसराईल पर रहम

6एक वक़्त आएगा कि याक़ूब जड़ पकड़ेगा।
इसराईल को फूल लग जाएंगे, उस की कोंपलें
निकलेंगी और दुनिया उसके फल से भर जाएगी।
7क्या रब ने अपनी क़ौम को यों मारा जिस
तरह उसने इसराईल को मारनेवालों को मारा है?
हरगिज़ नहीं! या क्या इसराईल को यों क़त्ल
किया गया जिस तरह उसके क़ातिलों को क़त्ल
किया गया है? 8नहीं, बल्कि तूने उसे डराकर
और भगाकर उससे जवाब तलब किया, तूने
उसके ख़िलाफ़ मशरिक़ से तेज़ आँधी भेजकर
उसे अपने हुज़ूर से निकाल दिया।
9इस तरह याक़ूब के क़ुसूर का कफ़्फ़ारा दिया
जाएगा। और जब इसराईल का गुनाह दूर हो
जाएगा तो नतीजे में वह तमाम ग़लत क़ुरबानगाहों
को चूने के पत्थरों की तरह चकनाचूर करेगा। न
यसीरत देवी के खंबे, न बख़ूर जलाने की ग़लत
क़ुरबानगाहें खड़ी रहेंगी। 10क्योंकि क़िलाबंद
शहर तनहा रह गया है। लोगों ने उसे वीरान
छोड़कर रेगिस्तान की तरह तर्क कर दिया है।
अब से उसमें बछड़े ही चरेंगे। वही उस की गलियों
में आराम करके उस की टहनियों को चबा लेंगे।
11तब उस की शाख़ें सूख जाएँगी और औरतें उन्हें
तोड़ तोड़कर जलाएँगी। क्योंकि यह क़ौम समझ
से ख़ाली है, लिहाज़ा उसका ख़ालिक़ उस पर
तरस नहीं खाएगा, जिसने उसे तश्कील दिया वह
उस पर मेहरबानी नहीं करेगा।
12उस दिन तुम इसराईली ग़ल्ला जैसे होगे,
और रब तुम्हारी बालियों को दरियाए-फ़ुरात से
लेकर मिसर की शिमाली सरहद पर वाक़े वादीए-
मिसर तक काटेगा। फिर वह तुम्हें गाहकर दाना
बदाना तमाम ग़ल्ला इकट्ठा करेगा। 13उस दिन
नरसिंगा बुलंद आवाज़ से बजेगा। तब असूर में
तबाह होनेवाले और मिसर में भगाए हुए लोग
वापस आकर यरूशलम के मुक़द्दस पहाड़ पर रब
को सिजदा करेंगे।

मग़रूर शहर सामरिया मुरझाने वाला फूल है

28 सामरिया पर अफ़सोस जो इस-
राईली शराबियों का शानदार
ताज है। उस शहर पर अफ़सोस जो इस-
राईल की शानो-शौकत था लेकिन अब
मुरझानेवाला फूल है। उस आबादी पर अफ़सोस
जो नशे में धुत लोगों की ज़रख़ेज़ वादी के ऊपर
तख़्तनशीन है। 2देखो, रब एक ज़बरदस्त सूरमा
भेजेगा जो ओलों के तूफ़ान, तबाहकुन आँधी और
सैलाब पैदा करनेवाली मूसलाधार बारिश की तरह
सामरिया पर टूट पड़ेगा और ज़ोर से उसे ज़मीन
पर पटख़ देगा। 3तब इसराईली शराबियों का
शानदार ताज सामरिया पाँवों तले रौंदा जाएगा।
4तब यह मुरझानेवाला फूल जो ज़रख़ेज़ वादी के
ऊपर तख़्तनशीन है और उस की शानो-शौकत
ख़त्म हो जाएगी। उसका हाल फ़सल से पहले

पकनेवाले अंजीर जैसा होगा। क्योंकि ज्योंही
कोई उसे देखे वह उसे तोड़कर हड़प कर लेगा।
5उस दिन रब्बुल-अफ़वाज ख़ुद इसराईल का
शानदार ताज होगा, वह अपनी क़ौम के बचे हुओं
का जलाली सेहरा होगा। 6वह अदालत करनेवाले
को इनसाफ़ की रूह दिलाएगा और शहर के
दरवाज़े पर दुश्मन को पीछे धकेलनेवालों के लिए
ताक़त का बाइस होगा।

यरूशलम के मत्वाले नबी

7लेकिन यह लोग भी मै के असर से डगमगा रहे
और शराब पी पीकर लड़खड़ा रहे हैं। इमाम और
नबी नशे में झूम रहे हैं। मै पीने से उनके दिमाग़ों
में ख़लल आ गया है, शराब पी पीकर वह चक्कर
खा रहे हैं। रोया देखते वक़्त वह झूमते, फ़ैसले
करते वक़्त झूलते हैं। 8तमाम मेज़ें उनकी क़ै से
गंदी हैं, उनकी ग़िलाज़त हर तरफ़ नज़र आती है।
9वह आपस में कहते हैं, "यह शख़्स हमारे
साथ इस क़िस्म की बातें क्यों करता है? हमें
तालीम देते और इलाही पैग़ाम का मतलब सुनाते
वक़्त वह हमें यों समझाता है गोया हम छोटे
बच्चे हों जिनका दूध अभी अभी छुड़ाया गया
हो। 10क्योंकि यह कहता है, 'सव लासव सव
लासव, क़व लाक़व क़व लाक़व, थोड़ा-सा इस
तरफ़ थोड़ा-सा उस तरफ़'।"
11चुनाँचे अब अल्लाह हकलाते हुए होंटों और
ग़ैरज़बानों की मारिफ़त इस क़ौम से बात करेगा।
12गो उसने उनसे फ़रमाया था, "यह आराम की
जगह है। थकेमाँदों को आराम दो, क्योंकि यहीं
वह सुकून पाएँगे।" लेकिन वह सुनने के लिए
तैयार नहीं थे। 13इसलिए आइंदा रब उनसे इन्हीं
अलफ़ाज़ से हमकलाम होगा, "सव लासव सव
लासव, क़व लाक़व कव लाक़व, थोड़ा-सा इस
तरफ़, थोड़ा-सा उस तरफ़।" क्योंकि लाज़िम है
कि वह चलकर ठोकर खाएँ, और धड़ाम से अपनी
पुश्त पर गिर जाएँ, कि वह ज़ख़मी हो जाएँ और
फंदे में फँसकर गिरिफ़्तार हो जाएँ।

अल्लाह का वाज़िह पैग़ाम

14चुनाँचे अब रब का कलाम सुन लो, ऐ
मज़ाक़ उड़ानेवालो, जो यरूशलम में बसनेवाली
इस क़ौम पर हुकूमत करते हो। 15तुम शेख़ी
मारकर कहते हो, "हमने मौत से अहद बाँधा
और पाताल से मुआहदा किया है। इसलिए जब
सज़ा का सैलाब हम पर से गुज़रे तो हमें नुक़सान
नहीं पहुँचाएगा। क्योंकि हमने झूट में पनाह ली
और धोके में छुप गए हैं।" 16इसके जवाब में रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, "देखो, मैं सिय्यून में
एक पत्थर रख देता हूँ, कोने का एक आज़मूदा
और क़ीमती पत्थर जो मज़बूत बुनियाद पर लगा
है। जो ईमान लाएगा वह कभी नहीं हिलेगा।
17इनसाफ़ मेरा फ़ीता और रास्ती मेरी साहूल की
डोरी होगी। इनसे मैं सब कुछ परखूँगा।
ओले उस झूट का सफ़ाया करेंगे जिसमें तुमने
पनाह ली है, और सैलाब तुम्हारी छुपने की
जगह उड़ाकर अपने साथ बहा ले जाएगा। 18तब
तुम्हारा मौत के साथ अहद मनसूख़ हो जाएगा,
और तुम्हारा पाताल के साथ मुआहदा क़ायम नहीं
रहेगा। सज़ा का सैलाब तुम पर से गुज़रकर तुम्हें
पामाल करेगा। 19वह सुबह बसुबह और दिन-रात
गुज़रेगा, और जब भी गुज़रेगा तो तुम्हें अपने साथ
बहा ले जाएगा। उस वक़्त लोग दहशतज़दा होकर
कलाम का मतलब समझेंगे।" 20चारपाई इतनी
छोटी होगी कि तुम पाँव फैलाकर सो नहीं सकोगे।
बिस्तर की चौड़ाई इतनी कम होगी कि तुम उसे
लपेटकर आराम नहीं कर सकोगे।
21क्योंकि रब उठकर यों तुम पर झपट पड़ेगा
जिस तरह पराज़ीम पहाड़ के पास फ़िलिस्तियों
पर झपट पड़ा। जिस तरह वादीए-जिबऊन में
अमोरियों पर टूट पड़ा उसी तरह वह तुम पर टूट
पड़ेगा। और जो काम वह करेगा वह अजीब होगा,
जो क़दम वह उठाएगा वह मामूल से हटकर होगा।
22चुनाँचे अपनी तानाज़नी से बाज़ आओ, वरना
तुम्हारी ज़ंजीरें मज़ीद ज़ोर से कस दी जाएँगी।
क्योंकि मुझे क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज से

पैग़ाम मिला है कि तमाम दुनिया की तबाही मुतैयिन है।

माहिर किसान की तमसील

23ग़ौर से मेरी बात सुनो! ध्यान से उस पर
कान धरो जो मैं कह रहा हूँ! 24जब किसान
खेत को बीज बोने के लिए तैयार करता है तो
क्या वह पूरा दिन हल चलाता रहता है? क्या
वह अपना पूरा वक़्त ज़मीन खोदने और ढेले
तोड़ने में सर्फ़ करता है? 25हरगिज़ नहीं! जब
पूरे खेत की सतह हमवार और तैयार है तो वह
अपनी अपनी जगह पर स्याह ज़ीरा और सफ़ेद
ज़ीरा, गंदुम, बाजरा और जो का बीज बोता है।
आख़िर में वह किनारे पर चारे का बीज बोता है।
26किसान को ख़ूब मालूम है कि क्या क्या करना
होता है, क्योंकि उसके ख़ुदा ने उसे तालीम देकर
सहीह तरीक़ा सिखाया। 27चुनाँचे स्याह ज़ीरा
और सफ़ेद ज़ीरा को अनाज की तरह गाहा नहीं
जाता। दाने निकालने के लिए उन पर वज़नी चीज़
नहीं चलाई जाती बल्कि उन्हें डंडे से मारा जाता है।
28और क्या अनाज को गाह गाहकर पीसा जाता
है? हरगिज़ नहीं! किसान उसे हद से ज़्यादा नहीं
गाहता। गो उसके घोड़े कोई वज़नी चीज़ खींचते
हुए बालियों पर से गुज़रते हैं ताकि दाने निकलें
ताहम किसान ध्यान देता है कि दाने पिस न जाएँ।
29उसे यह इल्म भी रब्बुल-अफ़वाज से मिला है
जो ज़बरदस्त मशवरों और कामिल हिकमत का
मंबा है।

यरूशलम ख़बरदार रहे

29 ऐ अरियेल, अरियेल,[a] तुझ पर
अफ़सोस! ऐ शहर जिसमें दाऊद
ख़ैमाज़न था, तुझ पर अफ़सोस! चलो, साल
बसाल अपने तहवार मनाते रहो। 2लेकिन मैं
अरियेल को यों घेरकर तंग करूँगा कि उसमें
आहो-ज़ारी सुनाई देगी। तब यरूशलम मेरे
नज़दीक सहीह मानों में अरियेल साबित होगा।
3क्योंकि मैं तुझे हर तरफ़ से पुश्ताबंदी से घेरकर
बंद रखूँगा, तेरे मुहासरे का पूरा बंदोबस्त करूँगा।
4तब तू इतना पस्त होगा कि ख़ाक में से बोलेगा,
तेरी दबी दबी आवाज़ गर्द में से निकलेगी। जिस
तरह मुरदा रूह ज़मीन के अंदर से सरगोशी करती
है उसी तरह तेरी धीमी धीमी आवाज़ ज़मीन में से
निकलेगी।

5लेकिन अचानक तेरे मुतअद्दिद दुश्मन बारीक
धूल की तरह उड़ जाएंगे, ज़ालिमों का ग़ोल हवा
में भूसे की तरह तित्तर-बित्तर हो जाएगा। क्योंकि
अचानक, एक ही लमहे में 6रब्बुल-अफ़वाज उन
पर टूट पड़ेगा। वह बिजली की कड़कती आवाज़ें,
ज़लज़ला, बड़ा शोर, तेज़ आँधी, तूफ़ान और
भस्म करनेवाली आग के शोले अपने साथ लेकर
शहर की मदद करने आएगा। 7तब अरियेल से
लड़नेवाली तमाम क़ौमों के ग़ोल ख़ाब जैसे लगेंगे।
जो यरूशलम पर हमला करके उसका मुहासरा
कर रहे और उसे तंग कर रहे थे वह रात में रोया
जैसे ग़ैरहक़ीक़ी लगेंगे। 8तुम्हारे दुश्मन उस भूके
आदमी की मानिंद होंगे जो ख़ाब में देखता है कि मैं
खाना खा रहा हूँ, लेकिन फिर जागकर जान लेता
है कि मैं वैसे का वैसा भूका हूँ। तुम्हारे मुख़ालिफ़
उस प्यासे आदमी की मानिंद होंगे जो ख़ाब में
देखता है कि मैं पानी पी रहा हूँ, लेकिन फिर
जागकर जान लेता है कि मैं वैसे का वैसा निढाल
और प्यासा हूँ। यही उन तमाम बैनुल-अक़वामी
ग़ोलों का हाल होगा जो कोहे-सिय्यून से जंग
करेंगे।

अल्लाह का कलाम क़ौम की समझ से बाहर है

9हैरतज़दा होकर हक्का-बक्का रह जाओ!
अंधे होकर नाबीना हो जाओ! मत्वाले

[a]मुराद है यरूशलम। अरियेल का एक मतलब 'अल्लाह का शेरबबर' और दूसरा 'भस्म होनेवाली क़ुरबानियों की क़ुरबानगाह' है। यहाँ दोनों मतलब मुमकिन हैं।

हो जाओ, लेकिन मै से नहीं। लड़-
खड़ाते जाओ, लेकिन शराब से नहीं। 10क्योंकि
रब ने तुम्हें गहरी नींद सुला दिया है, उसने तुम्हारी
आँखों यानी नबियों को बंद किया और तुम्हारे
सरों यानी रोया देखनेवालों पर परदा डाल दिया
है।

11इसलिए जो भी कलाम नाज़िल हुआ है वह
तुम्हारे लिए सर-बमुहर किताब ही है। अगर उसे
किसी पढ़े-लिखे आदमी को दिया जाए ताकि पढ़े
तो वह जवाब देगा, “यह पढ़ा नहीं जा सकता,
क्योंकि इस पर मुहर है।” 12और अगर उसे किसी
अनपढ़ आदमी को दिया जाए तो वह कहेगा, “मैं
अनपढ़ हूँ।”

13रब फ़रमाता है, “यह क़ौम मेरे हुज़ूर आकर
अपनी ज़बान और होंटों से तो मेरा एहतराम
करती है, लेकिन उसका दिल मुझसे दूर है। उनकी
ख़ुदातरसी सिर्फ़ इनसान ही के रटे-रटाए अहकाम
पर मबनी है। 14इसलिए आइंदा भी मेरा इस क़ौम
के साथ सुलूक हैरतअंगेज़ होगा। हाँ, मेरा सुलूक
अजीबो-ग़रीब होगा। तब उसके दानिशमंदों की
दानिश जाती रहेगी, और उसके समझदारों की
समझ ग़ायब हो जाएगी।”

15उन पर अफ़सोस जो अपना मनसूबा ज़मीन
की गहराइयों में दबाकर रब से छुपाने की कोशिश
करते हैं, जो तारीकी में अपने काम करके कहते
हैं, “कौन हमें देख लेगा, कौन हमें पहचान
लेगा?” 16तुम्हारी कजरवी पर लानत! क्या
कुम्हार को उसके गारे के बराबर समझा जाता है?
क्या बनी हुई चीज़ बनानेवाले के बारे में कहती
है, “उसने मुझे नहीं बनाया”? या क्या जिसको
तश्कील दिया गया है वह तश्कील देनेवाले के बारे
में कहता है, “वह कुछ नहीं समझता”? हरगिज़
नहीं!

बड़ी तबदीलियाँ आनेवाली हैं

17थोड़ी ही देर के बाद लुबनान का जंगल
फलते-फूलते बाग़ में तबदील होगा जब-
कि फलता-फूलता बाग़ जंगल-सा लगेगा। 18उस
दिन बहरे किताब की तिलावत सुनेंगे, और अंधों
की आँखें अंधेरे और तारीकी में से निकलकर देख
सकेंगी। 19एक बार फिर फ़रोतन रब की ख़ुशी
मनाएँगे, और मुहताज इसराईल के क़ुद्दूस के
बाइस शादियाना बजाएंगे। 20ज़ालिम का नामो-
निशान नहीं रहेगा, तानाज़न ख़त्म हो जाएंगे,
और दूसरों की ताक में बैठनेवाले सबके सब रूए-
ज़मीन पर से मिट जाएंगे। 21यही उनका अंजाम
होगा जो अदालत में दूसरों को क़ुसूरवार ठहराते,
शहर के दरवाज़े में अदालत करनेवाले क़ाज़ी को
फँसाने की कोशिश करते और झूटी गवाहियों से
बेक़ुसूर का हक़ मारते हैं।

22चुनाँचे रब जिसने पहले इब्राहीम का भी
फ़िद्या देकर उसे छुड़ाया था याक़ूब के घराने
से फ़रमाता है, “अब से याक़ूब शरमिंदा नहीं
होगा, अब से इसराईलियों का रंग फ़क़ नहीं पड़
जाएगा। 23जब वह अपने दरमियान अपने बच्चों
को जो मेरे हाथों का काम हैं देखेंगे तो वह मेरे
नाम को मुक़द्दस मानेंगे। वह याक़ूब के क़ुद्दूस को
मुक़द्दस जानेंगे और इसराईल के ख़ुदा का ख़ौफ़
मानेंगे। 24उस वक़्त जिनकी रूह आवारा है वह
समझ हासिल करेंगे, और बुड़बुड़ानेवाले तालीम
क़बूल करेंगे।”

मिसर के वादे बेकार हैं

30 रब फ़रमाता है, “ऐ ज़िद्दी बच्चो, तुम
पर अफ़सोस! क्योंकि तुम मेरे बग़ैर
मनसूबे बाँधते और मेरे रूह के बग़ैर मुआहदे कर
लेते हो। गुनाहों में इज़ाफ़ा करते करते 2तुमने
मुझसे मशवरा लिए बग़ैर मिसर की तरफ़ रुजू
किया ताकि फ़िरौन की आड़ में पनाह लो और
मिसर के साये में हिफ़ाज़त पाओ। 3लेकिन
ख़बरदार! फ़िरौन का तहफ़्फ़ुज़ तुम्हारे लिए
शर्म का बाइस बनेगा, मिसर के साये में पनाह
लेने से तुम्हारी रुसवाई हो जाएगी। 4क्योंकि गो
उसके अफ़सर ज़ुअन में हैं और उसके एलची
हनीस तक पहुँच गए हैं 5तो भी सब इस क़ौम से
शरमिंदा हो जाएंगे, क्योंकि इसके साथ मुआहदा

बेकार होगा। इससे न मदद और न फ़ायदा हासिल
होगा बल्कि यह शर्म और ख़जालत का बाइस ही
होगी।”

6दश्ते-नजब के जानवरों के बारे में रब का
फ़रमान :

यहूदाह के सफ़ीर एक तकलीफ़देह और
परेशानकुन मुल्क में से गुज़र रहे हैं जिसमें
शेरबबर, शेरनी, ज़हरीले और उड़नसाँप बसते
हैं। उनके गधे और ऊँट यहूदाह की दौलत और
ख़ज़ानों से लदे हुए हैं, और वह सब कुछ मिसर के
पास पहुँचा रहे हैं, गो इस क़ौम का कोई फ़ायदा
नहीं। 7मिसर की मदद फ़ज़ूल ही है! इसलिए
मैंने मिसर का नाम ‘रहब अज़दहा जिसका मुँह
बंद कर दिया गया है’ रखा है।

8अब दूसरों के पास जाकर सब कुछ तख़्ते पर
लिख। उसे किताब की सूरत में क़लमबंद कर
ताकि मेरे अलफ़ाज़ आनेवाले दिनों में हमेशा तक
गवाही दें। 9क्योंकि यह क़ौम सरकश है, यह लोग
धोकेबाज़ बच्चे हैं जो रब की हिदायात को मानने
के लिए तैयार ही नहीं। 10ग़ैबबीनों को वह कहते
हैं, “रोया से बाज़ आओ।” और रोया देखनेवालों
को वह हुक्म देते हैं, “हमें सच्ची रोया मत बताना
बल्कि हमारी ख़ुशामद करनेवाली बातें। फ़रेबदेह
रोया देखकर हमारे आगे बयान करो! 11सहीह
रास्ते से हट जाओ, सीधी राह को छोड़ दो। हमारे
सामने इसराईल के क़ुद्दूस का ज़िक्र करने से बाज़
आओ!”

12जवाब में इसराईल का क़ुद्दूस फ़रमाता है,
“तुमने यह कलाम रद्द करके ज़ुल्म और चालाकी
पर भरोसा बल्कि पूरा एतमाद किया है। 13अब
यह गुनाह तुम्हारे लिए उस ऊँची दीवार की मानिंद
होगा जिसमें दराड़ें पड़ गई हैं। दराड़ें फैलती हैं और
दीवार बैठी जाती है। फिर अचानक एक ही लमहे
में वह धड़ाम से ज़मीनबोस हो जाती है। 14वह
टुकड़े टुकड़े हो जाती है, बिलकुल मिट्टी के उस
बरतन की तरह जो बेरहमी से चकनाचूर किया
जाता है और जिसका एक टुकड़ा भी आग से
कोयले उठाकर ले जाने या हौज़ से थोड़ा-बहुत
पानी निकालने के क़ाबिल नहीं रह जाता।”

सब्र के साथ रब पर भरोसा रखो

15रब क़ादिरे-मुतलक़ जो इसराईल का क़ुद्दूस
है फ़रमाता है, “वापस आकर सुकून पाओ, तब
ही तुम्हें नजात मिलेगी। ख़ामोश रहकर मुझ पर
भरोसा रखो, तब ही तुम्हें तक़वियत मिलेगी।
लेकिन तुम इसके लिए तैयार ही नहीं थे।

16चूँकि तुम जवाब में बोले, ‘हरगिज़ नहीं,
हम अपने घोड़ों पर सवार होकर भागेंगे’ इसलिए
तुम भाग जाओगे। चूँकि तुमने कहा, ‘हम तेज़
घोड़ों पर सवार होकर बच निकलेंगे’ इसलिए
तुम्हारा ताक़्क़ुब करनेवाले कहीं ज़्यादा तेज़ होंगे।
17तुम्हारे हज़ार मर्द एक ही आदमी की धमकी पर
भाग जाएंगे। और जब दुश्मन के पाँच अफ़राद
तुम्हें धमकाएँगे तो तुम सबके सब फ़रार हो
जाओगे। आख़िरकार जो बचेंगे वह पहाड़ की
चोटी पर परचम के डंडे की तरह तनहा रह जाएंगे,
पहाड़ी पर झंडे की तरह अकेले होंगे।”

18लेकिन रब तुम्हें मेहरबानी दिखाने के इंतज़ार
में है, वह तुम पर रहम करने के लिए उठ खड़ा
हुआ है। क्योंकि रब इनसाफ़ का ख़ुदा है। मुबारक
हैं वह जो उसके इंतज़ार में रहते हैं।

19ऐ सिय्यून के बाशिंदो जो यरूशलम में रहते
हो, आइंदा तुम नहीं रोओगे। जब तुम फ़रियाद
करोगे तो वह ज़रूर तुम पर मेहरबानी करेगा।
तुम्हारी सुनते ही वह जवाब देगा। 20गो माज़ी में
रब ने तुम्हें तंगी की रोटी खिलाई और ज़ुल्म का
पानी पिलाया, लेकिन अब तेरा उस्ताद छुपा नहीं
रहेगा बल्कि तेरी अपनी ही आँखें उसे देखेंगी।
21अगर दाईं या बाईं तरफ़ मुड़ना है तो तुम्हें पीछे
से हिदायत मिलेगी, “यही रास्ता सहीह है, इसी
पर चलो!” तुम्हारे अपने कान यह सुनेंगे। 22उस
वक़्त तुम चाँदी और सोने से सजे हुए अपने बुतों
की बेहुरमती करोगे। तुम “उफ़, गंदी चीज़!”
कहकर उन्हें नापाक कचरे की तरह बाहर फेंकोगे।

23बीज बोते वक़्त रब तेरे खेतों पर
बारिश भेजकर बेहतरीन फ़सलें पकने देगा,
ग़िज़ाइयतबख़्श ख़ुराक मुहैया करेगा। उस दिन
तेरी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल वसी चरागाहों
में चरेंगे। 24खेतीबाड़ी के लिए मुस्तामल बैलों
और गधों को छाज और दोशाख़े के ज़रीए साफ़
की गई बेहतरीन ख़ुराक मिलेगी। 25उस दिन जब
दुश्मन हलाक हो जाएगा और उसके बुर्ज गिर
जाएंगे तो हर ऊँचे पहाड़ से नहरें और हर बुलंदी
से नाले बहेंगे। 26चाँद सूरज की मानिंद चमकेगा
जबकि सूरज की रौशनी सात गुना ज़्यादा तेज़
होगी। एक दिन की रौशनी सात आम दिनों की
रौशनी के बराबर होगी। उस दिन रब अपनी क़ौम
के ज़ख़मों पर मरहम-पट्टी करके उसे शफ़ा देगा।

रब असूरियों की अदालत करता है

27वह देखो, रब का नाम दूर-दराज़ इलाक़े से
आ रहा है। वह ग़ैज़ो-ग़ज़ब से और बड़े रोब के
साथ क़रीब पहुँच रहा है। उसके होंट क़हर से हिल
रहे हैं, उस की ज़बान के आगे आगे सब कुछ
राख हो रहा है। 28उसका दम किनारों से बाहर
आनेवाली नदी है जो सब कुछ गले तक डुबो देती
है। वह अक़्वाम को हलाकत की छलनी में छान
छानकर उनके मुँह में दहाना डालता है ताकि वह
भटककर तबाहकुन राह पर आएँ।

29लेकिन तुम गीत गाओगे, ऐसे गीत जैसे
मुक़द्दस ईद की रात गाए जाते हैं। इतनी रौनक़
होगी कि तुम्हारे दिल फूले न समाएँगे। तुम्हारी
ख़ुशी उन ज़ायरीन की मानिंद होगी जो बाँसरी
बजाते हुए रब के पहाड़ पर चढ़ते और इसराईल
की चट्टान के हुज़ूर आते हैं।

30तब रब अपनी बारोब आवाज़ से लोगों पर
अपनी क़ुदरत का इज़हार करेगा। उसका सख़्त
ग़ज़ब और भस्म करनेवाली आग नाज़िल होगी,
साथ साथ बारिश की तेज़ बौछाड़ और ओलों
का तूफ़ान उन पर टूट पड़ेगा। 31रब की आवाज़
असूर को पाश पाश कर देगी, उस की लाठी उसे
मारती रहेगी। 32और ज्यों-ज्यों रब सज़ा के लठ
से असूर को ज़रब लगाएगा त्यों-त्यों दफ़ और
सरोद बजेंगे। अपने ज़ोरावर बाज़ू से वह असूर
से लड़ेगा। 33क्योंकि बड़ी देर से वह गढ़ा तैयार
है जहाँ असूरी बादशाह की लाश को जलाना है।
उसे गहरा और चौड़ा बनाया गया है, और उसमें
लकड़ी का बड़ा ढेर है। रब का दम ही उसे गंधक
की तरह जलाएगा।

मिसर की मदद बेकार है

31 उन पर अफ़सोस जो मदद के लिए
मिसर जाते हैं। उनकी पूरी उम्मीद
घोड़ों से है, और वह अपने मुतअद्दिद रथों
और ताक़तवर घुड़सवारों पर एतमाद रखते हैं।
अफ़सोस, न वह इसराईल के क़ुद्दूस की तरफ़
नज़र उठाते, न रब की मरज़ी दरियाफ़्त करते
हैं। 2लेकिन अल्लाह भी दाना है। वह तुम पर
आफ़त लाएगा और अपना फ़रमान मनसूख़ नहीं
करेगा बल्कि शरीरों के घर और उनके मुआविनों
के ख़िलाफ़ उठ खड़ा होगा। 3मिसरी तो ख़ुदा
नहीं बल्कि इनसान हैं। और उनके घोड़े आलमे-
अरवाह के नहीं बल्कि फ़ानी दुनिया के हैं। जहाँ
भी रब अपना हाथ बढ़ाए वहाँ मदद करनेवाले
मदद मिलनेवालों समेत ठोकर खाकर गिर जाते
हैं, सब मिलकर हलाक हो जाते हैं।

4रब मुझसे हमकलाम हुआ, “सिय्यून पर
उतरते वक़्त मैं उस जवान शेरबबर की तरह हूँगा
जो बकरी मारकर उसके ऊपर खड़ा ग़ुर्राता है।
गो मुतअद्दिद गल्लाबानों को उसे भगाने के लिए
बुलाया जाए तो भी वह उनकी चीख़ों से दहशत
नहीं खाता, न उनके शोर-शराबा से डरकर दबक
जाता है। रब्बुल-अफ़वाज इसी तरह ही कोहे-
सिय्यून पर उतरकर लड़ेगा। 5रब्बुल-अफ़वाज पर
फैलाए हुए परिंदे की तरह यरूशलम को पनाह
देगा, वह उसे महफ़ूज़ रखकर छुटकारा देगा, उसे
सज़ा देने के बजाए रिहा करेगा।”

6ऐ इसराईलियो, जिससे तुम सरकश होकर
इतने दूर हो गए हो उसके पास वापस आ जाओ।
7अब तक तुम अपने हाथों से बने हुए सोने-चाँदी

के बुतों की पूजा करते हो, अब तक तुम इस गुनाह में मुलव्वस हो। लेकिन वह दिन आनेवाला है जब हर एक अपने बुतों को रद्द करेगा।

8“असूर तलवार की ज़द में आकर गिर जाएगा। लेकिन यह किसी मर्द की तलवार नहीं होगी। जो तलवार असूर को खा जाएगी वह फ़ानी इनसान की नहीं होगी। असूर तलवार के आगे आगे भागेगा, और उसके जवानों को बेगार में काम करना पड़ेगा।
9उस की चट्टान डर के मारे जाती रहेगी, उसके अफ़सर लशकरी झंडे को देखकर दहशत खाएँगे।” यह रब का फ़रमान है जिसकी आग सिय्यून में भड़कती और जिसका तनूर यरूशलम में तपता है।

रास्त बादशाह की आमद

32 एक बादशाह आनेवाला है जो इनसाफ़ से हुकूमत करेगा। उसके अफ़सर भी सदाक़त से हुक्मरानी करेंगे।
2हर एक आँधी और तूफ़ान से पनाह देगा, हर एक रेगिस्तान में नदियों की तरह तरो-ताज़ा करेगा, हर एक तपती धूप में बड़ी चट्टान का-सा साया देगा।

3तब देखनेवालों की आँखें अंधी नहीं रहेंगी, और सुननेवालों के कान ध्यान देंगे।
4जल्दबाज़ों के दिल समझदार हो जाएंगे, और हक्लों की ज़बान रवानी से साफ़ बात करेगी।
5उस वक़्त न अहमक़ शरीफ़ कहलाएगा, न बदमाश को मुमताज़ क़रार दिया जाएगा।
6क्योंकि अहमक़ हमाक़त बयान करता है, और उसका ज़हन शरीर मनसूबे बाँधता है। वह बेदीन हरकतें करके रब के बारे में कुफ़र बकता है। भूके को वह भूका छोड़ता और प्यासे को पानी पीने से रोकता है।
7बदमाश के तरीक़े-कार शरीर हैं। वह ज़रूरतमंद को झूट से तबाह करने के मनसूबे बाँधता रहता है, ख़ाह ग़रीब हक़ पर क्यों न हो।
8उसके मुक़ाबले में शरीफ़ आदमी शरीफ़ मनसूबे बाँधता और शरीफ़ काम करने में साबितक़दम रहता है।

बेपरवा ज़िंदगी ख़त्म होनेवाली है

9ऐ बेपरवा औरतो, उठकर मेरी बात सुनो! ऐ बेटियो जो अपने आपको महफ़ूज़ समझती हो, मेरे अलफ़ाज़ पर ध्यान दो!
10एक साल और चंद एक दिनों के बाद तुम जो अपने आपको महफ़ूज़ समझती हो काँप उठोगी। क्योंकि अंगूर की फ़सल ज़ाया हो जाएगी, और फल की फ़सल पकने नहीं पाएगी।
11ऐ बेपरवा औरतो, लरज़ उठो! ऐ बेटियो जो अपने आपको महफ़ूज़ समझती हो, थरथराओ! अपने अच्छे कपड़ों को उतारकर टाट के लिबास पहन लो।
12अपने सीनों को पीट पीटकर अपने ख़ुशगवार खेतों और अंगूर के फलदार बाग़ों पर मातम करो।
13मेरी क़ौम की ज़मीन पर आहो-ज़ारी करो, क्योंकि उस पर ख़ारदार झाड़ियाँ छा गई हैं। रंगरलियाँ मनानेवाले शहर के तमाम ख़ुशबाश घरों पर ग़म खाओ।
14महल वीरान होगा, रौनक़दार शहर सुनसान होगा। क़िला और बुर्ज हमेशा के लिए ग़ार बनेंगे जहाँ जंगली गधे अपने दिल बहलाएँगे और भेड़-बकरियाँ चरेंगी।

अल्लाह के रूह से बहाली

15जब तक अल्लाह अपना रूह हम पर नाज़िल न करे उस वक़्त तक हालात ऐसे ही रहेंगे। लेकिन फिर रेगिस्तान बाग़ में तबदील हो जाएगा, और बाग़ के फलदार दरख़्त जंगल जैसे घने हो जाएंगे।
16तब इनसाफ़ रेगिस्तान में बसेगा, और सदाक़त फलते-फूलते बाग़ में सुकूनत करेगी।
17इनसाफ़ का फल अमनो-अमान होगा, और सदाक़त का असर अबदी सुकून और हिफ़ाज़त होगी।

18मेरी क़ौम पुरसुकून और महफ़ूज़ आबादियों में बसेगी, उसके घर आरामदेह और पुरअमन होंगे।
19गो जंगल तबाह और शहर ज़मीनबोस क्यों न हो,
20लेकिन तुम मुबारक हो जो हर नदी के पास बीज बो सकोगे और आज़ादी से अपने गाय-बैलों और गधों को चरा सकोगे।

या रब, मदद!

33 तुझ पर अफ़सोस, जो दूसरों को
बरबाद करने के बावुजूद बरबाद नहीं
हुआ। तुझ पर अफ़सोस, जो दूसरों से बेवफ़ा था,
हालाँकि तेरे साथ बेवफ़ाई नहीं हुई। लेकिन तेरी
बारी भी आएगी। बरबादी का काम तकमील तक
पहुँचाने पर तू ख़ुद बरबाद हो जाएगा। बेवफ़ाई
का काम तकमील तक पहुँचाने पर तेरे साथ भी
बेवफ़ाई की जाएगी।

2ऐ रब, हम पर मेहरबानी कर! हम तुझसे
उम्मीद रखते हैं। हर सुबह हमारी ताक़त बन,
मुसीबत के वक़्त हमारी रिहाई का बाइस हो।

3तेरी गरजती आवाज़ सुनकर क़ौमें भाग जाती
हैं, तेरे उठ खड़े होने पर वह चारों तरफ़ बिखर
जाती हैं। 4ऐ क़ौमो, जो माल तुमने लूट लिया
वह दूसरे छीन लेंगे। जिस तरह टिड्डियों के ग़ोल
फ़सलों पर झपटकर सब कुछ चट कर जाते हैं
उसी तरह दूसरे तुम्हारी पूरी मिलकियत पर टूट
पड़ेंगे।

5रब सरफ़राज़ है और बुलंदियों पर सुकूनत
करता है। वही सिय्यून को इनसाफ़ और
सदाक़त से मालामाल करेगा। 6उन दिनों में वह
तेरी हिफ़ाज़त की ज़मानत होगा। तुझे नजात,
हिकमत और दानाई का ज़ख़ीरा हासिल होगा,
और रब का ख़ौफ़ तेरा ख़ज़ाना होगा।

दुश्मन से धोका, रब से रिहाई

7सुनो, उनके सूरमे गलियों में चीख़ रहे हैं,
अमन के सफ़ीर तलख़ आहें भर रहे हैं। 8सड़कें
वीरानो-सुनसान हैं, और मुसाफ़िर उन पर नज़र
ही नहीं आते। मुआहदे को तोड़ा गया है, लोगों ने
उसके गवाहों को रद्द करके इनसान को हक़ीर
जाना है। 9ज़मीन ख़ुश्क होकर मुरझा गई है,
लुबनान कुमलाकर शरमिंदा हो गया है। शारून
का मैदान बेशजर बयाबान-सा बन गया है, बसन
और करमिल अपने पत्ते झाड़ रहे हैं।

10लेकिन रब फ़रमाता है, "अब मैं उठ खड़ा
हूँगा, अब मैं सरफ़राज़ होकर अपनी क़ुव्वत का
इज़हार करूँगा। 11तुम उम्मीद से हो, लेकिन पेट
में सूखी घास ही है, और जन्म देते वक़्त भूसा ही
पैदा होगा। जब तुम फूँक मारोगे तो तुम्हारा दम
आग बनकर तुम्हीं को राख कर देगा। 12अक़वाम
यों भस्म हो जाएँगी कि चूना ही रह जाएगा, वह
ख़ारदार झाड़ियों की तरह कटकर जल जाएँगी।
13ऐ दूर-दराज़ इलाक़ों के बाशिंदो, वह कुछ सुनो
जो मैंने किया है। ऐ क़रीब के बसनेवालो, मेरी
क़ुदरत जान लो।"

14सिय्यून में गुनाहगार घबरा गए हैं, बेदीन
परेशानी के आलम में थरथराते हुए चिल्ला रहे
हैं, "हममें से कौन भस्म करनेवाली इस आग के
सामने ज़िंदा रह सकता है? हममें से कौन हमेशा
तक भड़कनेवाली इस अंगीठी के क़रीब क़ायम
रह सकता है?" 15लेकिन वह शख़्स क़ायम
रहेगा जो रास्त ज़िंदगी गुज़ारे और सच्चाई बोले,
जो ग़ैरक़ानूनी नफ़ा और रिश्वत लेने से इनकार
करे, जो क़ातिलाना साज़िशों और ग़लत काम
से गुरेज़ करे। 16वही बुलंदियों पर बसेगा और
पहाड़ के क़िले में महफ़ूज़ रहेगा। उसे रोटी मिलती
रहेगी, और पानी की कभी कमी न होगी।

पुरजलाल बादशाह का मुल्क

17तेरी आँखें बादशाह और उस की पूरी
ख़ूबसूरती का मुशाहदा करेंगी, वह एक वसी और
दूर दूर तक फैला हुआ मुल्क देखेंगी। 18तब तू
गुज़रे हुए हौलनाक वक़्त पर ग़ौरो-ख़ौज़ करके
पूछेगा, "दुश्मन के बड़े अफ़सर किधर हैं? टैक्स
लेनेवाला कहाँ ग़ायब हुआ? वह अफ़सर किधर
है जो बुर्जों का हिसाब-किताब करता था?"
19आइंदा तुझे यह गुस्ताख़ क़ौम नज़र नहीं
आएगी, यह लोग जो नाक़ाबिले-फ़हम ज़बान
बोलते और हकलाते हुए ऐसी बातें करते हैं जो
समझ में नहीं आतीं।

20हमारी ईदों के शहर सिय्यून पर नज़र डाल!
तेरी आँखें यरूशलम को देखेंगी। उस वक़्त
वह महफ़ूज़ सुकूनतगाह होगा, एक ख़ैमा जो
आइंदा कभी नहीं हटेगा, जिसकी मेख़ें कभी

नहीं निकलेंगी, और जिसका एक रस्सा भी नहीं टूटेगा।

21वहाँ रब ही हमारा ज़ोरावर आक़ा होगा, और शहर दरियाओं का मक़ाम होगा, ऐसी चौड़ी नदियों का मक़ाम जिन पर न चप्पूवाली कश्ती, न शानदार जहाज़ चलेगा। 22क्योंकि रब ही हमारा क़ाज़ी, रब ही हमारा सरदार और रब ही हमारा बादशाह है। वही हमें छुटकारा देगा। 23दुश्मन का बेड़ा ग़रक़ होनेवाला है। बादबान के रस्से ढीले हैं, और न वह मस्तूल को मज़बूत रखने, न बादबान को फैलाए रखने में मदद देते हैं। उस वक़्त कसरत का लूटा हुआ माल बटेगा, बल्कि इतना माल होगा कि लँगड़े भी लूटने में शिरकत करेंगे। 24सिय्यून का कोई भी फ़रद नहीं कहेगा, “मैं कमज़ोर हूँ,” क्योंकि उसके बाशिंदों के गुनाह बख़्शे गए होंगे।

अदोम पर अदालत का एलान

34 ऐ क़ौमो, क़रीब आकर सुन लो! ऐ उम्मतो, ध्यान दो! दुनिया और जो भी उसमें है कान लगाए, ज़मीन और जो कुछ उसमें से फूट निकला है तवज्जुह दे! 2क्योंकि रब को तमाम उम्मतों पर ग़ुस्सा आ गया है, और उसका ग़ज़ब उनके तमाम लशकरों पर नाज़िल हो रहा है। वह उन्हें मुकम्मल तौर पर तबाह करेगा, इन्हें सफ़्फ़ाक के हवाले करेगा। 3उनके मक़तूलों को बाहर फेंका जाएगा, और लाशों की बदबू चारों तरफ़ फैलेगी। पहाड़ उनके ख़ून से शराबोर होंगे। 4तमाम सितारे गल जाएंगे, और आसमान को तूमार की तरह लपेटा जाएगा। सितारों का पूरा लशकर अंगूर के मुरझाए हुए पत्तों की तरह झड़ जाएगा, वह अंजीर के दरख़्त की सूखी हरियाली की तरह गिर जाएगा।

5क्योंकि आसमान पर मेरी तलवार ख़ून पी पीकर मस्त हो गई है। देखो, अब वह अदोम पर नाज़िल हो रही है ताकि उस की अदालत करे, उस क़ौम की जिसकी मुकम्मल तबाही का फ़ैसला मैं कर चुका हूँ। 6रब की तलवार ख़ूनआलूदा हो गई है, और उससे चरबी टपकती है। भेड़-बकरियों का ख़ून और मेंढों के गुरदों की चरबी उस पर लगी है, क्योंकि रब बुसरा शहर में क़ुरबानी की ईद और मुल्के-अदोम में क़त्ले-आम का तहवार मनाएगा। 7उस वक़्त जंगली बैल उनके साथ गिर जाएंगे, और बछड़े ताक़तवर साँडों समेत ख़त्म हो जाएंगे। उनकी ज़मीन ख़ून से मस्त और ख़ाक चरबी से शराबोर होगी।

8क्योंकि वह दिन आ गया है जब रब बदला लेगा, वह साल जब वह अदोम से इसराईल का इंतक़ाम लेगा। 9अदोम की नदियों में तारकोल ही बहेगा, और गंधक ज़मीन को ढाँपेगी। मुल्क भड़कती हुई राल से भर जाएगा, 10जिसकी आग न दिन और न रात बुझेगी बल्कि हमेशा तक धुआँ छोड़ती रहेगी। मुल्क नसल-दर-नसल वीरानो-सुनसान रहेगा, यहाँ तक कि मुसाफ़िर भी हमेशा तक उसमें से गुज़रने से गुरेज़ करेंगे। 11दश्ती उल्लू और ख़ारपुश्त उस पर क़ब्ज़ा करेंगे, चिंघाड़नेवाले उल्लू और कौवे उसमें बसेरा करेंगे। क्योंकि रब फ़ीते और साहूल से अदोम का पूरा मुल्क नाप नापकर उजाड़ और वीरानी के हवाले करेगा। 12उसके शुरफ़ा का नामो-निशान तक नहीं रहेगा। कुछ नहीं रहेगा जो बादशाही कहलाए, मुल्क के तमाम रईस जाते रहेंगे। 13काँटेदार पौदे उसके महलों पर छा जाएंगे, ख़ुदरौ पौदे और ऊँटकटारे उसके क़िलाबंद शहरों में फैल जाएंगे। मुल्क गीदड़ और उक़ाबी उल्लू का घर बनेगा। 14वहाँ रेगिस्तान के जानवर जंगली कुत्तों से मिलेंगे, और बकरानुमा जिन एक दूसरे से मुलाक़ात करेंगे। लीलीत नामी आसेब भी उसमें ठहरेगा, वहाँ उसे भी आरामगाह मिलेगी। 15मादा साँप उसके साये में बिल बनाकर उसमें अपने अंडे देगी और उन्हें सेकर पालेगी। शिकारी परिंदे भी दो दो होकर वहाँ जमा होंगे।

16रब की किताब में पढ़कर इसकी तहक़ीक़ करो! अदोम में यह तमाम चीज़ें मिल जाएँगी। मुल्क एक से भी महरूम नहीं रहेगा बल्कि सब मिलकर उसमें पाई जाएँगी। क्योंकि रब ही के मुँह ने इसका हुक्म दिया है, और उसी का रूह इन्हें

इकट्ठा करेगा। 17वही सारी ज़मीन की पैमाइश
करेगा और फिर क़ुरा डालकर मज़कूरा जानदारों
में तक़सीम करेगा। तब मुल्क अबद तक उनकी
मिलकियत में आएगा, और वह नसल-दर-नसल
उसमें आबाद होंगे।

क़ौम की रिहाई

35 रेगिस्तान और प्यासी ज़मीन बाग़
बाग़ होंगे, बयाबान ख़ुशी मनाकर
खिल उठेगा। उसके फूल सोसन की तरह 2फूट
निकलेंगे, और वह ज़ोर से शादियाना बजाकर
ख़ुशी के नारे लगाएगा। उसे लुबनान की शान,
करमिल और शारून का पूरा हुस्नो-जमाल दिया
जाएगा। लोग रब का जलाल और हमारे ख़ुदा की
शानो-शौकत देखेंगे।

3निढाल हाथों को तक़वियत दो, डाँवाँ-
डोल घुटनों को मज़बूत करो! 4धड़कते हुए दिलों
से कहो, "हौसला रखो, मत डरो। देखो, तुम्हारा
ख़ुदा इंतक़ाम लेने के लिए आ रहा है। वह हर एक
को जज़ा-ओ-सज़ा देकर तुम्हें बचाने के लिए आ
रहा है।"

5तब अंधों की आँखों को और बहरों के कानों
को खोला जाएगा।
6लँगड़े हिरन की-सी छलाँगें लगाएँगे, और गूँगे
ख़ुशी के नारे लगाएँगे। रेगिस्तान में चश्मे फूट
निकलेंगे, और बयाबान में से नदियाँ गुज़रेंगी।
7झुलसती हुई रेत की जगह जोहड़ बनेगा,
और प्यासी ज़मीन की जगह पानी के सोते फूट
निकलेंगे। जहाँ पहले गीदड़ आराम करते थे वहाँ
हरी घास, सरकंडे और आबी नरसल की नशो-
नुमा होगी।

8मुल्क में से शाहराह गुज़रेगी जो 'शाह-
राहे-मुक़द्दस' कहलाएगी। नापाक लोग उस पर
सफ़र नहीं करेंगे, क्योंकि वह सहीह राह पर
चलनेवालों के लिए मख़सूस है। अहमक़ उस पर
भटकने नहीं पाएँगे।

9उस पर न शेरबबर होगा, न कोई और वहशी
जानवर आएगा या पाया जाएगा। सिर्फ़ वह उस
पर चलेंगे जिन्हें अल्लाह ने एवज़ाना देकर छुड़ा
लिया है।

10जितनों को रब ने फ़िद्या देकर रिहा किया है
वह वापस आएँगे और गीत गाते हुए सिय्यून में
दाख़िल होंगे। उनके सर पर अबदी ख़ुशी का ताज
होगा, और वह इतने मसरूर और शादमान होंगे
कि मातम और गिर्याओ-ज़ारी उनके आगे आगे
भाग जाएगी।

असूरी यरूशलम का मुहासरा करते हैं

36 हिज़क़ियाह बादशाह की हुकूमत के
14वें साल में असूर के बादशाह
सनहेरिब ने यहूदाह के तमाम क़िलाबंद शहरों पर
धावा बोलकर उन पर क़ब्ज़ा कर लिया। 2फिर
उसने अपने आला अफ़सर रबशाक़ी को बड़ी
फ़ौज के साथ लकीस से यरूशलम को भेजा।
यरूशलम पहुँचकर रबशाक़ी उस नाले के पास
रुक गया जो पानी को ऊपरवाले तालाब तक
पहुँचाता है (यह तालाब उस रास्ते पर है जो
धोबियों के घाट तक ले जाता है)। 3यह देखकर
महल का इंचार्ज इलियाक़ीम बिन ख़िलक़ियाह,
मीरमुंशी शिबनाह और मुशीरे-ख़ास युआख़ बिन
आसफ़ शहर से निकलकर उससे मिलने आए।
4रबशाक़ी ने उनके हाथ हिज़क़ियाह को पैग़ाम
भेजा,
"असूर के अज़ीम बादशाह फ़रमाते हैं, तुम्हारा
भरोसा किस चीज़ पर है? 5तुम समझते हो कि
ख़ाली बातें करना फ़ौजी हिकमते-अमली और
ताक़त के बराबर है। यह कैसी बात है? तुम
किस पर एतमाद कर रहे हो कि मुझसे सरकश
हो गए हो? 6क्या तुम मिसर पर भरोसा करते
हो? वह तो टूटा हुआ सरकंडा ही है। जो भी
उस पर टेक लगाए उसका हाथ वह चीरकर

ज़ख़मी कर देगा। यही कुछ उन सबके साथ हो
जाएगा जो मिसर के बादशाह फ़िरौन पर भरोसा
करें! 7शायद तुम कहो, ‘हम रब अपने ख़ुदा पर
तवक्कुल करते हैं।’ लेकिन यह किस तरह हो
सकता है? हिज़क़ियाह ने तो उस की बेहुरमती
की है। क्योंकि उसने ऊँची जगहों के मंदिरों और
क़ुरबानगाहों को ढाकर यहूदाह और यरूशलम से
कहा है कि सिर्फ़ यरूशलम की क़ुरबानगाह के
सामने परस्तिश करें। 8आओ, मेरे आक़ा असूर के
बादशाह से सौदा करो। मैं तुम्हें 2,000 घोड़े दूँगा
बशर्तेकि तुम उनके लिए सवार मुहैया कर सको।
लेकिन अफ़सोस, तुम्हारे पास इतने घुड़सवार हैं
ही नहीं! 9तुम मेरे आक़ा असूर के बादशाह के
सबसे छोटे अफ़सर का भी मुक़ाबला नहीं कर
सकते। लिहाज़ा मिसर के रथों पर भरोसा रखने
का क्या फ़ायदा? 10शायद तुम समझते हो
कि मैं रब की मरज़ी के बग़ैर ही इस मुल्क पर
हमला करने आया हूँ ताकि सब कुछ बरबाद करूँ।
लेकिन ऐसा हरगिज़ नहीं है! रब ने ख़ुद मुझे कहा
कि इस मुल्क पर धावा बोलकर इसे तबाह कर
दे।”

11यह सुनकर इलियाक़ीम, शिबनाह और
युआख़ ने रबशाक़ी की तक़रीर में दख़ल देकर
कहा, “बराहे-करम अरामी ज़बान में अपने
ख़ादिमों के साथ गुफ़्तगू कीजिए, क्योंकि हम
यह अच्छी तरह बोल लेते हैं। इबरानी ज़बान
इस्तेमाल न करें, वरना शहर की फ़सील पर खड़े
लोग आपकी बातें सुन लेंगे।” 12लेकिन रबशाक़ी
ने जवाब दिया, “क्या तुम समझते हो कि मेरे
मालिक ने यह पैग़ाम सिर्फ़ तुम्हें और तुम्हारे
मालिक को भेजा है? हरगिज़ नहीं! वह चाहते
हैं कि तमाम लोग यह बातें सुन लें। क्योंकि वह
भी तुम्हारी तरह अपना फ़ुज़्ला खाने और अपना
पेशाब पीने पर मजबूर हो जाएंगे।”

13फिर वह फ़सील की तरफ़ मुड़कर बुलंद
आवाज़ से इबरानी ज़बान में अवाम से मुख़ातिब
हुआ, “सुनो! शहनशाह, असूर के बादशाह के
फ़रमान पर ध्यान दो! 14बादशाह फ़रमाते हैं
कि हिज़क़ियाह तुम्हें धोका न दे। वह तुम्हें बचा
नहीं सकता। 15बेशक वह तुम्हें तसल्ली दिलाने
की कोशिश करके कहता है, ‘रब हमें ज़रूर
छुटकारा देगा, यह शहर कभी भी असूरी बादशाह
के क़ब्ज़े में नहीं आएगा।’ लेकिन इस क़िस्म
की बातों से तसल्ली पाकर रब पर भरोसा मत
करना। 16हिज़क़ियाह की बातें न मानो बल्कि
असूर के बादशाह की। क्योंकि वह फ़रमाते हैं,
मेरे साथ सुलह करो और शहर से निकलकर मेरे
पास आ जाओ। फिर तुममें से हर एक अंगूर की
अपनी बेल और अंजीर के अपने दरख़्त का फल
खाएगा और अपने हौज़ का पानी पिएगा। 17फिर
कुछ देर के बाद मैं तुम्हें एक ऐसे मुल्क में ले
जाऊँगा जो तुम्हारे अपने मुल्क की मानिंद होगा।
उसमें भी अनाज और नई मै, रोटी और अंगूर के
बाग़ हैं। 18हिज़क़ियाह की मत सुनना। जब वह
कहता है, ‘रब हमें बचाएगा’ तो वह तुम्हें धोका
दे रहा है। क्या दीगर अक़वाम के देवता अपने
मुल्कों को शाहे-असूर से बचाने के क़ाबिल रहे
हैं? 19हमात और अरफ़ाद के देवता कहाँ रह गए
हैं? सिफ़रवायम के देवता क्या कर सके? और
क्या किसी देवता ने सामरिया को मेरी गिरिफ़्त
से बचाया? 20नहीं, कोई भी देवता अपना मुल्क
मुझसे बचा न सका। तो फिर रब यरूशलम को
किस तरह मुझसे बचाएगा?”

21फ़सील पर खड़े लोग ख़ामोश रहे। उन्होंने
कोई जवाब न दिया, क्योंकि बादशाह ने हुक्म
दिया था कि जवाब में एक लफ़्ज़ भी न
कहें। 22फिर महल का इंचार्ज इलियाक़ीम बिन
ख़िलक़ियाह, मीरमुंशी शिबनाह और मुशीरे-ख़ास
युआख़ बिन आसफ़ रंजिश के मारे अपने लिबास
फाड़कर हिज़क़ियाह के पास वापस गए। दरबार
में पहुँचकर उन्होंने बादशाह को सब कुछ कह
सुनाया जो रबशाक़ी ने उन्हें कहा था।

रब हिज़क़ियाह को तसल्ली देता है

37 यह बातें सुनकर हिज़क़ियाह ने अपने
कपड़े फाड़े और टाट का मातमी

लिबास पहनकर रब के घर में गया। 2साथ
साथ उसने महल के इंचार्ज इलियाक़ीम, मीरमुंशी
शिबनाह और इमामों के बुज़ुर्गों को आमूस के बेटे
यसायाह नबी के पास भेजा। सब टाट के मातमी
लिबास पहने हुए थे। 3नबी के पास पहुँचकर
उन्होंने हिज़क़ियाह का पैग़ाम सुनाया, "आज हम
बड़ी मुसीबत में हैं। सज़ा के इस दिन असूरियों ने
हमारी सख़्त बेइज़्ज़ती की है। हमारा हाल दर्दे-
ज़ह में मुब्तला उस औरत का-सा है जिसके पेट
से बच्चा निकलने को है, लेकिन जो इसलिए
नहीं निकल सकता कि माँ की ताक़त जाती रही
है। 4लेकिन शायद रब आपके ख़ुदा ने रबशाक़ी
की वह बातें सुनी हों जो उसके आक़ा असूर के
बादशाह ने ज़िंदा ख़ुदा की तौहीन में भेजी हैं। हो
सकता है रब आपका ख़ुदा उस की बातें सुनकर
उसे सज़ा दे। बराहे-करम हमारे लिए जो अब तक
बचे हुए हैं दुआ करें।"

5जब हिज़क़ियाह के अफ़सरों ने यसायाह
को बादशाह का पैग़ाम पहुँचाया 6तो नबी ने
जवाब दिया, "अपने आक़ा को बता देना कि
रब फ़रमाता है, 'उन धमकियों से ख़ौफ़ मत खा
जो असूरी बादशाह के मुलाज़िमों ने मेरी इहानत
करके दी हैं। 7देख, मैं उसका इरादा बदल दूँगा।
वह अफ़वाह सुनकर इतना मुज़तरिब हो जाएगा
कि अपने ही मुल्क को वापस चला जाएगा। वहाँ
मैं उसे तलवार से मरवा दूँगा'।"

सनहेरिब की धमकियाँ और हिज़क़ियाह की दुआ

8रबशाक़ी यरूशलम को छोड़कर असूर के
बादशाह के पास वापस चला गया जो उस वक़्त
लकीस से रवाना होकर लिबना पर चढ़ाई कर रहा
था।

9फिर सनहेरिब को इत्तला मिली, "एथो-
पिया का बादशाह तिरहाक़ा आपसे लड़ने आ
रहा है।" तब उसने अपने क़ासिदों को दुबारा
यरूशलम भेज दिया ताकि हिज़क़ियाह को पैग़ाम
पहुँचाएँ, 10"जिस देवता पर तुम भरोसा रखते
हो उससे फ़रेब न खाओ जब वह कहता है कि
यरूशलम असूरी बादशाह के क़ब्ज़े में कभी नहीं
आएगा। 11तुम तो सुन चुके हो कि असूर के
बादशाहों ने जहाँ भी गए क्या कुछ किया है।
हर मुल्क को उन्होंने मुकम्मल तौर पर तबाह कर
दिया है। तो फिर तुम किस तरह बच जाओगे?
12क्या जौज़ान, हारान और रसफ़ के देवता
उनकी हिफ़ाज़त कर पाए? क्या मुल्के-अदन में
तिलस्सार के बाशिंदे बच सके? नहीं, कोई भी
देवता उनकी मदद न कर सका जब मेरे बापदादा
ने उन्हें तबाह किया। 13ध्यान दो, अब हमात,
अरफ़ाद, सिफ़रवायम शहर, हेना और इव्वा के
बादशाह कहाँ हैं?"

14ख़त मिलने पर हिज़क़ियाह ने उसे पढ़ लिया
और फिर रब के घर के सहन में गया। ख़त को
रब के सामने बिछाकर 15उसने रब से दुआ की,

16"ऐ रब्बुल-अफ़वाज इसराईल के ख़ुदा
जो करूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्त-
नशीन है, तू अकेला ही दुनिया के तमाम ममालिक
का ख़ुदा है। तू ही ने आसमानो-ज़मीन को ख़लक़
किया है। 17ऐ रब, मेरी सुन! अपनी आँखें
खोलकर देख! सनहेरिब की उन तमाम बातों पर
ध्यान दे जो उसने इस मक़सद से हम तक पहुँचाई
हैं कि ज़िंदा ख़ुदा की इहानत करे। 18ऐ रब, यह
बात सच है कि असूरी बादशाहों ने इन तमाम
क़ौमों को उनके मुल्कों समेत तबाह कर दिया है।
19वह तो उनके बुतों को आग में फेंककर भस्म
कर सकते थे, क्योंकि वह ज़िंदा नहीं बल्कि सिर्फ़
इनसान के हाथों से बने हुए लकड़ी और पत्थर
के बुत थे। 20ऐ रब हमारे ख़ुदा, अब मैं तुझसे
इलतमास करता हूँ कि हमें असूरी बादशाह के
हाथ से बचा ताकि दुनिया के तमाम ममालिक
जान लें कि तू ऐ रब, वाहिद ख़ुदा है।"

असूरी की लान-तान पर अल्लाह का जवाब

21फिर यसायाह बिन आमूस ने हिज़क़ि-
याह को पैग़ाम भेजा, "रब इसराईल का ख़ुदा
फ़रमाता है कि मैंने असूरी बादशाह सनहेरिब के

बारे में तेरी दुआ सुनी है। 22अब रब का उसके ख़िलाफ़ फ़रमान सुन,

कुँवारी सिय्यून बेटी तुझे हक़ीर जानती है, हाँ यरूशलम बेटी अपना सर हिला हिलाकर हिक़ारतआमेज़ नज़र से तेरे पीछे देखती है। 23क्या तू नहीं जानता कि किस को गालियाँ दीं और किसकी इहानत की है? क्या तुझे नहीं मालूम कि तूने किसके ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद की है? जिसकी तरफ़ तू ग़ुरूर की नज़र से देख रहा है वह इसराईल का क़ुद्दूस है!

24अपने क़ासिदों के ज़रीए तूने रब की इहानत की है। तू डींगें मारकर कहता है, 'मैं अपने बेशुमार रथों से पहाड़ों की चोटियों और लुबनान की इंतहा तक चढ़ गया हूँ। मैं देवदार के बड़े बड़े और जूनीपर के बेहतरीन दरख़्तों को काटकर लुबनान की दूरतरीन बुलंदियों तक, उसके सबसे घने जंगल तक पहुँच गया हूँ। 25मैंने ग़ैरमुल्कों में कुएँ खुदवाकर उनका पानी पी लिया है। मेरे तल्वों तले मिसर की तमाम नदियाँ ख़ुश्क हो गईं।'

26ऐ असूरी बादशाह, क्या तूने नहीं सुना कि बड़ी देर से मैंने यह सब कुछ मुक़र्रर किया? क़दीम ज़माने में ही मैंने इसका मनसूबा बाँध लिया, और अब मैं इसे वुजूद में लाया। मेरी मरज़ी थी कि तू क़िलाबंद शहरों को ख़ाक में मिलाकर पत्थर के ढेरों में बदल दे। 27इसी लिए उनके बाशिंदों की ताक़त जाती रही, वह घबराए और शरमिंदा हुए। वह घास की तरह कमज़ोर थे, छत पर उगनेवाली उस हरियाली की मानिंद जो थोड़ी देर के लिए फलती-फूलती तो है, लेकिन लू चलते वक़्त एकदम मुरझा जाती है। 28मैं तो तुझसे ख़ूब वाक़िफ़ हूँ। मुझे मालूम है कि तू कहाँ ठहरा हुआ है, और तेरा आना जाना मुझसे पोशीदा नहीं रहता। मुझे पता है कि तू मेरे ख़िलाफ़ कितने तैश में आ गया है। 29तेरा तैश और ग़ुरूर देखकर मैं तेरी नाक में नकेल और तेरे मुँह में लगाम डालकर तुझे उस रास्ते पर से वापस घसीट ले जाऊँगा जिस पर से तू यहाँ आ पहुँचा है।

30ऐ हिज़क़ियाह, मैं तुझे इस निशान से तसल्ली दिलाऊँगा कि इस साल और आनेवाले साल तुम वह कुछ खाओगे जो खेतों में ख़ुद बख़ुद उगेगा। लेकिन तीसरे साल तुम बीज बोकर फ़सलें काटोगे और अंगूर के बाग़ लगाकर उनका फल खाओगे। 31यहूदाह के बचे हुए बाशिंदे एक बार फिर जड़ पकड़कर फल लाएँगे। 32क्योंकि यरूशलम से क़ौम का बक़िया निकल आएगा, और कोहे-सिय्यून का बचा-खुचा हिस्सा दुबारा मुल्क में फैल जाएगा। रब्बुल-अफ़वाज की ग़ैरत यह कुछ सरंजाम देगी।

33जहाँ तक असूरी बादशाह का ताल्लुक़ है रब फ़रमाता है कि वह इस शहर में दाख़िल नहीं होगा। वह एक तीर तक उसमें नहीं चलाएगा। न वह ढाल लेकर उस पर हमला करेगा, न शहर की फ़सील के साथ मिट्टी का ढेर लगाएगा। 34जिस रास्ते से बादशाह यहाँ आया उसी रास्ते पर से वह अपने मुल्क वापस चला जाएगा। इस शहर में वह घुसने नहीं पाएगा। यह रब का फ़रमान है। 35क्योंकि मैं अपनी और अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर इस शहर का दिफ़ा करके उसे बचाऊँगा।"

36उसी रात रब का फ़रिश्ता निकल आया और असूरी लशकरगाह में से गुज़रकर 1,85,000 फ़ौजियों को मार डाला। जब लोग सुबह-सवेरे उठे तो चारों तरफ़ लाशें ही लाशें नज़र आईं।

37यह देखकर सनहेरिब अपने ख़ैमे उखाड़कर अपने मुल्क वापस चला गया। नीनवा शहर पहुँचकर वह वहाँ ठहर गया। 38एक दिन जब वह अपने देवता निसरूक के मंदिर में पूजा कर रहा था तो उसके बेटों अद्रम्मलिक और शराज़र ने उसे तलवार से क़त्ल कर दिया और फ़रार होकर मुल्के-अरारात में पनाह ली। फिर उसका बेटा असर्हद्दून तख़्तनशीन हुआ।

अल्लाह हिज़क़ियाह को शफ़ा देता है

38 उन दिनों में हिज़क़ियाह इतना बीमार हुआ कि मरने की नौबत आ पहुँची। आमूस का बेटा यसायाह नबी उससे मिलने आया

और कहा, "रब फ़रमाता है कि अपने घर का बंदोबस्त कर ले, क्योंकि तुझे मरना है। तू इस बीमारी से शफ़ा नहीं पाएगा।"

2यह सुनकर हिज़क़ियाह ने अपना मुँह दीवार
की तरफ़ फेरकर दुआ की, 3"ऐ रब, याद कर
कि मैं वफ़ादारी और ख़ुलूसदिली से तेरे सामने चलता रहा हूँ, कि मैं वह कुछ करता आया हूँ जो तुझे पसंद है।" फिर वह फूट फूटकर रोने लगा।

4तब यसायाह नबी को रब का कलाम मिला,
5"हिज़क़ियाह के पास जाकर उसे बता देना कि
रब तेरे बाप दाऊद का ख़ुदा फ़रमाता है, 'मैंने तेरी दुआ सुन ली और तेरे आँसू देखे हैं। मैं तेरी ज़िंदगी
में 15 साल का इज़ाफ़ा करूँगा। 6साथ साथ मैं
तुझे और इस शहर को असूर के बादशाह से बचा लूँगा। मैं ही इस शहर का दिफ़ा करूँगा'।"

7यह पैग़ाम हिज़क़ियाह को सुनाकर यसायाह
ने मज़ीद कहा, "रब तुझे एक निशान देगा जिससे
तू जान लेगा कि वह अपना वादा पूरा करेगा। 8मेरे
कहने पर आख़ज़ की बनाई हुई धूपघड़ी का साया दस दर्जे पीछे जाएगा।" और ऐसा ही हुआ। साया दस दर्जे पीछे हट गया।

शफ़ा पाने पर हिज़क़ियाह का गीत

9यहूदाह के बादशाह हिज़क़ियाह ने शफ़ा पाने पर ज़ैल का गीत क़लमबंद किया,

10"मैं बोला, क्या मुझे ज़िंदगी के उरूज पर पाताल के दरवाज़ों में दाख़िल होना है? बाक़ीमाँदा साल मुझसे छीन लिए गए हैं।

11मैं बोला, आइंदा मैं रब को ज़िंदों के मुल्क में नहीं देखूँगा। अब से मैं पाताल के बाशिंदों के साथ रहकर इस दुनिया के लोगों पर नज़र नहीं डालूँगा।

12मेरे घर को गल्लाबानों के ख़ैमे की तरह उतारा गया है, वह मेरे ऊपर से छीन लिया गया है। मैंने अपनी ज़िंदगी को जूलाहे की तरह इख़्तिताम तक बुन लिया है। अब उसने मुझे काटकर ताँत के धागों से अलग कर दिया है। एक दिन के अंदर अंदर तूने मुझे ख़त्म किया।

13सुबह तक मैं चीख़कर फ़रियाद करता रहा, लेकिन उसने शेरबबर की तरह मेरी तमाम हड्डियाँ तोड़ दीं। एक दिन के अंदर अंदर तूने मुझे ख़त्म किया।

14मैं बेजान होकर अबाबील या बुलबुल की तरह चीं चीं करने लगा, ग़ूँ ग़ूँ करके कबूतर की-सी आहें भरने लगा। मेरी आँखें निढाल होकर आसमान की तरफ़ तकती रहीं। ऐ रब, मुझ पर ज़ुल्म हो रहा है। मेरी मदद के लिए आ!

15लेकिन मैं क्या कहूँ? उसने ख़ुद मुझसे हमकलाम होकर यह किया है। मैं तलख़ियों से मग़लूब होकर ज़िंदगी के आख़िर तक दबी हुई हालत में फिरूँगा।

16ऐ रब, इन्हीं चीज़ों के सबब से इनसान ज़िंदा रहता है, मेरी रूह की ज़िंदगी भी इन्हीं पर मबनी है। तू मुझे बहाल करके जीने देगा।

17यक़ीनन यह तलख़ तजरबा मेरी बरकत का बाइस बन गया। तेरी मुहब्बत ने मेरी जान को क़ब्र से महफ़ूज़ रखा, तूने मेरे तमाम गुनाहों को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया है।

18क्योंकि पाताल तेरी हम्दो-सना नहीं करता, और मौत तेरी सताइश में गीत नहीं गाती, ज़मीन की गहराइयों में उतरे हुए तेरी वफ़ादारी के इंतज़ार में नहीं रहते।

19नहीं, जो ज़िंदा है वही तेरी तारीफ़ करता, वही तेरी तमजीद करता है, जिस तरह मैं आज कर रहा हूँ। पुश्त-दर-पुश्त बाप अपने बच्चों को तेरी वफ़ादारी के बारे में बताते हैं।

20रब मुझे बचाने के लिए तैयार था। आओ, हम उम्र-भर रब के घर में तारदार साज़ बजाएँ।"

इलाज का तरीक़े-कार

21यसायाह ने हिदायत दी थी, "अंजीर की टिक्की लाकर बादशाह के नासूर पर बाँध दो!
तब उसे शफ़ा मिलेगी।" 22पहले हिज़क़ियाह ने
पूछा था, "रब कौन-सा निशान देगा जिससे मुझे

यक़ीन आए कि मैं दुबारा रब के घर की इबादत
में शरीक हूँगा?”

हिज़क़ियाह से संगीन ग़लती होती है

39 थोड़ी देर के बाद बाबल के बादशाह
मरूदक-बलदान बिन बलदान ने
हिज़क़ियाह की बीमारी और शफ़ा की ख़बर
सुनकर वफ़्द के हाथ ख़त और तोह्फ़े भेजे।
2हिज़क़ियाह ने ख़ुशी से वफ़्द का इस्तक़बाल
करके उसे वह तमाम ख़ज़ाने दिखाए जो
ज़ख़ीराख़ाने में महफ़ूज़ रखे गए थे यानी तमाम
सोना-चाँदी, बलसान का तेल और बाक़ी क़ीमती
तेल। उसने पूरा असलिहाख़ाना और बाक़ी सब
कुछ भी दिखाया जो उसके ख़ज़ानों में था। पूरे
महल और पूरे मुल्क में कोई ख़ास चीज़ न रही
जो उसने उन्हें न दिखाई।

3तब यसायाह नबी हिज़क़ियाह बादशाह के
पास आया और पूछा, “इन आदमियों ने क्या
कहा? कहाँ से आए हैं?” हिज़क़ियाह ने जवाब
दिया, “दूर-दराज़ मुल्क बाबल से मेरे पास आए
हैं।” 4यसायाह बोला, “उन्होंने महल में क्या कुछ
देखा?” हिज़क़ियाह ने कहा, “उन्होंने महल में
सब कुछ देख लिया है। मेरे ख़ज़ानों में कोई चीज़
न रही जो मैंने उन्हें नहीं दिखाई।”

5तब यसायाह ने कहा, “रब्बुल-अफ़वाज का
फ़रमान सुनें! 6एक दिन आनेवाला है कि तेरे
महल का तमाम माल छीन लिया जाएगा। जितने
भी ख़ज़ाने तू और तेरे बापदादा ने आज तक जमा
किए हैं उन सबको दुश्मन बाबल ले जाएगा। रब
फ़रमाता है कि एक भी चीज़ पीछे नहीं रहेगी।
7तेरे बेटों में से भी बाज़ छीन लिए जाएंगे, ऐसे
जो अब तक पैदा नहीं हुए। तब वह ख़्वाजासरा
बनकर शाहे-बाबल के महल में ख़िदमत करेंगे।”

8हिज़क़ियाह बोला, “रब का जो पैग़ाम आपने
मुझे दिया है वह ठीक है।” क्योंकि उसने सोचा,
“बड़ी बात यह है कि मेरे जीते-जी अमनो-अमान
होगा।”

अल्लाह की क़ौम को तसल्ली

40 तुम्हारा रब फ़रमाता है,
“तसल्ली दो, मेरी क़ौम को तसल्ली
दो! 2नरमी से यरूशलम से बात करो, बुलंद
आवाज़ से उसे बताओ कि तेरी ग़ुलामी के दिन पूरे
हो गए हैं, तेरा क़ुसूर मुआफ़ हो गया है। क्योंकि
तुझे रब के हाथ से तमाम गुनाहों की दुगनी सज़ा
मिल गई है।”

3एक आवाज़ पुकार रही है, “रेगिस्तान में रब
की राह तैयार करो! बयाबान में हमारे ख़ुदा का
रास्ता सीधा बनाओ। 4लाज़िम है कि हर वादी
भर दी जाए, ज़रूरी है कि हर पहाड़ और बुलंद
जगह मैदान बन जाए। जो टेढ़ा है उसे सीधा किया
जाए, जो नाहमवार है उसे हमवार किया जाए।
5तब अल्लाह का जलाल ज़ाहिर हो जाएगा, और
तमाम इनसान मिलकर उसे देखेंगे। यह रब के
अपने मुँह का फ़रमान है।”

6एक आवाज़ ने कहा, “ज़ोर से आवाज़ दे!”
मैंने पूछा, “मैं क्या कहूँ?” “यह कि तमाम
इनसान घास ही हैं, उनकी तमाम शानो-शौकत
जंगली फूल की मानिंद है। 7जब रब का साँस
उन पर से गुज़रे तो घास मुरझा जाती और फूल
गिर जाता है, क्योंकि इनसान घास ही है। 8घास
तो मुरझा जाती और फूल गिर जाता है, लेकिन
हमारे ख़ुदा का कलाम अबद तक क़ायम रहता
है।”

9ऐ सिय्यून, ऐ ख़ुशख़बरी के पैग़ंबर, बुलंदियों
पर चढ़ जा! ऐ यरूशलम, ऐ ख़ुशख़बरी के
पैग़ंबर, ज़ोर से आवाज़ दे! पुकारकर कह और
ख़ौफ़ मत खा। यहूदाह के शहरों को बता, “वह
देखो, तुम्हारा ख़ुदा!”

10देखो, रब क़ादिरे-मुतलक़ बड़ी क़ुदरत के
साथ आ रहा है, वह बड़ी ताक़त के साथ हुकूमत
करेगा। देखो, उसका अज्र उसके पास है, और
उसका इनाम उसके आगे आगे चलता है। 11वह
चरवाहे की तरह अपने गल्ले की गल्लाबानी
करेगा। वह भेड़ के बच्चों को अपने बाज़ुओं में

महफ़ूज़ रखकर सीने के साथ लगाए फिरेगा और
उनकी माओं को बड़े ध्यान से अपने साथ ले
चलेगा।

अल्लाह की नाक़ाबिले-बयान अज़मत

12किसने अपने हाथ से दुनिया का पानी नाप
लिया है? किसने अपने हाथ से आसमान की
पैमाइश की है? किसने ज़मीन की मिट्टी की
मिक़दार मालूम की या तराज़ू से पहाड़ों का कुल
वज़न मुतैयिन किया है? 13किसने रब के रूह की
तहक़ीक़ कर पाई? क्या उसका कोई मुशीर है जो
उसे तालीम दे? 14क्या उसे किसी से मशवरा
लेने की ज़रूरत है ताकि उसे समझ आकर रास्त
राह की तालीम मिल जाए? हरगिज़ नहीं! क्या
किसी ने कभी उसे इल्मो-इरफ़ान या समझदार
ज़िंदगी गुज़ारने का फ़न सिखाया है? हरगिज़
नहीं!

15यक़ीनन तमाम अक़वाम रब के नज़-
दीक बालटी के एक क़तरे या तराज़ू में गर्द की
मानिंद हैं। जज़ीरों को वह रेत के ज़र्रों की तरह
उठा लेता है। 16ख़ाह लुबनान के तमाम दरख़्त
और जानवर रब के लिए क़ुरबान क्यों न होते
तो भी मुनासिब क़ुरबानी के लिए काफ़ी न होते।
17उसके सामने तमाम अक़वाम कुछ भी नहीं हैं।
उस की नज़र में वह हेच और नाचीज़ हैं।

18अल्लाह का मुवाज़ना किससे हो सकता है?
उसका मुक़ाबला किस तस्वीर या मुजस्समे से
हो सकता है? 19बुत तो यों बनता है कि पहले
दस्तकार उसे ढाल देता है, फिर सुनार उस पर
सोना चढ़ाकर उसे चाँदी की ज़ंजीरों से सजा देता
है। 20जो ग़ुरबत के बाइस यह नहीं करवा सकता
वह कम अज़ कम कोई ऐसी लकड़ी चुन लेता है
जो गल-सड़ नहीं जाती। फिर वह किसी माहिर
दस्तकार से बुत को यों बनवाता है कि वह अपनी
जगह से न हिले।

21क्या तुमको मालूम नहीं? क्या तुमने बात
नहीं सुनी? क्या तुम्हें इब्तिदा से सुनाया नहीं
गया? क्या तुम्हें दुनिया के क़ियाम से लेकर
आज तक समझ नहीं आई? 22रब रूए-ज़मीन के
ऊपर बुलंदियों पर तख़्तनशीन है जहाँ से इनसान
टिड्डियों जैसे लगते हैं। वह आसमान को परदे
की तरह तानकर और हर तरफ़ खींचकर रहने
के क़ाबिल ख़ैमा बना देता है। 23वह सरदारों को
नाचीज़ और दुनिया के क़ाज़ियों को हेच बना देता
है। 24वह नए पौदों की मानिंद हैं जिनकी पनीरी
अभी अभी लगी है, बीज अभी अभी बोए गए हैं,
पौदों ने अभी अभी जड़ पकड़ी है कि रब उन पर
फूँक मारता है और वह मुरझा जाते हैं। तब आँधी
उन्हें भूसे की तरह उड़ा ले जाती है।

25क़ुद्दूस ख़ुदा फ़रमाता है, "तुम मेरा मुवाज़ना
किससे करना चाहते हो? कौन मेरे बराबर है?"
26अपनी नज़र उठाकर आसमान की तरफ़ देखो।
किसने यह सब कुछ ख़लक़ किया? वह जो
आसमानी लशकर की पूरी तादाद बाहर लाकर
हर एक को नाम लेकर बुलाता है। उस की क़ुदरत
और ज़बरदस्त ताक़त इतनी अज़ीम है कि एक भी
दूर नहीं रहता।

27ऐ याक़ूब की क़ौम, तू क्यों कहती है कि मेरी
राह रब की नज़र से छुपी रहती है? ऐ इसराईल,
तू क्यों शिकायत करता है कि मेरा मामला मेरे
ख़ुदा के इल्म में नहीं आता?

28क्या तुझे मालूम नहीं, क्या तूने नहीं सुना
कि रब लाज़वाल ख़ुदा और दुनिया की इंतहा तक
का ख़ालिक़ है? वह कभी नहीं थकता, कभी
निढाल नहीं होता। कोई भी उस की समझ की
गहराइयों तक नहीं पहुँच सकता। 29वह थकेमाँदों
को ताज़गी और बेबसों को तक़वियत देता है।
30गो नौजवान थककर निढाल हो जाएँ और
जवान आदमी ठोकर खाकर गिर जाएँ, 31लेकिन
रब से उम्मीद रखनेवाले नई ताक़त पाएँगे और
उक़ाब के-से पर फैलाकर बुलंदियों तक उड़ेंगे।
न वह दौड़ते हुए थकेंगे, न चलते हुए निढाल हो
जाएंगे।

दुश्मन के हमले रब ही की तरफ़ से हैं

41 “ऐ जज़ीरो, ख़ामोश रहकर मेरी
बात सुनो! अक़वाम अज़ सरे-नौ
तक़वियत पाएँ और मेरे हुज़ूर आएँ, फिर बात
करें। आओ, हम एक दूसरे से मिलकर अदालत
में हाज़िर हो जाएँ!
2कौन उस आदमी को जगाकर मशरिक़ से
लाया है जिसके दामन में इनसाफ़ है? कौन दीगर
क़ौमों को इस शख़्स के हवाले करके बादशाहों को
ख़ाक में मिलाता है? उस की तलवार से वह गर्द
हो जाते हैं, उस की कमान से लोग हवा में भूसे की
तरह उड़कर बिखर जाते हैं। 3वह उनका ताक़्क़ुब
करके सहीह-सलामत आगे निकलता है, भागते
हुए उसके पाँव रास्ते को नहीं छूते। 4किसने यह
सब कुछ किया, किसने यह अंजाम दिया? उसी
ने जो इब्तिदा ही से नसलों को बुलाता आया है।
मैं, रब अव्वल हूँ, और आख़िर में आनेवालों के
साथ भी मैं वही हूँ।”
5जज़ीरे यह देखकर डर गए, दुनिया के दूर-
दराज़ इलाक़े काँप उठे हैं। वह क़रीब आते हुए
6एक दूसरे को सहारा देकर कहते हैं, “हौसला
रख!” 7दस्तकार सुनार की हौसलाअफ़्ज़ाई
करता है, और जो बुत की नाहमवारियों को हथौड़े
से ठीक करता है वह अहरन पर काम करनेवाले
की हिम्मत बढ़ाता और टाँके का मुआयना करके
कहता है, “अब ठीक है!” फिर मिलकर बुत को
कीलों से मज़बूत करते हैं ताकि हिले न।

मत डरना, क्योंकि मैं तेरा ख़ुदा हूँ

8“लेकिन तू मेरे ख़ादिम इसराईल, तू फ़रक़
है। ऐ याक़ूब की क़ौम, मैंने तुझे चुन लिया, और
तू मेरे दोस्त इब्राहीम की औलाद है। 9मैं तुझे
पकड़कर दुनिया की इंतहा से लाया, उसके दूर-
दराज़ कोनों से बुलाया। मैंने फ़रमाया, ‘तू मेरा
ख़ादिम है।’ मैंने तुझे रद्द नहीं किया बल्कि तुझे
चुन लिया है। 10चुनाँचे मत डर, क्योंकि मैं तेरे
साथ हूँ। दहशत मत खा, क्योंकि मैं तेरा ख़ुदा
हूँ। मैं तुझे मज़बूत करता, तेरी मदद करता, तुझे
अपने दहने हाथ के इनसाफ़ से क़ायम रखता हूँ।
11देख, जितने भी तेरे ख़िलाफ़ तैश में आ गए हैं
वह सब शरमिंदा हो जाएंगे, उनका मुँह काला हो
जाएगा। तुझसे झगड़नेवाले हेच ही साबित होकर
हलाक हो जाएंगे। 12तब तू अपने मुख़ालिफ़ों का
पता करेगा लेकिन उनका नामो-निशान तक नहीं
मिलेगा। तुझसे लड़नेवाले ख़त्म ही होंगे, ऐसा ही
लगेगा कि वह कभी थे नहीं। 13क्योंकि मैं रब
तेरा ख़ुदा हूँ। मैं तेरे दहने हाथ को पकड़कर तुझे
बताता हूँ, ‘मत डरना, मैं ही तेरी मदद करता हूँ।’
14ऐ कीड़े याक़ूब मत डर, ऐ छोटी क़ौम
इसराईल ख़ौफ़ मत खा। क्योंकि मैं ही तेरी मदद
करूँगा, और जो एवज़ाना देकर तुझे छुड़ा रहा
है वह इसराईल का क़ुद्दूस है।” यह है रब का
फ़रमान। 15“मेरे हाथ से तू गाहने का नया और
मुतअद्दिद तेज़ नोकें रखनेवाला आला बनेगा।
तब तू पहाड़ों को गाहकर रेज़ा रेज़ा कर देगा,
और पहाड़ियाँ भूसे की मानिंद हो जाएँगी। 16तू
उन्हें उछाल उछालकर उड़ाएगा तो हवा उन्हें ले
जाएगी, आँधी उन्हें दूर तक बिखेर देगी। लेकिन
तू रब की ख़ुशी मनाएगा और इसराईल के क़ुद्दूस
पर फ़ख़र करेगा।

अल्लाह रेगिस्तान में पानी मुहैया करता है

17ग़रीब और ज़रूरतमंद पानी की तलाश में
हैं, लेकिन बेफ़ायदा, उनकी ज़बानें प्यास के मारे
ख़ुश्क हो गई हैं। लेकिन मैं, रब उनकी सुनूँगा, मैं
जो इसराईल का ख़ुदा हूँ उन्हें तर्क नहीं करूँगा।
18मैं बंजर बुलंदियों पर नदियाँ जारी करूँगा और
वादियों में चश्मे फूटने दूँगा। मैं रेगिस्तान को
जोहड़ में और सूखी सूखी ज़मीन को पानी के
सोतों में बदल दूँगा। 19मेरे हाथ से रेगिस्तान में
देवदार, कीकर, मेहँदी और ज़ैतून के दरख़्त लगेंगे,
बयाबान में जूनीपर, सनोबर और सरो के दरख़्त
मिलकर उगेंगे। 20मैं यह इसलिए करूँगा कि लोग
ध्यान देकर जान लें कि रब के हाथ ने यह सब कुछ
किया है, कि इसराईल के क़ुद्दूस ने यह पैदा किया
है।”

देवता बेकार हैं

21रब जो याक़ूब का बादशाह है फ़रमाता है,
“आओ, अदालत में अपना मामला पेश करो,
अपने दलायल बयान करो। 22आओ, अपने बुतों
को ले आओ ताकि वह हमें बताएँ कि क्या क्या
पेश आना है। माज़ी में क्या क्या हुआ? बताओ,
ताकि हम ध्यान दें। या हमें मुस्तक़बिल की बातें
सुनाओ, 23वह कुछ जो आनेवाले दिनों में होगा,
ताकि हमें मालूम हो जाए कि तुम देवता हो। कम
अज़ कम कुछ न कुछ करो, ख़ाह अच्छा हो या
बुरा, ताकि हम घबराकर डर जाएँ। 24तुम तो कुछ
भी नहीं हो, और तुम्हारा काम भी बेकार है। जो
तुम्हें चुन लेता है वह क़ाबिले-घिन है।

25अब मैंने शिमाल से एक आदमी को जगा
दिया है, और वह मेरा नाम लेकर मशरिक़ से आ
रहा है। यह शख़्स हुक्मरानों को मिट्टी की तरह
कुचल देता है, उन्हें गारे को नरम करनेवाले कुम्हार
की तरह रौंद देता है। 26किसने इब्तिदा से इसका
एलान किया ताकि हमें इल्म हो? किसने पहले
से इसकी पेशगोई की ताकि हम कहें, ‘उसने
बिलकुल सहीह कहा है’? कोई नहीं था जिसने
पहले से इसका एलान करके इसकी पेशगोई की।
कोई नहीं था जिसने तुम्हारे मुँह से इसके बारे
में एक लफ़्ज़ भी सुना। 27किसने सिय्यून को
पहले बता दिया, ‘वह देखो, तेरा सहारा आने को
है!’ मैं ही ने यह फ़रमाया, मैं ही ने यरूशलम को
ख़ुशख़बरी का पैग़ंबर अता किया।

28लेकिन जब मैं अपने इर्दगिर्द देखता हूँ तो
कोई नहीं है जो मुझे मशवरा दे, कोई नहीं जो मेरे
सवाल का जवाब दे। 29देखो, यह सब धोका ही
धोका हैं। उनके काम हेच और उनके ढाले हुए
मुजस्समे ख़ाली हवा ही हैं।

अल्लाह का पैग़ंबर अक़वाम के लिए मशाले-राह है

42 देखो, मेरा ख़ादिम जिसे मैं क़ायम
रखता हूँ, मेरा बरगुज़ीदा जो मुझे
पसंद है। मैं अपने रूह को उस पर डालूँगा, और
वह अक़वाम में इनसाफ़ क़ायम करेगा। 2वह
न तो चीख़ेगा, न चिल्लाएगा, गलियों में उस
की आवाज़ सुनाई नहीं देगी। 3न वह कुचले
हुए सरकंडे को तोड़ेगा, न बुझती हुई बत्ती
को बुझाएगा। वफ़ादारी से वह इनसाफ़ क़ायम
करेगा। 4और जब तक उसने दुनिया में इनसाफ़
क़ायम न कर लिया हो तब तक न उस की बत्ती
बुझेगी, न उसे कुचला जाएगा। जज़ीरे उस की
हिदायत से उम्मीद रखेंगे।”

5रब ख़ुदा ने आसमान को ख़लक़ करके ख़ैमे
की तरह ज़मीन के ऊपर तान लिया। उसी ने
ज़मीन को और जो कुछ उसमें से फूट निकलता है
तश्कील दिया, और उसी ने रूए-ज़मीन पर बसने
और चलनेवालों में दम फूँककर जान डाली। अब
यही ख़ुदा अपने ख़ादिम से फ़रमाता है, 6“मैं, रब
ने इनसाफ़ से तुझे बुलाया है। मैं तेरे हाथ को
पकड़कर तुझे महफ़ूज़ रखूँगा। क्योंकि मैं तुझे
क़ौम का अहद और दीगर अक़वाम की रौशनी
बना दूँगा 7ताकि तू अंधों की आँखें खोले, क़ैदियों
को कोठड़ी से रिहा करे और तारीकी की क़ैद
में बसनेवालों को छुटकारा दे। 8मैं रब हूँ, यही
मेरा नाम है! मैं बरदाश्त नहीं करूँगा कि जो
जलाल मुझे मिलना है वह किसी और को दे दिया
जाए, कि लोग बुतों की तमजीद करें जबकि उन्हें
मेरी तमजीद करनी चाहिए। 9देखो, जिसकी भी
पेशगोई मैंने की थी वह वुक़ू में आया है। अब मैं
नई बातों का एलान करता हूँ। इससे पहले कि
वह वुजूद में आएँ मैं उन्हें तुम्हें सुना देता हूँ।”

रब की तमजीद में गीत गाओ!

10रब की तमजीद में गीत गाओ, दुनिया की
इंतहा तक उस की मद्हसराई करो! ऐ समुंदर के
मुसाफ़िरो और जो कुछ उसमें है, उस की सताइश
करो! ऐ जज़ीरो, अपने बाशिंदों समेत उस की
तारीफ़ करो! 11बयाबान और उसके क़सबे ख़ुशी
के नारे लगाएँ, जिन आबादियों में क़ीदार बसता
है वह शादमान हों। सिला के बाशिंदे बाग़ बाग़
होकर पहाड़ों की चोटियों पर ज़ोर से शादियाना

बजाएँ। 12सब रब को जलाल दें और जज़ीरों तक
उस की तारीफ़ फैलाएँ।
13रब सूरमे की तरह लड़ने के लिए निकलेगा,
फ़ौजी की तरह जोश में आएगा और जंग के नारे
लगा लगाकर अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आएगा।
14वह फ़रमाता है, “मैं बड़ी देर से ख़ामोश रहा
हूँ। मैं चुप रहा और अपने आपको रोकता रहा।
लेकिन अब मैं दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह
कराहता हूँ। मेरा साँस फूल जाता और मैं बेताबी
से हाँपता रहता हूँ। 15मैं पहाड़ों और पहाड़ियों को
तबाह करके उनकी तमाम हरियाली झुलसा दूँगा।
दरिया ख़ुश्क ज़मीन बन जाएंगे, और जोहड़ सूख
जाएंगे। 16मैं अंधों को ऐसी राहों पर ले चलूँगा
जिनसे वह वाक़िफ़ नहीं होंगे, ग़ैरमानूस रास्तों पर
उनकी राहनुमाई करूँगा। उनके आगे मैं अंधेरे को
रौशन और नाहमवार ज़मीन को हमवार करूँगा।
यह सब कुछ मैं सरंजाम दूँगा, एक बात भी अधूरी
नहीं रह जाएगी।
17लेकिन जो बुतों पर भरोसा रखकर उनसे
कहते हैं, ‘तुम हमारे देवता हो’ वह सख़्त शर्म
खाकर पीछे हट जाएंगे।

सज़ा का सबब अंधापन है

18ऐ बहरो, सुनो! ऐ अंधो, नज़र उठाओ ताकि
देख सको! 19कौन मेरे ख़ादिम जैसा अंधा है?
कौन मेरे पैग़ंबर जैसा बहरा है, उस जैसा जिसे मैं
भेज रहा हूँ? गो मैंने उसके साथ अहद बाँधा तो
भी रब के ख़ादिम जैसा अंधा और नाबीना कोई
नहीं है। 20गो तूने बहुत कुछ देखा है तूने तवज्जुह
नहीं दी, गो तेरे कान हर बात सुन लेते हैं तू सुनता
नहीं।” 21रब ने अपनी रास्ती की ख़ातिर अपनी
शरीअत की अज़मत और जलाल को बढ़ाया है,
क्योंकि यह उस की मरज़ी थी। 22लेकिन अब
उस की क़ौम को ग़ारत किया गया, सब कुछ लूट
लिया गया है। सबके सब गढ़ों में जकड़े या जेलों
में छुपाए हुए हैं। वह लूट का माल बन गए हैं, और
कोई नहीं है जो उन्हें बचाए। उन्हें छीन लिया गया
है, और कोई नहीं है जो कहे, “उन्हें वापस करो!”
23काश तुममें से कोई ध्यान दे, कोई आइंदा के
लिए तवज्जुह दे। 24सोच लो! किसने इजाज़त
दी कि याक़ूब की औलाद को ग़ारत किया जाए?
किसने इसराईल को लुटेरों के हवाले कर दिया?
क्या यह रब की तरफ़ से नहीं हुआ, जिसके
ख़िलाफ़ हमने गुनाह किया है? लोग तो उस
की राहों पर चलना ही नहीं चाहते थे, वह उस
की शरीअत के ताबे रहने के लिए तैयार ही न
थे। 25इसी वजह से उसने उन पर अपना सख़्त
ग़ज़ब नाज़िल किया, उन्हें शदीद जंग की ज़द में
आने दिया। लेकिन अफ़सोस, गो आग ने क़ौम
को घेरकर झुलसा दिया ताहम उसे समझ नहीं
आई, गो वह भस्म हुई तो भी उसने दिल से सबक़
नहीं सीखा।

रब क़ौम को वतन में वापस लाएगा

43 लेकिन अब रब जिसने तुझे ऐ याक़ूब
ख़लक़ किया और तुझे ऐ इसराईल
तश्कील दिया फ़रमाता है, “ख़ौफ़ मत खा,
क्योंकि मैंने एवज़ाना देकर तुझे छुड़ाया है, मैंने
तेरा नाम लेकर तुझे बुलाया है, तू मेरा ही है।
2पानी की गहराइयों में से गुज़रते वक़्त मैं तेरे साथ
हूँगा, दरियाओं को पार करते वक़्त तू नहीं डूबेगा।
आग में से गुज़रते वक़्त न तू झुलस जाएगा,
न शोलों से भस्म हो जाएगा। 3क्योंकि मैं रब
तेरा ख़ुदा हूँ, मैं इसराईल का क़ुद्दूस और तेरा
नजातदहिंदा हूँ। तुझे छुड़ाने के लिए मैं एवज़ाना
के तौर पर मिसर देता, तेरी जगह एथोपिया और
सिबा अदा करता हूँ। 4तू मेरी नज़र में क़ीमती
और अज़ीज़ है, तू मुझे प्यारा है, इसलिए मैं तेरे
बदले में लोग और तेरी जान के एवज़ क़ौमें अदा
करता हूँ।
5चुनाँचे मत डरना, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं
तेरी औलाद को मशरिक़ और मग़रिब से जमा
करके वापस लाऊँगा। 6शिमाल को मैं हुक्म दूँगा,
‘मुझे दो!’ और जुनूब को, ‘उन्हें मत रोकना!’
मेरे बेटे-बेटियों को दुनिया की इंतहा से वापस ले
आओ, 7उन सबको जो मेरा नाम रखते हैं और

जिन्हें मैंने अपने जलाल की ख़ातिर ख़लक़ किया,
जिन्हें मैंने तश्कील देकर बनाया है।”
8उस क़ौम को निकाल लाओ जो आँखें रखने
के बावुजूद देख नहीं सकती, जो कान रखने के
बावुजूद सुन नहीं सकती। 9तमाम ग़ैरक़ौमें जमा
हो जाएँ, तमाम उम्मतें इकट्ठी हो जाएँ। उनमें
से कौन इसकी पेशगोई कर सकता, कौन माज़ी
की बातें सुना सकता है? वह अपने गवाहों को
पेश करें जो उन्हें दुरुस्त साबित करें, ताकि लोग
सुनकर कहें, “उनकी बात बिलकुल सहीह है।”
10लेकिन रब फ़रमाता है, “ऐ इसराईली क़ौम,
तुम ही मेरे गवाह हो, तुम ही मेरे ख़ादिम हो
जिसे मैंने चुन लिया ताकि तुम जान लो, मुझ
पर ईमान लाओ और पहचान लो कि मैं ही हूँ।
न मुझसे पहले कोई ख़ुदा वुजूद में आया, न मेरे
बाद कोई आएगा। 11मैं, सिर्फ़ मैं रब हूँ, और मेरे
सिवा कोई और नजातदहिंदा नहीं है। 12मैं ही ने
इसका एलान करके तुम्हें छुटकारा दिया, मैं ही
तुम्हें अपना कलाम पहुँचाता रहा। और यह तुम्हारे
दरमियान के किसी अजनबी माबूद से कभी नहीं
हुआ बल्कि सिर्फ़ मुझी से। तुम ही मेरे गवाह
हो कि मैं ही ख़ुदा हूँ।” यह रब का फ़रमान है।
13“अज़ल से मैं वही हूँ। कोई नहीं है जो मेरे हाथ
से छुड़ा सके। जब मैं कुछ अमल में लाता हूँ तो
कौन इसे बदल सकता है?”
14रब जो तुम्हारा छुड़ानेवाला और इस-
राईल का क़ुद्दूस है फ़रमाता है, “तुम्हारी ख़ातिर
मैं बाबल के ख़िलाफ़ फ़ौज भेजकर तमाम कुंडे
तुड़वा दूँगा। तब बाबल की शादमानी गिर्याओ-
ज़ारी में बदल जाएगी। 15मैं रब हूँ, तुम्हारा क़ुद्दूस
जो इसराईल का ख़ालिक़ और तुम्हारा बादशाह
है।”
16रब फ़रमाता है, “मैं ही ने समुंदर में से गुज़रने
की राह और गहरे पानी में से रास्ता बना दिया।
17मेरे कहने पर मिसर की फ़ौज अपने सूरमाओं,
रथों और घोड़ों समेत लड़ने के लिए निकल आई।
अब वह मिलकर समुंदर की तह में पड़े हुए हैं और
दुबारा कभी नहीं उठेंगे। वह बत्ती की तरह बुझ
गए। 18लेकिन माज़ी की बातें छोड़ दो, जो कुछ
गुज़र गया है उस पर ध्यान न दो। 19क्योंकि देखो,
मैं एक नया काम वुजूद में ला रहा हूँ जो अभी फूट
निकलने को है। क्या यह तुम्हें नज़र नहीं आ रहा?
मैं रेगिस्तान में रास्ता और बयाबान में नहरें बना
रहा हूँ। 20जंगली जानवर, गीदड़ और उक़ाबी
उल्लू मेरा एहतराम करेंगे, क्योंकि मैं रेगिस्तान
में पानी मुहैया करूँगा, बयाबान में नहरें बनाऊँगा
ताकि अपनी बरगुज़ीदा क़ौम को पानी पिलाऊँ।
21जो क़ौम मैंने अपने लिए तश्कील दी है वह मेरे
काम सुनाकर मेरी तमजीद करे।

रब इसराईल के गुनाहों से तंग आ गया है

22ऐ याक़ूब की औलाद, ऐ इसराईल, बात
यह नहीं कि तूने मुझसे फ़रियाद की, कि तू
मेरी मरज़ी दरियाफ़्त करने के लिए कोशाँ रहा।
23क्योंकि न तूने मेरे लिए अपनी भेड़-बकरियाँ
भस्म कीं, न अपनी ज़बह की क़ुरबानियों से
मेरा एहतराम किया। न मैंने ग़ल्ला की नज़रों से
तुझ पर बोझ डाला, न बख़ूर की क़ुरबानी से
तंग किया। 24तूने न मेरे लिए क़ीमती मसाला
ख़रीदा, न मुझे अपनी क़ुरबानियों की चरबी से
ख़ुश किया। इसके बरअक्स तूने अपने गुनाहों
से मुझ पर बोझ डाला और अपनी बुरी हरकतों
से मुझे तंग किया। 25ताहम मैं, हाँ मैं ही अपनी
ख़ातिर तेरे जरायम को मिटा देता और तेरे गुनाहों
को ज़हन से निकाल देता हूँ।
26जा, कचहरी में मेरे ख़िलाफ़ मुक़दमा दायर
कर! आ, हम दोनों अदालत में हाज़िर हो जाएँ!
अपना मामला पेश कर ताकि तू बेक़ुसूर साबित
हो। 27शुरू में तेरे ख़ानदान के बानी ने गुनाह
किया, और उस वक़्त से लेकर आज तक तेरे
नुमाइंदे मुझसे बेवफ़ा होते आए हैं। 28इसलिए
मैं मक़दिस के बुज़ुर्गों को यों रुसवा करूँगा कि
उनकी मुक़द्दस हालत जाती रहेगी, मैं याक़ूब की
औलाद इसराईल को मुकम्मल तबाही और लान-
तान के लिए मख़सूस करूँगा।

रब की क़ौम के लिए नई ज़िंदगी

44 लेकिन अब सुन, ऐ याक़ूब मेरे
ख़ादिम! मेरी बात पर तवज्जुह दे,
ऐ इसराईल जिसे मैंने चुन लिया है। 2रब जिसने
तुझे बनाया और माँ के पेट से ही तश्कील देकर
तेरी मदद करता आया है वह फ़रमाता है, 'ऐ
याक़ूब मेरे ख़ादिम, मत डर! ऐ यसूरून जिसे मैंने
चुन लिया है, ख़ौफ़ न खा। 3क्योंकि मैं प्यासी
ज़मीन पर पानी डालूँगा और ख़ुश्की पर नदियाँ
बहने दूँगा। मैं अपना रूह तेरी औलाद पर नाज़िल
करूँगा, अपनी बरकत तेरे बच्चों को बख़्शूँगा।
4तब वह पानी के दरमियान की हरियाली की
तरह फूट निकलेंगे, नहरों पर सफ़ेदा के दरख़्तों
की तरह फलें-फूलेंगे।'

5एक कहेगा, 'मैं रब का हूँ,' दूसरा याक़ूब का
नाम लेकर पुकारेगा और तीसरा अपने हाथ पर
'रब का बंदा' लिखकर इसराईल का एज़ाज़ी नाम
रखेगा।"

6रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का बाद-
शाह और छुड़ानेवाला है फ़रमाता है, "मैं अव्वल
और आख़िर हूँ। मेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है।
7कौन मेरी मानिंद है? वह आवाज़ देकर बताए
और अपने दलायल पेश करे। वह तरतीब से सब
कुछ सुनाए जो उस क़दीम वक़्त से हुआ है जब
मैंने अपनी क़ौम को क़ायम किया। वह आनेवाली
बातों का एलान करके बताए कि आइंदा क्या कुछ
पेश आएगा।

8घबराकर दहशतज़दा न हो। क्या मैंने बहुत
देर पहले तुझे इत्तला नहीं दी थी कि यह कुछ
पेश आएगा? तुम ख़ुद मेरे गवाह हो। क्या मेरे
सिवा कोई और ख़ुदा है? हरगिज़ नहीं! और कोई
चट्टान नहीं है, मैं किसी और को नहीं जानता।"

ख़ुदसाख़्ता देवता

9बुत बनानेवाले सब हेच ही हैं, और जो चीज़ें
उन्हें प्यारी लगती हैं वह बेफ़ायदा हैं। उनके गवाह
न देख और न जान सकते हैं, लिहाज़ा आख़िरकार
शरमिंदा हो जाएंगे।

10यह किस तरह के लोग हैं जो अपने लिए
देवता बनाते और बेफ़ायदा बुत ढाल लेते हैं?
11उनके तमाम साथी शरमिंदा हो जाएंगे। आख़िर
बुत बनानेवाले इनसान ही तो हैं। आओ, वह सब
जमा होकर ख़ुदा के हुज़ूर खड़े हो जाएँ। क्योंकि
वह दहशत खाकर सख़्त शरमिंदा हो जाएंगे।

12लोहार औज़ार लेकर उसे जलते हुए कोयलों
में इस्तेमाल करता है। फिर वह अपने हथौड़े से
ठोंक ठोंककर बुत को तश्कील देता है। पूरे ज़ोर
से काम करते करते वह ताक़त के जवाब देने तक
भूका हो जाता, पानी न पीने की वजह से निढाल
हो जाता है। 13जब बुत को लकड़ी से बनाना है
तो कारीगर फ़ीते से नापकर पेंसिल से लकड़ी पर
ख़ाका खींचता है। परकार भी काम आ जाता है।
फिर कारीगर लकड़ी को छुरी से तराश तराशकर
आदमी की शक्ल बनाता है। यों शानदार आदमी
का मुजस्समा किसी के घर में लगने के लिए तैयार
हो जाता है।

14कारीगर बुत बनाने के लिए देवदार का दरख़्त
काट लेता है। कभी कभी वह बलूत या किसी
और क़िस्म का दरख़्त चुनकर उसे जंगल के दीगर
दरख़्तों के बीच में उगने देता है। या वह सनोबर[a]
का दरख़्त लगाता है, और बारिश उसे फलने-
फूलने देती है। 15ध्यान दो कि इनसान लकड़ी
को ईंधन के लिए भी इस्तेमाल करता, कुछ
लेकर आग तापता, कुछ जलाकर रोटी पकाता
है। बाक़ी हिस्से से वह बुत बनाकर उसे सिजदा
करता, देवता का मुजस्समा तैयार करके उसके
सामने झुक जाता है। 16वह लकड़ी का आधा
हिस्सा जलाकर उस पर अपना गोश्त भूनता, फिर
जी भरकर खाना खाता है। साथ साथ वह आग
सेंककर कहता है, "वाह, आग की गरमी कितनी
अच्छी लग रही है, अब गरमी महसूस हो रही है।"
17लेकिन बाक़ी लकड़ी से वह अपने लिए देवता

[a]शायद इबरानी लफ़्ज़ से मुराद सनोबर नहीं बल्कि laurel हो, एक छोटा सदाबहार काफ़ूरी दरख़्त।

का बुत बनाता है जिसके सामने वह झुककर पूजा करता है। उससे वह इलतमास करता है, “मुझे बचा, क्योंकि तू मेरा देवता है।”

18यह लोग कुछ नहीं जानते, कुछ नहीं समझते। उनकी आँखों और दिलों पर परदा पड़ा है, इसलिए न वह देख सकते, न समझ सकते हैं। 19वह इस पर ग़ौर नहीं करते, उन्हें फ़हम और समझ तक नहीं कि सोचें, “मैंने लकड़ी का आधा हिस्सा आग में झोंककर उसके कोयलों पर रोटी पकाई और गोश्त भून लिया। यह चीज़ें खाने के बाद मैं बाक़ी लकड़ी से क़ाबिले-घिन बुत क्यों बनाऊँ, लकड़ी के टुकड़े के सामने क्यों झुक जाऊँ?” 20जो यों राख में मुलव्वस हो जाए उसने धोका खाया, उसके दिल ने उसे फ़रेब दिया है। वह अपनी जान छुड़ाकर नहीं मान सकता कि जो बुत मैं दहने हाथ में थामे हुए हूँ वह झूट है।

रब अपनी क़ौम को आज़ाद करता है

21“ऐ याक़ूब की औलाद, ऐ इसराईल, याद रख कि तू मेरा ख़ादिम है। मैंने तुझे तश्कील दिया, तू मेरा ही ख़ादिम है। ऐ इसराईल, मैं तुझे कभी नहीं भूलूँगा। 22मैंने तेरे जरायम और गुनाहों को मिटा डाला है, वह धूप में धुंध या तेज़ हवा से बिखरे बादलों की तरह ओझल हो गए हैं। अब मेरे पास वापस आ, क्योंकि मैंने एवज़ाना देकर तुझे छुड़ाया है।”

23ऐ आसमान, ख़ुशी के नारे लगा, क्योंकि रब ने सब कुछ किया है। ऐ ज़मीन की गहराइयो, शादियाना बजाओ! ऐ पहाड़ो और जंगलो, अपने तमाम दरख़्तों समेत ख़ुशी के गीत गाओ, क्योंकि रब ने एवज़ाना देकर याक़ूब को छुड़ाया है, इसराईल में उसने अपना जलाल ज़ाहिर किया है।

24रब तेरा छुड़ानेवाला जिसने तुझे माँ के पेट से ही तश्कील दिया फ़रमाता है, “मैं रब हूँ। मैं ही सब कुछ वुजूद में लाया, मैंने अकेले ही आसमान को ज़मीन के ऊपर तान लिया और ज़मीन को बिछाया। 25मैं ही क़िस्मत का हाल बतानेवालों के अजीबो-ग़रीब निशान नाकाम होने देता, फ़ाल खोलनेवालों को अहमक़ साबित करता और दानाओं को पीछे हटाकर उनके इल्म की हमाक़त ज़ाहिर करता हूँ। 26मैं ही अपने ख़ादिम का कलाम पूरा होने देता और अपने पैग़ंबरों का मनसूबा तकमील तक पहुँचाता हूँ, मैं ही यरूशलम के बारे में फ़रमाता हूँ, ‘वह दुबारा आबाद हो जाएगा,’ और यहूदाह के शहरों के बारे में, ‘वह नए सिरे से तामीर हो जाएंगे, मैं उनके खंडरात दुबारा खड़े करूँगा।’ 27मैं ही गहरे समुंदर को हुक्म देता हूँ, ‘सूख जा, मैं तेरी गहराइयों को ख़ुश्क करता हूँ।’ 28और मैं ही ने ख़ोरस के बारे में फ़रमाया, ‘यह मेरा गल्लाबान है! यही मेरी मरज़ी पूरी करके कहेगा कि यरूशलम दुबारा तामीर किया जाए, रब के घर की बुनियाद नए सिरे से रखी जाए’!”

ख़ोरस रब का आलाए-कार है

45 रब अपने मसह किए हुए ख़ादिम ख़ोरस से फ़रमाता है, “मैंने तेरे दहने हाथ को पकड़ लिया है, इसलिए जहाँ भी तू जाए वहाँ क़ौमें तेरे ताबे हो जाएँगी, बादशाहों की ताक़त जाती रहेगी, दरवाज़े खुल जाएंगे और शहर के दरवाज़े बंद नहीं रहेंगे। 2मैं ख़ुद तेरे आगे आगे जाकर क़िलाबंदियों को ज़मीनबोस कर दूँगा। मैं पीतल के दरवाज़े टुकड़े टुकड़े करके तमाम कुंडे तुड़वा दूँगा। 3मैं तुझे अंधेरे में छुपे ख़ज़ाने और पोशीदा मालो-दौलत अता करूँगा ताकि तू जान ले कि मैं रब हूँ जो तेरा नाम लेकर तुझे बुलाता है, कि मैं इसराईल का ख़ुदा हूँ। 4गो तू मुझे नहीं जानता था, लेकिन अपने ख़ादिम याक़ूब की ख़ातिर मैंने तेरा नाम लेकर तुझे बुलाया, अपने बरगुज़ीदा इसराईल के वास्ते तुझे एज़ाज़ी नाम से नवाज़ा है।

5मैं ही रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। गो तू मुझे नहीं जानता था तो भी मैं तुझे कमरबस्ता करता हूँ 6ताकि मशरिक़ से मग़रिब तक इनसान जान लें कि मेरे सिवा कोई और नहीं

है। मैं ही रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और नहीं है।
7मैं ही रौशनी को तश्कील देता और अंधेरे को
वुजूद में लाता हूँ, मैं ही अच्छे और बुरे हालात
पैदा करता, मैं रब ही यह सब कुछ करता हूँ।
8ऐ आसमान, रास्ती की बूँदा-बाँदी से ज़मीन को
तरो-ताज़ा कर! ऐ बादलो, सदाक़त बरसाओ!
ज़मीन खुलकर नजात का फल लाए और रास्ती
का पौदा फूटने दे। मैं रब ही उसे वुजूद में लाया
हूँ।”

अपने ख़ालिक़ पर इलज़ाम लगाने वाले पर अफ़सोस

9उस पर अफ़सोस जो अपने ख़ालिक़ से
झगड़ा करता है, गो वह मिट्टी के टूटे-फूटे बरतनों
का ठीकरा ही है। क्या गारा कुम्हार से पूछता है,
“तू क्या बना रहा है?” क्या तेरी बनाई हुई कोई
चीज़ तेरे बारे में शिकायत करती है, “उस की कोई
ताक़त नहीं”? 10उस पर अफ़सोस जो बाप से
सवाल करे, “तू क्यों बाप बन रहा है?” या औरत
से, “तू क्यों बच्चा जन्म दे रही है?”

11रब जो इसराईल का क़ुद्दूस और उसे
तश्कील देनेवाला है फ़रमाता है, “तुम किस तरह
मेरे बच्चों के बारे में मेरी पूछ-गछ कर सकते हो?
जो कुछ मेरे हाथों ने बनाया उसके बारे में तुम कैसे
मुझे हुक्म दे सकते हो? 12मैं ही ने ज़मीन को
बनाकर इनसान को उस पर ख़लक़ किया। मेरे
अपने हाथों ने आसमान को ख़ैमे की तरह उसके
ऊपर तान लिया और मैं ही ने उसके सितारों के पूरे
लशकर को तरतीब दिया। 13मैं ही ने ख़ोरस को
इनसाफ़ से जगा दिया, और मैं ही उसके तमाम
रास्ते सीधे बना देता हूँ। वह मेरे शहर को नए सिरे
से तामीर करेगा और मेरे जिलावतनों को आज़ाद
करेगा। और यह सब कुछ मुफ़्त में होगा, न वह
पैसे लेगा, न तोहफ़े।” यह रब्बुल-अफ़वाज का
फ़रमान है।

रब वाहिद ख़ुदा है

14रब फ़रमाता है, “मिसर की दौलत,
एथोपिया का तिजारती माल और सिबा के
दराज़क़द अफ़राद तेरे मातहत होकर तेरी
मिलकियत बन जाएंगे। वह तेरे पीछे चलेंगे,
ज़ंजीरों में जकड़े तेरे ताबे हो जाएंगे। तेरे
सामने झुककर वह इलतमास करके कहेंगे,
‘यक़ीनन अल्लाह तेरे साथ है। उसके सिवा कोई
और ख़ुदा है नहीं’।” 15ऐ इसराईल के ख़ुदा
और नजातदहिंदा, यक़ीनन तू अपने आपको
छुपाए रखनेवाला ख़ुदा है। 16बुत बनानेवाले सब
शरमिंदा हो जाएंगे। उनके मुँह काले हो जाएंगे,
और वह मिलकर शर्मसार हालत में चले जाएंगे।
17लेकिन इसराईल को छुटकारा मिलेगा, रब उसे
अबदी नजात देगा। तब तुम्हारी रुसवाई कभी नहीं
होगी, तुम हमेशा तक शरमिंदा होने से महफ़ूज़
रहोगे।

18क्योंकि रब फ़रमाता है, “मैं ही रब हूँ, और
मेरे सिवा कोई और नहीं है! जो यह फ़रमाता है
वह ख़ुदा है, जिसने आसमान को ख़लक़ किया
और ज़मीन को तश्कील देकर महफ़ूज़ बुनियाद
पर रखा। और ज़मीन सुनसान बयाबान न रही
बल्कि उसने उसे बसने के क़ाबिल बना दिया
ताकि जानदार उसमें रह सकें। 19मैंने पोशीदगी
में या दुनिया के किसी तारीक कोने से बात नहीं
की। मैंने याक़ूब की औलाद से यह भी नहीं कहा,
‘बेशक मुझे तलाश करो, लेकिन तुम मुझे नहीं
पाओगे।’ नहीं, मैं रब ही हूँ, जो इनसाफ़ बयान
करता, सच्चाई का एलान करता है।

20तुम जो दीगर अक़्वाम से बच निकले हो
आओ, जमा हो जाओ। मिलकर मेरे हुज़ूर हाज़िर
हो जाओ! जो लकड़ी के बुत उठाकर अपने साथ
लिए फिरते हैं वह कुछ नहीं जानते! जो देवता
छुटकारा नहीं दे सकते उनसे वह क्यों इल्तिजा
करते हैं? 21आओ, अपना मामला सुनाओ,
अपने दलायल पेश करो! बेशक पहले एक
दूसरे से मशवरा करो। किसने बड़ी देर पहले यह

कुछ सुनाया था? क्या मैं, रब ने तवील अरसा पहले इसका एलान नहीं किया था? क्योंकि मेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। मैं रास्त ख़ुदा और नजातदहिंदा हूँ। मेरे सिवा कोई और नहीं है।

22ऐ ज़मीन की इंतहाओ, सब मेरी तरफ़ रुजू
करके नजात पाओ! क्योंकि मैं ही ख़ुदा हूँ, मेरे
सिवा कोई और नहीं है। 23मैंने अपने नाम की
क़सम खाकर फ़रमाया है, और मेरा फ़रमान रास्त
है, वह कभी मनसूख़ नहीं होगा। फ़रमान यह है
कि मेरे सामने हर घुटना झुकेगा और हर ज़बान
मेरी क़सम खा कर 24कहेगी, 'रब ही रास्ती और
क़ुव्वत का मंबा है'!"

जो पहले तैश में आकर रब की मुख़ालफ़त
करते थे वह भी सब शरमिंदा होकर उसके हुज़ूर
आएँगे। 25लेकिन इसराईल की तमाम औलाद
रब में रास्तबाज़ ठहरकर उस पर फ़ख़र करेगी।

देवता मदद नहीं कर सकते

46 बाबल के देवता बेल और नबू झुककर
गिर गए हैं, और लादू जानवर उनके
बुतों को उठाए फिर रहे हैं। तुम्हारे जो बुत उठाए
जा सकते हैं थकेहारे जानवरों का बोझ बन गए
हैं। 2क्योंकि दोनों देवता झुककर गिर गए हैं।
वह बोझ बनने से बच न सके, और अब ख़ुद
जिलावतनी में जा रहे हैं।

3"ऐ याक़ूब के घराने, सुनो! ऐ इसराईल के
घराने के बचे हुए अफ़राद, ध्यान दो! माँ के पेट से
ही तुम मेरे लिए बोझ रहे हो, पैदाइश से पहले ही
मैं तुम्हें उठाए फिर रहा हूँ। 4तुम्हारे बूढ़े होने तक
मैं वही रहूँगा, तुम्हारे बाल के सफ़ेद हो जाने तक
तुम्हें उठाए फिरूँगा। यह इब्तिदा से मेरा ही काम
रहा है, और आइंदा भी मैं तुझे उठाए फिरूँगा,
आइंदा भी तेरा सहारा बनकर तुझे बचाए रखूँगा।

5तुम मेरा मुक़ाबला किससे करोगे, मुझे
किसके बराबर ठहराओगे? तुम मेरा मुवाज़ना
किससे करोगे जो मेरी मानिंद हो? 6लोग
बुत बनवाने के लिए बटवे से कसरत का सोना
निकालते और चाँदी तराज़ू में तोलते हैं। फिर वह
सुनार को बुत बनाने का ठेका देते हैं। जब तैयार
हो जाए तो वह झुककर मुँह के बल उस की पूजा
करते हैं। 7वह उसे अपने कंधों पर रखकर इधर-
उधर लिए फिरते हैं, फिर उसे दुबारा उस की जगह
पर रख देते हैं। वहाँ वह खड़ा रहता है और ज़रा
भी नहीं हिलता। लोग चिल्लाकर उससे फ़रियाद
करते हैं, लेकिन वह जवाब नहीं देता, दुआगो को
मुसीबत से नहीं बचाता।

8ऐ बेवफ़ा लोगो, इसका ख़याल रखो!
मरदानगी दिखाकर संजीदगी से इस पर ध्यान दो!
9जो कुछ अज़ल से पेश आया है उसे याद रखो।
क्योंकि मैं ही रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और
नहीं। मैं ही रब हूँ, और मेरी मानिंद कोई नहीं।

10मैं इब्तिदा से अंजाम का एलान, क़दीम
ज़माने से आनेवाली बातों की पेशगोई करता
आया हूँ। अब मैं फ़रमाता हूँ कि मेरा मनसूबा
अटल है, मैं अपनी मरज़ी हर लिहाज़ से पूरी
करूँगा। 11मशरिक़ से मैं शिकारी परिंदा बुला रहा
हूँ, दूर-दराज़ मुल्क से एक ऐसा आदमी जो मेरा
मनसूबा पूरा करे। ध्यान दो, जो कुछ मैंने फ़रमाया
वह तकमील तक पहुँचाऊँगा, जो मनसूबा मैंने
बाँधा वह पूरा करूँगा।

12ऐ ज़िद्दी लोगो जो रास्ती से कहीं दूर हो, मेरी
सुनो! 13मैं अपनी रास्ती क़रीब ही लाया हूँ, वह
दूर नहीं है। मेरी नजात के आने में देर नहीं होगी।
मैं सिय्यून को नजात दूँगा, इसराईल को अपनी
शानो-शौकत से नवाज़ूँगा।

रब बाबल को सज़ा देगा

47 ऐ कुँवारी बाबल बेटी, उतर जा!
ख़ाक में बैठ जा! ऐ बाबलियों की
बेटी, ज़मीन पर बैठ जा जहाँ तख़्त नहीं है! अब
से लोग तुझसे नहीं कहेंगे, 'ऐ मेरी नाज़-परवर्दा,
ऐ मेरी लाडली!'

2अब चक्की लेकर आटा पीस! अपना निक़ाब
हटा, अपने लिबास का दामन उठा, अपनी टाँगों
को उरियाँ करके नदियाँ पार कर। 3तेरी बरहनगी
सब पर ज़ाहिर होगी, सब तेरी शर्मसार हालत

देखेंगे। क्योंकि मैं बदला लेकर किसी को नहीं
छोड़ूँगा।”
4जिसने एवज़ाना देकर हमें छुड़ाया है वही यह
फ़रमाता है, वह जिसका नाम रब्बुल-अफ़वाज है
और जो इसराईल का क़ुद्दूस है।
5“ऐ बाबलियों की बेटी, चुपके से बैठ जा!
तारीकी में छुप जा! आइंदा तू ‘ममालिक की
मलिका’ नहीं कहलाएगी।
6जब मुझे अपनी क़ौम पर ग़ुस्सा आया तो मैंने
उसे यों रुसवा किया कि उस की मुक़द्दस हालत
जाती रही, गो वह मेरा मौरूसी हिस्सा थी। उस
वक़्त मैंने उन्हें तेरे हवाले कर दिया, लेकिन तूने
उन पर रहम न किया बल्कि बूढ़ों की गरदन पर
भी अपना भारी जुआ रख दिया। 7तू बोली, ‘मैं
अबद तक मलिका ही रहूँगी!’ तूने संजीदगी से
ध्यान न दिया, न इसके अंजाम पर ग़ौर किया।
8अब सुन, ऐ ऐयाश, तू जो अपने आपको
महफ़ूज़ समझकर कहती है, ‘मैं ही हूँ, मेरे सिवा
कोई और नहीं है। मैं न कभी बेवा, न कभी
बेऔलाद हूँगी।’ 9मैं फ़रमाता हूँ कि एक ही दिन
और एक ही लमहे में तू बेऔलाद भी बनेगी और
बेवा भी। तेरे सारे ज़बरदस्त जादूमंत्र के बावुजूद
यह आफ़त पूरे ज़ोर से तुझ पर आएगी।
10तूने अपनी बदकारी पर एतमाद करके
सोचा, ‘कोई नहीं मुझे देखता।’ लेकिन तेरी
‘हिक्मत’ और ‘इल्म’ तुझे ग़लत राह पर लाया
है। उनकी बिना पर तूने दिल में कहा, ‘मैं ही हूँ,
मेरे सिवा कोई और नहीं है।’ 11अब तुझ पर ऐसी
आफ़त आएगी जिसे तेरे जादूमंत्र दूर करने नहीं
पाएँगे, तू ऐसी मुसीबत में फँस जाएगी जिससे
निपट नहीं सकेगी। अचानक ही तुझ पर तबाही
नाज़िल होगी, और तू उसके लिए तैयार ही नहीं
होगी। 12अब खड़ी हो जा, अपने जादू-टोने का
पूरा ख़ज़ाना खोलकर सब कुछ इस्तेमाल में ला
जो तूने जवानी से बड़ी मेहनत-मशक़्क़त के साथ
अपना लिया है। शायद फ़ायदा हो, शायद तू लोगों
को डराकर भगा सके।
13लेकिन दूसरों के बेशुमार मशवरे बेकार हैं,
उन्होंने तुझे सिर्फ़ थका दिया है। अब तेरे नजूमी
खड़े हो जाएँ, जो सितारों को देख देखकर हर
महीने पेशगोइयाँ करते हैं वह सामने आकर
तुझे उससे बचाएँ जो तुझ पर आनेवाला है।
14यक़ीनन वह आग में जलनेवाला भूसा ही हैं जो
अपनी जान को शोलों से बचा नहीं सकते। और
यह कोयलों की आग नहीं होगी जिसके सामने
इनसान बैठकर आग ताप सके।
15यही उन सबका हाल है जिन पर तूने मेहनत
की है और जो तेरी जवानी से तेरे साथ तिजारत
करते रहे हैं। हर एक लड़खड़ाते हुए अपनी अपनी
राह इख़्तियार करेगा, और एक भी नहीं होगा जो
तुझे बचाए।

रब अपने नाम की ख़ातिर इसराईल को बचाएगा

48 ऐ याक़ूब के घराने, सुनो! तुम
जो इसराईल कहलाते और यहू-
दाह के क़बीले के हो, ध्यान दो! तुम जो रब
के नाम की क़सम खाकर इसराईल के ख़ुदा को
याद करते हो, अगरचे तुम्हारी बात न सच्चाई, न
इनसाफ़ पर मबनी है, ग़ौर करो! 2हाँ तवज्जुह
दो, तुम जो मुक़द्दस शहर के लोग कहलाते और
इसराईल के ख़ुदा पर एतमाद करते हो, सुनो कि
अल्लाह जिसका नाम रब्बुल-अफ़वाज है क्या
फ़रमाता है।
3जो कुछ पेश आया है उसका एलान मैंने बड़ी
देर पहले किया। मेरे ही मुँह से उस की पेशगोई
सादिर हुई, मैं ही ने उस की इत्तला दी। फिर
अचानक ही मैं उसे अमल में लाया और वह
वुक़ूपज़ीर हुआ। 4मैं जानता था कि तू कितना
ज़िद्दी है। तेरे गले की नसें लोहे जैसी बे-लचक और
तेरी पेशानी पीतल जैसी सख़्त है। 5यह जानकर
मैंने बड़ी देर पहले इन बातों की पेशगोई की।
उनके पेश आने से पहले मैंने तुझे उनकी ख़बर
दी ताकि तू दावा न कर सके, ‘मेरे बुत ने यह कुछ
किया, मेरे तराशे और ढाले गए देवता ने इसका

हुक्म दिया।’ 6अब जब तूने यह सुन लिया है तो
सब कुछ पर ग़ौर कर। तू क्यों इन बातों को मानने
के लिए तैयार नहीं?
अब से मैं तुझे नई नई बातें बताऊँगा, ऐसी
पोशीदा बातें जो तुझे अब तक मालूम न थीं।
7यह किसी क़दीम ज़माने में वुजूद में नहीं आईं
बल्कि अभी अभी आज ही तेरे इल्म में आई हैं।
क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि तू कहे, ‘मुझे पहले
से इसका इल्म था।’ 8चुनाँचे न यह बातें तेरे कान
तक पहुँची हैं, न तू इनका इल्म रखता है, बल्कि
क़दीम ज़माने से ही तेरा कान यह सुन नहीं सकता
था। क्योंकि मैं जानता था कि तू सरासर बेवफ़ा
है, कि पैदाइश से ही नमकहराम कहलाता है।
9तो भी मैं अपने नाम की ख़ातिर अपना ग़ज़ब
नाज़िल करने से बाज़ रहता, अपनी तमजीद की
ख़ातिर अपने आपको तुझे नेस्तो-नाबूद करने से
रोके रखता हूँ। 10देख, मैंने तुझे पाक-साफ़ कर
दिया है, लेकिन चाँदी को साफ़ करने की कुठाली
में नहीं बल्कि मुसीबत की भट्टी में। उसी में मैंने
तुझे आज़माया है। 11अपनी ख़ातिर, हाँ अपनी
ही ख़ातिर मैं यह सब कुछ करता हूँ, ऐसा न हो
कि मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए। क्योंकि मैं
इजाज़त नहीं दूँगा कि किसी और को वह जलाल
दिया जाए जिसका सिर्फ़ मैं हक़दार हूँ।

रब इसराईल का नजातदहिंदा है

12ऐ याक़ूब की औलाद, मेरी सुन! ऐ मेरे
बरगुज़ीदा इसराईल, ध्यान दे! मैं ही वही हूँ। मैं ही
अव्वलो-आख़िर हूँ। 13मेरे ही हाथ ने ज़मीन की
बुनियाद रखी, मेरे ही दहने हाथ ने आसमान को
ख़ैमे की तरह तान लिया। जब मैं आवाज़ देता
हूँ तो सब मिलकर खड़े हो जाते हैं। 14आओ,
सब जमा होकर सुनो! बुतों में से किसने इसकी
पेशगोई की? किसी ने नहीं! जिस आदमी
को रब प्यार करता है वह बाबल के ख़िलाफ़
उस की मरज़ी पूरी करेगा, बाबलियों पर उस
की क़ुव्वत का इज़हार करेगा। 15मैं, हाँ मैं ही ने
यह फ़रमाया। मैं ही उसे बुलाकर यहाँ लाया हूँ,
इसलिए वह ज़रूर कामयाब होगा। 16मेरे क़रीब
आकर सुनो! शुरू से मैंने अलानिया बात की, जब
से यह पेश आया मैं हाज़िर हूँ।”
और अब रब क़ादिरे-मुतलक़ और उसके रूह ने
मुझे भेजा है।
17रब जो तेरा छुड़ानेवाला और इसराईल का
क़ुद्दूस है फ़रमाता है, “मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ। मैं तुझे
वह कुछ सिखाता हूँ जो मुफ़ीद है और तुझे उन
राहों पर चलने देता हूँ जिन पर तुझे चलना है।
18काश तू मेरे अहकाम पर ध्यान देता! तब तेरी
सलामती बहते दरिया जैसी और तेरी रास्तबाज़ी
समुंदर की मौजों जैसी होती। 19तेरी औलाद रेत
की मानिंद होती, तेरे पेट का फल रेत के ज़र्रों जैसा
अनगिनत होता। इसका इमकान ही न होता कि
तेरा नामो-निशान मेरे सामने से मिट जाए।”
20बाबल से निकल जाओ! बाबलियों के बीच
में से हिजरत करो! ख़ुशी के नारे लगा लगाकर
एलान करो, दुनिया की इंतहा तक ख़ुशख़बरी
फैलाते जाओ कि रब ने एवज़ाना देकर अपने
ख़ादिम याक़ूब को छुड़ाया है। 21उन्हें प्यास न
लगी जब उसने उन्हें रेगिस्तान में से गुज़रने दिया।
उसके हुक्म पर पत्थर में से पानी बह निकला।
जब उसने चट्टान को चीर डाला तो पानी फूट
निकला।
22लेकिन रब फ़रमाता है कि बेदीन सलामती
नहीं पाएँगे।

रब का पैग़ंबर अक़वाम का नूर है

49 ऐ जज़ीरो, सुनो! ऐ दूर-दराज़ क़ौमो,
ध्यान दो! रब ने मुझे पैदाइश से पहले
ही बुलाया, मेरी माँ के पेट से ही मेरे नाम को याद
करता आया है। 2उसने मेरे मुँह को तेज़ तलवार
बनाकर मुझे अपने हाथ के साये में छुपाए रखा,
मुझे तेज़ तीर बनाकर अपने तरकश में पोशीदा
रखा है। 3वह मुझसे हमकलाम हुआ, “तू मेरा
ख़ादिम इसराईल है, जिसके ज़रीए मैं अपना
जलाल ज़ाहिर करूँगा।”

4मैं तो बोला था, “मेरी मेहनत-मशक़्क़त बेसूद
थी, मैंने अपनी ताक़त बेफ़ायदा और बेमक़सद
ज़ाया कर दी है। ताहम मेरा हक़ अल्लाह के हाथ
में है, मेरा ख़ुदा ही मुझे अज्र देगा।”
5लेकिन अब रब मुझसे हमकलाम हुआ है,
वह जो माँ के पेट से ही मुझे इस मक़सद से
तश्कील देता आया है कि मैं उस की ख़िदमत
करके याक़ूब की औलाद को उसके पास वापस
लाऊँ और इसराईल को उसके हुज़ूर जमा करूँ।
रब ही के हुज़ूर मेरा एहतराम किया जाएगा, मेरा
ख़ुदा ही मेरी क़ुव्वत होगा। 6वही फ़रमाता है, “तू
मेरी ख़िदमत करके न सिर्फ़ याक़ूब के क़बीले
बहाल करेगा और उन्हें वापस लाएगा जिन्हें मैंने
महफ़ूज़ रखा है बल्कि तू इससे कहीं बढ़कर
करेगा। क्योंकि मैं तुझे दीगर अक़वाम की रौशनी
बना दूँगा ताकि तू मेरी नजात को दुनिया की इंतहा
तक पहुँचाए।”
7रब जो इसराईल का छुड़ानेवाला और उसका
क़ुद्दूस है उससे हमकलाम हुआ है जिसे लोग
हक़ीर जानते हैं, जिससे दीगर अक़वाम घिन खाते
हैं और जो हुक्मरानों का ग़ुलाम है। उससे रब
फ़रमाता है, “तुझे देखते ही बादशाह खड़े हो
जाएंगे और रईस मुँह के बल झुक जाएंगे। यह
रब की ख़ातिर ही पेश आएगा जो वफ़ादार है और
इसराईल के क़ुद्दूस के बाइस ही वुक़ूपज़ीर होगा
जिसने तुझे चुन लिया है।”
8रब फ़रमाता है, “क़बूलियत के वक़्त मैं तेरी
सुनूँगा, नजात के दिन तेरी मदद करूँगा। तब मैं
तुझे महफ़ूज़ रखकर मुक़र्रर करूँगा कि तू मेरे और
क़ौम के दरमियान अहद बने, कि तू मुल्क बहाल
करके तबाहशुदा मौरूसी ज़मीन को नए सिरे से
तक़सीम करे, 9कि तू क़ैदियों को कहे, ‘निकल
आओ’ और तारीकी में बसनेवालों को, ‘रौशनी में
आ जाओ!’ तब मेरी भेड़ें रास्तों के किनारे किनारे
चरेंगी, और तमाम बंजर बुलंदियों पर भी उनकी
हरी हरी चरागाहें होंगी। 10न उन्हें भूक सताएगी न
प्यास। न तपती गरमी, न धूप उन्हें झुलसाएगी।
क्योंकि जो उन पर तरस खाता है वह उनकी
क़ियादत करके उन्हें चश्मों के पास ले जाएगा।
11मैं पहाड़ों को हमवार रास्तों में तबदील कर
दूँगा जबकि मेरी शाहराहें ऊँची हो जाएँगी। 12तब
वह दूर-दराज़ इलाक़ों से आएँगे, कुछ शिमाल से,
कुछ मग़रिब से, और कुछ मिसर के जुनूबी शहर
असवान से भी।”
13ऐ आसमान, ख़ुशी के नारे लगा! ऐ ज़मीन,
बाग़ बाग़ हो जा! ऐ पहाड़ो, शादमानी के गीत
गाओ! क्योंकि रब ने अपनी क़ौम को तसल्ली दी
है, उसे अपने मुसीबतज़दा लोगों पर तरस आया
है।

रब अपनी क़ौम को कभी नहीं भूलेगा

14लेकिन सिय्यून कहती है, “रब ने मुझे तर्क
कर दिया है, क़ादिरे-मुतलक़ मुझे भूल गया है।”
15“यह कैसे हो सकता है? क्या माँ अपने
शीरख़ार को भूल सकती है? जिस बच्चे को उसने
जन्म दिया, क्या वह उस पर तरस नहीं खाएगी?
शायद वह भूल जाए, लेकिन मैं तुझे कभी नहीं
भूलूँगा! 16देख, मैंने तुझे अपनी दोनों हथेलियों
में कंदा कर दिया है, तेरी ज़मीनबोस दीवारें हमेशा
मेरे सामने हैं।
17जो तुझे नए सिरे से तामीर करना चाहते हैं
वह दौड़कर वापस आ रहे हैं जबकि जिन लोगों
ने तुझे ढाकर तबाह किया वह तुझसे निकल रहे
हैं। 18ऐ सिय्यून बेटी, नज़र उठाकर चारों तरफ़
देख! यह सब जमा होकर तेरे पास आ रहे हैं।
मेरी हयात की क़सम, यह सब तेरे ज़ेवरात बनेंगे
जिनसे तू अपने आपको दुलहन की तरह आरास्ता
करेगी।” यह रब का फ़रमान है।
19“फ़िलहाल तेरे मुल्क में चारों तरफ़ खंडरात,
उजाड़ और तबाही नज़र आती है, लेकिन आइंदा
वह अपने बाशिंदों की कसरत के बाइस छोटा
होगा। और जिन्होंने तुझे हड़प कर लिया था वह
दूर रहेंगे। 20पहले तू बेऔलाद थी, लेकिन अब
तेरे इतने बच्चे होंगे कि वह तेरे पास आकर कहेंगे,
‘मेरे लिए जगह कम है, मुझे और ज़मीन दें ताकि

मैं आराम से ज़िंदगी गुज़ार सकूँ।’ तू अपने कानों से यह सुनेगी।

21तब तू हैरान होकर दिल में सोचेगी, ‘किसने यह बच्चे मेरे लिए पैदा किए? मैं तो बच्चों से महरूम और बेऔलाद थी, मुझे जिलावतन करके हटाया गया था। किसने इनको पाला? मुझे तो तनहा ही छोड़ दिया गया था। तो फिर यह कहाँ से आ गए हैं’?”

22रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “देख, मैं दीगर क़ौमों को हाथ से इशारा देकर उनके सामने अपना झंडा गाड़ दूँगा। तब वह तेरे बेटों को उठाकर अपने बाज़ुओं में वापस ले आएँगे और तेरी बेटियों को कंधे पर बिठाकर तेरे पास पहुँचाएँगे। 23बादशाह तेरे बच्चों की देख-भाल करेंगे, और रानियाँ उनकी दाइयाँ होंगी। वह मुँह के बल झुककर तेरे पाँवों की ख़ाक चाटेंगे। तब तू जान लेगी कि मैं ही रब हूँ, कि जो भी मुझसे उम्मीद रखे वह कभी शरमिंदा नहीं होगा।”

24क्या सूरमे का लूटा हुआ माल उसके हाथ से छीना जा सकता है? या क्या ज़ालिम के क़ैदी उसके क़ब्ज़े से छूट सकते हैं? मुश्किल ही से। 25लेकिन रब फ़रमाता है, “यक़ीनन सूरमे का क़ैदी उसके हाथ से छीन लिया जाएगा और ज़ालिम का लूटा हुआ माल उसके क़ब्ज़े से छूट जाएगा। जो तुझसे झगड़े उसके साथ मैं ख़ुद झगड़ूँगा, मैं ही तेरे बच्चों को नजात दूँगा। 26जिन्होंने तुझ पर ज़ुल्म किया उन्हें मैं उनका अपना गोश्त खिलाऊँगा, उनका अपना ख़ून यों पिलाऊँगा कि वह उसे नई मै की तरह पी पीकर मस्त हो जाएंगे। तब तमाम इनसान जान लेंगे कि मैं रब तेरा नजातदहिंदा, तेरा छुड़ानेवाला और याक़ूब का ज़बरदस्त सूरमा हूँ।”

तुम अपने ज़ाती गुनाहों की सज़ा भुगत रहे हो

50 रब फ़रमाता है, “आओ, मुझे वह तलाक़नामा दिखाओ जो मैंने देकर तुम्हारी माँ को छोड़ दिया था। वह कहाँ है? या मुझे वह क़र्ज़ख़ाह दिखाओ जिसके हवाले मैंने तुम्हें अपना क़र्ज़ उतारने के लिए किया। वह कहाँ है? देखो, तुम्हें अपने ही गुनाहों के सबब से फ़रोख़्त किया गया, तुम्हारे अपने ही गुनाहों के सबब से तुम्हारी माँ को फ़ारिग़ कर दिया गया।

2जब मैं आया तो कोई नहीं था। क्या वजह? जब मैंने आवाज़ दी तो जवाब देनेवाला कोई नहीं था। क्यों? क्या मैं फ़िद्या देकर तुम्हें छुड़ाने के क़ाबिल न था? क्या मेरी इतनी ताक़त नहीं कि तुम्हें बचा सकूँ? मेरी तो एक ही धमकी से समुंदर ख़ुश्क हो जाता और दरिया रेगिस्तान बन जाते हैं। तब उनकी मछलियाँ पानी से महरूम होकर गल जाती हैं, और उनकी बदबू चारों तरफ़ फैल जाती है। 3मैं ही आसमान को तारीकी का जामा पहनाता, मैं ही उसे टाट के मातमी लिबास में लपेट देता हूँ।”

रब के पैग़ंबर की रुसवाई

4रब क़ादिरे-मुतलक़ ने मुझे शागिर्द की-सी ज़बान अता की ताकि मैं वह कलाम जान लूँ जिससे थकामाँदा तक़वियत पाए। सुबह बसुबह वह मेरे कान को जगा देता है ताकि मैं शागिर्द की तरह सुन सकूँ। 5रब क़ादिरे-मुतलक़ ने मेरे कान को खोल दिया, और न मैं सरकश हुआ, न पीछे हट गया। 6मैंने मारनेवालों को अपनी पीठ और बाल नोचनेवालों को अपने गाल पेश किए। मैंने अपना चेहरा उनकी गालियों और थूक से न छुपाया।

7लेकिन रब क़ादिरे-मुतलक़ मेरी मदद करता है, इसलिए मेरी रुसवाई नहीं होगी। चुनाँचे मैंने अपना मुँह चक़माक़ की तरह सख़्त कर लिया है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं शरमिंदा नहीं हो जाऊँगा। 8जो मुझे रास्त ठहराता है वह क़रीब ही है। तो फिर कौन मेरे साथ झगड़ेगा? आओ, हम मिलकर अदालत में खड़े हो जाएँ। कौन मुझ पर इलज़ाम लगाने की जुर्रत करेगा? वह आकर मेरा सामना करे! 9रब क़ादिरे-मुतलक़ ही मेरी मदद करता है। तो फिर कौन मुझे मुजरिम ठहराएगा?

यह तो सब पुराने कपड़े की तरह घिसकर फटेंगे,
कीड़े उन्हें खा जाएंगे।
10तुममें से कौन रब का ख़ौफ़ मानता और
उसके ख़ादिम की सुनता है? जब उसे रौशनी
के बग़ैर अंधेरे में चलना पड़े तो वह रब के नाम
पर भरोसा रखे और अपने ख़ुदा पर इनहिसार
करे। 11लेकिन तुम बाक़ी लोग जो आग लगाकर
अपने आपको जलते हुए तीरों से लैस करते हो,
अपनी ही आग के शोलों में चले जाओ! ख़ुद उन
तीरों की ज़द में आओ जो तुमने दूसरों के लिए
जलाए हैं! मेरे हाथ से तुम्हें यही अज्र मिलेगा,
तुम सख़्त अज़ियत का शिकार होकर ज़मीन पर
तड़पते रहोगे।

रब अपनी क़ौम को तसल्ली देता है

51 “तुम जो रास्ती के पीछे लगे रहते,
जो रब के तालिब हो, मेरी बात सुनो!
उस चट्टान पर ध्यान दो जिसमें से तुम्हें तराशकर
निकाला गया है, उस कान पर ग़ौर करो जिसमें
से तुम्हें खोदा गया है। 2यानी अपने बाप इब्राहीम
और अपनी माँ सारा पर तवज्जुह दो, जिसने
दर्दे-ज़ह की तकलीफ़ उठाकर तुम्हें जन्म दिया।
इब्राहीम बेऔलाद था जब मैंने उसे बुलाया,
लेकिन फिर मैंने उसे बरकत देकर बहुत औलाद
बख़्शी।”
3यक़ीनन रब सिय्यून को तसल्ली देगा। वह
उसके तमाम खंडरात को तशफ़्फ़ी देकर उसके
रेगिस्तान को बाग़े-अदन में और उस की बंजर
ज़मीन को रब के बाग़ में बदल देगा। तब
उसमें ख़ुशी-ओ-शादमानी पाई जाएगी, हर तरफ़
शुक्रगुज़ारी और गीतों की आवाज़ें सुनाई देंगी।
4“ऐ मेरी क़ौम, मुझ पर ध्यान दे! ऐ मेरी
उम्मत, मुझ पर ग़ौर कर! क्योंकि हिदायत मुझसे
सादिर होगी, और मेरा इनसाफ़ क़ौमों की रौशनी
बनेगा। 5मेरी रास्ती क़रीब ही है, मेरी नजात रास्ते
में है, और मेरा ज़ोरावर बाज़ू क़ौमों में इनसाफ़
क़ायम करेगा। जज़ीरे मुझसे उम्मीद रखेंगे, वह
मेरी क़ुदरत देखने के इंतज़ार में रहेंगे। 6अपनी
आँखें आसमान की तरफ़ उठाओ! नीचे ज़मीन
पर नज़र डालो! आसमान धुएँ की तरह बिखर
जाएगा, ज़मीन पुराने कपड़े की तरह घिसे-फटेगी
और उसके बाशिंदे मच्छरों की तरह मर जाएंगे।
लेकिन मेरी नजात अबद तक क़ायम रहेगी, और
मेरी रास्ती कभी ख़त्म नहीं होगी।
7ऐ सहीह राह को जाननेवालो, ऐ क़ौम जिसके
दिल में मेरी शरीअत है, मेरी बात सुनो! जब लोग
तुम्हारी बेइज़्ज़ती करते हैं तो उनसे मत डरना,
जब वह तुम्हें गालियाँ देते हैं तो मत घबराना।
8क्योंकि किरम उन्हें कपड़े की तरह खा जाएगा,
कीड़ा उन्हें ऊन की तरह हज़म करेगा। लेकिन मेरी
रास्ती अबद तक क़ायम रहेगी, मेरी नजात पुश्त-
दर-पुश्त बरक़रार रहेगी।”

रब की रिहाई

9ऐ रब के बाज़ू, उठ! जाग उठ और क़ुव्वत का
जामा पहन ले! यों अमल में आ जिस तरह क़दीम
ज़माने में आया था, जब तूने मुतअद्दिद नसलों
पहले रहब को टुकड़े टुकड़े कर दिया, समुंदरी
अज़दहे को छेद डाला। 10क्योंकि तू ही ने समुंदर
को ख़ुश्क किया, तू ही ने गहराइयों की तह पर
रास्ता बनाया ताकि वह जिन्हें तूने एवज़ाना देकर
छुड़ाया था उसमें से गुज़र सकें।
11जिन्हें रब ने फ़िद्या देकर छुड़ाया है वह
वापस आएँगे। वह शादियाना बजाकर सिय्यून में
दाख़िल होंगे, और हर एक का सर अबदी ख़ुशी
के ताज से आरास्ता होगा। क्योंकि ख़ुशी और
शादमानी उन पर ग़ालिब आकर तमाम ग़म और
आहो-ज़ारी भगा देगी।
12“मैं, सिर्फ़ मैं ही तुझे तसल्ली देता हूँ। तो
फिर तू फ़ानी इनसान से क्यों डरती है, जो घास
की तरह मुरझाकर ख़त्म हो जाता है? 13तू
रब अपने ख़ालिक़ को क्यों भूल गई है, जिसने
आसमान को ख़ैमे की तरह तान लिया और ज़मीन
की बुनियाद रखी? जब ज़ालिम तुझे तबाह करने
पर तुला रहता है तो तू उसके तैश से पूरे दिन
क्यों ख़ौफ़ खाती रहती है? अब उसका तैश कहाँ

रहा? 14जो ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ है वह जल्द ही
आज़ाद हो जाएगा। न वह मरकर क़ब्र में उतरेगा,
न रोटी से महरूम रहेगा। 15क्योंकि मैं रब तेरा
ख़ुदा हूँ जो समुंदर को यों हरकत में लाता है कि
वह मुतलातिम होकर गरजने लगता है। रब्बुल-
अफ़वाज मेरा नाम है। 16मैंने अपने अलफ़ाज़
तेरे मुँह में डालकर तुझे अपने हाथ के साये में
छुपाए रखा है ताकि नए सिरे से आसमान को
तानूँ, ज़मीन की बुनियादें रखूँ और सिय्यून को
बताऊँ, 'तू मेरी क़ौम है'।"

ऐ यरूशलम, जाग उठ!

17ऐ यरूशलम, उठ! जाग उठ! ऐ शहर
जिसने रब के हाथ से उसका ग़ज़ब भरा प्याला पी
लिया है, खड़ी हो जा! अब तूने लड़खड़ा देनेवाले
प्याले को आख़िरी क़तरे तक चाट लिया है।
18जितने भी बेटे तूने जन्म दिए उनमें से एक भी
नहीं रहा जो तेरी राहनुमाई करे। जितने भी बेटे तूने
पाले उनमें से एक भी नहीं जो तेरा हाथ पकड़कर
तेरे साथ चले। 19तुझ पर दो आफ़तें आईं यानी
बरबादी-ओ-तबाही, काल और तलवार। लेकिन
किसने हमदर्दी का इज़हार किया? किसने तुझे
तसल्ली दी? 20तेरे बेटे ग़श खाकर गिर गए हैं।
हर गली में वह जाल में फँसे हुए ग़ज़ाल[a] की
तरह ज़मीन पर तड़प रहे हैं। क्योंकि रब का ग़ज़ब
उन पर नाज़िल हुआ है, वह इलाही डाँट-डपट का
निशाना बन गए हैं।

21चुनाँचे मेरी बात सुन, ऐ मुसीबतज़दा क़ौम,
ऐ नशे में मत्वाली उम्मत, गो तू मै के असर से
नहीं डगमगा रही। 22रब तेरा आक़ा जो तेरा ख़ुदा
है और अपनी क़ौम के लिए लड़ता है वह फ़रमाता
है, "देख, मैंने तेरे हाथ से वह प्याला दूर कर
दिया जो तेरे लड़खड़ाने का सबब बना। आइंदा तू
मेरा ग़ज़ब भरा प्याला नहीं पिएगी। 23अब मैं इसे
उनको पकड़ा दूँगा जिन्होंने तुझे अज़ियत पहुँचाई
है, जिन्होंने तुझसे कहा, 'औंधे मुँह झुक जा ताकि
हम तुझ पर से गुज़रें।' उस वक़्त तेरी पीठ ख़ाक
में धँसकर दूसरों के लिए रास्ता बन गई थी।"

ज़ंजीरों को तोड़!

52 ऐ सिय्यून, उठ, जाग उठ! अपनी
ताक़त से मुलब्बस हो जा! ऐ मुक़द्दस
शहर यरूशलम, अपने शानदार कपड़े से आरास्ता
हो जा! आइंदा कभी भी ग़ैरमख़तून या नापाक
शख़्स तुझमें दाख़िल नहीं होगा। 2ऐ यरूशलम,
अपने आपसे गर्द झाड़कर खड़ी हो जा और तख़्त
पर बैठ जा। ऐ गिरिफ़्तार की हुई सिय्यून बेटी,
अपनी गरदन की ज़ंजीरों को खोलकर उनसे
आज़ाद हो जा! 3क्योंकि रब फ़रमाता है, "तुम्हें
मुफ़्त में बेचा गया, और अब तुम्हें पैसे दिए बग़ैर
छुड़ाया जाएगा।"

4क्योंकि रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है,
"क़दीम ज़माने में मेरी क़ौम मिसर चली गई ताकि
वहाँ परदेस में रहे। बाद में असूर ने बिलावजह
उस पर ज़ुल्म किया है।" 5रब फ़रमाता है, "अब
जो ज़्यादती मेरी क़ौम से हो रही है उसका मेरे
साथ क्या वास्ता है?" रब फ़रमाता है, "मेरी
क़ौम तो मुफ़्त में छीन ली गई है, और उस पर
हुकूमत करनेवाले शेख़ी मारकर पूरा दिन मेरे नाम
पर कुफ़र बकते हैं। 6चुनाँचे मेरी क़ौम मेरे नाम को
जान लेगी, उस दिन वह पहचान लेगी कि मैं ही
वही हूँ जो फ़रमाता है, 'मैं हाज़िर हूँ'!"

7उसके क़दम कितने प्यारे हैं जो पहाड़ों पर
चलते हुए ख़ुशख़बरी सुनाता है। क्योंकि वह
अमनो-अमान, ख़ुशी का पैग़ाम और नजात का
एलान करेगा, वह सिय्यून से कहेगा, "तेरा ख़ुदा
बादशाह है!" 8सुन! तेरे पहरेदार आवाज़ बुलंद
कर रहे हैं, वह मिलकर ख़ुशी के नारे लगा रहे हैं।
क्योंकि जब रब कोहे-सिय्यून पर वापस आएगा
तो वह अपनी आँखों से इसका मुशाहदा करेंगे।

9ऐ यरूशलम के खंडरात, शादियाना बजाओ,
ख़ुशी के गीत गाओ! क्योंकि रब ने अपनी
क़ौम को तसल्ली दी है, उसने एवज़ाना देकर

[a]ग़ज़ाले-अफ़्रीक़ा, oryx।

यरूशलम को छुड़ाया है। 10रब अपनी मुक़द्दस
क़ुदरत तमाम अक़वाम पर ज़ाहिर करेगा, दुनिया
की इंतहा तक सब हमारे ख़ुदा की नजात देखेंगे।
11जाओ, चले जाओ! वहाँ से निकल जाओ!
किसी भी नापाक चीज़ को न छूना। जो रब का
सामान उठाए चल रहे हैं वह वहाँ से निकलकर
पाक-साफ़ रहें। 12लेकिन लाज़िम नहीं कि
तुम भागकर रवाना हो जाओ। तुम्हें अचानक
फ़रार होने की ज़रूरत नहीं होगी, क्योंकि रब
तुम्हारे आगे भी चलेगा और तुम्हारे पीछे भी।
यों इसराईल का ख़ुदा दोनों तरफ़ से तुम्हारी
हिफ़ाज़त करेगा।

रब का पैग़ंबर हमारे गुनाहों को उठाएगा

13देखो, मेरा ख़ादिम कामयाब होगा। वह
सरबुलंद, मुमताज़ और बहुत सरफ़राज़ होगा।
14तुझे देखकर बहुतों के रोंगटे खड़े हो गए।
क्योंकि उस की शक्ल इतनी ख़राब थी, उस की
सूरत किसी भी इनसान से कहीं ज़्यादा बिगड़ी हुई
थी। 15लेकिन अब बहुत-सी क़ौमें उसे देखकर
हक्का-बक्का हो जाएँगी, बादशाह दम बख़ुद रह
जाएंगे। क्योंकि जो कुछ उन्हें नहीं बताया गया
उसे वह देखेंगे, और जो कुछ उन्होंने नहीं सुना
उस की उन्हें समझ आएगी।

53 लेकिन कौन हमारे पैग़ाम पर ईमान
लाया? और रब की क़ुदरत किस
पर ज़ाहिर हुई? 2उसके सामने वह कोंपल
की तरह फूट निकला, उस ताज़ा और मुलायम
शिगूफ़े की तरह जो ख़ुश्क ज़मीन में छुपी हुई
जड़ से निकलकर फलने-फूलने लगती है। न वह
ख़ूबसूरत था, न शानदार। हमने उसे देखा तो उस
की शक्लो-सूरत में कुछ नहीं था जो हमें पसंद
आता। 3उसे हक़ीर और मरदूद समझा जाता था।
दुख और बीमारियाँ उस की साथी रहीं, और लोग
यहाँ तक उस की तहक़ीर करते थे कि उसे देखकर
अपना मुँह फेर लेते थे। हम उस की कुछ क़दर नहीं
करते थे।

4लेकिन उसने हमारी ही बीमारियाँ उठा लीं,
हमारा ही दुख भुगत लिया। तो भी हम समझे कि
यह उस की मुनासिब सज़ा है, कि अल्लाह ने ख़ुद
उसे मारकर ख़ाक में मिला दिया है। 5लेकिन उसे
हमारे ही जरायम के सबब से छेदा गया, हमारे
ही गुनाहों की ख़ातिर कुचला गया। उसे सज़ा
मिली ताकि हमें सलामती हासिल हो, और उसी
के ज़ख़मों से हमें शफ़ा मिली। 6हम सब भेड़-
बकरियों की तरह आवारा फिर रहे थे, हर एक
ने अपनी अपनी राह इख़्तियार की। लेकिन रब ने
उसे हम सबके क़ुसूर का निशाना बनाया।

7उस पर ज़ुल्म हुआ, लेकिन उसने सब कुछ
बरदाश्त किया और अपना मुँह न खोला, उस
भेड़ की तरह जिसे ज़बह करने के लिए ले जाते
हैं। जिस तरह लेला बाल कतरनेवालों के सामने
ख़ामोश रहता है उसी तरह उसने अपना मुँह न
खोला। 8उसे ज़ुल्म और अदालत के हाथ से छीन
लिया गया। उस के दौर के लोग—किस ने ध्यान
दिया कि उसका ज़िंदों के मुल्क से ताल्लुक़ कट
गया, कि वह मेरी क़ौम के जुर्म के सबब से सज़ा
का निशाना बन गया? 9मुक़र्रर यह हुआ कि उस
की क़ब्र बेदीनों के पास हो, कि वह मरते वक़्त
एक अमीर के पास दफ़नाया जाए, गो न उसने
तशद्दुद किया, न उसके मुँह में फ़रेब था।

10रब ही की मरज़ी थी कि उसे कुचले, उसे दुख
पहुँचाए। लेकिन जब वह अपनी जान को क़ुसूर
की क़ुरबानी के तौर पर देगा तो वह अपने फ़रज़ंदों
को देखेगा, अपने दिनों में इज़ाफ़ा करेगा। हाँ, वह
रब की मरज़ी को पूरा करने में कामयाब होगा।
11इतनी तकलीफ़ बरदाश्त करने के बाद उसे
फल नज़र आएगा, और वह सेर हो जाएगा। अपने
इल्म से मेरा रास्त ख़ादिम बहुतों का इनसाफ़
क़ायम करेगा, क्योंकि वह उनके गुनाहों को अपने
ऊपर उठाकर दूर कर देगा।

12इसलिए मैं उसे बड़ों में हिस्सा दूँगा, और वह
ज़ोरावरों के साथ लूट का माल तक़सीम करेगा।
क्योंकि उसने अपनी जान को मौत के हवाले कर
दिया, और उसे मुजरिमों में शुमार किया गया।

हाँ, उसने बहुतों का गुनाह उठाकर दूर कर दिया और मुजरिमों की शफ़ाअत की।

रब ने यरूशलम को दुबारा क़बूल कर लिया है

54 रब फ़रमाता है, "ख़ुशी के नारे लगा, तू जो बेऔलाद है, जो बच्चे को जन्म ही नहीं दे सकती। बुलंद आवाज़ से शादियाना बजा, तू जिसे पैदाइश का दर्द न हुआ। क्योंकि अब तर्क की हुई औरत के बच्चे शादीशुदा औरत के बच्चों से ज़्यादा हैं। 2अपने ख़ैमे को बड़ा बना, उसके परदे हर तरफ़ बिछा! बचत मत करना! ख़ैमे के रस्से लंबे लंबे करके मेख़ें मज़बूती से ज़मीन में ठोंक दे। 3क्योंकि तू तेज़ी से दाईं और बाईं तरफ़ फैल जाएगी, और तेरी औलाद दीगर क़ौमों पर क़ब्ज़ा करके तबाहशुदा शहरों को अज़ सरे-नौ आबाद करेगी।

4मत डरना, तेरी रुसवाई नहीं होगी। शर्मसार न हो, तेरी बेहुरमती नहीं होगी। अब तू अपनी जवानी की शरमिंदगी भूल जाएगी, तेरे ज़हन से बेवा होने की ज़िल्लत उतर जाएगी। 5क्योंकि तेरा ख़ालिक़ तेरा शौहर है, रब्बुल-अफ़वाज उसका नाम है, और तेरा छुड़ानेवाला इसराईल का क़ुद्दूस है, जो पूरी दुनिया का ख़ुदा कहलाता है।"

6तेरा ख़ुदा फ़रमाता है, "तू मतरूका और दिल से मजरूह बीवी की मानिंद है, उस औरत की मानिंद जिसके शौहर ने उसे रद्द किया, गो उस की शादी उस वक़्त हुई जब कुँवारी ही थी। लेकिन अब मैं, रब ने तुझे बुलाया है। 7एक ही लमहे के लिए मैंने तुझे तर्क किया, लेकिन अब बड़े रहम से तुझे जमा करूँगा। 8मैंने अपने ग़ज़ब का पूरा ज़ोर तुझ पर नाज़िल करके पल-भर के लिए अपना चेहरा तुझसे छुपा लिया, लेकिन अब अबदी शफ़क़त से तुझ पर रहम करूँगा।" रब तेरा छुड़ानेवाला यह फ़रमाता है।

9"बड़े सैलाब के बाद मैंने नूह से क़सम खाई थी कि आइंदा सैलाब कभी पूरी ज़मीन पर नहीं आएगा। इसी तरह अब मैं क़सम खाकर वादा करता हूँ कि आइंदा न मैं कभी तुझसे नाराज़ हूँगा, न तुझे मलामत करूँगा। 10गो पहाड़ हट जाएँ और पहाड़ियाँ जुंबिश खाएँ, लेकिन मेरी शफ़क़त तुझ पर से कभी नहीं हटेगी, मेरा सलामती का अहद कभी नहीं हिलेगा।" यह रब का फ़रमान है जो तुझ पर तरस खाता है।

नया शहर यरूशलम

11"बेचारी बेटी यरूशलम! शदीद तूफ़ान तुझ पर से गुज़र गए हैं, और कोई नहीं है जो तुझे तसल्ली दे। देख, मैं तेरी दीवारों के पत्थर मज़बूत चूने से जोड़ दूँगा और तेरी बुनियादों को संगे-लाजवर्द[a] से रख दूँगा। 12मैं तेरी दीवारों को याक़ूत, तेरे दरवाज़ों को आबे-बहर[b] और तेरी तमाम फ़सील को क़ीमती जवाहिर से तामीर करूँगा। 13तेरे तमाम फ़रज़ंद रब से तालीम पाएँगे, और तेरी औलाद की सलामती अज़ीम होगी। 14तुझे इनसाफ़ की मज़बूत बुनियाद पर रखा जाएगा, चुनाँचे दूसरों के ज़ुल्म से दूर रह, क्योंकि डरने की ज़रूरत नहीं होगी। दहशतज़दा न हो, क्योंकि दहशत खाने का सबब तेरे क़रीब नहीं आएगा। 15अगर कोई तुझ पर हमला करे भी तो यह मेरी तरफ़ से नहीं होगा, इसलिए हर हमलाआवर शिकस्त खाएगा।

16देख, मैं ही उस लोहार का ख़ालिक़ हूँ जो हवा देकर कोयलों को दहका देता है ताकि काम के लिए मौज़ूँ हथियार बना ले। और मैं ही ने तबाह करनेवाले को ख़लक़ किया ताकि वह बरबादी का काम अंजाम दे। 17चुनाँचे जो भी हथियार तुझ पर हमला करने के लिए तैयार हो जाए वह नाकाम होगा, और जो भी ज़बान तुझ पर इलज़ाम लगाए उसे तू मुजरिम साबित करेगी। यही रब के ख़ादिमों का मौरूसी हिस्सा है, मैं ही उनकी रास्तबाज़ी बरक़रार रखूँगा।" रब ख़ुद यह फ़रमाता है।

[a] lapis lazuli

[b] beryl

रब के पास आओ ताकि ज़िंदगी पाओ

55 “क्या तुम प्यासे हो? आओ, सब
पानी के पास आओ! क्या तुम्हारे
पास पैसे नहीं? इधर आओ, सौदा ख़रीदकर
खाना खाओ। यहाँ की मै और दूध मुफ़्त है।
आओ, उसे पैसे दिए बग़ैर ख़रीदो। 2उस पर पैसे
क्यों ख़र्च करते हो जो रोटी नहीं है? जो सेर नहीं
करता उसके लिए मेहनत-मशक़्क़त क्यों करते
हो? सुनो, सुनो मेरी बात! फिर तुम अच्छी
ख़ुराक खाओगे, बेहतरीन खाने से लुत्फ़अंदोज़
होगे। 3कान लगाकर मेरे पास आओ! सुनो तो
जीते रहोगे।

मैं तुम्हारे साथ अबदी अहद बाँधूँगा, तुम्हें उन
अनमिट मेहरबानियों से नवाज़ूँगा जिनका वादा
दाऊद से किया था। 4देख, मैंने मुक़र्रर किया
कि वह अक़वाम के सामने मेरा गवाह हो, कि
अक़वाम का रईस और हुक्मरान हो। 5देख, तू
ऐसी क़ौम को बुलाएगा जिसे तू नहीं जानता, और
तुझसे नावाक़िफ़ क़ौम रब तेरे ख़ुदा की ख़ातिर तेरे
पास दौड़ी चली आएगी। क्योंकि जो इसराईल का
क़ुद्दूस है उसने तुझे शानो-शौकत अता की है।”

मेरा कलाम बेतासीर नहीं रहता

6अभी रब को तलाश करो जबकि उसे पाया जा
सकता है। अभी उसे पुकारो जबकि वह क़रीब ही
है। 7बेदीन अपनी बुरी राह और शरीर अपने बुरे
ख़यालात छोड़े। वह रब के पास वापस आए तो
वह उस पर रहम करेगा। वह हमारे ख़ुदा के पास
वापस आए, क्योंकि वह फ़राख़दिली से मुआफ़
कर देता है।

8क्योंकि रब फ़रमाता है, “मेरे ख़यालात और
तुम्हारे ख़यालात में और मेरी राहों और तुम्हारी
राहों में बड़ा फ़रक़ है। 9जितना आसमान ज़मीन
से ऊँचा है उतनी ही मेरी राहें तुम्हारी राहों और मेरे
ख़यालात तुम्हारे ख़यालात से बुलंद हैं।

10बारिश और बर्फ़ पर ग़ौर करो! ज़मीन पर
पड़ने के बाद यह ख़ाली हाथ वापस नहीं आती
बल्कि ज़मीन को यों सेराब करती है कि पौदे
फूटने और फलने-फूलने लगते हैं बल्कि पकते
पकते बीज बोनेवाले को बीज और भूके को रोटी
मुहैया करते हैं। 11मेरे मुँह से निकला हुआ कलाम
भी ऐसा ही है। वह ख़ाली हाथ वापस नहीं आएगा
बल्कि मेरी मरज़ी पूरी करेगा और उसमें कामयाब
होगा जिसके लिए मैंने उसे भेजा था।

12क्योंकि तुम ख़ुशी से निकलोगे, तुम्हें
सलामती से लाया जाएगा। पहाड़ और पहाड़ियाँ
तुम्हारे आने पर बाग़ बाग़ होकर शादियाना
बजाएँगी, और मैदान के तमाम दरख़्त तालियाँ
बजाएंगे। 13काँटेदार झाड़ी की बजाए जूनीपर
का दरख़्त उगेगा, और बिच्छूबूटी की बजाए मेहँदी
फले-फूलेगी। यों रब के नाम को जलाल मिलेगा,
और उस की क़ुदरत का अबदी और अनमिट
निशान क़ायम होगा।”

हर शख़्स अल्लाह की क़ौम में शामिल हो सकता है

56 रब फ़रमाता है, “इनसाफ़ को क़ायम
रखो और वह कुछ किया करो जो
रास्त है, क्योंकि मेरी नजात क़रीब ही है, और
मेरी रास्ती ज़ाहिर होने को है। 2मुबारक है वह जो
यों रास्ती से लिपटा रहे। मुबारक है वह जो सबत
के दिन की बेहुरमती न करे बल्कि उसे मनाए, जो
हर बुरे काम से गुरेज़ करे।”

3जो परदेसी रब का पैरोकार हो गया है वह न
कहे कि बेशक रब मुझे अपनी क़ौम से अलग कर
रखेगा। ख़्वाजासरा भी न सोचे कि हाय, मैं सूखा
हुआ दरख़्त ही हूँ!

4क्योंकि रब फ़रमाता है, “जो ख़्वाजासरा मेरे
सबत के दिन मनाएँ, ऐसे क़दम उठाएँ जो मुझे
पसंद हों और मेरे अहद के साथ लिपटे रहें वह
बेफ़िकर रहें। 5क्योंकि मैं उन्हें अपने घर और उस
की चारदीवारी में ऐसी यादगार और ऐसा नाम
अता करूँगा जो बेटे-बेटियाँ मिलने से कहीं बेहतर
होगा। और जो नाम मैं उन्हें दूँगा वह अबदी होगा,
वह कभी नहीं मिटने का।

6वह परदेसी भी बेफ़िकर रहें जो रब के पैरोकार
बनकर उस की ख़िदमत करना चाहते, जो रब
का नाम अज़ीज़ रखकर उस की इबादत करते,
जो सबत के दिन की बेहुरमती नहीं करते बल्कि
उसे मनाते और जो मेरे अहद के साथ लिपटे रहते
हैं। 7क्योंकि मैं उन्हें अपने मुक़द्दस पहाड़ के पास
लाकर अपने दुआ के घर में ख़ुशी दिलाऊँगा। जब
वह मेरी क़ुरबानगाह पर अपनी भस्म होनेवाली
और ज़बह की क़ुरबानियाँ चढ़ाएँगे तो वह मुझे
पसंद आएँगी। क्योंकि मेरा घर तमाम क़ौमों के
लिए दुआ का घर कहलाएगा।"
8रब क़ादिरे-मुतलक़ जो इसराईल की बिखरी
हुई क़ौम जमा कर रहा है फ़रमाता है, "उनमें जो
इकट्ठे हो चुके हैं मैं और भी जमा कर दूँगा।"

क़ौम के राहनुमा सुस्त और लालची कुत्ते हैं

9ऐ मैदान के तमाम हैवानो, आओ! ऐ जंगल
के तमाम जानवरो, आकर खाओ! 10इसराईल
के पहरेदार अंधे हैं, सबके सब कुछ भी नहीं
जानते। सबके सब बहरे कुत्ते हैं जो भौंक ही
नहीं सकते। फ़र्श पर लेटे हुए वह अच्छे अच्छे
ख़ाब देखते रहते हैं। ऊँघना उन्हें कितना पसंद है!
11लेकिन यह कुत्ते लालची भी हैं और कभी सेर
नहीं होते, हालाँकि गल्लाबान कहलाते हैं। वह
समझ से ख़ाली हैं, और हर एक अपनी अपनी
राह पर ध्यान देकर अपने ही नफ़ा की तलाश में
रहता है। 12हर एक आवाज़ देता है, "आओ, मैं
मै ले आता हूँ! आओ, हम जी भरकर शराब पी
लें। और कल भी आज की तरह हो बल्कि इससे
भी ज़्यादा रौनक़ हो!"

रब बेदीनों की अदालत करता है

57 रास्तबाज़ हलाक हो जाता है, लेकिन
किसी को परवा नहीं। दियानतदार
दुनिया से छीन लिए जाते हैं, लेकिन कोई ध्यान
नहीं देता। कोई नहीं समझता कि रास्तबाज़ को
बुराई से बचने के लिए छीन लिया जाता है।
2क्योंकि उस की मनज़िले-मक़सूद सलामती है।
सीधी राह पर चलनेवाले मरते वक़्त पाँव फैलाकर
आराम करते हैं।
3"लेकिन ऐ जादूगरनी की औलाद, ज़िना-
कार और फ़हहाशी के बच्चो, इधर आओ! 4तुम
किसका मज़ाक़ उड़ा रहे हो, किस पर ज़बान
चलाकर मुँह चिड़ाते हो? तुम मुजरिमों और
धोकेबाज़ों के ही बच्चे हो!
5तुम बलूत बल्कि हर घने दरख़्त के साये
में मस्ती में आ जाते हो, वादियों और चट्टानों
के शिगाफ़ों में अपने बच्चों को ज़बह करते हो।
6वादियों के रगड़े हुए पत्थर तेरा हिस्सा और
तेरा मुक़द्दर बन गए हैं। क्योंकि उन्हीं को तूने
मै और ग़ल्ला की नज़रें पेश कीं। इसके मद्दे-
नज़र मैं अपना फ़ैसला क्यों बदलूँ? 7तूने अपना
बिस्तर ऊँचे पहाड़ पर लगाया, उस पर चढ़कर
अपनी क़ुरबानियाँ पेश कीं। 8अपने घर के दरवाज़े
और चौखट के पीछे तूने अपनी बुतपरस्ती के
निशान लगाए। मुझे तर्क करके तू अपना बिस्तर
बिछाकर उस पर लेट गई। तूने उसे इतना बड़ा
बना दिया कि दूसरे भी उस पर लेट सकें। फिर
तूने इसमतफ़रोशी के पैसे मुक़र्रर किए। उनकी
सोहबत तुझे कितनी प्यारी थी, उनकी बरहनगी से
तू कितना लुत्फ़ उठाती थी! 9तू कसरत का तेल
और ख़ुशबूदार क्रीम लेकर मलिक देवता के पास
गई। तूने अपने क़ासिदों को दूर दूर बल्कि पाताल
तक भेज दिया। 10गो तू सफ़र करते करते बहुत
थक गई तो भी तूने कभी न कहा, 'फ़ज़ूल है!'
अब तक तुझे तक़वियत मिलती रही, इसलिए तू
निढाल न हुई।
11तुझे किससे इतना ख़ौफ़ो-हिरास था कि तूने
झूट बोलकर न मुझे याद किया, न परवा की?
ऐसा ही है ना, तू इसलिए मेरा ख़ौफ़ नहीं मानती
कि मैं ख़ामोश और छुपा रहा।
12लेकिन मैं लोगों पर तेरी नाम-निहाद
रास्तबाज़ी और तेरे काम ज़ाहिर करूँगा। यक़ीनन
यह तेरे लिए मुफ़ीद नहीं होंगे। 13आ, मदद के
लिए आवाज़ दे! देखते हैं कि तेरे बुतों का
मजमुआ तुझे बचा सकेगा कि नहीं। लेकिन ऐसा

नहीं होगा बल्कि उन्हें हवा उठा ले जाएगी, एक फूँक उन्हें उड़ा देगी।

लेकिन जो मुझ पर भरोसा रखे वह मुल्क को मीरास में पाएगा, मुक़द्दस पहाड़ उस की मौरूसी मिलकियत बनेगा।”

रब अपनी क़ौम की मदद करेगा

14अल्लाह फ़रमाता है, “रास्ता बनाओ, रास्ता बनाओ! उसे साफ़-सुथरा करके हर रुकावट दूर करो ताकि मेरी क़ौम आ सके।” 15क्योंकि जो अज़ीम और सरबुलंद है, जो अबद तक तख़्तनशीन और जिसका नाम क़ुद्दूस है वह फ़रमाता है, “मैं न सिर्फ़ बुलंदियों के मक़दिस में बल्कि शिकस्ताहाल और फ़रोतन रूह के साथ भी सुकूनत करता हूँ ताकि फ़रोतन की रूह और शिकस्ताहाल के दिल को नई ज़िंदगी बख़्शूँ। 16क्योंकि मैं हमेशा तक उनके साथ नहीं झगड़ूँगा, अबद तक नाराज़ नहीं रहूँगा। वरना उनकी रूह मेरे हुज़ूर निढाल हो जाती, उन लोगों की जान जिन्हें मैंने ख़ुद ख़लक़ किया। 17मैं इसराईल का नाजायज़ मनाफ़े देखकर तैश में आया और उसे सज़ा देकर अपना मुँह छुपाए रखा। तो भी वह अपने दिल की बरगश्ता राहों पर चलता रहा। 18लेकिन गो मैं उसके चाल-चलन से वाक़िफ़ हूँ मैं उसे फिर भी शफ़ा दूँगा, उस की राहनुमाई करके उसे दुबारा तसल्ली दूँगा। और उसके जितने लोग मातम कर रहे हैं 19उनके लिए मैं होंटों का फल पैदा करूँगा।” क्योंकि रब फ़रमाता है, “उनकी सलामती हो जो दूर हैं और उनकी जो क़रीब हैं। मैं ही उन्हें शफ़ा दूँगा।”

20लेकिन बेदीन मुतलातिम समुंदर की मानिंद हैं जो थम नहीं सकता और जिसकी लहरें गंद और कीचड़ उछालती रहती हैं। 21मेरा ख़ुदा फ़रमाता है, “बेदीन सलामती नहीं पाएँगे।

रब को पसंदीदा रोज़ा

58 गला फाड़कर आवाज़ दे, रुक रुककर बात न कर! नरसिंगे की-सी बुलंद आवाज़ के साथ मेरी क़ौम को उस की सरकशी सुना, याक़ूब के घराने को उसके गुनाहों की फ़हरिस्त बयान कर। 2रोज़ बरोज़ वह मेरी मरज़ी दरियाफ़्त करते हैं। हाँ, वह मेरी राहों को जानने के शौक़ीन हैं, उस क़ौम की मानिंद जिसने अपने ख़ुदा के अहकाम को तर्क नहीं किया बल्कि रास्तबाज़ है। चुनाँचे वह मुझसे मुंसिफ़ाना फ़ैसले माँगकर ज़ाहिरन अल्लाह की क़ुरबत से लुत्फ़अंदोज़ होते हैं। 3वह शिकायत करते हैं, ‘जब हम रोज़ा रखते हैं तो तू तवज्जुह क्यों नहीं देता? जब हम अपने आपको ख़ाकसार बनाकर इंकिसारी का इज़हार करते हैं तो तू ध्यान क्यों नहीं देता?’

सुनो! रोज़ा रखते वक़्त तुम अपना कारोबार मामूल के मुताबिक़ चलाकर अपने मज़दूरों को दबाए रखते हो। 4न सिर्फ़ यह बल्कि तुम रोज़ा रखने के साथ साथ झगड़ते और लड़ते भी हो। तुम एक दूसरे को शरारत के मुक्के मारने से भी नहीं चूकते। यह कैसी बात है? अगर तुम यों रोज़ा रखो तो इसकी तवक़्क़ो नहीं कर सकते कि तुम्हारी बात आसमान तक पहुँचे। 5क्या मुझे इस क़िस्म का रोज़ा पसंद है? क्या यह काफ़ी है कि बंदा अपने आपको कुछ देर के लिए ख़ाकसार बनाकर इंकिसारी का इज़हार करे? कि वह अपने सर को आबी नरसल की तरह झुकाकर टाट और राख में लेट जाए? क्या तुम वाक़ई समझते हो कि यह रोज़ा है, कि ऐसा वक़्त रब को पसंद है?

6यह किस तरह हो सकता है? जो रोज़ा मैं पसंद करता हूँ वह फ़रक़ है। हक़ीक़ी रोज़ा यह है कि तू बेइनसाफ़ी की ज़ंजीरों में जकड़े हुओं को रिहा करे, मज़लूमों का जुआ हटाए, कुचले हुओं को आज़ाद करे, हर जुए को तोड़े, 7भूके को अपने खाने में शरीक करे, बेघर मुसीबतज़दा को पनाह दे, बरहना को कपड़े पहनाए और अपने रिश्तेदार की मदद करने से गुरेज़ न करे!

8अगर तू ऐसा करे तो तू सुबह की पहली किरणों की तरह चमक उठेगा, और तेरे ज़ख़्म जल्द ही भरेंगे। तब तेरी रास्तबाज़ी तेरे आगे

आगे चलेगी, और रब का जलाल तेरे पीछे तेरी
हिफ़ाज़त करेगा। 9तब तू फ़रियाद करेगा और
रब जवाब देगा। जब तू मदद के लिए पुकारेगा तो
वह फ़रमाएगा, 'मैं हाज़िर हूँ।'

अपने दरमियान दूसरों पर जुआ डालने,
उँगलियाँ उठाने और दूसरों की बदनामी करने
का सिलसिला ख़त्म कर! 10भूके को अपनी
रोटी दे और मज़लूमों की ज़रूरियात पूरी कर!
फिर तेरी रौशनी अंधेरे में चमक उठेगी और तेरी
रात दोपहर की तरह रौशन होगी। 11रब हमेशा
तेरी क़ियादत करेगा, वह झुलसते हुए इलाक़ों
में भी तेरी जान की ज़रूरियात पूरी करेगा और
तेरे आज़ा को तक़वियत देगा। तब तू सेराब बाग़
की मानिंद होगा, उस चश्मे की मानिंद जिसका
पानी कभी ख़त्म नहीं होता। 12तेरे लोग क़दीम
खंडरात को नए सिरे से तामीर करेंगे। जो बुनियादें
गुज़री नसलों ने रखी थीं उन्हें तू दुबारा रखेगा। तब
तू 'रख़ने को बंद करनेवाला' और 'गलियों को
दुबारा रहने के क़ाबिल बनानेवाला' कहलाएगा।

13सबत के दिन अपने पैरों को काम करने से
रोक। मेरे मुक़द्दस दिन के दौरान कारोबार मत
करना बल्कि उसे 'राहतबख़्श' और 'मुअज़्ज़ज़'
क़रार दे। उस दिन न मामूल की राहों पर चल, न
अपने कारोबार चला, न ख़ाली गप्पें हाँक। यों तू
सबत का सहीह एहतराम करेगा। 14तब रब तेरी
राहत का मंबा होगा, और मैं तुझे रथ में बिठाकर
मुल्क की बुलंदियों पर से गुज़रने दूँगा, तुझे तेरे
बाप याक़ूब की मीरास में से सेर करूँगा।" रब के
मुँह ने यह फ़रमाया है।

तुम्हारे क़ुसूर ने तुम्हें रब से दूर कर दिया है

59 यक़ीनन रब का बाज़ू छोटा नहीं कि
वह बचा न सके, उसका कान बहरा
नहीं कि सुन न सके। 2हक़ीक़त में तुम्हारे बुरे
कामों ने तुम्हें उससे अलग कर दिया, तुम्हारे
गुनाहों ने उसका चेहरा तुमसे छुपाए रखा,
इसलिए वह तुम्हारी नहीं सुनता। 3क्योंकि तुम्हारे
हाथ ख़ूनआलूदा, तुम्हारी उँगलियाँ गुनाह से
नापाक हैं। तुम्हारे होंट झूट बोलते और तुम्हारी
ज़बान शरीर बातें फुसफुसाती है। 4अदालत में
कोई मुंसिफ़ाना मुक़दमा नहीं चलाता, कोई सच्चे
दलायल पेश नहीं करता। लोग सच्चाई से ख़ाली
बातों पर एतबार करके झूट बोलते हैं, वह बदकारी
से हामिला होकर बेदीनी को जन्म देते हैं। 5-6वह
ज़हरीले साँपों के अंडों पर बैठ जाते हैं ताकि बच्चे
निकलें। जो उनके अंडे खाए वह मर जाता है, और
अगर उनके अंडे दबाए तो ज़हरीला साँप निकल
आता है। यह लोग मकड़ी के जाले तान लेते हैं,
ऐसा कपड़ा जो पहनने के लिए बेकार है। अपने
हाथों के बनाए हुए इस कपड़े से वह अपने आपको
ढाँप नहीं सकते। उनके आमाल बुरे ही हैं, उनके
हाथ तशद्दुद ही करते हैं। 7जहाँ भी ग़लत काम
करने का मौक़ा मिले वहाँ उनके पाँव भागकर
पहुँच जाते हैं। वह बेक़ुसूर को क़त्ल करने के लिए
तैयार रहते हैं। उनके ख़यालात शरीर ही हैं, अपने
पीछे वह तबाही-ओ-बरबादी छोड़ जाते हैं। 8न
वह सलामती की राह जानते हैं, न उनके रास्तों
में इनसाफ़ पाया जाता है। क्योंकि उन्होंने उन्हें
टेढ़ा-मेढ़ा बना रखा है, और जो भी उन पर चले
वह सलामती को नहीं जानता।

तौबा की दुआ

9इसी लिए इनसाफ़ हमसे दूर है, रास्ती हम
तक पहुँचती नहीं। हम रौशनी के इंतज़ार में रहते
हैं, लेकिन अफ़सोस, अंधेरा ही अंधेरा नज़र आता
है। हम आबो-ताब की उम्मीद रखते हैं, लेकिन
अफ़सोस, जहाँ भी चलते हैं वहाँ घनी तारीकी
छाई रहती है। 10हम अंधों की तरह दीवार को
हाथ से छू छूकर रास्ता मालूम करते हैं, आँखों
से महरूम लोगों की तरह टटोल टटोलकर आगे
बढ़ते हैं। दोपहर के वक़्त भी हम ठोकर खा खाकर
यों फिरते हैं जैसे धुँधलका हो। गो हम तनआवर
लोगों के दरमियान रहते हैं, लेकिन ख़ुद मुरदों की
मानिंद हैं। 11हम सब निढाल हालत में रीछों की
तरह ग़ुर्राते, कबूतरों की मानिंद ग़ूँ ग़ूँ करते हैं। हम
इनसाफ़ के इंतज़ार में रहते हैं, लेकिन बेसूद। हम

नजात की उम्मीद रखते हैं, लेकिन वह हमसे दूर ही रहती है।

12क्योंकि हमारे मुतअद्दिद जरायम तेरे सामने हैं, और हमारे गुनाह हमारे ख़िलाफ़ गवाही देते हैं। हमें मुतवातिर अपने जरायम का एहसास है, हम अपने गुनाहों से ख़ूब वाक़िफ़ हैं। 13हम मानते हैं कि रब से बेवफ़ा रहे बल्कि उसका इनकार भी किया है। हमने अपना मुँह अपने ख़ुदा से फेरकर ज़ुल्म और धोके की बातें फैलाई हैं। हमारे दिलों में झूट का बीज बढ़ते बढ़ते मुँह में से निकला। 14नतीजे में इनसाफ़ पीछे हट गया, और रास्ती दूर खड़ी रहती है। सच्चाई चौक में ठोकर खाकर गिर गई है, और दियानतदारी दाख़िल ही नहीं हो सकती। 15चुनाँचे सच्चाई कहीं भी पाई नहीं जाती, और ग़लत काम से गुरेज़ करनेवाले को लूटा जाता है।

रब का जवाब

यह सब कुछ रब को नज़र आया, और वह नाख़ुश था कि इनसाफ़ नहीं है। 16उसने देखा कि कोई नहीं है, वह हैरान हुआ कि मुदाख़लत करनेवाला कोई नहीं है। तब उसके ज़ोरावर बाज़ू ने उस की मदद की, और उस की रास्ती ने उसको सहारा दिया। 17रास्ती के ज़िरा-बकतर से मुलब्बस होकर उसने सर पर नजात का ख़ोद रखा, इंतक़ाम का लिबास पहनकर उसने ग़ैरत की चादर ओढ़ ली। 18हर एक को वह उसका मुनासिब मुआवज़ा देगा। वह मुख़ालिफ़ों पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करेगा और दुश्मनों से बदला लेगा बल्कि जज़ीरों को भी उनकी हरकतों का अज्र देगा। 19तब इनसान मग़रिब में रब के नाम का ख़ौफ़ मानेंगे और मशरिक़ में उसे जलाल देंगे। क्योंकि वह रब की फूँक से चलाए हुए ज़ोरदार सैलाब की तरह उन पर टूट पड़ेगा।

20रब फ़रमाता है, "छुड़ानेवाला कोहे-सिय्यून पर आएगा। वह याक़ूब के उन फ़रज़ंदों के पास आएगा जो अपने गुनाहों को छोड़कर वापस आएँगे।"

21रब फ़रमाता है, "जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, उनके साथ मेरा यह अहद है : मेरा रूह जो तुझ पर ठहरा हुआ है और मेरे अलफ़ाज़ जो मैंने तेरे मुँह में डाले हैं वह अब से अबद तक न तेरे मुँह से, न तेरी औलाद के मुँह से और न तेरी औलाद की औलाद से हटेंगे।" यह रब का फ़रमान है।

अक़वाम यरूशलम के नूर के पास आएँगी

60 "उठ, खड़ी होकर चमक उठ! क्योंकि तेरा नूर आ गया है, और रब का जलाल तुझ पर तुलू हुआ है। 2क्योंकि गो ज़मीन पर तारीकी छाई हुई है और अक़वाम घने अंधेरे में रहती हैं, लेकिन तुझ पर रब का नूर तुलू हो रहा है, और उसका जलाल तुझ पर ज़ाहिर हो रहा है। 3अक़वाम तेरे नूर के पास और बादशाह उस चमकती-दमकती रौशनी के पास आएँगे जो तुझ पर तुलू होगी।

4अपनी नज़र उठाकर चारों तरफ़ देख! सबके सब जमा होकर तेरे पास आ रहे हैं। तेरे बेटे दूर दूर से पहुँच रहे हैं, और तेरी बेटियों को गोद में उठाकर क़रीब लाया जा रहा है। 5उस वक़्त तू यह देखकर चमक उठेगी। तेरा दिल ख़ुशी के मारे तेज़ी से धड़कने लगेगा और कुशादा हो जाएगा। क्योंकि समुंदर के ख़ज़ाने तेरे पास लाए जाएंगे, अक़वाम की दौलत तेरे पास पहुँचेगी। 6ऊँटों का ग़ोल बल्कि मिदियान और ऐफ़ा के जवान ऊँट तेरे मुल्क को ढाँप देंगे। वह सोने और बख़ूर से लदे हुए और रब की हम्दो-सना करते हुए मुल्के-सबा से आएँगे। 7क़ीदार की तमाम भेड़-बकरियाँ तेरे हवाले की जाएँगी, और नबायोत के मेंढे तेरी ख़िदमत के लिए हाज़िर होंगे। उन्हें मेरी क़ुरबानगाह पर चढ़ाया जाएगा और मैं उन्हें पसंद करूँगा। यों मैं अपने जलाल के घर को शानो-शौकत से आरास्ता करूँगा।

8यह कौन हैं जो बादलों की तरह और काबुक के पास वापस आनेवाले कबूतरों की मानिंद उड़कर आ रहे हैं? 9यह तरसीस के ज़बरदस्त बहरी जहाज़ हैं जो तेरे पास पहुँच रहे हैं। क्योंकि

जज़ीरे मुझसे उम्मीद रखते हैं। यह जहाज़ तेरे बेटों
को उनकी सोने-चाँदी समेत दूर-दराज़ इलाक़ों से
लेकर आ रहे हैं। यों रब तेरे ख़ुदा के नाम और
इसराईल के क़ुद्दूस की ताज़ीम होगी जिसने तुझे
शानो-शौकत से नवाज़ा है।

10परदेसी तेरी दीवारें अज़ सरे-नौ तामीर
करेंगे, और उनके बादशाह तेरी ख़िदमत करेंगे।
क्योंकि गो मैंने अपने ग़ज़ब में तुझे सज़ा दी,
लेकिन अब मैं अपने फ़ज़ल से तुझ पर रहम
करूँगा। 11तेरी फ़सील के दरवाज़े हमेशा खुले
रहेंगे। उन्हें न दिन को बंद किया जाएगा, न रात
को ताकि अक़वाम का मालो-दौलत और उनके
गिरिफ़्तार किए गए बादशाहों को शहर के अंदर
लाया जा सके। 12क्योंकि जो क़ौम या सलतनत
तेरी ख़िदमत करने से इनकार करे वह बरबाद हो
जाएगी, उसे पूरे तौर पर तबाह किया जाएगा।

13लुबनान की शानो-शौकत तेरे सामने हाज़िर
होगी। जूनीपर, सनोबर और सरो के दरख़्त
मिलकर तेरे पास आएँगे ताकि मेरे मक़दिस को
आरास्ता करें। यों मैं अपने पाँवों की चौकी को
जलाल दूँगा। 14तुझ पर ज़ुल्म करनेवालों के
बेटे झुक झुककर तेरे हुज़ूर आएँगे, तेरी तहक़ीर
करनेवाले तेरे पाँवों के सामने औंधे मुँह हो जाएंगे।
वह तुझे 'रब का शहर' और 'इसराईल के क़ुद्दूस
का सिय्यून' क़रार देंगे। 15पहले तुझे तर्क किया
गया था, लोग तुझसे नफ़रत रखते थे, और तुझमें
से कोई नहीं गुज़रता था। लेकिन अब मैं तुझे
अबदी फ़ख़र का बाइस बना दूँगा, और तमाम
नसलें तुझे देखकर ख़ुश होंगी।

16तू अक़वाम का दूध पिएगी, और बादशाह
तुझे दूध पिलाएँगे। तब तू जान लेगी कि मैं रब तेरा
नजातदहिंदा हूँ, कि मैं जो याक़ूब का ज़बरदस्त
सूरमा हूँ तेरा छुड़ानेवाला हूँ।

17मैं तेरे पीतल को सोने में, तेरे लोहे को चाँदी
में, तेरी लकड़ी को पीतल में और तेरे पत्थर को
लोहे में बदलूँगा। मैं सलामती को तेरी मुहाफ़िज़
और रास्ती को तेरी निगरान बनाऊँगा। 18अब से
तेरे मुल्क में न तशद्दुद का ज़िक्र होगा, न बरबादी-
ओ-तबाही का। अब से तेरी चारदीवारी 'नजात'
और तेरे दरवाज़े 'हम्दो-सना' कहलाएँगे।

19आइंदा तुझे न दिन के वक़्त सूरज, न रात
के वक़्त चाँद की ज़रूरत होगी, क्योंकि रब ही
तेरी अबदी रौशनी होगा, तेरा ख़ुदा ही तेरी आबो-
ताब होगा। 20आइंदा तेरा सूरज कभी ग़ुरूब नहीं
होगा, तेरा चाँद कभी नहीं घटेगा। क्योंकि रब तेरा
अबदी नूर होगा, और मातम के तेरे दिन ख़त्म हो
जाएंगे।

21तब तेरी क़ौम के तमाम अफ़राद रास्तबाज़
होंगे, और मुल्क हमेशा तक उनकी मिलकियत
रहेगा। क्योंकि वह मेरे हाथ से लगाई हुई पनीरी
होंगे, मेरे हाथ का काम जिससे मैं अपना जलाल
ज़ाहिर करूँगा। 22तब सबसे छोटे ख़ानदान की
तादाद बढ़कर हज़ार अफ़राद पर मुश्तमिल होगी,
सबसे कमज़ोर कुंबा ताक़तवर क़ौम बनेगा।
मुक़र्ररा वक़्त पर मैं, रब यह सब कुछ तेज़ी से
अंजाम दूँगा।"

मातम का वक़्त ख़त्म है

61 रब क़ादिरे-मुतलक़ का रूह मुझ पर
है, क्योंकि रब ने मुझे तेल से मसह
करके ग़रीबों को ख़ुशख़बरी सुनाने का इख़्तियार
दिया है। उसने मुझे शिकस्तादिलों की मरहम-
पट्टी करने के लिए और यह एलान करने के
लिए भेजा है कि क़ैदियों को रिहाई मिलेगी और
ज़ंजीरों में जकड़े हुए आज़ाद हो जाएंगे, 2कि
बहाली का साल और हमारे ख़ुदा के इंतक़ाम
का दिन आ गया है। उसने मुझे भेजा है कि मैं
तमाम मातम करनेवालों को तसल्ली दूँ 3और
सिय्यून के सोगवारों को दिलासा देकर राख के
बजाए शानदार ताज, मातम के बजाए ख़ुशी का
तेल और शिकस्ता रूह के बजाए हम्दो-सना का
लिबास मुहैया करूँ।

तब वह 'रास्ती के दरख़्त' कहलाएँगे, ऐसे पौदे
जो रब ने अपना जलाल ज़ाहिर करने के लिए
लगाए हैं। 4वह क़दीम खंडरात को अज़ सरे-नौ
तामीर करके देर से बरबाद हुए मक़ामों को बहाल

करेंगे। वह उन तबाहशुदा शहरों को दुबारा क़ायम करेंगे जो नसल-दर-नसल वीरानो-सुनसान रहे हैं। 5ग़ैरमुल्की खड़े होकर तुम्हारी भेड़-बकरियों की गल्लाबानी करेंगे, परदेसी तुम्हारे खेतों और बाग़ों में काम करेंगे। 6उस वक़्त तुम 'रब के इमाम' कहलाओगे, लोग तुम्हें 'हमारे ख़ुदा के ख़ादिम' क़रार देंगे।

तुम अक़वाम की दौलत से लुत्फ़अंदोज़ होगे, उनकी शानो-शौकत अपनाकर उस पर फ़ख़र करोगे। 7तुम्हारी शरमिंदगी नहीं रहेगी बल्कि तुम इज़्ज़त का दुगना हिस्सा पाओगे, तुम्हारी रुसवाई नहीं रहेगी बल्कि तुम शानदार हिस्सा मिलने के बाइस शादियाना बजाओगे। क्योंकि तुम्हें वतन में दुगना हिस्सा मिलेगा, और अबदी ख़ुशी तुम्हारी मीरास होगी।

8क्योंकि रब फ़रमाता है, "मुझे इनसाफ़ पसंद है। मैं ग़ारतगरी और कजरवी से नफ़रत रखता हूँ। मैं अपने लोगों को वफ़ादारी से उनका अज्र दूँगा, मैं उनके साथ अबदी अहद बाँधूँगा। 9उनकी नसल अक़वाम में और उनकी औलाद दीगर उम्मतों में मशहूर होगी। जो भी उन्हें देखे वह जान लेगा कि रब ने उन्हें बरकत दी है।"

10मैं रब से निहायत ही शादमान हूँ, मेरी जान अपने ख़ुदा की तारीफ़ में ख़ुशी के गीत गाती है। क्योंकि जिस तरह दूल्हा अपना सर इमाम की-सी पगड़ी से सजाता और दुलहन अपने आपको अपने ज़ेवरात से आरास्ता करती है उसी तरह अल्लाह ने मुझे नजात का लिबास पहनाकर रास्ती की चादर में लपेटा है। 11क्योंकि जिस तरह ज़मीन अपनी हरियाली को निकलने देती और बाग़ अपने बीजों को फूटने देता है उसी तरह रब क़ादिरे-मुतलक़ अक़वाम के सामने अपनी रास्ती और सताइश फूटने देगा।

यरूशलम की बहाली

62 सिय्यून की ख़ातिर मैं ख़ामोश नहीं रहूँगा, यरूशलम की ख़ातिर तब तक आराम नहीं करूँगा जब तक उस की रास्ती तुलूए-सुबह की तरह न चमके और उस की नजात मशाल की तरह न भड़के।

2अक़वाम तेरी रास्ती देखेंगी, तमाम बादशाह तेरी शानो-शौकत का मुशाहदा करेंगे। उस वक़्त तुझे नया नाम मिलेगा, ऐसा नाम जो रब का अपना मुँह मुतैयिन करेगा। 3तू रब के हाथ में शानदार ताज और अपने ख़ुदा के हाथ में शाही कुलाह होगी। 4आइंदा लोग तुझे न कभी 'मतरूका' न तेरे मुल्क को 'वीरानो-सुनसान' क़रार देंगे बल्कि तू मेरा लुत्फ़ और तेरा मुल्क ब्याही कहलाएगा। क्योंकि रब तुझसे लुत्फ़अंदोज़ होगा, और तेरा मुल्क शादीशुदा होगा। 5जिस तरह जवान आदमी कुँवारी से शादी करता है उसी तरह तेरे फ़रज़ंद तुझे ब्याह लेंगे। और जिस तरह दूल्हा दुलहन के बाइस ख़ुशी मनाता है उसी तरह तेरा ख़ुदा तेरे सबब से ख़ुशी मनाएगा।

6ऐ यरूशलम, मैंने तेरी फ़सील पर पहरेदार लगाए हैं जो दिन-रात आवाज़ दें। उन्हें एक लमहे के लिए भी ख़ामोश रहने की इजाज़त नहीं है। ऐ रब को याद दिलानेवालो, उस वक़्त तक न ख़ुद आराम करो, 7न रब को आराम करने दो जब तक वह यरूशलम को अज़ सरे-नौ क़ायम न कर ले। जब पूरी दुनिया शहर की तारीफ़ करेगी तब ही तुम सुकून का साँस ले सकते हो। 8रब ने अपने दाएँ हाथ और ज़ोरावर बाज़ू की क़सम खाकर वादा किया है, "आइंदा न मैं तेरा ग़ल्ला तेरे दुश्मनों को खिलाऊँगा, न बड़ी मेहनत से बनाई गई तेरी मै को अजनबियों को पिलाऊँगा। 9क्योंकि आइंदा फ़सल की कटाई करनेवाले ही रब की सताइश करते हुए उसे खाएँगे, और अंगूर चुननेवाले ही मेरे मक़दिस के सहनों में आकर उनका रस पिएँगे।"

10दाख़िल हो जाओ, शहर के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ! क़ौम के लिए रास्ता तैयार करो! रास्ता बनाओ, रास्ता बनाओ! उसे पत्थरों से साफ़ करो! तमाम अक़वाम के ऊपर झंडा गाड़ दो!

11क्योंकि रब ने दुनिया की इंतहा तक एलान किया है, “सिय्यून बेटी को बताओ कि देख, तेरी नजात आनेवाली है। देख, उसका अज्र उसके पास है, उसका इनाम उसके आगे आगे चल रहा है।” 12तब वह ‘मुक़द्दस क़ौम’ और ‘वह क़ौम जिसे रब ने एवज़ाना देकर छुड़ाया है’ कहलाएँगे। ऐ यरूशलम बेटी, तू ‘मरग़ूब’ और ‘ग़ैरमतरूका शहर’ कहलाएगी।

अल्लाह अपनी क़ौम की अदालत करता है

63 यह कौन है जो अदोम से आ रहा है, जो सुर्ख़ सुर्ख़ कपड़े पहने बुसरा शहर से पहुँच रहा है? यह कौन है जो रोब से मुलब्बस बड़ी ताक़त के साथ आगे बढ़ रहा है? “मैं ही हूँ, वह जो इनसाफ़ से बोलता, जो बड़ी क़ुदरत से तुझे बचाता है।”

2तेरे कपड़े क्यों इतने लाल हैं? लगता है कि तेरा लिबास हौज़ में अंगूर कुचलने से सुर्ख़ हो गया है।

3“मैं अंगूरों को अकेला ही कुचलता रहा हूँ, अक़वाम में से कोई मेरे साथ नहीं था। मैंने ग़ुस्से में आकर उन्हें कुचला, तैश में उन्हें रौंदा। उनके ख़ून की छींटें मेरे कपड़ों पर पड़ गईं, मेरा सारा लिबास आलूदा हुआ। 4क्योंकि मेरा दिल इंतक़ाम लेने पर तुला हुआ था, अपनी क़ौम का एवज़ाना देने का साल आ गया था। 5मैंने अपने इर्दगिर्द नज़र दौड़ाई, लेकिन कोई नहीं था जो मेरी मदद करता। मैं हैरान था कि किसी ने भी मेरा साथ न दिया। चुनाँचे मेरे अपने बाज़ू ने मेरी मदद की, और मेरे तैश ने मुझे सहारा दिया। 6ग़ुस्से में आकर मैंने अक़वाम को पामाल किया, तैश में उन्हें मदहोश करके उनका ख़ून ज़मीन पर गिरा दिया।”

रब की तमजीद

7मैं रब की मेहरबानियाँ सुनाऊँगा, उसके क़ाबिले-तारीफ़ कामों की तमजीद करूँगा। जो कुछ रब ने हमारे लिए किया, जो मुतअद्दिद भलाइयाँ उसने अपने रहम और बड़े फ़ज़ल से इसराईल को दिखाई हैं उनकी सताइश करूँगा।

8उसने फ़रमाया, “यक़ीनन यह मेरी क़ौम के हैं, ऐसे फ़रज़ंद जो बेवफ़ा नहीं होंगे।” यह कहकर वह उनका नजातदहिंदा बन गया, 9वह उनकी तमाम मुसीबत में शरीक हुआ, और उसके हुज़ूर के फ़रिश्ते ने उन्हें छुटकारा दिया। वह उन्हें प्यार करता, उन पर तरस खाता था, इसलिए उसने एवज़ाना देकर उन्हें छुड़ाया। हाँ, क़दीम ज़माने से आज तक वह उन्हें उठाए फिरता रहा।

10लेकिन वह सरकश हुए, उन्होंने उसके क़ुद्दूस रूह को दुख पहुँचाया। तब वह मुड़कर उनका दुश्मन बन गया। ख़ुद वह उनसे लड़ने लगा।

11फिर उस की क़ौम को वह क़दीम ज़माना याद आया जब मूसा अपनी क़ौम के दरमियान था, और वह पुकार उठे, “वह कहाँ है जो अपनी भेड़-बकरियों को उनके गल्लाबानों समेत समुंदर में से निकाल लाया? वह कहाँ है जिसने अपने रूहुल-क़ुद्स को उनके दरमियान नाज़िल किया, 12जिसकी जलाली क़ुदरत मूसा के दाएँ हाथ हाज़िर रही ताकि उसको सहारा दे? वह कहाँ है जिसने पानी को इसराईलियों के सामने तक़सीम करके अपने लिए अबदी शोहरत पैदा की 13और उन्हें गहराइयों में से गुज़रने दिया? उस वक़्त वह खुले मैदान में चलनेवाले घोड़े की तरह आराम से गुज़रे और कहीं भी ठोकर न खाई। 14जिस तरह गाय-बैल आराम के लिए वादी में उतरते हैं उसी तरह उन्हें रब के रूह से आराम और सुकून हासिल हुआ।”

इसी तरह तूने अपनी क़ौम की राहनुमाई की ताकि तेरे नाम को जलाल मिले।

तौबा की दुआ

15ऐ अल्लाह, आसमान से हम पर नज़र डाल, बुलंदियों पर अपनी मुक़द्दस और शानदार सुकूनतगाह से देख! इस वक़्त तेरी ग़ैरत और क़ुदरत कहाँ है? हम तेरी नरमी और मेहरबानियों से महरूम रह गए हैं! 16तू तो हमारा बाप है।

क्योंकि इब्राहीम हमें नहीं जानता और इसराईल हमें नहीं पहचानता, लेकिन तू, रब हमारा बाप है, क़दीम ज़माने से ही तेरा नाम ‘हमारा छुड़ानेवाला’ है। 17ऐ रब, तू हमें अपनी राहों से क्यों भटकने देता है? तूने हमारे दिलों को इतना सख़्त क्यों कर दिया कि हम तेरा ख़ौफ़ नहीं मान सकते? हमारी ख़ातिर वापस आ! क्योंकि हम तेरे ख़ादिम, तेरी मौरूसी मिलकियत के क़बीले हैं। 18तेरा मक़दिस थोड़ी ही देर के लिए तेरी क़ौम की मिलकियत रहा, लेकिन अब हमारे मुख़ालिफ़ों ने उसे पाँवों तले रौंद डाला है। 19लगता है कि हम कभी तेरी हुकूमत के तहत नहीं रहे, कि हम पर कभी तेरे नाम का ठप्पा नहीं लगा था।

64 काश तू आसमान को फाड़कर उतर आए, कि पहाड़ तेरे सामने थरथराएँ। 2काश तू डालियों को भड़का देनेवाली आग या पानी को एकदम उबालनेवाली आतिश की तरह नाज़िल हो ताकि तेरे दुश्मन तेरा नाम जान लें और क़ौमें तेरे सामने लरज़ उठें! 3क्योंकि क़दीम ज़माने में जब तू ख़ौफ़नाक और ग़ैरमुतवक़्क़े काम किया करता था तो यों ही नाज़िल हुआ, और पहाड़ यों ही तेरे सामने काँपने लगे। 4क़दीम ज़माने से ही किसी ने तेरे सिवा किसी और ख़ुदा को न देखा न सुना है। सिर्फ़ तू ही ऐसा ख़ुदा है जो उनकी मदद करता है जो तेरे इंतज़ार में रहते हैं।

5तू उनसे मिलता है जो ख़ुशी से रास्त काम करते, जो तेरी राहों पर चलते हुए तुझे याद करते हैं! अफ़सोस, तू हमसे नाराज़ हुआ, क्योंकि हम शुरू से तेरा गुनाह करके तुझसे बेवफ़ा रहे हैं। तो फिर हम किस तरह बच जाएंगे? 6हम सब नापाक हो गए हैं, हमारे तमाम नाम-निहाद रास्त काम गंदे चीथड़ों की मानिंद हैं। हम सब पत्तों की तरह मुरझा गए हैं, और हमारे गुनाह हमें हवा के झोंकों की तरह उड़ाकर ले जा रहे हैं।

7कोई नहीं जो तेरा नाम पुकारे या तुझसे लिपटने की कोशिश करे। क्योंकि तूने अपना चेहरा हमसे छुपाकर हमें हमारे क़ुसूरों के हवाले छोड़ दिया है।

8ऐ रब, ताहम तू ही हमारा बाप, हमारा कुम्हार है। हम सब मिट्टी ही हैं जिसे तेरे हाथ ने तश्कील दिया है। 9ऐ रब, हद से ज़्यादा हमसे नाराज़ न हो! हमारे गुनाह तुझे हमेशा तक याद न रहें। ज़रा इसका लिहाज़ कर कि हम सब तेरी क़ौम हैं। 10तेरे मुक़द्दस शहर वीरान हो गए हैं, यहाँ तक कि सिय्यून भी बयाबान ही है, यरूशलम वीरानो-सुनसान है। 11हमारा मुक़द्दस और शानदार घर जहाँ हमारे बापदादा तेरी सताइश करते थे नज़रे-आतिश हो गया है, जो कुछ भी हम अज़ीज़ रखते थे वह खंडर बन गया है।

12ऐ रब, क्या तू इन वाक़ियात के बावुजूद भी अपने आपको हमसे दूर रखेगा? क्या तू ख़ामोश रहकर हमें हद से ज़्यादा पस्त होने देगा?।

रब का ग़ज़ब क़ौम पर नाज़िल होगा

65 “जो मेरे बारे में दरियाफ़्त नहीं करते थे उन्हें मैंने मुझे ढूँडने का मौक़ा दिया। जो मुझे तलाश नहीं करते थे उन्हें मैंने मुझे पाने का मौक़ा दिया। मैं बोला, ‘मैं हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ!’ हालाँकि जिस क़ौम से मैं मुख़ातिब हुआ वह मेरा नाम नहीं पुकारती थी।

2दिन-भर मैंने अपने हाथ फैलाए रखे ताकि एक सरकश क़ौम का इस्तक़बाल करूँ, हालाँकि यह लोग ग़लत राह पर चलते और अपने कजरौ ख़यालात के पीछे पड़े रहते हैं। 3यह मुतवातिर और मेरे रूबरू ही मुझे नाराज़ करते हैं। क्योंकि यह बाग़ों में क़ुरबानियाँ चढ़ाकर ईंटों की क़ुरबानगाहों पर बख़ूर जलाते हैं। 4यह क़ब्रिस्तान में बैठकर ख़ुफ़िया ग़ारों में रात गुज़ारते हैं। यह सुअर का गोश्त खाते हैं, उनकी देगों में क़ाबिले-घिन शोरबा होता है। 5साथ साथ यह एक दूसरे से कहते हैं, ‘मुझसे दूर रहो, क़रीब मत आना! क्योंकि मैं तेरी निसबत कहीं ज़्यादा मुक़द्दस हूँ।’

इस क़िस्म के लोग मेरी नाक में धुएँ की मानिंद हैं, एक आग जो दिन-भर जलती रहती है। 6देखो,

यह बात मेरे सामने ही क़लमबंद हुई है कि मैं
ख़ामोश नहीं रहूँगा बल्कि पूरा पूरा अज्र दूँगा।
मैं उनकी झोली उनके अज्र से भर दूँगा।” 7रब
फ़रमाता है, “उन्हें न सिर्फ़ उनके अपने गुनाहों
की सज़ा मिलेगी बल्कि बापदादा के गुनाहों की
भी। चूँकि उन्होंने पहाड़ों पर बख़ूर की क़ुरबानियाँ
चढ़ाकर मेरी तहक़ीर की इसलिए मैं उनकी झोली
उनकी हरकतों के मुआवज़े से भर दूँगा।”

मौत न चुनो बल्कि हयात!

8रब फ़रमाता है, “जब तक अंगूर में थोड़ा-
सा रस बाक़ी हो लोग कहते हैं, ‘उसे ज़ाया मत
करना, क्योंकि अब तक उसमें कुछ न कुछ है
जो बरकत का बाइस है।’ मैं इसराईल के साथ
भी ऐसा ही करूँगा। क्योंकि अपने ख़ादिमों की
ख़ातिर मैं सबको नेस्त नहीं करूँगा। 9मैं याक़ूब
और यहूदाह को ऐसी औलाद बख़्श दूँगा जो
मेरे पहाड़ों को मीरास में पाएगी। तब पहाड़ मेरे
बरगुज़ीदों की मिलकियत होंगे, और मेरे ख़ादिम
उन पर बसेंगे। 10वादीए-शारून में भेड़-बकरियाँ
चरेंगी, वादीए-अकूर में गाय-बैल आराम करेंगे।
यह सब कुछ मेरी उस क़ौम को दस्तयाब होगा
जो मेरी तालिब रहेगी।

11लेकिन तुम जो रब को तर्क करके मेरे
मुक़द्दस पहाड़ को भूल गए हो, ख़बरदार! गो
इस वक़्त तुम ख़ुशक़िस्मती के देवता जद के
लिए मेज़ बिछाते और तक़दीर के देवता मनात
के लिए मै का बरतन भर देते हो, 12लेकिन
तुम्हारी तक़दीर और है। मैंने तुम्हारे लिए तलवार
की तक़दीर मुक़र्रर की है। तुम सबको क़साई
के सामने झुकना पड़ेगा, क्योंकि जब मैंने तुम्हें
बुलाया तो तुमने जवाब न दिया। जब मैं तुमसे
हमकलाम हुआ तो तुमने न सुना बल्कि वह कुछ
किया जो मुझे बुरा लगा। तुमने वह कुछ इख़्तियार
किया जो मुझे नापसंद है।”

13इसलिए रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है,
“मेरे ख़ादिम खाना खाएँगे, लेकिन तुम भूके
रहोगे। मेरे ख़ादिम पानी पिएँगे, लेकिन तुम
प्यासे रहोगे। मेरे ख़ादिम मसरूर होंगे, लेकिन
तुम शर्मसार होगे। 14मेरे ख़ादिम ख़ुशी के मारे
शादियाना बजाएंगे, लेकिन तुम रंजीदा होकर
रो पड़ोगे, तुम मायूस होकर वावैला करोगे।
15आख़िरकार तुम्हारा नाम ही मेरे बरगुज़ीदों के
पास बाक़ी रहेगा, और वह भी सिर्फ़ लानत के
तौर पर इस्तेमाल होगा। क़सम खाते वक़्त वह
कहेंगे, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ तुम्हें इसी तरह क़त्ल
करे।’ लेकिन मेरे ख़ादिमों का एक और नाम
रखा जाएगा। 16मुल्क में जो भी अपने लिए
बरकत माँगे या क़सम खाए वह वफ़ादार ख़ुदा
का नाम लेगा। क्योंकि गुज़री मुसीबतों की यादें
मिट जाएँगी, वह मेरी आँखों से छुप जाएँगी।

नए ज़माने का आग़ाज़

17क्योंकि मैं नया आसमान और नई ज़मीन
ख़लक़ करूँगा। तब गुज़री चीज़ें याद नहीं आएँगी,
उनका ख़याल तक नहीं आएगा।

18चुनाँचे ख़ुशो-ख़ुर्रम हो! जो कुछ मैं ख़लक़
करूँगा उस की हमेशा तक ख़ुशी मनाओ! क्योंकि
देखो, मैं यरूशलम को शादमानी का बाइस और
उसके बाशिंदों को ख़ुशी का सबब बनाऊँगा। 19मैं
ख़ुद भी यरूशलम की ख़ुशी मनाऊँगा और अपनी
क़ौम से लुत्फ़अंदोज़ हूँगा।

आइंदा उसमें रोना और वावैला सुनाई नहीं
देगा। 20वहाँ कोई भी पैदाइश के थोड़े दिनों बाद
फ़ौत नहीं होगा, कोई भी वक़्त से पहले नहीं
मरेगा। जो सौ साल का होगा उसे जवान समझा
जाएगा, और जो सौ साल की उम्र से पहले ही
फ़ौत हो जाए उसे मलऊन समझा जाएगा।

21लोग घर बनाकर उनमें बसेंगे, वह अंगूर के
बाग़ लगाकर उनका फल खाएँगे। 22आइंदा ऐसा
नहीं होगा कि घर बनाने के बाद कोई और उसमें
बसे, कि बाग़ लगाने के बाद कोई और उसका
फल खाए। क्योंकि मेरी क़ौम की उम्र दरख़्तों
जैसी दराज़ होगी, और मेरे बरगुज़ीदा अपने हाथों
के काम से लुत्फ़अंदोज़ होंगे। 23न उनकी मेहनत-
मशक़्क़त रायगाँ जाएगी, न उनके बच्चे अचानक

तशद्दुद का निशाना बनकर मरेंगे। क्योंकि वह
रब की मुबारक नसल होंगे, वह ख़ुद और उनकी
औलाद भी। 24इससे पहले कि वह आवाज़ दें मैं
जवाब दूँगा, वह अभी बोल रहे होंगे कि मैं उनकी
सुनूँगा।”
25रब फ़रमाता है, “भेड़िया और लेला मिलकर
चरेंगे, शेरबबर बैल की तरह भूसा खाएगा, और
साँप की ख़ुराक ख़ाक ही होगी। मेरे पूरे मुक़द्दस
पहाड़ पर न ग़लत काम किया जाएगा, न किसी
को नुक़सान पहुँचेगा।”

दो मालिकों की ख़िदमत करना नामुमकिन है

66 रब फ़रमाता है, “आसमान मेरा तख़्त
है और ज़मीन मेरे पाँवों की चौकी, तो
फिर वह घर कहाँ है जो तुम मेरे लिए बनाओगे?
वह जगह कहाँ है जहाँ मैं आराम करूँगा?” 2रब
फ़रमाता है, “मेरे हाथ ने यह सब कुछ बनाया,
तब ही यह सब कुछ वुजूद में आया। और मैं
उसी का ख़याल रखता हूँ जो मुसीबतज़दा और
शिकस्तादिल है, जो मेरे कलाम के सामने काँपता
है।
3लेकिन बैल को ज़बह करनेवाला क़ातिल के
बराबर और लेले को क़ुरबान करनेवाला कुत्ते
की गरदन तोड़नेवाले के बराबर है। ग़ल्ला की
नज़र पेश करनेवाला सुअर का ख़ून चढ़ानेवाले
से बेहतर नहीं, और बख़ूर जलानेवाला बुतपरस्त
की मानिंद है। इन लोगों ने अपनी ग़लत राहों
को इख़्तियार किया है, और इनकी जान अपनी
घिनौनी चीज़ों से लुत्फ़अंदोज़ होती है। 4जवाब में
मैं भी उनसे बदसुलूकी की राह इख़्तियार करूँगा,
मैं उन पर वह कुछ नाज़िल करूँगा जिससे वह
दहशत खाते हैं। क्योंकि जब मैंने उन्हें आवाज़
दी तो किसी ने जवाब न दिया, जब मैं बोला तो
उन्होंने न सुना बल्कि वही कुछ करते रहे जो मुझे
बुरा लगा, वही करने पर तुले रहे जो मुझे नापसंद
है।”

यरूशलम के साथ ख़ुशी मनाओ

5ऐ रब के कलाम के सामने लरज़नेवालो,
उसका फ़रमान सुनो! “तुम्हारे अपने भाई तुमसे
नफ़रत करते और मेरे नाम के बाइस तुम्हें रद्द
करते हैं। वह मज़ाक़ उड़ाकर कहते हैं, ‘रब अपने
जलाल का इज़हार करे ताकि हम तुम्हारी ख़ुशी
का मुशाहदा कर सकें।’ लेकिन वह शरमिंदा हो
जाएंगे।
6सुनो! शहर में शोरो-ग़ौग़ा हो रहा है। सुनो!
रब के घर से हलचल की आवाज़ सुनाई दे रही
है। सुनो! रब अपने दुश्मनों को उनकी मुनासिब
सज़ा दे रहा है।
7दर्दे-ज़ह में मुब्तला होने से पहले ही यरूशलम
ने बच्चा जन्म दिया, ज़च्चगी की ईज़ा से पहले ही
उसके बेटा पैदा हुआ। 8किसने कभी ऐसी बात
सुनी है? किसने कभी इस क़िस्म का मामला
देखा है? क्या कोई मुल्क एक ही दिन के अंदर
अंदर पैदा हो सकता है? क्या कोई क़ौम एक
ही लमहे में जन्म ले सकती है? लेकिन सिय्यून
के साथ ऐसा ही हुआ है। दर्दे-ज़ह अभी शुरू ही
होना था कि उसके बच्चे पैदा हुए।” 9रब फ़रमाता
है, “क्या मैं बच्चे को यहाँ तक लाऊँ कि वह माँ
के पेट से निकलनेवाला हो और फिर उसे जन्म
लेने न दूँ? हरगिज़ नहीं!” तेरा ख़ुदा फ़रमाता है,
“क्या मैं जो बच्चे को पैदा होने देता हूँ बच्चे को
रोक दूँ? कभी नहीं!”
10“ऐ यरूशलम को प्यार करनेवालो, सब
उसके साथ ख़ुशी मनाओ! ऐ शहर पर मातम
करनेवालो, सब उसके साथ शादियाना बजाओ!
11क्योंकि अब तुम उस की तसल्ली दिलानेवाली
छाती से जी भरकर दूध पियोगे, तुम उसके
शानदार दूध की कसरत से लुत्फ़अंदोज़ होगे।”
12क्योंकि रब फ़रमाता है, “मैं यरूशलम में
सलामती का दरिया बहने दूँगा और उस पर
अक़वाम की शानो-शौकत का सैलाब आने दूँगा।
तब वह तुम्हें अपना दूध पिलाकर उठाए फिरेगी,
तुम्हें गोद में बिठाकर प्यार करेगी। 13मैं तुम्हें

माँ की-सी तसल्ली दूँगा, और तुम यरूशलम
को देखकर तसल्ली पाओगे। 14इन बातों का
मुशाहदा करके तुम्हारा दिल ख़ुश होगा और तुम
ताज़ा हरियाली की तरह फलो-फूलोगे।"

उस वक़्त ज़ाहिर हो जाएगा कि रब का हाथ
उसके ख़ादिमों के साथ है जबकि उसके दुश्मन
उसके ग़ज़ब का निशाना बनेंगे। 15रब आग की
सूरत में आ रहा है, आँधी जैसे रथों के साथ
नाज़िल हो रहा है ताकि दहकते कोयलों से
अपना ग़ुस्सा ठंडा करे और शोला-अफ़शाँ आग
से मलामत करे। 16क्योंकि रब आग और अपनी
तलवार के ज़रीए तमाम इनसानों की अदालत
करके अपने हाथ से मुतअद्दिद लोगों को हलाक
करेगा।

17रब फ़रमाता है, "जो अपने आपको बुतों के
बाग़ों के लिए मख़सूस और पाक-साफ़ करते हैं
और दरमियान के राहनुमा की पैरवी करके सुअर,
चूहे और दीगर घिनौनी चीज़ें खाते हैं वह मिलकर
हलाक हो जाएंगे।

दीगर अक़वाम भी रब की परस्तिश करेंगी

18चुनाँचे मैं जो उनके आमाल और ख़यालात
से वाक़िफ़ हूँ तमाम अक़वाम और अलग अलग
ज़बानें बोलनेवालों को जमा करने के लिए नाज़िल
हो रहा हूँ। तब वह आकर मेरे जलाल का मुशाहदा
करेंगे। 19मैं उनके दरमियान इलाही निशान
क़ायम करके बचे हुओं में से कुछ दीगर अक़वाम
के पास भेज दूँगा। वह तरसीस, लिबिया, तीर
चलाने की माहिर क़ौम लुदिया, तूबल, यूनान और
उन दूर-दराज़ जज़ीरों के पास जाएंगे जिन्होंने न
मेरे बारे में सुना, न मेरे जलाल का मुशाहदा किया
है। इन अक़वाम में वह मेरे जलाल का एलान
करेंगे।

20फिर वह तमाम अक़वाम में रहनेवाले
तुम्हारे भाइयों को घोड़ों, रथों, गाड़ियों,
ख़च्चरों और ऊँटों पर सवार करके यरू-
शलम ले आएँगे। यहाँ मेरे मुक़द्दस पहाड़ पर
वह उन्हें ग़ल्ला की नज़र के तौर पर पेश करेंगे।
क्योंकि रब फ़रमाता है कि जिस तरह इसराईली
अपनी ग़ल्ला की नज़रें पाक बरतनों में रखकर
रब के घर में ले आते हैं उसी तरह वह तुम्हारे
इसराईली भाइयों को यहाँ पेश करेंगे। 21उनमें से
मैं बाज़ को इमाम और लावी का ओहदा दूँगा।"
यह रब का फ़रमान है।

22रब फ़रमाता है, "जितने यक़ीन के साथ मेरा
बनाया हुआ नया आसमान और नई ज़मीन मेरे
सामने क़ायम रहेगा उतने यक़ीन के साथ तुम्हारी
नसल और तुम्हारा नाम अबद तक क़ायम रहेगा।
23उस वक़्त तमाम इनसान मेरे पास आकर
मुझे सिजदा करेंगे। हर नए चाँद और हर सबत
को वह बाक़ायदगी से आते रहेंगे।" यह रब का
फ़रमान है। 24"तब वह शहर से निकलकर उनकी
लाशों पर नज़र डालेंगे जो मुझसे सरकश हुए थे।
क्योंकि न उन्हें खानेवाले कीड़े कभी मरेंगे, न उन्हें
जलानेवाली आग कभी बुझेगी। तमाम इनसान
उनसे घिन खाएँगे।"

यरमियाह

रब का नबी यरमियाह

1 ज़ैल में यरमियाह बिन ख़िलक़ियाह
के पैग़ामात क़लमबंद किए गए हैं।
(बिनयमीन के क़बायली इलाक़े के शहर अनतोत
में कुछ इमाम रहते थे, और यरमियाह का वालिद
उनमें से था)। 2रब का फ़रमान पहली बार यहूदाह
के बादशाह यूसियाह बिन अमून की हुकूमत
के 13वें साल में यरमियाह पर नाज़िल हुआ,
3और यरमियाह को यह पैग़ामात यहूयक़ीम बिन
यूसियाह के दौरे-हुकूमत से लेकर सिदक़ियाह
बिन यूसियाह की हुकूमत के 11वें साल के पाँचवें
महीने[a] तक मिलते रहे। उस वक़्त यरूशलम के
बाशिंदों को जिलावतन कर दिया गया।

यरमियाह की बुलाहट

4एक दिन रब का कलाम मुझ पर नाज़िल
हुआ, 5"मैं तुझे माँ के पेट में तश्कील देने से पहले
ही जानता था, तेरी पैदाइश से पहले ही मैंने तुझे
मख़सूसो-मुक़द्दस करके अक़वाम के लिए नबी
मुक़र्रर किया।"

6मैंने एतराज़ किया, "ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़,
अफ़सोस! मैं तेरा कलाम सुनाने का सहीह इल्म
नहीं रखता, मैं तो बच्चा ही हूँ।" 7लेकिन रब
ने मुझसे फ़रमाया, "मत कह 'मैं बच्चा ही हूँ।'
क्योंकि जिनके पास भी मैं तुझे भेजूँगा उनके
पास तू जाएगा, और जो कुछ भी मैं तुझे सुनाने
को कहूँगा उसे तू सुनाएगा। 8लोगों से मत डरना,
क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, मैं तुझे बचाए रखूँगा।"
यह रब का फ़रमान है।

9फिर रब ने अपना हाथ बढ़ाकर मेरे होंटों को छू
दिया और फ़रमाया, "देख, मैंने अपने अलफ़ाज़
को तेरे मुँह में डाल दिया है। 10आज मैं तुझे क़ौमों
और सलतनतों पर मुक़र्रर कर देता हूँ। कहीं तुझे
उन्हें जड़ से उखाड़कर गिरा देना, कहीं बरबाद
करके ढा देना और कहीं तामीर करके पौदे की
तरह लगा देना है।"

बादाम की शाख़ और उबलती देग की रोया

11रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, "ऐ
यरमियाह, तुझे क्या नज़र आ रहा है?" मैंने
जवाब दिया, "बादाम की एक शाख़, उस दरख़्त
की जो 'देखनेवाला' कहलाता है।" 12रब ने
फ़रमाया, "तूने सहीह देखा है। इसका मतलब
है कि मैं अपने कलाम की देख-भाल कर रहा हूँ,
मैं ध्यान दे रहा हूँ कि वह पूरा हो जाए।"

13फिर रब का कलाम दुबारा मुझ पर नाज़िल
हुआ, "तुझे क्या नज़र आ रहा है?" मैंने जवाब
दिया, "शिमाल में देग दिखाई दे रही है। जो कुछ
उसमें है वह उबल रहा है, और उसका मुँह हमारी
तरफ़ झुका हुआ है।" 14तब रब ने मुझसे कहा,
"इसी तरह शिमाल से मुल्क के तमाम बाशिंदों पर
आफ़त टूट पड़ेगी।" 15क्योंकि रब फ़रमाता है,

[a]जुलाई ता अगस्त।

“मैं शिमाली ममालिक के तमाम घरानों को बुला
लूँगा, और हर एक आकर अपना तख़्त यरूशलम
के दरवाज़ों के सामने ही खड़ा करेगा। हाँ, वह उस
की पूरी फ़सील को घेरकर उस पर बल्कि यहूदाह
के तमाम शहरों पर छापा मारेंगे। 16यों मैं अपनी
क़ौम पर फ़ैसले सादिर करके उनके ग़लत कामों
की सज़ा दूँगा। क्योंकि उन्होंने मुझे तर्क करके
अजनबी माबूदों के लिए बख़ूर जलाया और अपने
हाथों से बने हुए बुतों को सिजदा किया है।
17चुनाँचे कमरबस्ता हो जा! उठकर उन्हें सब
कुछ सुना दे जो मैं फ़रमाऊँगा। उनसे दहशत मत
खाना, वरना मैं तुझे उनके सामने ही दहशतज़दा
कर दूँगा। 18देख, आज मैंने तुझे क़िलाबंद शहर,
लोहे के सतून और पीतल की चारदीवारी जैसा
मज़बूत बना दिया है ताकि तू पूरे मुल्क का सामना
कर सके, ख़ाह यहूदाह के बादशाह, अफ़सर,
इमाम या अवाम तुझ पर हमला क्यों न करें।
19तुझसे लड़ने के बावुजूद वह तुझ पर ग़ालिब
नहीं आएँगे, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, मैं ही तुझे
बचाए रखूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

अल्लाह की जवान इसराईल के लिए फ़िकर

2 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,
2“जा, ज़ोर से यरूशलम के कान में
पुकार कि रब फ़रमाता है, ‘मुझे तेरी जवानी की
वफ़ादारी ख़ूब याद है। जब तेरी शादी क़रीब आई
तो तू मुझे कितना प्यार करती थी, यहाँ तक कि तू
रेगिस्तान में भी जहाँ खेतीबाड़ी नामुमकिन थी मेरे
पीछे पीछे चलती रही। 3उस वक़्त इसराईल रब
के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस था, वह उस की फ़सल
का पहला फल था। जिसने भी उसमें से कुछ
खाया वह मुजरिम ठहरा, और उस पर आफ़त
नाज़िल हुई। यह रब का फ़रमान है’।”

इसराईल के बापदादा के गुनाह

4ऐ याक़ूब की औलाद, रब का कलाम सुनो!
ऐ इसराईल के तमाम घरानो, ध्यान दो! 5रब
फ़रमाता है, “तुम्हारे बापदादा ने मुझमें कौन-सी
नाइनसाफ़ी पाई कि मुझसे इतने दूर हो गए? हेच
बुतों के पीछे होकर वह ख़ुद हेच हो गए। 6उन्होंने
पूछा तक नहीं कि रब कहाँ है जो हमें मिसर
से निकाल लाया और रेगिस्तान में सहीह राह
दिखाई, गो वह इलाक़ा वीरानो-सुनसान था। हर
तरफ़ घाटियों, पानी की सख़्त कमी और तारीकी
का सामना करना पड़ा। न कोई उसमें से गुज़रता,
न कोई वहाँ रहता है। 7मैं तो तुम्हें बाग़ों से भरे
मुल्क में लाया ताकि तुम उसके फल और अच्छी
पैदावार से लुत्फ़अंदोज़ हो सको। लेकिन तुमने
क्या किया? मेरे मुल्क में दाख़िल होते ही तुमने
उसे नापाक कर दिया, और मैं अपनी मौरूसी
मिलकियत से घिन खाने लगा। 8न इमामों ने पूछा
कि रब कहाँ है, न शरीअत को अमल में लानेवाले
मुझे जानते थे। क़ौम के गल्लाबान मुझसे बेवफ़ा
हुए, और नबी बेफ़ायदा बुतों के पीछे लगकर बाल
देवता के पैग़ामात सुनाने लगे।”

रब का अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ मुक़दमा

9रब फ़रमाता है, “इसी वजह से मैं आइंदा
भी अदालत में तुम्हारे साथ लड़ूँगा। हाँ, न सिर्फ़
तुम्हारे साथ बल्कि तुम्हारी आनेवाली नसलों
के साथ भी। 10जाओ, समुंदर को पार करके
जज़ीराए-क़ुबरुस की तफ़तीश करो! अपने
क़ासिदों को मुल्के-क़ीदार में भेजकर ग़ौर से
दरियाफ़्त करो कि क्या वहाँ कभी यहाँ का-सा
काम हुआ है? 11क्या किसी क़ौम ने कभी अपने
देवताओं को तबदील किया, गो वह हक़ीक़त
में ख़ुदा नहीं हैं? हरगिज़ नहीं! लेकिन मेरी
क़ौम अपनी शानो-शौकत के ख़ुदा को छोड़कर
बेफ़ायदा बुतों की पूजा करने लगी है।” 12रब
फ़रमाता है, “ऐ आसमान, यह देखकर हैबतज़दा
हो जा, तेरे रोंगटे खड़े हो जाएँ, हक्का-बक्का
रह जा! 13क्योंकि मेरी क़ौम से दो संगीन जुर्म
सरज़द हुए हैं। एक, उन्होंने मुझे तर्क किया, गो
मैं ज़िंदगी के पानी का सरचश्मा हूँ। दूसरे, उन्होंने
अपने ज़ाती हौज़ बनाए हैं जो दराड़ों की वजह से
भर ही नहीं सकते।

इसराईल की बेवफ़ाई के नतायज

14क्या इसराईल इब्तिदा से ही ग़ुलाम है? क्या
उसके वालिदैन ग़ुलाम थे कि वह अब तक ग़ुलाम
है? हरगिज़ नहीं! तो फिर वह क्यों दूसरों का
लूटा हुआ माल बन गया है? 15जवान शेरबबर
दहाड़ते हुए उस पर टूट पड़े हैं, गरजते गरजते
उन्होंने मुल्के-इसराईल को बरबाद कर दिया है।
उसके शहर नज़रे-आतिश होकर वीरानो-सुनसान
हो गए हैं। 16साथ साथ मेंफ़िस और तहफ़नहीस
के लोग भी तेरे सर को मुँडवा रहे हैं।

17ऐ इसराईली क़ौम, क्या यह तेरे ग़लत काम
का नतीजा नहीं? क्योंकि तूने रब अपने ख़ुदा
को उस वक़्त तर्क किया जब वह तेरी राहनुमाई
कर रहा था। 18अब मुझे बता कि मिसर को
जाकर दरियाए-नील का पानी पीने का क्या
फ़ायदा? मुल्के-असूर में जाकर दरियाए-फ़ुरात
का पानी पीने से क्या हासिल? 19तेरा ग़लत
काम तुझे सज़ा दे रहा है, तेरी बेवफ़ा हरकतें
ही तेरी सरज़निश कर रही हैं। चुनाँचे जान ले
और ध्यान दे कि रब अपने ख़ुदा को छोड़कर
उसका ख़ौफ़ न मानने का फल कितना बुरा और
कड़वा है।" यह क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज
का फ़रमान है।

20"क्योंकि शुरू से ही तू अपने जुए और
रस्सों को तोड़कर कहती रही, 'मैं तेरी ख़िदमत
नहीं करूँगी!' तू हर बुलंदी पर और हर घने
दरख़्त के साये में लेटकर इसमतफ़रोशी करती
रही। 21पहले तू अंगूर की मख़सूस और क़ाबिले-
एतमाद नसल की पनीरी थी जिसे मैंने ख़ुद ज़मीन
में लगाया। तो यह क्या हुआ कि तू बिगड़कर
जंगली[a] बेल बन गई? 22अब तेरे क़ुसूर का
दाग़ उतर नहीं सकता, ख़ाह तू कितना खारी
सोडा और साबुन क्यों न इस्तेमाल करे।" यह
रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

23"तू किस तरह यह कहने की जुर्रत कर
सकती है कि मैंने अपने आपको आलूदा नहीं
किया, मैं बाल देवताओं के पीछे नहीं गई। वादी में
अपनी हरकतों पर तो ग़ौर कर! जान ले कि तुझसे
क्या कुछ सरज़द हुआ है। तू बेमक़सद इधर-उधर
भागनेवाली ऊँटनी है। 24बल्कि तू रेगिस्तान में
रहने की आदी गधी ही है जो शहवत के मारे
हाँपती है। मस्ती के इस आलम में कौन उस पर
क़ाबू पा सकता है? जो भी उससे मिलना चाहे
उसे ज़्यादा जिद्दो-जहद की ज़रूरत नहीं, क्योंकि
मस्ती के मौसम में वह हर एक के लिए हाज़िर है।
25ऐ इसराईल, इतना न दौड़ कि तेरे जूते घिसकर
फट जाएँ और तेरा गला ख़ुश्क हो जाए। लेकिन
अफ़सोस, तू बज़िद है, 'नहीं, मुझे छोड़ दे! मैं
अजनबी माबूदों को प्यार करती हूँ, और लाज़िम
है कि मैं उनके पीछे भागती जाऊँ।'

26सुनो! इसराईली क़ौम के तमाम अफ़राद
उनके बादशाहों, अफ़सरों, इमामों और नबियों
समेत शरमिंदा हो जाएंगे। वह पकड़े हुए चोर की-
सी शर्म महसूस करेंगे। 27यह लोग लकड़ी के बुत
से कहते हैं, 'तू मेरा बाप है' और पत्थर के देवता
से, 'तूने मुझे जन्म दिया।' लेकिन गो यह मेरी
तरफ़ रुजू नहीं करते बल्कि अपना मुँह मुझसे
फेरकर चलते हैं तो भी ज्योंही कोई आफ़त उन
पर आ जाए तो यह मुझसे इल्तिजा करने लगते हैं
कि आकर हमें बचा! 28अब यह बुत कहाँ हैं जो
तूने अपने लिए बनाए? वही खड़े होकर दिखाएँ
कि तुझे मुसीबत से बचा सकते हैं। ऐ यहूदाह,
आख़िर जितने तेरे शहर हैं उतने तेरे देवता भी हैं।"
29रब फ़रमाता है, "तुम मुझ पर क्यों इलज़ाम
लगाते हो? तुम तो सब मुझसे बेवफ़ा हो गए
हो। 30मैंने तुम्हारे बच्चों को सज़ा दी, लेकिन
बेफ़ायदा। वह मेरी तरबियत क़बूल नहीं करते।
बल्कि तुमने फाड़नेवाले शेरबबर की तरह अपने
नबियों पर टूटकर उन्हें तलवार से क़त्ल किया।

31ऐ मौजूदा नसल, रब के कलाम पर ध्यान
दो! क्या मैं इसराईल के लिए रेगिस्तान या
तारीकतरीन इलाक़े की मानिंद था? मेरी क़ौम

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : अजनबी।

क्यों कहती है, 'अब हम आज़ादी से इधर-उधर
फिर सकते हैं, आइंदा हम तेरे हुज़ूर नहीं आएँगे?'
32क्या कुँवारी कभी अपने ज़ेवरात को भूल
सकती है, या दुलहन अपना उरूसी लिबास?
हरगिज़ नहीं! लेकिन मेरी क़ौम बेशुमार दिनों से
मुझे भूल गई है।

33तू इश्क़ ढूँडने में कितनी माहिर है! बदकार
औरतें भी तुझसे बहुत कुछ सीख लेती हैं। 34तेरे
लिबास का दामन बेगुनाह ग़रीबों के ख़ून से
आलूदा है, गो तूने उन्हें नक़बज़नी जैसा ग़लत
काम करते वक़्त न पकड़ा। इस सब कुछ के
बावुजूद भी 35तू बज़िद है कि मैं बेक़ुसूर हूँ,
अल्लाह का मुझ पर ग़ुस्सा ठंडा हो गया है।
लेकिन मैं तेरी अदालत करूँगा, इसलिए कि तू
कहती है, 'मुझसे गुनाह सरज़द नहीं हुआ।'

36तू कभी इधर, कभी इधर जाकर इतनी
आसानी से अपना रुख़ क्यों बदलती है? यक़ीन
कर कि जिस तरह तू अपने इत्तहादी असूर से
मायूस होकर शरमिंदा हुई है उसी तरह तू नए
इत्तहादी मिसर से भी नादिम हो जाएगी। 37तू
उस जगह से भी अपने हाथों को सर पर रखकर
निकलेगी। क्योंकि रब ने उन्हें रद्द किया है जिन
पर तू भरोसा रखती है। उनसे तुझे मदद हासिल
नहीं होगी।"

इसराईल की रब से बेवफ़ाई

3 रब फ़रमाता है, "अगर कोई अपनी बीवी
को तलाक़ दे और अलग होने के बाद बीवी
की किसी और से शादी हो जाए तो क्या पहले
शौहर को उससे दुबारा शादी करने की इजाज़त
है? हरगिज़ नहीं, बल्कि ऐसी हरकत से पूरे मुल्क
की बेहुरमती हो जाती है। देख, यही तेरी हालत
है। तूने मुतअद्दिद आशिक़ों से ज़िना किया है, और
अब तू मेरे पास वापस आना चाहती है। यह कैसी
बात है?

2अपनी नज़र बंजर पहाड़ियों की तरफ़ उठाकर
देख! क्या कोई जगह है जहाँ ज़िना करने से
तेरी बेहुरमती नहीं हुई? रेगिस्तान में तनहा
बैठनेवाले बद्दू की तरह तू रास्तों के किनारे
पर अपने आशिक़ों की ताक में बैठी रही है।
अपनी इसमतफ़रोशी और बदकारी से तूने मुल्क
की बेहुरमती की है। 3इसी वजह से बहार में
बरसात का मौसम रोका गया और बारिश नहीं
पड़ी। लेकिन अफ़सोस, तू कसबी की-सी पेशानी
रखती है, तू शर्म खाने के लिए तैयार ही नहीं।
4इस वक़्त भी तू चीख़ती-चिल्लाती आवाज़ देती
है, 'ऐ मेरे बाप, जो मेरी जवानी से मेरा दोस्त है,
5क्या तू हमेशा तक मेरे साथ नाराज़ रहेगा? क्या
तेरा क़हर कभी ठंडा नहीं होगा?' यही तेरे अपने
अलफ़ाज़ हैं, लेकिन साथ साथ तू ग़लत काम
करने की हर मुमकिन कोशिश करती रहती है।"

6यूसियाह बादशाह की हुकूमत के दौरान रब
मुझसे हमकलाम हुआ, "क्या तूने वह कुछ देखा
जो बेवफ़ा इसराईल ने किया है? उसने हर बुलंदी
पर और हर घने दरख़्त के साये में ज़िना किया
है। 7मैंने सोचा कि यह सब कुछ करने के बाद
वह मेरे पास वापस आएगी। लेकिन अफ़सोस,
ऐसा न हुआ। उस की ग़द्दार बहन यहूदाह भी इन
तमाम वाक़ियात की गवाह थी। 8बेवफ़ा इसराईल
की ज़िनाकारी नाक़ाबिले-बरदाश्त थी, इसलिए
मैंने उसे घर से निकालकर तलाक़नामा दे दिया।
फिर भी मैंने देखा कि उस की ग़द्दार बहन यहूदाह
ने ख़ौफ़ न खाया बल्कि ख़ुद निकलकर ज़िना
करने लगी। 9इसराईल को इस जुर्म की संजीदगी
महसूस न हुई बल्कि उसने पत्थर और लकड़ी के
बुतों के साथ ज़िना करके मुल्क की बेहुरमती की।
10इसके बावुजूद उस की बेवफ़ा बहन यहूदाह पूरे
दिल से नहीं बल्कि सिर्फ़ ज़ाहिरी तौर पर मेरे पास
वापस आई।" यह रब का फ़रमान है।

मेरे पास लौट आ

11रब मुझसे हमकलाम हुआ, "बेवफ़ा
इसराईल ग़द्दार यहूदाह की निसबत ज़्यादा
रास्तबाज़ है। 12जा, शिमाल की तरफ़ देखकर
बुलंद आवाज़ से एलान कर, 'ऐ बेवफ़ा इसराईल,
रब फ़रमाता है कि वापस आ! आइंदा मैं ग़ुस्से से

तेरी तरफ़ नहीं देखूँगा, क्योंकि मैं मेहरबान हूँ। मैं
हमेशा तक नाराज़ नहीं रहूँगा। यह रब का फ़रमान
है।
13लेकिन लाज़िम है कि तू अपना क़ुसूर
तसलीम करे। इक़रार कर कि मैं रब अपने ख़ुदा
से सरकश हुई। मैं इधर-उधर घूमकर हर घने
दरख़्त के साये में अजनबी माबूदों की पूजा करती
रही, मैंने रब की न सुनी’।” यह रब का फ़रमान
है। 14रब फ़रमाता है, “ऐ बेवफ़ा बच्चो, वापस
आओ, क्योंकि मैं तुम्हारा मालिक हूँ। मैं तुम्हें हर
जगह से निकालकर सिय्यून में वापस लाऊँगा।
किसी शहर से मैं एक को निकाल लाऊँगा, और
किसी ख़ानदान से दो अफ़राद को।
15तब मैं तुम्हें ऐसे गल्लाबानों से नवाज़ूँगा जो
मेरी सोच रखेंगे और जो समझ और अक़्ल के
साथ तुम्हारी गल्लाबानी करेंगे। 16फिर तुम्हारी
तादाद बहुत बढ़ेगी और तुम चारों तरफ़ फैल
जाओगे।” रब फ़रमाता है, “उन दिनों में रब के
अहद के संदूक़ का ज़िक्र नहीं किया जाएगा।
न उसका ख़याल आएगा, न उसे याद किया
जाएगा। न उस की कमी महसूस होगी, न
उसे दुबारा बनाया जाएगा। 17क्योंकि उस वक़्त
यरूशलम ‘रब का तख़्त’ कहलाएगा, और उसमें
तमाम अक़वाम रब के नाम की ताज़ीम में जमा
हो जाएँगी। तब वह अपने शरीर और ज़िद्दी दिलों
के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ारेंगी। 18तब यहूदाह
का घराना इसराईल के घराने के पास आएगा,
और वह मिलकर शिमाली मुल्क से उस मुल्क में
वापस आएँगे जो मैंने तुम्हारे बापदादा को मीरास
में दिया था।
19मैंने सोचा, काश मैं तेरे साथ बेटों का-सा
सुलूक करके तुझे एक ख़ुशगवार मुल्क दे सकूँ,
एक ऐसी मीरास जो दीगर अक़वाम की निसबत
कहीं शानदार हो। मैं समझा कि तुम मुझे अपना
बाप ठहराकर अपना मुँह मुझसे नहीं फेरोगे।
20लेकिन ऐ इसराईली क़ौम, तू मुझसे बेवफ़ा
रही है, बिलकुल उस औरत की तरह जो अपने
शौहर से बेवफ़ा हो गई है।” यह रब का फ़रमान
है।
21“सुनो! बंजर बुलंदियों पर चीख़ें और
इल्तिजाएँ सुनाई दे रही हैं। इसराईली रो रहे हैं,
इसलिए कि वह ग़लत राह इख़्तियार करके रब
अपने ख़ुदा को भूल गए हैं। 22ऐ बेवफ़ा बच्चो,
वापस आओ ताकि मैं तुम्हारे बेवफ़ा दिलों को
शफ़ा दे सकूँ।”
“ऐ रब, हम हाज़िर हैं। हम तेरे पास आते
हैं, क्योंकि तू ही रब हमारा ख़ुदा है। 23वाक़ई,
पहाड़ियों और पहाड़ों पर बुतपरस्ती का तमाशा
फ़रेब ही है। यक़ीनन रब हमारा ख़ुदा इसराईल
की नजात है। 24हमारी जवानी से लेकर आज
तक शर्मनाक देवता हमारे बापदादा की मेहनत का
फल खाते आए हैं, ख़ाह उनकी भेड़-बकरियाँ और
गाय-बैल थे, ख़ाह उनके बेटे-बेटियाँ। 25आओ,
हम अपनी शर्म के बिस्तर पर लेट जाएँ और
अपनी बेइज़्ज़ती की रज़ाई में छुप जाएँ। क्योंकि
हमने अपने बापदादा समेत रब अपने ख़ुदा का
गुनाह किया है। अपनी जवानी से लेकर आज तक
हमने रब अपने ख़ुदा की नहीं सुनी।”

तौबा करो

4 रब फ़रमाता है, “ऐ इसराईल, अगर तू
वापस आना चाहे तो मेरे पास वापस आ!
अगर तू अपने घिनौने बुतों को मेरे हुज़ूर से दूर
करके आवारा न फिरे 2और रब की हयात की
क़सम खाते वक़्त दियानतदारी, इनसाफ़ और
सदाक़त से अपना वादा पूरा करे तो ग़ैरअक़वाम
मुझसे बरकत पाकर मुझ पर फ़ख़र करेंगी।”
3रब यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदों से
फ़रमाता है, “अपने दिलों की ग़ैरमुस्तामल ज़मीन
पर हल चलाकर उसे क़ाबिले-काश्त बनाओ!
अपने बीज काँटेदार झाड़ियों में बोकर ज़ाया मत
करना। 4ऐ यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदो,
अपने आपको रब के लिए मख़सूस करके अपना
ख़तना कराओ यानी अपने दिलों का ख़तना
कराओ, वरना मेरा क़हर तुम्हारे ग़लत कामों के

बाइस कभी न बुझनेवाली आग की तरह तुझ पर नाज़िल होगा।

शिमाल से आफ़त का एलान

5यहूदाह में एलान करो और यरूशलम को इत्तला दो, 'मुल्क-भर में नरसिंगा बजाओ!' गला फाड़कर चिल्लाओ, 'इकट्ठे हो जाओ! आओ, हम क़िलाबंद शहरों में पनाह लें!' 6झंडा गाड़ दो ताकि लोग उसे देखकर सिय्यून में पनाह लें। महफ़ूज़ मक़ाम में भाग जाओ और कहीं न रुको, क्योंकि मैं शिमाल की तरफ़ से आफ़त ला रहा हूँ, सब कुछ धड़ाम से गिर जाएगा।

7शेरबबर जंगल में अपनी छुपने की जगह से निकल आया, क़ौमों को हलाक करनेवाला अपने मक़ाम से रवाना हो चुका है ताकि तेरे मुल्क को तबाह करे। तेरे शहर बरबाद हो जाएंगे, और उनमें कोई नहीं रहेगा।

8चुनाँचे टाट का लिबास पहनकर आहो-ज़ारी करो, क्योंकि रब का सख़्त ग़ज़ब अब तक हम पर नाज़िल हो रहा है।"

9रब फ़रमाता है, "उस दिन बादशाह और उसके अफ़सर हिम्मत हारेंगे, इमामों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे और नबी ख़ौफ़ से सुन होकर रह जाएंगे।"

10तब मैं बोल उठा, "हाय, हाय! ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, तूने इस क़ौम और यरूशलम को कितना सख़्त फ़रेब दिया जब तूने फ़रमाया, तुम्हें अमनो-अमान हासिल होगा हालाँकि हमारे गलों पर तलवार फिरने को है।" 11उस वक़्त इस क़ौम और यरूशलम को इत्तला दी जाएगी, "रेगिस्तान के बंजर टीलों से सब कुछ झुलसानेवाली लू मेरी क़ौम के पास आ रही है। और यह गंदुम को फटककर भूसे से अलग करनेवाली मुफ़ीद हवा नहीं होगी 12बल्कि आँधी जैसी तेज़ हवा मेरी तरफ़ से आएगी। क्योंकि अब मैं उन पर अपने फ़ैसले सादिर करूँगा।"

13देखो, दुश्मन तूफ़ानी बादलों की तरह आगे बढ़ रहा है! उसके रथ आँधी जैसे, और उसके घोड़े उक़ाब से तेज़ हैं। हाय, हम पर अफ़सोस! हमारा अंजाम आ गया है।

14ऐ यरूशलम, अपने दिल को धोकर बुराई से साफ़ कर ताकि तुझे छुटकारा मिले। तू अंदर ही अंदर कब तक अपने शरीर मनसूबे बाँधती रहेगी?

15सुनो! दान से बुरी ख़बरें आ रही हैं, इफ़राईम पहाड़ से आफ़त का पैग़ाम पहुँच रहा है। 16ग़ैरअक़वाम को इत्तला दो और यरूशलम के बारे में एलान करो, "मुहासरा करनेवाले फ़ौजी दूर-दराज़ मुल्क से आ रहे हैं! वह जंग के नारे लगा लगाकर यहूदाह के शहरों पर टूट पड़ेंगे। 17तब वह खेतों की चौकीदारी करनेवालों की तरह यरूशलम को घेर लेंगे। क्योंकि यह शहर मुझसे सरकश हो गया है।" यह रब का फ़रमान है। 18"यह तेरे अपने ही चाल-चलन और हरकतों का नतीजा है। हाय, तेरी बेदीनी का अंजाम कितना तलख़ और दिलख़राश है!"

यरमियाह का अपनी क़ौम के लिए दुख

19हाय, मेरी तड़पती जान, मेरी तड़पती जान! मैं दर्द के मारे पेचो-ताब खा रहा हूँ। हाय, मेरा दिल! वह बेकाबू होकर धड़क रहा है। मैं ख़ामोश नहीं रह सकता, क्योंकि नरसिंगे की आवाज़ और जंग के नारे मेरे कान तक पहुँच गए हैं। 20यके बाद दीगरे शिकस्तों की ख़बरें मिल रही हैं, चारों तरफ़ मुल्क की तबाही हुई है। अचानक ही मेरे तंबू बरबाद हैं, एक ही लमहे में मेरे ख़ैमे ख़त्म हो गए हैं। 21मुझे कब तक जंग का झंडा देखना पड़ेगा, कब तक नरसिंगे की आवाज़ सुननी पड़ेगी?

22"मेरी क़ौम अहमक़ है और मुझे नहीं जानती। वह बेवुक़ूफ़ और नासमझ बच्चे हैं। गो वह ग़लत काम करने में बहुत तेज़ हैं, लेकिन भलाई करना उनकी समझ से बाहर है।"

23मैंने मुल्क पर नज़र डाली तो वीरानो-सुनसान था। जब आसमान की तरफ़ देखा तो अंधेरा था। 24मेरी निगाह पहाड़ों पर पड़ी तो थरथरा रहे थे, तमाम पहाड़ियाँ हिचकोले खा रही थीं। 25कहीं कोई शख़्स नज़र न आया, तमाम

परिंदे भी उड़कर जा चुके थे। 26मैंने मुल्क पर
नज़र दौड़ाई तो क्या देखता हूँ कि ज़रख़ेज़ ज़मीन
रेगिस्तान बन गई है। रब और उसके शदीद ग़ज़ब
के सामने उसके तमाम शहर नेस्तो-नाबूद हो गए
हैं। 27क्योंकि रब फ़रमाता है, "पूरा मुल्क बरबाद
हो जाएगा, अगरचे मैं उसे पूरे तौर पर ख़त्म नहीं
करूँगा। 28ज़मीन मातम करेगी और आसमान
तारीक हो जाएगा, क्योंकि मैं यह फ़रमा चुका
हूँ, और मेरा इरादा अटल है। न मैं यह करने से
पछताऊँगा, न इससे बाज़ आऊँगा।"

29घुड़सवारों और तीर चलानेवालों का शोर-
शराबा सुनकर लोग तमाम शहरों से निकलकर
जंगलों और चट्टानों में खिसक जाएंगे। तमाम
शहर वीरानो-सुनसान होंगे, किसी में भी लोग नहीं
बसेंगे।

30तो फिर तू क्या कर रही है, तू जिसे ख़ाक
में मिला दिया गया है? अब क़िरमिज़ी लिबास
और सोने के ज़ेवरात पहनने की क्या ज़रूरत है?
इस वक़्त अपनी आँखों को सुरमे से सजाने और
अपने आपको आरास्ता करने का कोई फ़ायदा
नहीं। तेरे आशिक़ तो तुझे हक़ीर जानते बल्कि
तुझे जान से मारने के दरपै हैं। 31क्योंकि मुझे
दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की आवाज़, पहली बार
जन्म देनेवाली की आहो-ज़ारी सुनाई दे रही है।
सिय्यून बेटी कराह रही है, वह अपने हाथ फैलाए
हुए कह रही है, "हाय, मुझ पर अफ़सोस! मेरी
जान क़ातिलों के हाथ में आकर निकल रही है।"

अब मुआफ़ी नामुमकिन है

5 "यरूशलम की गलियों में घूमो फिरो! हर
जगह का मुलाहज़ा करके पता करो कि
क्या हो रहा है। उसके चौकों की तफ़तीश भी
करो। अगर तुम्हें एक भी शख़्स मिल जाए जो
इनसाफ़ करे और दियानतदारी का तालिब रहे तो
मैं शहर को मुआफ़ कर दूँगा। 2वह रब की हयात
की क़सम खाते वक़्त भी झूट बोलते हैं।"

3ऐ रब, तेरी आँखें दियानतदारी देखना चाहती
हैं। तूने उन्हें मारा, लेकिन उन्हें दुख न हुआ। तूने
उन्हें कुचल डाला, लेकिन वह तरबियत पाने के
लिए तैयार नहीं। उन्होंने अपने चेहरे को पत्थर से
कहीं ज़्यादा सख़्त बनाकर तौबा करने से इनकार
किया है। 4मैंने सोचा, "सिर्फ़ ग़रीब लोग ऐसे हैं।
यह इसलिए अहमक़ाना हरकतें कर रहे हैं कि रब
की राह और अपने ख़ुदा की शरीअत से वाक़िफ़
नहीं हैं। 5आओ, मैं बुज़ुर्गों के पास जाकर उनसे
बात करता हूँ। वह तो ज़रूर रब की राह और
अल्लाह की शरीअत को जानते होंगे।" लेकिन
अफ़सोस, सबके सबने अपने जुए और रस्से तोड़
डाले हैं।

6इसलिए शेरबबर जंगल से निकलकर उन पर
हमला करेगा, भेड़िया बयाबान से आकर उन्हें
बरबाद करेगा, चीता उनके शहरों के क़रीब ताक
में बैठकर हर निकलनेवाले को फाड़ डालेगा।
क्योंकि वह बार बार सरकश हुए हैं, मुतअद्दिद
दफ़ा उन्होंने अपनी बेवफ़ाई का इज़हार किया है।

7"मैं तुझे कैसे मुआफ़ करूँ? तेरी औलाद ने
मुझे तर्क करके उनकी क़सम खाई है जो ख़ुदा
नहीं हैं। गो मैंने उनकी हर ज़रूरत पूरी की तो
भी उन्होंने ज़िना किया, चकले के सामने उनकी
लंबी क़तारें लगी रहीं। 8यह लोग मोटे-ताज़े घोड़े
हैं जो मस्ती में आ गए हैं। हर एक हिनहिनाता
हुआ अपने पड़ोसी की बीवी को आँख मारता
है।" 9रब फ़रमाता है, "क्या मैं जवाब में उन्हें
सज़ा न दूँ? क्या मैं ऐसी क़ौम से इंतक़ाम न लूँ?
10जाओ, उसके अंगूर के बाग़ों पर टूट पड़ो और
सब कुछ बरबाद कर दो। लेकिन उन्हें मुकम्मल
तौर पर ख़त्म मत करना। बेलों की शाख़ों को दूर
करो, क्योंकि वह रब के लोग नहीं हैं।"

रब अपनी क़ौम से जवाब तलब करेगा

11क्योंकि रब फ़रमाता है, "इसराईल और
यहूदाह के बाशिंदे हर तरह से मुझसे बेवफ़ा रहे हैं।
12उन्होंने रब का इनकार करके कहा है, वह कुछ
नहीं करेगा। हम पर मुसीबत नहीं आएगी। हमें न
तलवार, न काल से नुक़सान पहुँचेगा। 13नबियों
की क्या हैसियत है? वह तो बकवास ही करते

हैं, और रब का कलाम उनमें नहीं है। बल्कि उन्हीं
के साथ ऐसा किया जाएगा।”

14इसलिए रब लशकरों का ख़ुदा फ़रमाता है,
“ऐ यरमियाह, चूँकि लोग ऐसी बातें कर रहे हैं
इसलिए तेरे मुँह में मेरे अलफ़ाज़ आग बनकर
इस क़ौम को लकड़ी की तरह भस्म कर देंगे।”
15रब फ़रमाता है, “ऐ इसराईल, मैं दूर की क़ौम
को तेरे ख़िलाफ़ भेजूँगा, ऐसी पुख़्ता और क़दीम
क़ौम जिसकी ज़बान तू नहीं जानता और जिसकी
बातें तू नहीं समझता। 16उनके तरकश खुली क़ब्रें
हैं, सबके सब ज़बरदस्त सूरमे हैं। 17वह सब कुछ
हड़प कर लेंगे : तेरी फ़सलें, तेरी ख़ुराक, तेरे
बेटे-बेटियाँ, तेरी भेड़-बकरियाँ, तेरे गाय-बैल, तेरी
अंगूर की बेलें और तेरे अंजीर के दरख़्त। जिन
क़िलाबंद शहरों पर तुम भरोसा रखते हो उन्हें वह
तलवार से ख़ाक में मिला देंगे।

18फिर भी मैं उस वक़्त तुम्हें मुकम्मल तौर
पर बरबाद नहीं करूँगा।” यह रब का फ़रमान
है। 19“ऐ यरमियाह, अगर लोग तुझसे पूछें, रब
हमारे ख़ुदा ने यह सब कुछ हमारे साथ क्यों
किया? तो उन्हें बता, तुम मुझे तर्क करके अपने
वतन में अजनबी माबूदों की ख़िदमत करते रहे
हो, इसलिए तुम वतन से दूर मुल्क में अजनबियों
की ख़िदमत करोगे।

20इसराईल में एलान करो और यहूदाह को
इत्तला दो 21कि ऐ बेवुक़ूफ़ और नासमझ क़ौम,
सुनो! लेकिन अफ़सोस, उनकी आँखें तो हैं
लेकिन वह देख नहीं सकते, उनके कान तो हैं
लेकिन वह सुन नहीं सकते।” 22रब फ़रमाता है,
“क्या तुम्हें मेरा ख़ौफ़ नहीं मानना चाहिए, मेरे
हुज़ूर नहीं काँपना चाहिए? सोच लो! मैं ही ने रेत
से समुंदर की सरहद मुक़र्रर की, एक ऐसी बाड़
बनाई जिस पर से वह कभी नहीं गुज़र सकता।
गो वह ज़ोर से लहरें मारे तो भी नाकाम रहता है,
गो उस की मौजें ख़ूब गरजें तो भी मुक़र्ररा हद से
आगे नहीं बढ़ सकतीं।

23लेकिन अफ़सोस, इस क़ौम का दिल ज़िद्दी
और सरकश है। यह लोग सहीह राह से हटकर
अपनी ही राहों पर चल पड़े हैं। 24वह दिल में कभी
नहीं कहते, आओ, हम रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़
मानें। क्योंकि वही हमें वक़्त पर ख़िज़ाँ और बहार
के मौसम में बारिश मुहैया करता है, वही इसकी
ज़मानत देता है कि हमारी फ़सलें बाक़ायदगी से
पक जाएँ। 25अब तुम्हारे ग़लत कामों ने तुम्हें इन
नेमतों से महरूम कर दिया, तुम्हारे गुनाहों ने तुम्हें
इन अच्छी चीज़ों से रोक रखा है।

26क्योंकि मेरी क़ौम में ऐसे बेदीन अफ़राद पाए
जाते हैं जो दूसरों की ताक लगाए रहते हैं। जिस
तरह शिकारी परिंदे पकड़ने के लिए झुककर छुप
जाता है, उसी तरह वह दूसरों की घात में बैठ
जाते हैं। वह फंदे लगाकर लोगों को उनमें फँसाते
हैं। 27और जिस तरह शिकारी अपने पिंजरे को
चिड़ियों से भर देता है उसी तरह इन शरीर लोगों
के घर फ़रेब से भरे रहते हैं। अपनी चालों से
वह अमीर, ताक़तवर 28और मोटे-ताज़े हो गए
हैं। उनके ग़लत कामों की हद नहीं रहती। वह
इनसाफ़ करते ही नहीं। न वह यतीमों की मदद
करते हैं ताकि उन्हें वह कुछ मिल जाए जो उनका
हक़ है, न ग़रीबों के हुक़ूक़ क़ायम रखते हैं।”
29रब फ़रमाता है, “अब मुझे बताओ, क्या मुझे
उन्हें इसकी सज़ा नहीं देनी चाहिए? क्या मुझे
इस क़िस्म की हरकतें करनेवाली क़ौम से बदला
नहीं लेना चाहिए?

30जो कुछ मुल्क में हुआ है वह हौलनाक और
क़ाबिले-घिन है। 31क्योंकि नबी झूटी पेशगोइयाँ
सुनाते और इमाम अपनी ही मरज़ी से हुकूमत
करते हैं। और मेरी क़ौम उनका यह रवैया अज़ीज़
रखती है। लेकिन मुझे बताओ, जब यह सब कुछ
ख़त्म हो जाएगा तो फिर तुम क्या करोगे?

यरूशलम दुश्मनों से घिरा हुआ है

6 ऐ बिनयमीन की औलाद, यरूशलम से
निकलकर कहीं और पनाह लो! तक़ुअ
में नरसिंगा फूँको! बैत-करम में भागने का ऐसा
इशारा खड़ा कर जो सबको नज़र आए! क्योंकि

शिमाल से आफ़त नाज़िल हो रही है, सब कुछ
धड़ाम से गिर जाएगा।
2सिय्यून बेटी कितनी मनमोहन और नाज़ुक
है। लेकिन मैं उसे हलाक कर दूँगा, 3और चरवाहे
अपने रेवड़ों को लेकर उस पर टूट पड़ेंगे। वह अपने
ख़ैमों को उसके इर्दगिर्द लगा लेंगे, और हर एक
का रेवड़ चर चरकर अपना हिस्सा खा जाएगा।
4वह कहेंगे, 'आओ, हम उससे लड़ने के लिए
तैयार हो जाएँ। आओ, हम दोपहर के वक़्त हमला
करें! लेकिन अफ़सोस, दिन ढल रहा है, और
शाम के साये लंबे होते जा रहे हैं। 5कोई बात
नहीं, रात के वक़्त ही हम उस पर छापा मारेंगे,
उसी वक़्त हम उसके बुर्जों को गिरा देंगे'।"
6रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "दरख़्तों को
काटो, मिट्टी के ढेरों से यरूशलम का घेराव करो!
शहर को सज़ा देनी है, क्योंकि उसमें ज़ुल्म ही
ज़ुल्म पाया जाता है। 7जिस तरह कुएँ से ताज़ा
पानी निकलता रहता है उसी तरह यरूशलम की
बदी भी ताज़ा ताज़ा उससे निकलती रहती है।
ज़ुल्मो-तशद्दुद की आवाज़ें उसमें गूँजती रहती हैं,
उस की बीमार हालत और ज़ख़म लगातार मेरे
सामने रहते हैं।
8ऐ यरूशलम, मेरी तरबियत को क़बूल कर,
वरना मैं तंग आकर तुझसे अपना मुँह फेर लूँगा,
मैं तुझे तबाह कर दूँगा और तू ग़ैरआबाद हो
जाएगी।"
9रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "जिस तरह
अंगूर चुनने के बाद ग़रीब लोग तमाम बचा-खुचा
फल तोड़ लेते हैं उसी तरह इसराईल का बचा-
खुचा हिस्सा भी एहतियात से तोड़ लिया जाएगा।
चुननेवाले की तरह दुबारा अपने हाथ को अंगूर की
शाख़ों पर से गुज़रने दे।"
10ऐ रब, मैं किससे बात करूँ, किस को आगाह
करूँ? कौन सुनेगा? देख, उनके कान नामख़तून
हैं, इसलिए वह सुन ही नहीं सकते। रब का कलाम
उन्हें मज़हकाख़ेज़ लगता है, वह उन्हें नापसंद है।
11इसलिए मैं रब के ग़ज़ब से भरा हुआ हूँ, मैं उसे
बरदाश्त करते करते इतना थक गया हूँ कि उसे
मज़ीद नहीं रोक सकता।
"उसे गलियों में खेलनेवाले बच्चों और
जमाशुदा नौजवानों पर नाज़िल कर, क्योंकि
सबको गिरिफ़्तार किया जाएगा, ख़ाह
आदमी हो या औरत, बुज़ुर्ग हो या उम्र-
रसीदा। 12उनके घरों को खेतों और बीवियों समेत
दूसरों के हवाले किया जाएगा, क्योंकि मैं अपना
हाथ मुल्क के बाशिंदों के ख़िलाफ़ बढ़ाऊँगा।"
यह रब का फ़रमान है। 13"छोटे से लेकर बड़े
तक सब ग़लत नफ़ा के पीछे पड़े हैं, नबी से लेकर
इमाम तक सब धोकेबाज़ हैं। 14वह मेरी क़ौम के
ज़ख़म पर आरिज़ी मरहम-पट्टी लगाकर कहते हैं,
अब सब कुछ ठीक हो गया है, अब सलामती का
दौर आ गया है हालाँकि सलामती है ही नहीं।
15ऐसा घिनौना रवैया उनके लिए शर्म का बाइस
होना चाहिए, लेकिन वह शर्म नहीं करते बल्कि
सरासर बेशर्म हैं। इसलिए जब सब कुछ गिर
जाएगा तो यह लोग भी गिर जाएंगे। जब मैं इन
पर सज़ा नाज़िल करूँगा तो यह ठोकर खाकर
ख़ाक में मिल जाएंगे।" यह रब का फ़रमान है।

सहीह रास्ते की तलाश में रहो

16रब फ़रमाता है, "रास्तों के पास खड़े होकर
उनका मुआयना करो! क़दीम राहों की तफ़तीश
करके पता करो कि उनमें से कौन-सी अच्छी है,
फिर उस पर चलो। तब तुम्हारी जान को सुकून
मिलेगा। लेकिन अफ़सोस, तुम इनकार करके
कहते हो, नहीं, हम यह राह इख़्तियार नहीं करेंगे!
17देखो, मैंने तुम पर पहरेदार मुक़र्रर किए और
कहा, 'जब नरसिंगा फूँका जाएगा तो ध्यान दो!'
लेकिन तुमने इनकार किया, 'नहीं, हम तवज्जुह
नहीं देंगे।'
18चुनाँचे ऐ क़ौमो, सुनो! ऐ जमात, जान ले
कि उनके साथ क्या कुछ किया जाएगा। 19ऐ
ज़मीन, ध्यान दे कि मैं इस क़ौम पर क्या आफ़त
नाज़िल करूँगा। और यह उनके अपने मनसूबों का
फल होगा, क्योंकि उन्होंने मेरी बातों पर तवज्जुह

न दी बल्कि मेरी शरीअत को रद्द कर दिया।
20मुझे सबा के बख़ूर या दूर-दराज़ ममालिक के
क़ीमती मसालों की क्या परवा! तुम्हारी भस्म
होनेवाली क़ुरबानियाँ मुझे पसंद नहीं, तुम्हारी
ज़बह की क़ुरबानियों से मैं लुत्फ़अंदोज़ नहीं
होता।” 21रब फ़रमाता है, “मैं इस क़ौम के रास्ते
में ऐसी रुकावटें खड़ी कर दूँगा जिनसे बाप और
बेटा ठोकर खाकर गिर जाएंगे। पड़ोसी और दोस्त
मिलकर हलाक हो जाएंगे।”

शिमाल से दुश्मन का हमला

22रब फ़रमाता है, “शिमाली मुल्क से फ़ौज
आ रही है, दुनिया की इंतहा से एक अज़ीम क़ौम
को जगाया जा रहा है। 23उसके ज़ालिम और
बेरहम फ़ौजी कमान और शमशेर से लैस हैं। सुनो
उनका शोर! मुतलातिम समुंदर की-सी आवाज़
सुनाई दे रही है। ऐ सिय्यून बेटी, वह घोड़ों पर
सफ़आरा होकर तुझ पर हमला करने आ रहे हैं।”

24उनके बारे में इत्तला पाकर हमारे हाथ हिम्मत
हार गए हैं। हम पर ख़ौफ़ तारी हो गया है, हमें
दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत का-सा दर्द हो रहा है।
25शहर से निकलकर खेत में या सड़क पर मत
चलना, क्योंकि वहाँ दुश्मन तलवार थामे खड़ा है,
चारों तरफ़ दहशत ही दहशत फैल गई है।

26ऐ मेरी क़ौम, टाट का लिबास पहनकर राख
में लोट-पोट हो जा। यों मातम कर जिस तरह
इकलौता बेटा मर गया हो। ज़ोर से वावैला कर,
क्योंकि अचानक ही हलाकू हम पर छापा मारेगा।

यरमियाह क़ौम को आज़माता है

27रब मुझसे हमकलाम हुआ, “मैंने तुझे धातों
को जाँचने की ज़िम्मेदारी दी है, और मेरी क़ौम
वह धात है जिसका चाल-चलन तुझे मालूम करके
परखना है।” 28ऐ रब, यह तमाम लोग बदतरीन
क़िस्म के सरकश हैं। तोहमत लगाना इनकी
रोज़ी बन गया है। यह पीतल और लोहा ही हैं,
सबके सब तबाही का बाइस हैं। 29धौंकनी ख़ूब
हवा दे रही है ताकि सीसा आग में पिघलकर
चाँदी से अलग हो जाए। लेकिन अफ़सोस, सारी
मेहनत रायगाँ है। सीसा यानी बेदीनों को अलग
नहीं किया जा सकता, ख़ालिस चाँदी बाक़ी नहीं
रहती। 30चुनाँचे उन्हें ‘रद्दी चाँदी’ क़रार दिया
जाता है, क्योंकि रब ने उन्हें रद्द कर दिया है।

रब के घर के बारे में पैग़ाम

7 रब यरमियाह से हमकलाम हुआ, 2“रब
के घर के सहन के दरवाज़े पर खड़ा होकर
एलान कर कि ऐ यहूदाह के तमाम बाशिंदो, रब
का कलाम सुनो! जितने भी रब की परस्तिश
करने के लिए इन दरवाज़ों में दाख़िल होते हैं वह
सब तवज्जुह दें! 3रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है कि अपनी ज़िंदगी और
चाल-चलन दुरुस्त करो तो मैं आइंदा भी तुम्हें इस
मक़ाम पर बसने दूँगा। 4उनके फ़रेबदेह अलफ़ाज़
पर एतमाद मत करो जो कहते हैं, ‘यहाँ हम
महफ़ूज़ हैं क्योंकि यह रब का घर, रब का घर,
रब का घर है।’ 5सुनो, शर्त तो यह है कि तुम
अपनी ज़िंदगी और चाल-चलन दुरुस्त करो और
एक दूसरे के साथ इनसाफ़ का सुलूक करो, 6कि
तुम परदेसी, यतीम और बेवा पर ज़ुल्म न करो,
इस जगह बेक़ुसूर का ख़ून न बहाओ और अजनबी
माबूदों के पीछे लगकर अपने आपको नुक़सान न
पहुँचाओ। 7अगर तुम ऐसा करो तो मैं आइंदा भी
तुम्हें इस जगह बसने दूँगा, उस मुल्क में जो मैंने
तुम्हारे बापदादा को हमेशा के लिए बख़्श दिया
था।

8लेकिन अफ़सोस, तुम फ़रेबदेह अल-
फ़ाज़ पर भरोसा रखते हो जो फ़ज़ूल ही हैं। 9तुम
चोर, क़ातिल और ज़िनाकार हो। नीज़ तुम झूटी
क़सम खाते, बाल देवता के हुज़ूर बख़ूर जलाते
और अजनबी माबूदों के पीछे लग जाते हो, ऐसे
देवताओं के पीछे जिनसे तुम पहले वाक़िफ़ नहीं
थे। 10लेकिन साथ साथ तुम यहाँ मेरे हुज़ूर भी
आते हो। जिस मकान पर मेरे ही नाम का ठप्पा
लगा है उसी में तुम खड़े होकर कहते हो, ‘हम
महफ़ूज़ हैं।’ तुम रब के घर में इबादत करने के

साथ साथ किस तरह यह तमाम घिनौनी हरकतें जारी रख सकते हो?”

11रब फ़रमाता है, “क्या तुम्हारे नज़दीक यह मकान जिस पर मेरे ही नाम का ठप्पा लगा है डाकुओं का अड्डा बन गया है? ख़बरदार! यह सब कुछ मुझे भी नज़र आता है। 12सैला शहर का चक्कर लगाओ जहाँ मैंने पहले अपना नाम बसाया था। मालूम करो कि मैंने अपनी क़ौम इसराईल की बेदीनी के सबब से उस शहर के साथ क्या किया।” 13रब फ़रमाता है, “तुम यह शरीर हरकतें करते रहे, और मैं बार बार तुमसे हमकलाम होता रहा, लेकिन तुमने मेरी न सुनी। मैं तुम्हें बुलाता रहा, लेकिन तुम जवाब देने के लिए तैयार न हुए। 14इसलिए अब मैं इस घर के साथ वह कुछ करूँगा जो मैंने सैला के साथ किया था, गो इस पर मेरे ही नाम का ठप्पा लगा है, यह वह मकान है जिस पर तुम एतमाद रखते हो और जिसे मैंने तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को अता किया था। 15मैं तुम्हें अपने हुज़ूर से निकाल दूँगा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मैंने तुम्हारे तमाम भाइयों यानी इसराईल[a] की औलाद को निकाल दिया था।

लोगों की नाफ़रमानी

16ऐ यरमियाह, इस क़ौम के लिए दुआ मत कर। इसके लिए न इल्तिजा कर, न मिन्नत। इन लोगों की ख़ातिर मुझे तंग न कर, क्योंकि मैं तेरी नहीं सुनूँगा। 17क्या तुझे वह कुछ नज़र नहीं आ रहा जो यह यहूदाह के शहरों और यरूशलम की गलियों में कर रहे हैं? 18और सब इसमें मुलव्वस हैं। बच्चे लकड़ी चुनकर ढेर बनाते हैं, फिर बाप उसे आग लगाते हैं जबकि औरतें आटा गूँध गूँधकर आग पर आसमान की मलिका नामी देवी के लिए टिक्कियाँ पकाती हैं। मुझे तंग करने के लिए वह अजनबी माबूदों को मै की नज़रें भी पेश करते हैं।

19लेकिन हक़ीक़त में यह मुझे उतना तंग नहीं कर रहे जितना अपने आपको। ऐसी हरकतों से वह अपनी ही रुसवाई कर रहे हैं।” 20रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “मेरा क़हर और ग़ज़ब इस मक़ाम पर, इनसानो-हैवान पर, खुले मैदान के दरख़्तों पर और ज़मीन की पैदावार पर नाज़िल होगा। सब कुछ नज़रे-आतिश हो जाएगा, और कोई उसे बुझा नहीं सकेगा।”

21रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, “भस्म होनेवाली क़ुरबानियों को मुझे पेश न करो, बल्कि उनका गोश्त दीगर क़ुरबानियों समेत ख़ुद खा लो। 22क्योंकि जिस दिन मैं तुम्हारे बापदादा को मिसर से निकाल लाया उस दिन मैंने उन्हें भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और दीगर क़ुरबानियाँ चढ़ाने का हुक्म न दिया। 23मैंने उन्हें सिर्फ़ यह हुक्म दिया कि मेरी सुनो! तब ही मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँगा और तुम मेरी क़ौम होगे। पूरे तौर पर उस राह पर चलते रहो जो मैं तुम्हें दिखाता हूँ। तब ही तुम्हारी ख़ैर होगी। 24लेकिन उन्होंने मेरी न सुनी, न ध्यान दिया बल्कि अपने शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने लगे। उन्होंने मेरी तरफ़ रुजू न किया बल्कि अपना मुँह मुझसे फेर लिया। 25जब से तुम्हारे बापदादा मिसर से निकल आए आज तक मैं रोज़ बरोज़ और बार बार अपने ख़ादिमों यानी नबियों को तुम्हारे पास भेजता रहा। 26तो भी उन्होंने न मेरी सुनी, न तवज्जुह दी। वह बज़िद रहे बल्कि अपने बापदादा की निसबत ज़्यादा बुरे थे।

27ऐ यरमियाह, तू उन्हें यह तमाम बातें बताएगा, लेकिन वह तेरी नहीं सुनेंगे। तू उन्हें बुलाएगा, लेकिन वह जवाब नहीं देंगे। 28तब तू उन्हें बताएगा, ‘इस क़ौम ने न रब अपने ख़ुदा की आवाज़ सुनी, न उस की तरबियत क़बूल की। दियानतदारी ख़त्म होकर उनके मुँह से मिट गई है।’

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : इफ़राईम।

वादीए-बिन-हिन्नूम में क़ाबिले-घिन रसूम

29अपने बालों को काटकर फेंक दे! जा, बंजर
टीलों पर मातम का गीत गा, क्योंकि यह नसल
रब के ग़ज़ब का निशाना बन गई है, और उसने
इसे रद्द करके छोड़ दिया है।”

30क्योंकि रब फ़रमाता है, “जो कुछ यहूदाह
के बाशिंदों ने किया वह मुझे बहुत बुरा लगता है।
उन्होंने अपने घिनौने बुतों को मेरे नाम के लिए
मख़सूस घर में रखकर उस की बेहुरमती की है।
31साथ साथ उन्होंने वादीए-बिन-हिन्नूम में वाक़े
तूफ़त की ऊँची जगहें तामीर कीं ताकि अपने बेटे-
बेटियों को जलाकर क़ुरबान करें। मैंने कभी भी
ऐसी रस्म अदा करने का हुक्म नहीं दिया बल्कि
इसका ख़याल मेरे ज़हन में आया तक नहीं।

32चुनाँचे रब का कलाम सुनो! वह दिन
आनेवाले हैं जब यह मक़ाम ‘तूफ़त’ या ‘वादीए-
बिन-हिन्नूम’ नहीं कहलाएगा बल्कि ‘क़त्लो-
ग़ारत की वादी।’ उस वक़्त लोग तूफ़त में इतनी
लाशें दफ़नाएँगे कि आख़िरकार ख़ाली जगह नहीं
रहेगी। 33तब इस क़ौम की लाशें परिंदों और
जंगली जानवरों की ख़ुराक बन जाएँगी, और कोई
नहीं होगा जो उन्हें भगा दे। 34मैं यहूदाह के शहरों
और यरूशलम की गलियों में ख़ुशी-ओ-शादमानी
की आवाज़ें ख़त्म कर दूँगा, दूल्हा-दुलहन की
आवाज़ें बंद हो जाएँगी। क्योंकि मुल्क वीरानो-
सुनसान हो जाएगा।”

8 रब फ़रमाता है, “उस वक़्त दुश्मन
क़ब्रों को खोलकर यहूदाह के बाद-
शाहों, अफ़सरों, इमामों, नबियों और यरू-
शलम के आम बाशिंदों की हड्डियों को निकालेगा
2और ज़मीन पर बिखेर देगा। वहाँ वह उनके
सामने पड़ी रहेंगी जो उन्हें प्यारे थे यानी सूरज,
चाँद और सितारों के तमाम लशकर के सामने।
क्योंकि वह उन्हीं की ख़िदमत करते, उन्हीं के
पीछे चलते, उन्हीं के तालिब रहते, और उन्हीं को
सिजदा करते थे। उनकी हड्डियाँ दुबारा न इकट्ठी
की जाएँगी, न दफ़न की जाएँगी बल्कि खेत में
गोबर की तरह बिखरी पड़ी रहेंगी। 3और जहाँ
भी मैं इस शरीर क़ौम के बचे हुओं को मुंतशिर
करूँगा वहाँ वह सब कहेंगे कि काश हम भी ज़िंदा
न रहें बल्कि मर जाएँ।” यह रब्बुल-अफ़वाज का
फ़रमान है।

क़ौम तबाहकुन राह से हटने के लिए तैयार नहीं

4“उन्हें बता, रब फ़रमाता है कि जब कोई गिर
जाता है तो क्या दुबारा उठने की कोशिश नहीं
करता? ज़रूर। और जब कोई सहीह रास्ते से दूर
हो जाता है तो क्या वह दुबारा वापस आ जाने की
कोशिश नहीं करता? बेशक। 5तो फिर यरूशलम
के यह लोग सहीह राह से बार बार क्यों भटक
जाते हैं? यह फ़रेब के साथ लिपटे रहते और
वापस आने से इनकार ही करते हैं। 6मैंने ध्यान
देकर देखा है कि यह झूट ही बोलते हैं। कोई भी
पछताकर नहीं कहता, ‘यह कैसा ग़लत काम है
जो मैंने किया!’ जिस तरह जंग में घोड़े दुश्मन पर
टूट पड़ते हैं उसी तरह हर एक सीधा अपनी ग़लत
राह पर दौड़ता रहता है। 7फ़िज़ा में उड़नेवाले
लक़लक़ पर ग़ौर करो जिसे आने जाने के मुक़र्ररा
औक़ात ख़ूब मालूम होते हैं। फ़ाख़्ता, अबाबील
और बुलबुल पर भी ध्यान दो जो सर्दियों के मौसम
में कहीं और होते हैं, गरमियों के मौसम में कहीं
और। वह मुक़र्ररा औक़ात से कभी नहीं हटते।
लेकिन अफ़सोस, मेरी क़ौम रब की शरीअत नहीं
जानती।

8तुम किस तरह कह सकते हो, ‘हम दानिशमंद
हैं, क्योंकि हमारे पास रब की शरीअत है’?
हक़ीक़त में कातिबों के फ़रेबदेह क़लम ने इसे
तोड़-मरोड़कर बयान किया है। 9सुनो, दानिशमंदों
की रुसवाई हो जाएगी, वह दहशतज़दा होकर
पकड़े जाएंगे। देखो, रब का कलाम रद्द करने के
बाद उनकी अपनी हिकमत कहाँ रही?

10इसलिए मैं उनकी बीवियों को परदेसियों के
हवाले कर दूँगा और उनके खेतों को ऐसे लोगों
के सुपुर्द जो उन्हें निकाल देंगे। क्योंकि छोटे से

लेकर बड़े तक सबके सब नाजायज़ नफ़ा के
पीछे पड़े हैं, नबियों से लेकर इमामों तक सब
धोकेबाज़ हैं। 11वह मेरी क़ौम के ज़ख़म पर
आरिज़ी मरहम-पट्टी लगाकर कहते हैं, ‘अब सब
कुछ ठीक हो गया है, अब सलामती का दौर आ
गया है’ हालाँकि सलामती है ही नहीं।
12गो ऐसा घिनौना रवैया उनके लिए शर्म का
बाइस होना चाहिए, लेकिन वह शर्म नहीं करते
बल्कि सरासर बेशर्म हैं। इसलिए जब सब कुछ
गिर जाएगा तो यह लोग भी गिर जाएंगे। जब मैं
इन पर सज़ा नाज़िल करूँगा तो यह ठोकर खाकर
ख़ाक में मिल जाएंगे।” यह रब का फ़रमान है।
13रब फ़रमाता है, “मैं उनकी पूरी फ़सल छीन
लूँगा। अंगूर की बेल पर एक दाना भी नहीं रहेगा,
अंजीर के तमाम दरख़्त फल से महरूम हो जाएंगे
बल्कि तमाम पत्ते भी झड़ जाएंगे। जो कुछ भी मैंने
उन्हें अता किया था वह उनसे छीन लिया जाएगा।
14तब तुम कहोगे, ‘हम यहाँ क्यों बैठे रहें?
आओ, हम क़िलाबंद शहरों में पनाह लेकर वहीं
हलाक हो जाएँ। हमने रब अपने ख़ुदा का गुनाह
किया है, और अब हम इसका नतीजा भुगत
रहे हैं। क्योंकि उसी ने हमें हलाकत के हवाले
करके हमें ज़हरीला पानी पिला दिया है। 15हम
सलामती के इंतज़ार में रहे, लेकिन हालात ठीक
न हुए। हम शफ़ा पाने की उम्मीद रखते थे, लेकिन
इसके बजाए हम पर दहशत छा गई। 16सुनो!
दुश्मन के घोड़े नथने फुला रहे हैं। दान से उनका
शोर हम तक पहुँच रहा है। उनके हिनहिनाने से
पूरा मुल्क थरथरा रहा है, क्योंकि आते वक़्त यह
पूरे मुल्क को उसके शहरों और बाशिंदों समेत
हड़प कर लेंगे’।”

अपनी क़ौम पर यरमियाह का नोहा

17रब फ़रमाता है, “मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ अफ़ई
भेज दूँगा, ऐसे ज़हरीले साँप जिनके ख़िलाफ़
हर जादूमंत्र बेअसर रहेगा। यह तुम्हें काटेंगे।”
18लाइलाज ग़म मुझ पर हावी हो गया, मेरा दिल
निढाल हो गया है। 19सुनो! मेरी क़ौम दूर-दराज़
मुल्क से चीख़ चीख़कर मदद के लिए आवाज़ दे
रही है। लोग पूछते हैं, “क्या रब सिय्यून में नहीं है,
क्या यरूशलम का बादशाह अब से वहाँ सुकूनत
नहीं करता?” “सुनो, उन्होंने अपने मुजस्समों
और बेकार अजनबी बुतों की पूजा करके मुझे
क्यों तैश दिलाया?”
20लोग आहें भर भरकर कहते हैं, “फ़सल कट
गई है, फल चुना गया है, लेकिन अब तक हमें
नजात हासिल नहीं हुई।”
21मेरी क़ौम की मुकम्मल तबाही देखकर मेरा
दिल टूट गया है। मैं मातम कर रहा हूँ, क्योंकि उस
की हालत इतनी बुरी है कि मेरे रोंगटे खड़े हो गए
हैं। 22क्या जिलियाद में मरहम नहीं? क्या वहाँ
डाक्टर नहीं मिलता? मुझे बताओ, मेरी क़ौम का
ज़ख़म क्यों नहीं भरता?
9 काश मेरा सर पानी का मंबा और मेरी
आँखें आँसुओं का चश्मा हों ताकि मैं
दिन-रात अपनी क़ौम के मक़तूलों पर आहो-ज़ारी
कर सकूँ।

धोकेबाज़ों की क़ौम

2काश रेगिस्तान में कहीं मुसाफ़िरों के लिए
सराय हो ताकि मैं अपनी क़ौम को छोड़कर वहाँ
चला जाऊँ। क्योंकि सब ज़िनाकार, सब ग़द्दारों
का जत्था हैं।
3रब फ़रमाता है, “वह अपनी ज़बान से झूट
के तीर चलाते हैं, और मुल्क में उनकी ताक़त
दियानतदारी पर मबनी नहीं होती। नीज़, वह
बदतर होते जा रहे हैं। मुझे तो वह जानते ही
नहीं। 4हर एक अपने पड़ोसी से ख़बरदार रहे,
और अपने किसी भी भाई पर भरोसा मत रखना।
क्योंकि हर भाई चालाकी करने में माहिर है, और
हर पड़ोसी तोहमत लगाने पर तुला रहता है। 5हर
एक अपने पड़ोसी को धोका देता है, कोई भी सच
नहीं बोलता। उन्होंने अपनी ज़बान को झूट बोलना
सिखाया है, और अब वह ग़लत काम करते करते
थक गए हैं। 6ऐ यरमियाह, तू फ़रेब से घिरा रहता

है, और यह लोग फ़रेब के बाइस ही मुझे जानने
से इनकार करते हैं।”
7इसलिए रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “देखो,
मैं उन्हें ख़ाम चाँदी की तरह पिघलाकर
आज़माऊँगा, क्योंकि मैं अपनी क़ौम, अपनी बेटी
के साथ और क्या कर सकता हूँ? 8उनकी ज़बानें
मोहलक तीर हैं। उनके मुँह पड़ोसी से सुलह-
सलामती की बातें करते हैं जबकि अंदर ही अंदर
वह उस की ताक में बैठे हैं।” 9रब फ़रमाता है,
“क्या मुझे उन्हें इसकी सज़ा नहीं देनी चाहिए?
क्या मुझे ऐसी क़ौम से बदला नहीं लेना चाहिए?”

नोहा करो!

10मैं पहाड़ों के बारे में आहो-ज़ारी करूँगा,
बयाबान की चरागाहों पर मातम का गीत गाऊँगा।
क्योंकि वह यों तबाह हो गए हैं कि न कोई उनमें
से गुज़रता, न रेवड़ों की आवाज़ें उनमें सुनाई देती
हैं। परिंदे और जानवर सब भागकर चले गए हैं।
11“यरूशलम को मैं मलबे का ढेर बना दूँगा, और
आइंदा गीदड़ उसमें जा बसेंगे। यहूदाह के शहरों
को मैं वीरानो-सुनसान कर दूँगा। एक भी उनमें
नहीं बसेगा।”
12कौन इतना दानिशमंद है कि यह समझ
सके? किस को रब से इतनी हिदायत मिली है
कि वह बयान कर सके कि मुल्क क्यों बरबाद हो
गया है? वह क्यों रेगिस्तान जैसा बन गया है,
इतना वीरान कि उसमें से कोई नहीं गुज़रता?
13रब ने फ़रमाया, “वजह यह है कि उन्होंने मेरी
शरीअत को तर्क किया, वह हिदायत जो मैंने ख़ुद
उन्हें दी थी। न उन्होंने मेरी सुनी, न मेरी शरीअत
की पैरवी की। 14इसके बजाए वह अपने ज़िद्दी
दिलों की पैरवी करके बाल देवताओं के पीछे लग
गए हैं। उन्होंने वही कुछ किया जो उनके बापदादा
ने उन्हें सिखाया था।”
15इसलिए रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का
ख़ुदा है फ़रमाता है, “देखो, मैं इस क़ौम को
कड़वा खाना खिलाकर ज़हरीला पानी पिला दूँगा।
16मैं उन्हें ऐसी क़ौमों में मुंतशिर कर दूँगा जिनसे
न वह और न उनके बापदादा वाक़िफ़ थे। मेरी
तलवार उस वक़्त तक उनके पीछे पड़ी रहेगी
जब तक हलाक न हो जाएँ।” 17रब्बुल-अफ़वाज
फ़रमाता है, “ध्यान देकर गिर्या करनेवाली औरतों
को बुलाओ। जो जनाज़ों पर वावैला करती हैं
उनमें से सबसे माहिर औरतों को बुलाओ।
18वह जल्द आकर हम पर आहो-ज़ारी करें
ताकि हमारी आँखों से आँसू बह निकलें, हमारी
पलकों से पानी ख़ूब टपकने लगे।
19क्योंकि सिय्यून से गिर्या की आवाज़ें बुलंद
हो रही हैं, ‘हाय, हमारे साथ कैसी ज़्यादती हुई है,
हमारी कैसी रुसवाई हुई है! हम मुल्क को छोड़ने
पर मजबूर हैं, क्योंकि दुश्मन ने हमारे घरों को ढा
दिया है’।”
20ऐ औरतो, रब का पैग़ाम सुनो। अपने कानों
को उस की हर बात पर धरो! अपनी बेटियों को
नोहा करने की तालीम दो, एक दूसरी को मातम
का यह गीत सिखाओ,
21“मौत फलाँगकर हमारी खिड़कियों में से
घुस आई और हमारे क़िलों में दाख़िल हुई है।
अब वह बच्चों को गलियों में से और नौजवानों
को चौकों में से मिटा डालने जा रही है।”
22रब फ़रमाता है, “नाशें खेतों में गोबर की
तरह इधर-उधर बिखरी पड़ी रहेंगी। जिस तरह
कटा हुआ गंदुम फ़सल काटनेवाले के पीछे इधर-
उधर पड़ा रहता है उसी तरह लाशें इधर-उधर पड़ी
रहेंगी। लेकिन उन्हें इकट्ठा करनेवाला कोई नहीं
होगा।”
23रब फ़रमाता है, “न दानिशमंद अपनी
हिकमत पर फ़ख़र करे, न ज़ोरावर अपने ज़ोर पर
या अमीर अपनी दौलत पर। 24फ़ख़र करनेवाला
फ़ख़र करे कि उसे समझ हासिल है, कि वह रब
को जानता है और कि मैं रब हूँ जो दुनिया में
मेहरबानी, इनसाफ़ और रास्ती को अमल में लाता
हूँ। क्योंकि यही चीज़ें मुझे पसंद हैं।”
25रब फ़रमाता है, “ऐसा वक़्त आ रहा है जब
मैं उन सबको सज़ा दूँगा जिनका सिर्फ़ जिस्मानी
ख़तना हुआ है। 26इनमें मिसर, यहूदाह, अदोम,

अम्मोन, मोआब और वह शामिल हैं जो रेगिस्तान के किनारे किनारे रहते हैं। क्योंकि गो यह तमाम अक़वाम ज़ाहिरी तौर पर ख़तना की रस्म अदा करती हैं, लेकिन उनका ख़तना बातिनी तौर पर नहीं हुआ। ध्यान दो कि इसराईल की भी यही हालत है।”

बुत बेफ़ायदा हैं

10 ऐ इसराईल के घराने, रब का पैग़ाम सुन! 2रब फ़रमाता है, “दीगर अक़वाम की बुतपरस्ती मत अपनाना। यह लोग इल्मे-नुजूम से मुस्तक़बिल जान लेने की कोशिश करते करते परेशान हो जाते हैं, लेकिन तुम उनकी बातों से परेशान न हो जाओ। 3क्योंकि दीगर क़ौमों के रस्मो-रिवाज फ़ज़ूल ही हैं। जंगल में दरख़्त कट जाता है, फिर कारीगर उसे अपने औज़ार से तश्कील देता है। 4लोग उसे अपनी सोना-चाँदी से सजाकर कीलों से कहीं लगा देते हैं ताकि हिले न। 5बुत उन पुतलों की मानिंद हैं जो खीरे के खेत में खड़े किए जाते हैं ताकि परिंदों को भगा दें। न वह बोल सकते, न चल सकते हैं, इसलिए लोग उन्हें उठाकर अपने साथ ले जाते हैं। उनसे मत डरना, क्योंकि न वह नुक़सान का बाइस हैं, न भलाई का।”

6ऐ रब, तुझ जैसा कोई नहीं है, तू अज़ीम है, तेरे नाम की अज़मत ज़ोरदार तरीक़े से ज़ाहिर हुई है। 7ऐ अक़वाम के बादशाह, कौन तेरा ख़ौफ़ नहीं मानेगा? क्योंकि तू इस लायक़ है। अक़वाम के तमाम दानिशमंदों और उनके तमाम ममालिक में तुझ जैसा कोई नहीं है। 8सब अहमक़ और बेवुक़ूफ़ साबित हुए हैं, क्योंकि उनकी तरबियत लकड़ी के बेकार बुतों से हासिल हुई है। 9तरसीस से चाँदी की चादरें और ऊफ़ाज़ से सोना लाया जाता है। उनसे कारीगर और सुनार बुत बना देते हैं जिसे क़िरमिज़ी और अरग़वानी रंग के कपड़े पहनाए जाते हैं। सब कुछ माहिर उस्तादों के हाथ से बनाया जाता है।

10लेकिन रब ही हक़ीक़ी ख़ुदा है। वही ज़िंदा ख़ुदा और अबदी बादशाह है। जब वह नाराज़ हो जाता है तो ज़मीन लरज़ने लगती है। अक़वाम उसका क़हर बरदाश्त नहीं कर सकतीं।

11बुतपरस्तों को बताओ कि देवताओं ने न आसमान को बनाया और न ज़मीन को, उनका नामो-निशान तो आसमानो-ज़मीन से मिट जाएगा। 12देखो, अल्लाह ही ने अपनी क़ुदरत से ज़मीन को ख़लक़ किया, उसी ने अपनी हिकमत से दुनिया की बुनियाद रखी, और उसी ने अपनी समझ के मुताबिक़ आसमान को ख़ैमे की तरह तान लिया। 13उसके हुक्म पर आसमान पर पानी के ज़ख़ीरे गरजने लगते हैं। वह दुनिया की इंतहा से बादल चढ़ने देता, बारिश के साथ बिजली कड़कने देता और अपने गोदामों से हवा निकलने देता है।

14तमाम इनसान अहमक़ और समझ से ख़ाली हैं। हर सुनार अपने बुतों के बाइस शरमिंदा हुआ है। उसके बुत धोका ही हैं, उनमें दम नहीं। 15वह फ़ज़ूल और मज़हकाख़ेज़ हैं। अदालत के वक़्त वह नेस्त हो जाएंगे। 16अल्लाह जो याक़ूब का मौरूसी हिस्सा है इनकी मानिंद नहीं है। वह सबका ख़ालिक़ है, और इसराईली क़ौम उसका मौरूसी हिस्सा है। रब्बुल-अफ़वाज ही उसका नाम है।

आनेवाली जिलावतनी

17ऐ मुहासराशुदा शहर, अपना सामान समेटकर मुल्क से निकलने की तैयारियाँ कर ले। 18क्योंकि रब फ़रमाता है, “इस बार मैं मुल्क के बाशिंदों को बाहर फेंक दूँगा। मैं उन्हें तंग करूँगा ताकि उन्हें पकड़ा जाए।”

19हाय, मेरा बेड़ा ग़रक़ हो गया है! हाय, मेरा ज़ख़म भर नहीं सकता। पहले मैंने सोचा कि यह ऐसी बीमारी है जिसे मुझे बरदाश्त ही करना है। 20लेकिन अब मेरा ख़ैमा तबाह हो गया है, उसके तमाम रस्से टूट गए हैं। मेरे बेटे मेरे पास से चले गए हैं, एक भी नहीं रहा। कोई नहीं है जो मेरा

ख़ैमा दुबारा लगाए, जो उसके परदे नए सिरे से
लटकाए। 21क्योंकि क़ौम के गल्लाबान अहमक़
हो गए हैं, उन्होंने रब को तलाश नहीं किया।
इसलिए वह कामयाब नहीं रहे, और उनका पूरा
रेवड़ तित्तर-बित्तर हो गया है।

22सुनो! एक ख़बर पहुँच रही है, शिमाली
मुल्क से शोरो-ग़ौग़ा सुनाई दे रहा है। यहूदाह के
शहर उस की ज़द में आकर बरबाद हो जाएंगे।
आइंदा गीदड़ ही उनमें बसेंगे।

23ऐ रब, मैंने जान लिया है कि इनसान की
राह उसके अपने हाथ में नहीं होती। अपनी मरज़ी
से न वह चलता, न क़दम उठाता है। 24ऐ रब,
मेरी तंबीह कर, लेकिन मुनासिब हद तक। तैश
में आकर मेरी तंबीह न कर, वरना मैं भस्म
हो जाऊँगा। 25अपना ग़ज़ब उन अक़्वाम पर
नाज़िल कर जो तुझे नहीं जानतीं, उन उम्मतों पर
जो तेरा नाम लेकर तुझे नहीं पुकारतीं। क्योंकि
उन्होंने याक़ूब को हड़प कर लिया है। उन्होंने उसे
मुकम्मल तौर पर निगलकर उस की चरागाह को
तबाह कर दिया है।

क़ौम की अहदशिकनी

11 रब यरमियाह से हमकलाम हुआ,
2“यरूशलम और यहूदाह के बाशिंदों
से कह कि उस अहद की शरायत पर ध्यान दो
जो मैंने तुम्हारे साथ बाँधा था। 3रब जो इसराईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है कि उस पर लानत जो
उस अहद की शरायत पूरी न करे 4जो मैंने तुम्हारे
बापदादा से बाँधा था जब उन्हें मिसर से निकाल
लाया, उस मक़ाम से जो लोहा पिघलानेवाली
भट्टी की मानिंद था। उस वक़्त मैं बोला, ‘मेरी
सुनो और मेरे हर हुक्म पर अमल करो तो तुम
मेरी क़ौम होगे और मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँगा। 5फिर
मैं वह वादा पूरा करूँगा जो मैंने क़सम खाकर
तुम्हारे बापदादा से किया था, मैं तुम्हें वह मुल्क
दूँगा जिसमें दूध और शहद की कसरत है।’ आज
तुम उसी मुल्क में रह रहे हो।”

मैं, यरमियाह ने जवाब दिया, “ऐ रब, आमीन,
ऐसा ही हो!”

6तब रब ने मुझे हुक्म दिया कि यहूदाह के शहरों
और यरूशलम की गलियों में फिरकर यह तमाम
बातें सुना दे। एलान कर, “अहद की शरायत पर
ध्यान देकर उन पर अमल करो। 7तुम्हारे बापदादा
को मिसर से निकालते वक़्त मैंने उन्हें आगाह
किया कि मेरी सुनो। आज तक मैं बार बार यही
बात दोहराता रहा, 8लेकिन उन्होंने न मेरी सुनी,
न ध्यान दिया बल्कि हर एक अपने शरीर दिल
की ज़िद के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता रहा। अहद
की जिन बातों पर मैंने उन्हें अमल करने का हुक्म
दिया था उन पर उन्होंने अमल न किया। नतीजे
में मैं उन पर वह तमाम लानतें लाया जो अहद में
बयान की गई हैं।”

9रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, “यहू-
दाह और यरूशलम के बाशिंदों ने मेरे ख़िलाफ़
साज़िश की है। 10उनसे वही गुनाह सरज़द हुए
हैं जो उनके बापदादा ने किए थे। क्योंकि यह भी
मेरी बातें सुनने के लिए तैयार नहीं हैं, यह भी
अजनबी माबूदों के पीछे हो लिए हैं ताकि उनकी
ख़िदमत करें। इसराईल और यहूदाह ने मिलकर
वह अहद तोड़ा है जो मैंने उनके बापदादा से बाँधा
था।

11इसलिए रब फ़रमाता है कि मैं उन पर
ऐसी आफ़त नाज़िल करूँगा जिससे वह बच नहीं
सकेंगे। तब वह मदद के लिए मुझसे फ़रियाद
करेंगे, लेकिन मैं उनकी नहीं सुनूँगा। 12फिर
यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदे अपने शहरों
से निकलकर चीख़ते-चिल्लाते उन देवताओं से
मिन्नत करेंगे जिनके सामने बख़ूर जलाते रहे हैं।
लेकिन अब जब वह मुसीबत में मुब्तला होंगे तो
यह उन्हें नहीं बचाएँगे। 13ऐ यहूदाह, तेरे देवता
तेरे शहरों जैसे बेशुमार हो गए हैं। शर्मनाक देवता
बाल के लिए बख़ूर जलाने की इतनी क़ुरबानगाहें
खड़ी की गई हैं जितनी यरूशलम में गलियाँ होती
हैं। 14ऐ यरमियाह, इस क़ौम के लिए दुआ मत
करना! इसके लिए न मिन्नत कर, न समाजत।

क्योंकि जब आफ़त उन पर आएगी और वह चिल्लाकर मुझसे फ़रियाद करेंगे तो मैं उनकी नहीं सुनूँगा।

15मेरी प्यारी क़ौम मेरे घर में क्यों हाज़िर होती है? वह तो अपनी बेशुमार साज़िशों से बाज़ ही नहीं आती। क्या आनेवाली आफ़त क़ुरबानी का मुक़द्दस गोश्त पेश करने से रुक जाएगी? अगर ऐसा होता तो तू ख़ुशी मना सकती।

16रब ने तेरा नाम 'ज़ैतून का फलता-फूलता दरख़्त जिसका ख़ूबसूरत फल है' रखा, लेकिन अब वह ज़बरदस्त आँधी का शोर मचाकर दरख़्त को आग लगाएगा। तब उस की तमाम डालियाँ भस्म हो जाएँगी। 17ऐ इसराईल और यहूदाह, रब्बुल-अफ़वाज ने ख़ुद तुम्हें ज़मीन में लगाया। लेकिन अब उसने तुम पर आफ़त लाने का फ़ैसला किया है। क्यों? तुम्हारे ग़लत काम की वजह से, और इसलिए कि तुमने बाल देवता को बख़ूर की क़ुरबानियाँ पेश करके मुझे तैश दिलाया है।"

यरमियाह के लिए जान का ख़तरा

18रब ने मुझे इत्तला दी तो मुझे मालूम हुआ। हाँ, उस वक़्त तू ही ने मुझे उनके मनसूबों से आगाह किया। 19पहले मैं उस भूले-भाले भेड़ के बच्चे की मानिंद था जिसे क़साई के पास लाया जा रहा हो। मुझे क्या पता था कि यह मेरे ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहे हैं। आपस में वह कह रहे थे, "आओ, हम दरख़्त को फल समेत ख़त्म करें, आओ हम उसे ज़िंदों के मुल्क में से मिटाएँ ताकि उसका नामो-निशान तक याद न रहे।"

20ऐ रब्बुल-अफ़वाज, तू आदिल मुंसिफ़ है जो लोगों के सबसे गहरे ख़यालात और राज़ जाँच लेता है। अब बख़्श दे कि मैं अपनी आँखों से वह इंतक़ाम देखूँ जो तू मेरे मुख़ालिफ़ों से लेगा। क्योंकि मैंने अपना मामला तेरे ही सुपुर्द कर दिया है।

21रब फ़रमाता है, "अनतोत के आदमी तुझे क़त्ल करना चाहते हैं। वह कहते हैं, 'रब का नाम लेकर नबुव्वत मत करना, वरना तू हमारे हाथों मार दिया जाएगा'।" 22चूँकि यह लोग ऐसी बातें करते हैं इसलिए रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "मैं उन्हें सज़ा दूँगा! उनके जवान आदमी तलवार से और उनके बेटे-बेटियाँ काल से हलाक हो जाएंगे। 23उनमें से एक भी नहीं बचेगा। क्योंकि जिस साल उनकी सज़ा नाज़िल होगी, उस वक़्त मैं अनतोत के आदमियों पर सख़्त आफ़त लाऊँगा।"

बेदीनों को इतनी कामयाबी क्यों हासिल होती है?

12 ऐ रब, तू हमेशा हक़ पर है, लिहाज़ा अदालत में तुझसे शिकायत करने का क्या फ़ायदा? ताहम मैं अपना मामला तुझे पेश करना चाहता हूँ। बेदीनों को इतनी कामयाबी क्यों हासिल होती है? ग़द्दार इतने सुकून से ज़िंदगी क्यों गुज़ारते हैं? 2तूने उन्हें ज़मीन में लगा दिया, और अब वह जड़ पकड़कर ख़ूब उगने लगे बल्कि फल भी ला रहे हैं। गो तेरा नाम उनकी ज़बान पर रहता है, लेकिन उनका दिल तुझसे दूर है। 3लेकिन ऐ रब, तू मुझे जानता है। तू मेरा मुलाहज़ा करके मेरे दिल को परखता रहता है। गुज़ारिश है कि तू उन्हें भेड़ों की तरह घसीटकर ज़बह करने के लिए ले जा। उन्हें क़त्लो-ग़ारत के दिन के लिए मख़सूस कर!

4मुल्क कब तक काल की गिरिफ़्त में रहेगा? खेतों में हरियाली कब तक मुरझाई हुई नज़र आएगी? बाशिंदों की बुराई के बाइस जानवर और परिंदे ग़ायब हो गए हैं। क्योंकि लोग कहते हैं, "अल्लाह को नहीं मालूम कि हमारे साथ क्या हो जाएगा।"

5रब मुझसे हमकलाम हुआ, "पैदल चलनेवालों से दौड़ का मुक़ाबला करना तुझे थका देता है, तो फिर तू किस तरह घोड़ों का मुक़ाबला करेगा? तू अपने आपको सिर्फ़ वहाँ महफ़ूज़ समझता है जहाँ चारों तरफ़ अमनो-अमान फैला हुआ है, तो फिर तू दरियाए-यरदन के गुंजान जंगल से किस तरह निपटेगा? 6क्योंकि तेरे सगे

भाई, हाँ तेरे बाप का घर भी तुझसे बेवफ़ा हो
गया है। यह भी बुलंद आवाज़ से तेरे पीछे तुझे
गालियाँ देते हैं। उन पर एतमाद मत करना, ख़ाह
वह तेरे साथ अच्छी बातें क्यों न करें।

अल्लाह अपने मुल्क पर मातम करता है

7मैंने अपने घर इसराईल को तर्क कर दिया है।
जो मेरी मौरूसी मिलकियत थी उसे मैंने रद्द किया
है। मैंने अपने लख़्ते-जिगर को उसके दुश्मनों के
हवाले कर दिया है। 8क्योंकि मेरी क़ौम जो मेरी
मौरूसी मिलकियत है मेरे साथ बुरा सुलूक करती
है। जंगल में शेरबबर की तरह वह मेरे ख़िलाफ़
दहाड़ती है, इसलिए मैं उससे नफ़रत करता हूँ।
9अब मेरी मौरूसी मिलकियत उस रंगीन शिकारी
परिंदे की मानिंद है जिसे दीगर शिकारी परिंदों
ने घेर रखा है। जाओ, तमाम दरिंदों को इकट्ठा
करो ताकि वह आकर उसे खा जाएँ। 10मुतअद्दिद
गल्लाबानों ने मेरे अंगूर के बाग़ को ख़राब कर
दिया है। मेरे प्यारे खेत को उन्होंने पाँवों तले
रौंदकर रेगिस्तान में बदल दिया है। 11अब वह
बंजर ज़मीन बनकर उजाड़ हालत में मेरे सामने
मातम करता है। पूरा मुल्क वीरानो-सुनसान है,
लेकिन कोई परवा नहीं करता।

12तबाहकुन फ़ौजी बयाबान की बंजर बुलंदियों
पर से उतरकर क़रीब पहुँच रहे हैं। क्योंकि रब की
तलवार मुल्क के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सब
कुछ खा जाएगी। कोई भी नहीं बचेगा।

13इस क़ौम ने गंदुम का बीज बोया, लेकिन
काँटों की फ़सल पक गई। ख़ूब मेहनत-मशक़्क़त
करने के बावुजूद भी कुछ हासिल न हुआ, क्योंकि
रब का सख़्त ग़ज़ब क़ौम पर नाज़िल हो रहा है।
चुनाँचे अब रुसवाई की फ़सल काटो!”

अल्लाह का पड़ोसी ममालिक के लिए पैग़ाम

14रब फ़रमाता है, “मैं उन तमाम शरीर पड़ोसी
ममालिक को जड़ से उखाड़ दूँगा जो मेरी क़ौम
इसराईल की मिलकियत को छीनने की कोशिश
कर रहे हैं, वह मिलकियत जो मैंने ख़ुद उन्हें मीरास
में दी थी। साथ साथ मैं यहूदाह को भी जड़ से
उनके दरमियान से निकाल दूँगा। 15लेकिन बाद
में मैं उन पर तरस खाकर हर एक को फिर उस की
अपनी मौरूसी ज़मीन और अपने मुल्क में पहुँचा
दूँगा। 16पहले उन दीगर क़ौमों ने मेरी क़ौम को
बाल देवता की क़सम खाने का तर्ज़ सिखाया।
लेकिन अब अगर वह मेरी क़ौम की राहें अच्छी
तरह सीखकर मेरे ही नाम और मेरी ही हयात की
क़सम खाएँ तो मेरी क़ौम के दरमियान रहकर
अज़ सरे-नौ क़ायम हो जाएँगी। 17लेकिन जो
क़ौम मेरी नहीं सुनेगी उसे मैं हतमी तौर पर जड़ से
उखाड़कर नेस्त कर दूँगा।” यह रब का फ़रमान
है।

गली-सड़ी लँगोटी

13 रब मुझसे हमकलाम हुआ, “जा,
कतान की लँगोटी ख़रीदकर उसे बाँध
ले। लेकिन वह भीग न जाए।” 2मैंने ऐसा ही
किया। लँगोटी ख़रीदकर मैंने उसे बाँध लिया।
3तब रब का कलाम दुबारा मुझ पर नाज़िल
हुआ, 4“अब वह लँगोटी ले जो तूने ख़रीदकर
बाँध ली है। दरियाए-फ़ुरात के पास जाकर उसे
किसी चट्टान की दराड़ में छुपा दे।” 5चुनाँचे
मैं रवाना होकर दरियाए-फ़ुरात के किनारे पहुँच
गया। वहाँ मैंने लँगोटी को कहीं छुपा दिया जिस
तरह रब ने हुक्म दिया था। 6बहुत दिन गुज़र गए।
फिर रब मुझसे एक बार फिर हमकलाम हुआ,
“उठ, दरियाए-फ़ुरात के पास जाकर वह लँगोटी
निकाल ला जो मैंने तुझे वहाँ छुपाने को कहा
था।” 7चुनाँचे मैं रवाना होकर दरियाए-फ़ुरात के
पास पहुँच गया। वहाँ मैंने खोदकर लँगोटी को
उस जगह से निकाल लिया जहाँ मैंने उसे छुपा
दिया था। लेकिन अफ़सोस, वह गल-सड़ गई थी,
बिलकुल बेकार हो गई थी।

8तब रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,
9“जिस तरह यह कपड़ा ज़मीन में दबकर गल-
सड़ गया उसी तरह मैं यहूदाह और यरूशलम का
बड़ा घमंड ख़ाक में मिला दूँगा। 10यह ख़राब लोग

मेरी बातें सुनने के लिए तैयार नहीं बल्कि अपने
शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते
हैं। अजनबी माबूदों के पीछे लगकर यह उन्हीं
की ख़िदमत और पूजा करते हैं। लेकिन इनका
अंजाम लँगोटी की मानिंद ही होगा। यह बेकार हो
जाएंगे। 11क्योंकि जिस तरह लँगोटी आदमी की
कमर के साथ लिपटी रहती है उसी तरह मैंने पूरे
इसराईल और पूरे यहूदाह को अपने साथ लिपटने
का मौक़ा फ़राहम किया ताकि वह मेरी क़ौम और
मेरी शोहरत, तारीफ़ और इज़्ज़त का बाइस बन
जाएँ। लेकिन अफ़सोस, वह सुनने के लिए तैयार
नहीं थे।" यह रब का फ़रमान है।

मै के घड़े भरे हुए हैं

12"उन्हें बता दे कि रब इसराईल का ख़ुदा
फ़रमाता है, 'हर घड़े को मै से भरना है।' वह
जवाब में कहेंगे, 'हम तो ख़ुद जानते हैं कि हर घड़े
को मै से भरना है।' 13तब उन्हें इसका मतलब
बता। 'रब फ़रमाता है कि इस मुल्क के तमाम
बाशिंदे घड़े हैं जिन्हें मैं मै से भर दूँगा। दाऊद
के तख़्त पर बैठनेवाले बादशाह, इमाम, नबी
और यरूशलम के तमाम रहनेवाले सबके सब
भर भरकर नशे में धुत हो जाएंगे। 14तब मैं उन्हें
एक दूसरे के साथ टकरा दूँगा, और बाप बेटों के
साथ मिलकर टुकड़े टुकड़े हो जाएंगे। न मैं तरस
खाऊँगा, न उन पर रहम करूँगा बल्कि हमदर्दी
दिखाए बग़ैर उन्हें तबाह करूँगा'।" यह रब का
फ़रमान है।

क़ैद की हैबतनाक हालत

15ध्यान से सुनो! मग़रूर न हो, क्योंकि रब
ने ख़ुद फ़रमाया है। 16इससे पहले कि तारीकी
फैल जाए और तुम्हारे पाँव धुँधलेपन में पहाड़ों के
साथ ठोकर खाएँ, रब अपने ख़ुदा को जलाल दो!
क्योंकि उस वक़्त गो तुम रौशनी के इंतज़ार में
रहोगे, लेकिन अल्लाह अंधेरे को मज़ीद बढ़ाएगा,
गहरी तारीकी तुम पर छा जाएगी। 17लेकिन
अगर तुम न सुनो तो मैं तुम्हारे तकब्बुर को
देखकर पोशीदगी में गिर्याओ-ज़ारी करूँगा। मैं
ज़ार ज़ार रोऊँगा, मेरी आँखों से आँसू ज़ोर से
टपकेंगे, क्योंकि दुश्मन रब के रेवड़ को पकड़कर
जिलावतन कर देगा।

18बादशाह और उस की माँ को इत्तला दे,
"अपने तख़्तों से उतरकर ज़मीन पर बैठ जाओ,
क्योंकि तुम्हारी शान का ताज तुम्हारे सरों से गिर
गया है।" 19दश्ते-नजब के शहर बंद किए जाएंगे,
और उन्हें खोलनेवाला कोई नहीं होगा। पूरे यहूदाह
को जिलावतन कर दिया जाएगा, एक भी नहीं
बचेगा।

20ऐ यरूशलम, अपनी नज़र उठाकर उन्हें देख
जो शिमाल से आ रहे हैं। अब वह रेवड़ कहाँ
रहा जो तेरे सुपुर्द किया गया, तेरी शानदार भेड़-
बकरियाँ किधर हैं? 21तू उस दिन क्या कहेगी
जब रब उन्हें तुझ पर मुक़र्रर करेगा जिन्हें तूने
अपने क़रीबी दोस्त बनाया था? जन्म देनेवाली
औरत का-सा दर्द तुझ पर ग़ालिब आएगा।
22और अगर तेरे दिल में सवाल उभर आए कि मेरे
साथ यह क्यों हो रहा है तो सुन! यह तेरे संगीन
गुनाहों की वजह से हो रहा है। इन्हीं की वजह से
तेरे कपड़े उतारे गए हैं और तेरी इसमतदरी हुई है।

23क्या काला आदमी अपनी जिल्द का रंग
या चीता अपनी खाल के धब्बे बदल सकता है?
हरगिज़ नहीं! तुम भी बदल नहीं सकते। तुम
ग़लत काम के इतने आदी हो गए हो कि सहीह
काम कर ही नहीं सकते।

24"जिस तरह भूसा रेगिस्तान की तेज़ हवा में
उड़कर तित्तर-बित्तर हो जाता है उसी तरह मैं तेरे
बाशिंदों को मुंतशिर कर दूँगा।" 25रब फ़रमाता
है, "यही तेरा अंजाम होगा, मैंने ख़ुद मुक़र्रर
किया है कि तुझे यह अज्र मिलना है। क्योंकि तूने
मुझे भूलकर झूट पर भरोसा रखा है। 26मैं ख़ुद
तेरे कपड़े उतारूँगा ताकि तेरी बरहनगी सबको
नज़र आए। 27मैंने पहाड़ी और मैदानी इलाक़ों
में तेरी घिनौनी हरकतों पर ख़ूब ध्यान दिया है।
तेरी ज़िनाकारी, तेरा मस्ताना हिनहिनाना, तेरी
बेशर्म इसमतफ़रोशी, सब कुछ मुझे नज़र आता

है। ऐ यरूशलम, तुझ पर अफ़सोस! तू पाक-
साफ़ हो जाने के लिए तैयार नहीं। मज़ीद कितनी
देर लगेगी?”

काल के दौरान रब का पैग़ाम

14 काल के दौरान रब यरमियाह से
हमकलाम हुआ,
2“यहूदाह मातम कर रहा है, उसके दरवाज़ों
की हालत क़ाबिले-रहम है। लोग सोगवार हालत
में फ़र्श पर बैठे हैं, और यरूशलम की चीख़ें
आसमान तक बुलंद हो रही हैं। 3अमीर अपने
नौकरों को पानी भरने भेजते हैं, लेकिन हौज़ों
के पास पहुँचकर पता चलता है कि पानी नहीं
है, इसलिए वह ख़ाली हाथ वापस आ जाते हैं।
शरमिंदगी और नदामत के मारे वह अपने सरों को
ढाँप लेते हैं। 4बारिश न होने की वजह से ज़मीन
में दराड़ें पड़ गई हैं। खेतों में काम करनेवाले भी
शर्म के मारे अपने सरों को ढाँप लेते हैं। 5घास
नहीं है, इसलिए हिरनी अपने नौमौलूद बच्चे को
छोड़ देती है। 6जंगली गधे बंजर टीलों पर खड़े
गीदड़ों की तरह हाँपते हैं। हरियाली न मिलने की
वजह से वह बेजान हो रहे हैं।”

7ऐ रब, हमारे गुनाह हमारे ख़िलाफ़ गवाही दे
रहे हैं। तो भी अपने नाम की ख़ातिर हम पर रहम
कर। हम मानते हैं कि बुरी तरह बेवफ़ा हो गए
हैं, हमने तेरा ही गुनाह किया है। 8ऐ अल्लाह, तू
इसराईल की उम्मीद है, तू ही मुसीबत के वक़्त
उसे छुटकारा देता है। तो फिर हमारे साथ तेरा
सुलूक मुल्क में अजनबी का-सा क्यों है? तू रात
को कभी इधर कभी इधर ठहरनेवाले मुसाफ़िर
जैसा क्यों है? 9तू क्यों उस आदमी की मानिंद
है जो अचानक दम बख़ुद हो जाता है, उस सूरमे
की मानिंद जो बेबस होकर बचा नहीं सकता। ऐ
रब, तू तो हमारे दरमियान ही रहता है, और हम
पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है। हमें तर्क न कर!

इस क़ौम के लिए दुआ मत करना

10लेकिन रब इस क़ौम के बारे में फ़रमाता है,
“यह लोग आवारा फिरने के शौक़ीन हैं, यह अपने
पाँवों को रोक ही नहीं सकते। मैं उनसे नाख़ुश
हूँ। अब मुझे उनके ग़लत काम याद रहेंगे, अब मैं
उनके गुनाहों की सज़ा दूँगा।” 11रब मज़ीद मुझसे
हमकलाम हुआ, “इस क़ौम की बहबूदी के लिए
दुआ मत करना। 12गो यह रोज़ा भी रखें तो भी
मैं इनकी इल्तिजाओं पर ध्यान नहीं दूँगा। गो यह
भस्म होनेवाली और ग़ल्ला की क़ुरबानियाँ पेश
भी करें तो भी मैं इनसे ख़ुश नहीं हूँगा बल्कि इन्हें
काल, तलवार और बीमारियों से नेस्तो-नाबूद कर
दूँगा।”

13यह सुनकर मैंने एतराज़ किया, “ऐ रब
क़ादिरे-मुतलक़, नबी इन्हें बताते आए हैं, ‘न
क़त्लो-ग़ारत का ख़तरा होगा, न काल पड़ेगा
बल्कि मैं यहीं तुम्हारे लिए अमनो-अमान का
पक्का बंदोबस्त कर लूँगा’।”

14रब ने जवाब दिया, “नबी मेरा नाम लेकर
झूटी पेशगोइयाँ बयान कर रहे हैं। मैंने न उन्हें
भेजा, न उन्हें कोई ज़िम्मेदारी दी और न उनसे
हमकलाम हुआ। यह तुम्हें झूटी रोयाएँ, फ़ज़ूल
पेशगोइयाँ और अपने दिल के वहम सुनाते रहे
हैं।” 15चुनाँचे रब फ़रमाता है, “यह नबी तलवार
और काल की ज़द में आकर मर जाएंगे। क्योंकि
गो मैंने उन्हें नहीं भेजा तो भी यह मेरे नाम में
नबुव्वत करके कहते हैं कि मुल्क में न क़त्लो-
ग़ारत का ख़तरा होगा, न काल पड़ेगा। 16और
जिन लोगों को वह अपनी नबुव्वतें सुनाते रहे हैं
वह तलवार और काल का शिकार बन जाएंगे,
उनकी लाशें यरूशलम की गलियों में फेंक दी
जाएँगी। उन्हें दफ़नानेवाला कोई नहीं होगा, न
उनको, न उनकी बीवियों को और न उनके बेटे-
बेटियों को। यों मैं उन पर उनकी अपनी बदकारी
नाज़िल करूँगा।

ऐ रब, हमें मुआफ़ कर!

17ऐ यरमियाह, उन्हें यह कलाम सुना,
‘दिन-रात मेरे आँसू बह रहे हैं। वह रुक नहीं
सकते, क्योंकि मेरी क़ौम, मेरी कुँवारी बेटी को
गहरी चोट लग गई है, ऐसा ज़ख़म जो भर नहीं
सकता। 18देहात में जाकर मुझे वह सब नज़र
आते हैं जो तलवार से क़त्ल किए गए हैं। जब मैं
शहर में वापस आता हूँ तो चारों तरफ़ काल के
बुरे असरात दिखाई देते हैं। नबी और इमाम मुल्क
में मारे मारे फिर रहे हैं, और उन्हें मालूम नहीं कि
क्या करें’।”

19ऐ रब, क्या तूने यहूदाह को सरासर रद्द किया
है? क्या तुझे सिय्यून से इतनी घिन आती है?
तूने हमें इतनी बार क्यों मारा कि हमारा इलाज
नामुमकिन हो गया है? हम अमनो-अमान के
इंतज़ार में रहे, लेकिन हालात ठीक न हुए। हम
शफ़ा पाने की उम्मीद रखते थे, लेकिन इसके
बजाए हम पर दहशत छा गई।

20ऐ रब, हम अपनी बेदीनी और अपने
बापदादा का क़ुसूर तसलीम करते हैं। हमने तेरा
ही गुनाह किया है। 21अपने नाम की ख़ातिर हमें
हक़ीर न जान, अपने जलाली तख़्त की बेहुरमती
होने न दे! हमारे साथ अपना अहद याद कर,
उसे मनसूख़ न कर। 22क्या दीगर अक़वाम के
देवताओं में से कोई है जो बारिश बरसा सके?
या क्या आसमान ख़ुद ही बारिशें ज़मीन पर भेज
देता है? हरगिज़ नहीं, बल्कि तू ही यह सब कुछ
करता है, ऐ रब हमारे ख़ुदा। इसी लिए हम तुझ
पर उम्मीद रखते हैं। तू ही ने यह सारा इंतज़ाम
क़ायम किया है।

सज़ा ज़रूर आएगी, क्योंकि देर हो गई है

15 फिर रब मुझसे हमकलाम हुआ,
“अब से मेरा दिल इस क़ौम की तरफ़
मायल नहीं होगा, ख़ाह मूसा और समुएल मेरे
सामने आकर उनकी शफ़ाअत क्यों न करें। उन्हें
मेरे हुज़ूर से निकाल दे, वह चले जाएँ! 2अगर वह
तुझसे पूछें, ‘हम किधर जाएँ?’ तो उन्हें जवाब दे,
‘रब फ़रमाता है कि जिसे मरना है वह मरे, जिसे
तलवार की ज़द में आना है वह तलवार का लुक़मा
बने, जिसे भूके मरना है वह भूके मरे, जिसे क़ैद में
जाना है वह क़ैद हो जाए’।” 3रब फ़रमाता है, “मैं
उन्हें चार क़िस्म की सज़ा दूँगा। एक, तलवार उन्हें
क़त्ल करेगी। दूसरे, कुत्ते उनकी लाशें घसीटकर
ले जाएंगे। तीसरे और चौथे, परिंदे और दरिंदे उन्हें
खा खाकर ख़त्म कर देंगे। 4जब मैं अपनी क़ौम
से निपट लूँगा तो दुनिया के तमाम ममालिक उस
की हालत देखकर काँप उठेंगे। उनके रोंगटे खड़े
हो जाएंगे जब वह यहूदाह के बादशाह मनस्सी
बिन हिज़क़ियाह की उन शरीर हरकतों का अंजाम
देखेंगे जो उसने यरूशलम में की हैं।

5ऐ यरूशलम, कौन तुझ पर तरस खाएगा,
कौन हमदर्दी का इज़हार करेगा? कौन तेरे घर
आकर तेरा हाल पूछेगा?” 6रब फ़रमाता है,
“तूने मुझे रद्द किया, अपना मुँह मुझसे फेर लिया
है। अब मैं अपना हाथ तेरे ख़िलाफ़ बढ़ाकर तुझे
तबाह कर दूँगा। क्योंकि मैं हमदर्दी दिखाते दिखाते
तंग आ गया हूँ।

7जिस तरह गंदुम को हवा में उछालकर भूसे
से अलग किया जाता है उसी तरह मैं उन्हें मुल्क
के दरवाज़ों के सामने फटकूँगा। चूँकि मेरी क़ौम
ने अपने ग़लत रास्तों को तर्क न किया इसलिए
मैं उसे बेऔलाद बनाकर बरबाद कर दूँगा। 8उस
की बेवाएँ समुंदर की रेत जैसी बेशुमार होंगी।
दोपहर के वक़्त ही मैं नौजवानों की माओं पर
तबाही नाज़िल करूँगा, अचानक ही उन पर पेचो-
ताब और दहशत छा जाएगी। 9सात बच्चों की
माँ निढाल होकर जान से हाथ धो बैठेगी। दिन के
वक़्त ही उसका सूरज डूब जाएगा, उसका फ़ख़र
और इज़्ज़त जाती रहेगी। जो लोग बच जाएंगे उन्हें
मैं दुश्मन के आगे आगे तलवार से मार डालूँगा।”
यह रब का फ़रमान है।

यरमियाह रब से शिकायत करता है

10ऐ मेरी माँ, मुझ पर अफ़सोस! अफ़-
सोस कि तूने मुझ जैसे शख़्स को जन्म दिया

जिसके साथ पूरा मुल्क झगड़ता और लड़ता है।
गो मैंने न उधार दिया न लिया तो भी सब मुझ पर
लानत करते हैं। 11रब ने जवाब दिया, "यक़ीनन
मैं तुझे मज़बूत करके अपना अच्छा मक़सद पूरा
करूँगा। यक़ीनन मैं होने दूँगा कि मुसीबत के वक़्त
दुश्मन तुझसे मिन्नत करे।

12क्योंकि कोई उस लोहे को तोड़ नहीं सकेगा
जो शिमाल से आएगा, हाँ लोहे और पीतल का
वह सरिया तोड़ा नहीं जाएगा। 13मैं तेरे ख़ज़ाने
दुश्मन को मुफ़्त में दूँगा। तुझे तमाम गुनाहों का
अज्र मिलेगा जब वह पूरे मुल्क में तेरी दौलत लूटने
आएगा। 14तब मैं तुझे दुश्मन के ज़रीए एक मुल्क
में पहुँचा दूँगा जिससे तू नावाक़िफ़ है। क्योंकि मेरे
ग़ज़ब की भड़कती आग तुझे भस्म कर देगी।"

15ऐ रब, तू सब कुछ जानता है। मुझे याद
कर, मेरा ख़याल कर, ताक़्क़ुब करनेवालों से मेरा
इंतक़ाम ले! उन्हें यहाँ तक बरदाश्त न कर कि
आख़िरकार मेरा सफ़ाया हो जाए। इसे ध्यान में
रख कि मेरी रुसवाई तेरी ही ख़ातिर हो रही है।
16ऐ रब, लशकरों के ख़ुदा, जब भी तेरा कलाम
मुझ पर नाज़िल हुआ तो मैंने उसे हज़म किया,
और मेरा दिल उससे ख़ुशो-ख़ुर्रम हुआ। क्योंकि
मुझ पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है। 17जब
दीगर लोग रंगरलियों में अपने दिल बहलाते थे तो
मैं कभी उनके साथ न बैठा, कभी उनकी बातों
से लुत्फ़अंदोज़ न हुआ। नहीं, तेरा हाथ मुझ पर
था, इसलिए मैं दूसरों से दूर ही बैठा रहा। क्योंकि
तूने मेरे दिल को क़ौम पर क़हर से भर दिया
था। 18क्या वजह है कि मेरा दर्द कभी ख़त्म नहीं
होता, कि मेरा ज़ख़्म लाइलाज है और कभी नहीं
भरता? तू मेरे लिए फ़रेबदेह चश्मा बन गया है,
ऐसी नदी जिसके पानी पर एतमाद नहीं किया जा
सकता।

19रब जवाब में फ़रमाता है, "अगर तू मेरे पास
वापस आए तो मैं तुझे वापस आने दूँगा, और तू
दुबारा मेरे सामने हाज़िर हो सकेगा। और अगर तू
फ़ज़ूल बातें न करे बल्कि मेरे लायक़ अलफ़ाज़
बोले तो मेरा तरजुमान होगा। लाज़िम है कि
लोग तेरी तरफ़ रुजू करें, लेकिन ख़बरदार, कभी
उनकी तरफ़ रुजू न कर!" 20रब फ़रमाता है, "मैं
तुझे पीतल की मज़बूत दीवार बना दूँगा ताकि तू
इस क़ौम का सामना कर सके। यह तुझसे लड़ेंगे
लेकिन तुझ पर ग़ालिब नहीं आएँगे, क्योंकि मैं तेरे
साथ हूँ, मैं तेरी मदद करके तुझे बचाए रखूँगा।
21मैं तुझे बेदीनों के हाथ से बचाऊँगा और फ़िद्या
देकर ज़ालिमों की गिरिफ़्त से छुड़ाऊँगा।"

यरमियाह को शादी करने की इजाज़त नहीं

16 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2"इस
मक़ाम में न तेरी शादी हो, न तेरे बेटे-
बेटियाँ पैदा हो जाएँ।" 3क्योंकि रब यहाँ पैदा
होनेवाले बेटे-बेटियों और उनके माँ-बाप के बारे में
फ़रमाता है, 4"वह मोहलक बीमारियों से मरकर
खेतों में गोबर की तरह पड़े रहेंगे। न कोई उन
पर मातम करेगा, न उन्हें दफ़नाएगा, क्योंकि वह
तलवार और काल से हलाक हो जाएंगे, और
उनकी लाशें परिंदों और दरिंदों की ख़ुराक बन
जाएँगी।"

5रब फ़रमाता है, "ऐसे घर में मत जाना जिसमें
कोई फ़ौत हो गया है।[a] उसमें न मातम करने
के लिए, न अफ़सोस करने के लिए दाख़िल
होना। क्योंकि अब से मैं इस क़ौम पर अपनी
सलामती, मेहरबानी और रहम का इज़हार नहीं
करूँगा।" यह रब का फ़रमान है। 6"इस मुल्क
के बाशिंदे मर जाएंगे, ख़ाह बड़े हों या छोटे। और
न कोई उन्हें दफ़नाएगा, न मातम करेगा। कोई
नहीं होगा जो ग़म के मारे अपनी जिल्द को काटे
या अपने सर को मुँडवाए। 7किसी का बाप या
माँ भी इंतक़ाल कर जाए तो भी लोग मातम
करनेवाले घर में नहीं जाएंगे, न तसल्ली देने के
लिए जनाज़े के खाने-पीने में शरीक होंगे। 8ऐसे
घर में भी दाख़िल न होना जहाँ लोग ज़ियाफ़त

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : जिसमें जनाज़े का खाना खिलाया जा
रहा है।

कर रहे हैं। उनके साथ खाने-पीने के लिए मत
बैठना।” 9क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है, “तुम्हारे जीते-जी, हाँ
तुम्हारे देखते देखते मैं यहाँ ख़ुशी-ओ-शादमानी
की आवाज़ें बंद कर दूँगा। अब से दूल्हा-दुलहन
की आवाज़ें ख़ामोश हो जाएँगी।

10जब तू इस क़ौम को यह सब कुछ बताएगा
तो लोग पूछेंगे, ‘रब इतनी बड़ी आफ़त हम पर
लाने पर क्यों तुला हुआ है? हमसे क्या जुर्म हुआ
है? हमने रब अपने ख़ुदा का क्या गुनाह किया
है?’ 11उन्हें जवाब दे, ‘वजह यह है कि तुम्हारे
बापदादा ने मुझे तर्क कर दिया। वह मेरी शरीअत
के ताबे न रहे बल्कि मुझे छोड़कर अजनबी माबूदों
के पीछे लग गए और उन्हीं की ख़िदमत और
पूजा करने लगे। 12लेकिन तुम अपने बापदादा
की निसबत कहीं ज़्यादा ग़लत काम करते हो।
देखो, मेरी कोई नहीं सुनता बल्कि हर एक अपने
शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता
है। 13इसलिए मैं तुम्हें इस मुल्क से निकालकर
एक ऐसे मुल्क में फेंक दूँगा जिससे न तुम और
न तुम्हारे बापदादा वाक़िफ़ थे। वहाँ तुम दिन-रात
अजनबी माबूदों की ख़िदमत करोगे, क्योंकि उस
वक़्त मैं तुम पर रहम नहीं करूँगा’।”

जिलावतनी से वापसी

14लेकिन रब यह भी फ़रमाता है, “ऐसा वक़्त
आनेवाला है कि लोग क़सम खाते वक़्त नहीं
कहेंगे, ‘रब की हयात की क़सम जो इसराईलियों
को मिसर से निकाल लाया।’ 15इसके बजाए वह
कहेंगे, ‘रब की हयात की क़सम जो इसराईलियों
को शिमाली मुल्क और उन दीगर ममालिक से
निकाल लाया जिनमें उसने उन्हें मुंतशिर कर दिया
था।’ क्योंकि मैं उन्हें उस मुल्क में वापस लाऊँगा
जो मैंने उनके बापदादा को दिया था।”

आनेवाली सज़ा

16लेकिन मौजूदा हाल के बारे में रब फ़रमाता
है, “मैं बहुत-से माहीगीर भेज दूँगा जो जाल
डालकर उन्हें पकड़ेंगे। इसके बाद मैं मुतअद्दिद
शिकारी भेज दूँगा जो उनका ताक़्क़ुब करके उन्हें
हर जगह पकड़ेंगे, ख़ाह वह किसी पहाड़ या टीले
पर छुप गए हों, ख़ाह चट्टानों की किसी दराड़ में।
17क्योंकि उनकी तमाम हरकतें मुझे नज़र आती
हैं। मेरे सामने वह छुप नहीं सकते, और उनका
क़ुसूर मेरे सामने पोशीदा नहीं है। 18अब मैं उन्हें
उनके गुनाहों की दुगनी सज़ा दूँगा, क्योंकि उन्होंने
अपने मुरदार बुतों और घिनौनी चीज़ों से मेरी
मौरूसी ज़मीन को भरकर मेरे मुल्क की बेहुरमती
की है।”

यरमियाह का रब पर एतमाद

19ऐ रब, तू मेरी क़ुव्वत और मेरा क़िला है,
मुसीबत के दिन मैं तुझमें पनाह लेता हूँ। दुनिया
की इंतहा से अक़वाम तेरे पास आकर कहेंगी,
“हमारे बापदादा को मीरास में झूट ही मिला, ऐसे
बेकार बुत जो उनकी मदद न कर सके। 20इनसान
किस तरह अपने लिए ख़ुदा बना सकता है?
उसके बुत तो ख़ुदा नहीं हैं।”

21रब फ़रमाता है, “चुनाँचे इस बार मैं उन्हें
सहीह पहचान अता करूँगा। वह मेरी क़ुव्वत और
ताक़त को पहचान लेंगे, और वह जान लेंगे कि
मेरा नाम रब है।

यहूदाह का गुनाह और उस की सज़ा

17 ऐ यहूदाह के लोगो, तुम्हारा गु-
नाह तुम्हारी ज़िंदगियों का अन-
मिट हिस्सा बन गया है। उसे हीरे की नोक
रखनेवाले लोहे के आले से तुम्हारे दिलों की
तख़्तियों और तुम्हारी क़ुरबानगाहों के सींगों पर
कंदा किया गया है। 2न सिर्फ़ तुम बल्कि तुम्हारे
बच्चे भी अपनी क़ुरबानगाहों और असीरत देवी
के खंबों को याद करते हैं, ख़ाह वह घने दरख़्तों
के साये में या ऊँची जगहों पर क्यों न हों। 3ऐ मेरे
पहाड़ जो देहात से घिरा हुआ है, तेरे पूरे मुल्क पर
गुनाह का असर है, इसलिए मैं होने दूँगा कि सब
कुछ लूट लिया जाएगा। तेरा माल, तेरे ख़ज़ाने

और तेरी ऊँची जगहों की क़ुरबानगाहें सब छीन ली जाएँगी।

4अपने क़ुसूर के सबब से तुझे अपनी मौरूसी मिलकियत छोड़नी पड़ेगी, वह मिलकियत जो तुझे मेरी तरफ़ से मिली थी। मैं तुझे तेरे दुश्मनों का ग़ुलाम बना दूँगा, और तू एक नामालूम मुल्क में बसेगा। क्योंकि तुम लोगों ने मुझे तैश दिलाया है, और अब तुम पर मेरा ग़ज़ब कभी न बुझनेवाली आग की तरह भड़कता रहेगा।"

मुख़्तलिफ़ फ़रमान

5रब फ़रमाता है, "उस पर लानत जिसका दिल रब से दूर होकर सिर्फ़ इनसान और उसी की ताक़त पर भरोसा रखता है।
6वह रेगिस्तान में झाड़ी की मानिंद होगा, उसे किसी भी अच्छी चीज़ का तजरबा नहीं होगा बल्कि वह बयाबान के ऐसे पथरीले और कल्लरवाले इलाक़ों में बसेगा जहाँ कोई और नहीं रहता।
7लेकिन मुबारक है वह जो रब पर भरोसा रखता है, जिसका एतमाद उसी पर है।
8वह पानी के किनारे पर लगे उस दरख़्त की मानिंद है जिसकी जड़ें नहर तक फैली हुई हैं। झुलसानेवाली गरमी भी आए तो उसे डर नहीं, बल्कि उसके पत्ते हरे-भरे रहते हैं। काल भी पड़े तो वह परेशान नहीं होता बल्कि वक़्त पर फल लाता रहता है।

9दिल हद से ज़्यादा फ़रेबदेह है, और उसका इलाज नामुमकिन है। कौन उसका सहीह इल्म रखता है?
10मैं, रब ही दिल की तफ़तीश करता हूँ। मैं हर एक की बातिनी हालत जाँचकर उसे उसके चाल-चलन और अमल का मुनासिब अज्र देता हूँ।

11जिस शख़्स ने ग़लत तरीक़े से दौलत जमा की है वह उस तीतर की मानिंद है जो किसी दूसरे के अंडों पर बैठ जाता है। क्योंकि ज़िंदगी के उरूज पर उसे सब कुछ छोड़ना पड़ेगा, और आख़िरकार उस की हमाक़त सब पर ज़ाहिर हो जाएगी।"

12हमारा मक़दिस अल्लाह का जलाली तख़्त है जो अज़ल से अज़ीम है।
13ऐ रब, तू ही इसराईल की उम्मीद है। तुझे तर्क करनेवाले सब शरमिंदा हो जाएंगे। तुझसे दूर होनेवाले ख़ाक में मिलाए जाएंगे, क्योंकि उन्होंने रब को छोड़ दिया है जो ज़िंदगी के पानी का सरचश्मा है।

मदद के लिए यरमियाह की दरख़ास्त

14ऐ रब, तू ही मुझे शफ़ा दे तो मुझे शफ़ा मिलेगी। तू ही मुझे बचा तो मैं बचूँगा। क्योंकि तू ही मेरा फ़ख़र है।
15लोग मुझसे पूछते रहते हैं, "रब का जो कलाम तूने पेश किया वह कहाँ है? उसे पूरा होने दे!"
16मैंने तो इसरार नहीं किया था कि तेरे पीछे गल्लाबानी करूँ, न मैंने कभी ख़ाहिश रखी कि मुसीबत का दिन आए। तू ही यह सब कुछ जानता है; जो भी बात मेरे मुँह से निकली है वह तेरे सामने है।
17अब मेरे लिए दहशत का बाइस न बन! मुसीबत के दिन मैं तुझमें ही पनाह लेता हूँ।
18मेरा ताक़्क़ुब करनेवाले शरमिंदा हो जाएँ, लेकिन मेरी रुसवाई न हो। उन पर दहशत छा जाए, लेकिन मैं इससे बचा रहूँ। उन पर मुसीबत का दिन नाज़िल कर, उनको दो बार कुचलकर ख़ाक में मिला दे।

सबत का दिन मनाओ

19रब मुझसे हमकलाम हुआ, "शहर के अवामी दरवाज़े में खड़ा हो जा, जिसे यहूदाह के बादशाह इस्तेमाल करते हैं जब शहर में आते और उससे निकलते हैं। इसी तरह यरूशलम के दीगर दरवाज़ों में भी खड़ा हो जा।
20वहाँ लोगों से कह, 'ऐ दरवाज़ों में से गुज़रनेवालो, रब का कलाम सुनो! ऐ यहूदाह के बादशाहो और यहूदाह और यरूशलम के तमाम बाशिंदो, मेरी तरफ़ कान लगाओ!

21रब फ़रमाता है कि अपनी जान ख़तरे में न डालो बल्कि ध्यान दो कि तुम सबत के दिन मालो-असबाब शहर में न लाओ और उसे उठाकर शहर के दरवाज़ों में दाख़िल न हो।
22न सबत के दिन बोझ उठाकर अपने घर से कहीं और ले जाओ, न कोई और काम करो, बल्कि उसे

इस तरह मनाना कि मख़सूसो-मुक़द्दस हो। मैंने
तुम्हारे बापदादा को यह करने का हुक्म दिया
था, 23लेकिन उन्होंने मेरी न सुनी, न तवज्जुह
दी बल्कि अपने मौक़िफ़ पर अड़े रहे और न मेरी
सुनी, न मेरी तरबियत क़बूल की।

24रब फ़रमाता है कि अगर तुम वाक़ई मेरी
सुनो और सबत के दिन अपना मालो-असबाब
इस शहर में न लाओ बल्कि आराम करने से यह
दिन मख़सूसो-मुक़द्दस मानो 25तो फिर आइंदा
भी दाऊद की नसल के बादशाह और सरदार
इस शहर के दरवाज़ों में से गुज़रेंगे। तब वह
घोड़ों और रथों पर सवार होकर अपने अफ़सरों
और यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदों के साथ
शहर में आते-जाते रहेंगे। अगर तुम सबत को
मानो तो यह शहर हमेशा तक आबाद रहेगा।
26फिर पूरे मुल्क से लोग यहाँ आएँगे। यहूदाह
के शहरों और यरूशलम के गिर्दो-नवाह के देहात
से, बिनयमीन के क़बायली इलाक़े से, मग़रिब
के नशेबी पहाड़ी इलाक़े से, पहाड़ी इलाक़े से
और दश्ते-नजब से सब अपनी क़ुरबानियाँ लाकर
रब के घर में पेश करेंगे। उनकी तमाम भस्म
होनेवाली क़ुरबानियाँ, ज़बह, ग़ल्ला, बख़ूर और
सलामती की क़ुरबानियाँ रब के घर में चढ़ाई
जाएँगी। 27लेकिन अगर तुम मेरी न सुनो और
सबत का दिन मख़सूसो-मुक़द्दस न मानो तो फिर
तुम्हें सख़्त सज़ा मिलेगी। अगर तुम सबत के दिन
अपना मालो-असबाब शहर में लाओ तो मैं इन्हीं
दरवाज़ों में एक न बुझनेवाली आग लगा दूँगा जो
जलती जलती यरूशलम के महलों को भस्म कर
देगी’।”

अल्लाह अज़ीम कुम्हार है

18 रब यरमियाह से हमकलाम हुआ,
2“उठ और कुम्हार के घर में जा! वहाँ
मैं तुझसे हमकलाम हूँगा।” 3चुनाँचे मैं कुम्हार के
घर में पहुँच गया। उस वक़्त वह चाक पर काम
कर रहा था। 4लेकिन मिट्टी का जो बरतन वह
अपने हाथों से तश्कील दे रहा था वह ख़राब हो
गया। यह देखकर कुम्हार ने उसी मिट्टी से नया
बरतन बना दिया जो उसे ज़्यादा पसंद था।

5तब रब मुझसे हमकलाम हुआ, 6“ऐ
इसराईल, क्या मैं तुम्हारे साथ वैसा सुलूक नहीं
कर सकता जैसा कुम्हार अपने बरतन से करता
है? जिस तरह मिट्टी कुम्हार के हाथ में तश्कील
पाती है उसी तरह तुम मेरे हाथ में तश्कील पाते
हो।” यह रब का फ़रमान है। 7“कभी मैं एलान
करता हूँ कि किसी क़ौम या सलतनत को जड़
से उखाड़ दूँगा, उसे गिराकर तबाह कर दूँगा।
8लेकिन कई बार यह क़ौम अपनी ग़लत राह
को तर्क कर देती है। इस सूरत में मैं पछताकर
उस पर वह आफ़त नहीं लाता जो मैंने लाने को
कहा था। 9कभी मैं किसी क़ौम या सलतनत
को पनीरी की तरह लगाने और तामीर करने का
एलान भी करता हूँ। 10लेकिन अफ़सोस, कई
दफ़ा यह क़ौम मेरी नहीं सुनती बल्कि ऐसा काम
करने लगती है जो मुझे नापसंद है। इस सूरत में
मैं पछताकर उस पर वह मेहरबानी नहीं करता
जिसका एलान मैंने किया था।

11अब यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदों से
मुख़ातिब होकर कह, ‘रब फ़रमाता है कि मैं तुम
पर आफ़त लाने की तैयारियाँ कर रहा हूँ, मैंने
तुम्हारे ख़िलाफ़ मनसूबा बाँध लिया है। चुनाँचे हर
एक अपनी ग़लत राह से हटकर वापस आए, हर
एक अपना चाल-चलन और अपना रवैया दुरुस्त
करे।’ 12लेकिन अफ़सोस, यह एतराज़ करेंगे,
‘दफ़ा करो! हम अपने ही मनसूबे जारी रखेंगे।
हर एक अपने शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक़
ही ज़िंदगी गुज़ारेगा’।”

क़ौम रब को भूल गई है

13इसलिए रब फ़रमाता है, “दीगर अक़-
वाम से दरियाफ़्त करो कि उनमें कभी ऐसी बात
सुनने में आई है। कुँवारी इसराईल से निहायत
घिनौना जुर्म हुआ है! 14क्या लुबनान की
पथरीली चोटियों की बर्फ़ कभी पिघलकर ख़त्म
हो जाती है? क्या दूर-दराज़ चश्मों से बहनेवाला

बर्फ़ीला पानी कभी थम जाता है? 15लेकिन मेरी क़ौम मुझे भूल गई है। यह लोग बातिल बुतों के सामने बख़ूर जलाते हैं, उन चीज़ों के सामने जिनके बाइस वह ठोकर खाकर क़दीम राहों से हट गए हैं और अब कच्चे रास्तों पर चल रहे हैं। 16इसलिए उनका मुल्क वीरान हो जाएगा, एक ऐसी जगह जिसे दूसरे अपने मज़ाक़ का निशाना बनाएँगे। जो भी गुज़रे उसके रोंगटे खड़े हो जाएंगे, वह अफ़सोस से अपना सर हिलाएगा। 17दुश्मन आएगा तो मैं अपनी क़ौम को उसके आगे आगे मुंतशिर करूँगा। जिस तरह गर्द मशरिक़ी हवा के तेज़ झोंकों से उड़कर बिखर जाती है उसी तरह वह तित्तर-बित्तर हो जाएंगे। जब आफ़त उन पर नाज़िल होगी तो मैं उनकी तरफ़ रुजू नहीं करूँगा बल्कि अपना मुँह उनसे फेर लूँगा।”

यरमियाह के ख़िलाफ़ साज़िश

18यह सुनकर लोग आपस में कहने लगे, “आओ, हम यरमियाह के ख़िलाफ़ मनसूबे बाँधें, क्योंकि उस की बातें सहीह नहीं हैं। न इमाम शरीअत की हिदायत से, न दानिशमंद अच्छे मशवरों से, और न नबी अल्लाह के कलाम से महरूम हो जाएगा। आओ, हम ज़बानी उस पर हमला करें और उस की बातों पर ध्यान न दें, ख़ाह वह कुछ भी क्यों न कहे।”

19ऐ रब, मुझ पर तवज्जुह दे और उस पर ग़ौर कर जो मेरे मुख़ालिफ़ कह रहे हैं। 20क्या इनसान को नेक काम के बदले में बुरा काम करना चाहिए? क्योंकि उन्होंने मुझे फँसाने के लिए गढ़ा खोदकर तैयार कर रखा है। याद कर कि मैंने तेरे हुज़ूर खड़े होकर उनके लिए शफ़ाअत की ताकि तेरा ग़ज़ब उन पर नाज़िल न हो। 21अब होने दे कि उनके बच्चे भूके मर जाएँ और वह ख़ुद तलवार की ज़द में आएँ। उनकी बीवियाँ बेऔलाद और शौहरों से महरूम हो जाएँ। उनके आदमियों को मौत के घाट उतारा जाए, उनके नौजवान जंग में लड़ते लड़ते हलाक हो जाएँ। 22अचानक उन पर जंगी दस्ते ला ताकि उनके घरों से चीख़ों की आवाज़ें बुलंद हों। क्योंकि उन्होंने मुझे पकड़ने के लिए गढ़ा खोदा है, उन्होंने मेरे पाँवों को फँसाने के लिए मेरे रास्ते में फंदे छुपा रखे हैं।

23ऐ रब, तू उनकी मुझे क़त्ल करने की तमाम साज़िशें जानता है। उनका क़ुसूर मुआफ़ न कर, और उनके गुनाहों को न मिटा बल्कि उन्हें हमेशा याद कर। होने दे कि वह ठोकर खाकर तेरे सामने गिर जाएँ। जब तेरा ग़ज़ब नाज़िल होगा तो उनसे भी निपट ले।

क़ौम मिट्टी के टूटे हुए बरतन की मानिंद होगी

19 रब ने हुक्म दिया, “कुम्हार के पास जाकर मिट्टी का बरतन ख़रीद ले। फिर अवाम के कुछ बुज़ुर्गों और चंद एक बुज़ुर्ग इमामों को अपने साथ लेकर 2शहर से निकल जा। वादीए-बिन-हिन्नूम में चला जा जो शहर के दरवाज़े बनाम ‘ठीकरे का दरवाज़ा’ के सामने है। वहाँ वह कलाम सुना जो मैं तुझे सुनाने को कहूँगा। 3उन्हें बता,

‘ऐ यहूदाह के बादशाहो और यरूशलम के बाशिंदो, रब का कलाम सुनो! रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि मैं इस मक़ाम पर ऐसी आफ़त नाज़िल करूँगा कि जिसे भी इसकी ख़बर मिलेगी उसके कान बजेंगे। 4क्योंकि उन्होंने मुझे तर्क करके इस मक़ाम को अजनबी माबूदों के हवाले कर दिया है। जिन बुतों से न उनके बापदादा और न यहूदाह के बादशाह कभी वाक़िफ़ थे उनके हुज़ूर उन्होंने क़ुरबानियाँ पेश कीं। नीज़, उन्होंने इस जगह को बेक़ुसूरों के ख़ून से भर दिया है। 5उन्होंने ऊँची जगहों पर बाल देवता के लिए क़ुरबानगाहें तामीर कीं ताकि अपने बेटों को उन पर जलाकर उसे पेश करें। मैंने यह करने का कभी हुक्म नहीं दिया था। न मैंने कभी इसका ज़िक्र किया, न कभी मेरे ज़हन में इसका ख़याल तक आया।

6चुनाँचे ख़बरदार! रब फ़रमाता है कि ऐसा वक़्त आनेवाला है जब यह वादी “तूफ़त” या “बिन-हिन्नूम” नहीं कहलाएगी बल्कि “वादीए-

क़त्लो-ग़ारत।” 7इस जगह मैं यहूदाह और
यरूशलम के मनसूबे ख़ाक में मिला दूँगा। मैं होने
दूँगा कि उनके दुश्मन उन्हें मौत के घाट उतारें, कि
जो उन्हें जान से मारना चाहें वह इसमें कामयाब हो
जाएँ। तब मैं उनकी लाशों को परिंदों और दरिंदों
को खिला दूँगा। 8मैं इस शहर को हौलनाक तरीक़े
से तबाह करूँगा। तब दूसरे उसे अपने मज़ाक़ का
निशाना बनाएँगे। जो भी गुज़रे उसके रोंगटे खड़े
हो जाएंगे। उस की तबाहशुदा हालत देखकर वह
“तौबा तौबा” कहेगा। 9जब उनका जानी दुश्मन
शहर का मुहासरा करेगा तो इतना सख़्त काल
पड़ेगा कि बाशिंदे अपने बच्चों और एक दूसरे को
खा जाएंगे।’

10फिर साथवालों की मौजूदगी में मिट्टी के
बरतन को ज़मीन पर पटख़ दे। 11साथ साथ उन्हें
बता, ‘रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि जिस तरह
मिट्टी का बरतन पाश पाश हो गया है और उस
की मरम्मत नामुमकिन है उसी तरह मैं इस क़ौम
और शहर को भी पाश पाश कर दूँगा। उस वक़्त
लाशों को तूफ़त में दफ़नाया जाएगा, क्योंकि
कहीं और जगह नहीं मिलेगी। 12इस शहर और
इसके बाशिंदों के साथ मैं यही सुलूक करूँगा।
मैं इस शहर को तूफ़त की मानिंद बना दूँगा। यह
रब का फ़रमान है। 13यरूशलम के घर यहूदाह
के शाही महलों समेत तूफ़त की तरह नापाक
हो जाएंगे। हाँ, वह तमाम घर नापाक हो जाएंगे
जिनकी छतों पर तमाम आसमानी लशकर के
लिए बख़ूर जलाया जाता और अजनबी माबूदों
को मै की नज़रें पेश की जाती थीं’।”

14इसके बाद यरमियाह वादीए-तूफ़त से
वापस आया जहाँ रब ने उसे नबुव्वत करने के
लिए भेजा था। फिर वह रब के घर के सहन में खड़े
होकर तमाम लोगों से मुख़ातिब हुआ, 15“रब्बुल-
अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि
सुनो! मैं इस शहर और यहूदाह के दीगर शहरों
पर वह तमाम मुसीबत लाने को हूँ जिसका एलान
मैंने किया है। क्योंकि तुम अड़ गए हो और मेरी
बातें सुनने के लिए तैयार ही नहीं।”

यरमियाह फ़शहूर इमाम से टकरा जाता है

20 उस वक़्त एक इमाम रब के घर में
था जिसका नाम फ़शहूर बिन इम्मेर
था। वह रब के घर का आला अफ़सर था। जब
यरमियाह की यह पेशगोइयाँ उसके कानों तक
पहुँच गईं 2तो उसने यरमियाह नबी की पिटाई
करवाकर उसके पाँव काठ में ठोंक दिए। यह काठ
रब के घर से मुलहिक़ शहर के ऊपरवाले दरवाज़े
बनाम बिनयमीन में था।

3अगले दिन फ़शहूर ने उसे आज़ाद कर दिया।
तब यरमियाह ने उससे कहा, “रब ने आपका एक
नया नाम रखा है। अब से आपका नाम फ़शहूर
नहीं है बल्कि ‘चारों तरफ़ दहशत ही दहशत।’
4क्योंकि रब फ़रमाता है, ‘मैं होने दूँगा कि तू
अपने लिए और अपने तमाम दोस्तों के लिए
दहशत की अलामत बनेगा। क्योंकि तू अपनी
आँखों से अपने दोस्तों की क़त्लो-ग़ारत देखेगा। मैं
यहूदाह के तमाम बाशिंदों को बाबल के बादशाह
के क़ब्ज़े में कर दूँगा जो बाज़ को मुल्के-बाबल में
ले जाएगा और बाज़ को मौत के घाट उतार देगा।
5मैं इस शहर की सारी दौलत दुश्मन के हवाले
कर दूँगा, और वह इसकी तमाम पैदावार, क़ीमती
चीज़ें और शाही ख़ज़ाने लूटकर मुल्के-बाबल ले
जाएगा। 6ऐ फ़शहूर, तू भी अपने घरवालों समेत
मुल्के-बाबल में जिलावतन होगा। वहाँ तू मरकर
दफ़नाया जाएगा। और न सिर्फ़ तू बल्कि तेरे वह
सारे दोस्त भी जिन्हें तूने झूटी पेशगोइयाँ सुनाई
हैं’।”

यरमियाह की रब से शिकायत

7ऐ रब, तूने मुझे मनवाया, और मैं मान गया। तू
मुझे अपने क़ाबू में लाकर मुझ पर ग़ालिब आया।
अब मैं पूरा दिन मज़ाक़ का निशाना बना रहता हूँ।
हर एक मेरी हँसी उड़ाता रहता है। 8क्योंकि जब
भी मैं अपना मुँह खोलता हूँ तो मुझे चिल्लाकर
‘ज़ुल्मो-तबाही’ का नारा लगाना पड़ता है। चुनाँचे
मैं रब के कलाम के बाइस पूरा दिन गालियों
और मज़ाक़ का निशाना बना रहता हूँ। 9लेकिन

अगर मैं कहूँ, “आइंदा मैं न रब का ज़िक्र करूँगा,
न उसका नाम लेकर बोलूँगा” तो फिर उसका
कलाम आग की तरह मेरे दिल में भड़कने लगता
है। और यह आग मेरी हड्डियों में बंद रहती और
कभी नहीं निकलती। मैं इसे बरदाश्त करते करते
थक गया हूँ, यह मेरे बस की बात नहीं रही।
10मुतअद्दिद लोगों की सरगोशियाँ मेरे कानों तक
पहुँचती हैं। वह कहते हैं, “चारों तरफ़ दहशत ही
दहशत? यह क्या कह रहा है? उस की रपट
लिखवाओ! आओ, हम उस की रिपोर्ट करें।”
मेरे तमाम नाम-निहाद दोस्त इस इंतज़ार में हैं कि
मैं फिसल जाऊँ। वह कहते हैं, “शायद वह धोका
खाकर फँस जाए और हम उस पर ग़ालिब आकर
उससे इंतक़ाम ले सकें।”

11लेकिन रब ज़बरदस्त सूरमे की तरह मेरे
साथ है, इसलिए मेरा ताक़्क़ुब करनेवाले मुझ
पर ग़ालिब नहीं आएँगे बल्कि ख़ुद ठोकर खाकर
गिर जाएंगे। उनके मुँह काले हो जाएंगे, क्योंकि
वह नाकाम हो जाएंगे। उनकी रुसवाई हमेशा ही
याद रहेगी और कभी नहीं मिटेगी। 12ऐ रब्बुल-
अफ़वाज, तू रास्तबाज़ का मुआयना करके दिल
और ज़हन को परखता है। अब बख़्श दे कि मैं
अपनी आँखों से वह इंतक़ाम देखूँ जो तू मेरे
मुख़ालिफ़ों से लेगा। क्योंकि मैंने अपना मामला
तेरे ही सुपुर्द कर दिया है। 13रब की मद्हसराई
करो! रब की तमजीद करो! क्योंकि उसने
ज़रूरतमंद की जान को शरीरों के हाथ से बचा
लिया है।

मैं क्यों पैदा हुआ?

14उस दिन पर लानत जब मैं पैदा हुआ! वह
दिन मुबारक न हो जब मेरी माँ ने मुझे जन्म दिया।
15उस आदमी पर लानत जिसने मेरे बाप को बड़ी
ख़ुशी दिलाकर इत्तला दी कि तेरे बेटा पैदा हुआ
है! 16वह उन शहरों की मानिंद हो जिनको रब ने
बेरहमी से ख़ाक में मिला दिया। अल्लाह करे कि
सुबह के वक़्त उसे चीख़ें सुनाई दें और दोपहर के
वक़्त जंग के नारे। 17क्योंकि उसे मुझे उसी वक़्त
मार डालना चाहिए था जब मैं अभी माँ के पेट में
था। फिर मेरी माँ मेरी क़ब्र बन जाती, उसका पाँव
हमेशा तक भारी रहता। 18मैं क्यों माँ के पेट में से
निकला? क्या सिर्फ़ इसलिए कि मुसीबत और
ग़म देखूँ और ज़िंदगी के इख़्तिताम तक रुसवाई
की ज़िंदगी गुज़ारूँ?

बाबल की फ़ौज यरूशलम पर फ़तह पाएगी

21 एक दिन सिदक़ियाह बादशाह
ने फ़शहूर बिन मलकियाह और
मासियाह के बेटे सफ़नियाह इमाम को यरमियाह
के पास भेज दिया। उसके पास पहुँचकर उन्होंने
कहा, 2“बाबल का बादशाह नबूकदनज़्ज़र हम
पर हमला कर रहा है। शायद जिस तरह रब ने
माज़ी में कई बार किया इस दफ़ा भी हमारी
मदद करके नबूकदनज़्ज़र को मोजिज़ाना तौर
पर यरूशलम को छोड़ने पर मजबूर करे। रब से
इसके बारे में दरियाफ़्त करें।”

तब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल
हुआ, 3और उसने दोनों आदमियों से कहा,
“सिदक़ियाह को बताओ कि 4रब जो इसराईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है, ‘बेशक शहर से निकलकर
बाबल की मुहासरा करनेवाली फ़ौज और उसके
बादशाह से लड़ो। लेकिन मैं तुम्हें पीछे धकेलकर
शहर में पनाह लेने पर मजबूर करूँगा। वहाँ
उसके बीच में ही तुम अपने हथियारों समेत
जमा हो जाओगे। 5मैं ख़ुद अपना हाथ बढ़ाकर
बड़ी क़ुदरत से तुम्हारे साथ लड़ूँगा, मैं अपने
ग़ुस्से और तैश का पूरा इज़हार करूँगा, मेरा
सख़्त ग़ज़ब तुम पर नाज़िल होगा। 6शहर के
बाशिंदे मेरे हाथ से हलाक हो जाएंगे, ख़ाह
इनसान हों या हैवान। मोहलक वबा उन्हें मौत
के घाट उतार देगी।’ 7रब फ़रमाता है, ‘इसके
बाद मैं यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह को उसके
अफ़सरों और बाक़ी बाशिंदों समेत बाबल के
बादशाह नबूकदनज़्ज़र के हवाले कर दूँगा। वबा,
तलवार और काल से बचनेवाले सब अपने जानी
दुश्मन के क़ाबू में आ जाएंगे। तब नबूकदनज़्ज़र

बेरहमी से उन्हें तलवार से मार देगा। न उसे उन पर
तरस आएगा, न वह हमदर्दी का इज़हार करेगा।’
8इस क़ौम को बता कि रब फ़रमाता है, ‘मैं
तुम्हें अपनी जान को बचाने का मौक़ा फ़राहम
करता हूँ। इससे फ़ायदा उठाओ, वरना तुम मरोगे।
9अगर तुम तलवार, काल या वबा से मरना चाहो
तो इस शहर में रहो। लेकिन अगर तुम अपनी जान
को बचाना चाहो तो शहर से निकलकर अपने
आपको बाबल की मुहासरा करनेवाली फ़ौज के
हवाले करो। जो कोई यह करे उस की जान छूट
जाएगी।’[a]

10रब फ़रमाता है, ‘मैंने अटल फ़ैसला किया है
कि इस शहर पर मेहरबानी नहीं करूँगा बल्कि इसे
नुक़सान पहुँचाऊँगा। इसे शाहे-बाबल के हवाले
कर दिया जाएगा जो इसे आग लगाकर तबाह
करेगा।’

11यहूदाह के शाही ख़ानदान से कह, ‘रब का
कलाम सुनो! 12ऐ दाऊद के घराने, रब फ़रमाता
है कि हर सुबह लोगों का इनसाफ़ करो। जिसे लूट
लिया गया हो उसे ज़ालिम के हाथ से बचाओ!
ऐसा न हो कि मेरा ग़ज़ब तुम्हारी शरीर हरकतों
की वजह से तुम पर नाज़िल होकर आग की तरह
भड़क उठे और कोई न हो जो उसे बुझा सके।

13रब फ़रमाता है कि ऐ यरूशलम, तू वादी के
ऊपर ऊँची चट्टान पर रहकर फ़ख़र करती है कि
कौन हम पर हमला करेगा, कौन हमारे घरों में
घुस सकता है? लेकिन अब मैं ख़ुद तुझसे निपट
लूँगा। 14रब फ़रमाता है कि मैं तुम्हारी हरकतों
का पूरा अज्र दूँगा। मैं यरूशलम के जंगल में ऐसी
आग लगा दूँगा जो इर्दगिर्द सब कुछ भस्म कर
देगी’।”

शाही महल नज़रे-आतिश हो जाएगा

22 रब ने फ़रमाया, “शाहे-यहूदाह के
महल के पास जाकर मेरा यह कलाम
सुना, 2‘ऐ यहूदाह के बादशाह, रब का फ़रमान
सुन! ऐ तू जो दाऊद के तख़्त पर बैठा है, अपने
मुलाज़िमों और महल के दरवाज़ों में आनेवाले
लोगों समेत मेरी बात पर ग़ौर कर! 3रब फ़रमाता
है कि इनसाफ़ और रास्ती क़ायम रखो। जिसे लूट
लिया गया है उसे ज़ालिम के हाथ से छुड़ाओ।
परदेसी, यतीम और बेवा को मत दबाना, न उनसे
ज़्यादती करना, और इस जगह बेक़ुसूर लोगों की
ख़ूनरेज़ी मत करना। 4अगर तुम एहतियात से इस
पर अमल करो तो आइंदा भी दाऊद की नसल के
बादशाह अपने अफ़सरों और रिआया के साथ रथों
और घोड़ों पर सवार होकर इस महल में दाख़िल
होंगे। 5लेकिन अगर तुम मेरी इन बातों की न सुनो
तो मेरे नाम की क़सम! यह महल मलबे का ढेर
बन जाएगा। यह रब का फ़रमान है।

6क्योंकि रब शाहे-यहूदाह के महल के बारे में
फ़रमाता है कि तू जिलियाद जैसा ख़ुशगवार और
लुबनान की चोटी जैसा ख़ूबसूरत था। लेकिन अब
मैं तुझे बयाबान में बदल दूँगा, तू ग़ैरआबाद शहर
की मानिंद हो जाएगा। 7मैं आदमियों को तुझे
तबाह करने के लिए मख़सूस करके हर एक को
हथियार से लैस करूँगा, और वह देवदार के तेरे
उम्दा शहतीरों को काटकर आग में झोंक देंगे।
8तब मुतअद्दिद क़ौमों के अफ़राद यहाँ से गुज़रकर
पूछेंगे कि रब ने इस जैसे बड़े शहर के साथ ऐसा
सुलूक क्यों किया? 9उन्हें जवाब दिया जाएगा,
वजह यह है कि इन्होंने रब अपने ख़ुदा का अहद
तर्क करके अजनबी माबूदों की पूजा और ख़िदमत
की है’।”

यहुआख़ज़ बादशाह वापस नहीं आएगा

10इसलिए गिर्याओ-ज़ारी न करो कि यूसियाह
बादशाह कूच कर गया है बल्कि उस पर मातम
करो जिसे जिलावतन किया गया है, क्योंकि
वह कभी वापस नहीं आएगा, कभी अपना वतन
दुबारा नहीं देखेगा।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : वह ग़नीमत के तौर पर अपनी जान को बचाएगा।

11क्योंकि रब यूसियाह के बेटे और जा-नशीन
सल्लूम यानी यहुआख़ज़ के बारे में फ़रमाता है,
“यहुआख़ज़ यहाँ से चला गया है और कभी
वापस नहीं आएगा। 12जहाँ उसे गिरिफ़्तार करके
पहुँचाया गया है वहीं वह वफ़ात पाएगा। वह यह
मुल्क दुबारा कभी नहीं देखेगा।

यहूयक़ीम पर इलज़ाम

13यहूयक़ीम बादशाह पर अफ़सोस जो
नाजायज़ तरीक़े से अपना घर तामीर कर रहा है,
जो नाइनसाफ़ी से उस की दूसरी मनज़िल बना
रहा है। क्योंकि वह अपने हमवतनों को मुफ़्त
में काम करने पर मजबूर कर रहा है और उन्हें
उनकी मेहनत का मुआवज़ा नहीं दे रहा। 14वह
कहता है, ‘मैं अपने लिए कुशादा महल बनवा
लूँगा जिसकी दूसरी मनज़िल पर बड़े बड़े कमरे
होंगे। मैं घर में बड़ी खिड़कियाँ बनवाकर दीवारों
को देवदार की लकड़ी से ढाँप दूँगा। इसके बाद मैं
उसे सुर्ख़ रंग से आरास्ता करूँगा।’ 15क्या देवदार
की शानदार इमारतें बनवाने से यह साबित होता
है कि तू बादशाह है? हरगिज़ नहीं! तेरे बाप को
भी खाने-पीने की हर चीज़ मुयस्सर थी, लेकिन
उसने इसका ख़याल किया कि इनसाफ़ और
रास्ती क़ायम रहे। नतीजे में उसे बरकत मिली।
16उसने तवज्जुह दी कि ग़रीबों और ज़रूरतमंदों
का हक़ मारा न जाए, इसी लिए उसे कामयाबी
हासिल हुई।” रब फ़रमाता है, “जो इसी तरह
ज़िंदगी गुज़ारे वही मुझे सहीह तौर पर जानता
है। 17लेकिन तू फ़रक़ है। तेरी आँखें और दिल
नाजायज़ नफ़ा कमाने पर तुले रहते हैं। न तू
बेक़ुसूर को क़त्ल करने से, न ज़ुल्म करने या
जबरन कुछ लेने से झिजकता है।”

18चुनाँचे रब यहूदाह के बादशाह यहू-
यक़ीम बिन यूसियाह के बारे में फ़रमाता है, “लोग
उस पर मातम नहीं करेंगे कि ‘हाय मेरे भाई, हाय
मेरी बहन,’ न वह रोकर कहेंगे, ‘हाय, मेरे आक़ा!
हाय, उस की शान जाती रही है।’ 19इसके बजाए
उसे गधे की तरह दफ़नाया जाएगा। लोग उसे
घसीटकर बाहर यरूशलम के दरवाज़ों से कहीं दूर
फेंक देंगे।

यहूयाकीन बादशाह को दुश्मन के हवाले किया जाएगा

20ऐ यरूशलम, लुबनान पर चढ़कर ज़ारो-
क़तार रो! बसन की बुलंदियों पर जाकर चीख़ें
मार! अबारीम के पहाड़ों की चोटियों पर आहो-
ज़ारी कर! क्योंकि तेरे तमाम आशिक़[a] पाश
पाश हो गए हैं। 21मैंने तुझे उस वक़्त आगाह
किया था जब तू सुकून से ज़िंदगी गुज़ार रही
थी, लेकिन तूने कहा, ‘मैं नहीं सुनूँगी।’ तेरी
जवानी से ही तेरा यही रवैया रहा। उस वक़्त से
लेकर आज तक तूने मेरी नहीं सुनी। 22तेरे तमाम
गल्लाबानों को आँधी उड़ा ले जाएगी, और तेरे
आशिक़ जिलावतन हो जाएंगे। तब तू अपनी बुरी
हरकतों के बाइस शरमिंदा हो जाएगी, क्योंकि
तेरी ख़ूब रुसवाई हो जाएगी। 23बेशक इस वक़्त
तू लुबनान में रहती है और तेरा बसेरा देवदार के
दरख़्तों में है। लेकिन जल्द ही तू आहें भर भरकर
दर्दे-ज़ह में मुब्तला हो जाएगी, तू जन्म देनेवाली
औरत की तरह पेचो-ताब खाएगी।”

24रब फ़रमाता है, “ऐ यहूदाह के बादशाह
यहूयाकीन[a] बिन यहूयक़ीम, मेरी हयात की
क़सम! ख़ाह तू मेरे दहने हाथ की मुहरदार
अंगूठी क्यों न होता तो भी मैं तुझे उतारकर
फेंक देता। 25मैं तुझे उस जानी दुश्मन के हवाले
करूँगा जिससे तू डरता है यानी बाबल के बादशाह
नबूकदनज़्ज़र और उस की क़ौम के हवाले। 26मैं
तुझे तेरी माँ समेत एक अजनबी मुल्क में फेंक
दूँगा। जहाँ तुम पैदा नहीं हुए वहीं वफ़ात पाओगे।
27तुम वतन में वापस आने के शदीद आरज़ूमंद
होगे लेकिन उसमें कभी नहीं लौटोगे।”

28लोग एतराज़ करते हैं, “क्या यह आदमी
यहूयाकीन[a] वाक़ई ऐसा हक़ीर और टूटा-फूटा
बरतन है जो किसी को भी पसंद नहीं आता?

[a]आशिक़ से मुराद यहूदाह के इत्तहादी हैं।

उसे अपने बच्चों समेत क्यों ज़ोर से निकालकर
किसी नामालूम मुल्क में फेंक दिया जाएगा?”
29ऐ मुल्क, ऐ मुल्क, ऐ मुल्क! रब का पैग़ाम
सुन! 30रब फ़रमाता है, “रजिस्टर में दर्ज करो
कि यह आदमी बेऔलाद है, कि यह उम्र-भर
नाकाम रहेगा। क्योंकि उसके बच्चों में से कोई
दाऊद के तख़्त पर बैठकर यहूदाह की हुकूमत
करने में कामयाब नहीं होगा।”

रब क़ौम के सहीह गल्लाबान मुक़र्रर करेगा

23 रब फ़रमाता है, “उन गल्लाबानों पर
अफ़सोस जो मेरी चरागाह की भेड़ों
को तबाह करके मुंतशिर कर रहे हैं।” 2इसलिए
रब जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, “ऐ मेरी
क़ौम को चरानेवाले गल्लाबानो, मैं तुम्हारी शरीर
हरकतों की मुनासिब सज़ा दूँगा, क्योंकि तुमने
मेरी भेड़ों की फ़िकर नहीं की बल्कि उन्हें मुंतशिर
करके तित्तर-बित्तर कर दिया है।” रब फ़रमाता है,
“सुनो, मैं तुम्हारी शरीर हरकतों से निपट लूँगा।
3मैं ख़ुद अपने रेवड़ की बची हुई भेड़ों को
जमा करूँगा। जहाँ भी मैंने उन्हें मुंतशिर कर
दिया था, उन तमाम ममालिक से मैं उन्हें उनकी
अपनी चरागाह में वापस लाऊँगा। वहाँ वह फलें-
फूलेंगे, और उनकी तादाद बढ़ती जाएगी। 4मैं
ऐसे गल्लाबानों को उन पर मुक़र्रर करूँगा जो
उनकी सहीह गल्लाबानी करेंगे। आइंदा न वह
ख़ौफ़ खाएँगे, न घबरा जाएंगे। एक भी गुम नहीं
हो जाएगा।” यह रब का फ़रमान है।

रब सहीह बादशाह मुक़र्रर करेगा

5रब फ़रमाता है, “वह वक़्त आनेवाला है
कि मैं दाऊद के लिए एक रास्तबाज़ कोंपल
फूटने दूँगा, एक ऐसा बादशाह जो हिकमत से
हुकूमत करेगा, जो मुल्क में इनसाफ़ और रास्ती
क़ायम रखेगा। 6उसके दौरे-हुकूमत में यहूदाह को
छुटकारा मिलेगा और इसराईल महफ़ूज़ ज़िंदगी
गुज़ारेगा। वह ‘रब हमारी रास्तबाज़ी’ कहलाएगा।
7चुनाँचे वह वक़्त आनेवाला है जब लोग क़सम
खाते वक़्त नहीं कहेंगे, ‘रब की हयात की क़सम
जो इसराईलियों को मिसर से निकाल लाया।’
8इसके बजाए वह कहेंगे, ‘रब की हयात की
क़सम जो इसराईलियों को शिमाली मुल्क और
दीगर उन तमाम ममालिक से निकाल लाया
जिनमें उसने उन्हें मुंतशिर कर दिया था।’ उस
वक़्त वह दुबारा अपने ही मुल्क में बसेंगे।” यह
रब का फ़रमान है।

झूटे नबियों पर यक़ीन मत करना

9झूटे नबियों को देखकर मेरा दिल टूट गया
है, मेरी तमाम हड्डियाँ लरज़ रही हैं। मैं नशे में धुत
आदमी की मानिंद हूँ। मै से मग़लूब शख़्स की तरह
मैं रब और उसके मुक़द्दस अलफ़ाज़ के सबब से
डगमगा रहा हूँ।
10यह मुल्क ज़िनाकारों से भरा हुआ है,
इसलिए उस पर अल्लाह की लानत है। ज़मीन
झुलस गई है, बयाबान की चरागाहों की हरियाली
मुरझा गई है। नबी ग़लत राह पर दौड़ रहे हैं, और
जिसमें वह ताक़तवर हैं वह ठीक नहीं। 11रब
फ़रमाता है, “नबी और इमाम दोनों ही बेदीन
हैं। मैंने अपने घर में भी उनका बुरा काम पाया
है। 12इसलिए जहाँ भी चलें वह फिसल जाएंगे,
वह अंधेरे में ठोकर खाकर गिर जाएंगे। क्योंकि मैं
मुक़र्ररा वक़्त पर उन पर आफ़त लाऊँगा।” यह
रब का फ़रमान है।
13“मैंने देखा कि सामरिया के नबी बाल
के नाम में नबुव्वत करके मेरी क़ौम इसराईल
को ग़लत राह पर लाए। यह क़ाबिले-घिन है,
14लेकिन जो कुछ मुझे यरूशलम के नबियों में
नज़र आता है वह उतना ही घिनौना है। वह ज़िना
करते और झूट के पैरोकार हैं। साथ साथ वह
बदकारों की हौसलाअफ़्ज़ाई भी करते हैं, और

[b]इबरानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ कूनियाह मुस्तामल
है।

नतीजे में कोई भी अपनी बदी से बाज़ नहीं
आता। मेरी नज़र में वह सब सदूम की मानिंद हैं।
हाँ, यरूशलम के बाशिंदे अमूरा के बराबर हैं।”
15इसलिए रब इन नबियों के बारे में फ़रमाता है,
“मैं उन्हें कड़वा खाना खिलाऊँगा और ज़हरीला
पानी पिलाऊँगा, क्योंकि यरूशलम के नबियों ने
पूरे मुल्क में बेदीनी फैलाई है।”

16रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “नबियों की
पेशगोइयों पर ध्यान मत देना। वह तुम्हें फ़रेब दे
रहे हैं। क्योंकि वह रब का कलाम नहीं सुनाते
बल्कि महज़ अपने दिल में से उभरनेवाली रोया
पेश करते हैं। 17जो मुझे हक़ीर जानते हैं उन्हें
वह बताते रहते हैं, ‘रब फ़रमाता है कि हालात
सहीह-सलामत रहेंगे।’ जो अपने दिलों की ज़िद
के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हैं, उन सबको वह
तसल्ली देकर कहते हैं, ‘तुम पर आफ़त नहीं
आएगी।’ 18बात तो यह है : कौन रब की
मजलिस में शरीक हुआ है? वह देख ले और
उसका फ़रमान सुन ले! किसने तवज्जुह देकर
मेरा कलाम सुन लिया है?

19देखो, रब की ग़ज़बनाक आँधी चलने लगी
है, उसका तेज़ी से घूमता हुआ बगूला बेदीनों के
सरों पर मँडला रहा है। 20और रब का यह ग़ज़ब
उस वक़्त तक ठंडा नहीं होगा जब तक उसके दिल
का इरादा तकमील तक न पहुँच जाए। आनेवाले
दिनों में तुम्हें इसकी पूरी समझ आएगी।

21यह नबी दौड़कर अपनी बातें सुनाते रहते हैं
अगरचे मैंने उन्हें नहीं भेजा। गो मैं उनसे हमकलाम
नहीं हुआ तो भी यह पेशगोइयाँ करते हैं। 22अगर
यह मेरी मजलिस में शरीक होते तो मेरी क़ौम को
मेरे अलफ़ाज़ सुनाकर उसे उसके बुरे चाल-चलन
और ग़लत हरकतों से हटाने की कोशिश करते।”

23रब फ़रमाता है, “क्या मैं सिर्फ़ क़रीब का
ख़ुदा हूँ? हरगिज़ नहीं! मैं दूर का ख़ुदा भी हूँ।
24क्या कोई मेरी नज़र से ग़ायब हो सकता है?
नहीं, ऐसी जगह है नहीं जहाँ वह मुझसे छुप सके।
आसमानो-ज़मीन मुझसे मामूर रहते हैं।” यह रब
का फ़रमान है।

25“इन नबियों की बातें मुझ तक पहुँच गई
हैं। यह मेरा नाम लेकर झूट बोलते हैं कि मैंने
ख़ाब देखा है, ख़ाब देखा है! 26यह नबी झूटी
पेशगोइयाँ और अपने दिलों के वसवसे सुनाने से
कब बाज़ आएँगे? 27जो ख़ाब वह एक दूसरे
को बताते हैं उनसे वह चाहते हैं कि मेरी क़ौम
मेरा नाम यों भूल जाए जिस तरह उनके बापदादा
बाल की पूजा करने से मेरा नाम भूल गए थे।”
28रब फ़रमाता है, “जिस नबी ने ख़ाब देखा हो
वह बेशक अपना ख़ाब बयान करे, लेकिन जिस
पर मेरा कलाम नाज़िल हुआ हो वह वफ़ादारी से
मेरा कलाम सुनाए। भूसे का गंदुम से क्या वास्ता
है?”

29रब फ़रमाता है, “क्या मेरा कलाम आग की
मानिंद नहीं? क्या वह हथौड़े की तरह चट्टान को
टुकड़े टुकड़े नहीं करता?” 30चुनाँचे रब फ़रमाता
है, “अब मैं उन नबियों से निपट लूँगा जो एक
दूसरे के पैग़ामात चुराकर दावा करते हैं कि वह
मेरी तरफ़ से हैं।” 31रब फ़रमाता है, “मैं उनसे
निपट लूँगा जो अपने शख़्सी ख़यालात सुनाकर
दावा करते हैं, ‘यह रब का फ़रमान है’।” 32रब
फ़रमाता है, “मैं उनसे निपट लूँगा जो झूटे ख़ाब
सुनाकर मेरी क़ौम को अपनी धोकेबाज़ी और
शेख़ी की बातों से ग़लत राह पर लाते हैं, हालाँकि
मैंने उन्हें न भेजा, न कुछ कहने को कहा था।
उन लोगों का इस क़ौम के लिए कोई भी फ़ायदा
नहीं।” यह रब का फ़रमान है।

रब के लिए तुम बोझ का बाइस हो

33“ऐ यरमियाह, अगर इस क़ौम के आम लोग
या इमाम या नबी तुझसे पूछें, ‘आज रब ने तुझ
पर कलाम का क्या बोझ नाज़िल किया है?’ तो
जवाब दे, ‘रब फ़रमाता है कि तुम ही मुझ पर
बोझ हो! लेकिन मैं तुम्हें उतार फेंकूँगा।’ 34और
अगर कोई नबी, इमाम या आम शख़्स दावा करे,
‘रब ने मुझ पर कलाम का बोझ नाज़िल किया है’
तो मैं उसे उसके घराने समेत सज़ा दूँगा।

35इसके बजाए एक दूसरे से सवाल करो कि
‘रब ने क्या जवाब दिया?’ या ‘रब ने क्या
फ़रमाया?’ 36आइंदा रब के पैग़ाम के लिए
लफ़्ज़ ‘बोझ’ इस्तेमाल न करो, क्योंकि जो भी
बात तुम करो वह तुम्हारा अपना बोझ होगी।
क्योंकि तुम ज़िंदा ख़ुदा के अलफ़ाज़ को तोड़-
मरोड़कर बयान करते हो, उस कलाम को जो
रब्बुल-अफ़वाज हमारे ख़ुदा ने नाज़िल किया है।
37चुनाँचे आइंदा नबी से सिर्फ़ इतना ही पूछो
कि ‘रब ने तुझे क्या जवाब दिया?’ या ‘रब ने
क्या फ़रमाया?’ 38लेकिन अगर तुम ‘रब का
बोझ’ कहने पर इसरार करो तो रब का जवाब
सुनो! चूँकि तुम कहते हो कि ‘मुझ पर रब का
बोझ नाज़िल हुआ है’ गो मैंने यह मना किया
था, 39इसलिए मैं तुम्हें अपनी याद से मिटाकर
यरूशलम समेत अपने हुज़ूर से दूर फेंक दूँगा, गो
मैंने ख़ुद यह शहर तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को
फ़राहम किया था। 40मैं तुम्हारी अबदी रुसवाई
कराऊँगा, और तुम्हारी शरमिंदगी हमेशा तक याद
रहेगी।”

अंजीर की दो टोकरियाँ

24 एक दिन रब ने मुझे रोया दि-
खाई। उस वक़्त बाबल का बादशाह
नबूकदनज़्ज़र यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन[a]
बिन यहूयक़ीम को यहूदाह के बुज़ुर्गों, कारीगरों
और लोहारों समेत बाबल में जिलावतन कर चुका
था।

रोया में मैंने देखा कि अंजीरों से भरी दो
टोकरियाँ रब के घर के सामने पड़ी हैं। 2एक
टोकरी में मौसम के शुरू में पकनेवाले बेहतरीन
अंजीर थे जबकि दूसरी में ख़राब अंजीर थे जो
खाए भी नहीं जा सकते थे।

3रब ने मुझसे सवाल किया, “ऐ यरमियाह,
तुझे क्या नज़र आता है?” मैंने जवाब दिया,
“मुझे अंजीर नज़र आते हैं। कुछ बेहतरीन हैं
जबकि दूसरे इतने ख़राब हैं कि उन्हें खाया भी
नहीं जा सकता।”

4तब रब मुझसे हमकलाम हुआ, 5“रब
इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि अच्छे अंजीर
यहूदाह के वह लोग हैं जिन्हें मैंने जिलावतन करके
मुल्के-बाबल में भेजा है। उन्हें मैं मेहरबानी की
निगाह से देखता हूँ। 6क्योंकि उन पर मैं अपने
करम का इज़हार करके उन्हें इस मुल्क में वापस
लाऊँगा। मैं उन्हें गिराऊँगा नहीं बल्कि तामीर
करूँगा, उन्हें जड़ से उखाड़ूँगा नहीं बल्कि पनीरी
की तरह लगाऊँगा। 7मैं उन्हें समझदार दिल अता
करूँगा ताकि वह मुझे जान लें, वह पहचान लें कि
मैं रब हूँ। तब वह मेरी क़ौम होंगे और मैं उनका
ख़ुदा हूँगा, क्योंकि वह पूरे दिल से मेरे पास वापस
आएँगे।

8लेकिन बाक़ी लोग उन ख़राब अंजीरों की
मानिंद हैं जो खाए नहीं जाते। उनके साथ मैं वह
सुलूक करूँगा जो ख़राब अंजीरों के साथ किया
जाता है। उनमें यहूदाह का बादशाह सिदक़ियाह,
उसके अफ़सर, यरूशलम और यहूदाह में बचे हुए
लोग और मिसर में पनाह लेनेवाले सब शामिल हैं।
9मैं होने दूँगा कि वह दुनिया के तमाम ममालिक
के लिए दहशत और आफ़त की अलामत बन
जाएंगे। जहाँ भी मैं उन्हें मुंतशिर करूँगा वहाँ वह
इबरतअंगेज़ मिसाल बन जाएंगे। हर जगह लोग
उनकी बेइज़्ज़ती, उन्हें लान-तान और उन पर
लानत करेंगे। 10जब तक वह उस मुल्क में से
मिट न जाएँ जो मैंने उनके बापदादा को दे दिया
था उस वक़्त तक मैं उनके दरमियान तलवार,
काल और मोहलक बीमारियाँ भेजता रहूँगा।”

मुल्के-बाबल में 70 साल रहने की पेशगोई

25 यहूयक़ीम बिन यूसियाह की हुकूमत
के चौथे साल में अल्लाह का कलाम
यरमियाह पर नाज़िल हुआ। उसी साल बाबल का
बादशाह नबूकदनज़्ज़र तख़्तनशीन हुआ था। यह

[a]इबरानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह
मुस्तामल है।

कलाम यहूदाह के तमाम बाशिंदों के बारे में था।
2चुनाँचे यरमियाह नबी ने यरूशलम के तमाम
बाशिंदों और यहूदाह की पूरी क़ौम से मुख़ातिब
होकर कहा,

3"23 साल से रब का कलाम मुझ पर नाज़िल
होता रहा है यानी यूसियाह बिन अमून की हुकूमत
के तेरहवें साल से लेकर आज तक। बार बार
मैं तुम्हें पैग़ामात सुनाता रहा हूँ, लेकिन तुमने
ध्यान नहीं दिया। 4मेरे अलावा रब दीगर तमाम
नबियों को भी बार बार तुम्हारे पास भेजता रहा,
लेकिन तुमने न सुना, न तवज्जुह दी, 5गो मेरे
ख़ादिम तुम्हें बार बार आगाह करते रहे, 'तौबा
करो! हर एक अपनी ग़लत राहों और बुरी हरकतों
से बाज़ आकर वापस आए। फिर तुम हमेशा तक
उस मुल्क में रहोगे जो रब ने तुम्हें और तुम्हारे
बापदादा को अता किया था। 6अजनबी माबूदों
की पैरवी करके उनकी ख़िदमत और पूजा मत
करना! अपने हाथों के बनाए हुए बुतों से मुझे तैश
न दिलाना, वरना मैं तुम्हें नुक़सान पहुँचाऊँगा'।"

7रब फ़रमाता है, "अफ़सोस! तुमने मेरी
न सुनी बल्कि मुझे अपने हाथों के बनाए हुए
बुतों से ग़ुस्सा दिलाकर अपने आपको नुक़सान
पहुँचाया।" 8रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "चूँकि
तुमने मेरे पैग़ामात पर ध्यान न दिया, 9इसलिए
मैं शिमाल की तमाम क़ौमों और अपने ख़ादिम
बाबल के बादशाह नबूकदनज़्ज़र को बुला लूँगा
ताकि वह इस मुल्क, इसके बाशिंदों और गिर्दो-
नवाह के ममालिक पर हमला करें। तब यह
सफ़हाए-हस्ती से यों मिट जाएंगे कि लोगों के
रोंगटे खड़े हो जाएंगे और वह उनका मज़ाक़
उड़ाएँगे। यह इलाक़े दायमी खंडरात बन जाएंगे।
10मैं उनके दरमियान ख़ुशी-ओ-शादमानी और
दूल्हे दुलहन की आवाज़ें बंद कर दूँगा। चक्कियाँ
ख़ामोश पड़ जाएँगी और चराग़ बुझ जाएंगे।
11पूरा मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाएगा, चारों
तरफ़ मलबे के ढेर नज़र आएँगे। तब तुम और
इर्दगिर्द की क़ौमें 70 साल तक शाहे-बाबल की
ख़िदमत करोगे।

12लेकिन 70 साल के बाद मैं शाहे-बाबल और
उस की क़ौम को मुनासिब सज़ा दूँगा। मैं मुल्के-
बाबल को यों बरबाद करूँगा कि वह हमेशा तक
वीरानो-सुनसान रहेगा। 13उस वक़्त मैं उस मुल्क
पर सब कुछ नाज़िल करूँगा जो मैंने उसके बारे
में फ़रमाया है, सब कुछ पूरा हो जाएगा जो इस
किताब में दर्ज है और जिसकी पेशगोई यरमियाह
ने तमाम अक़वाम के बारे में की है। 14उस वक़्त
उन्हें भी मुतअद्दिद क़ौमों और बड़े बड़े बादशाहों
की ख़िदमत करनी पड़ेगी। यों मैं उन्हें उनकी
हरकतों और आमाल का मुनासिब अज्र दूँगा।"

रब के ग़ज़ब का प्याला

15रब जो इसराईल का ख़ुदा है मुझसे
हमकलाम हुआ, "देख, मेरे हाथ में मेरे ग़ज़ब
से भरा हुआ प्याला है। इसे लेकर उन तमाम
क़ौमों को पिला दे जिनके पास मैं तुझे भेजता
हूँ। 16जो भी क़ौम यह पिए वह मेरी तलवार के
आगे डगमगाती हुई दीवाना हो जाएगी।"

17चुनाँचे मैंने रब के हाथ से प्याला लेकर उसे
उन तमाम अक़वाम को पिला दिया जिनके पास
रब ने मुझे भेजा। 18पहले यरूशलम और यहूदाह
के शहरों को उनके बादशाहों और बुज़ुर्गों समेत
ग़ज़ब का प्याला पीना पड़ा। तब मुल्क मलबे का
ढेर बन गया जिसे देखकर लोगों के रोंगटे खड़े
हो गए। आज तक वह मज़ाक़ और लानत का
निशाना है।

19फिर यके बाद दीगरे मुतअद्दिद क़ौमों को
ग़ज़ब का प्याला पीना पड़ा। ज़ैल में उनकी
फ़हरिस्त है : मिसर का बादशाह फ़िरौन, उसके
दरबारी, अफ़सर, पूरी मिसरी क़ौम 20और मुल्क
में बसनेवाले ग़ैरमुल्की, मुल्के-ऊज़ के तमाम
बादशाह,

फ़िलिस्ती बादशाह और उनके शहर अस्क़लून,
ग़ज़्ज़ा और अक़रून, नीज़ फ़िलिस्ती शहर
अशदूद का बचा-खुचा हिस्सा,

21अदोम, मोआब और अम्मोन,

22सूर और सैदा के तमाम बादशाह, बहीराए-
रूम के साहिली इलाक़े,
23ददान, तैमा और बूज़ के शहर, वह क़ौमें जो
रेगिस्तान के किनारे किनारे रहती हैं,
24मुल्के-अरब के तमाम बादशाह, रे-
गिस्तान में मिलकर बसनेवाले ग़ैरमुल्कियों के
बादशाह,
25ज़िमरी, ऐलाम और मादी के तमाम
बादशाह,
26शिमाल के दूरो-नज़दीक के तमाम बादशाह।
यके बाद दीगरे दुनिया के तमाम ममालिक को
ग़ज़ब का प्याला पीना पड़ा। आख़िर में शेशक के
बादशाह[a] को भी यह प्याला पीना पड़ा।
27फिर रब ने कहा, "उन्हें बता, 'रब्बुल-
अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि
ग़ज़ब का प्याला ख़ूब पियो! इतना पियो कि नशे
में आकर क़ै आने लगे। उस वक़्त तक पीते जाओ
जब तक तुम मेरी तलवार के आगे गिरकर पड़े न
रहो।' 28अगर वह तेरे हाथ से प्याला न लें बल्कि
उसे पीने से इनकार करें तो उन्हें बता, 'रब्बुल-
अफ़वाज ख़ुद फ़रमाता है कि पियो! 29देखो,
जिस शहर पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है उसी
पर मैं आफ़त लाने लगा हूँ। अगर मैंने उसी से
शुरू किया तो फिर तुम किस तरह बचे रहोगे?
यक़ीनन तुम्हें सज़ा मिलेगी, क्योंकि मैंने तय कर
लिया है कि दुनिया के तमाम बाशिंदे तलवार
की ज़द में आ जाएँ'।" यह रब्बुल-अफ़वाज का
फ़रमान है।

तमाम अक़वाम की अदालत

30"ऐ यरमियाह, उन्हें यह तमाम पेश-
गोइयाँ सुनाकर बता कि रब बुलंदियों से दहाड़ेगा।
उस की मुक़द्दस सुकूनतगाह से उस की कड़कती
आवाज़ निकलेगी, वह ज़ोर से अपनी चरागाह
के ख़िलाफ़ गरजेगा। जिस तरह अंगूर का रस
निकालनेवाले अंगूर को रौंदते वक़्त ज़ोर से नारे
लगाते हैं उसी तरह वह नारे लगाएगा, अलबत्ता
जंग के नारे। क्योंकि वह दुनिया के तमाम बाशिंदों
के ख़िलाफ़ जंग के नारे लगाएगा। 31उसका
शोर दुनिया की इंतहा तक गूँजेगा, क्योंकि रब
अदालत में अक़वाम से मुक़दमा लड़ेगा, वह
तमाम इनसानों का इनसाफ़ करके शरीरों को
तलवार के हवाले कर देगा।" यह रब का फ़रमान
है। 32रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "देखो, यके
बाद दीगरे तमाम क़ौमों पर आफ़त नाज़िल हो रही
है, ज़मीन की इंतहा से ज़बरदस्त तूफ़ान आ रहा
है। 33उस वक़्त रब के मारे हुए लोगों की लाशें
दुनिया के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पड़ी रहेंगी।
न कोई उन पर मातम करेगा, न उन्हें उठाकर दफ़न
करेगा। वह खेत में बिखरे गोबर की तरह ज़मीन
पर पड़ी रहेंगी।
34ऐ गल्लाबानो, वावैला करो! ऐ रेवड़ के
राहनुमाओ, राख में लोट-पोट हो जाओ! क्योंकि
वक़्त आ गया है कि तुम्हें ज़बह किया जाए।
तुम गिरकर नाज़ुक बरतन की तरह पाश पाश हो
जाओगे। 35गल्लाबान कहीं भी भागकर पनाह
नहीं ले सकेंगे, रेवड़ के राहनुमा बच ही नहीं
सकेंगे। 36सुनो! गल्लाबानों की चीख़ें और
रेवड़ के राहनुमाओं की आहें! क्योंकि रब
उनकी चरागाह को तबाह कर रहा है। 37पुरसुकून
मर्ग़ज़ारों का सत्यानास होगा जब रब का सख़्त
ग़ज़ब नाज़िल होगा, 38जब रब जवान शेरबबर
की तरह अपनी छुपने की जगह से निकलकर
लोगों पर टूट पड़ेगा। तब ज़ालिम की तेज़ तलवार
और रब का शदीद क़हर उनका मुल्क तबाह
करेगा।"

रब के घर में यरमियाह का पैग़ाम

26 जब यहूयक़ीम बिन यूसियाह यहूदाह
के तख़्त पर बैठ गया तो थोड़ी देर के
बाद रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ।
2रब ने फ़रमाया, "ऐ यरमियाह, रब के घर के
सहन में खड़ा होकर उन तमाम लोगों से मुख़ातिब
हो जो रब के घर में सिजदा करने के लिए यहूदाह

[a]ग़ालिबन इससे मुराद बाबल का बादशाह है।

के दीगर शहरों से आए हैं। उन्हें मेरा पूरा पैग़ाम
सुना दे, एक बात भी न छोड़! 3शायद वह सुनें
और हर एक अपनी बुरी राह से बाज़ आ जाए। इस
सूरत में मैं पछताकर उन पर वह सज़ा नाज़िल नहीं
करूँगा जिसका मनसूबा मैंने उनके बुरे आमाल
देखकर बाँध लिया है।

4उन्हें बता, 'रब फ़रमाता है कि मेरी सुनो और
मेरी उस शरीअत पर अमल करो जो मैंने तुम्हें
दी है। 5नीज़, नबियों के पैग़ामात पर ध्यान दो।
अफ़सोस, गो मैं अपने ख़ादिमों को बार बार
तुम्हारे पास भेजता रहा तो भी तुमने उनकी न
सुनी। 6अगर तुम आइंदा भी न सुनो तो मैं इस
घर को यों तबाह करूँगा जिस तरह मैंने सैला का
मक़दिस तबाह किया था। मैं इस शहर को भी
यों ख़ाक में मिला दूँगा कि इबरतअंगेज़ मिसाल
बन जाएगा। दुनिया की तमाम क़ौमों में जब कोई
अपने दुश्मन पर लानत भेजना चाहे तो वह कहेगा
कि उसका यरूशलम का-सा अंजाम हो'।"

यरमियाह की अदालत

7जब यरमियाह ने रब के घर में रब के यह
अलफ़ाज़ सुनाए तो इमामों, नबियों और तमाम
बाक़ी लोगों ने ग़ौर से सुना। 8यरमियाह ने उन्हें
सब कुछ पेश किया जो रब ने उसे सुनाने को
कहा था। लेकिन ज्योंही वह इख़्तिताम पर पहुँच
गया तो इमाम, नबी और बाक़ी तमाम लोग उसे
पकड़कर चीख़ने लगे, "तुझे मरना ही है! 9तू रब
का नाम लेकर क्यों कह रहा है कि रब का घर
सैला की तरह तबाह हो जाएगा, और यरूशलम
मलबे का ढेर बनकर ग़ैरआबाद हो जाएगा?"
ऐसी बातें कहकर तमाम लोगों ने रब के घर में
यरमियाह को घेरे रखा।

10जब यहूदाह के बुज़ुर्गों को इसकी ख़बर
मिली तो वह शाही महल से निकलकर रब के घर
के पास पहुँचे। वहाँ वह रब के घर के सहन के नए
दरवाज़े में बैठ गए ताकि यरमियाह की अदालत
करें। 11तब इमामों और नबियों ने बुज़ुर्गों और
तमाम लोगों के सामने यरमियाह पर इलज़ाम
लगाया, "लाज़िम है कि इस आदमी को सज़ाए-
मौत दी जाए! क्योंकि इसने इस शहर यरूशलम
के ख़िलाफ़ नबुव्वत की है। आपने अपने कानों से
यह बात सुनी है।"

12तब यरमियाह ने बुज़ुर्गों और बाक़ी तमाम
लोगों से कहा, "रब ने ख़ुद मुझे यहाँ भेजा ताकि
मैं रब के घर और यरूशलम के ख़िलाफ़ उन
तमाम बातों की पेशगोई करूँ जो आपने सुनी
हैं। 13चुनाँचे अपनी राहों और आमाल को दुरुस्त
करें! रब अपने ख़ुदा की सुनें ताकि वह पछताकर
आप पर वह सज़ा नाज़िल न करे जिसका एलान
उसने किया है। 14जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, मैं
तो आपके हाथ में हूँ। मेरे साथ वह सुलूक करें
जो आपको अच्छा और मुनासिब लगे। 15लेकिन
एक बात जान लें। अगर आप मुझे सज़ाए-मौत
दें तो आप बेक़ुसूर के क़ातिल ठहरेंगे। आप और
यह शहर उसके तमाम बाशिंदों समेत क़ुसूरवार
ठहरेंगे। क्योंकि रब ही ने मुझे आपके पास भेजा
ताकि आपके सामने ही यह बातें करूँ।"

16यह सुनकर बुज़ुर्गों और अवाम के तमाम
लोगों ने इमामों और नबियों से कहा, "यह आदमी
सज़ाए-मौत के लायक़ नहीं है! क्योंकि उसने रब
हमारे ख़ुदा का नाम लेकर हमसे बात की है।"

17फिर मुल्क के कुछ बुज़ुर्ग खड़े होकर पूरी
जमात से मुख़ातिब हुए, 18"जब हिज़क़ियाह
यहूदाह का बादशाह था तो मोरशत के रहनेवाले
नबी मीकाह ने नबुव्वत करके यहूदाह के तमाम
बाशिंदों से कहा, 'रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि
सिय्यून पर खेत की तरह हल चलाया जाएगा,
और यरूशलम मलबे का ढेर बन जाएगा। रब के
घर की पहाड़ी पर गुंजान जंगल उगेगा।' 19क्या
यहूदाह के बादशाह हिज़क़ियाह या यहूदाह के
किसी और शख़्स ने मीकाह को सज़ाए-मौत दी?
हरगिज़ नहीं, बल्कि हिज़क़ियाह ने रब का ख़ौफ़
मानकर उसका ग़ुस्सा ठंडा करने की कोशिश
की। नतीजे में रब ने पछताकर वह सज़ा उन पर
नाज़िल न की जिसका एलान वह कर चुका था।

सुनें, अगर हम यरमियाह को सज़ाए-मौत दें तो अपने आप पर सख़्त सज़ा लाएँगे।”

ऊरियाह नबी का क़त्ल

20उन दिनों में एक और नबी भी यरमियाह
की तरह रब का नाम लेकर नबुव्वत करता था।
उसका नाम ऊरियाह बिन समायाह था, और
वह क़िरियत-यारीम का रहनेवाला था। उसने
भी यरूशलम और यहूदाह के ख़िलाफ़ वही
पेशगोइयाँ सुनाईं जो यरमियाह सुनाता था।
21जब यहूयक़ीम बादशाह और उसके तमाम
फ़ौजी और सरकारी अफ़सरों ने उस की बातें
सुनीं तो बादशाह ने उसे मार डालने की कोशिश
की। लेकिन ऊरियाह को इसकी ख़बर मिली, और
वह डरकर भाग गया। चलते चलते वह मिसर
पहुँच गया। 22तब यहूयक़ीम ने इलनातन बिन
अकबोर और चंद एक आदमियों को वहाँ भेज
दिया। 23वहाँ पहुँचकर वह ऊरियाह को पकड़कर
यहूयक़ीम के पास वापस लाए। बादशाह के हुक्म
पर उसका सर क़लम कर दिया गया और उस की
नाश को निचले तबक़े के लोगों के क़ब्रिस्तान में
दफ़नाया गया।
24लेकिन यरमियाह की जान छूट गई। उसे
अवाम के हवाले न किया गया, गो वह उसे मार
डालना चाहते थे, क्योंकि अख़ीक़ाम बिन साफ़न
उसके हक़ में था।

जुए की अलामत

27 जब सिदक़ियाह बिन यूसियाह
यहूदाह के तख़्त पर बैठ गया तो
रब यरमियाह से हमकलाम हुआ। 2रब ने मुझे
फ़रमाया,
“अपने लिए जुआ और उसके रस्से बनाकर
उसे अपनी गरदन पर रख ले! 3फिर अदोम,
मोआब, अम्मोन, सूर और सैदा के शाही सफ़ीरों
के पास जा जो इस वक़्त यरूशलम में सिदक़ियाह
बादशाह के पास जमा हैं। 4उनके हाथ उनके
बादशाहों को पैग़ाम भेज, ‘रब्बुल-अफ़वाज जो
इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि 5मैंने
अपना हाथ बढ़ाकर बड़ी क़ुदरत से दुनिया को
इनसानो-हैवान समेत ख़लक़ किया है, और मैं
ही यह चीज़ें उसे अता करता हूँ जो मेरी नज़र में
लायक़ है। 6इस वक़्त मैं तुम्हारे तमाम ममालिक
को अपने ख़ादिम शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र के
हवाले करूँगा। जंगली जानवर तक सब उसके
ताबे हो जाएंगे। 7तमाम अक़वाम उस की और
उसके बेटे और पोते की ख़िदमत करेंगी। फिर
एक वक़्त आएगा कि बाबल की हुकूमत ख़त्म हो
जाएगी। तब मुतअद्दिद क़ौमें और बड़े बड़े बादशाह
उसे अपने ही ताबे कर लेंगे। 8लेकिन इस वक़्त
लाज़िम है कि हर क़ौम और सलतनत शाहे-बाबल
नबूकदनज़्ज़र की ख़िदमत करके उसका जुआ
क़बूल करे। जो इनकार करे उसे मैं तलवार, काल
और मोहलक बीमारियों से उस वक़्त तक सज़ा
दूँगा जब तक वह पूरे तौर पर नबूकदनज़्ज़र के
हाथ से तबाह न हो जाए। यह रब का फ़रमान है।
9चुनाँचे अपने नबियों, फ़ालगीरों, ख़ाब
देखनेवालों, क़िस्मत का हाल बतानेवालों और
जादूगरों पर ध्यान न दो जब वह तुम्हें बताते हैं
कि तुम शाहे-बाबल की ख़िदमत नहीं करोगे।
10क्योंकि वह तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ पेश कर रहे
हैं जिनका सिर्फ़ यह नतीजा निकलेगा कि मैं
तुम्हें वतन से निकालकर मुंतशिर करूँगा और
तुम हलाक हो जाओगे। 11लेकिन जो क़ौम शाहे-
बाबल का जुआ क़बूल करके उस की ख़िदमत
करे उसे मैं उसके अपने मुल्क में रहने दूँगा, और
वह उस की खेतीबाड़ी करके उसमें बसेगी। यह
रब का फ़रमान है’।”
12मैंने यही पैग़ाम यहूदाह के बादशाह
सिदक़ियाह को भी सुनाया। मैं बोला, “शाहे-
बाबल के जुए को क़बूल करके उस की और
उस की क़ौम की ख़िदमत करो तो तुम ज़िंदा
रहोगे। 13क्या ज़रूरत है कि तू अपनी क़ौम समेत
तलवार, काल और मोहलक बीमारियों की ज़द में
आकर हलाक हो जाए? क्योंकि रब ने फ़रमाया
है कि हर क़ौम जो शाहे-बाबल की ख़िदमत करने

से इनकार करे उसका यही अंजाम होगा। 14उन नबियों पर तवज्जुह मत देना जो तुमसे कहते हैं, ‘तुम शाहे-बाबल की ख़िदमत नहीं करोगे।’ उनकी यह पेशगोई झूट ही है। 15रब फ़रमाता है, ‘मैंने उन्हें नहीं भेजा बल्कि वह मेरा नाम लेकर झूटी पेशगोइयाँ सुना रहे हैं। अगर तुम उनकी सुनो तो मैं तुम्हें मुंतशिर कर दूँगा, और तुम नबुव्वत करनेवाले उन नबियों समेत हलाक हो जाओगे’।”

16फिर मैं इमामों और पूरी क़ौम से मुख़ातिब हुआ, “रब फ़रमाता है, ‘उन नबियों की न सुनो जो नबुव्वत करके कहते हैं कि अब रब के घर का सामान जल्द ही मुल्के-बाबल से वापस लाया जाएगा। वह तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ बयान कर रहे हैं। 17उन पर तवज्जुह मत देना। बाबल के बादशाह की ख़िदमत करो तो तुम ज़िंदा रहोगे। यह शहर क्यों मलबे का ढेर बन जाए? 18अगर यह लोग वाक़ई नबी हों और इन्हें रब का कलाम मिला हो तो इन्हें रब के घर, शाही महल और यरूशलम में अब तक बचे हुए सामान के लिए दुआ करनी चाहिए। वह रब्बुल-अफ़वाज से शफ़ाअत करें कि यह चीज़ें मुल्के-बाबल न ले जाई जाएँ बल्कि यहीं रहें।

19-22अब तक पीतल के सतून, पीतल का हौज़ बनाम समुंदर, पानी के बासन उठानेवाली हथगाड़ियाँ और इस शहर का बाक़ी बचा हुआ सामान यहीं मौजूद है। नबूकदनज़्ज़र ने इन्हें उस वक़्त अपने साथ नहीं लिया था जब वह यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन[a] बिन यहूयक़ीम को यरूशलम और यहूदाह के तमाम शुरफ़ा समेत जिलावतन करके मुल्के-बाबल ले गया था। लेकिन रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है इन चीज़ों के बारे में फ़रमाता है कि जितनी भी क़ीमती चीज़ें अब तक रब के घर, शाही महल या यरूशलम में कहीं और बच गई हैं वह भी मुल्के-बाबल में पहुँचाई जाएँगी। वहीं वह उस वक़्त तक रहेंगी जब तक मैं उन पर नज़र डालकर उन्हें इस जगह वापस न लाऊँ।’ यह रब का फ़रमान है।”

हननियाह नबी की मुख़ालफ़त

28 उसी साल के पाँचवें महीने[b] में जिबऊन का रहनेवाला नबी हननियाह बिन अज़्ज़ूर रब के घर में आया। उस वक़्त यानी सिदक़ियाह की हुकूमत के चौथे साल में वह इमामों और क़ौम की मौजूदगी में मुझसे मुख़ातिब हुआ, 2“रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि मैं शाहे-बाबल का जुआ तोड़ डालूँगा। 3दो साल के अंदर अंदर मैं रब के घर का वह सारा सामान इस जगह वापस पहुँचाऊँगा जो शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र यहाँ से निकालकर बाबल ले गया था। 4उस वक़्त मैं यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन[a] बिन यहूयक़ीम और यहूदाह के दीगर तमाम जिलावतनों को भी बाबल से वापस लाऊँगा। क्योंकि मैं यक़ीनन शाहे-बाबल का जुआ तोड़ डालूँगा। यह रब का फ़रमान है।”

5यह सुनकर यरमियाह ने इमामों और रब के घर में खड़े बाक़ी परस्तारों की मौजूदगी में हननियाह नबी से कहा, 6“आमीन! रब ऐसा ही करे, वह तेरी पेशगोई पूरी करके रब के घर का सामान और तमाम जिलावतनों को बाबल से इस जगह वापस लाए। 7लेकिन उस पर तवज्जुह दे जो मैं तेरी और पूरी क़ौम की मौजूदगी में बयान करता हूँ! 8क़दीम ज़माने से लेकर आज तक जितने नबी मुझसे और तुझसे पहले ख़िदमत करते आए हैं उन्होंने मुतअद्दिद मुल्कों और बड़ी बड़ी सलतनतों के बारे में नबुव्वत की थी कि उन पर जंग, आफ़त और मोहलक बीमारियाँ नाज़िल होंगी। 9चुनाँचे ख़बरदार! जो नबी सलामती की पेशगोई करे उस की तसदीक़ उस वक़्त होगी जब उस की पेशगोई पूरी हो जाएगी। उसी वक़्त लोग

[a]इबरानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

[b]जुलाई ता अगस्त।

जान लेंगे कि उसे वाक़ई रब की तरफ़ से भेजा
गया है।”
10तब हननियाह ने लकड़ी के जुए को
यरमियाह की गरदन पर से उतारकर उसे तोड़
दिया। 11तमाम लोगों के सामने उसने कहा, “रब
फ़रमाता है कि दो साल के अंदर अंदर मैं इसी
तरह शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र का जुआ तमाम
क़ौमों की गरदन पर से उतारकर तोड़ डालूँगा।”
तब यरमियाह वहाँ से चला गया।
12इस वाक़िये के थोड़ी देर बाद रब यरमियाह
से हमकलाम हुआ, 13“जा, हननियाह को बता,
‘रब फ़रमाता है कि तूने लकड़ी का जुआ
तो तोड़ दिया है, लेकिन उस की जगह तूने
अपनी गरदन पर लोहे का जुआ रख लिया है।’
14क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा
है फ़रमाता है कि मैंने लोहे का जुआ इन तमाम
क़ौमों पर रख दिया है ताकि वह नबूकदनज़्ज़र की
ख़िदमत करें। और न सिर्फ़ यह उस की ख़िदमत
करेंगे बल्कि मैं जंगली जानवरों को भी उसके हाथ
में कर दूँगा।”
15फिर यरमियाह ने हननियाह से कहा, “ऐ
हननियाह, सुन! गो रब ने तुझे नहीं भेजा तो
भी तूने इस क़ौम को झूट पर भरोसा रखने पर
आमादा किया है। 16इसलिए रब फ़रमाता है, ‘मैं
तुझे रूए-ज़मीन पर से मिटाने को हूँ। इसी साल तू
मर जाएगा, इसलिए कि तूने रब से सरकश होने
का मशवरा दिया है’।”
17और ऐसा ही हुआ। उसी साल के सातवें
महीने[a] यानी दो महीने के बाद हननियाह नबी
कूच कर गया।

यरमियाह जिलावतनों को ख़त भेजता है

29 एक दिन यरमियाह नबी ने यरू-
शलम से एक ख़त मुल्के-बाबल
भेजा। यह ख़त उन बचे हुए बुज़ुर्गों, इमामों,
नबियों और बाक़ी इसराईलियों के नाम लिखा था
जिन्हें नबूकदनज़्ज़र बादशाह जिलावतन करके
बाबल ले गया था। 2उनमें यहूयाकीन[b] बादशाह,
उस की माँ और दरबारी, और यहूदाह और
यरूशलम के बुज़ुर्ग, कारीगर और लोहार शामिल
थे। 3यह ख़त इलियासा बिन साफ़न और
जमरियाह बिन ख़िलक़ियाह के हाथ बाबल पहुँचा
जिन्हें यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह ने बाबल में
शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र के पास भेजा था। ख़त
में लिखा था,
4“रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, ‘ऐ तमाम जिलावतनो जिन्हें मैं
यरूशलम से निकालकर बाबल ले गया हूँ, ध्यान
से सुनो!
5बाबल में घर बनाकर उनमें बसने लगो। बाग़
लगाकर उनका फल खाओ। 6शादी करके बेटे-
बेटियाँ पैदा करो। अपने बेटे-बेटियों की शादी
कराओ ताकि उनके भी बच्चे पैदा हो जाएँ। ध्यान
दो कि मुल्के-बाबल में तुम्हारी तादाद कम न हो
जाए बल्कि बढ़ जाए। 7उस शहर की सलामती
के तालिब रहो जिसमें मैं तुम्हें जिलावतन करके
ले गया हूँ। रब से उसके लिए दुआ करो! क्योंकि
तुम्हारी सलामती उसी की सलामती पर मुनहसिर
है।’
8रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, ‘ख़बरदार! तुम्हारे दरमियान
रहनेवाले नबी और क़िस्मत का हाल बताने-
वाले तुम्हें फ़रेब न दें। उन ख़ाबों पर तवज्जुह मत
देना जो यह देखते हैं।’ 9रब फ़रमाता है, ‘यह
मेरा नाम लेकर तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ सुनाते हैं,
गो मैंने उन्हें नहीं भेजा।’ 10क्योंकि रब फ़रमाता
है, ‘तुम्हें बाबल में रहते हुए कुल 70 साल गुज़र
जाएंगे। लेकिन इसके बाद मैं तुम्हारी तरफ़ रुजू
करूँगा, मैं अपना पुरफ़ज़ल वादा पूरा करके तुम्हें
वापस लाऊँगा।’ 11क्योंकि रब फ़रमाता है, ‘मैं
उन मनसूबों से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ जो मैंने तुम्हारे लिए
बाँधे हैं। यह मनसूबे तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचाएँगे

[a]सितंबर ता अक्तूबर।

[b]इबरानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

बल्कि तुम्हारी सलामती का बाइस होंगे, तुम्हें उम्मीद दिलाकर एक अच्छा मुस्तक़बिल फ़राहम
करेंगे। 12उस वक़्त तुम मुझे पुकारोगे, तुम आकर
मुझसे दुआ करोगे तो मैं तुम्हारी सुनूँगा। 13तुम
मुझे तलाश करके पा लोगे। क्योंकि अगर तुम
पूरे दिल से मुझे ढूँडो 14तो मैं होने दूँगा कि तुम
मुझे पाओ।' यह रब का फ़रमान है। 'फिर मैं तुम्हें बहाल करके उन तमाम क़ौमों और मक़ामों से जमा करूँगा जहाँ मैंने तुम्हें मुंतशिर कर दिया था। और मैं तुम्हें उस मुल्क में वापस लाऊँगा जिससे मैंने तुम्हें निकालकर जिलावतन कर दिया था।' यह रब का फ़रमान है।

15तुम्हारा दावा है कि रब ने यहाँ बाबल में भी
हमारे लिए नबी बरपा किए हैं। 16-17लेकिन रब
का जवाब सुनो! दाऊद के तख़्त पर बैठनेवाले बादशाह और यरूशलम में बचे हुए तमाम बाशिंदों के बारे में रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, 'तुम्हारे जितने भाई जिलावतनी से बच गए हैं उनके ख़िलाफ़ मैं तलवार, काल और मोहलक बीमारियाँ भेज दूँगा। मैं उन्हें गले हुए अंजीरों की मानिंद बना दूँगा, जो ख़राब होने की वजह से खाए
नहीं जाएंगे। 18मैं तलवार, काल और मोहलक
बीमारियों से उनका यों ताक़्क़ुब करूँगा कि दुनिया के तमाम ममालिक उनकी हालत देखकर घबरा जाएंगे। जिस क़ौम में भी मैं उन्हें मुंतशिर करूँगा वहाँ लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। किसी पर लानत भेजते वक़्त लोग कहेंगे कि उसे यहूदाह के बाशिंदों का-सा अंजाम नसीब हो। हर जगह वह मज़ाक़ और रुसवाई का निशाना बन जाएंगे।
19क्यों? इसलिए कि उन्होंने मेरी न सुनी, गो मैं अपने ख़ादिमों यानी नबियों के ज़रीए बार बार उन्हें पैग़ामात भेजता रहा। लेकिन तुमने भी मेरी न सुनी।' यह रब का फ़रमान है।

20अब रब का फ़रमान सुनो, तुम सब जो जिलावतन हो चुके हो, जिन्हें मैं यरूशलम से निकालकर बाबल भेज चुका हूँ।
21रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, 'अख़ियब बिन क़ौलायाह और सिदक़ियाह बिन मासियाह मेरा नाम लेकर तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ सुनाते हैं। इसलिए मैं उन्हें शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र के हाथ में दूँगा जो उन्हें
तेरे देखते देखते सज़ाए-मौत देगा। 22उनका
अंजाम इबरतअंगेज़ मिसाल बन जाएगा। किसी पर लानत भेजते वक़्त यहूदाह के जिलावतन कहेंगे, "रब तेरे साथ सिदक़ियाह और अख़ियब का-सा सुलूक करे जिन्हें शाहे-बाबल ने आग
में भून लिया!" 23क्योंकि उन्होंने इसराईल में
बेदीन हरकतें की हैं। अपने पड़ोसियों की बीवियों के साथ ज़िना करने के साथ साथ उन्होंने मेरा नाम लेकर ऐसे झूटे पैग़ाम सुनाए हैं जो मैंने उन्हें सुनाने को नहीं कहा था। मुझे इसका पूरा इल्म है, और मैं इसका गवाह हूँ।' यह रब का फ़रमान है।"

समायाह के लिए रब का पैग़ाम

24रब ने फ़रमाया, "बाबल के रहनेवाले
समायाह नख़लामी को इत्तला दे, 25रब्बुल-
अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि तूने अपनी ही तरफ़ से इमाम सफ़नियाह बिन मासियाह को ख़त भेजा। दीगर इमामों और यरूशलम के बाक़ी तमाम बाशिंदों को भी इसकी कापियाँ मिल गईं। ख़त में लिखा था,

26'रब ने आपको यहोयदा की जगह अपने
घर की देख-भाल करने की ज़िम्मेदारी दी है। आपकी ज़िम्मेदारियों में यह भी शामिल है कि हर दीवाने और नबुव्वत करनेवाले को काठ में डालकर उस की गरदन में लोहे की ज़ंजीरें डालें।
27तो फिर आपने अनतोत के रहनेवाले यरमियाह
के ख़िलाफ़ क़दम क्यों नहीं उठाया जो आपके
दरमियान नबुव्वत करता रहता है? 28क्योंकि
उसने हमें जो बाबल में हैं ख़त भेजकर मशवरा दिया है कि देर लगेगी, इसलिए घर बनाकर उनमें बसने लगो, बाग़ लगाकर उनका फल खाओ'।"

29जब सफ़नियाह को समायाह का ख़त मिल
गया तो उसने यरमियाह को सब कुछ सुनाया।
30तब यरमियाह पर रब का कलाम नाज़िल हुआ,

31“तमाम जिलावतनों को ख़त भेजकर लिख दे, ‘रब समायाह नख़लामी के बारे में फ़रमाता है कि गो मैंने समायाह को नहीं भेजा तो भी उसने तुम्हें पेशगोइयाँ सुनाकर झूट पर भरोसा रखने पर आमादा किया है। 32चुनाँचे रब फ़रमाता है कि मैं समायाह नख़लामी को उस की औलाद समेत सज़ा दूँगा। इस क़ौम में उस की नसल ख़त्म हो जाएगी, और वह ख़ुद उन अच्छी चीज़ों से लुत्फ़अंदोज़ नहीं होगा जो मैं अपनी क़ौम को फ़राहम करूँगा। क्योंकि उसने रब से सरकश होने का मशवरा दिया है’।”

इसराईल और यहूदाह बहाल हो जाएंगे

30 रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ, 2“रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि जो भी पैग़ाम मैंने तुझ पर नाज़िल किए उन्हें किताब की सूरत में क़लमबंद कर! 3क्योंकि रब फ़रमाता है कि वह वक़्त आनेवाला है जब मैं अपनी क़ौम इसराईल और यहूदाह को बहाल करके उस मुल्क में वापस लाऊँगा जो मैंने उनके बापदादा को मीरास में दिया था।”

4यह इसराईल और यहूदाह के बारे में रब के फ़रमान हैं। 5“रब फ़रमाता है, ‘ख़ौफ़ज़दा चीख़ें सुनाई दे रही हैं। अमन का नामो-निशान तक नहीं बल्कि चारों तरफ़ दहशत ही दहशत फैली हुई है। 6क्या मर्द बच्चे जन्म दे सकता है? तो फिर तमाम मर्द क्यों अपने हाथ कमर पर रखकर दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरतों की तरह तड़प रहे हैं? हर एक का रंग फ़क़ पड़ गया है।

7अफ़सोस! वह दिन कितना हौलनाक होगा! उस जैसा कोई नहीं होगा। याक़ूब की औलाद को बड़ी मुसीबत पेश आएगी, लेकिन आख़िरकार उसे रिहाई मिलेगी।’ 8रब फ़रमाता है, ‘उस दिन मैं उनकी गरदन पर रखे जुए और उनकी ज़ंजीरों को तोड़ डालूँगा। तब वह ग़ैरमुल्कियों के ग़ुलाम नहीं रहेंगे 9बल्कि रब अपने ख़ुदा और दाऊद की नसल के उस बादशाह की ख़िदमत करेंगे जिसे मैं बरपा करके उन पर मुक़र्रर करूँगा।’

10चुनाँचे रब फ़रमाता है, ‘ऐ याक़ूब मेरे ख़ादिम, मत डर! ऐ इसराईल, दहशत मत खा! देख, मैं तुझे दूर-दराज़ इलाक़ों से और तेरी औलाद को जिलावतनी से छुड़ाकर वापस ले आऊँगा। याक़ूब वापस आकर सुकून से ज़िंदगी गुज़ारेगा, और उसे परेशान करनेवाला कोई नहीं होगा।’ 11क्योंकि रब फ़रमाता है, ‘मैं तेरे साथ हूँ, मैं ही तुझे बचाऊँगा। मैं उन तमाम क़ौमों को नेस्तो-नाबूद कर दूँगा जिनमें मैंने तुझे मुंतशिर कर दिया है, लेकिन तुझे मैं इस तरह सफ़हाए-हस्ती से नहीं मिटाऊँगा। अलबत्ता मैं मुनासिब हद तक तेरी तंबीह करूँगा, क्योंकि मैं तुझे सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ सकता।’

12क्योंकि रब फ़रमाता है, ‘तेरा ज़ख़्म लाइलाज है, तेरी चोट भर ही नहीं सकती। 13कोई नहीं है जो तेरे फोड़ की तहक़ीक़ करे,[a] तेरी चोट भर ही नहीं सकती। 14तेरे तमाम आशिक़[b] तुझे भूल गए हैं और तेरी परवा ही नहीं करते। तेरा क़ुसूर बहुत संगीन है, तुझसे बेशुमार गुनाह सरज़द हुए हैं। इसी लिए मैंने तुझे दुश्मन की तरह मारा, ज़ालिम की तरह तंबीह दी है।

15अब जब चोट लग गई है और लाइलाज दर्द महसूस हो रहा है तो तू मदद के लिए क्यों चीख़ता है? यह मैं ही ने तेरे संगीन क़ुसूर और मुतअद्दिद गुनाहों की वजह से तेरे साथ किया है।

16लेकिन जो तुझे हड़प करें उन्हें भी हड़प किया जाएगा। तेरे तमाम दुश्मन जिलावतन हो जाएंगे। जिन्होंने तुझे लूट लिया उन्हें भी लूटा जाएगा, जिन्होंने तुझे ग़ारत किया उन्हें भी ग़ारत किया जाएगा।’ 17क्योंकि रब फ़रमाता है, ‘मैं तेरे ज़ख़्मों को भरकर तुझे शफ़ा दूँगा, क्योंकि लोगों ने तुझे मरदूद क़रार देकर कहा है कि सिय्यून को देखो जिसकी फ़िकर कोई नहीं करता।’ 18रब फ़रमाता है, ‘देखो, मैं याक़ूब के ख़ैमों की

[a]या जो तेरे हक़ में बात करके तेरे फोड़ का मुआलजा करे।

[b]आशिक़ से मुराद इसराईल के इत्तहादी हैं।

बदनसीबी ख़त्म करूँगा, मैं इसराईल के घरों पर
तरस खाऊँगा। तब यरूशलम को खंडरात पर
नए सिरे से तामीर किया जाएगा, और महल
को दुबारा उस की पुरानी जगह पर खड़ा किया
जाएगा।

19उस वक़्त वहाँ शुक्रगुज़ारी के गीत और ख़ुशी
मनानेवालों की आवाज़ें बुलंद हो जाएँगी। और
मैं ध्यान दूँगा कि उनकी तादाद कम न हो जाए
बल्कि मज़ीद बढ़ जाए। उन्हें हक़ीर नहीं समझा
जाएगा बल्कि मैं उनकी इज़्ज़त बहुत बढ़ा दूँगा।
20उनके बच्चे क़दीम ज़माने की तरह महफ़ूज़
ज़िंदगी गुज़ारेंगे, और उनकी जमात मज़बूती से
मेरे हुज़ूर क़ायम रहेगी। लेकिन जितनों ने उन पर
ज़ुल्म किया है उन्हें मैं सज़ा दूँगा।

21उनका हुक्मरान उनका अपना हमवतन
होगा, वह दुबारा उनमें से उठकर तख़्तनशीन हो
जाएगा। मैं ख़ुद उसे अपने क़रीब लाऊँगा तो
वह मेरे क़रीब आएगा।’ क्योंकि रब फ़रमाता है,
‘सिर्फ़ वही अपनी जान ख़तरे में डालकर मेरे
क़रीब आने की जुर्रत कर सकता है जिसे मैं ख़ुद
अपने क़रीब लाया हूँ। 22उस वक़्त तुम मेरी क़ौम
होगे और मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँगा’।”

23देखो, रब का ग़ज़ब ज़बरदस्त आँधी की तरह
नाज़िल हो रहा है। तेज़ बगूले के झोंके बेदीनों के
सरों पर उतर रहे हैं। 24और रब का शदीद क़हर
उस वक़्त तक ठंडा नहीं होगा जब तक उसने
अपने दिल के मनसूबों को तकमील तक नहीं
पहुँचाया। आनेवाले दिनों में तुम्हें इसकी साफ़
समझ आएगी।

जिलावतनों की वापसी

31 रब फ़रमाता है, “उस वक़्त मैं तमाम
इसराईली घरानों का ख़ुदा हूँगा, और
वह मेरी क़ौम होंगे।” 2रब फ़रमाता है, “तलवार
से बचे हुए लोगों को रेगिस्तान में ही मेरा फ़ज़्ल
हासिल हुआ है, और इसराईल अपनी आरामगाह
के पास पहुँच रहा है।”

3रब ने दूर से मुझ पर ज़ाहिर होकर फ़रमाया,
“मैंने तुझे हमेशा ही प्यार किया है, इसलिए मैं
तुझे बड़ी शफ़क़त से अपने पास खींच लाया हूँ।
4ऐ कुँवारी इसराईल, तेरी नए सिरे से तामीर
हो जाएगी, क्योंकि मैं ख़ुद तुझे तामीर करूँगा।
तू दुबारा अपने दफ़ों से आरास्ता होकर ख़ुशी
मनानेवालों के लोकनाच के लिए निकलेगी। 5तू
दुबारा सामरिया की पहाड़ियों पर अंगूर के बाग़
लगाएगी। और जो पौदों को लगाएँगे वह ख़ुद
उनके फल से लुत्फ़अंदोज़ होंगे। 6क्योंकि वह
दिन आनेवाला है जब इफ़राईम पहाड़ के पहरेदार
आवाज़ देकर कहेंगे, ‘आओ हम सिय्यून के पास
जाएँ ताकि रब अपने ख़ुदा को सिजदा करें’।”

7क्योंकि रब फ़रमाता है, “याक़ूब को देखकर
ख़ुशी मनाओ! क़ौमों के सरबराह को देखकर
शादमानी का नारा मारो! बुलंद आवाज़ से
अल्लाह की हम्दो-सना करके कहो, ‘ऐ रब,
अपनी क़ौम को बचा, इसराईल के बचे हुए
हिस्से को छुटकारा दे।’ 8क्योंकि मैं उन्हें शिमाली
मुल्क से वापस लाऊँगा, उन्हें दुनिया की इंतहा
से जमा करूँगा। अंधे और लँगड़े उनमें शामिल
होंगे, हामिला और जन्म देनेवाली औरतें भी साथ
चलेंगी। उनका बड़ा हुजूम वापस आएगा। 9और
जब मैं उन्हें वापस लाऊँगा तो वह रोते हुए और
इल्तिजाएँ करते हुए मेरे पीछे चलेंगे। मैं उन्हें
नदियों के किनारे किनारे और ऐसे हमवार रास्तों
पर वापस ले चलूँगा, जहाँ ठोकर खाने का ख़तरा
नहीं होगा। क्योंकि मैं इसराईल का बाप हूँ, और
इफ़राईम[a] मेरा पहलौठा है।

10ऐ क़ौमो, रब का कलाम सुनो! दूर-दराज़
जज़ीरों तक एलान करो, ‘जिसने इसराईल को
मुंतशिर कर दिया है वह उसे दुबारा जमा करेगा
और चरवाहे की-सी फ़िकर रखकर उस की
गल्लाबानी करेगा।’ 11क्योंकि रब ने फ़िद्या देकर
याक़ूब को बचाया है, उसने एवज़ाना देकर उसे
ज़ोरावर के हाथ से छुड़ाया है। 12तब वह आकर

[a]यहाँ इफ़राईम इसराईल का दूसरा नाम है।

सिय्यून की बुलंदी पर ख़ुशी के नारे लगाएँगे,
उनके चेहरे रब की बरकतों को देखकर चमक
उठेंगे। क्योंकि उस वक़्त वह उन्हें अनाज, नई मै,
ज़ैतून के तेल और जवान भेड़-बकरियों और गाय-
बैलों की कसरत से नवाज़ेगा। उनकी जान सेराब
बाग़ की तरह सरसब्ज़ होगी, और उनकी निढाल
हालत सँभल जाएगी। 13फिर कुँवारियाँ ख़ुशी के
मारे लोकनाच नाचेंगी, जवान और बुज़ुर्ग आदमी
भी उसमें हिस्सा लेंगे। यों मैं उनका मातम ख़ुशी
में बदल दूँगा, मैं उनके दिलों से ग़म निकालकर
उन्हें अपनी तसल्ली और शादमानी से भर दूँगा।"
14रब फ़रमाता है, "मैं इमामों की जान को तरो-
ताज़ा करूँगा, और मेरी क़ौम मेरी बरकतों से सेर
हो जाएगी।"

15रब फ़रमाता है, "रामा में शोर मच गया है,
रोने पीटने और शदीद मातम की आवाज़ें। राख़िल
अपने बच्चों के लिए रो रही है और तसल्ली क़बूल
नहीं कर रही, क्योंकि वह हलाक हो गए हैं।"

16लेकिन रब फ़रमाता है, "रोने और आँसू
बहाने से बाज़ आ, क्योंकि तुझे अपनी मेहनत का
अज्र मिलेगा। यह रब का वादा है कि वह दुश्मन
के मुल्क से लौट आएँगे। 17तेरा मुस्तक़बिल
पुरउम्मीद होगा, क्योंकि तेरे बच्चे अपने वतन में
वापस आएँगे।" यह रब का फ़रमान है।

18"इसराईल[a] की गिर्याओ-ज़ारी मुझ तक
पहुँच गई है। क्योंकि वह कहता है, 'हाय, तूने
मेरी सख़्त तादीब की है। मेरी यों तरबियत हुई है
जिस तरह बछड़े की होती है जब उस की गरदन
पर पहली बार जुआ रखा जाता है। ऐ रब, मुझे
वापस ला ताकि मैं वापस आऊँ, क्योंकि तू ही रब
मेरा ख़ुदा है। 19मेरे वापस आने पर मुझे नदामत
महसूस हुई, और समझ आने पर मैं अपना सीना
पीटने लगा। मुझे शरमिंदगी और रुसवाई का
शदीद एहसास हो रहा है, क्योंकि अब मैं अपनी
जवानी के शर्मनाक फल की फ़सल काट रहा
हूँ।' 20लेकिन रब फ़रमाता है कि इसराईल मेरा
क़ीमती बेटा, मेरा लाडला है। गो मैं बार बार उसके
ख़िलाफ़ बातें करता हूँ तो भी उसे याद करता
रहता हूँ। इसलिए मेरा दिल उसके लिए तड़पता
है, और लाज़िम है कि मैं उस पर तरस खाऊँ।

21ऐ मेरी क़ौम, ऐसे निशान खड़े कर जिनसे
लोगों को सहीह रास्ते का पता चले! उस पक्की
सड़क पर ध्यान दे जिस पर तूने सफ़र किया है। ऐ
कुँवारी इसराईल, वापस आ, अपने इन शहरों में
लौट आ! 22ऐ बेवफ़ा बेटी, तू कब तक भटकती
फिरेगी? रब ने मुल्क में एक नई चीज़ पैदा की
है, यह कि आइंदा औरत आदमी के गिर्द रहेगी।"

इसराईल और यहूदाह दुबारा आबाद हो जाएंगे

23रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, "जब मैं इसराईलियों को बहाल
करूँगा तो मुल्के-यहूदाह और उसके शहरों के
बाशिंदे दुबारा कहेंगे, 'ऐ रास्ती के घर, ऐ मुक़द्दस
पहाड़, रब तुझे बरकत दे!' 24तब यहूदाह और
उसके शहर दुबारा आबाद होंगे। किसान भी मुल्क
में बसेंगे, और वह भी जो अपने रेवड़ों के साथ
इधर-उधर फिरते हैं। 25क्योंकि मैं थकेमाँदों को
नई ताक़त दूँगा और ग़श खानेवालों को तरो-ताज़ा
करूँगा।"

26तब मैं जाग उठा और चारों तरफ़ देखा। मेरी
नींद कितनी मीठी रही थी!

27रब फ़रमाता है, "वह वक़्त आनेवाला है जब
मैं इसराईल के घराने और यहूदाह के घराने का
बीज बोकर इनसानो-हैवान की तादाद बढ़ा दूँगा।
28पहले मैंने बड़े ध्यान से उन्हें जड़ से उखाड़
दिया, गिरा दिया, ढा दिया, हाँ तबाह करके ख़ाक
में मिला दिया। लेकिन आइंदा मैं उतने ही ध्यान
से उन्हें तामीर करूँगा, उन्हें पनीरी की तरह लगा
दूँगा।" यह रब का फ़रमान है। 29"उस वक़्त लोग
यह कहने से बाज़ आएँगे कि वालिदैन ने खट्टे अंगूर
खाए, लेकिन दाँत उनके बच्चों के खट्टे हो गए हैं।
30क्योंकि अब से खट्टे अंगूर खानेवाले के अपने

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : इफ़राईम।

ही दाँत खट्टे होंगे। अब से उसी को सज़ाए-मौत
दी जाएगी जो क़ुसूरवार है।”

नया अहद

31रब फ़रमाता है, “ऐसे दिन आ रहे हैं जब
मैं इसराईल के घराने और यहूदाह के घराने के
साथ एक नया अहद बाँधूँगा। 32यह उस अहद की
मानिंद नहीं होगा जो मैंने उनके बापदादा के साथ
उस दिन बाँधा था जब मैं उनका हाथ पकड़कर
उन्हें मिसर से निकाल लाया। क्योंकि उन्होंने वह
अहद तोड़ दिया, गो मैं उनका मालिक था।” यह
रब का फ़रमान है।

33“जो नया अहद मैं उन दिनों के बाद इसराईल
के घराने के साथ बाँधूँगा उसके तहत मैं अपनी
शरीअत उनके अंदर डालकर उनके दिलों पर कंदा
करूँगा। तब मैं ही उनका ख़ुदा हूँगा, और वह मेरी
क़ौम होंगे। 34उस वक़्त से इसकी ज़रूरत नहीं
रहेगी कि कोई अपने पड़ोसी या भाई को तालीम
देकर कहे, ‘रब को जान लो।’ क्योंकि छोटे से
लेकर बड़े तक सब मुझे जानेंगे। क्योंकि मैं उनका
क़ुसूर मुआफ़ करूँगा और आइंदा उनके गुनाहों
को याद नहीं करूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

35रब फ़रमाता है, “मैं ही ने मुक़र्रर किया
है कि दिन के वक़्त सूरज चमके और रात के
वक़्त चाँद सितारों समेत रौशनी दे। मैं ही समुंदर
को यों उछाल देता हूँ कि उस की मौजें गरजने
लगती हैं। रब्बुल-अफ़वाज ही मेरा नाम है।”
36रब फ़रमाता है, “जब तक यह क़ुदरती उसूल
मेरे सामने क़ायम रहेंगे उस वक़्त तक इसराईल
क़ौम मेरे सामने क़ायम रहेगी। 37क्या इनसान
आसमान की पैमाइश कर सकता है? या क्या
वह ज़मीन की बुनियादों की तफ़तीश कर सकता
है? हरगिज़ नहीं! इसी तरह यह मुमकिन ही नहीं
कि मैं इसराईल की पूरी क़ौम को उसके गुनाहों
के सबब से रद्द करूँ।” यह रब का फ़रमान है।

यरूशलम को नए सिरे से तामीर किया जाएगा

38रब फ़रमाता है, “वह वक़्त आनेवाला है जब
यरूशलम को रब के लिए नए सिरे से तामीर किया
जाएगा। तब उस की फ़सील हननेल के बुर्ज से
लेकर कोने के दरवाज़े तक तैयार हो जाएगी।
39वहाँ से शहर की सरहद सीधी जरीब पहाड़ी
तक पहुँचेगी, फिर जोआ की तरफ़ मुड़ेगी। 40उस
वक़्त जो वादी लाशों और भस्म हुई चरबी की
राख से नापाक हुई है वह पूरे तौर पर रब के लिए
मख़सूसो-मुक़द्दस होगी। उस की ढलानों पर के
तमाम खेत भी वादीए-क़िदरोन तक शामिल होंगे,
बल्कि मशरिक़ में घोड़े के दरवाज़े के कोने तक
सब कुछ मुक़द्दस होगा। आइंदा शहर को न कभी
दुबारा जड़ से उखाड़ा जाएगा, न तबाह किया
जाएगा।”

यरमियाह मुहासरे के दौरान खेत ख़रीदता है

32 यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह
की हुकूमत के दसवें साल में
रब यरमियाह से हमकलाम हुआ। उस
वक़्त नबूकदनज़्ज़र जो 18 साल से बा-
बल का बादशाह था 2अपनी फ़ौज के साथ
यरूशलम का मुहासरा कर रहा था। यरमियाह
उन दिनों में शाही महल के मुहाफ़िज़ों के सहन
में क़ैद था। 3सिदक़ियाह ने यह कहकर उसे
गिरिफ़्तार किया था, “तू क्यों इस क़िस्म की
पेशगोई सुनाता है? तू कहता है, ‘रब फ़रमाता
है कि मैं इस शहर को शाहे-बाबल के हाथ में
देनेवाला हूँ। जब वह उस पर क़ब्ज़ा करेगा 4तो
सिदक़ियाह बाबल की फ़ौज से नहीं बचेगा। उसे
शाहे-बाबल के हवाले कर दिया जाएगा, और वह
उसके रूबरू उससे बात करेगा, अपनी आँखों से
उसे देखेगा। 5शाहे-बाबल सिदक़ियाह को बाबल
ले जाएगा, और वहाँ वह उस वक़्त तक रहेगा जब
तक मैं उसे दुबारा क़बूल न करूँ। रब फ़रमाता है
कि अगर तुम बाबल की फ़ौज से लड़ो तो नाकाम
रहोगे’।”

6जब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल
हुआ तो यरमियाह ने कहा, “रब मुझसे हमकलाम
हुआ, 7‘तेरा चचाज़ाद भाई हनमेल बिन सल्लूम
तेरे पास आकर कहेगा कि अनतोत में मेरा
खेत ख़रीद लें। आप सबसे क़रीबी रिश्तेदार हैं,
इसलिए उसे ख़रीदना आपका हक़ बल्कि फ़र्ज़
भी है ताकि ज़मीन हमारे ख़ानदान की मिलकियत
रहे।[a] 8ऐसा ही हुआ जिस तरह रब ने फ़रमाया
था। मेरा चचाज़ाद भाई हनमेल शाही मुहाफ़िज़ों
के सहन में आया और मुझसे कहा, ‘बिनयमीन
के क़बीले के शहर अनतोत में मेरा खेत ख़रीद
लें। यह खेत ख़रीदना आपका मौरूसी हक़ बल्कि
फ़र्ज़ भी है ताकि ज़मीन हमारे ख़ानदान की
मिलकियत रहे। आएँ, उसे ख़रीद लें!’

तब मैंने जान लिया कि यह वही बात है जो
रब ने फ़रमाई थी। 9चुनाँचे मैंने अपने चचाज़ाद
भाई हनमेल से अनतोत का खेत ख़रीदकर उसे
चाँदी के 17 सिक्के दे दिए। 10मैंने इंतक़ालनामा
लिखकर उस पर मुहर लगाई, फिर चाँदी के
सिक्के तोलकर अपने भाई को दे दिए। मैंने
गवाह भी बुलाए थे ताकि वह पूरी कारवाई
की तसदीक़ करें। 11-12इसके बाद मैंने मुहरशुदा
इंतक़ालनामा तमाम शरायत और क़वायद समेत
बारूक बिन नैरियाह बिन महसियाह के सुपुर्द कर
दिया। साथ साथ मैंने उसे एक नक़ल भी दी जिस
पर मुहर नहीं लगी थी। हनमेल, इंतक़ालनामे पर
दस्तख़त करनेवाले गवाह और सहन में हाज़िर
बाक़ी हमवतन सब इसके गवाह थे। 13उनके
देखते देखते मैंने बारूक को हिदायत दी,

14‘रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है कि मुहरशुदा इंतक़ालनामा और उस
की नक़ल लेकर मिट्टी के बरतन में डाल दे ताकि
लंबे अरसे तक महफ़ूज़ रहें। 15क्योंकि रब्बुल-
अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है
कि एक वक़्त आएगा जब इस मुल्क में दुबारा
घर, खेत और अंगूर के बाग़ ख़रीदे जाएंगे।’

यरमियाह अल्लाह की तमजीद करता है

16बारूक बिन नैरियाह को इंतक़ालनामा देने
के बाद मैंने रब से दुआ की,

17‘ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, तूने अपना हाथ
बढ़ाकर बड़ी क़ुदरत से आसमानो-ज़मीन को
बनाया, तेरे लिए कोई भी काम नामुमकिन नहीं।
18तू हज़ारों पर शफ़क़त करता और साथ साथ
बच्चों को उनके वालिदैन के गुनाहों की सज़ा
देता है। ऐ अज़ीम और क़ादिर ख़ुदा जिसका नाम
रब्बुल-अफ़वाज है, 19तेरे मक़ासिद अज़ीम और
तेरे काम ज़बरदस्त हैं, तेरी आँखें इनसान की
तमाम राहों को देखती रहती हैं। तू हर एक को
उसके चाल-चलन और आमाल का मुनासिब अज्र
देता है।

20मिसर में तूने इलाही निशान और मोजिज़े
दिखाए, और तेरा यह सिलसिला आज तक जारी
रहा है, इसराईल में भी और बाक़ी क़ौमों में भी।
यों तेरे नाम को वह इज़्ज़तो-जलाल मिला जो
तुझे आज तक हासिल है। 21तू इलाही निशान
और मोजिज़े दिखाकर अपनी क़ौम इसराईल को
मिसर से निकाल लाया। तूने अपना हाथ बढ़ाकर
अपनी अज़ीम क़ुदरत मिसरियों पर ज़ाहिर की
तो उन पर शदीद दहशत तारी हुई। 22तब तूने
अपनी क़ौम को यह मुल्क बख़्श दिया जिसमें दूध
और शहद की कसरत थी और जिसका वादा तूने
क़सम खाकर उनके बापदादा से किया था।

23लेकिन जब हमारे बापदादा ने मुल्क में
दाख़िल होकर उस पर क़ब्ज़ा किया तो उन्होंने
न तेरी सुनी, न तेरी शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारी। जो कुछ भी तूने उन्हें करने को कहा था
उस पर उन्होंने अमल न किया। नतीजे में तू उन
पर यह आफ़त लाया। 24दुश्मन मिट्टी के पुश्ते
बनाकर फ़सील के क़रीब पहुँच चुका है। हम
तलवार, काल और मोहलक बीमारियों से इतने
कमज़ोर हो गए हैं कि जब बाबल की फ़ौज शहर
पर हमला करेगी तो वह उसके क़ब्ज़े में आएगा।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : एवज़ाना देकर उसे छुड़ाना (ताकि ख़ानदान का हिस्सा रहे)’ आप ही का हक़ है।

जो कुछ भी तूने फ़रमाया था वह पेश आया है।
तू ख़ुद इसका गवाह है। 25लेकिन ऐ रब क़ादिरे-
मुतलक़, कमाल है कि गो शहर को बाबल की
फ़ौज के हवाले किया जाएगा तो भी तू मुझसे
हमकलाम हुआ है कि चाँदी देकर खेत ख़रीद ले
और गवाहों से काररवाई की तसदीक़ करवा'।"

रब का जवाब

26तब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल
हुआ, 27"देख, मैं रब और तमाम इनसानों का
ख़ुदा हूँ। तो फिर क्या कोई काम है जो मुझसे
नहीं हो सकता?" 28चुनाँचे रब फ़रमाता है,
"मैं इस शहर को बाबल और उसके बादशाह
नबूकदनज़्ज़र के हवाले कर दूँगा। वह ज़रूर उस
पर क़ब्ज़ा करेगा। 29बाबल के जो फ़ौजी इस
शहर पर हमला कर रहे हैं इसमें घुसकर सब
कुछ जला देंगे, सब कुछ नज़रे-आतिश करेंगे।
तब वह तमाम घर राख हो जाएंगे जिनकी छतों
पर लोगों ने बाल देवता के लिए बख़ूर जलाकर
और अजनबी माबूदों को मै की नज़रें पेश करके
मुझे तैश दिलाया।"

30रब फ़रमाता है, "इसराईल और यहूदाह के
क़बीले जवानी से लेकर आज तक वही कुछ
करते आए हैं जो मुझे नापसंद है। अपने हाथों
के काम से वह मुझे बार बार ग़ुस्सा दिलाते रहे हैं।
31यरूशलम की बुनियादें डालने से लेकर आज
तक इस शहर ने मुझे हद से ज़्यादा मुश्तइल कर
दिया है। अब लाज़िम है कि मैं उसे नज़रों से
दूर कर दूँ। 32क्योंकि इसराईल और यहूदाह के
बाशिंदों ने अपनी बुरी हरकतों से मुझे तैश दिलाया
है, ख़ाह बादशाह हो या मुलाज़िम, ख़ाह इमाम हो
या नबी, ख़ाह यहूदाह हो या यरूशलम। 33उन्होंने
अपना मुँह मुझसे फेरकर मेरी तरफ़ रुजू करने से
इनकार किया है। गो मैं उन्हें बार बार तालीम देता
रहा तो भी वह सुनने या मेरी तरबियत क़बूल करने
के लिए तैयार नहीं थे। 34न सिर्फ़ यह बल्कि जिस
घर पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है उसमें उन्होंने
अपने घिनौने बुतों को रखकर उस की बेहुरमती
की है। 35वादीए-बिन-हिन्नूम की ऊँची जगहों पर
उन्होंने बाल देवता की क़ुरबानगाहें तामीर कीं
ताकि वहाँ अपने बेटे-बेटियों को मलिक देवता के
लिए क़ुरबान करें। मैंने उन्हें ऐसी क़ाबिले-घिन
हरकतें करने का हुक्म नहीं दिया था, बल्कि मुझे
इसका ख़याल तक नहीं आया। यों उन्होंने यहूदाह
को गुनाह करने पर उकसाया है।

36इस वक़्त तुम कह रहे हो, 'यह शहर ज़रूर
शाहे-बाबल के क़ब्ज़े में आ जाएगा, क्योंकि
तलवार, काल और मोहलक बीमारियों ने हमें
कमज़ोर कर दिया है।' लेकिन अब शहर के बारे
में रब का फ़रमान सुनो, जो इसराईल का ख़ुदा
है!

37बेशक मैं बड़े तैश में आकर शहर के बाशिंदों
को मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर कर दूँगा,
लेकिन मैं उन्हें उन जगहों से फिर जमा करके
वापस भी लाऊँगा ताकि वह दुबारा यहाँ सुकून
के साथ रह सकें। 38तब वह मेरी क़ौम होंगे, और
मैं उनका ख़ुदा हूँगा। 39मैं होने दूँगा कि वह सोच
और चाल-चलन में एक होकर हर वक़्त मेरा ख़ौफ़
मानेंगे। क्योंकि उन्हें मालूम होगा कि ऐसा करने
से हमें और हमारी औलाद को बरकत मिलेगी।

40मैं उनके साथ अबदी अहद बाँधकर वादा
करूँगा कि उन पर शफ़क़त करने से बाज़ नहीं
आऊँगा। साथ साथ मैं अपना ख़ौफ़ उनके दिलों
में डाल दूँगा ताकि वह मुझसे दूर न हो जाएँ।
41उन्हें बरकत देना मेरे लिए ख़ुशी का बाइस
होगा, और मैं वफ़ादारी और पूरे दिलो-जान से
उन्हें पनीरी की तरह इस मुल्क में दुबारा लगा
दूँगा।" 42क्योंकि रब फ़रमाता है, "मैं ही ने यह
बड़ी आफ़त इस क़ौम पर नाज़िल की, और मैं
ही उन्हें उन तमाम बरकतों से नवाज़ूँगा जिनका
वादा मैंने किया है। 43बेशक तुम इस वक़्त कहते
हो, 'हाय, हमारा मुल्क वीरानो-सुनसान है, उसमें
न इनसान और न हैवान रह गया है, क्योंकि
सब कुछ बाबल के हवाले कर दिया गया है।'
लेकिन मैं फ़रमाता हूँ कि पूरे मुल्क में दुबारा
खेत ख़रीदे 44और फ़रोख़्त किए जाएंगे। लोग

मामूल के मुताबिक़ इंतक़ालनामे लिखकर उन पर
मुहर लगाएँगे और काररवाई की तसदीक़ के लिए
गवाह बुलाएँगे। तमाम इलाक़े यानी बिनयमीन
के क़बायली इलाक़े में, यरूशलम के देहात में,
यहूदाह और पहाड़ी इलाक़े के शहरों में, मग़रिब के
नशेबी पहाड़ी इलाक़े के शहरों में और दश्ते-नजब
के शहरों में ऐसा ही किया जाएगा। मैं ख़ुद उनकी
बदनसीबी ख़त्म करूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

यरूशलम में दुबारा ख़ुशी होगी

33 यरमियाह अब तक शाही मुहा-
फ़िज़ों के सहन में गिरिफ़्तार था कि
रब एक बार फिर उससे हमकलाम हुआ, 2“जो
सब कुछ ख़लक़ करता, तश्कील देता और क़ायम
रखता है उसका नाम रब है। यही रब फ़रमाता है,
3मुझे पुकार तो मैं तुझे जवाब में ऐसी अज़ीम
और नाक़ाबिले-फ़हम बातें बयान करूँगा जो तू
नहीं जानता।

4क्योंकि रब जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता
है कि तुमने इस शहर के मकानों बल्कि चंद
एक शाही मकानों को भी ढा दिया है ताकि
उनके पत्थरों और लकड़ी से फ़सील को मज़बूत
करो और शहर को दुश्मन के पुश्तों और तलवार
से बचाए रखो। 5गो तुम बाबल की फ़ौज से
लड़ना चाहते हो, लेकिन शहर के घर इसराईलियों
की लाशों से भर जाएंगे। क्योंकि उन्हीं पर
मैं अपना ग़ज़ब नाज़िल करूँगा। यरूशलम की
तमाम बेदीनी के बाइस मैंने अपना मुँह उससे छुपा
लिया है।

6लेकिन बाद में मैं उसे शफ़ा देकर उसके ज़ख़म
भरने दूँगा, मैं उसके बाशिंदों को सेहत अता
करूँगा और उन पर कसरत की सलामती और
वफ़ादारी ज़ाहिर करूँगा। 7क्योंकि मैं यहूदाह और
इसराईल को बहाल करके उन्हें वैसे तामीर करूँगा
जैसे पहले थे। 8मैं उन्हें उनकी तमाम बेदीनी
से पाक-साफ़ करके उनकी तमाम सरकशी
और तमाम गुनाहों को मुआफ़ कर दूँगा। 9तब
यरूशलम पूरी दुनिया में मेरे लिए मुसर्रत, शोहरत,
तारीफ़ और जलाल का बाइस बनेगा। दुनिया के
तमाम ममालिक मेरी उस पर मेहरबानी देखकर
मुतअस्सिर हो जाएंगे। वह घबराकर काँप उठेंगे
जब उन्हें पता चलेगा कि मैंने यरूशलम को
कितनी बरकत और सुकून मुहैया किया है।

10तुम कहते हो, ‘हमारा शहर वीरानो-सुनसान
है। उसमें न इनसान, न हैवान रहते हैं।’ लेकिन
रब फ़रमाता है कि यरूशलम और यहूदाह के
दीगर शहरों की जो गलियाँ इस वक़्त वीरान और
इनसानो-हैवान से ख़ाली हैं, 11उनमें दुबारा ख़ुशी-
ओ-शादमानी, दूल्हे दुलहन की आवाज़ और रब
के घर में शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानियाँ पहुँचानेवालों
के गीत सुनाई देंगे। उस वक़्त वह गाएँगे, ‘रब्बुल-
अफ़वाज का शुक्र करो, क्योंकि रब भला है, और
उस की शफ़क़त अबदी है।’ क्योंकि मैं इस मुल्क
को पहले की तरह बहाल कर दूँगा। यह रब का
फ़रमान है।

12रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि फ़िल-
हाल यह मक़ाम वीरान और इनसानो-हैवान से
ख़ाली है। लेकिन आइंदा यहाँ और बाक़ी तमाम
शहरों में दुबारा ऐसी चरागाहें होंगी जहाँ गल्लाबान
अपने रेवड़ों को चराएँगे। 13तब पूरे मुल्क में
चरवाहे अपने रेवड़ों को गिनते और सँभालते हुए
नज़र आएँगे, ख़ाह पहाड़ी इलाक़े के शहरों या
मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े में देखो, ख़ाह
दश्ते-नजब या बिनयमीन के क़बायली इलाक़े में
मालूम करो, ख़ाह यरूशलम के देहात या यहूदाह
के बाक़ी शहरों में दरियाफ़्त करो। यह रब का
फ़रमान है।

अबदी अहद का वादा

14रब फ़रमाता है कि ऐसा वक़्त आनेवाला
है जब मैं वह अच्छा वादा पूरा करूँगा जो मैंने
इसराईल के घराने और यहूदाह के घराने से
किया है। 15उस वक़्त मैं दाऊद की नसल
से एक रास्तबाज़ कोंपल फूटने दूँगा, और
वही मुल्क में इनसाफ़ और रास्ती क़ायम
करेगा। 16उन दिनों में यहूदाह को छुटकारा

मिलेगा और यरूशलम पुरअमन ज़िंदगी गुज़ारेगा।
तब यरूशलम ‘रब हमारी रास्ती’ कहलाएगा।
17क्योंकि रब फ़रमाता है कि इसराईल के तख़्त
पर बैठनेवाला हमेशा ही दाऊद की नसल का
होगा। 18इसी तरह रब के घर में ख़िदमतगुज़ार
इमाम हमेशा ही लावी के क़बीले के होंगे। वही
मुतवातिर मेरे हुज़ूर भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ
और ग़ल्ला और ज़बह की क़ुरबानियाँ पेश
करेंगे।”

19रब एक बार फिर यरमियाह से हम-
कलाम हुआ, 20“रब फ़रमाता है कि मैंने दिन
और रात से अहद बाँधा है कि वह मुक़र्ररा वक़्त
पर और तरतीबवार गुज़रें। कोई इस अहद को
तोड़ नहीं सकता। 21इसी तरह मैंने अपने ख़ादिम
दाऊद से भी अहद बाँधकर वादा किया कि
इसराईल का बादशाह हमेशा उसी की नसल
का होगा। नीज़, मैंने लावी के इमामों से भी
अहद बाँधकर वादा किया कि रब के घर में
ख़िदमतगुज़ार इमाम हमेशा लावी के क़बीले के
ही होंगे। रात और दिन से बँधे हुए अहद की
तरह इन अहदों को भी तोड़ा नहीं जा सकता।
22मैं अपने ख़ादिम दाऊद की औलाद और अपने
ख़िदमतगुज़ार लावियों को सितारों और समुंदर
की रेत जैसा बेशुमार बना दूँगा।”

23रब यरमियाह से एक बार फिर हम-
कलाम हुआ, 24“क्या तुझे लोगों की बातें मालूम
नहीं हुईं? यह कह रहे हैं, ‘गो रब ने इसराईल
और यहूदाह को चुनकर अपनी क़ौम बना लिया
था, लेकिन अब उसने दोनों को रद्द कर दिया है।’
यों वह मेरी क़ौम को हक़ीर जानते हैं बल्कि इसे
अब से क़ौम ही नहीं समझते।” 25लेकिन रब
फ़रमाता है, “जो अहद मैंने दिन और रात से बाँधा
है वह मैं नहीं तोड़ूँगा, न कभी आसमानो-ज़मीन
के मुक़र्ररा उसूल मनसूख़ करूँगा। 26इसी तरह
यह मुमकिन ही नहीं कि मैं याक़ूब और अपने
ख़ादिम दाऊद की औलाद को कभी रद्द करूँ।
नहीं, मैं हमेशा ही दाऊद की नसल में से किसी को
तख़्त पर बिठाऊँगा ताकि वह इब्राहीम, इसहाक़
और याक़ूब की औलाद पर हुकूमत करे, क्योंकि
मैं उन्हें बहाल करके उन पर तरस खाऊँगा।”

सिदक़ियाह बाबल की क़ैद में मर जाएगा

34 रब उस वक़्त यरमियाह से हम-
कलाम हुआ जब शाहे-बाबल
नबूकदनज़्ज़र अपनी पूरी फ़ौज लेकर यरूशलम
और यहूदाह के तमाम शहरों पर हमला कर रहा
था। उसके साथ दुनिया के उन तमाम ममालिक
और क़ौमों की फ़ौजें थीं जिन्हें उसने अपने ताबे
कर लिया था।

2“रब जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है
कि यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह के पास
जाकर उसे बता, रब फ़रमाता है कि मैं इस शहर
यरूशलम को शाहे-बाबल के हवाले करने को हूँ,
और वह इसे नज़रे-आतिश कर देगा। 3तू भी
उसके हाथ से नहीं बचेगा बल्कि ज़रूर पकड़ा
जाएगा। तुझे उसके हवाले किया जाएगा, और तू
शाहे-बाबल को अपनी आँखों से देखेगा, वह तेरे
रूबरू तुझसे बात करेगा। फिर तुझे बाबल जाना
पड़ेगा। 4लेकिन ऐ सिदक़ियाह बादशाह, रब का
यह फ़रमान भी सुन! रब तेरे बारे में फ़रमाता है
कि तू तलवार से नहीं 5बल्कि तबई मौत मरेगा,
और लोग उसी तरह तेरी ताज़ीम में लकड़ी का
बड़ा ढेर बनाकर आग लगाएँगे जिस तरह तेरे
बापदादा के लिए करते आए हैं। वह तुझ पर भी
मातम करेंगे और कहेंगे, ‘हाय, मेरे आक़ा!’ यह
रब का फ़रमान है।”

6यरमियाह नबी ने सिदक़ियाह बादशाह को
यरूशलम में यह पैग़ाम सुनाया। 7उस वक़्त
बाबल की फ़ौज यरूशलम, लकीस और अज़ीक़ा
से लड़ रही थी। यहूदाह के तमाम क़िलाबंद शहरों
में से यही तीन अब तक क़ायम रहे थे।

ग़ुलामों के साथ बेवफ़ाई

8रब का कलाम एक बार फिर यरमियाह पर
नाज़िल हुआ। उस वक़्त सिदक़ियाह बादशाह ने
यरूशलम के बाशिंदों के साथ अहद बाँधा था कि

हम अपने हमवतन ग़ुलामों को आज़ाद कर देंगे।
9हर एक ने अपने हमवतन ग़ुलामों और लौंडियों
को आज़ाद करने का वादा किया था, क्योंकि
सब मुत्तफ़िक़ हुए थे कि हम अपने हमवतनों
को ग़ुलामी में नहीं रखेंगे। 10तमाम बुज़ुर्ग और
बाक़ी तमाम लोग यह करने पर राज़ी हुए थे। यह
अहद करने पर उन्होंने अपने ग़ुलामों को वाक़ई
आज़ाद कर दिया था। 11लेकिन बाद में वह अपना
इरादा बदलकर अपने आज़ाद किए हुए ग़ुलामों
को वापस लाए और उन्हें दुबारा अपने ग़ुलाम बना
लिया था। 12तब रब का कलाम यरमियाह पर
नाज़िल हुआ।

13“रब जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है,
‘जब मैं तुम्हारे बापदादा को मिसर की ग़ुलामी से
निकाल लाया तो मैंने उनसे अहद बाँधा। उस की
एक शर्त यह थी 14कि जब किसी हमवतन ने
अपने आपको बेचकर छः साल तक तेरी ख़िदमत
की है तो लाज़िम है कि सातवें साल तू उसे
आज़ाद कर दे। यह शर्त तुम सब पर सादिक़
आती है। लेकिन अफ़सोस, तुम्हारे बापदादा ने
न मेरी सुनी, न मेरी बात पर ध्यान दिया। 15अब
तुमने पछताकर वह कुछ किया जो मुझे पसंद था।
हर एक ने एलान किया कि हम अपने हमवतन
ग़ुलामों को आज़ाद कर देंगे। तुम उस घर में
आए जिस पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है और
अहद बाँधकर मेरे हुज़ूर उस वादे की तसदीक़
की। 16लेकिन अब तुमने अपना इरादा बदलकर
मेरे नाम की बेहुरमती की है। अपने ग़ुलामों और
लौंडियों को आज़ाद कर देने के बाद हर एक
उन्हें अपने पास वापस लाया है। पहले तुमने उन्हें
बताया कि जहाँ जी चाहो चले जाओ, और अब
तुमने उन्हें दुबारा ग़ुलाम बनने पर मजबूर किया
है।’

17चुनाँचे सुनो जो कुछ रब फ़रमाता है! ‘तुमने
मेरी नहीं सुनी, क्योंकि तुमने अपने हमवतन
ग़ुलामों को आज़ाद नहीं छोड़ा। इसलिए अब
रब तुम्हें तलवार, मोहलक बीमारियों और काल
के लिए आज़ाद छोड़ देगा। तुम्हें देखकर दुनिया
के तमाम ममालिक के रोंगटे खड़े हो जाएंगे।’
यह रब का फ़रमान है। 18-19‘देखो, यहूदाह
और यरूशलम के बुज़ुर्गों, दरबारियों, इमामों और
अवाम ने मेरे साथ अहद बाँधा। इसकी तसदीक़
करने के लिए वह एक बछड़े को दो हिस्सों में
तक़सीम करके उनके दरमियान से गुज़र गए। तो
भी उन्होंने अहद तोड़कर उस की शरायत पूरी न
कीं। चुनाँचे मैं होने दूँगा कि वह उस बछड़े की
मानिंद हो जाएँ जिसके दो हिस्सों में से वह गुज़र
गए हैं। 20मैं उन्हें उनके दुश्मनों के हवाले कर
दूँगा, उन्हीं के हवाले जो उन्हें जान से मारने के
दरपै हैं। उनकी लाशें परिंदों और जंगली जानवरों
की ख़ुराक बन जाएँगी।

21मैं यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह और
उसके अफ़सरों को उनके दुश्मन के हवाले
कर दूँगा, उन्हीं के हवाले जो उन्हें जान से
मारने पर तुले हुए हैं। वह यक़ीनन शाहे-बाबल
नबूकदनज़्ज़र की फ़ौज के क़ब्ज़े में आ जाएंगे।
क्योंकि गो फ़ौजी इस वक़्त पीछे हट गए
हैं, 22लेकिन मेरे हुक्म पर वह वापस आकर
यरूशलम पर हमला करेंगे। और इस मरतबा वह
उस पर क़ब्ज़ा करके उसे नज़रे-आतिश कर देंगे।
मैं यहूदाह के शहरों को भी यों ख़ाक में मिला दूँगा
कि कोई उनमें नहीं रह सकेगा’।” यह रब का
फ़रमान है।

यरमियाह रैकाबियों को आज़माता है

35 जब यहूयक़ीम बिन यूसियाह अभी
यहूदाह का बादशाह था तो रब मुझसे
हमकलाम हुआ, 2“रैकाबी ख़ानदान के पास
जाकर उन्हें रब के घर के सहन के किसी कमरे
में आने की दावत दे। जब वह आएँ तो उन्हें मै
पिला दे।”

3चुनाँचे मैं याज़नियाह बिन यरमियाह बिन
हबस्सिनियाह के पास गया और उसे उसके
भाइयों और तमाम बेटों यानी रैकाबियों के पूरे
घराने समेत 4रब के घर में लाया। हम हनान
के बेटों के कमरे में बैठ गए। मर्दे-ख़ुदा हनान,

यिज्दलियाह का बेटा था। यह कमरा बुज़ुर्गों के
कमरे से मुलहिक़ और रब के घर के दरबान
मासियाह बिन सल्लूम के कमरे के ऊपर था।
5वहाँ मैंने मै के जाम और प्याले रैकाबी आदमियों
को पेश करके उनसे कहा, “आएँ, कुछ मै पी
लें।”

6लेकिन उन्होंने इनकार करके कहा, “हम मै
नहीं पीते, क्योंकि हमारे बाप यूनदब बिन रैकाब
ने हमें और हमारी औलाद को मै पीने से मना
किया है। 7उसने हमें यह हिदायत भी दी, ‘न
मकान तामीर करना, न बीज बोना और न अंगूर
का बाग़ लगाना। यह चीज़ें कभी भी तुम्हारी
मिलकियत में शामिल न हों, क्योंकि लाज़िम है
कि तुम हमेशा ख़ैमों में ज़िंदगी गुज़ारो। फिर तुम
लंबे अरसे तक उस मुल्क में रहोगे जिसमें तुम
मेहमान हो।’ 8चुनाँचे हम अपने बाप यूनदब बिन
रैकाब की इन तमाम हिदायात के ताबे रहते हैं।
न हम और न हमारी बीवियाँ या बच्चे कभी मै
पीते हैं। 9हम अपनी रिहाइश के लिए मकान नहीं
बनाते, और न अंगूर के बाग़, न खेत या फ़सलें
हमारी मिलकियत में होती हैं। 10इसके बजाए हम
आज तक ख़ैमों में रहते हैं। जो भी हिदायत हमारे
बाप यूनदब ने हमें दी उस पर हम पूरे उतरे हैं।
11हम सिर्फ़ आरिज़ी तौर पर शहर में ठहरे हुए हैं।
क्योंकि जब शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र इस मुल्क
में घुस आया तो हम बोले, ‘आएँ, हम यरूशलम
शहर में जाएँ ताकि बाबल और शाम की फ़ौजों
से बच जाएँ।’ हम सिर्फ़ इसी लिए यरूशलम में
ठहरे हुए हैं।”

12तब रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,
13“रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है कि यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदों
के पास जाकर कह, ‘तुम मेरी तरबियत क्यों
क़बूल नहीं करते? तुम मेरी क्यों नहीं सुनते?
14यूनदब बिन रैकाब पर ग़ौर करो। उसने अपनी
औलाद को मै पीने से मना किया, इसलिए उसका
घराना आज तक मै नहीं पीता। यह लोग अपने
बाप की हिदायात के ताबे रहते हैं। इसके मुक़ाबले
में तुम लोग क्या कर रहे हो? गो मैं बार बार तुमसे
हमकलाम हुआ तो भी तुमने मेरी नहीं सुनी।

15बार बार मैं अपने नबियों को तुम्हारे पास
भेजता रहा ताकि मेरे ख़ादिम तुम्हें आगाह करते
रहें कि हर एक अपनी बुरी राह तर्क करके
वापस आए! अपना चाल-चलन दुरुस्त करो और
अजनबी माबूदों की पैरवी करके उनकी ख़िदमत
मत करो! फिर तुम उस मुल्क में रहोगे जो
मैंने तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को बख़्श दिया
था। लेकिन तुमने न तवज्जुह दी, न मेरी सुनी।
16यूनदब बिन रैकाब की औलाद अपने बाप की
हिदायात पर पूरी उतरी है, लेकिन इस क़ौम ने
मेरी नहीं सुनी।’

17इसलिए रब जो लशकरों का और इसराईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है, ‘सुनो! मैं यहूदाह पर और
यरूशलम के हर बाशिंदे पर वह तमाम आफ़त
नाज़िल करूँगा जिसका एलान मैंने किया है। गो मैं
उनसे हमकलाम हुआ तो भी उन्होंने न सुनी। मैंने
उन्हें बुलाया, लेकिन उन्होंने जवाब न दिया’।”

18लेकिन रैकाबियों से यरमियाह ने कहा,
“रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, ‘तुम अपने बाप यूनदब के हुक्म पर
पूरे उतरकर उस की हर हिदायत और हर हुक्म
पर अमल करते हो।’ 19इसलिए रब्बुल-अफ़वाज
जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, ‘यूनदब बिन
रैकाब की औलाद में से हमेशा कोई न कोई होगा
जो मेरे हुज़ूर ख़िदमत करेगा’।”

रब के घर में यरमियाह की किताब की तिलावत

36 यहूदाह के बादशाह यहूयक़ीम बिन
यूसियाह की हुकूमत के चौथे साल
में रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ,
2“तूमार लेकर उसमें इसराईल, यहूदाह और
बाक़ी तमाम क़ौमों के बारे में वह तमाम पैग़ामात
क़लमबंद कर जो मैंने यूसियाह की हुकूमत से
लेकर आज तक तुझ पर नाज़िल किए हैं। 3शायद
यहूदाह के घराने में हर एक अपनी बुरी राह से

बाज़ आकर वापस आए अगर उस आफ़त की पूरी ख़बर उन तक पहुँचे जो मैं इस क़ौम पर नाज़िल करने को हूँ। फिर मैं उनकी बेदीनी और गुनाह को मुआफ़ करूँगा।”

4चुनाँचे यरमियाह ने बारूक बिन नैरियाह को बुलाकर उससे वह तमाम पैग़ामात तूमार में लिखवाए जो रब ने उस पर नाज़िल किए थे। 5फिर यरमियाह ने बारूक से कहा, “मुझे नज़रबंद किया गया है, इसलिए मैं रब के घर में नहीं जा सकता। 6लेकिन आप तो जा सकते हैं। रोज़े के दिन यह तूमार अपने साथ लेकर रब के घर में जाएँ। हाज़िरीन के सामने रब की उन तमाम बातों को पढ़कर सुनाएँ जो मैंने आपसे लिखवाई हैं। सबको तूमार की बातें सुनाएँ, उन्हें भी जो यहूदाह की दीगर आबादियों से यहाँ पहुँचे हैं। 7शायद वह इल्तिजा करें कि रब उन पर रहम करे। शायद हर एक अपनी बुरी राह से बाज़ आकर वापस आए। क्योंकि जो ग़ज़ब इस क़ौम पर नाज़िल होनेवाला है और जिसका एलान रब कर चुका है वह बहुत सख़्त है।”

8बारूक बिन नैरियाह ने ऐसा ही किया। यरमियाह नबी की हिदायत के मुताबिक़ उसने रब के घर में तूमार में दर्ज रब के कलाम की तिलावत की। 9उस वक़्त लोग रोज़ा रखे हुए थे, क्योंकि बादशाह यहूयक़ीम बिन यूसियाह की हुकूमत के पाँचवें साल और नवें महीने[a] में एलान किया गया था कि यरूशलम के बाशिंदे और यहूदाह के दीगर शहरों से आए हुए तमाम लोग रब के हुज़ूर रोज़ा रखें। 10जब बारूक ने तूमार की तिलावत की तो तमाम लोग हाज़िर थे। उस वक़्त वह रब के घर में शाही मुहर्रिर साफ़न के बेटे जमरियाह के कमरे में बैठा था। यह कमरा रब के घर के ऊपरवाले सहन में था, और सहन का नया दरवाज़ा वहाँ से दूर नहीं था।

11तूमार में दर्ज रब के तमाम पैग़ामात सुनकर जमरियाह बिन साफ़न का बेटा मीकायाह 12शाही महल में मीरमुंशी के दफ़्तर में चला गया। वहाँ तमाम सरकारी अफ़सर बैठे थे यानी इलीसमा मीरमुंशी, दिलायाह बिन समायाह, इलनातन बिन अकबोर, जमरियाह बिन साफ़न, सिदक़ियाह बिन हननियाह और बाक़ी तमाम मुलाज़िम। 13मीकायाह ने उन्हें सब कुछ सुनाया जो बारूक ने तूमार की तिलावत करके पेश किया था। 14तब तमाम बुज़ुर्गों ने यहूदी बिन नतनियाह बिन सलमियाह बिन कूशी को बारूक के पास भेजकर उसे इत्तला दी, “जिस तूमार की तिलावत आपने लोगों के सामने की उसे लेकर हमारे पास आएँ।” चुनाँचे बारूक बिन नैरियाह हाथ में तूमार को थामे हुए उनके पास आया।

15अफ़सरों ने कहा, “ज़रा बैठकर हमारे लिए भी तूमार की तिलावत करें।” चुनाँचे बारूक ने उन्हें सब कुछ पढ़कर सुना दिया। 16यरमियाह की तमाम पेशगोइयाँ सुनते ही वह घबरा गए और डर के मारे एक दूसरे को देखने लगे। फिर उन्होंने बारूक से कहा, “लाज़िम है कि हम बादशाह को इन तमाम बातों से आगाह करें। 17हमें ज़रा बताएँ, आपने यह तमाम बातें किस तरह क़लमबंद कीं? क्या यरमियाह ने सब कुछ ज़बानी आपको पेश किया?” 18बारूक ने जवाब दिया, “जी, वह मुझे यह तमाम बातें सुनाता गया, और मैं सब कुछ स्याही से इस तूमार में दर्ज करता गया।”

19यह सुनकर अफ़सरों ने बारूक से कहा, “अब चले जाएँ, आप और यरमियाह दोनों छुप जाएँ! किसी को भी पता न चले कि आप कहाँ हैं।”

यहूयक़ीम तूमार को जला देता है

20अफ़सरों ने तूमार को शाही मीरमुंशी इलीसमा के दफ़्तर में महफ़ूज़ रख दिया, फिर दरबार में दाख़िल होकर बादशाह को सब कुछ बता दिया। 21बादशाह ने यहूदी को तूमार ले

[a]नवंबर ता दिसंबर।

आने का हुक्म दिया। यहूदी, इलीसमा मीरमुंशी के दफ़्तर से तूमार को लेकर बादशाह और तमाम अफ़सरों की मौजूदगी में उस की तिलावत करने लगा।

22चूँकि नवाँ महीना[a] था इसलिए बादशाह महल के उस हिस्से में बैठा था जो सर्दियों के मौसम के लिए बनाया गया था। उसके सामने पड़ी अंगीठी में आग जल रही थी। 23जब भी यहूदी तीन या चार कालम पढ़ने से फ़ारिग़ हुआ तो बादशाह ने मुंशी की छुरी लेकर उन्हें तूमार से काट लिया और आग में फेंक दिया। यहूदी पढ़ता और बादशाह काटता गया। आख़िरकार पूरा तूमार राख हो गया था।

24गो बादशाह और उसके तमाम मुलाज़िमों ने यह तमाम बातें सुनीं तो भी न वह घबराए, न उन्होंने परेशान होकर अपने कपड़े फाड़े। 25और गो इलनातन, दिलायाह और जमरियाह ने बादशाह से मिन्नत की कि वह तूमार को न जलाए तो भी उसने उनकी न मानी 26बल्कि बाद में यरहमियेल शाहज़ादा, सिरायाह बिन अज़रियेल और सलमियाह बिन अबदियेल को भेजा ताकि वह बारूक मुंशी और यरमियाह नबी को गिरिफ़्तार करें। लेकिन रब ने उन्हें छुपाए रखा था।

अल्लाह का कलाम दुबारा क़लमबंद किया जाता है

27बादशाह के तूमार को जलाने के बाद रब यरमियाह से दुबारा हमकलाम हुआ,

28“नया तूमार लेकर उसमें वही तमाम पैग़ामात क़लमबंद कर जो उस तूमार में दर्ज थे जिसे शाहे-यहूदाह ने जला दिया था। 29साथ साथ यहूयक़ीम के बारे में एलान कर कि रब फ़रमाता है, ‘तूने तूमार को जलाकर यरमियाह से शिकायत की कि तूने इस किताब में क्यों लिखा है कि शाहे-बाबल ज़रूर आकर इस मुल्क को तबाह करेगा, और इसमें न इनसान, न हैवान रहेगा?’ 30चुनाँचे यहूदाह के बादशाह के बारे में रब का फ़ैसला सुन!

आइंदा उसके ख़ानदान का कोई भी फ़रद दाऊद के तख़्त पर नहीं बैठेगा। यहूयक़ीम की लाश बाहर फेंकी जाएगी, और वहाँ वह खुले मैदान में पड़ी रहेगी। कोई भी उसे दिन की तपती गरमी या रात की शदीद सर्दी से बचाए नहीं रखेगा। 31मैं उसे उसके बच्चों और मुलाज़िमों समेत उनकी बेदीनी का मुनासिब अज्र दूँगा। क्योंकि मैं उन पर और यरूशलम और यहूदाह के बाशिंदों पर वह तमाम आफ़त नाज़िल करूँगा जिसका एलान मैं कर चुका हूँ। अफ़सोस, उन्होंने मेरी नहीं सुनी।”

32चुनाँचे यरमियाह ने नया तूमार लेकर उसे बारूक बिन नैरियाह को दे दिया। फिर उसने बारूक मुंशी से वह तमाम पैग़ामात दुबारा लिखवाए जो उस तूमार में दर्ज थे जिसे शाहे-यहूदाह यहूयक़ीम ने जला दिया था। उनके अलावा मज़ीद बहुत-से पैग़ामात का इज़ाफ़ा हुआ।

[a]तक़रीबन दिसंबर।

मिसर सिदक़ियाह की मदद नहीं कर सकता

37 यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन[a] बिन
यहूयक़ीम को तख़्त से उतारने के बाद
शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र ने सिदक़ियाह बिन
यूसियाह को तख़्त पर बिठा दिया। 2लेकिन न
सिदक़ियाह, न उसके अफ़सरों या अवाम ने उन
पैग़ामात पर ध्यान दिया जो रब ने यरमियाह नबी
की मारिफ़त फ़रमाए थे।

3एक दिन सिदक़ियाह बादशाह ने यहूकल बिन
सलमियाह और इमाम सफ़नियाह बिन मासियाह
को यरमियाह के पास भेजा ताकि वह गुज़ारिश
करें, "मेहरबानी करके रब हमारे ख़ुदा से हमारी
शफ़ाअत करें।"

4यरमियाह को अब तक क़ैद में डाला नहीं गया
था, इसलिए वह आज़ादी से लोगों में चल-फिर
सकता था। 5उस वक़्त फ़िरौन की फ़ौज मिसर
से निकलकर इसराईल की तरफ़ बढ़ रही थी।
जब यरूशलम का मुहासरा करनेवाली बाबल की
फ़ौज को यह ख़बर मिली तो वह वहाँ से पीछे हट
गई। 6तब रब यरमियाह नबी से हमकलाम हुआ,

7"रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि शाहे-
यहूदाह ने तुम्हें मेरी मरज़ी दरियाफ़्त करने भेजा
है। उसे जवाब दो कि फ़िरौन की जो फ़ौज तुम्हारी
मदद करने के लिए निकल आई है वह अपने
मुल्क वापस लौटने को है। 8फिर बाबल के फ़ौजी
वापस आकर यरूशलम पर हमला करेंगे। वह
इसे अपने क़ब्ज़े में लेकर नज़रे-आतिश कर देंगे।
9क्योंकि रब फ़रमाता है कि यह सोचकर धोका
मत खाओ कि बाबल की फ़ौज ज़रूर हमें छोड़कर
चली जाएगी। ऐसा कभी नहीं होगा! 10ख़्वाह तुम
हमलाआवर पूरी बाबली फ़ौज को शिकस्त क्यों
न देते और सिर्फ़ ज़ख़मी आदमी बचे रहते तो भी
तुम नाकाम रहते, तो भी यह बाज़ एक आदमी
अपने ख़ैमों में से निकलकर यरूशलम को नज़रे-
आतिश करते।"

[a]इबरानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ कूनियाह मुस्तामल
है।

यरमियाह को क़ैद में डाला जाता है

11जब फ़िरौन की फ़ौज इसराईल की तरफ़
बढ़ने लगी तो बाबल के फ़ौजी यरूशलम को
छोड़कर पीछे हट गए। 12उन दिनों में यरमियाह
बिनयमीन के क़बायली इलाक़े के लिए रवाना
हुआ, क्योंकि वह अपने रिश्तेदारों के साथ
कोई मौरूसी मिलकियत तक़सीम करना चाहता
था। लेकिन जब वह शहर से निकलते हुए
13बिनयमीन के दरवाज़े तक पहुँच गया तो
पहरेदारों का एक अफ़सर उसे पकड़कर कहने
लगा, "तुम भगोड़े हो! तुम बाबल की फ़ौज के
पास जाना चाहते हो!" अफ़सर का नाम इरियाह
बिन सलमियाह बिन हननियाह था। 14यरमियाह
ने एतराज़ किया, "झूट! मैं भगोड़ा नहीं हूँ!
मैं बाबल की फ़ौज के पास नहीं जा रहा।"
लेकिन इरियाह न माना बल्कि उसे गिरिफ़्तार
करके सरकारी अफ़सरों के पास ले गया। 15उसे
देखकर उन्हें यरमियाह पर ग़ुस्सा आया, और वह
उस की पिटाई कराकर उसे शाही मुहर्रिर यूनतन
के घर में लाए जिसे उन्होंने क़ैदख़ाना बनाया
था। 16वहाँ उसे एक ज़मीनदोज़ कमरे में डाल
दिया गया जो पहले हौज़ था और जिसकी छत
मेहराबदार थी। वह मुतअद्दिद दिन उसमें बंद रहा।

17एक दिन सिदक़ियाह ने उसे महल में
बुलाया। वहाँ अलहदगी में उससे पूछा, "क्या रब
की तरफ़ से मेरे लिए कोई पैग़ाम है?" यरमियाह
ने जवाब दिया, "जी हाँ। आपको शाहे-बाबल
के हवाले किया जाएगा।" 18तब यरमियाह ने
सिदक़ियाह बादशाह से अपनी बात जारी रखकर
कहा, "मुझसे क्या जुर्म हुआ है? मैंने आपके
अफ़सरों और अवाम का क्या क़ुसूर किया है कि
मुझे जेल में डलवा दिया? 19आपके वह नबी
कहाँ हैं जिन्होंने आपको पेशगोई सुनाई कि शाहे-
बाबल न आप पर, न इस मुल्क पर हमला करेगा?
20ऐ मेरे मालिक और बादशाह, मेहरबानी करके
मेरी बात सुनें, मेरी गुज़ारिश पूरी करें! मुझे

यूनतन मुहर्रिर के घर में वापस न भेजें, वरना मैं मर जाऊँगा।”

21तब सिदक़ियाह बादशाह ने हुक्म दिया कि यरमियाह को शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में रखा जाए। उसने यह हिदायत भी दी कि जब तक शहर में रोटी दस्तयाब हो यरमियाह को नानबाई-गली से हर रोज़ एक रोटी मिलती रहे। चुनाँचे यरमियाह मुहाफ़िज़ों के सहन में रहने लगा।

यरमियाह को सज़ाए- मौत देने का इरादा

38 सफ़तियाह बिन मत्तान, जिद-लियाह बिन फ़शहूर, यूकल बिन सलमियाह और फ़शहूर बिन मलकियाह को मालूम हुआ कि यरमियाह तमाम लोगों को बता रहा है 2कि रब फ़रमाता है,

“अगर तुम तलवार, काल या वबा से मरना चाहो तो इस शहर में रहो। लेकिन अगर तुम अपनी जान को बचाना चाहो तो शहर से निकलकर अपने आपको बाबल की फ़ौज के हवाले करो। जो कोई यह करे उस की जान छूट जाएगी।[a] 3क्योंकि रब फ़रमाता है कि यरूशलम को ज़रूर शाहे-बाबल की फ़ौज के हवाले किया जाएगा। वह यक़ीनन उस पर क़ब्ज़ा करेगा।”

4तब मज़कूरा अफ़सरों ने बादशाह से कहा, “इस आदमी को सज़ाए-मौत दीनी चाहिए, क्योंकि यह शहर में बचे हुए फ़ौजियों और बाक़ी तमाम लोगों को ऐसी बातें बता रहा है जिनसे वह हिम्मत हार गए हैं। यह आदमी क़ौम की बहबूदी नहीं चाहता बल्कि उसे मुसीबत में डालने पर तुला रहता है।”

5सिदक़ियाह बादशाह ने जवाब दिया, “ठीक है, वह आपके हाथ में है। मैं आपको रोक नहीं सकता।” 6तब उन्होंने यरमियाह को पकड़कर मलकियाह शाहज़ादा के हौज़ में डाल दिया। यह हौज़ शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में था। रस्सों के ज़रीए उन्होंने यरमियाह को उतार दिया। हौज़ में पानी नहीं था बल्कि सिर्फ़ कीचड़, और यरमियाह कीचड़ में धँस गया।

7लेकिन एथोपिया के एक दरबारी बनाम अबद-मलिक को पता चला कि यरमियाह के साथ क्या कुछ किया जा रहा है। जब बादशाह शहर के दरवाज़े बनाम बिनयमीन में कचहरी लगाए बैठा था 8तो अबद-मलिक शाही महल से निकलकर उसके पास गया और कहा, 9“मेरे आक़ा और बादशाह, जो सुलूक इन आदमियों ने यरमियाह के साथ किया है वह निहायत बुरा है। उन्होंने उसे एक हौज़ में फेंक दिया है जहाँ वह भूका मरने को है। क्योंकि शहर में रोटी ख़त्म हो गई है।”

10यह सुनकर बादशाह ने अबद-मलिक को हुक्म दिया, “इससे पहले कि यरमियाह मर जाए यहाँ से 30 आदमियों को लेकर नबी को हौज़ से निकाल दें।” 11अबद-मलिक आदमियों को अपने साथ लेकर शाही महल के गोदाम के नीचे के एक कमरे में गया। वहाँ से उसने कुछ पुराने चीथड़े और घिसे-फटे कपड़े चुनकर उन्हें रस्सों के ज़रीए हौज़ में यरमियाह तक उतार दिया। 12अबद-मलिक बोला, “रस्से बाँधने से पहले यह पुराने चीथड़े और घिसे-फटे कपड़े बग़ल में रखें।” यरमियाह ने ऐसा ही किया, 13तो वह उसे रस्सों से खींचकर हौज़ से निकाल लाए। इसके बाद यरमियाह शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में रहा।

सिदक़ियाह को आख़िरी मरतबा आगाह किया जाता है

14एक दिन सिदक़ियाह बादशाह ने यर-मियाह को रब के घर के तीसरे दरवाज़े के पास बुलाकर उससे कहा, “मैं आपसे एक बात दरियाफ़्त करना चाहता हूँ। मुझे इसका साफ़ जवाब दें, कोई भी बात मुझसे मत छुपाएँ।” 15यरमियाह ने एतराज़ किया, “अगर मैं आपको साफ़ जवाब दूँ तो आप मुझे मार डालेंगे। और

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : वह ग़नीमत के तौर पर अपनी जान को बचाएगा।

अगर मैं आपको मशवरा दूँ भी तो आप उसे
क़बूल नहीं करेंगे।” 16तब सिदक़ियाह बादशाह
ने अलहदगी में क़सम खाकर यरमियाह से वादा
किया, “रब की हयात की क़सम जिसने हमें जान
दी है, न मैं आपको मार डालूँगा, न आपके जानी
दुश्मनों के हवाले करूँगा।”

17तब यरमियाह बोला, “रब जो लशकरों का
और इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, ‘अपने
आपको शाहे-बाबल के अफ़सरान के हवाले कर।
फिर तेरी जान छूट जाएगी और यह शहर नज़रे-
आतिश नहीं हो जाएगा। तू और तेरा ख़ानदान
जीता रहेगा। 18दूसरी सूरत में इस शहर को
बाबल के हवाले किया जाएगा और फ़ौजी इसे
नज़रे-आतिश करेंगे। तू भी उनके हाथ से नहीं
बचेगा’।”

19लेकिन सिदक़ियाह बादशाह ने एतराज़
किया, “मुझे उन हमवतनों से डर लगता है जो
ग़द्दारी करके बाबल की फ़ौज के पास भाग गए
हैं। हो सकता है कि बाबल के फ़ौजी मुझे उनके
हवाले करें और वह मेरे साथ बदसुलूकी करें।”
20यरमियाह ने जवाब दिया, “वह आपको उनके
हवाले नहीं करेंगे। रब की सुनकर वह कुछ करें जो
मैंने आपको बताया है। फिर आपकी सलामती
होगी और आपकी जान छूट जाएगी। 21लेकिन
अगर आप शहर से निकलकर हथियार डालने के
लिए तैयार नहीं हैं तो फिर यह पैग़ाम सुनें जो
रब ने मुझ पर ज़ाहिर किया है! 22शाही महल
में जितनी ख़वातीन बच गई हैं उन सबको शाहे-
बाबल के अफ़सरों के पास पहुँचाया जाएगा। तब
यह ख़वातीन आपके बारे में कहेंगी, ‘हाय, जिन
आदमियों पर तू पूरा एतमाद रखता था वह फ़रेब
देकर तुझ पर ग़ालिब आ गए हैं। तेरे पाँव दलदल
में धँस गए हैं, लेकिन यह लोग ग़ायब हो गए हैं।’
23हाँ, तेरे तमाम बाल-बच्चों को बाहर बाबल की
फ़ौज के पास लाया जाएगा। तू ख़ुद भी उनके
हाथ से नहीं बचेगा बल्कि शाहे-बाबल तुझे पकड़
लेगा। यह शहर नज़रे-आतिश हो जाएगा।”

24फिर सिदक़ियाह ने यरमियाह से कहा,
“ख़बरदार! किसी को भी यह मालूम न हो कि
हमने क्या क्या बातें की हैं, वरना आप मर जाएंगे।
25जब मेरे अफ़सरों को पता चले कि मेरी आपसे
गुफ़्तगू हुई है तो वह आपके पास आकर पूछेंगे,
‘तुमने बादशाह से क्या बात की, और बादशाह ने
तुमसे क्या कहा? हमें साफ़ जवाब दो और झूट
न बोलो, वरना हम तुम्हें मार डालेंगे।’ 26जब वह
इस तरह की बातें करेंगे तो उन्हें सिर्फ़ इतना-सा
बताएँ, ‘मैं बादशाह से मिन्नत कर रहा था कि वह
मुझे यूनतन के घर में वापस न भेजें, वरना मैं मर
जाऊँगा’।”

27ऐसा ही हुआ। तमाम सरकारी अफ़सर
यरमियाह के पास आए और उससे सवाल करने
लगे। लेकिन उसने उन्हें सिर्फ़ वह कुछ बताया
जो बादशाह ने उसे कहने को कहा था। तब वह
ख़ामोश हो गए, क्योंकि किसी ने भी उस की
बादशाह से गुफ़्तगू नहीं सुनी थी।

28इसके बाद यरमियाह यरूशलम की शिकस्त
तक शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में क़ैदी रहा।

यरूशलम की शिकस्त

39 यरूशलम यों दुश्मन के हाथ में आया :
यहूदाह के बादशाह के नवें साल और
10वें महीने[a] में शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र अपनी
तमाम फ़ौज लेकर यरूशलम पहुँचा और शहर का
मुहासरा करने लगा। 2सिदक़ियाह के 11वें साल
के चौथे महीने और नवें दिन[b] दुश्मन ने फ़सील में
रख़ना डाल दिया। 3तब नबूकदनज़्ज़र के तमाम
आला अफ़सर शहर में आकर उसके दरमियानी
दरवाज़े में बैठ गए। उनमें यह शामिल थे : नैरगल-
सराज़र समगर, नबू-सर-सकीम जो रब-सारीस
था, नैरगल-सराज़र जो रब-माग था और शाहे-
बाबल के बाक़ी बुज़ुर्ग।

[a]दिसंबर ता जनवरी।

[b]18 जुलाई।

4उन्हें देखकर यहूदाह का बादशाह सिदक़ियाह और उसके तमाम फ़ौजी भाग गए। रात के वक़्त वह फ़सील के उस दरवाज़े से निकले जो शाही बाग़ के साथ मुलहिक़ दो दीवारों के बीच में था। वह वादीए-यरदन की तरफ़ दौड़ने लगे, 5लेकिन बाबल के फ़ौजियों ने उनका ताक़्क़ुब करके सिदक़ियाह को यरीहू के मैदानी इलाक़े में पकड़ लिया। फिर उसे मुल्के-हमात के शहर रिबला में शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र के पास लाया गया, और वहीं उसने सिदक़ियाह पर फ़ैसला सादिर किया। 6सिदक़ियाह के देखते देखते शाहे-बाबल ने रिबला में उसके बेटों को क़त्ल किया। साथ साथ उसने यहूदाह के तमाम बुज़ुर्गों को भी मौत के घाट उतार दिया। 7फिर उसने सिदक़ियाह की आँखें निकलवाकर उसे पीतल की ज़ंजीरों में जकड़ लिया और बाबल को ले जाने के लिए महफ़ूज़ रखा।

8बाबल के फ़ौजियों ने शाही महल और दीगर लोगों के घरों को जलाकर यरूशलम की फ़सील को गिरा दिया। 9शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़सर नबूज़रादान ने सबको जिलावतन कर दिया जो यरूशलम और यहूदाह में पीछे रह गए थे। वह भी उनमें शामिल थे जो जंग के दौरान ग़द्दारी करके शाहे-बाबल के पीछे लग गए थे। 10लेकिन नबूज़रादान ने सबसे निचले तबक़े के बाज़ लोगों को मुल्के-यहूदाह में छोड़ दिया, ऐसे लोग जिनके पास कुछ नहीं था। उन्हें उसने उस वक़्त अंगूर के बाग़ और खेत दिए।

11-12नबूकदनज़्ज़र बादशाह ने शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़सर नबूज़रादान को हुक्म दिया, “यरमियाह को अपने पास रखें। उसका ख़याल रखें। उसे नुक़सान न पहुँचाएँ बल्कि जो भी दरख़ास्त वह करे उसे पूरा करें।”

13चुनाँचे शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़सर नबूज़रादान ने किसी को यरमियाह के पास भेजा। उस वक़्त नबूशज़बान जो रब-सारीस था, नैरगल-सराज़र जो रब-माग था और शाहे-बाबल के बाक़ी अफ़सर नबूज़रादान के पास थे। 14यरमियाह अब तक शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में गिरिफ़्तार था। उन्होंने हुक्म दिया कि उसे वहाँ से निकालकर जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम बिन साफ़न के हवाले कर दिया जाए ताकि वह उसे उसके अपने घर पहुँचा दे। यों यरमियाह अपने लोगों के दरमियान बसने लगा।

अबद-मलिक के लिए ख़ुशख़बरी

15जब यरमियाह अभी शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में गिरिफ़्तार था तो रब उससे हमकलाम हुआ,

16“जाकर एथोपिया के अबद-मलिक को बता, ‘रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि देख, मैं इस शहर के साथ वह सब कुछ करने को हूँ जिसका एलान मैंने किया था। मैं उस पर मेहरबानी नहीं करूँगा बल्कि उसे नुक़सान पहुँचाऊँगा। तू अपनी आँखों से यह देखेगा। 17लेकिन रब फ़रमाता है कि तुझे मैं उस दिन छुटकारा दूँगा, तुझे उनके हवाले नहीं किया जाएगा जिनसे तू डरता है। 18मैं ख़ुद तुझे बचाऊँगा। चूँकि तूने मुझ पर भरोसा किया इसलिए तू तलवार की ज़द में नहीं आएगा बल्कि तेरी जान छूट जाएगी।[a] यह रब का फ़रमान है’।”

यरमियाह को आज़ाद किया जाता है

40 आज़ाद होने के बाद भी रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ। शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़सर नबूज़रादान ने उसे रामा में रिहा किया था। क्योंकि जब यरूशलम और बाक़ी यहूदाह के क़ैदियों को मुल्के-बाबल में ले जाने के लिए जमा किया गया तो मालूम हुआ कि यरमियाह भी ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ उनमें शामिल है। 2तब नबूज़रादान ने यरमियाह को बुलाकर उससे कहा, “रब आपके

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : तू ग़नीमत के तौर पर अपनी जान को बचाएगा।

ख़ुदा ने एलान किया था कि इस जगह पर आफ़त
आएगी। 3और अब वह यह आफ़त उसी तरह ही
लाया जिस तरह उसने फ़रमाया था। सब कुछ
इसलिए हुआ कि आपकी क़ौम रब का गुनाह
करती रही और उस की न सुनी। 4लेकिन आज
मैं वह ज़ंजीरें खोल देता हूँ जिनसे आपके हाथ
जकड़े हुए हैं। आप आज़ाद हैं। अगर चाहें तो मेरे
साथ बाबल जाएँ। तब मैं ही आपकी निगरानी
करूँगा। बाक़ी आपकी मरज़ी। अगर यहीं रहना
पसंद करेंगे तो यहीं रहें। पूरे मुल्क में जहाँ भी
जाना चाहें जाएँ। कोई आपको नहीं रोकेगा।”

5यरमियाह अब तक झिजक रहा था,
इसलिए नबूज़रादान ने कहा, “फिर जिदलि-
याह बिन अख़ीक़ाम बिन साफ़न के पास चले
जाएँ! शाहे-बाबल ने उसे सूबा यहूदाह के शहरों
पर मुक़र्रर किया है। उसके साथ रहें। या फिर जहाँ
भी रहना पसंद करें वहीं रहें।”

नबूज़रादान ने यरमियाह को कुछ ख़ुराक
और एक तोहफ़ा देकर उसे रुख़सत कर दिया।
6जिदलियाह मिसफ़ाह में ठहरा हुआ था।
यरमियाह उसके पास जाकर मुल्क के बचे हुए
लोगों के बीच में बसने लगा।

जिदलियाह को क़त्ल करने की साज़िशें

7देहात में अब तक यहूदाह के कुछ फ़ौजी
अफ़सर अपने दस्तों समेत छुपे रहते थे। जब
उन्हें ख़बर मिली कि शाहे-बाबल ने जिदलियाह
बिन अख़ीक़ाम को यहूदाह का गवर्नर बनाकर उन
ग़रीब आदमियों और बाल-बच्चों पर मुक़र्रर किया
है जो जिलावतन नहीं हुए हैं 8तो वह मिसफ़ाह
में जिदलियाह के पास आए। अफ़सरों के नाम
इसमाईल बिन नतनियाह, क़रीह के बेटे यूहनान
और यूनतन, सिरायाह बिन तनहूमत, ईफ़ी
नतूफ़ाती के बेटे और याज़नियाह बिन माकाती
थे। उनके फ़ौजी भी साथ आए। 9जिदलियाह
बिन अख़ीक़ाम बिन साफ़न ने क़सम खाकर
उनसे वादा किया, “बाबल के ताबे हो जाने से
मत डरना! मुल्क में आबाद होकर शाहे-बाबल
की ख़िदमत करें तो आपकी सलामती होगी।
10मैं ख़ुद मिसफ़ाह में ठहरकर आपकी सिफ़ारिश
करूँगा जब बाबल के नुमाइंदे आएँगे। इतने में
अंगूर, मौसमे-गरमा का फल और ज़ैतून की
फ़सलें जमा करके अपने बरतनों में महफ़ूज़ रखें।
उन शहरों में आबाद रहें जिन पर आपने क़ब्ज़ा
कर लिया है।”

11यहूदाह के मुतअद्दिद बाशिंदे मोआब,
अम्मोन, अदोम और दीगर पड़ोसी ममालिक
में हिजरत कर गए थे। अब जब उन्हें इत्तला
मिली कि शाहे-बाबल ने कुछ बचे हुए लोगों को
यहूदाह में छोड़कर जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम
बिन साफ़न को गवर्नर बना दिया है 12तो वह
सब यहूदाह में वापस आए। जिन ममालिक में
भी वह मुंतशिर हुए थे वहाँ से वह मिसफ़ाह आए
ताकि जिदलियाह से मिलें। उस मौसमे-गरमा में
वह अंगूर और बाक़ी फल की बड़ी फ़सल जमा
कर सके।

13एक दिन यूहनान बिन क़रीह और वह तमाम
फ़ौजी अफ़सर जो अब तक देहात में ठहरे हुए
थे जिदलियाह से मिलने आए। 14मिसफ़ाह में
पहुँचकर वह जिदलियाह से कहने लगे, “क्या
आपको नहीं मालूम कि अम्मोन के बादशाह
बालीस ने इसमाईल बिन नतनियाह को आपको
क़त्ल करने के लिए भेजा है?” लेकिन
जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम ने उनकी बात का
यक़ीन न किया। 15तब यूहनान बिन क़रीह
मिसफ़ाह आया और अलहदगी में जिदलियाह से
मिला। वह बोला, “मुझे इसमाईल बिन नतनियाह
के पास जाकर उसे मार देने की इजाज़त दें। किसी
को भी पता नहीं चलेगा। क्या ज़रूरत है कि वह
आपको क़त्ल करे? अगर वह इसमें कामयाब हो
जाए तो आपके पास जमाशुदा हमवतन सबके
सब मुंतशिर हो जाएंगे और यहूदाह का बचा
हुआ हिस्सा हलाक हो जाएगा।” 16जिदलियाह
ने यूहनान को डाँटकर कहा, “ऐसा मत करना!
जो कुछ आप इसमाईल के बारे में बता रहे हैं वह
झूट है।”

इसमाईल जिदलियाह गवर्नर को क़त्ल करता है

41 इसमाईल बिन नतनियाह बिन
इलीसमा शाही नसल का था और
पहले शाहे-यहूदाह का आला अफ़सर था। सातवें
महीने[a] में वह दस आदमियों को अपने साथ
लेकर मिसफ़ाह में जिदलियाह से मिलने आया।
जब वह मिलकर खाना खा रहे थे 2तो इसमाईल
और उसके दस आदमी अचानक उठे और अपनी
तलवारों को खींचकर जिदलियाह को मार डाला।
यों इसमाईल ने उस आदमी को क़त्ल किया जिसे
बाबल के बादशाह ने सूबा यहूदाह पर मुक़र्रर
किया था। 3उसने मिसफ़ाह में जिदलियाह के
साथ रहनेवाले तमाम हमवतनों को भी क़त्ल
किया और वहाँ ठहरनेवाले बाबल के फ़ौजियों
को भी।

4अगले दिन जब किसी को मालूम नहीं था
कि जिदलियाह को क़त्ल किया गया है 5तो
80 आदमी वहाँ पहुँचे जो सिकम, सैला और
सामरिया से आकर रब के तबाहशुदा घर में उस
की परस्तिश करने जा रहे थे। उनके पास ग़ल्ला
और बख़ूर की क़ुरबानियाँ थीं, और उन्होंने ग़म के
मारे अपनी दाढ़ियाँ मुँडवाकर अपने कपड़े फाड़
लिए और अपनी जिल्द को ज़ख़मी कर दिया
था। 6इसमाईल रोते रोते मिसफ़ाह से निकलकर
उनसे मिलने आया। जब वह उनके पास पहुँचा
तो कहने लगा, "जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम के
पास आओ और देखो कि क्या हुआ है!"

7ज्योंही वह शहर में दाख़िल हुए तो इसमाईल
और उसके साथियों ने उन्हें क़त्ल करके एक हौज़
में फेंक दिया। 8सिर्फ़ दस आदमी बच गए जब
उन्होंने इसमाईल से कहा, "हमें मत क़त्ल करना,
क्योंकि हमारे पास गंदुम, जौ और शहद के ज़ख़ीरे
हैं जो हमने खुले मैदान में कहीं छुपा रखे हैं।" यह
सुनकर उसने उन्हें दूसरों की तरह न मारा बल्कि
ज़िंदा छोड़ा।

9जिस हौज़ में इसमाईल ने उन आदमियों की
लाशें फेंक दीं जो उसने जिदलियाह के मामले
में मार डाले थे उसे यहूदाह के बादशाह आसा
ने बनवाया था—उस वक़्त जब वह इसराईली
बादशाह बाशा की वजह से मिसफ़ाह को मज़बूत
बना रहा था। इसमाईल ने इसी हौज़ को मक़तूलों
से भर दिया। 10मिसफ़ाह के बाक़ी लोगों को
उसने क़ैदी बना लिया। उनमें यहूदाह के बादशाह
की बेटियाँ और बाक़ी वह तमाम लोग शामिल थे
जिन पर शाही मुहाफ़िज़ों के सरदार नबूज़रादान
ने जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम को मुक़र्रर किया
था। फिर इसमाईल उन सबको अपने साथ लेकर
मुल्के-अम्मोन के लिए रवाना हुआ।

11लेकिन यूहनान बिन क़रीह और उसके साथी
अफ़सरों को इत्तला दी गई कि इसमाईल से क्या
जुर्म हुआ है। 12तब वह अपने तमाम फ़ौजियों को
जमा करके इसमाईल से लड़ने के लिए निकले
और उसका ताक़्क़ुब करते करते उसे जिबऊन के
जोहड़ के पास जा लिया। 13ज्योंही इसमाईल के
क़ैदियों ने यूहनान और उसके अफ़सरों को देखा
तो वह ख़ुश हुए। 14सबने इसमाईल को छोड़
दिया और मुड़कर यूहनान के पास भाग आए।
15इसमाईल आठ साथियों समेत फ़रार हुआ और
यूहनान के हाथ से बचकर मुल्के-अम्मोन में चला
गया।

16यों मिसफ़ाह के बचे हुए तमाम लोग
जिबऊन में यूहनान और उसके साथी अफ़सरों
के ज़ेरे-निगरानी आए। उनमें वह तमाम फ़ौजी,
ख़वातीन, बच्चे और दरबारी शामिल थे जिन्हें
इसमाईल ने जिदलियाह को क़त्ल करने के बाद
क़ैदी बनाया था। 17लेकिन वह मिसफ़ाह वापस न
गए बल्कि आगे चलते चलते बैत-लहम के क़रीब
के गाँव बनाम सराय-किमहाम में रुक गए। वहाँ
वह मिसर के लिए रवाना होने की तैयारियाँ करने
लगे, 18क्योंकि वह बाबल के इंतक़ाम से डरते
थे, इसलिए कि जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम को

[a]सितंबर ता अक्तूबर।

क़त्ल करने से इसमाईल बिन नतनियाह ने उस
आदमी को मौत के घाट उतारा था जिसे शाहे-
बाबल ने यहूदाह का गवर्नर मुक़र्रर किया था।

यरमियाह मिसर न जाने का मशवरा देता है

42 यूहनान बिन क़रीह, यज़नियाह बिन
हूसायाह और दीगर फ़ौजी अफ़सर
बाक़ी तमाम लोगों के साथ छोटे से लेकर बड़े तक
2यरमियाह नबी के पास आए और कहने लगे,
"हमारी मिन्नत क़बूल करें और रब अपने ख़ुदा
से हमारे लिए दुआ करें। आप ख़ुद देख सकते हैं
कि गो हम पहले मुतअद्दिद लोग थे, लेकिन अब
थोड़े ही रह गए हैं। 3दुआ करें कि रब आपका
ख़ुदा हमें दिखाए कि हम कहाँ जाएँ और क्या
कुछ करें।"

4यरमियाह ने जवाब दिया, "ठीक है, मैं दुआ में
ज़रूर रब आपके ख़ुदा को आपकी गुज़ारिश पेश
करूँगा। और जो भी जवाब रब दे वह मैं लफ़्ज़
बलफ़्ज़ आपको बता दूँगा। मैं आपको किसी भी
बात से महरूम नहीं रखूँगा।" 5उन्होंने कहा, "रब
हमारा वफ़ादार और क़ाबिले-एतमाद गवाह है।
अगर हम हर बात पर अमल न करें जो रब आपका
ख़ुदा आपकी मारिफ़त हम पर नाज़िल करेगा
तो वही हमारे ख़िलाफ़ गवाही दे। 6ख़्वाह उसकी
हिदायत हमें अच्छी लगे या बुरी, हम रब अपने
ख़ुदा की सुनेंगे जिसके पास हम आपको भेज रहे
हैं ताकि हमारी सलामती हो। हम तो ज़रूर रब
अपने ख़ुदा की सुनेंगे।."

7दस दिन गुज़रने के बाद रब का कलाम
यरमियाह पर नाज़िल हुआ। 8उसने यूहनान,
उसके साथी अफ़सरों और बाक़ी तमाम लोगों को
छोटे से लेकर बड़े तक अपने पास बुलाकर 9कहा,
"आपने मुझे रब इसराईल के ख़ुदा के पास भेजा
ताकि मैं आपकी गुज़ारिश उसके सामने लाऊँ।
अब उसका फ़रमान सुनें! 10'अगर तुम इस
मुल्क में रहो तो मैं तुम्हें नहीं गिराऊँगा बल्कि
तामीर करूँगा, तुम्हें जड़ से नहीं उखाड़ूँगा बल्कि
पनीरी की तरह लगा दूँगा। क्योंकि मुझे उस
मुसीबत पर अफ़सोस है जिसमें मैंने तुम्हें मुब्तला
किया है। 11इस वक़्त तुम शाहे-बाबल से डरते
हो, लेकिन उससे ख़ौफ़ मत खाना!' रब फ़रमाता
है, 'उससे दहशत न खाओ, क्योंकि मैं तुम्हारे
साथ हूँ और तुम्हारी मदद करके उसके हाथ से
छुटकारा दूँगा। 12मैं तुम पर रहम करूँगा, इसलिए
वह भी तुम पर रहम करके तुम्हें तुम्हारे मुल्क में
वापस आने देगा।

13लेकिन अगर तुम रब अपने ख़ुदा की सुनने
के लिए तैयार न हो बल्कि कहो कि हम इस
मुल्क में नहीं रहेंगे 14बल्कि मिसर जाएंगे जहाँ
न जंग देखेंगे, न जंगी नरसिंगे की आवाज़ सुनेंगे
और न भूके रहेंगे 15तो रब का जवाब सुनो! ऐ
यहूदाह के बचे हुए लोगो, रब इसराईल का ख़ुदा
फ़रमाता है कि अगर तुम मिसर में जाकर वहाँ
पनाह लेने पर तुले हुए हो 16तो यक़ीन जानो कि
जिस तलवार और काल से तुम डरते हो वह वहीं
मिसर में तुम्हारा पीछा करता रहेगा। वहाँ जाकर
तुम यक़ीनन मरोगे। 17जितने भी मिसर जाकर
वहाँ रहने पर तुले हुए हों वह सब तलवार, काल
और मोहलक बीमारियों की ज़द में आकर मर
जाएंगे। जिस मुसीबत में मैं उन्हें डाल दूँगा उससे
कोई नहीं बचेगा।'

18क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का
ख़ुदा है फ़रमाता है, 'पहले मेरा सख़्त ग़ज़ब
यरूशलम के बाशिंदों पर नाज़िल हुआ। अगर तुम
मिसर जाओ तो मेरा ग़ज़ब तुम पर भी नाज़िल
होगा। तुम्हें देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे,
और तुम उनकी लान-तान और हिक़ारत का
निशाना बनोगे। लानत करनेवाला अपने दुश्मनों
के लिए तुम्हारे जैसा अंजाम चाहेगा। जहाँ तक
तुम्हारे वतन का ताल्लुक़ है, तुम उसे आइंदा कभी
नहीं देखोगे।'

19ऐ यहूदाह के बचे हुए लोगो, अब रब आपसे
हमकलाम हुआ है। उसका जवाब साफ़ है। मिसर
को मत जाना! यह बात ख़ूब जान लें कि आज
मैंने आपको आगाह कर दिया है। 20आपने अपने
आपको सख़्त धोका दिया है। क्योंकि आप ही

ने मुझे रब अपने ख़ुदा के पास भेजकर कहा,
‘रब हमारे ख़ुदा से हमारे लिए दुआ करें। जो भी
वह फ़रमाए वह हमें बताएँ तो हम उस पर अमल
करेंगे।’ 21आज मैंने यह किया है, लेकिन आप
रब अपने ख़ुदा की सुनने के लिए तैयार नहीं हैं।
जो कुछ भी उसने मुझे आपको सुनाने को कहा है
उस पर आप अमल नहीं करना चाहते। 22चुनाँचे
अब जान लें कि जहाँ आप जाकर पनाह लेना
चाहते हैं वहाँ आप तलवार, काल और मोहलक
बीमारियों की ज़द में आकर हलाक हो जाएंगे।”

यरमियाह की आगाही को नज़र-अंदाज़ किया जाता है

43 यरमियाह ख़ामोश हुआ। जो कुछ भी
रब उनके ख़ुदा ने यरमियाह को उन्हें
सुनाने को कहा था उसे उसने उन सब तक
पहुँचाया था। 2फिर अज़रियाह बिन हूसायाह,
यूहनान बिन अख़ीक़ाम और तमाम बदतमीज़
आदमी बोल उठे, “तुम झूट बोल रहे हो! रब
हमारे ख़ुदा ने तुम्हें यह सुनाने को नहीं भेजा कि
मिसर को न जाओ, न वहाँ आबाद हो जाओ।
3इसके पीछे बारूक बिन नैरियाह का हाथ है। वही
तुम्हें हमारे ख़िलाफ़ उकसा रहा है, क्योंकि वह
चाहता है कि हम बाबलियों के हाथ में आ जाएँ
ताकि वह हमें क़त्ल करें या जिलावतन करके
मुल्के-बाबल ले जाएँ।”

4ऐसी बातें करते करते यूहनान बिन क़रीह,
दीगर फ़ौजी अफ़सरों और बाक़ी तमाम लोगों ने
रब का हुक्म रद्द किया। वह मुल्के-यहूदाह में न
रहे 5बल्कि सब यूहनान और बाक़ी तमाम फ़ौजी
अफ़सरों की राहनुमाई में मिसर चले गए। उनमें
यहूदाह के वह बचे हुए सब लोग शामिल थे जो
पहले मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर हुए थे,
लेकिन अब यहूदाह में दुबारा आबाद होने के लिए
वापस आए थे। 6वह तमाम मर्द, औरतें और बच्चे
बादशाह की बेटियों समेत भी उनमें शामिल थे
जिन्हें शाही मुहाफ़िज़ों के सरदार नबूज़रादान ने
जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम के सुपुर्द किया था।
यरमियाह नबी और बारूक बिन नैरियाह को भी
साथ जाना पड़ा। 7यों वह रब की हिदायत रद्द
करके रवाना हुए और चलते चलते मिसरी सरहद
के शहर तहफ़नहीस तक पहुँचे।

शाहे-बाबल के मिसर में घुस आने की पेशगोई

8तहफ़नहीस में रब का कलाम यरमियाह पर
नाज़िल हुआ, 9“अपने हमवतनों के देखते देखते
चंद-एक बड़े पत्थर फ़िरौन के महल के दरवाज़े
के क़रीब ले जाकर गारे की मदद से फ़र्श की
कच्ची ईंटों में दबा दे। 10फिर उन्हें बता दे, ‘रब्बुल-
अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है
कि मैं अपने ख़ादिम शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र
को बुलाकर यहाँ लाऊँगा और उसका तख़्त उन
पत्थरों के ऊपर खड़ा करूँगा जो मैंने यरमियाह
के ज़रीए दबाए हैं। नबूकदनज़्ज़र उन्हीं के ऊपर
अपना शाही तंबू लगाएगा। 11क्योंकि वह आएगा
और मिसर पर हमला करके हर एक के साथ
वह कुछ करेगा जो उसके नसीब में है। एक मर
जाएगा, दूसरा क़ैद में जाएगा और तीसरा तलवार
की ज़द में आएगा। 12-13मैं मिसरी देवताओं
के मंदिरों को जला दूँगा। शाहे-बाबल उन्हें राख
करेगा। वह उनके बुतों पर क़ब्ज़ा करके उन्हें
अपने साथ ले जाएगा। जिस तरह चरवाहा चादर
ओढ़ लेता है उसी तरह वह मुल्के-मिसर ओढ़
लेगा। मिसर आते वक़्त वह सूरज देवता के सतूनों
को ढा देगा। हाँ, वह मिसरी देवताओं के मंदिर
नज़रे-आतिश करेगा। तब वह सही-सलामत वहाँ
से वापस चला जाएगा’।”

तुम बुतपरस्ती से बाज़ क्यों नहीं आते?

44 रब का कलाम एक बार फिर
यरमियाह पर नाज़िल हुआ। उसमें
वह उन तमाम हमवतनों से हमकलाम हुआ जो
शिमाली मिसर के शहरों मिजदाल, तहफ़नहीस
और मेंफ़िस और जुनूबी मिसर बनाम पतरूस में
रहते थे।

2“रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, ‘तुमने ख़ुद वह बड़ी आफ़त देखी
जो मैं यरूशलम और यहूदाह के दीगर तमाम
शहरों पर लाया। आज वह वीरानो-सुनसान हैं,
और उनमें कोई नहीं बसता। 3यों उन्हें उनकी बुरी
हरकतों का अज्र मिला। क्योंकि अजनबी माबूदों
के लिए बख़ूर जलाकर उनकी ख़िदमत करने से
उन्होंने मुझे तैश दिलाया। और यह ऐसे देवता थे
जिनसे पहले न वह, न तुम और न तुम्हारे बापदादा
वाक़िफ़ थे। 4बार बार मैं नबियों को उनके पास
भेजता रहा, और बार बार मेरे ख़ादिम कहते रहे
कि ऐसी घिनौनी हरकतें मत करना, क्योंकि मुझे
इनसे नफ़रत है! 5लेकिन उन्होंने न सुनी, न
ध्यान दिया। न वह अपनी बेदीनी से बाज़ आए, न
अजनबी माबूदों को बख़ूर जलाने का सिलसिला
बंद किया।

6तब मेरा शदीद ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ।
मेरे क़हर की ज़बरदस्त आग ने यहूदाह के शहरों
और यरूशलम की गलियों में फैलते फैलते उन्हें
वीरानो-सुनसान कर दिया। आज तक उनका यही
हाल है।’

7अब रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, ‘तुम अपना सत्यानास क्यों कर रहे
हो? ऐसे क़दम उठाने से तुम यहूदाह से आए
हुए मर्दों और औरतों को बच्चों और शीरख़ारों
समेत हलाकत की तरफ़ ला रहे हो। इस सूरत
में एक भी नहीं बचेगा। 8मुझे अपने हाथों के
काम से तैश क्यों दिलाते हो? यहाँ मिसर में
पनाह लेकर तुम अजनबी माबूदों के लिए बख़ूर
क्यों जलाते हो? इससे तुम अपने आपको
नेस्तो-नाबूद कर रहे हो, तुम दुनिया की तमाम
क़ौमों के लिए लानत और मज़ाक़ का निशाना
बनोगे। 9क्या तुम्हें वह बुराइयाँ याद नहीं जो
तुम्हारे बापदादा, यहूदाह के राजा-रानियों और
तुमसे तुम्हारी बीवियों समेत मुल्के-यहूदाह और
यरूशलम की गलियों में सरज़द हुई हैं? 10आज
तक तुमने न इंकिसारी का इज़हार किया, न मेरा
ख़ौफ़ माना, और न मेरी शरीअत के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ारी। तुम उन हिदायात के ताबे न रहे
जो मैंने तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को अता की
थीं।’

11चुनाँचे रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का
ख़ुदा है फ़रमाता है, ‘मैं तुम पर आफ़त लाने
का अटल इरादा रखता हूँ। तमाम यहूदाह ख़त्म
हो जाएगा। 12मैं यहूदाह के उस बचे हुए हिस्से
को सफ़हाए-हस्ती से मिटा दूँगा जो मिसर में
जाकर पनाह लेने पर तुला हुआ था। सब मिसर
में हलाक हो जाएंगे, ख़ाह तलवार से, ख़ाह काल
से। छोटे से लेकर बड़े तक सबके सब तलवार
या काल की ज़द में आकर मर जाएंगे। उन्हें
देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह
दूसरों की लान-तान और हिक़ारत का निशाना
बनेंगे। लानत करनेवाला अपने दुश्मनों के लिए
उन्हीं का-सा अंजाम चाहेगा। 13जिस तरह मैंने
यरूशलम को सज़ा दी ऐन उसी तरह मैं मिसर
में आनेवाले हमवतनों को तलवार, काल और
मोहलक बीमारियों से सज़ा दूँगा। 14यहूदाह के
जितने बचे हुए लोग यहाँ मिसर में पनाह लेने
के लिए आए हैं वह सब यहीं हलाक हो जाएंगे।
कोई भी बचकर मुल्के-यहूदाह में नहीं लौटेगा,
गो तुम सब वहाँ दुबारा आबाद होने की शदीद
आरज़ू रखते हो। सिर्फ़ चंद एक इसमें कामयाब
हो जाएंगे’।”

आसमानी मलिका की पूजा पर ज़िद

15उस वक़्त जुनूबी मिसर में रहनेवाले यहूदाह
के तमाम मर्द और औरतें एक बड़े इजतिमा के
लिए जमा हुए थे। मर्दों को ख़ूब मालूम था कि
हमारी बीवियाँ अजनबी माबूदों को बख़ूर की
क़ुरबानियाँ पेश करती हैं। अब उन्होंने यरमियाह
से कहा, 16“जो बात आपने रब का नाम लेकर
हमसे की है वह हम नहीं मानते। 17हम उन तमाम
बातों पर ज़रूर अमल करेंगे जो हमने कही हैं। हम
आसमानी मलिका देवी के लिए बख़ूर जलाएँगे
और उसे मै की नज़रें पेश करेंगे। हम वही कुछ
करेंगे जो हम, हमारे बापदादा, हमारे बादशाह

और हमारे बुज़ुर्ग मुल्के-यहूदाह और यरूशलम की गलियों में किया करते थे। क्योंकि उस वक़्त रोटी की कसरत थी और हमारा अच्छा हाल था। उस वक़्त हम किसी भी मुसीबत से दोचार न हुए।
18लेकिन जब से हम आसमानी मलिका को बख़ूर और मै की नज़रें पेश करने से बाज़ आए हैं उस वक़्त से हर लिहाज़ से हाजतमंद रहे हैं। उसी वक़्त से हम तलवार और काल की ज़द में आकर नेस्त हो रहे हैं।” 19औरतों ने बात जारी रखकर कहा, “क्या आप समझते हैं कि हमारे शौहरों को इसका इल्म नहीं था कि हम आसमानी मलिका को बख़ूर और मै की नज़रें पेश करती हैं, कि हम उस की शक्ल की टिक्कियाँ बनाकर उस की पूजा करती हैं?”

चंद एक के बचने की पेशगोई

20यरमियाह एतराज़ करनेवाले तमाम मर्दों और औरतों से दुबारा मुख़ातिब हुआ, 21“देखो, रब ने उस बख़ूर पर ध्यान दिया जो तुम और तुम्हारे बापदादा ने बादशाहों, बुज़ुर्गों और अवाम समेत यहूदाह के शहरों और यरूशलम की गलियों में जलाया है। यह बात उसे ख़ूब याद है।
22आख़िरकार एक वक़्त आया जब तुम्हारी शरीर और घिनौनी हरकतें क़ाबिले-बरदाश्त न रहीं, और रब को तुम्हें सज़ा देनी पड़ी। यही वजह है कि आज तुम्हारा मुल्क वीरानो-सुनसान है, कि उसे देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लानत करनेवाला अपने दुश्मन के लिए ऐसा ही अंजाम चाहता है। 23आफ़त इसी लिए तुम पर आई कि तुमने बुतों के लिए बख़ूर जलाकर रब की न सुनी। न तुमने उस की शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी, न उस की हिदायात और अहकाम पर अमल किया। आज तक मुल्क का यही हाल रहा है।”

24फिर यरमियाह ने तमाम लोगों से औरतों समेत कहा, “ऐ मिसर में रहनेवाले यहूदाह के तमाम हमवतनो, रब का कलाम सुनो! 25रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि तुम और तुम्हारी बीवियों ने इसरार किया है, ‘हम ज़रूर अपनी उन मन्नतों को पूरा करेंगे जो हमने मानी हैं, हम ज़रूर आसमानी मलिका को बख़ूर और मै की नज़रें पेश करेंगे।’ और तुमने अपने अलफ़ाज़ और अपनी हरकतों से साबित कर दिया है कि तुम संजीदगी से अपने इस एलान पर अमल करना चाहते हो। तो ठीक है, अपना वादा और अपनी मन्नतें पूरी करो!

26लेकिन ऐ मिसर में रहनेवाले तमाम हमवतनो, रब के कलाम पर ध्यान दो! रब फ़रमाता है कि मेरे अज़ीम नाम की क़सम, आइंदा मिसर में तुममें से कोई मेरा नाम लेकर क़सम नहीं खाएगा, कोई नहीं कहेगा, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ की हयात की क़सम!’ 27क्योंकि मैं तुम्हारी निगरानी कर रहा हूँ, लेकिन तुम पर मेहरबानी करने के लिए नहीं बल्कि तुम्हें नुक़सान पहुँचाने के लिए। मिसर में रहनेवाले यहूदाह के तमाम लोग तलवार और काल की ज़द में आ जाएंगे और पिसते पिसते हलाक हो जाएंगे। 28सिर्फ़ चंद एक दुश्मन की तलवार से बचकर मुल्के-यहूदाह वापस आएँगे। तब यहूदाह के जितने बचे हुए लोग मिसर में पनाह लेने के लिए आए हैं वह सब जान लेंगे कि किसकी बात दुरुस्त निकली है, मेरी या उन की।
29रब फ़रमाता है कि मैं तुम्हें निशान भी देता हूँ ताकि तुम्हें यक़ीन हो जाए कि मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ ख़ाली बातें नहीं कर रहा बल्कि तुम्हें यक़ीनन मिसर में सज़ा दूँगा। 30निशान यह होगा कि जिस तरह मैंने यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह को उसके जानी दुश्मन नबूकदनज़्ज़र के हवाले कर दिया उसी तरह मैं हुफ़रा फ़िरौन को भी उसके जानी दुश्मनों के हवाले कर दूँगा। यह रब का फ़रमान है।”

बारूक के लिए तसल्ली का पैग़ाम

45 यहूदाह के बादशाह यहूयक़ीम बिन यूसियाह की हुकूमत के चौथे साल में यरमियाह नबी को बारूक बिन नैरियाह के लिए रब का पैग़ाम मिला। उस वक़्त बारूक यरमियाह

की वह बातें एक किताब में दर्ज कर रहा था
जो उस पर नाज़िल हुई थीं। यरमियाह ने कहा,
2"ऐ बारूक, रब इसराईल का ख़ुदा तेरे बारे में
फ़रमाता है 3कि तू कहता है, 'हाय, मुझ पर
अफ़सोस! रब ने मेरे दर्द में इज़ाफ़ा कर दिया
है, अब मुझे रंजो-अलम भी सहना पड़ता है। मैं
कराहते कराहते थक गया हूँ। कहीं भी आरामो-
सुकून नहीं मिलता।'

4ऐ बारूक, रब जवाब में फ़रमाता है कि जो
कुछ मैंने ख़ुद तामीर किया उसे मैं गिरा दूँगा, जो
पौदा मैंने ख़ुद लगाया उसे जड़ से उखाड़ दूँगा। पूरे
मुल्क के साथ ऐसा ही सुलूक करूँगा। 5तो फिर
तू अपने लिए क्यों बड़ी कामयाबी हासिल करने
का आरज़ूमंद है? ऐसा ख़याल छोड़ दे, क्योंकि
मैं तमाम इनसानों पर आफ़त ला रहा हूँ। यह रब
का फ़रमान है। लेकिन जहाँ भी तू जाए वहाँ मैं
होने दूँगा कि तेरी जान छूट जाए।"[a]

मिसर की शिकस्त की पेशगोई

46 यरमियाह पर मुख़्तलिफ़ क़ौमों के
बारे में भी पैग़ामात नाज़िल हुए। यह
ज़ैल में दर्ज हैं।

2पहला पैग़ाम मिसर के बारे में है। यहूदाह के
बादशाह यहूयक़ीम बिन यूसियाह के चौथे साल
में शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र ने दरियाए-फ़ुरात
पर वाक़े शहर करकिमीस के पास मिसरी फ़ौज
को शिकस्त दी थी। उन दिनों में मिसरी बादशाह
निकोह फ़िरौन की फ़ौज के बारे में रब का कलाम
नाज़िल हुआ,

3"अपनी बड़ी और छोटी ढालें तैयार करके जंग
के लिए निकलो! 4घोड़ों को रथों में जोतो! दीगर
घोड़ों पर सवार हो जाओ! ख़ोद पहनकर खड़े हो
जाओ! अपने नेज़ों को रौग़न से चमकाकर ज़िरा-
बकतर पहन लो! 5लेकिन मुझे क्या नज़र आ
रहा है? मिसरी फ़ौजियों पर दहशत तारी हुई है।
वह पीछे हट रहे हैं, उनके सूरमाओं ने हथियार
डाल दिए हैं। वह भाग भागकर फ़रार हो रहे हैं
और पीछे भी नहीं देखते। रब फ़रमाता है कि चारों
तरफ़ दहशत ही दहशत फैल गई है। 6न तेज़ी से
भागनेवाला, न ज़बरदस्त फ़ौजी बच सकता है।
शिमाल में दरियाए-फ़ुरात के किनारे ही वह ठोकर
खाकर गिर गए हैं।

7यह क्या है जो दरियाए-नील की तरह चढ़
रहा है, जो सैलाब बनकर सब कुछ ग़रक़ कर
रहा है? 8मिसर दरियाए-नील की तरह चढ़ रहा
है, वही सैलाब बनकर सब कुछ ग़रक़ कर रहा
है। वह कहता है, 'मैं चढ़कर पूरी ज़मीन को
ग़रक़ कर दूँगा। मैं शहरों को उनके बाशिंदों समेत
तबाह करूँगा।' 9ऐ घोड़ो, दुश्मन पर टूट पड़ो! ऐ
रथो, दीवानों की तरह दौड़ो! ऐ फ़ौजियो, लड़ने
के लिए निकलो! ऐ एथोपिया और लिबिया के
सिपाहियो, अपनी ढालें पकड़कर चलो, ऐ लुदिया
के तीर चलानेवालो, अपने कमान तानकर आगे
बढ़ो!

10लेकिन आज क़ादिरे-मुतलक़, रब्बुल-
अफ़वाज का ही दिन है। इंतक़ाम के इस दिन वह
अपने दुश्मनों से बदला लेगा। उस की तलवार
उन्हें खा खाकर सेर हो जाएगी, और उनका ख़ून
पी पीकर उस की प्यास बुझेगी। क्योंकि शिमाल
में दरियाए-फ़ुरात के किनारे उन्हें क़ादिरे-मुतलक़,
रब्बुल-अफ़वाज को क़ुरबान किया जाएगा।

11ऐ कुँवारी मिसर बेटी, मुल्के-जिलियाद में
जाकर अपने ज़ख़मों के लिए बलसान ख़रीद ले।
लेकिन क्या फ़ायदा? ख़ाह तू कितनी दवाई क्यों
न इस्तेमाल करे तेरी चोटें भर ही नहीं सकतीं!
12तेरी शरमिंदगी की ख़बर दीगर अक़वाम में फैल
गई है, तेरी चीख़ें पूरी दुनिया में गूँज रही हैं।
क्योंकि तेरे सूरमे एक दूसरे से ठोकर खाकर गिर
गए हैं।"

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : मैं तुझे तेरी जान ग़नीमत के तौर पर बख़्श दूँगा।

शाहे-बाबल के मिसर में घुस आने की पेशगोई

13जब शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र मिसर पर
हमला करने आया तो रब इसके बारे में यरमियाह
से हमकलाम हुआ,
14“मिसरी शहरों मिजदाल, मेंफ़िस और
तहफ़नहीस में एलान करो, ‘जंग की तैयारियाँ
करके लड़ने के लिए खड़े हो जाओ! क्योंकि
तलवार तुम्हारे आस-पास सब कुछ खा रही है।’
15ऐ मिसर, तेरे ज़बरदस्त साँड[a] को ख़ाक
में क्यों मिलाया गया है? वह खड़ा नहीं रह
सकता, क्योंकि रब ने उसे दबा दिया है। 16उसने
मुतअद्दिद अफ़राद को ठोकर खाने दिया, और
वह एक दूसरे पर गिर गए। उन्होंने कहा, ‘आओ,
हम अपनी ही क़ौम और अपने वतन में वापस
चले जाएँ जहाँ ज़ालिम की तलवार हम तक नहीं
पहुँच सकती।’ 17वहाँ वह पुकार उठे, ‘मिसर का
बादशाह शोर तो बहुत मचाता है लेकिन इसके
पीछे कुछ भी नहीं। जो सुनहरा मौक़ा उसे मिला
वह जाता रहा है’।”
18दुनिया का बादशाह जिसका नाम रब्बुल-
अफ़वाज है फ़रमाता है, “मेरी हयात की क़सम,
जो तुम पर हमला करने आ रहा है वह दूसरों
से उतना बड़ा है जितना तबूर दीगर पहाड़ों
से और करमिल समुंदर से ऊँचा है। 19ऐ
मिसर के बाशिंदो, अपना मालो-असबाब बाँधकर
जिलावतन होने की तैयारियाँ करो। क्योंकि
मेंफ़िस मिसमार होकर नज़रे-आतिश हो जाएगा।
उसमें कोई नहीं रहेगा।
20मिसर ख़ूबसूरत-सी जवान गाय है, लेकिन
शिमाल से मोहलक मक्खी आकर उस पर धावा
बोल रही है। हाँ, वह आ रही है। 21मिसरी फ़ौज
के भाड़े के फ़ौजी मोटे-ताज़े बछड़े हैं, लेकिन वह
भी मुड़कर फ़रार हो जाएंगे। एक भी क़ायम नहीं
रहेगा। क्योंकि आफ़त का दिन उन पर आनेवाला
है, वह वक़्त जब उन्हें पूरी सज़ा मिलेगी। 22मिसर
साँप की तरह फुँकारते हुए पीछे हट जाएगा जब
दुश्मन के फ़ौजी पूरे ज़ोर से उस पर हमला करेंगे,
जब वह लकड़हारों की तरह अपनी कुल्हाड़ियाँ
पकड़े हुए उस पर टूट पड़ेंगे।” 23रब फ़रमाता है,
“तब वह मिसर का जंगल काट डालेंगे, गो वह
कितना घना क्यों न हो। क्योंकि उनकी तादाद
टिड्डियों से ज़्यादा होगी बल्कि वह अनगिनत होंगे।
24मिसर बेटी की बेइज़्ज़ती की जाएगी, उसे
शिमाली क़ौम के हवाले किया जाएगा।”
25रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, “मैं थीबस शहर के देवता आमून,
फ़िरौन और तमाम मिसर को उसके देवताओं और
बादशाहों समेत सज़ा दूँगा। हाँ, मैं फ़िरौन और उस
पर एतमाद रखनेवाले तमाम लोगों की अदालत
करूँगा।” 26रब फ़रमाता है, “मैं उन्हें उनके जानी
दुश्मनों के हवाले कर दूँगा, और वह शाहे-बाबल
नबूकदनज़्ज़र और उसके अफ़सरों के क़ाबू में
आ जाएंगे। लेकिन बाद में मिसर पहले की तरह
दुबारा आबाद हो जाएगा।
27जहाँ तक तेरा ताल्लुक़ है, ऐ याक़ूब मेरे
ख़ादिम, ख़ौफ़ मत खा! ऐ इसराईल, हौसला मत
हार! देख, मैं तुझे दूर-दराज़ मुल्क से छुटकारा
दूँगा। तेरी औलाद को मैं उस मुल्क से नजात
दूँगा जहाँ उसे जिलावतन किया गया है। फिर
याक़ूब वापस आकर आरामो-सुकून की ज़िंदगी
गुज़ारेगा। कोई नहीं होगा जो उसे हैबतज़दा करे।”
28रब फ़रमाता है, “ऐ याक़ूब मेरे ख़ादिम, ख़ौफ़
न खा, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं उन तमाम क़ौमों
को नेस्तो-नाबूद कर दूँगा जिनमें मैंने तुझे मुंतशिर
कर दिया है, लेकिन तुझे मैं इस तरह सफ़हाए-
हस्ती से नहीं मिटाऊँगा। अलबत्ता मैं मुनासिब हद
तक तेरी तंबीह करूँगा, क्योंकि मैं तुझे सज़ा दिए
बग़ैर नहीं छोड़ सकता।”

[a]साँड : मिसर का एक देवता। इबरानी लफ़्ज़ का मतलब सूरमा भी हो सकता है।

फ़िलिस्तियों को सफ़हाए-हस्ती से मिटाया जाएगा

47 फ़िरौन के ग़ज़्ज़ा शहर पर हमला करने से पहले यरमियाह नबी पर फ़िलिस्तियों के बारे में रब का कलाम नाज़िल हुआ,

2"रब फ़रमाता है कि शिमाल से पानी आ रहा
है जो सैलाब बनकर पूरे मुल्क को ग़रक़ कर देगा।
पूरा मुल्क शहरों और बाशिंदों समेत उसमें डूब
जाएगा। लोग चीख़ उठेंगे, और मुल्क के तमाम
बाशिंदे आहो-ज़ारी करेंगे। 3क्योंकि सरपट दौड़ते
हुए घोड़ों की टापें सुनाई देंगी, दुश्मन के रथों
का शोर और पहियों की गड़गड़ाहट उनके कानों
तक पहुँचेगी। बाप ख़ौफ़ज़दा होकर यों साकित
हो जाएंगे कि वह अपने बच्चों की मदद करने
के लिए पीछे भी देख नहीं सकेंगे। 4क्योंकि वह
दिन आनेवाला है जब तमाम फ़िलिस्तियों को
नेस्तो-नाबूद किया जाएगा ताकि सूर और सैदा
के आख़िरी मदद करनेवाले भी ख़त्म हो जाएँ।
क्योंकि रब फ़िलिस्तियों को सफ़हाए-हस्ती से
मिटानेवाला है, जज़ीराए-क्रेते के उन बचे हुओं
को जो यहाँ आकर आबाद हुए हैं।

5ग़ज़्ज़ा बेटी मातम के आलम में अपना सर
मुँडवाएगी, अस्क़लून शहर मिसमार हो जाएगा।
ऐ मैदानी इलाक़े के बचे हुए लोगो, तुम कब तक
अपनी जिल्द को ज़ख़मी करते रहोगे? 6'हाय, ऐ
रब की तलवार, क्या तू कभी नहीं आराम करेगी?
दुबारा अपने मियान में छुप जा! ख़ामोश होकर
आराम कर!' 7लेकिन तू किस तरह आराम कर
सकती है जब रब ने इसका हुक्म दिया है? उसी ने
तो मुक़र्रर किया है कि वह अस्क़लून और साहिली
इलाक़े पर धावा बोले।"

मोआब के अंजाम की पेशगोई

48 मोआब के बारे में रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है,

"नबू शहर पर अफ़सोस, क्योंकि वह तबाह
हो गया है। दुश्मन ने क़िरियतायम की बेहुरमती
करके उस पर क़ब्ज़ा कर लिया है। चट्टान के क़िले
की रुसवाई हो गई, वह पाश पाश हो गया है।
2अब से कोई मोआब की तारीफ़ नहीं करेगा।
हसबोन में आदमी उस की शिकस्त की साज़िशें
करके कह रहे हैं, आओ, हम मोआबी क़ौम को
नेस्तो-नाबूद करें। 'ऐ मदमीन, तू भी तबाह हो
जाएगा, तलवार तेरे भी पीछे पड़ जाएगी।'

3सुनो! होरोनायम से चीख़ें बुलंद हो रही हैं।
तबाही और बड़ी शिकस्त का शोर मच रहा है।
4मोआब चूर चूर हो गया है, उसके बच्चे ज़ोर
से चिल्ला रहे हैं। 5लोग रोते रोते लूहीत की
तरफ़ चढ़ रहे हैं। होरोनायम की तरफ़ उतरते
रास्ते पर शिकस्त की आहो-ज़ारी सुनाई दे रही
है। 6भागकर अपनी जान बचाओ! रेगिस्तान में
झाड़ी[a] की मानिंद बन जाओ।

7चूँकि तुम मोआबियों ने अपनी काम-
याबियों और दौलत पर भरोसा रखा, इसलिए
तुम भी क़ैद में जाओगे। तुम्हारा देवता कमोस भी
अपने पुजारियों और बुज़ुर्गों समेत जिलावतन हो
जाएगा। 8तबाह करनेवाला हर शहर पर हमला
करेगा, एक भी नहीं बचेगा। जिस तरह रब ने
फ़रमाया है, वादी भी तबाह हो जाएगी और
मैदाने-मुरतफ़ा भी। 9मोआब पर नमक डाल दो,
क्योंकि वह मिसमार हो जाएगा। उसके शहर
वीरानो-सुनसान हो जाएंगे, और उनमें कोई नहीं
बसेगा।

10उस पर लानत जो सुस्ती से रब का काम
करे! उस पर लानत जो अपनी तलवार को ख़ून
बहाने से रोक ले! 11अपनी जवानी से लेकर
आज तक मोआब आरामो-सुकून की ज़िंदगी
गुज़ारता आया है, उस मै की मानिंद जो कभी
नहीं छेड़ी गई और कभी एक बरतन से दूसरे में
उंडेली नहीं गई। इसलिए उसका मज़ा क़ायम और
ज़ायक़ा बेहतरीन रहा है।" 12लेकिन रब फ़रमाता

[a]या अरोईर।

है, “वह दिन आनेवाला है जब मैं ऐसे आदमियों को उसके पास भेजूँगा जो मै को बरतनों से निकालकर ज़ाया कर देंगे, और बरतनों को ख़ाली करने के बाद पाश पाश कर देंगे। 13तब मोआब को अपने देवता कमोस पर यों शर्म आएगी जिस तरह इसराईल को बैतेल के उस बुत पर शर्म आई जिस पर वह भरोसा रखता था।

14हाय, तुम अपने आप पर कितना फ़ख़र करते हो कि हम सूरमे और ज़बरदस्त जंगजू हैं। 15लेकिन दुनिया का बादशाह जिसका नाम रब्बुल-अफ़वाज है फ़रमाता है कि मोआब तबाह हो जाएगा। दुश्मन उसके शहरों पर चढ़ आएगा, और उसके बेहतरीन जवान उतरकर क़त्लो-ग़ारत की ज़द में आ जाएँगे।

मोआब की ताक़त टूट गई है

16मोआब का अंजाम क़रीब ही है, आफ़त उस पर नाज़िल होनेवाली है। 17ऐ पड़ोस में बसनेवालो, उस पर मातम करो! जितने उस की शोहरत जानते हो आहो-ज़ारी करो। बोलो, ‘हाय, मोआब का ज़ोरदार असाए-शाही टूट गया है, उस की शानो-शौकत की अलामत ख़ाक में मिलाई गई है।’

18ऐ दीबोन बेटी, अपने शानदार तख़्त पर से उतरकर प्यासी ज़मीन पर बैठ जा। क्योंकि मोआब को तबाह करनेवाला तुझ पर भी चढ़ आएगा, वह तेरे क़िलाबंद शहरों को भी मिसमार करेगा। 19ऐ अरोईर की रहनेवाली, सड़क के किनारे खड़ी होकर ध्यान दे! भागनेवालों और अपनी जान बचानेवालों से पूछ ले कि क्या हुआ है। 20तब तुझे जवाब मिलेगा, ‘मोआब रुसवा हुआ है, वह पाश पाश हो गया है। बुलंद आवाज़ से वावैला करो! दरियाए-अरनोन के किनारे एलान करो कि मोआब ख़त्म है।’

21मैदाने-मुरतफ़ा पर अल्लाह की अदालत नाज़िल हुई है। हौलून, यहज़, मिफ़ात, 22दीबोन, नबू, बैत-दिबलातायम, 23क़िरि-यतायम, बैत-जमूल, बैत-मऊन, 24क़रियोत और बुसरा, ग़रज़ मोआब के तमाम शहरों की अदालत हुई है, ख़ाह वह दूर हों या क़रीब।”

25रब फ़रमाता है, “मोआब की ताक़त टूट गई है, उसका बाज़ू पाश पाश हो गया है। 26उसे मै पिला पिलाकर मतवाला करो, वह अपनी क़ै में लोट-पोट होकर सबके लिए मज़ाक़ का निशाना बन जाए। क्योंकि वह मग़रूर होकर रब के ख़िलाफ़ खड़ा हो गया है।

27तुम मोआबियों ने इसराईल को अपने मज़ाक़ का निशाना बनाया था। तुम यों उसे गालियाँ देते रहे जैसे उसे चोरी करते वक़्त पकड़ा गया हो। 28लेकिन अब तुम्हारी बारी आ गई है। अपने शहरों को छोड़कर चट्टानों में जा बसो! कबूतर बनकर तंग और गहरी घाटी की खड़ी चढ़ाइयों पर अपने घोंसले बना लो।

29हमने मोआब के तकब्बुर के बारे में सुना है, क्योंकि वह हद से ज़्यादा मुतकब्बिर, मग़रूर, घमंडी, ख़ुदपसंद और अनापरस्त है।”

30रब फ़रमाता है, “मैं उसके तकब्बुर से वाक़िफ़ हूँ। लेकिन उस की डींगें अबस हैं, उनके पीछे कुछ नहीं है। 31इसलिए मैं मोआब पर आहो-ज़ारी कर रहा, तमाम मोआब के सबब से चिल्ला रहा हूँ। क़ीर-हरासत के बाशिंदों का अंजाम देखकर मैं आहें भर रहा हूँ। 32ऐ सिबमाह की अंगूर की बेल, याज़ेर की निसबत मैं कहीं ज़्यादा तुझ पर मातम कर रहा हूँ। तेरी कोंपलें याज़ेर तक फैली हुई थीं बल्कि समुंदर को पार भी करती थीं। लेकिन अब तबाह करनेवाला दुश्मन तेरे पके हुए अंगूरों और मौसमे-गरमा के फल पर टूट पड़ा है। 33अब ख़ुशी-ओ-शादमानी मोआब के बाग़ों और खेतों से जाती रही है। मैंने अंगूर का रस निकालने का काम रोक दिया है। कोई ख़ुशी के नारे लगा लगाकर अंगूर को पाँवों तले नहीं रौंदता। शोर तो मच रहा है, लेकिन ख़ुशी के नारे बुलंद नहीं हो रहे बल्कि जंग के।

34हसबोन में लोग मदद के लिए पुकार रहे हैं, उनकी आवाज़ इलियाली और यहज़ तक सुनाई दे रही है। इसी तरह ज़ुग़र की चीख़ें होरोनायम और

इजलत-शलीशियाह तक पहुँच गई हैं। क्योंकि निमरीम का पानी भी ख़ुश्क हो जाएगा।” 35रब फ़रमाता है, “मोआब में जो ऊँची जगहों पर चढ़कर अपने देवताओं को बख़ूर और बाक़ी क़ुरबानियाँ पेश करते हैं उनका मैं ख़ातमा कर दूँगा।

36इसलिए मेरा दिल बाँसरी के मातमी सुर निकालकर मोआब और क़ीर-हरासत के लिए नोहा कर रहा है। क्योंकि उनकी हासिलशुदा दौलत जाती रही है। 37हर सर गंजा, हर दाढ़ी मुँडवाई गई है। हर हाथ की जिल्द को ज़ख़मी कर दिया गया है, हर कमर टाट से मुलब्बस है। 38मोआब की तमाम छतों पर और उसके चौकों में आहो-ज़ारी बुलंद हो रही है।”

क्योंकि रब फ़रमाता है, “मैंने मोआब को बेकार मिट्टी के बरतन की तरह तोड़ डाला है। 39हाय, मोआब पाश पाश हो गया है! लोग ज़ारो-क़तार रो रहे हैं, और मोआब ने शर्म के मारे अपना मुँह ढाँप लिया है। वह मज़ाक़ का निशाना बन गया है, उसे देखकर तमाम पड़ोसियों के रोंगटे खड़े हो गए हैं।”

मोआब रब के ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ है

40रब फ़रमाता है, “वह देखो! दुश्मन उक़ाब की तरह मोआब पर झपट्टा मारता है। अपने परों को फैलाकर वह पूरे मुल्क पर साया डालता है। 41दुश्मन ने क़सबों पर क़ब्ज़ा कर लिया है, क़िले उसके हाथ में आ गए हैं। उस दिन मोआबी सूरमाओं का दिल दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खाएगा। 42क्योंकि मोआबी क़ौम सफ़हाए-हस्ती से मिट जाएगी, इसलिए कि वह मग़रूर होकर रब के ख़िलाफ़ खड़ी हो गई है।

43ऐ मोआबी क़ौम, दहशत, गढ़ा और फंदा तेरे नसीब में हैं।” 44क्योंकि रब फ़रमाता है, “जो दहशत से भागकर बच जाए वह गढ़े में गिर जाएगा, और जो गढ़े से निकल जाए वह फंदे में फँस जाएगा। क्योंकि मैं मोआब पर उस की अदालत का साल लाऊँगा।

45पनाहगुज़ीन थकेहारे हसबोन के साये में रुक जाते हैं। लेकिन अफ़सोस, हसबोन से आग निकल आई है और सीहोन बादशाह के शहर में से शोला भड़क उठा है जो मोआब की पेशानी को और शोर मचानेवालों के चाँदों को नज़रे-आतिश करेगा। 46ऐ मोआब, तुझ पर अफ़सोस! कमोस देवता के परस्तार नेस्तो-नाबूद हैं, तेरे बेटे-बेटियाँ क़ैदी बनकर जिलावतन हो गए हैं।

47लेकिन आनेवाले दिनों में मैं मोआब को बहाल करूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

यहाँ मोआब पर अदालत का फ़ैसला इख़्तिताम पर पहुँच गया है।

अम्मोनियों की अदालत

49 अम्मोनियों के बारे में रब फ़रमाता है,

“क्या इसराईल की कोई औलाद नहीं, कोई वारिस नहीं जो जद के क़बायली इलाक़े में रह सके? मलिक देवता के परस्तारों ने उस पर क्यों क़ब्ज़ा किया है? क्या वजह है कि यह लोग जद के शहरों में आबाद हो गए हैं?” 2चुनाँचे रब फ़रमाता है, “वह वक़्त आनेवाला है कि मेरे हुक्म पर अम्मोनी दारुल-हुकूमत रब्बा के ख़िलाफ़ जंग के नारे लगाए जाएंगे। तब वह मलबे का ढेर बन जाएगा, और गिर्दो-नवाह की आबादियाँ नज़रे-आतिश हो जाएँगी। तब इसराईल उन पर क़ब्ज़ा करेगा जिन्होंने उस पर क़ब्ज़ा किया था।” यह रब का फ़रमान है।

3“ऐ हसबोन, वावैला कर, क्योंकि अई शहर बरबाद हुआ है। ऐ रब्बा की बेटियो, मदद के लिए चिल्लाओ! टाट ओढ़कर मातम करो! बाड़ों के अंदर बेचैनी से इधर-उधर फिरो! क्योंकि मलिक देवता अपने पुजारियों और बुज़ुर्गों समेत जिलावतन हो जाएगा। 4ऐ बेवफ़ा बेटी, तू घाटियों पर, पानी से छलकती अपनी वादी पर कितना फ़ख़्र करती है! तू अपने मालो-दौलत पर भरोसा करके शेख़ी मारती है कि अब मुझ पर कोई हमला नहीं करेगा।” 5क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-

अफ़वाज फ़रमाता है, "मैं तमाम पड़ोसियों की
तरफ़ से तुझ पर दहशत छा जाने दूँगा। तुम सबको
चारों तरफ़ मुंतशिर कर दिया जाएगा, और तेरे
पनाहगुज़ीनों को कोई जमा नहीं करेगा।
6लेकिन बाद में मैं अम्मोनियों को बहाल
करूँगा।" यह रब का फ़रमान है।

अदोम की अदालत

7रब्बुल-अफ़वाज अदोम के बारे में फ़र-
माता है, "क्या तेमान में हिकमत का नामो-
निशान नहीं रहा? क्या दानिशमंद सहीह मशवरा
नहीं दे सकते? क्या उनकी दानाई बेकार हो गई
है?
8ऐ ददान के बाशिंदो, भागकर हिजरत करो,
ज़मीन के अंदर छुप जाओ। क्योंकि मैं एसौ की
औलाद पर आफ़त नाज़िल करता हूँ, मेरी सज़ा
का दिन क़रीब आ गया है। 9ऐ अदोम, अगर तू
अंगूर का बाग़ होता और मज़दूर फ़सल चुनने के
लिए आते तो थोड़ा-बहुत उनके पीछे रह जाता।
अगर डाकू रात के वक़्त तुझे लूट लेते तो वह सिर्फ़
उतना ही छीन लेते जितना उठाकर ले जा सकते
हैं। लेकिन तेरा अंजाम इससे कहीं ज़्यादा बुरा
होगा। 10क्योंकि मैंने एसौ को नंगा करके उस की
तमाम छुपने की जगहें ढूँड निकाली हैं। वह कहीं
भी छुप नहीं सकेगा। उस की औलाद, भाई और
हमसाये हलाक हो जाएंगे, एक भी बाक़ी नहीं
रहेगा। 11अपने यतीमों को पीछे छोड़ दे, क्योंकि
मैं उनकी जान को बचाए रखूँगा। तुम्हारी बेवाएँ
भी मुझ पर भरोसा रखें।"
12रब फ़रमाता है, "जिन्हें मेरे ग़ज़ब का प्याला
पीने का फ़ैसला नहीं सुनाया गया था उन्हें भी
पीना पड़ा। तो फिर तेरी जान किस तरह बचेगी?
नहीं, तू यक़ीनन सज़ा का प्याला पी लेगा।"
13रब फ़रमाता है, "मेरे नाम की क़सम, बुसरा
शहर गिर्दो-नवाह के तमाम शहरों समेत अबदी
खंडरात बन जाएगा। उसे देखकर लोगों के रोंगटे
खड़े हो जाएंगे, और वह उसे लान-तान करेंगे।
लानत करनेवाला अपने दुश्मन के लिए बुसरा ही
का-सा अंजाम चाहेगा।"
14मैंने रब की तरफ़ से पैग़ाम सुना है, "एक
क़ासिद को अक़वाम के पास भेजा गया है जो
उन्हें हुक्म दे, 'जमा होकर अदोम पर हमला करने
के लिए निकलो! उससे लड़ने के लिए उठो!'
15अब मैं तुझे छोटा बना दूँगा, एक ऐसी क़ौम
जिसे दीगर लोग हक़ीर जानेंगे। 16माज़ी में दूसरे
तुझसे दहशत खाते थे, लेकिन इस बात ने और तेरे
ग़ुरूर ने तुझे फ़रेब दिया है। बेशक तू चट्टानों की
दराड़ों में बसेरा करता है, और पहाड़ी बुलंदियाँ
तेरे क़ब्ज़े में हैं। लेकिन ख़ाह तू अपना घोंसला
उक़ाब की-सी ऊँची जगहों पर क्यों न बनाए तो
भी मैं तुझे वहाँ से उतारकर ख़ाक में मिला दूँगा।"
यह रब का फ़रमान है।
17"मुल्के-अदोम यों बरबाद हो जाएगा कि
वहाँ से गुज़रनेवालों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे।
उसके ज़ख़मों को देखकर वह 'तौबा तौबा'
कहेंगे।" 18रब फ़रमाता है, "उसका अंजाम
सदूम, अमूरा और उनके पड़ोसी शहरों की मानिंद
होगा जिन्हें अल्लाह ने उलटाकर नेस्तो-नाबूद
कर दिया। वहाँ कोई नहीं बसेगा। 19जिस तरह
शेर-बबर यरदन के जंगल से निकलकर शादाब
चरागाहों में चरनेवाली भेड़-बकरियों पर टूट पड़ता
है उसी तरह मैं एकदम अदोम को उसके अपने
मुल्क से भगा दूँगा। तब मैं अपने चुने हुए आदमी
को अदोम पर मुक़र्रर करूँगा। क्योंकि कौन मेरे
बराबर है? कौन मुझसे जवाब तलब कर सकता
है? वह गल्लाबान कहाँ है जो मेरा मुक़ाबला कर
सके?"
20चुनाँचे अदोम पर रब का फ़ैसला सुनो!
तेमान के बाशिंदों के लिए उसके मनसूबे पर ध्यान
दो! दुश्मन पूरे रेवड़ को सबसे नन्हे बच्चों से
लेकर बड़ों तक घसीटकर ले जाएगा। उसकी
चरागाह वीरानो-सुनसान हो जाएगी। 21अदोम
इतने धड़ाम से गिर जाएगा कि ज़मीन थरथरा
उठेगी। लोगों की चीख़ें बहरे-क़ुलज़ुम तक सुनाई
देंगी। 22वह देखो! दुश्मन उक़ाब की तरह उड़कर

अदोम पर झपट्टा मारता है। वह अपने परों को
फैलाकर बुसरा पर साया डालता है। उस दिन
अदोमी सूरमाओं का दिल दर्दे-ज़ह में मुब्तला
औरत की तरह पेचो-ताब खाएगा।

दमिश्क़ की अदालत

23रब दमिश्क़ के बारे में फ़रमाता है,
"हमात और अरफ़ाद शरमिंदा हो गए हैं। बुरी
ख़बरें सुनकर वह हिम्मत हार गए हैं। परेशानी ने
उन्हें उस मुतलातिम समुंदर जैसा बेचैन कर दिया
है जो थम नहीं सकता। 24दमिश्क़ हिम्मत हारकर
भागने के लिए मुड़ गया है। दहशत उस पर छा
गई है, और वह दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह
तड़प रहा है।
25हाय, दमिश्क़ को तर्क किया गया है! जिस
मशहूर शहर से मेरा दिल लुत्फ़अंदोज़ होता
था वह वीरानो-सुनसान है।" 26रब्बुल-अफ़वाज
फ़रमाता है, "उस दिन उसके जवान आदमी
गलियों में गिरकर रह जाएंगे, उसके तमाम फ़ौजी
हलाक हो जाएंगे। 27मैं दमिश्क़ की फ़सील
को आग लगा दूँगा जो फैलते फैलते बिन-हदद
बादशाह के महलों को भी अपनी लपेट में ले
लेगी।"

बद्दू क़बीलों की अदालत

28ज़ैल में क़ीदार और हसूर के बद्दू क़बीलों
के बारे में कलाम दर्ज है। बाद में शाहे-बाबल
नबूकदनज़्ज़र ने उन्हें शिकस्त दी। रब फ़रमाता
है,
"उठो! क़ीदार पर हमला करो! मशरिक़ में
बसनेवाले बद्दू क़बीलों को तबाह करो! 29तुम
उनके ख़ैमों, भेड़-बकरियों और ऊँटों को छीन
लोगे, उनके ख़ैमों के परदों और बाक़ी सामान को
लूट लोगे। चीख़ें सुनाई देंगी, 'हाय, चारों तरफ़
दहशत ही दहशत'!"
30रब फ़रमाता है, "ऐ हसूर में बसनेवाले
क़बीलो, जल्दी से भाग जाओ, ज़मीन की दराड़ों
में छुप जाओ! क्योंकि शाहे-बाबल ने तुम पर
हमला करने का फ़ैसला करके तुम्हारे ख़िलाफ़
मनसूबा बाँध लिया है।" 31रब फ़रमाता है, "ऐ
बाबल के फ़ौजियो, उठकर उस क़ौम पर हमला
करो जो अलहदगी में पुरसुकून और महफ़ूज़
ज़िंदगी गुज़ारती है, जिसके न दरवाज़े, न कुंडे
हैं। 32उनके ऊँट और बड़े बड़े रेवड़ लूट का माल
बन जाएंगे। क्योंकि मैं रेगिस्तान के किनारे पर
रहनेवाले इन क़बीलों को चारों तरफ़ मुंतशिर कर
दूँगा। उन पर चारों तरफ़ से आफ़त आएगी।" यह
रब का फ़रमान है। 33"हसूर हमेशा तक वीरानो-
सुनसान रहेगा, उसमें कोई नहीं बसेगा। गीदड़ ही
उसमें अपने घर बना लेंगे।"

मुल्के-ऐलाम की अदालत

34शाहे-यहूदाह सिदक़ियाह की हुकूमत
के इब्तिदाई दिनों में रब यरमियाह नबी
से हमकलाम हुआ। पैग़ाम ऐलाम के मु-
ताल्लिक़ था।
35"रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, 'मैं ऐ-
लाम की कमान को तोड़ डालता हूँ, उस हथियार
को जिस पर ऐलाम की ताक़त मबनी है।
36आसमान की चारों सिम्तों से मैं ऐलामियों के
ख़िलाफ़ तेज़ हवाएँ चलाऊँगा जो उन्हें उड़ाकर
चारों तरफ़ मुंतशिर कर देंगी। कोई ऐसा मुल्क
नहीं होगा जिस तक ऐलामी जिलावतन नहीं
पहुँचेंगे।' 37रब फ़रमाता है, 'मैं ऐलाम को उसके
जानी दुश्मनों के सामने पाश पाश कर दूँगा। मैं
उन पर आफ़त लाऊँगा, मेरा सख़्त क़हर उन पर
नाज़िल होगा। जब तक वह नेस्त न हों मैं तलवार
को उनके पीछे चलाता रहूँगा। 38तब मैं ऐलाम
में अपना तख़्त खड़ा करके उसके बादशाह और
बुज़ुर्गों को तबाह कर दूँगा।' यह रब का फ़रमान
है।
39लेकिन रब यह भी फ़रमाता है, 'आने-
वाले दिनों में मैं ऐलाम को बहाल करूँगा'।"

बाबल की अदालत

50 मुल्के-बाबल और उसके दारुल-
हुकूमत बाबल के बारे में रब का
कलाम यरमियाह नबी पर नाज़िल हुआ,
2“अक़वाम के सामने एलान करो, हर जगह
इत्तला दो! झंडा गाड़कर कुछ न छुपाओ बल्कि
सबको साफ़ बताओ, ‘बाबल शहर दुश्मन के
क़ब्ज़े में आ गया है! बेल देवता की बेहुरमती
हुई है, मर्दुक देवता पाश पाश हो गया है। बाबल
के तमाम देवताओं की बेहुरमती हुई है, तमाम
बुत चकनाचूर हो गए हैं!’ 3क्योंकि शिमाल से
एक क़ौम बाबल पर चढ़ आई है जो पूरे मुल्क को
बरबाद कर देगी। इनसान और हैवान सब हिजरत
कर जाएंगे, मुल्क में कोई नहीं रहेगा।”
4रब फ़रमाता है, “जब यह वक़्त आएगा तो
इसराईल और यहूदाह के लोग मिलकर अपने
वतन में वापस आएँगे। तब वह रोते हुए रब अपने
ख़ुदा को तलाश करने आएँगे। 5वह सिय्यून का
रास्ता पूछ पूछकर अपना रुख़ उस तरफ़ कर
लेंगे और कहेंगे, ‘आओ, हम रब के साथ लिपट
जाएँ, हम उसके साथ अबदी अहद बाँध लें जो
कभी न भुलाया जाए।’ 6मेरी क़ौम की हालत
गुमशुदा भेड़-बकरियों की मानिंद थी। क्योंकि
उनके गल्लाबानों ने उन्हें ग़लत राह पर लाकर
फ़रेबदेह पहाड़ों पर आवारा फिरने दिया था।
यों पहाड़ों पर इधर-उधर घूमते घूमते वह अपनी
आरामगाह भूल गए थे। 7जो भी उनको पाते
वह उन्हें पकड़कर खा जाते थे। उनके मुख़ालिफ़
कहते थे, ‘इसमें हमारा क्या क़ुसूर है? उन्होंने
तो रब का गुनाह किया है, गो वह उनकी हक़ीक़ी
चरागाह है और उनके बापदादा उस पर उम्मीद
रखते थे।’

बाबल से हिजरत करो!

8ऐ मेरी क़ौम, मुल्के-बाबल और उसके दारुल-
हुकूमत से भाग निकलो! उन बकरों की मानिंद
बन जाओ जो रेवड़ की राहनुमाई करते हैं।
9क्योंकि मैं शिमाली मुल्क में बड़ी क़ौमों के
इत्तहाद को बाबल पर हमला करने पर उभारूँगा,
जो उसके ख़िलाफ़ सफ़आरा होकर उस पर
क़ब्ज़ा करेगा। दुश्मन के तीरअंदाज़ इतने माहिर
होंगे कि हर तीर निशाने पर लग जाएगा।” 10रब
फ़रमाता है, “बाबल को यों लूट लिया जाएगा कि
तमाम लूटनेवाले सेर हो जाएंगे।
11ऐ मेरे मौरूसी हिस्से को लूटनेवालो, बेशक
तुम इस वक़्त शादियाना बजाकर ख़ुशी मनाते
हो। बेशक तुम गाहते हुए बछड़ों की तरह
उछलते-कूदते और घोड़ों की तरह हिनहिनाते हो।
12लेकिन आइंदा तुम्हारी माँ बेहद शरमिंदा हो
जाएगी, जिसने तुम्हें जन्म दिया वह रुसवा हो
जाएगी। आइंदा बाबल सबसे ज़लील क़ौम होगी,
वह ख़ुश्क और वीरान रेगिस्तान ही होगी। 13जब
रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल होगा तो वहाँ कोई
आबाद नहीं रहेगा बल्कि मुल्क सरासर वीरानो-
सुनसान रहेगा। बाबल से गुज़रनेवालों के रोंगटे
खड़े हो जाएंगे, उसके ज़ख़मों को देखकर सब
‘तौबा तौबा’ कहेंगे।
14ऐ तीरअंदाज़ो, बाबल शहर को घेरकर उस
पर तीर बरसाओ! तमाम तीर इस्तेमाल करो,
एक भी बाक़ी न रहे, क्योंकि उसने रब का गुनाह
किया है। 15चारों तरफ़ उसके ख़िलाफ़ जंग के
नारे लगाओ! देखो, उसने हथियार डाल दिए हैं।
उसके बुर्ज गिर गए, उस की दीवारें मिसमार हो
गई हैं। रब इंतक़ाम ले रहा है, चुनाँचे बाबल से ख़ूब
बदला लो। जो सुलूक उसने दूसरों के साथ किया,
वही उसके साथ करो। 16बाबल में जो बीज बोते
और फ़सल के वक़्त दराँती चलाते हैं उन्हें रूए-
ज़मीन पर से मिटा दो। उस वक़्त शहर के परदेसी
मोहलक तलवार से भागकर अपने अपने वतन में
वापस चले जाएंगे।
17इसराईली क़ौम बिखरी हुई भेड़ है, शेर-
बबरों ने उसे रेवड़ से अलग कर दिया है। क्योंकि
पहले शाहे-असूर ने आकर उसे हड़प कर लिया,
फिर शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र ने उस की हड्डियों
को चबा लिया।” 18इसलिए रब्बुल-अफ़वाज जो
इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, “पहले मैंने

शाहे-असूर को सज़ा दी, और अब मैं शाहे-बाबल
को उसके मुल्क समेत वही सज़ा दूँगा। 19लेकिन
इसराईल को मैं उस की अपनी चरागाह में वापस
लाऊँगा, और वह दुबारा करमिल और बसन
की ढलानों पर चरेगा, वह दुबारा इफ़राईम और
जिलियाद के पहाड़ी इलाक़ों में सेर हो जाएगा।”
20रब फ़रमाता है, “उन दिनों में जो इसराईल का
क़ुसूर ढूँड निकालने की कोशिश करे उसे कुछ
नहीं मिलेगा। यही यहूदाह की हालत भी होगी।
उसके गुनाह पाए नहीं जाएंगे, क्योंकि जिन लोगों
को मैं ज़िंदा छोड़ूँगा उन्हें मैं मुआफ़ कर दूँगा।”

अल्लाह अपने घर का बदला लेता है

21रब फ़रमाता है, “मुल्के-मरातायम और
फ़िक़ोद के बाशिंदों पर हमला करो! उन्हें मारते
मारते सफ़हाए-हस्ती से मिटा दो! जो भी हुक्म
मैंने दिया उस पर अमल करो।

22मुल्के-बाबल में जंग का शोर-शराबा सुनो!
बाबल की हौलनाक शिकस्त देखो! 23जो पहले
तमाम दुनिया का हथोड़ा था उसे तोड़कर टुकड़े
टुकड़े कर दिया गया है। बाबल को देखकर लोगों
को सख़्त धच्का लगता है।

24ऐ बाबल, तूने अपने लिए फंदा लगा दिया
और तू उसमें फँस भी गया—तुझे पता भी
न चला। तुझे ढूँड निकाला गया और तुझे
पकड़ा भी गया। क्यों? इसलिए कि तूने
रब का मुक़ाबला किया।” 25क़ादिरे-मुतलक़
जो रब्बुल-अफ़वाज है फ़रमाता है, “मैं अपना
असलिहाख़ाना खोलकर अपना ग़ज़ब नाज़िल
करने के हथियार निकाल लाया हूँ, क्योंकि मुल्के-
बाबल में उनकी अशद्द ज़रूरत है।

26चारों तरफ़ से बाबल पर चढ़ आओ! उसके
अनाज के गोदामों को खोलकर सारे माल का
ढेर लगाओ! फिर सब कुछ नेस्तो-नाबूद करो,
कुछ बचा न रहे। 27उसके तमाम बैलों को ज़बह
करो! सब क़साई की ज़द में आएँ! उन पर
अफ़सोस, क्योंकि उनका मुक़र्ररा दिन, उनकी
सज़ा का वक़्त आ गया है।

28सुनो! मुल्के-बाबल से बचे हुए पनाहगुज़ीन
सिय्यून में बता रहे हैं कि रब हमारे ख़ुदा ने किस
तरह इंतक़ाम लिया। क्योंकि अब उसने अपने घर
का बदला लिया है!

29बहुतों को बुलाओ ताकि बाबल पर हमला
करें! हाँ, तमाम तीरंदाज़ों को बुलाओ। उसे घेर
लो ताकि कोई न बचे। उसे उस की हरकतों का
मुनासिब अज्र दो! जो बुरा सुलूक उसने दूसरों के
साथ किया वही उसके साथ करो। क्योंकि उसका
रवैया रब, इसराईल के क़ुद्दूस के साथ गुस्ताखाना
था। 30इसलिए उसके नौजवान गलियों में गिरकर
मर जाएंगे, उसके तमाम फ़ौजी उस दिन हलाक
हो जाएंगे।” यह रब का फ़रमान है।

31क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज फ़र-
माता है, “ऐ गुस्ताख़ शहर, मैं तुझसे निपटनेवाला
हूँ। क्योंकि वह दिन आ गया है जब तुझे सज़ा
मिलनी है। 32तब गुस्ताख़ शहर ठोकर खाकर
गिर जाएगा, और कोई उसे दुबारा खड़ा नहीं
करेगा। मैं उसके तमाम शहरों में आग लगा दूँगा
जो गिर्दो-नवाह में सब कुछ राख कर देगी।”

रब अपनी क़ौम को रिहा करवाता है

33रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “इसरा-
ईल और यहूदाह के लोगों पर ज़ुल्म हुआ है।
जिन्होंने उन्हें असीर करके जिलावतन किया है वह
उन्हें रिहा नहीं करना चाहते, उन्हें जाने नहीं देते।
34लेकिन उनका छुड़ानेवाला क़वी है, उसका
नाम रब्बुल-अफ़वाज है। वह ख़ूब लड़कर उनका
मामला दुरुस्त करेगा ताकि ज़मीन को आरामो-
सुकून मिल जाए। लेकिन बाबल के बाशिंदों को
वह थरथराने देगा।”

35रब फ़रमाता है, “तलवार बाबल की क़ौम
पर टूट पड़े! वह बाबल के बाशिंदों, उसके बुज़ुर्गों
और दानिशमंदों पर टूट पड़े! 36तलवार उसके
क़िस्मत का हाल बतानेवालों पर टूट पड़े ताकि
बेवुक़ूफ़ साबित हों। तलवार उसके सूरमाओं पर
टूट पड़े ताकि उन पर दहशत छा जाए। 37तलवार
बाबल के घोड़ों, रथों और परदेसी फ़ौजियों पर

टूट पड़े ताकि वह औरतों की मानिंद बन जाएँ।
तलवार उसके ख़ज़ानों पर टूट पड़े ताकि वह छीन
लिए जाएँ। 38तलवार उसके पानी के ज़ख़ीरों
पर टूट पड़े ताकि वह ख़ुश्क हो जाएँ। क्योंकि
मुल्के-बाबल बुतों से भरा हुआ है, ऐसे बुतों से
जिनके बाइस लोग दीवानों की तरह फिरते हैं।
39आख़िर में गलियों में सिर्फ़ रेगिस्तान के जानवर
और जंगली कुत्ते फिरेंगे, वहाँ उक़ाबी उल्लू बसेंगे।
वह हमेशा तक इनसान की बस्तियों से महरूम
और नसल-दर-नसल ग़ैरआबाद रहेगा।" 40रब
फ़रमाता है, "उस की हालत सदूम और अमूरा
की-सी होगी जिन्हें मैंने पड़ोस के शहरों समेत
उलटाकर सफ़हाए-हस्ती से मिटा दिया। आइंदा
वहाँ कोई नहीं बसेगा, कोई नहीं आबाद होगा।"
यह रब का फ़रमान है।

शिमाल से दुश्मन आ रहा है

41"देखो, शिमाल से फ़ौज आ रही है, एक बड़ी
क़ौम और मुतअद्दिद बादशाह दुनिया की इंतहा
से रवाना हुए हैं। 42उसके ज़ालिम और बेरहम
फ़ौजी कमान और शमशेर से लैस हैं। जब वह
अपने घोड़ों पर सवार होकर चलते हैं तो गरजते
समुंदर का-सा शोर बरपा होता है। ऐ बाबल बेटी,
वह सब सफ़आरा होकर तुझसे लड़ने आ रहे हैं।
43उनकी ख़बर सुनते ही शाहे-बाबल हिम्मत हार
गया है। ख़ौफ़ज़दा होकर वह दर्दे-ज़ह में मुब्तला
औरत की तरह तड़पने लगा है।

44जिस तरह शेर-बबर यरदन के जंगलों से
निकलकर शादाब चरागाहों में चरनेवाली भेड़-
बकरियों पर टूट पड़ता है उसी तरह मैं बाबल
को एकदम उसके अपने मुल्क से भगा दूँगा। तब
मैं अपने चुने हुए आदमी को बाबल पर मुक़र्रर
करूँगा। क्योंकि कौन मेरे बराबर है? कौन मुझसे
जवाब तलब कर सकता है? वह गल्लाबान कहाँ
है जो मेरा मुक़ाबला कर सके?" 45चुनाँचे बाबल
पर रब का फ़ैसला सुनो, मुल्के-बाबल के लिए
उसके मनसूबे पर ध्यान दो! "दुश्मन पूरे रेवड़
को सबसे नन्हे बच्चों से लेकर बड़ों तक घसीटकर
ले जाएगा। उस की चरागाह वीरानो-सुनसान हो
जाएगी।

46ज्योंही नारा बुलंद होगा कि बाबल दुश्मन के
क़ब्ज़े में आ गया है तो ज़मीन लरज़ उठेगी। तब
मदद के लिए बाबल की चीख़ें दीगर ममालिक
तक गूँजेंगी।"

बाबल का ज़माना ख़त्म है

51 रब फ़रमाता है, "मैं बाबल और उसके
बाशिंदों के ख़िलाफ़ मोहलक आँधी
चलाऊँगा। 2मैं मुल्के-बाबल में ग़ैरमुल्की भेजूँगा
ताकि वह उसे अनाज की तरह फटककर तबाह
करें। आफ़त के दिन वह पूरे मुल्क को घेरे रखेंगे।
3तीरअंदाज़ को तीर चलाने से रोको! फ़ौजी को
ज़िरा-बकतर पहनकर लड़ने के लिए खड़े होने न
दो! उनके नौजवानों को ज़िंदा मत छोड़ना बल्कि
फ़ौज को सरासर नेस्तो-नाबूद कर देना!

4तब मुल्के-बाबल में हर तरफ़ लाशें नज़र
आएँगी, तलवार के चिरे हुए उस की गलियों में पड़े
रहेंगे। 5लेकिन रब्बुल-अफ़वाज ने इसराईल और
यहूदाह को अकेला[a] नहीं छोड़ा, उनके ख़ुदा ने
उन्हें तर्क नहीं किया हालाँकि इसराईल के क़ुद्दूस
के हुज़ूर उनके मुल्क का क़ुसूर संगीन है। 6बाबल
से भाग निकलो! दौड़कर अपनी जान बचाओ,
वरना तुम्हें भी बाबल के क़ुसूर का अज्र मिलेगा।
क्योंकि रब के इंतक़ाम का वक़्त आ पहुँचा है,
अब बाबल को मुनासिब सज़ा मिलेगी।

7बाबल रब के हाथ में सोने का प्याला था
जिसे उसने पूरी दुनिया को पिला दिया। अक़वाम
उस की मै पी पीकर मत्वाली हो गईं, इसलिए
वह दीवानी हो गई हैं। 8लेकिन अब यह प्याला
अचानक गिरकर टूट गया है। चुनाँचे बाबल पर
आहो-ज़ारी करो! उसके दर्द और तकलीफ़ को
दूर करने के लिए बलसान ले आओ, शायद उसे
शफ़ा मिले। 9लेकिन लोग कहेंगे, 'हम बाबल
की मदद करना चाहते थे, लेकिन उसके ज़ख़म

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : रंडवा।

भर नहीं सकते। इसलिए आओ, हम उसे छोड़
दें और हर एक अपने अपने मुल्क में जा बसे।
क्योंकि उस की सख़्त अदालत हो रही है, जितना
आसमान और बादल बुलंद हैं उतनी ही सख़्त उस
की सज़ा है।’

10रब की क़ौम बोले, ‘रब ने हमारे हक़ में
लड़कर हमें बहाल कर दिया है। आओ, हम
सिय्यून में वह कुछ सुनाएँ जो रब हमारे ख़ुदा ने
किया है।’

11तीरों को तेज़ करो! अपना तरकश उनसे
भर लो! रब मादी बादशाहों को हरकत में लाया
है, क्योंकि वह बाबल को तबाह करने का इरादा
रखता है। रब इंतक़ाम लेगा, अपने घर की तबाही
का बदला लेगा। 12बाबल की फ़सील के ख़िलाफ़
जंग का झंडा गाड़ दो! शहर के इर्दगिर्द पहरादारी
का बंदोबस्त मज़बूत करो, हाँ मज़ीद संतरी खड़े
करो। क्योंकि रब ने बाबल के बाशिंदों के ख़िलाफ़
मनसूबा बाँधकर उसका एलान किया है, और अब
वह उसे पूरा करेगा।

13ऐ बाबल बेटी, तू गहरे पानी के पास
बसती और निहायत दौलतमंद हो गई है। लेकिन
ख़बरदार! तेरा अंजाम क़रीब ही है, तेरी ज़िंदगी
का धागा कट गया है। 14रब्बुल-अफ़वाज ने अपने
नाम की क़सम खाकर फ़रमाया है कि मैं तुझे
दुश्मनों से भर दूँगा, और वह टिड्डियों के ग़ोल की
तरह पूरे शहर को ढाँप लेंगे। हर जगह वह तुझ
पर फ़तह के नारे लगाएँगे।

15देखो, अल्लाह ही ने अपनी क़ुदरत से ज़मीन
को ख़लक़ किया, उसी ने अपनी हिकमत से
दुनिया की बुनियाद रखी, और उसी ने अपनी
समझ के मुताबिक़ आसमान को ख़ैमे की तरह
तान लिया। 16उसके हुक्म पर आसमान पर पानी
के ज़ख़ीरे गरजने लगते हैं। वह दुनिया की इंतहा
से बादल चढ़ने देता, बारिश के साथ बिजली
कड़कने देता और अपने गोदामों से हवा निकलने
देता है।

17तमाम इनसान अहमक़ और समझ से ख़ाली
हैं। हर सुनार अपने बुतों के बाइस शरमिंदा हुआ
है। उसके बुत धोका ही हैं, उनमें दम नहीं। 18वह
फ़ज़ूल और मज़हकाख़ेज़ हैं। अदालत के वक़्त
वह नेस्त हो जाएंगे। 19अल्लाह जो याक़ूब का
मौरूसी हिस्सा है इनकी मानिंद नहीं है। वह
सबका ख़ालिक़ है, और इसराईली क़ौम उसका
मौरूसी हिस्सा है। रब्बुल-अफ़वाज ही उसका
नाम है।

अब रब बाबल पर हमला करेगा

20ऐ बाबल, तू मेरा हथोड़ा, मेरा जंगी हथियार
था। तेरे ही ज़रीए मैंने क़ौमों को पाश पाश कर
दिया, सलतनतों को ख़ाक में मिला दिया। 21तेरे
ही ज़रीए मैंने घोड़ों को सवारों समेत और रथों
को रथबानों समेत पाश पाश कर दिया। 22तेरे ही
ज़रीए मैंने मर्दों और औरतों, बुज़ुर्गों और बच्चों,
नौजवानों और कुँवारियों को पारा पारा कर दिया।
23तेरे ही ज़रीए मैंने गल्लाबान और उसके रेवड़,
किसान और उसके बैलों, गवर्नरों और सरकारी
मुलाज़िमों को रेज़ा रेज़ा कर दिया।

24लेकिन अब मैं बाबल और उसके तमाम
बाशिंदों को उनकी सिय्यून के साथ बदसुलूकी
का पूरा अज्र दूँगा। तुम अपनी आँखों से इसके
गवाह होगे।” यह रब का फ़रमान है।

25रब फ़रमाता है, “ऐ बाबल, पहले तू
मोहलक पहाड़ था जिसने तमाम दुनिया का
सत्यानास कर दिया। लेकिन अब मैं तुझसे निपट
लेता हूँ। मैं अपना हाथ तेरे ख़िलाफ़ बढ़ाकर तुझे
ऊँची ऊँची चट्टानों से पटख़ दूँगा। आख़िरकार
मलबे का झुलसा हुआ ढेर ही बाक़ी रहेगा। 26तू
इतना तबाह हो जाएगा कि तेरे पत्थर न किसी
मकान के कोनों के लिए, न किसी बुनियाद के
लिए इस्तेमाल हो सकेंगे।” यह रब का फ़रमान
है।

27“आओ, मुल्क में जंग का झंडा गाड़ दो!
अक़वाम में नरसिंगा फूँक फूँककर उन्हें बाबल
के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए मख़सूस करो! उससे
लड़ने के लिए अरारात, मिन्नी और अश्कनाज़ की
सलतनतों को बुलाओ! बाबल से लड़ने के लिए

कमाँडर मुक़र्रर करो। घोड़े भेज दो जो टिड्डियों
के हौलनाक ग़ोल की तरह उस पर टूट पड़ें।
28अक़वाम को बाबल से लड़ने के लिए मख़सूस
करो! मादी बादशाह अपने गवर्नरों, अफ़सरों
और तमाम मुती ममालिक समेत तैयार हो जाएँ।
29ज़मीन लरज़ती और थरथराती है, क्योंकि रब
का मनसूबा अटल है, वह मुल्के-बाबल को यों
तबाह करना चाहता है कि आइंदा उसमें कोई न
रहे।

30बाबल के जंगआज़मूदा फ़ौजी लड़ने से बाज़
आकर अपने क़िलों में छुप गए हैं। उनकी ताक़त
जाती रही है, वह औरतों की मानिंद हो गए हैं।
अब बाबल के घरों को आग लग गई है, फ़सील
के दरवाज़ों के कुंडे टूट गए हैं। 31यके बाद
दीगरे क़ासिद दौड़कर शाहे-बाबल को इत्तला देते
हैं, 'शहर चारों तरफ़ से दुश्मन के क़ब्ज़े में है!
32दरिया को पार करने के तमाम रास्ते उसके
हाथ में हैं, सरकंडे का दलदली इलाक़ा जल रहा
है, और फ़ौजी ख़ौफ़ के मारे बेहिसो-हरकत हो
गए हैं'।"

33क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का
ख़ुदा है फ़रमाता है, "फ़सल की कटाई से पहले
पहले गाहने की जगह के फ़र्श को दबा दबाकर
मज़बूत किया जाता है। यही बाबल बेटी की हालत
है। फ़सल की कटाई क़रीब आ गई है, और थोड़ी
देर के बाद बाबल को पाँवों तले ख़ूब दबाया
जाएगा।

रब बाबल से यरूशलम का इंतक़ाम लेगा

34सिय्यून बेटी रोती है, 'शाहे-बाबल
नबूकदनज़्ज़र ने मुझे हड़प कर लिया, चूस लिया,
ख़ाली बरतन की तरह एक तरफ़ रख दिया है।
उसने अज़दहे की तरह मुझे निगल लिया, अपने
पेट को मेरी लज़ीज़ चीज़ों से भर लिया है। फिर
उसने कुल्ली करके मुझे उगल दिया।' 35लेकिन
अब सिय्यून की रहनेवाली कहे, 'जो ज़्यादती
मेरे साथ हुई वह बाबल के साथ की जाए। जो
क़त्लो-ग़ारत मुझमें हुई वह बाबल के बाशिंदों में
मच जाए'!"

36रब यरूशलम से फ़रमाता है, "देख, मैं ख़ुद
तेरे हक़ में लड़ूँगा, मैं ख़ुद तेरा बदला लूँगा। तब
उसकी झील ख़ुश्क हो जाएगी, उसके चश्मे बंद
हो जाएंगे। 37बाबल मलबे का ढेर बन जाएगा।
गीदड़ ही उसमें अपना घर बना लेंगे। उसे देखकर
गुज़रनेवालों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह
'तौबा तौबा' कहकर आगे निकलेंगे। कोई भी वहाँ
नहीं बसेगा।

38इस वक़्त बाबल के बाशिंदे शेरबबर की तरह
दहाड़ रहे हैं, वह शेर के बच्चों की तरह ग़ुर्रा रहे हैं।
39लेकिन रब फ़रमाता है कि वह अभी मस्त होंगे
कि मैं उनके लिए ज़ियाफ़त तैयार करूँगा, एक
ऐसी ज़ियाफ़त जिसमें वह मत्वाले होकर ख़ुशी
के नारे मारेंगे, फिर अबदी नींद सो जाएंगे। उस
नींद से वह कभी नहीं उठेंगे। 40मैं उन्हें भेड़ के
बच्चों, मेंढों और बकरों की तरह क़साई के पास
ले जाऊँगा।

41हाय, बाबल दुश्मन के क़ब्ज़े में आ गया है!
जिसकी तारीफ़ पूरी दुनिया करती थी वह छीन
लिया गया है! अब उसे देखकर क़ौमों के रोंगटे
खड़े हो जाते हैं। 42समुंदर बाबल पर चढ़ आया
है, उस की गरजती लहरों ने उसे ढाँप लिया है।
43उसके शहर रेगिस्तान बन गए हैं, अब चारों
तरफ़ ख़ुश्क और वीरान बयाबान ही नज़र आता
है। न कोई उसमें रहता, न उसमें से गुज़रता है।

44मैं बाबल के देवता बेल को सज़ा देकर उसके
मुँह से वह कुछ निकाल दूँगा जो उसने हड़प
कर लिया था। अब से दीगर अक़वाम जौक़-दर-
जौक़ उसके पास नहीं आएँगी, क्योंकि बाबल की
फ़सील भी गिर गई है।

45ऐ मेरी क़ौम, बाबल से निकल आ! हर एक
अपनी जान बचाने के लिए वहाँ से भाग जाए,
क्योंकि रब का शदीद ग़ज़ब उस पर नाज़िल होने
को है।

46जब अफ़वाहें मुल्क में फैल जाएँ तो हिम्मत
मत हारना, न ख़ौफ़ खाना। क्योंकि हर साल

कोई और अफ़वाह फैलेगी, ज़ुल्म पर ज़ुल्म और
हुक्मरान पर हुक्मरान आता रहेगा। 47क्योंकि वह
वक़्त क़रीब ही है जब मैं बाबल के बुतों को सज़ा
दूँगा। तब पूरे मुल्क की बेहुरमती हो जाएगी, और
उसके मक़तूल उसके बीच में गिरकर पड़े रहेंगे।
48तब आसमानो-ज़मीन और जो कुछ उनमें है
बाबल पर शादियाना बजाएंगे। क्योंकि तबाहकुन
दुश्मन शिमाल से उस पर हमला करने आ रहा
है।" यह रब का फ़रमान है।

49"ऐ इसराईल के मक़तूलो, बाबल को भी
गिरना है, जिस तरह पूरी दुनिया के मक़तूल
बाबल के वास्ते गिर गए हैं।

50ऐ तलवार से बचे हुए इसराईलियो, रुके न
रहो बल्कि रवाना हो जाओ! दूर-दराज़ मुल्क में
रब को याद करो, यरूशलम का भी ख़याल करो!
51बेशक तुम कहते हो, 'हम शरमिंदा हैं, हमारी
सख़्त रुसवाई हुई है, शर्म के मारे हमने अपने मुँह
को ढाँप लिया है। क्योंकि परदेसी रब के घर की
मुक़द्दसतरीन जगहों में घुस आए हैं।'

52लेकिन रब फ़रमाता है कि वह वक़्त
आनेवाला है जब मैं बाबल के बुतों को सज़ा दूँगा।
तब उसके पूरे मुल्क में मौत के घाट उतरनेवालों
की आहें सुनाई देंगी। 53ख़ाह बाबल की ताक़त
आसमान तक ऊँची क्यों न हो, ख़ाह वह अपने
बुलंद क़िले को कितना मज़बूत क्यों न करे तो भी
वह गिर जाएगा। मैं तबाह करनेवाले फ़ौजी उस
पर चढ़ा लाऊँगा।" यह रब का फ़रमान है।

54"सुनो! बाबल में चीख़ें बुलंद हो रही हैं,
मुल्के-बाबल धड़ाम से गिर पड़ा है। 55क्योंकि
रब बाबल को बरबाद कर रहा, वह उसका शोर-
शराबा बंद कर रहा है। दुश्मन की लहरें मुतलातिम
समुंदर की तरह उस पर चढ़ रही हैं, उनकी
गरजती आवाज़ फ़िज़ा में गूँज रही है। 56क्योंकि
तबाहकुन दुश्मन बाबल पर हमला करने आ रहा
है। तब उसके सूरमाओं को पकड़ा जाएगा और
उनकी कमानें टूट जाएँगी। क्योंकि रब इंतक़ाम
का ख़ुदा है, वह हर इनसान को उसका मुनासिब
अज्र देगा।"

57दुनिया का बादशाह जिसका नाम रब्बुल-
अफ़वाज है फ़रमाता है, "मैं बाबल के बड़ों को
मतवाला करूँगा, ख़ाह वह बुज़ुर्ग, दानिशमंद,
गवर्नर, सरकारी अफ़सर या फ़ौजी क्यों न हों।
तब वह अबदी नींद सो जाएंगे और दुबारा कभी
नहीं उठेंगे।"

58रब फ़रमाता है, "बाबल की मोटी मोटी
फ़सील को ख़ाक में मिलाया जाएगा, और उसके
ऊँचे ऊँचे दरवाज़े राख हो जाएंगे। तब यह कहावत
बाबल पर सादिक़ आएगी, 'अक़वाम की मेहनत-
मशक़्क़त बेफ़ायदा रही, जो कुछ उन्होंने बड़ी
मुश्किल से बनाया वह नज़रे-आतिश हो गया
है'।"

यरमियाह अपना पैग़ाम बाबल भेजता है

59यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह के चौथे
साल में यरमियाह नबी ने यह कलाम सिरायाह
बिन नैरियाह बिन महसियाह के सुपुर्द कर दिया
जो उस वक़्त बादशाह के साथ बाबल के लिए
रवाना हुआ। सफ़र का पूरा बंदोबस्त सिरायाह के
हाथ में था।

60यरमियाह ने तूमार में बाबल पर नाज़िल
होनेवाली आफ़त की पूरी तफ़सील लिख दी थी।
उसके बाबल के बारे में तमाम पैग़ामात उसमें
क़लमबंद थे। 61उसने सिरायाह से कहा, "बाबल
पहुँचकर ध्यान से तूमार की तमाम बातों की
तिलावत करें। 62तब दुआ करें, 'ऐ रब, तूने
एलान किया है कि मैं बाबल को यों तबाह करूँगा
कि आइंदा न इनसान, न हैवान उसमें बसेगा।
शहर अबद तक वीरानो-सुनसान रहेगा।' 63पूरी
किताब की तिलावत के इख़्तिताम पर उसे पत्थर
के साथ बाँध लें, फिर दरियाए-फ़ुरात में फेंककर
64बोलें, 'जो आफ़त मैं उस पर नाज़िल करूँगा
उसकी वजह से बाबल का बेड़ा इस पत्थर की
तरह ग़रक़ हो जाएगा। वह दुबारा कभी नहीं उभर
आएगा चाहे वह कितनी मेहनत-मशक़्क़त क्यों न
करें'।"

यरमियाह के पैग़ामात यहाँ इख़्तिताम पर पहुँच
गए हैं।

शाहे-यहूदाह सिदक़ियाह की हुकूमत

52 सिदक़ियाह 21 साल की उम्र में
बादशाह बना, और यरूशलम में उस
की हुकूमत का दौरानिया 11 साल था। उस
की माँ हमूतल बिंत यरमियाह लिबना शहर की
रहनेवाली थी। 2यहूयक़ीम की तरह सिदक़ियाह
ऐसा काम करता रहा जो रब को नापसंद था।
3रब यरूशलम और यहूदाह के बाशिंदों से इतना
नाराज़ हुआ कि आख़िर में उसने उन्हें अपने हुज़ूर
से ख़ारिज कर दिया।

सिदक़ियाह का फ़रार और गिरिफ़्तारी

एक दिन सिदक़ियाह बाबल के बादशाह
से सरकश हुआ, 4इसलिए शाहे-बाबल
नबूकदनज़्ज़र तमाम फ़ौज अपने साथ लेकर
दुबारा यरूशलम पहुँचा ताकि उस पर हमला
करे।

सिदक़ियाह की हुकूमत के नवें साल में बाबल
की फ़ौज यरूशलम का मुहासरा करने लगी।
यह काम दसवें महीने के दसवें दिन[a] शुरू हुआ।
पूरे शहर के इर्दगिर्द बादशाह ने पुश्ते बनवाए।
5सिदक़ियाह की हुकूमत के 11वें साल तक
यरूशलम क़ायम रहा। 6लेकिन फिर काल ने
शहर में ज़ोर पकड़ा, और अवाम के लिए खाने
की चीज़ें न रहीं।

चौथे महीने के नवें दिन[b] 7बाबल के फ़ौजियों
ने फ़सील में रख़ना डाल दिया। उसी रात
सिदक़ियाह अपने तमाम फ़ौजियों समेत फ़रार
होने में कामयाब हुआ, अगरचे शहर दुश्मन से
घिरा हुआ था। वह फ़सील के उस दरवाज़े से
निकले जो शाही बाग़ के साथ मुलहिक़ दो दीवारों
के बीच में था। वह वादीए-यरदन की तरफ़ भागने
लगे, 8लेकिन बाबल की फ़ौज ने बादशाह का
ताक़्क़ुब करके उसे यरीहू के मैदान में पकड़
लिया। उसके फ़ौजी उससे अलग होकर चारों
तरफ़ मुंतशिर हो गए, 9और वह ख़ुद गिरिफ़्तार
हो गया। फिर उसे मुल्के-हमात के शहर रिबला
में शाहे-बाबल के पास लाया गया, और वहीं
उसने सिदक़ियाह पर फ़ैसला सादिर किया।
10सिदक़ियाह के देखते देखते शाहे-बाबल ने
रिबला में उसके बेटों को क़त्ल किया। साथ साथ
उसने यहूदाह के तमाम बुज़ुर्गों को भी मौत के घाट
उतार दिया। 11फिर उसने सिदक़ियाह की आँखें
निकलवाकर उसे पीतल की ज़ंजीरों में जकड़
लिया और बाबल ले गया जहाँ वह जीते-जी रहा।

यरूशलम और रब के घर की तबाही

12शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र की हुकूमत के
19वें साल में बादशाह का ख़ास अफ़सर
नबूज़रादान यरूशलम पहुँचा। वह शाही
मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर था। पाँचवें महीने के सातवें
दिन[c] उसने आकर 13रब के घर, शाही महल
और यरूशलम के तमाम मकानों को जला दिया।
हर बड़ी इमारत भस्म हो गई। 14उसने अपने
तमाम फ़ौजियों से शहर की पूरी फ़सील को
भी गिरा दिया। 15फिर नबूज़रादान ने सबको
जिलावतन कर दिया जो यरूशलम में पीछे रह
गए थे। वह भी उनमें शामिल थे जो जंग के दौरान
ग़द्दारी करके शाहे-बाबल के पीछे लग गए थे।
नबूज़रादान बाक़ीमाँदा कारीगर और ग़रीबों में से
भी कुछ बाबल ले गया। 16लेकिन उसने सबसे
निचले तबक़े के बाज़ लोगों को मुल्के-यहूदाह में
छोड़ दिया ताकि वह अंगूर के बाग़ों और खेतों को
सँभालें।

17बाबल के फ़ौजियों ने रब के घर में जाकर
पीतल के दोनों सतूनों, पानी के बासनों को
उठानेवाली हथगाड़ियों और समुंदर नामी पीतल
के हौज़ को तोड़ दिया और सारा पीतल उठाकर
बाबल ले गए। 18वह रब के घर की ख़िदमत

[a] 15 जनवरी।
[b] 18 जुलाई।
[c] 17 अगस्त।

सरंजाम देने के लिए दरकार सामान भी ले गए यानी बालटियाँ, बेलचे, बत्ती कतरने के औज़ार, छिड़काव के कटोरे, प्याले और पीतल का बाक़ी सारा सामान।
19ख़ालिस सोने और चाँदी के बरतन भी इसमें शामिल थे यानी बासन, जलते हुए कोयले के बरतन, छिड़काव के कटोरे, बालटियाँ, शमादान, प्याले और मै की नज़रें पेश करने के बरतन। शाही मुहाफ़िज़ों का यह अफ़सर सारा सामान उठाकर बाबल ले गया।
20जब दोनों सतूनों, समुंदर नामी हौज़, हौज़ को उठानेवाले पीतल के बैलों और बासनों को उठानेवाली हथगाड़ियों का पीतल तुड़वाया गया तो वह इतना वज़नी था कि उसे तोला न जा सका। सुलेमान बादशाह ने यह चीज़ें रब के घर के लिए बनवाई थीं।
21हर सतून की ऊँचाई 27 फ़ुट और घेरा 18 फ़ुट था। दोनों खोखले थे, और उनकी दीवारों की मोटाई 3 इंच थी।
22उनके बालाई हिस्सों की ऊँचाई साढ़े सात फ़ुट थी, और वह पीतल की जाली और अनारों से सजे हुए थे।
2396 अनार लगे हुए थे। जाली के इर्दगिर्द कुल 100 अनार लगे थे।

24शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़सर नबूज़रादान ने ज़ैल के क़ैदियों को अलग कर दिया : इमामे-आज़म सिरायाह, उसके बाद आनेवाले इमाम सफ़नियाह, रब के घर के तीन दरबानों,
25शहर के बचे हुओं में से उस अफ़सर को जो शहर के फ़ौजियों पर मुक़र्रर था, सिदक़ियाह बादशाह के सात मुशीरों, उम्मत की भरती करनेवाले अफ़सर और शहर में मौजूद उसके 60 मर्दों को।
26नबूज़रादान इन सबको अलग करके सूबा हमात के शहर रिबला ले गया जहाँ शाहे-बाबल था।
27वहाँ नबूकदनज़्ज़र ने उन्हें सज़ाए-मौत दी।

यों यहूदाह के बाशिंदों को जिलावतन कर दिया गया।
28नबूकदनज़्ज़र ने अपनी हुकूमत के 7वें साल में यहूदाह के 3,023 अफ़राद,
2918वें साल में यरूशलम के 832 अफ़राद,
30और 23वें साल में 745 अफ़राद को जिलावतन कर दिया। यह आख़िरी लोग शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़सर नबूज़रादान के ज़रीए बाबल लाए गए। कुल 4,600 अफ़राद जिलावतन हुए।

यहूयाकीन को आज़ाद किया जाता है

31यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन की जिलावतनी के 37वें साल में अवील-मरूदक बाबल का बादशाह बना। उसी साल के 12वें महीने के 25वें दिन[a] उसने यहूयाकीन को क़ैदख़ाने से आज़ाद कर दिया।
32उसने उसके साथ नरम बातें करके उसे इज़्ज़त की ऐसी कुरसी पर बिठाया जो बाबल में जिलावतन किए गए बाक़ी बादशाहों की निसबत ज़्यादा अहम थी।
33यहूयाकीन को क़ैदी के कपड़े उतारने की इजाज़त मिली, और उसे ज़िंदगी-भर बादशाह की मेज़ पर बाक़ायदगी से खाना खाने का शरफ़ हासिल रहा।
34बादशाह ने मुक़र्रर किया कि यहूयाकीन को उम्र-भर इतना वज़ीफ़ा मिलता रहे कि उस की रोज़मर्रा ज़रूरियात पूरी होती रहें।

[a]31 मार्च।

नोहा

वीरानो-सुनसान

1 हाय, अफ़सोस! यरूशलम बेटी कितनी तनहा बैठी है, गो उसमें पहले इतनी रौनक़ थी। जो पहले अक़वाम में अव्वल दर्जा रखती थी वह बेवा बन गई है, जो पहले ममालिक की रानी थी वह ग़ुलामी में आ गई है।

2रात को वह रो रोकर गुज़ारती है, उसके गाल आँसुओं से तर रहते हैं। आशिक़ों में से कोई नहीं रहा जो उसे तसल्ली दे। दोस्त सबके सब बेवफ़ा होकर उसके दुश्मन बन गए हैं।

3पहले भी यहूदाह बेटी बड़ी मुसीबत में फँसी हुई थी, पहले भी उसे सख़्त मज़दूरी करनी पड़ी। लेकिन अब वह जिलावतन होकर दीगर अक़वाम के बीच में रहती है, अब उसे कहीं भी ऐसी जगह नहीं मिलती जहाँ सुकून से रह सके। क्योंकि जब वह बड़ी तकलीफ़ में मुब्तला थी तो दुश्मन ने उसका ताक़्क़ुब करके उसे घेर लिया।

4सिय्यून की राहें मातमज़दा हैं, क्योंकि कोई ईद मनाने के लिए नहीं आता। शहर के तमाम दरवाज़े वीरानो-सुनसान हैं। उसके इमाम आहें भर रहे, उस की कुँवारियाँ ग़म खा रही हैं और उसे ख़ुद शदीद तलख़ी महसूस हो रही है।

5उसके मुख़ालिफ़ मालिक बन गए, उसके दुश्मन सुकून से रह रहे हैं। क्योंकि रब ने शहर को उसके मुतअद्दिद गुनाहों का अज्र देकर उसे दुख पहुँचाया है। उसके फ़रज़ंद दुश्मन के आगे आगे चलकर जिलावतन हो गए हैं।

6सिय्यून बेटी की तमाम शानो-शौकत जाती रही है। उसके बुज़ुर्ग चरागाह न पानेवाले हिरन हैं जो थकते थकते शिकारियों के आगे आगे भागते हैं।

7अब जब यरूशलम मुसीबतज़दा और बेवतन है तो उसे वह क़ीमती चीज़ें याद आती हैं जो उसे क़दीम ज़माने से ही हासिल थीं। क्योंकि जब उस की क़ौम दुश्मन के हाथ में आई तो कोई नहीं था जो उस की मदद करता बल्कि उसके मुख़ालिफ़ तमाशा देखने दौड़े आए, वह उस की तबाही से ख़ुश होकर हँस पड़े।

8यरूशलम बेटी से संगीन गुनाह सरज़द हुआ है, इसी लिए वह लान-तान का निशाना बन गई है। जो पहले उस की इज़्ज़त करते थे वह सब उसे हक़ीर जानते हैं, क्योंकि उन्होंने उस की बरहनगी देखी है। अब वह आहें भर भरकर अपना मुँह दूसरी तरफ़ फेर लेती है।

9गो उसके दामन में बहुत गंदगी थी, तो भी उसने अपने अंजाम का ख़याल तक न किया। अब वह धड़ाम से गिर गई है, और कोई नहीं है जो उसे तसल्ली दे। “ऐ रब, मेरी मुसीबत का लिहाज़ कर! क्योंकि दुश्मन शेख़ी मार रहा है।”

10जो कुछ भी यरूशलम को प्यारा था उस पर दुश्मन ने हाथ डाला है। हत्ता कि उसे देखना पड़ा

कि ग़ैरअक़वाम उसके मक़दिस में दाख़िल हो रहे हैं, गो तूने ऐसे लोगों को अपनी जमात में शरीक होने से मना किया था।

11तमाम बाशिंदे आहें भर भरकर रोटी की तलाश में रहते हैं। हर एक खाने का कोई न कोई टुकड़ा पाने के लिए अपनी बेशक़ीमत चीज़ें बेच रहा है। ज़हन में एक ही ख़याल है कि अपनी जान को किसी न किसी तरह बचाए। "ऐ रब, मुझ पर नज़र डालकर ध्यान दे कि मेरी कितनी तज़लील हुई है।

12ऐ यहाँ से गुज़रनेवालो, क्या यह सब कुछ तुम्हारे नज़दीक बेमानी है? ग़ौर से सोच लो, जो ईज़ा मुझे बरदाश्त करनी पड़ती है क्या वह कहीं और पाई जाती है? हरगिज़ नहीं! यह रब की तरफ़ से है, उसी का सख़्त ग़ज़ब मुझ पर नाज़िल हुआ है।

13बुलंदियों से उसने मेरी हड्डियों पर आग नाज़िल करके उन्हें कुचल दिया। उसने मेरे पाँवों के सामने जाल बिछाकर मुझे पीछे हटा दिया। उसी ने मुझे वीरानो-सुनसान करके हमेशा के लिए बीमार कर दिया।

14मेरे जरायम का जुआ भारी है। रब के हाथ ने उन्हें एक दूसरे के साथ जोड़कर मेरी गरदन पर रख दिया। अब मेरी ताक़त ख़त्म है, रब ने मुझे उन्हीं के हवाले कर दिया जिनका मुक़ाबला मैं कर ही नहीं सकता।

15रब ने मेरे दरमियान के तमाम सूरमाओं को रद्द कर दिया, उसने मेरे ख़िलाफ़ जुलूस निकलवाया जो मेरे जवानों को पाश पाश करे। हाँ, रब ने कुँवारी यहूदाह बेटी को अंगूर का रस निकालने के हौज़ में फेंककर कुचल डाला।

16इसलिए मैं रो रही हूँ, मेरी आँखों से आँसू टपकते रहते हैं। क्योंकि क़रीब कोई नहीं है जो मुझे तसल्ली देकर मेरी जान को तरो-ताज़ा करे। मेरे बच्चे तबाह हैं, क्योंकि दुश्मन ग़ालिब आ गया है।"

17सिय्यून बेटी अपने हाथ फैलाती है, लेकिन कोई नहीं है जो उसे तसल्ली दे। रब के हुक्म पर याक़ूब के पड़ोसी उसके दुश्मन बन गए हैं। यरूशलम उनके दरमियान घिनौनी चीज़ बन गई है।

18"रब हक़-बजानिब है, क्योंकि मैं उसके कलाम से सरकश हुई। ऐ तमाम अक़वाम, सुनो! मेरी ईज़ा पर ग़ौर करो! मेरे नौजवान और कुँवारियाँ जिलावतन हो गए हैं।

19मैंने अपने आशिक़ों को बुलाया, लेकिन उन्होंने बेवफ़ा होकर मुझे तर्क कर दिया। अब मेरे इमाम और बुज़ुर्ग अपनी जान बचाने के लिए ख़ुराक ढूँडते ढूँडते शहर में हलाक हो गए हैं।

20ऐ रब, मेरी तंगदस्ती पर ध्यान दे! बातिन में मैं तड़प रही हूँ, मेरा दिल तेज़ी से धड़क रहा है, इसलिए कि मैं इतनी ज़्यादा सरकश रही हूँ। बाहर गली में तलवार ने मुझे बच्चों से महरूम कर दिया, घर के अंदर मौत मेरे पीछे पड़ी है।

21मेरी आहें तो लोगों तक पहुँचती हैं, लेकिन कोई मुझे तसल्ली देने के लिए नहीं आता। इसके बजाए मेरे तमाम दुश्मन मेरी मुसीबत के बारे में सुनकर बग़लें बजा रहे हैं। वह ख़ुश हैं कि तूने मेरे साथ ऐसा सुलूक किया है। ऐ रब, वह दिन आने दे जिसका एलान तूने किया है ताकि वह भी मेरी तरह की मुसीबत में फँस जाएँ।

22उनकी तमाम बुरी हरकतें तेरे सामने आएँ। उनसे यों निपट ले जिस तरह तूने मेरे गुनाहों के जवाब में मुझसे निपट लिया है। क्योंकि आहें भरते भरते मेरा दिल निढाल हो गया है।"

रब का ग़ज़ब यरूशलम पर नाज़िल हुआ है

2 हाय, रब का क़हर काले बादलों की तरह सिय्यून बेटी पर छा गया है! इसराईल की जो शानो-शौकत पहले आसमान की तरह बुलंद थी उसे अल्लाह ने ख़ाक में मिला दिया है। जब उसका ग़ज़ब नाज़िल हुआ तो उसने अपने घर का भी ख़याल न किया, गो वह उसके पाँवों की चौकी है।

2रब ने बेरहमी से याक़ूब की आबादियों को
मिटा डाला, क़हर में यहूदाह बेटी के क़िलों को
ढा दिया। उसने यहूदाह की सलतनत और बुज़ुर्गों
को ख़ाक में मिलाकर उनकी बेहुरमती की है।
3ग़ज़बनाक होकर उसने इसराईल की पूरी
ताक़त ख़त्म कर दी। फिर जब दुश्मन क़रीब आया
तो उसने अपने दहने हाथ को इसराईल की मदद
करने से रोक लिया। न सिर्फ़ यह बल्कि वह
शोलाज़न आग बन गया जिसने याक़ूब में चारों
तरफ़ फैलकर सब कुछ भस्म कर दिया।
4अपनी कमान को तानकर वह अपने दहने
हाथ से तीर चलाने के लिए उठा। दुश्मन की तरह
उसने सब कुछ जो मनमोहन था मौत के घाट
उतारा। सिय्यून बेटी का ख़ैमा उसके क़हर के
भड़कते कोयलों से भर गया।

5रब ने इसराईल का दुश्मन-सा बनकर मुल्क
को उसके महलों और क़िलों समेत तबाह कर
दिया है। उसी के हाथों यहूदाह बेटी की आहो-
ज़ारी में इज़ाफ़ा होता गया।
6उसने अपनी सुकूनतगाह को बाग़ की झोंपड़ी
की तरह गिरा दिया, उसी मक़ाम को बरबाद कर
दिया जहाँ क़ौम उससे मिलने के लिए जमा होती
थी। रब के हाथों यों हुआ कि अब सिय्यून की ईदों
और सबतों की याद ही नहीं रही। उसके शदीद
क़हर ने बादशाह और इमाम दोनों को रद्द कर दिया
है।
7अपनी क़ुरबानगाह और मक़दिस को मुस्तरद
करके रब ने यरूशलम के महलों की दीवारें दुश्मन
के हवाले कर दीं। तब रब के घर में भी ईद के दिन
का-सा शोर मच गया।
8रब ने फ़ैसला किया कि सिय्यून बेटी की
फ़सील को गिरा दिया जाए। उसने फ़ीते से दीवारों
को नाप नापकर अपने हाथ को न रोका जब तक
सब कुछ तबाह न हो गया। तब क़िलाबंदी के पुश्ते
और फ़सील मातम करते करते ज़ाया हो गए।
9शहर के दरवाज़े ज़मीन में धँस गए, उनके कुंडे
टूटकर बेकार हो गए। यरूशलम के बादशाह और
राहनुमा दीगर अक़वाम में जिलावतन हो गए हैं।
अब न शरीअत रही, न सिय्यून के नबियों को रब
की रोया मिलती है।
10सिय्यून बेटी के बुज़ुर्ग ख़ामोशी से ज़मीन पर
बैठ गए हैं। टाट के लिबास ओढ़कर उन्होंने अपने
सरों पर ख़ाक डाल ली है। यरूशलम की कुँवारियाँ
भी अपने सरों को झुकाए बैठी हैं।

11मेरी आँखें रो रोकर थक गई हैं, शदीद दर्द ने
मेरे दिल को बेहाल कर दिया है। क्योंकि मेरी क़ौम
नेस्त हो गई है। शहर के चौकों में बच्चे पज़मुरदा
हालत में फिर रहे हैं, शीरख़ार बच्चे ग़श खा रहे
हैं। यह देखकर मेरा कलेजा फट रहा है।
12अपनी माँ से वह पूछते हैं, “रोटी और मै
कहाँ है?” लेकिन बेफ़ायदा। वह मौत के घाट
उतरनेवाले ज़ख़मी आदमियों की तरह चौकों में
भूके मर रहे हैं, उनकी जान माँ की गोद में ही
निकल रही है।

13ऐ यरूशलम बेटी, मैं किससे तेरा मुवाज़ना
करके तेरी हौसलाअफ़्ज़ाई करूँ? ऐ कुँवारी
सिय्यून बेटी, मैं किससे तेरा मुक़ाबला करके
तुझे तसल्ली दूँ? क्योंकि तुझे समुंदर जैसा वसी
नुक़सान पहुँचा है। कौन तुझे शफ़ा दे सकता है?
14तेरे नबियों ने तुझे झूटी और बेकार रोयाएँ
पेश कीं। उन्होंने तेरा क़ुसूर तुझ पर ज़ाहिर न
किया, हालाँकि उन्हें करना चाहिए था ताकि तू
इस सज़ा से बच जाती। इसके बजाए उन्होंने तुझे
झूट और फ़रेबदेह पैग़ामात सुनाए।
15अब तेरे पास से गुज़रनेवाले ताली बजाकर
आवाज़े कसते हैं। यरूशलम बेटी को देखकर वह
सर हिलाते हुए तौबा तौबा कहते हैं, “क्या यह वह
शहर है जो ‘तकमीले-हुस्न’ और ‘तमाम दुनिया
की ख़ुशी’ कहलाता था?”
16तेरे तमाम दुश्मन मुँह पसारकर तेरे ख़िलाफ़
बातें करते हैं। वह आवाज़े कसते और दाँत पीसते
हुए कहते हैं, “हमने उसे हड़प कर लिया है।
लो, वह दिन आ गया है जिसके इंतज़ार में हम

रहे। आख़िरकार वह पहुँच गया, आख़िरकार हमने
अपनी आँखों से उसे देख लिया है।”
17अब रब ने अपनी मरज़ी पूरी की है। अब
उसने सब कुछ पूरा किया है जो बड़ी देर से
फ़रमाता आया है। बेरहमी से उसने तुझे ख़ाक में
मिला दिया। उसी ने होने दिया कि दुश्मन तुझ पर
शादियाना बजाता, कि तेरे मुख़ालिफ़ों की ताक़त
तुझ पर ग़ालिब आ गई है।

18लोगों के दिल रब को पुकारते हैं। ऐ सिय्यून
बेटी की फ़सील, तेरे आँसू दिन-रात बहते बहते
नदी बन जाएँ। न इससे बाज़ आ, न अपनी आँखों
को रोने से रुकने दे!
19उठ, रात के हर पहर की इब्तिदा में आहो-
ज़ारी कर! अपने दिल की हर बात पानी की
तरह रब के हुज़ूर उंडेल दे। अपने हाथों को उस
की तरफ़ उठाकर अपने बच्चों की जानों के लिए
इल्तिजा कर जो इस वक़्त गली गली में भूके मर
रहे हैं।

20ऐ रब, ध्यान से देख कि तूने किससे ऐसा
सुलूक किया है। क्या यह औरतें अपने पेट का
फल, अपने लाडले बच्चों को खाएँ? क्या रब
के मक़दिस में ही इमाम और नबी को मार डाला
जाए?
21लड़कों और बुज़ुर्गों की लाशें मिलकर
गलियों में पड़ी हैं। मेरे जवान लड़के-लड़कियाँ
तलवार की ज़द में आकर गिर गए हैं। जब तेरा
ग़ज़ब नाज़िल हुआ तो तूने उन्हें मार डाला, बेरहमी
से उन्हें मौत के घाट उतार दिया।
22जिनसे मैं दहशत खाता था उन्हें तूने बुलाया।
जिस तरह बड़ी ईदों के मौक़े पर हुजूम शहर में
जमा होते हैं उसी तरह दुश्मन चारों तरफ़ से मुझ
पर टूट पड़े। जब रब का ग़ज़ब नाज़िल हुआ तो
न कोई बचा, न कोई बाक़ी रह गया। जिन्हें मैंने
पाला और जो मेरे ज़ेरे-निगरानी परवान चढ़े उन्हें
दुश्मन ने हलाक कर दिया।

मुसीबत में रब की मेहरबानी पर उम्मीद

3 हाय, मुझे कितना दुख उठाना पड़ा! और
यह सब कुछ इसलिए हो रहा है कि रब का
ग़ज़ब मुझ पर नाज़िल हुआ है, उसी की लाठी मुझे
तरबियत दे रही है।
2उसने मुझे हाँक हाँककर तारीकी में चलने
दिया, कहीं भी रौशनी नज़र नहीं आई।
3रोज़ाना वह बार बार अपना हाथ मेरे ख़िलाफ़
उठाता रहता है।
4उसने मेरे जिस्म और जिल्द को सड़ने दिया,
मेरी हड्डियों को तोड़ डाला।
5मुझे घेरकर उसने ज़हर और सख़्त मुसीबत
की दीवार मेरे इर्दगिर्द खड़ी कर दी।
6उसने मुझे तारीकी में बसाया। अब मैं उनकी
मानिंद हूँ जो बड़ी देर से क़ब्र में पड़े हैं।
7उसने मुझे पीतल की भारी ज़ंजीरों में
जकड़कर मेरे इर्दगिर्द ऐसी दीवारें खड़ी कीं जिनसे
मैं निकल नहीं सकता।
8ख़ाह मैं मदद के लिए कितनी चीख़ें क्यों न
मारूँ वह मेरी इल्तिजाएँ अपने हुज़ूर पहुँचने नहीं
देता।
9जहाँ भी मैं चलना चाहूँ वहाँ उसने तराशे
पत्थरों की मज़बूत दीवार से मुझे रोक लिया। मेरे
तमाम रास्ते भूलभुलय्याँ बन गए हैं।
10अल्लाह रीछ की तरह मेरी घात में बैठ गया,
शेरबबर की तरह मेरी ताक लगाए छुप गया।
11उसने मुझे सहीह रास्ते से भटका दिया, फिर
मुझे फाड़कर बेसहारा छोड़ दिया।
12अपनी कमान को तानकर उसने मुझे अपने
तीरों का निशाना बनाया।
13उसके तीरों ने मेरे गुरदों को चीर डाला।
14मैं अपनी पूरी क़ौम के लिए मज़ाक़ का
निशाना बन गया हूँ। वह पूरे दिन अपने गीतों में
मुझे लान-तान करते हैं।
15अल्लाह ने मुझे कड़वे ज़हर से सेर किया,
मुझे ना-गवार तलख़ी का प्याला पिलाया।

16उसने मेरे दाँतों को बजरी चबाने दी, मुझे कुचलकर ख़ाक में मिला दिया।
17मेरी जान से सुकून छीन लिया गया, अब मैं ख़ुशहाली का मज़ा भूल ही गया हूँ।

18चुनाँचे मैं बोला, “मेरी शान और रब पर से मेरी उम्मीद जाती रही है।”
19मेरी तकलीफ़देह और बेवतन हालत का ख़याल कड़वे ज़हर की मानिंद है।
20तो भी मेरी जान को उस की याद आती रहती है, सोचते सोचते वह मेरे अंदर दब जाती है।

21लेकिन मुझे एक बात की उम्मीद रही है, और यही मैं बार बार ज़हन में लाता हूँ,
22रब की मेहरबानी है कि हम नेस्तो-नाबूद नहीं हुए। क्योंकि उस की शफ़क़त कभी ख़त्म नहीं होती
23बल्कि हर सुबह अज़ सरे-नौ हम पर चमक उठती है। ऐ मेरे आक़ा, तेरी वफ़ादारी अज़ीम है।
24मेरी जान कहती है, “रब मेरा मौरूसी हिस्सा है, इसलिए मैं उसके इंतज़ार में रहूँगी।”
25क्योंकि रब उन पर मेहरबान है जो उस पर उम्मीद रखकर उसके तालिब रहते हैं।
26चुनाँचे अच्छा है कि हम ख़ामोशी से रब की नजात के इंतज़ार में रहें।
27अच्छा है कि इनसान जवानी में अल्लाह का जुआ उठाए फिरे।
28जब जुआ उस की गरदन पर रखा जाए तो वह चुपके से तनहाई में बैठ जाए।
29वह ख़ाक में औंधे मुँह हो जाए, शायद अभी तक उम्मीद हो।
30वह मारनेवाले को अपना गाल पेश करे, चुपके से हर तरह की रुसवाई बरदाश्त करे।

31क्योंकि रब इनसान को हमेशा तक रद्द नहीं करता।
32उस की शफ़क़त इतनी अज़ीम है कि गो वह कभी इनसान को दुख पहुँचाए तो भी वह आख़िरकार उस पर दुबारा रहम करता है।
33क्योंकि वह इनसान को दबाने और ग़म पहुँचाने में ख़ुशी महसूस नहीं करता।

34मुल्क में तमाम क़ैदियों को पाँवों तले कुचला जा रहा है।
35अल्लाह तआला के देखते देखते इनसान की हक़तलफ़ी की जा रही है,
36अदालत में लोगों का हक़ मारा जा रहा है। लेकिन रब को यह सब कुछ नज़र आता है।
37कौन कुछ करवा सकता है अगर रब ने इसका हुक्म न दिया हो?
38आफ़तें और अच्छी चीज़ें दोनों अल्लाह तआला के फ़रमान पर वुजूद में आती हैं।
39तो फिर इनसानों में से कौन अपने गुनाहों की सज़ा पाने पर शिकायत करे?
40आओ, हम अपने चाल-चलन का जायज़ा लें, उसे अच्छी तरह जाँचकर रब के पास वापस आएँ।
41हम अपने दिल को हाथों समेत आसमान की तरफ़ मायल करें जहाँ अल्लाह है।

42हम इक़रार करें, “हम बेवफ़ा होकर सरकश हो गए हैं, और तूने हमें मुआफ़ नहीं किया।
43तू अपने क़हर के परदे के पीछे छुपकर हमारा ताक़्क़ुब करने लगा, बेरहमी से हमें मारता गया।
44तू बादल में यों छुप गया है कि कोई भी दुआ तुझ तक नहीं पहुँच सकती।
45तूने हमें अक़वाम के दरमियान कूड़ा-करकट बना दिया।
46हमारे तमाम दुश्मन हमें ताने देते हैं।
47दहशत और गढ़े हमारे नसीब में हैं, हम धड़ाम से गिरकर तबाह हो गए हैं।”

48आँसू मेरी आँखों से टपक टपककर नदियाँ बन गए हैं, मैं इसलिए रो रहा हूँ कि मेरी क़ौम तबाह हो गई है।

49मेरे आँसू रुक नहीं सकते बल्कि उस वक़्त तक जारी रहेंगे

50जब तक रब आसमान से झाँककर मुझ पर ध्यान न दे।

51अपने शहर की औरतों से दुश्मन का सुलूक देखकर मेरा दिल छलनी हो रहा है।

52जो बिलावजह मेरे दुश्मन हैं उन्होंने परिंदे की तरह मेरा शिकार किया।

53उन्होंने मुझे जान से मारने के लिए गढ़े में डालकर मुझ पर पत्थर फेंक दिए।

54सैलाब मुझ पर आया, और मेरा सर पानी में डूब गया। मैं बोला, "मेरी ज़िंदगी का धागा कट गया है।"

55ऐ रब, जब मैं गढ़े की गहराइयों में था तो मैंने तेरे नाम को पुकारा।

56मैंने इल्तिजा की, "अपना कान बंद न रख बल्कि मेरी आहें और चीख़ें सुन!" और तूने मेरी सुनी।

57जब मैंने तुझे पुकारा तो तूने क़रीब आकर फ़रमाया, "ख़ौफ़ न खा।"

58ऐ रब, तू अदालत में मेरे हक़ में मुक़दमा लड़ा, बल्कि तूने मेरी जान का एवज़ाना भी दिया।

59ऐ रब, जो ज़ुल्म मुझ पर हुआ वह तुझे साफ़ नज़र आता है। अब मेरा इनसाफ़ कर!

60तूने उनकी तमाम कीनापरवरी पर तवज्जुह दी है। जितनी भी साज़िशें उन्होंने मेरे ख़िलाफ़ की हैं उनसे तू वाक़िफ़ है।

61ऐ रब, उनकी लान-तान, उनके मेरे ख़िलाफ़ तमाम मनसूबे तेरे कान तक पहुँच गए हैं।

62जो कुछ मेरे मुख़ालिफ़ पूरा दिन मेरे ख़िलाफ़ फुसफुसाते और बुड़बुड़ाते हैं उससे तू ख़ूब आश्ना है।

63देख कि यह क्या करते हैं! ख़ाह बैठे या खड़े हों, हर वक़्त वह अपने गीतों में मुझे अपने मज़ाक़ का निशाना बनाते हैं।

64ऐ रब, उन्हें उनकी हरकतों का मुनासिब अज्र दे!

65उनके ज़हनों को कुंद कर, तेरी लानत उन पर आ पड़े!

66उन पर अपना पूरा ग़ज़ब नाज़िल कर! जब तक वह तेरे आसमान के नीचे से ग़ायब न हो जाएँ उनका ताक़्क़ुब करता रह!

यरूशलम की मुसीबत

4 हाय, सोने की आबो-ताब न रही, ख़ालिस सोना भी माँद पड़ गया है। मक़दिस के जवाहिर तमाम गलियों में बिखरे पड़े हैं।

2पहले तो सिय्यून के गिराँक़दर फ़रज़ंद ख़ालिस सोने जैसे क़ीमती थे, लेकिन अब वह गोया मिट्टी के बरतन समझे जाते हैं जो आम कुम्हार ने बनाए हैं।

3गो गीदड़ भी अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं, लेकिन मेरी क़ौम रेगिस्तान में रहनेवाले उक़ाबी उल्लू जैसी ज़ालिम हो गई है।

4शीरख़ार बच्चे की ज़बान प्यास के मारे तालू से चिपक गई है। छोटे बच्चे भूक के मारे रोटी माँगते हैं, लेकिन खिलानेवाला कोई नहीं है।

5जो पहले लज़ीज़ खाना खाते थे वह अब गलियों में तबाह हो रहे हैं। जो पहले अरग़वानी रंग के शानदार कपड़े पहनते थे वह अब कूड़े-करकट में लोट-पोट हो रहे हैं।

6मेरी क़ौम से सदूम की निसबत कहीं ज़्यादा संगीन गुनाह सरज़द हुआ है। और सदूम का क़ुसूर इतना संगीन था कि वह एक ही लमहे में तबाह हुआ। किसी ने भी मुदाख़लत न की।

7सिय्यून के रईस कितने शानदार थे! जिल्द बर्फ़ जैसी निखरी, दूध जैसी सफ़ेद थी। रुख़सार

[a]lapis lazuli

मूँगे की तरह गुलाबी, शक्लो-सूरत संगे-लाजवर्द[a] जैसी चमकदार थी।

8लेकिन अब वह कोयले जैसे काले नज़र आते हैं। जब गलियों में घूमते हैं तो उन्हें पहचाना नहीं जाता। उनकी हड्डियों पर की जिल्द सुकड़कर लकड़ी की तरह सूखी हुई है।

9जो तलवार से हलाक हुए उनका हाल उनसे बेहतर था जो भूके मर गए। क्योंकि खेतों से ख़ुराक न मिलने पर वह घुल घुलकर मर गए।

10जब मेरी क़ौम तबाह हुई तो इतना सख़्त काल पड़ गया कि नरमदिल माओं ने भी अपने बच्चों को पकाकर खा लिया।

11रब ने अपना पूरा ग़ज़ब सिय्यून पर नाज़िल किया, उसे अपने शदीद क़हर का निशाना बनाया। उसने यरूशलम में इतनी ज़बरदस्त आग लगाई कि वह बुनियादों तक भस्म हो गया।

12अब दुश्मन यरूशलम के दरवाज़ों में दाख़िल हुए हैं, हालाँकि दुनिया के तमाम बादशाह बल्कि सब लोग समझते थे कि यह मुमकिन ही नहीं।

13लेकिन यह सब कुछ उसके नबियों और इमामों के सबब से हुआ जिन्होंने शहर ही में रास्तबाज़ों की ख़ूनरेज़ी की।

14अब यही लोग अंधों की तरह गलियों में टटोल टटोलकर फिरते हैं। वह ख़ून से इतने आलूदा हैं कि सब लोग उनके कपड़ों से लगने से गुरेज़ करते हैं।

15उन्हें देखकर लोग गरजते हैं, “हटो, तुम नापाक हो! भाग जाओ, दफ़ा हो जाओ, हमें हाथ मत लगाना!” फिर जब वह दीगर अक़वाम में जाकर इधर-उधर फिरने लगते हैं तो वहाँ के लोग भी कहते हैं कि यह मज़ीद यहाँ न ठहरें।

16रब ने ख़ुद उन्हें मुंतशिर कर दिया, अब से वह उनका ख़याल नहीं करेगा। अब न इमामों की इज़्ज़त होती है, न बुज़ुर्गों पर मेहरबानी की जाती है।

17हम चारों तरफ़ आँख दौड़ाते रहे, लेकिन बेफ़ायदा, कोई मदद न मिली। देखते देखते हमारी नज़र धुँधला गई। क्योंकि हम अपने बुर्जों पर खड़े एक ऐसी क़ौम के इंतज़ार में रहे जो हमारी मदद कर ही नहीं सकती थी।

18हम अपने चौकों में जा न सके, क्योंकि वहाँ दुश्मन हमारी ताक में बैठा था। हमारा ख़ातमा क़रीब आया, हमारा मुक़र्ररा वक़्त इख़्तितामपज़ीर हुआ, हमारा अंजाम आ पहुँचा।

19जिस तरह आसमान पर मँडलानेवाला उक़ाब एकदम शिकार पर झपट पड़ता है उसी तरह हमारा ताक़्क़ुब करनेवाले हम पर टूट पड़े, और वह भी कहीं ज़्यादा तेज़ी से। वह पहाड़ों पर हमारे पीछे पीछे भागे और रेगिस्तान में हमारी घात में रहे।

20हमारा बादशाह भी उनके गढ़ों में फँस गया। जो हमारी जान था और जिसे रब ने मसह करके चुन लिया था उसे भी पकड़ लिया गया, गो हमने सोचा था कि उसके साये में बसकर अक़वाम के दरमियान महफ़ूज़ रहेंगे।

21ऐ अदोम बेटी, बेशक शादियाना बजा! बेशक मुल्के-ऊज़ में रहकर ख़ुशी मना! लेकिन ख़बरदार, अल्लाह के ग़ज़ब का प्याला तुझे भी पिलाया जाएगा। तब तू उसे पी पीकर मस्त हो जाएगी और नशे में अपने कपड़े उतारकर बरहना फिरेगी।

22ऐ सिय्यून बेटी, तेरी सज़ा का वक़्त पूरा हो गया है। अब से रब तुझे क़ैदी बनाकर जिलावतन नहीं करेगा। लेकिन ऐ अदोम बेटी, वह तुझे तेरे क़ुसूर का पूरा अज्र देगा, वह तेरे गुनाहों पर से परदा उठा लेगा।

ऐ रब, हमें अपने हुज़ूर वापस ला!

5 ऐ रब, याद कर कि हमारे साथ क्या कुछ हुआ! ग़ौर कर कि हमारी कैसी रुसवाई हुई है।

2हमारी मौरूसी मिलकियत परदेसियों के हवाले की गई, हमारे घर अजनबियों के हाथ में आ गए हैं।

3हम वालिदों से महरूम होकर यतीम हो गए हैं, हमारी माएँ बेवाओं की तरह ग़ैरमहफ़ूज़ हैं।

4ख़ाह पीने का पानी हो या लकड़ी, हर चीज़ की पूरी क़ीमत अदा करनी पड़ती है, हालाँकि यह हमारी अपनी ही चीज़ें थीं।

5हमारा ताक़्क़ुब करनेवाले हमारे सर पर चढ़ आए हैं, और हम थक गए हैं। कहीं भी सुकून नहीं मिलता।

6हमने अपने आपको मिसर और असूर के हवाले कर दिया ताकि रोटी मिल जाए और भूके न मरें।

7हमारे बापदादा ने गुनाह किया, लेकिन वह कूच कर गए हैं। अब हम ही उनकी सज़ा भुगत रहे हैं।

8ग़ुलाम हम पर हुकूमत करते हैं, और कोई नहीं है जो हमें उनके हाथ से बचाए।

9हम अपनी जान को ख़तरे में डालकर रोज़ी कमाते हैं, क्योंकि बयाबान में तलवार हमारी ताक में बैठी रहती है।

10भूक के मारे हमारी जिल्द तनूर जैसी गरम होकर चुरमुर हो गई है।

11सिय्यून में औरतों की इसमतदरी, यहूदाह के शहरों में कुँवारियों की बेहुरमती हुई है।

12दुश्मन ने रईसों को फाँसी देकर बुज़ुर्गों की बेइज़्ज़ती की है।

13नौजवानों को चक्की का पाट उठाए फिरना है, लड़के लकड़ी के बोझ तले डगमगाकर गिर जाते हैं।

14अब बुज़ुर्ग शहर के दरवाज़े से और जवान अपने साज़ों से बाज़ रहते हैं।

15ख़ुशी हमारे दिलों से जाती रही है, हमारा लोकनाच आहो-ज़ारी में बदल गया है।

16ताज हमारे सर पर से गिर गया है। हम पर अफ़सोस, हमसे गुनाह सरज़द हुआ है।

17इसी लिए हमारा दिल निढाल हो गया, हमारी नज़र धुँधला गई है।

18क्योंकि कोहे-सिय्यून तबाह हुआ है, लोमड़ियाँ उस की गलियों में फिरती हैं।

19ऐ रब, तेरा राज अबदी है, तेरा तख़्त पुश्त-दर-पुश्त क़ायम रहता है।

20तू हमें हमेशा तक क्यों भूलना चाहता है? तूने हमें इतनी देर तक क्यों तर्क किए रखा है?

21ऐ रब, हमें अपने पास वापस ला ताकि हम वापस आ सकें। हमें बहाल कर ताकि हमारा हाल पहले की तरह हो।

22या क्या तूने हमें हतमी तौर पर मुस्तरद कर दिया है? क्या तेरा हम पर ग़ुस्सा हद से ज़्यादा बढ़ गया है?।

हिज़क़ियेल

अल्लाह के रथ की रोया

1 1-3जब मैं यानी इमाम हिज़क़ियेल बिन बूज़ी तीस साल का था तो मैं यहूदाह के जिलावतनों के साथ मुल्के-बाबल के दरिया किबार के किनारे ठहरा हुआ था। यहूयाकीन बादशाह को जिलावतन हुए पाँच साल हो गए थे। चौथे महीने के पाँचवें दिन[a] आसमान खुल गया और अल्लाह ने मुझ पर मुख़्तलिफ़ रोयाएँ ज़ाहिर कीं। उस वक़्त रब मुझसे हमकलाम हुआ, और उसका हाथ मुझ पर आ ठहरा।

4रोया में मैंने ज़बरदस्त आँधी देखी जिसने शिमाल से आकर बड़ा बादल मेरे पास पहुँचाया। बादल में चमकती-दमकती आग नज़र आई, और वह तेज़ रौशनी से घिरा हुआ था। आग का मरकज़ चमकदार धात की तरह तमतमा रहा था।

5आग में चार जानदारों जैसे चल रहे थे जिनकी शक्लो-सूरत इनसान की-सी थी। 6लेकिन हर एक के चार चेहरे और चार पर थे। 7उनकी टाँगें इनसानों जैसी सीधी थीं, लेकिन पाँवों के तल्वे बछड़ों के-से खुर थे। वह पालिश किए हुए पीतल की तरह जगमगा रहे थे। 8चारों के चेहरे और पर थे, और चारों परों के नीचे इनसानी हाथ दिखाई दिए। 9जानदार अपने परों से एक दूसरे को छू रहे थे। चलते वक़्त मुड़ने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि हर एक के चार चेहरे चारों तरफ़ देखते थे। जब कभी किसी सिम्त जाना होता तो उसी सिम्त का चेहरा चल पड़ता। 10चारों के चेहरे एक जैसे थे। सामने का चेहरा इनसान का, दाईं तरफ़ का चेहरा शेरबबर का, बाईं तरफ़ का चेहरा बैल का और पीछे का चेहरा उक़ाब का था। 11उनके पर ऊपर की तरफ़ फैले हुए थे। दो पर बाएँ और दाएँ हाथ के जानदारों से लगते थे, और दो पर उनके जिस्मों को ढाँपे रखते थे। 12जहाँ भी अल्लाह का रूह जाना चाहता था वहाँ यह जानदार चल पड़ते। उन्हें मुड़ने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि वह हमेशा अपने चारों चेहरों में से एक का रुख़ इख़्तियार करते थे।

13जानदारों के बीच में ऐसा लग रहा था जैसे कोयले दहक रहे हों, कि उनके दरमियान मशालें इधर-उधर चल रही हों। झिलमिलाती आग में से बिजली भी चमककर निकलती थी। 14जानदार ख़ुद इतनी तेज़ी से इधर-उधर घूम रहे थे कि बादल की बिजली जैसे नज़र आ रहे थे।

15जब मैंने ग़ौर से उन पर नज़र डाली तो देखा कि हर एक जानदार के पास पहिया है जो ज़मीन को छू रहा है। 16लगता था कि चारों पहिये पुखराज[b] से बने हुए हैं। चारों एक जैसे थे। हर पहिये के अंदर एक और पहिया ज़ावियाए-क़ायमा में घूम रहा था, 17इसलिए वह मुड़े बग़ैर हर रुख़ इख़्तियार कर सकते थे। 18उनके लंबे

[a]31 जुलाई।

[b]topas

चक्कर ख़ौफ़नाक थे, और चक्करों की हर जगह
पर आँखें ही आँखें थीं। 19जब चार जानदार चलते
तो चारों पहिये भी साथ चलते, जब जानदार
ज़मीन से उड़ते तो पहिये भी साथ उड़ते थे।
20जहाँ भी अल्लाह का रूह जाता वहाँ जानदार
भी जाते थे। पहिये भी उड़कर साथ साथ चलते
थे, क्योंकि जानदारों की रूह पहियों में थी। 21जब
कभी जानदार चलते तो यह भी चलते, जब रुक
जाते तो यह भी रुक जाते, जब उड़ते तो यह भी
उड़ते। क्योंकि जानदारों की रूह पहियों में थी।

22जानदारों के सरों के ऊपर गुंबद-सा फैला
हुआ था जो साफ़-शफ़्फ़ाफ़ बिल्लौर जैसा लग
रहा था। उसे देखकर इनसान घबरा जाता था।
23चारों जानदार इस गुंबद के नीचे थे, और हर
एक अपने परों को फैलाकर एक से बाईं तरफ़
के साथी और दूसरे से दाईं तरफ़ के साथी को
छू रहा था। बाक़ी दो परों से वह अपने जिस्म
को ढाँपे रखता था। 24चलते वक़्त उनके परों का
शोर मुझ तक पहुँचा। यों लग रहा था जैसे क़रीब
ही ज़बरदस्त आबशार बह रही हो, कि क़ादिरे-
मुतलक़ कोई बात फ़रमा रहा हो, या कि कोई
लशकर हरकत में आ गया हो। रुकते वक़्त वह
अपने परों को नीचे लटकने देते थे।

25फिर गुंबद के ऊपर से आवाज़ सुनाई दी,
और जानदारों ने रुककर अपने परों को लटकने
दिया। 26मैंने देखा कि उनके सरों के ऊपर के
गुंबद पर संगे-लाजवर्द[a] का तख़्त-सा नज़र आ
रहा है जिस पर कोई बैठा था जिसकी शक्लो-
सूरत इनसान की मानिंद है। 27लेकिन कमर
से लेकर सर तक वह चमकदार धात की तरह
तमतमा रहा था, जबकि कमर से लेकर पाँव तक
आग की मानिंद भड़क रहा था। तेज़ रौशनी उसके
इर्दगिर्द झिलमिला रही थी। 28उसे देखकर क़ौसे-
क़ुज़ह की वह आबो-ताब याद आती थी जो बारिश
होते वक़्त बादल में दिखाई देती है। यों रब का
जलाल नज़र आया। यह देखते ही मैं औंधे मुँह
गिर गया। इसी हालत में कोई मुझसे बात करने
लगा।

हिज़क़ियेल की बुलाहट, तूमार की रोया

2 वह बोला, “ऐ आदमज़ाद, खड़ा हो जा!
मैं तुझसे बात करना चाहता हूँ।” 2ज्योंही
वह मुझसे हमकलाम हुआ तो रूह ने मुझमें आकर
मुझे खड़ा कर दिया। फिर मैंने आवाज़ को यह
कहते हुए सुना,

3“ऐ आदमज़ाद, मैं तुझे इसराईलियों के पास
भेज रहा हूँ, एक ऐसी सरकश क़ौम के पास
जिसने मुझसे बग़ावत की है। शुरू से लेकर आज
तक वह अपने बापदादा समेत मुझसे बेवफ़ा रहे
हैं। 4जिन लोगों के पास मैं तुझे भेज रहा हूँ वह
बेशर्म और ज़िद्दी हैं। उन्हें वह कुछ सुना दे जो रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है। 5ख़ाह यह बाग़ी सुनें
या न सुनें, वह ज़रूर जान लेंगे कि हमारे दरमियान
नबी बरपा हुआ है। 6ऐ आदमज़ाद, उनसे या
उनकी बातों से मत डरना। गो तू काँटेदार झाड़ियों
से घिरा रहेगा और तुझे बिच्छुओं के दरमियान
बसना पड़ेगा तो भी ख़ौफ़ज़दा न हो। न उनकी
बातों से ख़ौफ़ खाना, न उनके रवय्ये से दहशत
खाना। क्योंकि यह क़ौम सरकश है। 7ख़ाह यह
सुनें या न सुनें लाज़िम है कि तू मेरे पैग़ामात उन्हें
सुनाए। क्योंकि वह बाग़ी ही हैं। 8ऐ आदमज़ाद,
जब मैं तुझसे हमकलाम हूँगा तो ध्यान दे और इस
सरकश क़ौम की तरह बग़ावत मत करना। अपने
मुँह को खोलकर वह कुछ खा जो मैं तुझे खिलाता
हूँ।”

9तब एक हाथ मेरी तरफ़ बढ़ा हुआ नज़र आया
जिसमें तूमार था। 10तूमार को खोला गया तो मैंने
देखा कि उसमें आगे भी और पीछे भी मातम और
आहो-ज़ारी क़लमबंद हुई है।

3 उसने फ़रमाया, “ऐ आदमज़ाद, जो कुछ
तुझे दिया जा रहा है उसे खा ले! तूमार
को खा, फिर जाकर इसराईली क़ौम से मुख़ातिब
हो जा।” 2मैंने अपना मुँह खोला तो उसने मुझे

[a]lapis lazuli

तूमार खिलाया। 3साथ साथ उसने फ़रमाया,
“आदमज़ाद, जो तूमार मैं तुझे खिलाता हूँ उसे
खा, पेट भरकर खा!” जब मैंने उसे खाया तो
शहद की तरह मीठा लगा।

4तब अल्लाह मुझसे हमकलाम हुआ, “ऐ
आदमज़ाद, अब जाकर इसराईली घराने को मेरे
पैग़ामात सुना दे। 5मैं तुझे ऐसी क़ौम के पास नहीं
भेज रहा जिसकी अजनबी ज़बान तुझे समझ न
आए बल्कि तुझे इसराईली क़ौम के पास भेज
रहा हूँ। 6बेशक ऐसी बहुत-सी क़ौमें हैं जिनकी
अजनबी ज़बानें तुझे नहीं आतीं, लेकिन उनके
पास मैं तुझे नहीं भेज रहा। अगर मैं तुझे उन्हीं के
पास भेजता तो वह ज़रूर तेरी सुनतीं। 7लेकिन
इसराईली घराना तेरी सुनने के लिए तैयार नहीं
होगा, क्योंकि वह मेरी सुनने के लिए तैयार ही
नहीं। क्योंकि पूरी क़ौम का माथा सख़्त और
दिल अड़ा हुआ है। 8लेकिन मैंने तेरा चेहरा भी
उनके चेहरे जैसा सख़्त कर दिया, तेरा माथा भी
उनके माथे जैसा मज़बूत कर दिया है। 9तू उनका
मुक़ाबला कर सकेगा, क्योंकि मैंने तेरे माथे को
हीरे जैसा मज़बूत, चक़माक़ जैसा पायदार कर
दिया है। गो यह क़ौम बाग़ी है तो भी उनसे ख़ौफ़
न खा, न उनके सुलूक से दहशतज़दा हो।”

10अल्लाह ने मज़ीद फ़रमाया, “ऐ आदम-
ज़ाद, मेरी हर बात पर ध्यान देकर उसे ज़हन में
बिठा। 11अब रवाना होकर अपनी क़ौम के उन
अफ़राद के पास जा जो बाबल में जिलावतन हुए
हैं। उन्हें वह कुछ सुना दे जो रब क़ादिरे-मुतलक़
उन्हें बताना चाहता है, ख़ाह वह सुनें या न सुनें।”

12तब अल्लाह के रूह ने मुझे वहाँ से उठाया।
मैंने अपने पीछे एक गिड़गिड़ाती आवाज़ सुनी :
मुबारक हो रब का जलाल अपनी जगह से!
13फ़िज़ा चारों जानदारों के शोर से गूँज उठी
जब उनके पर एक दूसरे से लगने और उनके
पहिये घूमने लगे। 14अल्लाह का रूह मुझे उठाकर
वहाँ से ले गया, और मैं तलख़मिज़ाजी और
बड़ी सरगरमी से रवाना हुआ। क्योंकि रब का
हाथ ज़ोर से मुझ पर ठहरा हुआ था। 15चलते
चलते मैं दरियाए-किबार की आबादी तल-अबीब
में रहनेवाले जिलावतनों के पास पहुँच गया। मैं
उनके दरमियान बैठ गया। सात दिन तक मेरी
हालत गुमसुम रही।

मेरी क़ौम को आगाह कर!

16सात दिन के बाद रब मुझसे हमकलाम हुआ,
17“ऐ आदमज़ाद, मैंने तुझे इसराईली क़ौम पर
पहरेदार बनाया, इसलिए जब भी तुझे मुझसे
कलाम मिले तो उन्हें मेरी तरफ़ से आगाह कर!

18मैं तेरे ज़रीए बेदीन को इत्तला दूँगा कि उसे
मरना ही है ताकि वह अपनी बुरी राह से हटकर
बच जाए। अगर तू उसे यह पैग़ाम न पहुँचाए, न
उसे तंबीह करे और वह अपने क़ुसूर के बाइस मर
जाए तो मैं तुझे ही उस की मौत का ज़िम्मेदार
ठहराऊँगा। 19लेकिन अगर वह तेरी तंबीह पर
अपनी बेदीनी और बुरी राह से न हटे तो यह अलग
बात है। बेशक वह मरेगा, लेकिन तू ज़िम्मेदार नहीं
ठहरेगा बल्कि अपनी जान को छुड़ाएगा।

20जब रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी को
छोड़कर बुरी राह पर आ जाएगा तो मैं तुझे उसे
आगाह करने की ज़िम्मेदारी दूँगा। अगर तू यह
करने से बाज़ रहा तो तू ही ज़िम्मेदार ठहरेगा जब
मैं उसे ठोकर खिलाकर मार डालूँगा। उस वक़्त
उसके रास्त काम याद नहीं रहेंगे बल्कि वह अपने
गुनाह के सबब से मरेगा। लेकिन तू ही उस की
मौत का ज़िम्मेदार ठहरेगा। 21लेकिन अगर तू उसे
तंबीह करे और वह अपने गुनाह से बाज़ आए तो
वह मेरी तंबीह को क़बूल करने के बाइस बचेगा,
और तू भी अपनी जान को छुड़ाएगा।”

22वहीं रब का हाथ दुबारा मुझ पर आ ठहरा।
उसने फ़रमाया, “उठ, यहाँ से निकलकर वादी के
खुले मैदान में चला जा! वहाँ मैं तुझसे हमकलाम
हूँगा।”

23मैं उठा और निकलकर वादी के खुले मैदान
में चला गया। जब पहुँचा तो क्या देखता हूँ कि
रब का जलाल वहाँ यों मौजूद है जिस तरह पहली
रोया में दरियाए-किबार के किनारे पर था। मैं मुँह

के बल गिर गया। 24तब अल्लाह के रूह ने आकर
मुझे दुबारा खड़ा किया और फ़रमाया, “अपने घर
में जाकर अपने पीछे कुंडी लगा। 25ऐ आदमज़ाद,
लोग तुझे रस्सियों में जकड़कर बंद रखेंगे ताकि
तू निकलकर दूसरों में न फिर सके। 26मैं होने
दूँगा कि तेरी ज़बान तालू से चिपक जाए और
तू ख़ामोश रहकर उन्हें डाँट न सके। क्योंकि यह
क़ौम सरकश है। 27लेकिन जब भी मैं तुझसे
हमकलाम हूँगा तो तेरे मुँह को खोलूँगा। तब तू
मेरा कलाम सुनाकर कहेगा, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़
फ़रमाता है!’ तब जो सुनने के लिए तैयार हो वह
सुने, और जो तैयार न हो वह न सुने। क्योंकि यह
क़ौम सरकश है।

यरूशलम का मुहासरा

4 ऐ आदमज़ाद, अब एक कच्ची ईंट ले और
उसे अपने सामने रखकर उस पर यरूशलम
शहर का नक़्शा कंदा कर। 2फिर यह नक़्शा
शहर का मुहासरा दिखाने के लिए इस्तेमाल कर।
बुर्ज और पुश्ते बनाकर घेरा डाल। यरूशलम
के बाहर लशकरगाह लगाकर शहर के इर्दगिर्द
क़िलाशिकन मशीनें तैयार रख। 3फिर लोहे की
प्लेट लेकर अपने और शहर के दरमियान रख।
इससे मुराद लोहे की दीवार है। शहर को घूर
घूरकर ज़ाहिर कर कि तू उसका मुहासरा कर रहा
है। इस निशान से तू दिखाएगा कि इसराईलियों
के साथ क्या कुछ होनेवाला है।

4-5इसके बाद अपने बाएँ पहलू पर लेटकर
अलामती तौर पर मुल्के-इसराईल की सज़ा पा।
जितने भी साल वह गुनाह करते आए हैं उतने ही
दिन तुझे इसी हालत में लेटे रहना है। वह 390
साल गुनाह करते रहे हैं, इसलिए तू 390 दिन
उनके गुनाहों की सज़ा पाएगा। 6इसके बाद अपने
दाएँ पहलू पर लेट जा और मुल्के-यहूदाह की
सज़ा पा। मैंने मुक़र्रर किया है कि तू 40 दिन यह
करे, क्योंकि यहूदाह 40 साल गुनाह करता रहा
है। 7घेरे हुए शहर यरूशलम को घूर घूरकर अपने
नंगे बाज़ू से उसे धमकी दे और उसके ख़िलाफ़
पेशगोई कर। 8साथ साथ मैं तुझे रस्सियों में
जकड़ लूँगा ताकि तू उतने दिन करवटें बदल न
सके जितने दिन तेरा मुहासरा किया जाएगा।

9अब कुछ गंदुम, जौ, लोबिया, मसूर, बाजरा
और यहाँ मुस्तामल घटिया क़िस्म का गंदुम जमा
करके एक ही बरतन में डाल। बाएँ पहलू पर
लेटते वक़्त यानी पूरे 390 दिन इन्हीं से रोटी
बनाकर खा। 10-11फ़ी दिन तुझे रोटी का एक
पाव खाने और पानी का पौना लिटर पीने की
इजाज़त है। यह चीज़ें एहतियात से तोलकर
मुक़र्ररा औक़ात पर खा और पी। 12रोटी को जौ
की रोटी की तरह तैयार करके खा। ईंधन के लिए
इनसान का फ़ुज़्ला इस्तेमाल कर। ध्यान दे कि
सब इसके गवाह हों।” 13रब ने फ़रमाया, “जब मैं
इसराईलियों को दीगर अक़्वाम में मुंतशिर करूँगा
तो उन्हें नापाक रोटी खानी पड़ेगी।”

14यह सुनकर मैं बोल उठा, “हाय, हाय! ऐ रब
क़ादिरे-मुतलक़, मैं कभी भी नापाक नहीं हुआ।
जवानी से लेकर आज तक मैंने कभी ऐसे जानवर
का गोश्त नहीं खाया जिसे ज़बह नहीं किया गया
था या जिसे जंगली जानवरों ने फाड़ा था। नापाक
गोश्त कभी मेरे मुँह में नहीं आया।”

15तब रब ने जवाब दिया, “ठीक है, रोटी को
बनाने के लिए तू इनसान के फ़ुज़्ले के बजाए
गोबर इस्तेमाल कर सकता है। मैं तुझे इसकी
इजाज़त देता हूँ।”

16उसने मज़ीद फ़रमाया, “ऐ आदमज़ाद, मैं
यरूशलम में रोटी का बंदोबस्त ख़त्म हो जाने
दूँगा। तब लोग अपना खाना बड़ी एहतियात से
और परेशानी में तोल तोलकर खाएँगे। वह पानी
का क़तरा क़तरा गिनकर उसे लरज़ते हुए पिएँगे।
17क्योंकि खाने और पानी की क़िल्लत होगी।
सब मिलकर तबाह हो जाएंगे, सब अपने गुनाहों
के सबब से सड़ जाएंगे।

यरूशलम के ख़िलाफ़ तलवार

5 ऐ आदमज़ाद, तेज़ तलवार लेकर अपने
सर के बाल और दाढ़ी मुँडवा। फिर तराज़ू

में बालों को तोलकर तीन हिस्सों में तक़सीम कर।
2कच्ची ईंट पर कंदा यरूशलम के नक़्शे के ज़रीए
ज़ाहिर कर कि शहर का मुहासरा ख़त्म हो गया है।
फिर बालों की एक तिहाई शहर के नक़्शे के बीच
में जला दे, एक तिहाई तलवार से मार मारकर
शहर के इर्दगिर्द ज़मीन पर गिरने दे, और एक
तिहाई हवा में उड़ाकर मुंतशिर कर। क्योंकि मैं
इसी तरह अपनी तलवार को मियान से खींचकर
लोगों के पीछे पड़ जाऊँगा। 3लेकिन बालों में से
थोड़े थोड़े बचा ले और अपनी झोली में लपेटकर
महफ़ूज़ रख। 4फिर इनमें से कुछ ले और आग
में फेंककर भस्म कर। यही आग इसराईल के पूरे
घराने में फैल जाएगी।”

5रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “यही
यरूशलम की हालत है! गो मैंने उसे दीगर
अक़वाम के दरमियान रखकर दीगर ममालिक का
मरकज़ बना दिया 6तो भी वह मेरे अहकाम और
हिदायात से सरकश हो गया है। गिर्दो-नवाह की
अक़वामो-ममालिक की निसबत उस की हरकतें
कहीं ज़्यादा बुरी हैं। क्योंकि उसके बाशिंदों ने
मेरे अहकाम को रद्द करके मेरी हिदायात के
मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने से इनकार कर दिया
है।” 7रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “तुम्हारी
हरकतें इर्दगिर्द की क़ौमों की निसबत कहीं ज़्यादा
बुरी हैं। न तुमने मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारी, न मेरे अहकाम पर अमल किया। बल्कि
तुम इतने शरारती थे कि गिर्दो-नवाह की अक़वाम
के रस्मो-रिवाज से भी बदतर ज़िंदगी गुज़ारने
लगे।” 8इसलिए रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है,
“ऐ यरूशलम, अब मैं ख़ुद तुझसे निपट लूँगा।
दीगर अक़वाम के देखते देखते मैं तेरी अदालत
करूँगा। 9तेरी घिनौनी बुतपरस्ती के सबब से मैं
तेरे साथ ऐसा सुलूक करूँगा जैसा मैंने पहले कभी
नहीं किया है और आइंदा भी कभी नहीं करूँगा।
10तब तेरे दरमियान बाप अपने बेटों को और बेटे
अपने बाप को खाएँगे। मैं तेरी अदालत यों करूँगा
कि जितने बचेंगे वह सब हवा में उड़कर चारों तरफ़
मुंतशिर हो जाएंगे।”

11रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “मेरी हयात
की क़सम, तूने अपने घिनौने बुतों और रस्मो-
रिवाज से मेरे मक़दिस की बेहुरमती की है,
इसलिए मैं तुझे मुँडवाकर तबाह कर दूँगा। न मैं
तुझ पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा। 12तेरे
बाशिंदों की एक तिहाई मोहलक बीमारियों और
काल से शहर में हलाक हो जाएगी। दूसरी तिहाई
तलवार की ज़द में आकर शहर के इर्दगिर्द मर
जाएगी। तीसरी तिहाई को मैं हवा में उड़ाकर
मुंतशिर कर दूँगा और फिर तलवार को मियान से
खींचकर उनका पीछा करूँगा। 13यों मेरा क़हर
ठंडा हो जाएगा और मैं इंतक़ाम लेकर अपना
ग़ुस्सा उतारूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं, रब
ग़ैरत में उनसे हमकलाम हुआ हूँ।

14मैं तुझे मलबे का ढेर और इर्दगिर्द की
अक़वाम की लान-तान का निशाना बना दूँगा।
हर गुज़रनेवाला तेरी हालत देखकर ‘तौबा तौबा’
कहेगा। 15जब मेरा ग़ज़ब तुझ पर टूट पड़ेगा और
मैं तेरी सख़्त अदालत और सरज़निश करूँगा तो
उस वक़्त तू पड़ोस की अक़वाम के लिए मज़ाक़
और लानत-मलामत का निशाना बन जाएगा।
तेरी हालत को देखकर उनके रोंगटे खड़े हो जाएंगे
और वह मुहतात रहने का सबक़ सीखेंगे। यह मेरा,
रब का फ़रमान है।

16ऐ यरूशलम के बाशिंदो, मैं काल के
मोहलक और तबाहकुन तीर तुम पर बरसाऊँगा
ताकि तुम हलाक हो जाओ। काल यहाँ तक
ज़ोर पकड़ेगा कि खाने का बंदोबस्त ख़त्म हो
जाएगा। 17मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ काल और वहशी
जानवर भेजूँगा ताकि तू बेऔलाद हो जाए।
मोहलक बीमारियाँ और क़त्लो-ग़ारत तेरे बीच
में से गुज़रेगी, और मैं तेरे ख़िलाफ़ तलवार
चलाऊँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।”

बुलंदियों पर मज़ारों की अदालत

6 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ
आदमज़ाद, इसराईल के पहाड़ों की तरफ़
रुख़ करके उनके ख़िलाफ़ नबुव्वत कर। 3उनसे

कह, ‘ऐ इसराईल के पहाड़ो, रब क़ादिरे-मुतलक़
का कलाम सुनो! वह पहाड़ों, पहाड़ियों, घाटियों
और वादियों के बारे में फ़रमाता है कि मैं तुम्हारे
ख़िलाफ़ तलवार चलाकर तुम्हारी ऊँची जगहों के
मंदिरों को तबाह कर दूँगा। 4जिन क़ुरबानगाहों
पर तुम अपने जानवर और बख़ूर जलाते हो वह
ढा दूँगा। मैं तेरे मक़तूलों को तेरे बुतों के सामने
ही फेंक छोड़ूँगा। 5मैं इसराईलियों की लाशों को
उनके बुतों के सामने डालकर तुम्हारी हड्डियों
को तुम्हारी क़ुरबानगाहों के इर्दगिर्द बिखेर दूँगा।
6जहाँ भी तुम आबाद हो वहाँ तुम्हारे शहर खंडरात
बन जाएंगे और ऊँची जगहों के मंदिर मिसमार हो
जाएंगे। क्योंकि लाज़िम है कि जिन क़ुरबानगाहों
पर तुम अपने जानवर और बख़ूर जलाते हो वह
ख़ाक में मिलाई जाएँ, कि तुम्हारे बुतों को पाश
पाश किया जाए, कि तुम्हारी बुतपरस्ती की चीज़ें
नेस्तो-नाबूद हो जाएँ। 7मक़तूल तुम्हारे दरमियान
गिरकर पड़े रहेंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं ही
रब हूँ।

8लेकिन मैं चंद एक को ज़िंदा छोड़ूँगा। क्योंकि
जब तुम्हें दीगर ममालिक और अक़वाम में मुंतशिर
किया जाएगा तो कुछ तलवार से बचे रहेंगे। 9जब
यह लोग क़ैदी बनकर मुख़्तलिफ़ ममालिक में
लाए जाएंगे तो उन्हें मेरा ख़याल आएगा। उन्हें
याद आएगा कि मुझे कितना ग़म खाना पड़ा जब
उनके ज़िनाकार दिल मुझसे दूर हुए और उनकी
आँखें अपने बुतों से ज़िना करती रहीं। तब वह
यह सोचकर कि हमने कितना बुरा काम किया
और कितनी मकरूह हरकतें की हैं अपने आपसे
घिन खाएँगे। 10उस वक़्त वह जान लेंगे कि मैं रब
हूँ, कि उन पर यह आफ़त लाने का एलान करते
वक़्त मैं ख़ाली बातें नहीं कर रहा था’।”

11फिर रब क़ादिरे-मुतलक़ ने मुझसे फ़रमाया,
“तालियाँ बजाकर पाँव ज़ोर से ज़मीन पर मार!
साथ साथ यह कह, ‘इसराईली क़ौम की घिनौनी
हरकतों पर अफ़सोस! वह तलवार, काल और
मोहलक बीमारियों की ज़द में आकर हलाक हो
जाएंगे। 12जो दूर है वह मोहलक वबा से मर
जाएगा, जो क़रीब है वह तलवार से क़त्ल हो
जाएगा, और जो बच जाए वह भूके मरेगा। यों
मैं अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करूँगा। 13वह
जान लेंगे कि मैं रब हूँ जब उनके मक़तूल उनके
बुतों के दरमियान, उनकी क़ुरबानगाहों के इर्दगिर्द,
हर पहाड़ और पहाड़ की चोटी पर और हर हरे
दरख़्त और बलूत के घने दरख़्त के साये में नज़र
आएँगे। जहाँ भी वह अपने बुतों को ख़ुश करने
के लिए कोशाँ रहे वहाँ उनकी लाशें पाई जाएँगी।
14मैं अपना हाथ उनके ख़िलाफ़ उठाकर मुल्क
को यहूदाह के रेगिस्तान से लेकर दिबला तक
तबाह कर दूँगा। उनकी तमाम आबादियाँ वीरानो-
सुनसान हो जाएँगी। तब वह जान लेंगे कि मैं ही
रब हूँ’।”

मुल्क का बुरा अंजाम

7 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ आ-
दमज़ाद, रब क़ादिरे-मुतलक़ मुल्के-
इसराईल से फ़रमाता है कि तेरा अंजाम क़रीब ही
है! जहाँ भी देखो, पूरा मुल्क तबाह हो जाएगा।
3अब तेरा सत्यानास होनेवाला है, मैं ख़ुद अपना
ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल करूँगा। मैं तेरे चाल-चलन
को परख परखकर तेरी अदालत करूँगा, तेरी
मकरूह हरकतों का पूरा अज्र दूँगा। 4न मैं तुझ
पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा बल्कि तुझे तेरे
चाल-चलन का मुनासिब अज्र दूँगा। क्योंकि तेरी
मकरूह हरकतों का बीज तेरे दरमियान ही उगकर
फल लाएगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब
हूँ।”

5रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “आफ़त पर
आफ़त ही आ रही है। 6तेरा अंजाम, हाँ, तेरा
अंजाम आ रहा है। अब वह उठकर तुझ पर
लपक रहा है। 7ऐ मुल्क के बाशिंदे, तेरी फ़ना
पहुँच रही है। अब वह वक़्त क़रीब ही है, वह
दिन जब तेरे पहाड़ों पर ख़ुशी के नारों के बजाए
अफ़रा-तफ़री का शोर मचेगा। 8अब मैं जल्द ही
अपना ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल करूँगा, जल्द ही
अपना ग़ुस्सा तुझ पर उतारूँगा। मैं तेरे चाल-

चलन को परख परखकर तेरी अदालत करूँगा,
तेरी घिनौनी हरकतों का पूरा अज्र दूँगा। 9न मैं
तुझ पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा बल्कि तुझे
तेरे चाल-चलन का मुनासिब अज्र दूँगा। क्योंकि
तेरी मकरूह हरकतों का बीज तेरे दरमियान ही
उगकर फल लाएगा। तब तुम जान लोगे कि मैं
यानी रब ही ज़रब लगा रहा हूँ।

10देखो, मज़कूरा दिन क़रीब ही है! तेरी
हलाकत पहुँच रही है। नाइनसाफ़ी के फूल और
शोख़ी की कोंपलें फूट निकली हैं। 11लोगों का
ज़ुल्म बढ़ बढ़कर लाठी बन गया है जो उन्हें
उनकी बेदीनी की सज़ा देगी। कुछ नहीं रहेगा,
न वह ख़ुद, न उनकी दौलत, न उनका शोर-
शराबा, और न उनकी शानो-शौकत। 12अदालत
का दिन क़रीब ही है। उस वक़्त जो कुछ ख़रीदे
वह ख़ुश न हो, और जो कुछ फ़रोख़्त करे वह
ग़म न खाए। क्योंकि अब इन चीज़ों का कोई
फ़ायदा नहीं, इलाही ग़ज़ब सब पर नाज़िल हो
रहा है। 13बेचनेवाले बच भी जाएँ तो वह अपना
कारोबार नहीं कर सकेंगे। क्योंकि सब पर इलाही
ग़ज़ब का फ़ैसला अटल है और मनसूख़ नहीं हो
सकता। लोगों के गुनाहों के बाइस एक जान भी
नहीं छूटेगी। 14बेशक लोग बिगुल बजाकर जंग
की तैयारियाँ करें, लेकिन क्या फ़ायदा? लड़ने
के लिए कोई नहीं निकलेगा, क्योंकि सबके सब
मेरे क़हर का निशाना बन जाएंगे।

15बाहर तलवार, अंदर मोहलक वबा और
भूक। क्योंकि देहात में लोग तलवार की ज़द में
आ जाएंगे, शहर में काल और मोहलक वबा से
हलाक हो जाएंगे। 16जितने भी बचेंगे वह पहाड़ों
में पनाह लेंगे, घाटियों में फ़ाख़्ताओं की तरह ग़ूँ ग़ूँ
करके अपने गुनाहों पर आहो-ज़ारी करेंगे। 17हर
हाथ से ताक़त जाती रहेगी, हर घुटना डाँवाँडोल
हो जाएगा।

18वह टाट के मातमी कपड़े ओढ़ लेंगे, उन
पर कपकपी तारी हो जाएगी। हर चेहरे पर
शरमिंदगी नज़र आएगी, हर सर मुँडवाया गया
होगा। 19अपनी चाँदी को वह गलियों में फेंक
देंगे, अपने सोने को ग़िलाज़त समझेंगे। क्योंकि
जब रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल होगा तो न
उनकी चाँदी उन्हें बचा सकेगी, न सोना। उनसे
न वह अपनी भूक मिटा सकेंगे, न अपने पेट को
भर सकेंगे, क्योंकि यही चीज़ें उनके लिए गुनाह
का बाइस बन गई थीं। 20उन्होंने अपने ख़ूबसूरत
ज़ेवरात पर फ़ख़र करके उनसे अपने घिनौने बुत
और मकरूह मुजस्समे बनाए, इसलिए मैं होने
दूँगा कि वह अपनी दौलत से घिन खाएँगे।

21मैं यह सब कुछ परदेसियों के हवाले कर
दूँगा, और वह उसे लूट लेंगे। दुनिया के बेदीन
उसे छीनकर उस की बेहुरमती करेंगे। 22मैं अपना
मुँह इसराईलियों से फेर लूँगा तो अजनबी मेरे
क़ीमती मक़ाम की बेहुरमती करेंगे। डाकू उसमें
घुसकर उसे नापाक करेंगे। 23ज़ंजीरें तैयार कर!
क्योंकि मुल्क में क़त्लो-ग़ारत आम हो गई है,
शहर ज़ुल्मो-तशद्दुद से भर गया है। 24मैं दीगर
अक़वाम के सबसे शरीर लोगों को बुलाऊँगा
ताकि इसराईलियों के घरों पर क़ब्ज़ा करें, मैं
ज़ोरावरों का तकब्बुर ख़ाक में मिला दूँगा। जो
भी मक़ाम उन्हें मुक़द्दस हो उस की बेहुरमती की
जाएगी।

25जब दहशत उन पर तारी होगी तो वह अमनो-
अमान तलाश करेंगे, लेकिन बेफ़ायदा। अमनो-
अमान कहीं भी पाया नहीं जाएगा। 26आफ़त पर
आफ़त ही उन पर आएगी, यके बाद दीगरे बुरी
ख़बरें उन तक पहुँचेंगी। वह नबी से रोया मिलने
की उम्मीद करेंगे, लेकिन बेफ़ायदा। न इमाम उन्हें
शरीअत की तालीम, न बुज़ुर्ग उन्हें मशवरा दे
सकेंगे। 27बादशाह मातम करेगा, रईस हैबतज़दा
होगा, और अवाम के हाथ थरथराएँगे। मैं उनके
चाल-चलन के मुताबिक़ उनसे निपटूँगा, उनके
अपने ही उसूलों के मुताबिक़ उनकी अदालत
करूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

रब के घर में बुतपरस्ती की रोया

8 जिलावतनी के छटे साल के छटे महीने के पाँचवें दिन[a] मैं अपने घर में बैठा था। यहूदाह के बुज़ुर्ग पास ही बैठे थे। तब रब क़ादिरे-मुतलक़ का हाथ मुझ पर आ ठहरा। 2रोया में मैंने किसी को देखा जिसकी शक्लो-सूरत इनसान की मानिंद थी। लेकिन कमर से लेकर पाँव तक वह आग की मानिंद भड़क रहा था जबकि कमर से लेकर सर तक चमकदार धात की तरह तमतमा रहा था। 3उसने कुछ आगे बढ़ा दिया जो हाथ-सा लग रहा था और मेरे बालों को पकड़ लिया। फिर रूह ने मुझे उठाया और ज़मीन और आसमान के दरमियान चलते चलते यरूशलम तक पहुँचाया। अभी तक मैं अल्लाह की रोया देख रहा था। मैं रब के घर के अंदरूनी सहन के उस दरवाज़े के पास पहुँच गया जिसका रुख़ शिमाल की तरफ़ है। दरवाज़े के क़रीब एक बुत पड़ा था जो रब को मुश्तइल करके ग़ैरत दिलाता है।

4वहाँ इसराईल के ख़ुदा का जलाल मुझ पर उसी तरह ज़ाहिर हुआ जिस तरह पहले मैदान की रोया में मुझ पर ज़ाहिर हुआ था। 5वह मुझसे हमकलाम हुआ, "ऐ आदमज़ाद, शिमाल की तरफ़ नज़र उठा।" मैंने अपनी नज़र शिमाल की तरफ़ उठाई तो दरवाज़े के बाहर क़ुरबानगाह देखी। साथ साथ दरवाज़े के क़रीब ही वह बुत खड़ा था जो रब को ग़ैरत दिलाता है। 6फिर रब बोला, "ऐ आदमज़ाद, क्या तुझे वह कुछ नज़र आता है जो इसराईली क़ौम यहाँ करती है? यह लोग यहाँ बड़ी मकरूह हरकतें कर रहे हैं ताकि मैं अपने मक़दिस से दूर हो जाऊँ। लेकिन तू इनसे भी ज़्यादा मकरूह चीज़ें देखेगा।"

7वह मुझे रब के घर के बैरूनी सहन के दरवाज़े के पास ले गया तो मैंने दीवार में सूराख़ देखा। 8अल्लाह ने फ़रमाया, "आदमज़ाद, इस सूराख़ को बड़ा बना।" मैंने ऐसा किया तो दीवार के पीछे दरवाज़ा नज़र आया। 9तब उसने फ़रमाया, "अंदर जाकर वह शरीर और घिनौनी हरकतें देख जो लोग यहाँ कर रहे हैं।"

10मैं दरवाज़े में दाख़िल हुआ तो क्या देखता हूँ कि दीवारों पर चारों तरफ़ बुतपरस्ती की तस्वीरें कंदा हुई हैं। हर क़िस्म के रेंगनेवाले और दीगर मकरूह जानवर बल्कि इसराईली क़ौम के तमाम बुत उन पर नज़र आए। 11इसराईली क़ौम के 70 बुज़ुर्ग बख़ूरदान पकड़े उनके सामने खड़े थे। बख़ूरदानों में से बख़ूर का ख़ुशबूदार धुआँ उठ रहा था। याज़नियाह बिन साफ़न भी बुज़ुर्गों में शामिल था।

12रब मुझसे हमकलाम हुआ, "ऐ आदमज़ाद, क्या तूने देखा कि इसराईली क़ौम के बुज़ुर्ग अंधेरे में क्या कुछ कर रहे हैं? हर एक ने अपने घर में अपने बुतों के लिए कमरा मख़सूस कर रखा है। क्योंकि वह समझते हैं, 'हम रब को नज़र नहीं आते, उसने हमारे मुल्क को तर्क कर दिया है।' 13लेकिन आ, मैं तुझे इससे भी ज़्यादा क़ाबिले-घिन हरकतें दिखाता हूँ।"

14वह मुझे रब के घर के अंदरूनी सहन के शिमाली दरवाज़े के पास ले गया। वहाँ औरतें बैठी थीं जो रो रोकर तम्मूज़ देवता[b] का मातम कर रही थीं। 15रब ने सवाल किया, "आदमज़ाद, क्या तुझे यह नज़र आता है? लेकिन आ, मैं तुझे इससे भी ज़्यादा क़ाबिले-घिन हरकतें दिखाता हूँ।"

16वह मुझे रब के घर के अंदरूनी सहन में ले गया। रब के घर के दरवाज़े पर यानी सामनेवाले बरामदे और क़ुरबानगाह के दरमियान ही 25 आदमी खड़े थे। उनका रुख़ रब के घर की तरफ़ नहीं बल्कि मशरिक़ की तरफ़ था, और वह सूरज को सिजदा कर रहे थे।

---

[a] 17 सितंबर।

[b] तम्मूज़ मसोपुतामिया का एक देवता था जिसके पैरोकार समझते थे कि वह मौसमे-गरमा के इख़्तिताम पर हरियाली के साथ साथ मर जाता और मौसमे-बहार में दुबारा जी उठता है।

17रब ने फ़रमाया, “ऐ आदमज़ाद, क्या तुझे यह नज़र आता है? और यह मकरूह हरकतें भी यहूदाह के बाशिंदों के लिए काफ़ी नहीं हैं बल्कि वह पूरे मुल्क को ज़ुल्मो-तशद्दुद से भरकर मुझे मुश्तइल करने के लिए कोशाँ रहते हैं। देख, अब वह अपनी नाकों के सामने अंगूर की बेल लहराकर बुतपरस्ती की एक और रस्म अदा कर रहे हैं! 18चुनाँचे मैं अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करूँगा। न मैं उन पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा। ख़ाह वह मदद के लिए कितने ज़ोर से क्यों न चीख़ें मैं उनकी नहीं सुनूँगा।”

यरूशलम तबाह हो जाएगा

9 फिर मैंने अल्लाह की बुलंद आवाज़ सुनी, “यरूशलम की अदालत क़रीब आ गई है! आओ, हर एक अपना तबाहकुन हथियार पकड़कर खड़ा हो जाए!” 2तब छः आदमी रब के घर के शिमाली दरवाज़े के रास्ते से चले आए। हर एक अपना तबाहकुन हथियार थामे चल रहा था। उनके साथ एक और आदमी था जिसका लिबास कतान का था। उसके पटके से कातिब का सामान लटका हुआ था। यह आदमी क़रीब आकर पीतल की क़ुरबानगाह के पास खड़े हो गए।

3इसराईल के ख़ुदा का जलाल अब तक करूबी फ़रिश्तों के ऊपर ठहरा हुआ था। अब वह वहाँ से उड़कर रब के घर की दहलीज़ के पास रुक गया। फिर रब कतान से मुलब्बस उस मर्द से हमकलाम हुआ जिसके पटके से कातिब का सामान लटका हुआ था। 4उसने फ़रमाया, “जा, यरूशलम शहर में से गुज़रकर हर एक के माथे पर निशान लगा दे जो बाशिंदों की तमाम मकरूह हरकतों को देखकर आहो-ज़ारी करता है।” 5मेरे सुनते सुनते रब ने दीगर आदमियों से कहा, “पहले आदमी के पीछे पीछे चलकर लोगों को मार डालो! न किसी पर तरस खाओ, न रहम करो 6बल्कि बुज़ुर्गों को कुँवारे-कुँवारियों और बाल-बच्चों समेत मौत के घाट उतारो। सिर्फ़ उन्हें छोड़ना जिनके माथे पर निशान है। मेरे मक़दिस से शुरू करो!”

चुनाँचे आदमियों ने उन बुज़ुर्गों से शुरू किया जो रब के घर के सामने खड़े थे। 7फिर रब उनसे दुबारा हमकलाम हुआ, “रब के घर के सहनों को मक़तूलों से भरकर उस की बेहुरमती करो, फिर वहाँ से निकल जाओ!” वह निकल गए और शहर में से गुज़रकर लोगों को मार डालने लगे। 8रब के घर के सहन में सिर्फ़ मुझे ही ज़िंदा छोड़ा गया था।

मैं औंधे मुँह गिरकर चीख़ उठा, “ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, क्या तू यरूशलम पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करके इसराईल के तमाम बचे हुओं को मौत के घाट उतारेगा?” 9रब ने जवाब दिया, “इसराईल और यहूदाह के लोगों का क़ुसूर निहायत ही संगीन है। मुल्क में क़त्लो-ग़ारत आम है, और शहर नाइनसाफ़ी से भर गया है। क्योंकि लोग कहते हैं, ‘रब ने मुल्क को तर्क किया है, हम उसे नज़र ही नहीं आते।’ 10इसलिए न मैं उन पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा बल्कि उनकी हरकतों की मुनासिब सज़ा उनके सरों पर लाऊँगा।”

11फिर कतान से मुलब्बस वह आदमी लौट आया जिसके पटके से कातिब का सामान लटका हुआ था। उसने इत्तला दी, “जो कुछ तूने फ़रमाया वह मैंने पूरा किया है।”

10 मैंने उस गुंबद पर नज़र डाली जो करूबी फ़रिश्तों के सरों के ऊपर फैली हुई थी। उस पर संगे-लाजवर्द[a] का तख़्त-सा नज़र आया। 2रब ने कतान से मुलब्बस मर्द से फ़रमाया, “करूबी फ़रिश्तों के नीचे लगे पहियों के बीच में जा। वहाँ से दो मुट्ठी-भर कोयले लेकर शहर पर बिखेर दे।” आदमी मेरे देखते देखते फ़रिश्तों के बीच में चला गया। 3उस वक़्त करूबी फ़रिश्ते रब के घर के जुनूब में खड़े थे, और अंदरूनी सहन बादल से भरा हुआ था।

[a]lapis lazuli

4फिर रब का जलाल जो करूबी फ़रिश्तों के
ऊपर ठहरा हुआ था वहाँ से उठकर रब के घर
की दहलीज़ पर रुक गया। पूरा मकान बादल
से भर गया बल्कि सहन भी रब के जलाल की
आबो-ताब से भर गया। 5करूबी फ़रिश्ते अपने
परों को इतने ज़ोर से फड़फड़ा रहे थे कि उसका
शोर बैरूनी सहन तक सुनाई दे रहा था। यों लग
रहा था कि क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा बोल रहा है।
6जब रब ने कतान से मुलब्बस आदमी को हुक्म
दिया कि करूबी फ़रिश्तों के पहियों के बीच में
से जलते हुए कोयले ले तो वह उनके दरमियान
चलकर एक पहिये के पास खड़ा हुआ। 7फिर
करूबी फ़रिश्तों में से एक ने अपना हाथ बढ़ाकर
बीच में जलनेवाले कोयलों में से कुछ ले लिया
और आदमी के हाथों में डाल दिया। कतान से
मुलब्बस यह आदमी कोयले लेकर चला गया।

रब अपने घर को छोड़ देता है

8मैंने देखा कि करूबी फ़रिश्तों के परों के नीचे
कुछ है जो इनसानी हाथ जैसा लग रहा है। 9हर
फ़रिश्ते के पास एक पहिया था। पुखराज[a] जैसी
किसी चीज़ से बने यह चार पहिये 10एक जैसे थे।
हर पहिये के अंदर एक और पहिया ज़ावियाए-
क़ायमा में घूम रहा था, 11इसलिए यह मुड़े बग़ैर
हर रुख़ इख़्तियार कर सकते थे। जिस तरफ़ एक
चल पड़ता उस तरफ़ बाक़ी भी मुड़े बग़ैर चलने
लगते। 12फ़रिश्तों के जिस्मों की हर जगह पर
आँखें ही आँखें थीं। आँखें न सिर्फ़ सामने नज़र
आईं बल्कि उनकी पीठ, हाथों और परों पर भी
बल्कि चारों पहियों पर भी। 13तो भी यह पहिये
ही थे, क्योंकि मैंने ख़ुद सुना कि उनके लिए यही
नाम इस्तेमाल हुआ।

14हर फ़रिश्ते के चार चेहरे थे। पहला चेहरा
करूबी का, दूसरा आदमी का, तीसरा शेरबबर
का और चौथा उक़ाब का चेहरा था। 15फिर
करूबी फ़रिश्ते उड़ गए। वही जानदार थे जिन्हें मैं
दरियाए-किबार के किनारे देख चुका था। 16जब
फ़रिश्ते हरकत में आ जाते तो पहिये भी चलने
लगते, और जब फ़रिश्ते फड़फड़ाकर उड़ने लगते
तो पहिये भी उनके साथ उड़ने लगते। 17फ़रिश्तों
के रुकने पर पहिये रुक जाते, और उनके उड़ने
पर यह भी उड़ जाते, क्योंकि जानदारों की रूह
उनमें थी।

18फिर रब का जलाल अपने घर की दहलीज़
से हट गया और दुबारा करूबी फ़रिश्तों के ऊपर
आकर ठहर गया। 19मेरे देखते देखते फ़रिश्तों
ने अपने परों को फैलाया और ज़मीन से उड़कर
पहियों समेत निकल गए। चलते चलते वह रब
के घर के मशरिक़ी दरवाज़े के पास रुक गए।
ख़ुदाए-इसराईल का जलाल उनके ऊपर ठहरा
रहा।

20वही जानदार थे जिन्हें मैंने दरियाए-किबार
के किनारे ख़ुदाए-इसराईल के नीचे देखा था। मैंने
जान लिया कि यह करूबी फ़रिश्ते हैं। 21हर एक
के चार चेहरे और चार पर थे, और परों के नीचे
कुछ नज़र आया जो इनसानी हाथों की मानिंद
था। 22उनके चेहरों की शक्लो-सूरत उन चेहरों की
मानिंद थी जो मैंने दरियाए-किबार के किनारे देखे
थे। चलते वक़्त हर जानदार सीधा अपने किसी
एक चेहरे का रुख़ इख़्तियार करता था।

अल्लाह की यरूशलम के बुज़ुर्गों के लिए सख़्त सज़ा

11 तब रूह मुझे उठाकर रब के घर के
मशरिक़ी दरवाज़े के पास ले गया।
वहाँ दरवाज़े पर 25 मर्द खड़े थे। मैंने देखा कि
क़ौम के दो बुज़ुर्ग याज़नियाह बिन अज़्ज़ूर और
फ़लतियाह बिन बिनायाह भी उनमें शामिल हैं।
2रब ने फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, यह वही मर्द हैं
जो शरीर मनसूबे बाँध रहे और यरूशलम में बुरे
मशवरे दे रहे हैं। 3यह कहते हैं, 'आनेवाले दिनों
में घर तामीर करने की ज़रूरत नहीं। हमारा शहर
तो देग है जबकि हम उसमें पकनेवाला बेहतरीन
गोश्त हैं।' 4आदमज़ाद, चूँकि वह ऐसी बातें करते

[a]topas

हैं इसलिए नबुव्वत कर! उनके ख़िलाफ़ नबुव्वत
कर!”
5तब रब का रूह मुझ पर आ ठहरा, और उसने
मुझे यह पेश करने को कहा, “रब फ़रमाता है, ‘ऐ
इसराईली क़ौम, तुम इस क़िस्म की बातें करते
हो। मैं तो उन ख़यालात से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ जो
तुम्हारे दिलों से उभरते रहते हैं। 6तुमने इस शहर में
मुतअद्दिद लोगों को क़त्ल करके उस की गलियों
को लाशों से भर दिया है।’
7चुनाँचे रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है,
‘बेशक शहर देग है, लेकिन तुम उसमें पकनेवाला
अच्छा गोश्त नहीं होगे बल्कि वही जिनको तुमने
उसके दरमियान क़त्ल किया है। तुम्हें मैं इस शहर
से निकाल दूँगा। 8जिस तलवार से तुम डरते हो,
उसी को मैं तुम पर नाज़िल करूँगा।’ यह रब
क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है। 9‘मैं तुम्हें शहर से
निकालूँगा और परदेसियों के हवाले करके तुम्हारी
अदालत करूँगा। 10तुम तलवार की ज़द में आकर
मर जाओगे। इसराईल की हुदूद पर ही मैं तुम्हारी
अदालत करूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब
हूँ। 11चुनाँचे न यरूशलम शहर तुम्हारे लिए देग
होगा, न तुम उसमें बेहतरीन गोश्त होगे बल्कि मैं
इसराईल की हुदूद ही पर तुम्हारी अदालत करूँगा।
12तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ, जिसके
अहकाम के मुताबिक़ तुमने ज़िंदगी नहीं गुज़ारी।
क्योंकि तुमने मेरे उसूलों की पैरवी नहीं की बल्कि
अपनी पड़ोसी क़ौमों के उसूलों की’।”
13मैं अभी इस पेशगोई का एलान कर रहा
था कि फ़लतियाह बिन बिनायाह फ़ौत हुआ।
यह देखकर मैं मुँह के बल गिर गया और बुलंद
आवाज़ से चीख़ उठा, “हाय, हाय! ऐ रब क़ादिरे-
मुतलक़, क्या तू इसराईल के बचे-खुचे हिस्से को
सरासर मिटाना चाहता है?”

अल्लाह इसराईल को बहाल करेगा

14रब मुझसे हमकलाम हुआ, 15“ऐ आ-
दमज़ाद, यरूशलम के बाशिंदे तेरे भाइयों, तेरे
रिश्तेदारों और बाबल में जिलावतन हुए तमाम
इसराईलियों के बारे में कह रहे हैं, ‘यह लोग रब
से कहीं दूर हो गए हैं, अब इसराईल हमारे ही
क़ब्ज़े में है।’ 16जो इस क़िस्म की बातें करते हैं
उन्हें जवाब दे, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है
कि जी हाँ, मैंने उन्हें दूर दूर भगा दिया, और अब
वह दीगर क़ौमों के दरमियान ही रहते हैं। मैंने ख़ुद
उन्हें मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर कर दिया,
ऐसे इलाक़ों में जहाँ उन्हें मक़दिस में मेरे हुज़ूर
आने का मौक़ा थोड़ा ही मिलता है। 17लेकिन रब
क़ादिरे-मुतलक़ यह भी फ़रमाता है, मैं तुम्हें दीगर
क़ौमों में से निकाल लूँगा, तुम्हें उन मुल्कों से जमा
करूँगा जहाँ मैंने तुम्हें मुंतशिर कर दिया था। तब
मैं तुम्हें मुल्के-इसराईल दुबारा अता करूँगा।
18फिर वह यहाँ आकर तमाम मकरूह बुत
और घिनौनी चीज़ें दूर करेंगे। 19उस वक़्त मैं उन्हें
एक ही दिल बख़्शकर उनमें नई रूह डालूँगा।
मैं उनका संगीन दिल निकालकर उन्हें गोश्त-
पोस्त का नरम दिल अता करूँगा। 20तब वह मेरे
अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेंगे और ध्यान
से मेरी हिदायात पर अमल करेंगे। वह मेरी क़ौम
होंगे, और मैं उनका ख़ुदा हूँगा। 21लेकिन जिन
लोगों के दिल उनके घिनौने बुतों से लिपटे रहते हैं
उनके सर पर मैं उनके ग़लत काम का मुनासिब
अज्र लाऊँगा। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान
है’।”

रब यरूशलम को छोड़ देता है

22फिर करूबी फ़रिश्तों ने अपने परों को
फैलाया, उनके पहिये हरकत में आ गए और
ख़ुदाए-इसराईल का जलाल जो उनके ऊपर था
23उठकर शहर से निकल गया। चलते चलते वह
यरूशलम के मशरिक़ में वाक़े पहाड़ पर ठहर
गया। 24अल्लाह के रूह से दी गई रोया में रूह
मुझे उठाकर मुल्के-बाबल के जिलावतनों के पास
वापस ले गया। फिर रोया ख़त्म हुई, 25और मैंने
जिलावतनों को सब कुछ सुनाया जो रब ने मुझे
दिखाया था।

नबी सामान लपेटकर जिलावतनी की पेशगोई करता है

12 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ आदमज़ाद, तू एक सरकश क़ौम के दरमियान रहता है। गो उनकी आँखें हैं तो भी कुछ नहीं देखते, गो उनके कान हैं तो भी कुछ नहीं सुनते। क्योंकि यह क़ौम हटधर्म है।

3ऐ आदमज़ाद, अब अपना सामान यों लपेट ले जिस तरह तुझे जिलावतन किया जा रहा हो। फिर दिन के वक़्त और उनके देखते देखते घर से रवाना होकर किसी और जगह चला जा। शायद उन्हें समझ आए कि उन्हें जिलावतन होना है, हालाँकि यह क़ौम सरकश है। 4दिन के वक़्त उनके देखते देखते अपना सामान घर से निकाल ले, यों जैसे तू जिलावतनी के लिए तैयारियाँ कर रहा हो। फिर शाम के वक़्त उनकी मौजूदगी में जिलावतन का-सा किरदार अदा करके रवाना हो जा। 5घर से निकलने के लिए दीवार में सूराख़ बना, फिर अपना सारा सामान उसमें से बाहर ले जा। सब इसके गवाह हों। 6उनके देखते देखते अंधेरे में अपना सामान कंधे पर रखकर वहाँ से निकल जा। लेकिन अपना मुँह ढाँप ले ताकि तू मुल्क को देख न सके। लाज़िम है कि तू यह सब कुछ करे, क्योंकि मैंने मुक़र्रर किया है कि तू इसराईली क़ौम को आगाह करने का निशान बन जाए।”

7मैंने वैसा ही किया जैसा रब ने मुझे हुक्म दिया था। मैंने अपना सामान यों लपेट लिया जैसे मुझे जिलावतन किया जा रहा हो। दिन के वक़्त मैं उसे घर से बाहर ले गया, शाम को मैंने अपने हाथों से दीवार में सूराख़ बना लिया। लोगों के देखते देखते मैं सामान को अपने कंधे पर उठाकर वहाँ से निकल आया। उतने में अंधेरा हो गया था।

8सुबह के वक़्त रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 9“ऐ आदमज़ाद, इस हटधर्म क़ौम इसराईल ने तुझसे पूछा कि तू क्या कर रहा है? 10उन्हें जवाब दे, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि इस पैग़ाम का ताल्लुक़ यरूशलम के रईस और शहर में बसनेवाले तमाम इसराईलियों से है।’ 11उन्हें बता, ‘मैं तुम्हें आगाह करने का निशान हूँ। जो कुछ मैंने किया वह तुम्हारे साथ हो जाएगा। तुम क़ैदी बनकर जिलावतन हो जाओगे। 12जो रईस तुम्हारे दरमियान है वह अंधेरे में अपना सामान कंधे पर उठाकर चला जाएगा। दीवार में सूराख़ बनाया जाएगा ताकि वह निकल सके। वह अपना मुँह ढाँप लेगा ताकि मुल्क को न देख सके। 13लेकिन मैं अपना जाल उस पर डाल दूँगा, और वह मेरे फंदे में फँस जाएगा। मैं उसे बाबल लाऊँगा जो बाबलियों के मुल्क में है, अगरचे वह उसे अपनी आँखों से नहीं देखेगा। वहीं वह वफ़ात पाएगा। 14जितने भी मुलाज़िम और दस्ते उसके इर्दगिर्द होंगे उन सबको मैं हवा में उड़ाकर चारों तरफ़ मुंतशिर कर दूँगा। अपनी तलवार को मियान से खींचकर मैं उनके पीछे पड़ा रहूँगा। 15जब मैं उन्हें दीगर अक़वाम और मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर करूँगा तो वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। 16लेकिन मैं उनमें से चंद एक को बचाकर तलवार, काल और मोहलक वबा की ज़द में नहीं आने दूँगा। क्योंकि लाज़िम है कि जिन अक़वाम में भी वह जा बसें वहाँ वह अपनी मकरूह हरकतें बयान करें। तब यह अक़वाम भी जान लेंगी कि मैं ही रब हूँ’।”

एक और निशान : हिज़क़ियेल का काँपना

17रब मुझसे हमकलाम हुआ, 18“ऐ आदमज़ाद, खाना खाते वक़्त अपनी रोटी को लरज़ते हुए खा और अपने पानी को परेशानी के मारे थरथराते हुए पी। 19साथ साथ उम्मत को बता, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मुल्के-इसराईल के शहर यरूशलम के बाशिंदे परेशानी में अपना खाना खाएँगे और दहशतज़दा हालत में अपना पानी पिएँगे, क्योंकि उनका मुल्क तबाह और हर बरकत से ख़ाली हो जाएगा। और सबब उसके बाशिंदों का ज़ुल्मो-तशद्दुद होगा। 20जिन शहरों में लोग अब तक आबाद हैं वह बरबाद हो

जाएंगे, मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाएगा। तब
तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ'।"

अल्लाह का कलाम जल्द ही पूरा हो जाएगा

21रब मुझसे हमकलाम हुआ, 22"ऐ
आदमज़ाद, यह कैसी कहावत है जो मुल्के-
इसराईल में आम हो गई है? लोग कहते हैं,
'ज्यों-ज्यों दिन गुज़रते जाते हैं त्यों-त्यों हर रोया
ग़लत साबित होती जाती है।' 23जवाब में उन्हें
बता, 'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं इस
कहावत को ख़त्म करूँगा, आइंदा यह इसराईल
में इस्तेमाल नहीं होगी।' उन्हें यह भी बता, 'वह
वक़्त क़रीब ही है जब हर रोया पूरी हो जाएगी।
24क्योंकि आइंदा इसराईली क़ौम में न फ़रेबदेह
रोया, न चापलूसी की पेशगोइयाँ पाई जाएँगी।
25क्योंकि मैं रब हूँ। जो कुछ मैं फ़रमाता हूँ वह
वुजूद में आता है। ऐ सरकश क़ौम, देर नहीं होगी
बल्कि तुम्हारे ही ऐयाम में मैं बात भी करूँगा और
उसे पूरा भी करूँगा।' यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का
फ़रमान है।"

26रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, 27"ऐ
आदमज़ाद, इसराईली क़ौम तेरे बारे में कहती
है, 'जो रोया यह आदमी देखता है वह बड़ी देर
के बाद ही पूरी होगी, उस की पेशगोइयाँ दूर के
मुस्तक़बिल के बारे में हैं।' 28लेकिन उन्हें जवाब
दे, 'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जो कुछ
भी मैं फ़रमाता हूँ उसमें मज़ीद देर नहीं होगी
बल्कि वह जल्द ही पूरा होगा।' यह रब क़ादिरे-
मुतलक़ का फ़रमान है।"

झूटे नबी हलाक हो जाएंगे

13 रब मुझसे हमकलाम हुआ,
2"ऐ आदमज़ाद, इसराईल के नाम-
निहाद नबियों के ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! जो
नबुव्वत करते वक़्त अपने दिलों से उभरनेवाली
बातें ही पेश करते हैं, उनसे कह,

'रब का फ़रमान सुनो! 3रब क़ादिरे-मुतलक़
फ़रमाता है कि उन अहमक़ नबियों पर अफ़सोस
जिन्हें अपनी ही रूह से तहरीक मिलती है और
जो हक़ीक़त में रोया नहीं देखते। 4ऐ इसराईल,
तेरे नबी खंडरात में गीदड़ों की तरह आवारा फिर
रहे हैं। 5न कोई दीवार के रख़नों में खड़ा हुआ,
न किसी ने उस की मरम्मत की ताकि इसराईली
क़ौम रब के उस दिन क़ायम रह सके जब जंग
छिड़ जाएगी। 6उनकी रोयाएँ धोका ही धोका,
उनकी पेशगोइयाँ झूट ही झूट हैं। वह कहते हैं,
"रब फ़रमाता है" गो रब ने उन्हें नहीं भेजा।
ताज्जुब की बात है कि तो भी वह तवक़्क़ो करते
हैं कि मैं उनकी पेशगोइयाँ पूरी होने दूँ! 7हक़ीक़त
में तुम्हारी रोयाएँ धोका ही धोका और तुम्हारी
पेशगोइयाँ झूट ही झूट हैं। तो भी तुम कहते
हो, "रब फ़रमाता है" हालाँकि मैंने कुछ नहीं
फ़रमाया।

8चुनाँचे रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं
तुम्हारी फ़रेबदेह बातों और झूटी रोयाओं की वजह
से तुमसे निपट लूँगा। यह रब क़ादिरे-मुतलक़
का फ़रमान है। 9मैं अपना हाथ उन नबियों के
ख़िलाफ़ बढ़ा दूँगा जो धोके की रोयाएँ देखते और
झूटी पेशगोइयाँ सुनाते हैं। न वह मेरी क़ौम की
मजलिस में शरीक होंगे, न इसराईली क़ौम की
फ़हरिस्तों में दर्ज होंगे। मुल्के-इसराईल में वह
कभी दाख़िल नहीं होंगे। तब तुम जान लोगे कि
मैं रब क़ादिरे-मुतलक़ हूँ। 10वह मेरी क़ौम को
ग़लत राह पर लाकर अमनो-अमान का एलान
करते हैं अगरचे अमनो-अमान है नहीं। जब क़ौम
अपने लिए कच्ची-सी दीवार बना लेती है तो यह
नबी उस पर सफ़ेदी फेर देते हैं। 11लेकिन ऐ
सफ़ेदी करनेवालो, ख़बरदार! यह दीवार गिर
जाएगी। मूसलाधार बारिश बरसेगी, ओले पड़ेंगे
और सख़्त आँधी उस पर टूट पड़ेगी। 12तब दीवार
गिर जाएगी, और लोग तंज़न तुमसे पूछेंगे कि अब
वह सफ़ेदी कहाँ है जो तुमने दीवार पर फेरी थी?

13रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं तैश
में आकर दीवार पर ज़बरदस्त आँधी आने दूँगा,
ग़ुस्से में उस पर मूसलाधार बारिश और मोहलक
ओले बरसा दूँगा। 14मैं उस दीवार को ढा दूँगा

जिस पर तुमने सफेदी फेरी थी, उसे ख़ाक में यों
मिला दूँगा कि उस की बुनियाद नज़र आएगी।
और जब वह गिर जाएगी तो तुम भी उस की ज़द
में आकर तबाह हो जाओगे। तब तुम जान लोगे
कि मैं ही रब हूँ। 15यों मैं दीवार और उस की
सफेदी करनेवालों पर अपना ग़ुस्सा उतारूँगा। तब
मैं तुमसे कहूँगा कि दीवार भी ख़त्म है और उस की
सफेदी करनेवाले भी, 16यानी इसराईल के वह
नबी जिन्होंने यरूशलम को ऐसी पेशगोइयाँ और
रोयाएँ सुनाईं जिनके मुताबिक़ अमनो-अमान का
दौर क़रीब ही है, हालाँकि अमनो-अमान का
इमकान ही नहीं। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का
फ़रमान है।’

17ऐ आदमज़ाद, अब अपनी क़ौम की उन
बेटियों का सामना कर जो नबुव्वत करते वक़्त
वही बातें पेश करती हैं जो उनके दिलों से उभर
आती हैं। उनके ख़िलाफ़ नबुव्वत करके 18कह,

‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि उन औरतों
पर अफ़सोस जो तमाम लोगों के लिए कलाई
से बाँधनेवाले तावीज़-सी लेती हैं, जो लोगों को
फँसाने के लिए छोटों और बड़ों के सरों के लिए
परदे बना लेती हैं। ऐ औरतो, क्या तुम वाक़ई
समझती हो कि मेरी क़ौम में से बाज़ को फाँस
सकती और बाज़ को अपने लिए ज़िंदा छोड़
सकती हो? 19मेरी क़ौम के दरमियान ही तुमने
मेरी बेहुरमती की, और यह सिर्फ़ चंद एक मुट्ठी-
भर जौ और रोटी के दो-चार टुकड़ों के लिए।
अफ़सोस, मेरी क़ौम झूट सुनना पसंद करती है।
इससे फ़ायदा उठाकर तुमने उसे झूट पेश करके
उन्हें मार डाला जिन्हें मरना नहीं था और उन्हें ज़िंदा
छोड़ा जिन्हें ज़िंदा नहीं रहना था।

20इसलिए रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
मैं तुम्हारे तावीज़ों से निपट लूँगा जिनके ज़रीए
तुम लोगों को परिंदों की तरह पकड़ लेती हो। मैं
जादूगरी की यह चीज़ें तुम्हारे बाज़ुओं से नोचकर
फाड़ डालूँगा और उन्हें रिहा करूँगा जिन्हें तुमने
परिंदों की तरह पकड़ लिया है। 21मैं तुम्हारे परदों
को फाड़कर हटा लूँगा और अपनी क़ौम को तुम्हारे
हाथों से बचा लूँगा। आइंदा वह तुम्हारा शिकार
नहीं रहेगी। तब तुम जान लोगी कि मैं ही रब हूँ।

22तुमने अपने झूट से रास्तबाज़ों को दुख
पहुँचाया, हालाँकि यह दुख मेरी तरफ़ से नहीं था।
साथ साथ तुमने बेदीनों की हौसलाअफ़्ज़ाई की
कि वह अपनी बुरी राहों से बाज़ न आएँ, हालाँकि
वह बाज़ आने से बच जाते। 23इसलिए आइंदा न
तुम फ़रेबदेह रोया देखोगी, न दूसरों की क़िस्मत
का हाल बताओगी। मैं अपनी क़ौम को तुम्हारे
हाथों से छुटकारा दूँगा। तब तुम जान लोगी कि मैं
ही रब हूँ’।”

अल्लाह बुतपरस्ती का मुनासिब जवाब देगा

14 इसराईल के कुछ बुज़ुर्ग मुझसे मिलने
आए और मेरे सामने बैठ गए। 2तब
रब मुझसे हमकलाम हुआ, 3“ऐ आदमज़ाद, इन
आदमियों के दिल अपने बुतों से लिपटे रहते हैं।
जो चीज़ें उनके लिए ठोकर और गुनाह का बाइस
हैं उन्हें उन्होंने अपने मुँह के सामने ही रखा है। तो
फिर क्या मुनासिब है कि मैं उन्हें जवाब दूँ जब वह
मुझसे दरियाफ़्त करने आते हैं? 4उन्हें बता, ‘रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, यह लोग अपने बुतों
से लिपटे रहते और वह चीज़ें अपने मुँह के सामने
रखते हैं जो ठोकर और गुनाह का बाइस हैं। साथ
साथ यह नबी के पास भी जाते हैं ताकि मुझसे
मालूमात हासिल करें। जो भी इसराईली ऐसा करे
उसे मैं ख़ुद जो रब हूँ जवाब दूँगा, ऐसा जवाब जो
उसके मुतअद्दिद बुतों के ऐन मुताबिक़ होगा। 5मैं
उनसे ऐसा सुलूक करूँगा ताकि इसराईली क़ौम
के दिल को मज़बूती से पकड़ लूँ। क्योंकि अपने
बुतों की ख़ातिर सबके सब मुझसे दूर हो गए हैं।’

6चुनाँचे इसराईली क़ौम को बता, ‘रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है कि तौबा करो! अपने बुतों
और तमाम मकरूह रस्मो-रिवाज से मुँह मोड़कर
मेरे पास वापस आ जाओ। 7उसके अंजाम पर
ध्यान दो जो ऐसा नहीं करेगा, ख़ाह वह इसराईली
या इसराईल में रहनेवाला परदेसी हो। अगर वह
मुझसे दूर होकर अपने बुतों से लिपट जाए और

वह चीज़ें अपने सामने रखे जो ठोकर और गुनाह
का बाइस हैं तो जब वह नबी की मारिफ़त मुझसे
मालूमात हासिल करने की कोशिश करेगा तो
मैं, रब उसे मुनासिब जवाब दूँगा। 8मैं ऐसे शख़्स
का सामना करके उससे यों निपट लूँगा कि वह
दूसरों के लिए इबरतअंगेज़ मिसाल बन जाएगा।
मैं उसे यों मिटा दूँगा कि मेरी क़ौम में उसका नामो-
निशान तक नहीं रहेगा। तब तुम जान लोगे कि मैं
ही रब हूँ।

9अगर किसी नबी को कुछ सुनाने पर उकसाया
गया जो मेरी तरफ़ से नहीं था तो यह इसलिए
हुआ कि मैं, रब ने ख़ुद उसे उकसाया। ऐसे नबी
के ख़िलाफ़ मैं अपना हाथ उठाकर उसे यों तबाह
करूँगा कि मेरी क़ौम में उसका नामो-निशान
तक नहीं रहेगा। 10दोनों को उनके क़ुसूर की
मुनासिब सज़ा मिलेगी, नबी को भी और उसे भी
जो हिदायत पाने के लिए उसके पास आता है।
11तब इसराईली क़ौम न मुझसे दूर होकर आवारा
फिरेगी, न अपने आपको इन तमाम गुनाहों से
आलूदा करेगी। वह मेरी क़ौम होंगे, और मैं उनका
ख़ुदा हूँगा। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान
है'।"

सिर्फ़ रास्तबाज़ ही बचे रहेंगे

12रब मुझसे हमकलाम हुआ, 13"ऐ
आदमज़ाद, फ़र्ज़ कर कि कोई मुल्क बेवफ़ा
होकर मेरा गुनाह करे, और मैं काल के ज़रीए उसे
सज़ा देकर उसमें से इनसानो-हैवान मिटा डालूँ।
14ख़ाह मुल्क में नूह, दानियाल और अय्यूब क्यों
न बसते तो भी मुल्क न बचता। यह आदमी
अपनी रास्तबाज़ी से सिर्फ़ अपनी ही जानों को
बचा सकते। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान
है।

15या फ़र्ज़ कर कि मैं मज़कूरा मुल्क में वहशी
दरिंदों को भेज दूँ जो इधर-उधर फिरकर सबको
फाड़ खाएँ। मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाए और
जंगली दरिंदों की वजह से कोई उसमें से गुज़रने
की जुर्रत न करे। 16मेरी हयात की क़सम, ख़ाह
मज़कूरा तीन रास्तबाज़ आदमी मुल्क में क्यों न
बसते तो भी अकेले ही बचते। वह अपने बेटे-
बेटियों को भी बचा न सकते बल्कि पूरा मुल्क
वीरानो-सुनसान होता। यह रब क़ादिरे-मुतलक़
का फ़रमान है।

17या फ़र्ज़ कर कि मैं मज़कूरा मुल्क को जंग
से तबाह करूँ, मैं तलवार को हुक्म दूँ कि मुल्क
में से गुज़रकर इनसानो-हैवान को नेस्तो-नाबूद
कर दे। 18मेरी हयात की क़सम, ख़ाह मज़कूरा
तीन रास्तबाज़ आदमी मुल्क में क्यों न बसते
वह अकेले ही बचते। वह अपने बेटे-बेटियों को
भी बचा न सकते। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का
फ़रमान है।

19या फ़र्ज़ कर कि मैं अपना ग़ुस्सा मुल्क
पर उतारकर उसमें मोहलक वबा यों फैला दूँ
कि इनसानो-हैवान सबके सब मर जाएँ। 20मेरी
हयात की क़सम, ख़ाह नूह, दानियाल और
अय्यूब मुल्क में क्यों न बसते तो भी वह
अपने बेटे-बेटियों को बचा न सकते। वह अपनी
रास्तबाज़ी से सिर्फ़ अपनी ही जानों को बचाते।
यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

21अब यरूशलम के बारे में रब क़ादिरे-मुतलक़
का फ़रमान सुनो! यरूशलम का कितना बुरा
हाल होगा जब मैं अपनी चार सख़्त सज़ाएँ उस
पर नाज़िल करूँगा। क्योंकि इनसानो-हैवान जंग,
काल, वहशी दरिंदों और मोहलक वबा की ज़द
में आकर हलाक हो जाएंगे। 22तो भी चंद एक
बचेंगे, कुछ बेटे-बेटियाँ जिलावतन होकर बाबल
में तुम्हारे पास आएँगे। जब तुम उनका बुरा चाल-
चलन और हरकतें देखोगे तो तुम्हें तसल्ली मिलेगी
कि हर आफ़त मुनासिब थी जो मैं यरूशलम पर
लाया। 23उनका चाल-चलन और हरकतें देखकर
तुम्हें तसल्ली मिलेगी, क्योंकि तुम जान लोगे कि
जो कुछ भी मैंने यरूशलम के साथ किया वह
बिलावजह नहीं था। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का
फ़रमान है।"

यरूशलम अंगूर की बेल की बेकार लकड़ी है

15 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ
आदमज़ाद, अंगूर की बेल की लकड़ी
किस लिहाज़ से जंगल की दीगर लकड़ियों से
बेहतर है? 3क्या यह किसी काम आ जाती है?
क्या यह कम अज़ कम खूँटियाँ बनाने के लिए
इस्तेमाल हो सकती है जिनसे चीज़ें लटकाई जा
सकें? हरगिज़ नहीं! 4उसे ईंधन के तौर पर आग
में फेंका जाता है। इसके बाद जब उसके दोनों
सिरे भस्म हुए हैं और बीच में भी आग लग गई
है तो क्या वह किसी काम आ जाती है? 5आग
लगने से पहले भी बेकार थी, तो अब वह किस
काम आएगी जब उसके दोनों सिरे भस्म हुए हैं
बल्कि बीच में भी आग लग गई है?

6रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि यरूशलम
के बाशिंदे अंगूर की बेल की लकड़ी जैसे हैं जिन्हें
मैं जंगल के दरख़्तों के दरमियान से निकालकर
आग में फेंक देता हूँ। 7क्योंकि मैं उनके ख़िलाफ़
उठ खड़ा हूँगा। गो वह आग से बच निकले हैं तो
भी आख़िरकार आग ही उन्हें भस्म करेगी। जब मैं
उनके ख़िलाफ़ उठ खड़ा हूँगा तो तुम जान लोगे
कि मैं ही रब हूँ। 8पूरे मुल्क को मैं वीरानो-सुनसान
कर दूँगा, इसलिए कि वह बेवफ़ा साबित हुए हैं।
यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।”

यरूशलम बेवफ़ा औरत है

16 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ
आदमज़ाद, यरूशलम के ज़हन में
उस की मकरूह हरकतों की संजीदगी बिठाकर
3एलान कर कि रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है,
‘ऐ यरूशलम बेटी, तेरी नसल मुल्के-कनान की
है, और वहीं तू पैदा हुई। तेरा बाप अमोरी, तेरी
माँ हित्ती थी। 4पैदा होते वक़्त नाफ़ के साथ लगी
नाल को काटकर दूर नहीं किया गया। न तुझे
पानी से नहलाया गया, न तेरे जिस्म पर नमक
मला गया, और न तुझे कपड़ों में लपेटा गया। 5न
किसी को इतना तरस आया, न किसी ने तुझ पर
इतना रहम किया कि इन कामों में से एक भी
करता। इसके बजाए तुझे खुले मैदान में फेंककर
छोड़ दिया गया। क्योंकि जब तू पैदा हुई तो सब
तुझे हक़ीर जानते थे।

6तब मैं वहाँ से गुज़रा। उस वक़्त तू अपने
ख़ून में तड़प रही थी। तुझे इस हालत में देखकर
मैं बोला, “जीती रह!” हाँ, तू अपने ख़ून में
तड़प रही थी जब मैं बोला, “जीती रह! 7खेत
में हरियाली की तरह फलती-फूलती जा!” तब
तू फलती-फूलती हुई परवान चढ़ी। तू निहायत
ख़ूबसूरत बन गई। छातियाँ और बाल देखने में
प्यारे लगे। लेकिन अभी तक तू नंगी और बरहना
थी।

8मैं दुबारा तेरे पास से गुज़रा तो देखा कि तू
शादी के क़ाबिल हो गई है। मैंने अपने लिबास का
दामन तुझ पर बिछाकर तेरी बरहनगी को ढाँप
दिया। मैंने क़सम खाकर तेरे साथ अहद बाँधा
और यों तेरा मालिक बन गया। यह रब क़ादिरे-
मुतलक़ का फ़रमान है।

9मैंने तुझे नहलाकर ख़ून से साफ़ किया,
फिर तेरे जिस्म पर तेल मला। 10मैंने तुझे
शानदार लिबास और चमड़े के नफ़ीस जूते
पहनाए, तुझे बारीक कतान और क़ीमती कपड़े
से मुलब्बस किया। 11फिर मैंने तुझे ख़ूबसूरत
ज़ेवरात, चूड़ियों, हार, 12नथ, बालियों और
शानदार ताज से सजाया। 13यों तू सोने-चाँदी से
आरास्ता और बारीक कतान, रेशम और शानदार
कपड़े से मुलब्बस हुई। तेरी ख़ुराक बेहतरीन मैदे,
शहद और ज़ैतून के तेल पर मुश्तमिल थी। तू
निहायत ही ख़ूबसूरत हुई, और होते होते मलिका
बन गई।’ 14रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘तेरे
हुस्न की शोहरत दीगर अक़वाम में फैल गई,
क्योंकि मैंने तुझे अपनी शानो-शौकत में यों शरीक
किया था कि तेरा हुस्न कामिल था।

15लेकिन तूने क्या किया? तूने अपने हुस्न पर
भरोसा रखा। अपनी शोहरत से फ़ायदा उठाकर
तू ज़िनाकार बन गई। हर गुज़रनेवाले को तूने
अपने आपको पेश किया, हर एक को तेरा हुस्न
हासिल हुआ। 16तूने अपने कुछ शानदार कपड़े

लेकर अपने लिए रंगदार बिस्तर बनाया और उसे
ऊँची जगहों पर बिछाकर ज़िना करने लगी। ऐसा
न माज़ी में कभी हुआ, न आइंदा कभी होगा।
17तूने वही नफ़ीस ज़ेवरात लिए जो मैंने तुझे
दिए थे और मेरी ही सोने-चाँदी से अपने लिए
मर्दों के बुत ढालकर उनसे ज़िना करने लगी।
18उन्हें अपने शानदार कपड़े पहनाकर तूने मेरा ही
तेल और बख़ूर उन्हें पेश किया।’ 19रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है, ‘जो ख़ुराक यानी बेहतरीन
मैदा, ज़ैतून का तेल और शहद मैंने तुझे दिया था
उसे तूने उन्हें पेश किया ताकि उस की ख़ुशबू उन्हें
पसंद आए।

20जिन बेटे-बेटियों को तूने मेरे हाँ जन्म दिया
था उन्हें तूने क़ुरबान करके बुतों को खिलाया।
क्या तू अपनी ज़िनाकारी पर इकतिफ़ा न कर
सकी? 21क्या ज़रूरत थी कि मेरे बच्चों को भी
क़त्ल करके बुतों के लिए जला दे? 22ताज्जुब
है कि जब भी तू ऐसी मकरूह हरकतें और ज़िना
करती थी तो तुझे एक बार भी जवानी का ख़याल
न आया, यानी वह वक़्त जब तू नंगी और बरहना
हालत में अपने ख़ून में तड़पती रही।’

23रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘अफ़-
सोस, तुझ पर अफ़सोस! अपनी बाक़ी तमाम
शरारतों के अलावा 24तूने हर चौक में बुतों के
लिए क़ुरबानगाह तामीर करके हर एक के साथ
ज़िना करने की जगह भी बनाई। 25हर गली के
कोने में तूने ज़िना करने का कमरा बनाया। अपने
हुस्न की बेहुरमती करके तू अपनी इसमतफ़रोशी
ज़ोरों पर लाई। हर गुज़रनेवाले को तूने अपना
बदन पेश किया। 26पहले तू अपने शहवतपरस्त
पड़ोसी मिसर के साथ ज़िना करने लगी। जब
तूने अपनी इसमतफ़रोशी को ज़ोरों पर लाकर
मुझे मुश्तइल किया 27तो मैंने अपना हाथ तेरे
ख़िलाफ़ बढ़ाकर तेरे इलाक़े को छोटा कर दिया।
मैंने तुझे फ़िलिस्ती बेटियों के लालच के हवाले
कर दिया, उनके हवाले जो तुझसे नफ़रत करती
हैं और जिनको तेरे ज़िनाकाराना चाल-चलन पर
शर्म आती है।

28अब तक तेरी शहवत को तसकीन नहीं
मिली थी, इसलिए तू असूरियों से ज़िना करने
लगी। लेकिन यह भी तेरे लिए काफ़ी न था।
29अपनी ज़िनाकारी में इज़ाफ़ा करके तू सौदागरों
के मुल्क बाबल के पीछे पड़ गई। लेकिन यह
भी तेरी शहवत के लिए काफ़ी नहीं था।’ 30रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘ऐसी हरकतें करके
तू कितनी सरगरम हुई! साफ़ ज़ाहिर हुआ कि
तू ज़बरदस्त कसबी है। 31जब तूने हर चौक में
बुतों की क़ुरबानगाह बनाई और हर गली के कोने
में ज़िना करने का कमरा तामीर किया तो तू
आम कसबी से मुख़्तलिफ़ थी। क्योंकि तूने अपने
गाहकों से पैसे लेने से इनकार किया। 32हाय, तू
कैसी बदकार बीवी है! अपने शौहर पर तू दीगर
मर्दों को तरजीह देती है। 33हर कसबी को फ़ीस
मिलती है, लेकिन तू तो अपने तमाम आशिक़ों
को तोहफ़े देती है ताकि वह हर जगह से आकर
तेरे साथ ज़िना करें। 34इसमें तू दीगर कसबियों
से फ़रक़ है। क्योंकि न गाहक तेरे पीछे भागते,
न वह तेरी मुहब्बत का मुआवज़ा देते हैं बल्कि
तू ख़ुद उनके पीछे भागती और उन्हें अपने साथ
ज़िना करने का मुआवज़ा देती है।’

35ऐ कसबी, अब रब का फ़रमान सुन ले!
36रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘तूने अपने
आशिक़ों को अपनी बरहनगी दिखाकर अपनी
इसमतफ़रोशी की, तूने मकरूह बुत बनाकर
उनकी पूजा की, तूने उन्हें अपने बच्चों का
ख़ून क़ुरबान किया है। 37इसलिए मैं तेरे तमाम
आशिक़ों को इकट्ठा करूँगा, उन सबको जिन्हें तू
पसंद आई, उन्हें भी जो तुझे प्यारे थे और उन्हें
भी जिनसे तूने नफ़रत की। मैं उन्हें चारों तरफ़
से जमा करके तेरे ख़िलाफ़ भेजूँगा। तब मैं उनके
सामने ही तेरे तमाम कपड़े उतारूँगा ताकि वह तेरी
पूरी बरहनगी देखें। 38मैं तेरी अदालत करके तेरी
ज़िनाकारी और क़ातिलाना हरकतों का फ़ैसला
करूँगा। मेरा ग़ुस्सा और मेरी ग़ैरत तुझे ख़ूनरेज़ी
की सज़ा देगी।

39मैं तुझे तेरे आशिक़ों के हवाले करूँगा, और
वह तेरे बुतों की क़ुरबानगाहें उन कमरों समेत
ढा देंगे जहाँ तू ज़िनाकारी करती रही है। वह तेरे
कपड़े और शानदार ज़ेवरात उतारकर तुझे उरियाँ
और बरहना छोड़ देंगे। 40वह तेरे ख़िलाफ़ जुलूस
निकालेंगे और तुझे संगसार करके तलवार से
टुकड़े टुकड़े कर देंगे। 41तेरे घरों को जलाकर वह
मुतअद्दिद औरतों के देखते देखते तुझे सज़ा देंगे।
यों मैं तेरी ज़िनाकारी को रोक दूँगा, और आइंदा
तू अपने आशिक़ों को ज़िना करने के पैसे नहीं दे
सकेगी।

42तब मेरा ग़ुस्सा ठंडा हो जाएगा, और तू मेरी
ग़ैरत का निशाना नहीं रहेगी। मेरी नाराज़ी ख़त्म
हो जाएगी, और मुझे दुबारा तसकीन मिलेगी।’
43रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘मैं तेरे सर पर
तेरी हरकतों का पूरा नतीजा लाऊँगा, क्योंकि तुझे
जवानी में मेरी मदद की याद न रही बल्कि तू मुझे
इन तमाम बातों से तैश दिलाती रही। बाक़ी तमाम
घिनौनी हरकतें तेरे लिए काफ़ी नहीं थीं बल्कि तू
ज़िना भी करने लगी।

44तब लोग यह कहावत कहकर तेरा मज़ाक़
उड़ाएँगे, “जैसी माँ, वैसी बेटी!” 45तू वाक़ई
अपनी माँ की मानिंद है, जो अपने शौहर और
बच्चों से सख़्त नफ़रत करती थी। तू अपनी बहनों
की मानिंद भी है, क्योंकि वह भी अपने शौहरों
और बच्चों से सख़्त नफ़रत करती थीं। तेरी माँ
हित्ती और तेरा बाप अमोरी था। 46तेरी बड़ी
बहन सामरिया थी जो अपनी बेटियों के साथ
तेरे शिमाल में आबाद थी। और तेरी छोटी बहन
सदूम थी जो अपनी बेटियों के साथ तेरे जुनूब में
रहती थी। 47तू न सिर्फ़ उनके ग़लत नमूने पर
चल पड़ी और उनकी-सी मकरूह हरकतें करने
लगी बल्कि उनसे कहीं ज़्यादा बुरा काम करने
लगी।’ 48रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘मेरी
हयात की क़सम, तेरी बहन सदूम और उस की
बेटियों से कभी इतना ग़लत काम सरज़द न हुआ
जितना कि तुझसे और तेरी बेटियों से हुआ है।
49तेरी बहन सदूम का क्या क़ुसूर था? वह अपनी
बेटियों समेत मुतकब्बिर थी। गो उन्हें ख़ुराक की
कसरत और आरामो-सुकून हासिल था तो भी वह
मुसीबतज़दों और ग़रीबों का सहारा नहीं बनती
थीं। 50वह मग़रूर थीं और मेरी मौजूदगी में ही
घिनौना काम करती थीं। इसी वजह से मैंने उन्हें
हटा दिया। तू ख़ुद इसकी गवाह है। 51सामरिया
पर भी ग़ौर कर। जितने गुनाह तुझसे सरज़द हुए
उनका आधा हिस्सा भी उससे न हुआ। अपनी
बहनों की निसबत तूने कहीं ज़्यादा घिनौनी हरकतें
की हैं। तेरे मुक़ाबले में तेरी बहनें फ़रिश्ते हैं।
52चुनाँचे अब अपनी ख़जालत को बरदाश्त कर।
क्योंकि अपने गुनाहों से तू अपनी बहनों की
जगह खड़ी हो गई है। तूने उनसे कहीं ज़्यादा
क़ाबिले-घिन काम किए हैं, और अब वह तेरे
मुक़ाबले में मासूम बच्चे लगती हैं। शर्म खा खाकर
अपनी रुसवाई को बरदाश्त कर, क्योंकि तुझसे
ऐसे संगीन गुनाह सरज़द हुए हैं कि तेरी बहनें
रास्तबाज़ ही लगती हैं।

तो भी रब वफ़ादार रहेगा

53लेकिन एक दिन आएगा जब मैं सदूम,
सामरिया, तुझे और तुम सबकी बेटियों को
बहाल करूँगा। 54तब तू अपनी रुसवाई बरदाश्त
कर सकेगी और अपने सारे ग़लत काम पर
शर्म खाएगी। सदूम और सामरिया यह देखकर
तसल्ली पाएँगी। 55हाँ, तेरी बहनें सदूम और
सामरिया अपनी बेटियों समेत दुबारा क़ायम हो
जाएँगी। तू भी अपनी बेटियों समेत दुबारा क़ायम
हो जाएगी।

56पहले तू इतनी मग़रूर थी कि अपनी बहन
सदूम का ज़िक्र तक नहीं करती थी। 57लेकिन
फिर तेरी अपनी बुराई पर रौशनी डाली गई, और
अब तेरी तमाम पड़ोसनें तेरा ही मज़ाक़ उड़ाती हैं,
ख़ाह अदोमी हों, ख़ाह फ़िलिस्ती। सब तुझे हक़ीर
जानती हैं। 58चुनाँचे अब तुझे अपनी ज़िनाकारी
और मकरूह हरकतों का नतीजा भुगतना पड़ेगा।
यह रब का फ़रमान है।’

59रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘मैं तुझे मुनासिब सज़ा दूँगा, क्योंकि तूने मेरा वह अहद तोड़कर उस क़सम को हक़ीर जाना है जो मैंने तेरे साथ अहद बाँधते वक़्त खाई थी। 60तो भी मैं वह अहद याद करूँगा जो मैंने तेरी जवानी में तेरे साथ बाँधा था। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं तेरे साथ अबदी अहद क़ायम करूँगा। 61तब तुझे वह ग़लत काम याद आएगा जो पहले तुझसे सरज़द हुआ था, और तुझे शर्म आएगी जब मैं तेरी बड़ी और छोटी बहनों को लेकर तेरे हवाले करूँगा ताकि वह तेरी बेटियाँ बन जाएँ। लेकिन यह सब कुछ इस वजह से नहीं होगा कि तू अहद के मुताबिक़ चलती रही है। 62मैं ख़ुद तेरे साथ अपना अहद क़ायम करूँगा, और तू जान लेगी कि मैं ही रब हूँ।’ 63रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘जब मैं तेरे तमाम गुनाहों को मुआफ़ करूँगा तब तुझे उनका ख़याल आकर शरमिंदगी महसूस होगी, और तू शर्म के मारे गुमसुम रहेगी’।”

अंगूर की बेल और उक़ाब की तमसील

17 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ आदमज़ाद, इसराईली क़ौम को पहेली पेश कर, तमसील सुना दे। 3उन्हें बता, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि एक बड़ा उक़ाब उड़कर मुल्के-लुबनान में आया। उसके बड़े बड़े पर और लंबे लंबे पंख थे, उसके घने और रंगीन बालो-पर चमक रहे थे। लुबनान में उसने एक देवदार के दरख़्त की चोटी पकड़ ली 4और उस की सबसे ऊँची शाख़ को तोड़कर ताजिरों के मुल्क में ले गया। वहाँ उसने उसे सौदागरों के शहर में लगा दिया। 5फिर उक़ाब इसराईल में आया और वहाँ से कुछ बीज लेकर एक बड़े दरिया के किनारे पर ज़रख़ेज़ ज़मीन में बो दिया। 6तब अंगूर की बेल फूट निकली जो ज़्यादा ऊँची न हुई बल्कि चारों तरफ़ फैलती गई। शाख़ों का रुख़ उक़ाब की तरफ़ रहा जबकि उस की जड़ें ज़मीन में धँसती गईं। चुनाँचे अच्छी बेल बन गई जो फूटती फूटती नई शाख़ें निकालती गई।

7लेकिन फिर एक और बड़ा उक़ाब आया। उसके भी बड़े बड़े पर और घने घने बालो-पर थे। अब मैं क्या देखता हूँ, बेल दूसरे उक़ाब की तरफ़ रुख़ करने लगती है। उस की जड़ें और शाख़ें उस खेत में न रहीं जिसमें उसे लगाया गया था बल्कि वह दूसरे उक़ाब से पानी मिलने की उम्मीद रखकर उसी की तरफ़ फैलने लगी। 8ताज्जुब यह था कि उसे अच्छी ज़मीन में लगाया गया था, जहाँ उसे कसरत का पानी हासिल था। वहाँ वह ख़ूब फैलकर फल ला सकती थी, वहाँ वह ज़बरदस्त बेल बन सकती थी।’

9अब रब क़ादिरे-मुतलक़ पूछता है, ‘क्या बेल की नशो-नुमा जारी रहेगी? हरगिज़ नहीं! क्या उसे जड़ से उखाड़कर फेंका नहीं जाएगा? ज़रूर! क्या उसका फल छीन नहीं लिया जाएगा? बेशक बल्कि आख़िरकार उस की ताज़ा ताज़ा कोंपलें भी सबकी सब मुरझाकर ख़त्म हो जाएँगी। तब उसे जड़ से उखाड़ने के लिए न ज़्यादा लोगों, न ताक़त की ज़रूरत होगी। 10गो उसे लगाया गया है तो भी बेल की नशो-नुमा जारी नहीं रहेगी। ज्योंही मशरिक़ी लू उस पर चलेगी वह मुकम्मल तौर पर मुरझा जाएगी। जिस खेत में उसे लगाया गया वहीं वह ख़त्म हो जाएगी’।”

11रब मुझसे मज़ीद हमकलाम हुआ, 12“इस सरकश क़ौम से पूछ, ‘क्या तुझे इस तमसील की समझ नहीं आई?’ तब उन्हें इसका मतलब समझा दे। ‘बाबल के बादशाह ने यरूशलम पर हमला किया। वह उसके बादशाह और अफ़सरों को गिरिफ़्तार करके अपने मुल्क में ले गया। 13उसने यहूदाह के शाही ख़ानदान में से एक को चुन लिया और उसके साथ अहद बाँधकर उसे तख़्त पर बिठा दिया। नए बादशाह ने बाबल से वफ़ादार रहने की क़सम खाई। बाबल के बादशाह ने यहूदाह के राहनुमाओं को भी जिलावतन कर दिया 14ताकि मुल्के-यहूदाह और उसका नया बादशाह कमज़ोर रहकर सरकश होने के क़ाबिल न बनें बल्कि उसके साथ अहद क़ायम रखकर ख़ुद क़ायम रहें। 15तो भी यहूदाह का बादशाह

बाग़ी हो गया और अपने क़ासिद मिसर भेजे
ताकि वहाँ से घोड़े और फ़ौजी मँगवाएँ। क्या
उसे कामयाबी हासिल होगी? क्या जिसने ऐसी
हरकतें की हैं बच निकलेगा? हरगिज़ नहीं! क्या
जिसने अहद तोड़ लिया है वह बचेगा? हरगिज़
नहीं!

16रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी
हयात की क़सम, उस शख़्स ने क़सम के तहत
शाहे-बाबल से अहद बाँधा है, लेकिन अब उसने
यह क़सम हक़ीर जानकर अहद को तोड़ डाला
है। इसलिए वह बाबल में वफ़ात पाएगा, उस
बादशाह के मुल्क में जिसने उसे तख़्त पर बिठाया
था। 17जब बाबल की फ़ौज यरूशलम के इर्दगिर्द
पुश्ते और बुर्ज बनाकर उसका मुहासरा करेगी
ताकि बहुतों को मार डाले तो फ़िरौन अपनी बड़ी
फ़ौज और मुतअद्दिद फ़ौजियों को लेकर उस की
मदद करने नहीं आएगा। 18क्योंकि यहूदाह के
बादशाह ने अहद को तोड़कर वह क़सम हक़ीर
जानी है जिसके तहत यह बाँधा गया। गो उसने
शाहे-बाबल से हाथ मिलाकर अहद की तसदीक़
की थी तो भी बेवफ़ा हो गया, इसलिए वह नहीं
बचेगा। 19रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी
हयात की क़सम, उसने मेरे ही अहद को तोड़
डाला, मेरी ही क़सम को हक़ीर जाना है। इसलिए
मैं अहद तोड़ने के तमाम नतायज उसके सर पर
लाऊँगा। 20मैं उस पर अपना जाल डाल दूँगा, उसे
अपने फंदे में पकड़ लूँगा। चूँकि वह मुझसे बेवफ़ा
हो गया है इसलिए मैं उसे बाबल ले जाकर उस की
अदालत करूँगा। 21उसके बेहतरीन फ़ौजी सब
मर जाएंगे, और जितने बच जाएंगे वह चारों तरफ़
मुंतशिर हो जाएंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं, रब
ने यह सब कुछ फ़रमाया है।

22रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि अब मैं
ख़ुद देवदार के दरख़्त की चोटी से नरमो-नाज़ुक
कोंपल तोड़कर उसे एक बुलंदो-बाला पहाड़ पर
लगा दूँगा। 23और जब मैं उसे इसराईल की
बुलंदियों पर लगा दूँगा तो उस की शाख़ें फूट
निकलेंगी, और वह फल लाकर शानदार दरख़्त
बनेगा। हर क़िस्म के परिंदे उसमें बसेरा करेंगे,
सब उस की शाख़ों के साये में पनाह लेंगे। 24तब
मुल्क के तमाम दरख़्त जान लेंगे कि मैं रब हूँ। मैं
ही ऊँचे दरख़्त को ख़ाक में मिला देता, और मैं ही
छोटे दरख़्त को बड़ा बना देता हूँ। मैं ही सायादार
दरख़्त को सूखने देता और मैं ही सूखे दरख़्त को
फलने-फूलने देता हूँ। यह मेरा, रब का फ़रमान
है, और मैं यह करूँगा भी'।"

हर एक को सिर्फ़ अपने ही आमाल की सज़ा मिलेगी

18 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2"तुम
लोग मुल्के-इसराईल के लिए यह
कहावत क्यों इस्तेमाल करते हो, 'वालिदैन ने खट्टे
अंगूर खाए, लेकिन उनके बच्चों ही के दाँत खट्टे
हो गए हैं।' 3रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
मेरी हयात की क़सम, आइंदा तुम यह कहावत
इसराईल में इस्तेमाल नहीं करोगे! 4हर इनसान
की जान मेरी ही है, ख़ाह बाप की हो या बेटे की।
जिसने गुनाह किया है सिर्फ़ उसी को सज़ाए-मौत
मिलेगी।

5लेकिन उस रास्तबाज़ का मामला फ़रक़ है
जो रास्ती और इनसाफ़ की राह पर चलते हुए
6न ऊँची जगहों की नाजायज़ क़ुरबानियाँ खाता,
न इसराईली क़ौम के बुतों की पूजा करता है। न
वह अपने पड़ोसी की बीवी की बेहुरमती करता,
न माहवारी के दौरान किसी औरत से हमबिसतर
होता है। 7वह किसी पर ज़ुल्म नहीं करता। अगर
कोई ज़मानत देकर उससे क़र्ज़ा ले तो पैसे वापस
मिलने पर वह ज़मानत वापस कर देता है। वह
चोरी नहीं करता बल्कि भूकों को खाना खिलाता
और नंगों को कपड़े पहनाता है। 8वह किसी से
भी सूद नहीं लेता। वह ग़लत काम करने से गुरेज़
करता और झगड़नेवालों का मुंसिफ़ाना फ़ैसला
करता है। 9वह मेरे क़वायद के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारता और वफ़ादारी से मेरे अहकाम पर अमल
करता है। ऐसा शख़्स रास्तबाज़ है, और वह

यक़ीनन ज़िंदा रहेगा। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का
फ़रमान है।

10अब फ़र्ज़ करो कि उसका एक ज़ालिम बेटा
है जो क़ातिल है और वह कुछ करता है 11जिससे
उसका बाप गुरेज़ करता था। वह ऊँची जगहों
की नाजायज़ क़ुरबानियाँ खाता, अपने पड़ोसी
की बीवी की बेहुरमती करता, 12ग़रीबों और
ज़रूरतमंदों पर ज़ुल्म करता और चोरी करता है।
जब क़र्ज़दार क़र्ज़ा अदा करे तो वह उसे ज़मानत
वापस नहीं देता। वह बुतों की पूजा बल्कि कई
क़िस्म की मकरूह हरकतें करता है। 13वह सूद भी
लेता है। क्या ऐसा आदमी ज़िंदा रहेगा? हरगिज़
नहीं! इन तमाम मकरूह हरकतों की बिना पर उसे
सज़ाए-मौत दी जाएगी। वह ख़ुद अपने गुनाहों का
ज़िम्मेदार ठहरेगा।

14लेकिन फ़र्ज़ करो कि इस बेटे के हाँ बेटा पैदा
हो जाए। गो बेटा सब कुछ देखता है जो उसके
बाप से सरज़द होता है तो भी वह बाप के ग़लत
नमूने पर नहीं चलता। 15न वह ऊँची जगहों की
नाजायज़ क़ुरबानियाँ खाता, न इसराईली क़ौम
के बुतों की पूजा करता है। वह अपने पड़ोसी
की बीवी की बेहुरमती नहीं करता 16और किसी
पर भी ज़ुल्म नहीं करता। अगर कोई ज़मानत
देकर उससे क़र्ज़ा ले तो पैसे वापस मिलने पर
वह ज़मानत लौटा देता है। वह चोरी नहीं करता
बल्कि भूकों को खाना खिलाता और नंगों को
कपड़े पहनाता है। 17वह ग़लत काम करने से
गुरेज़ करके सूद नहीं लेता। वह मेरे क़वायद के
मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता और मेरे अहकाम पर
अमल करता है। ऐसे शख़्स को अपने बाप की
सज़ा नहीं भुगतनी पड़ेगी। उसे सज़ाए-मौत नहीं
मिलेगी, हालाँकि उसके बाप ने मज़कूरा गुनाह
किए हैं। नहीं, वह यक़ीनन ज़िंदा रहेगा। 18लेकिन
उसके बाप को ज़रूर उसके गुनाहों की सज़ा
मिलेगी, वह यक़ीनन मरेगा। क्योंकि उसने लोगों
पर ज़ुल्म किया, अपने भाई से चोरी की और
अपनी ही क़ौम के दरमियान बुरा काम किया।

19लेकिन तुम लोग एतराज़ करते हो, 'बेटा
बाप के क़ुसूर में क्यों न शरीक हो? उसे भी बाप
की सज़ा भुगतनी चाहिए।' जवाब यह है कि बेटा
तो रास्तबाज़ और इनसाफ़ की राह पर चलता रहा
है, वह एहतियात से मेरे तमाम अहकाम पर अमल
करता रहा है। इसलिए लाज़िम है कि वह ज़िंदा
रहे। 20जिससे गुनाह सरज़द हुआ है सिर्फ़ उसे
ही मरना है। लिहाज़ा न बेटे को बाप की सज़ा
भुगतनी पड़ेगी, न बाप को बेटे की। रास्तबाज़
अपनी रास्तबाज़ी का अज्र पाएगा, और बेदीन
अपनी बेदीनी का।

21तो भी अगर बेदीन आदमी अपने गुनाहों को
तर्क करे और मेरे तमाम क़वायद के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ारकर रास्तबाज़ी और इनसाफ़ की
राह पर चल पड़े तो वह यक़ीनन ज़िंदा रहेगा,
वह मरेगा नहीं। 22जितने भी ग़लत काम उससे
सरज़द हुए हैं उनका हिसाब मैं नहीं लूँगा बल्कि
उसके रास्तबाज़ चाल-चलन का लिहाज़ करके
उसे ज़िंदा रहने दूँगा। 23रब क़ादिरे-मुतलक़
फ़रमाता है कि क्या मैं बेदीन की हलाकत देखकर
ख़ुश होता हूँ? हरगिज़ नहीं, बल्कि मैं चाहता हूँ
कि वह अपनी बुरी राहों को छोड़कर ज़िंदा रहे।

24इसके बरअक्स क्या रास्तबाज़ ज़िंदा रहेगा
अगर वह अपनी रास्तबाज़ ज़िंदगी तर्क करे और
गुनाह करके वही क़ाबिले-घिन हरकतें करने लगे
जो बेदीन करते हैं? हरगिज़ नहीं! जितना भी
अच्छा काम उसने किया उसका मैं ख़याल नहीं
करूँगा बल्कि उस की बेवफ़ाई और गुनाहों का।
उन्हीं की वजह से उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।

25लेकिन तुम लोग दावा करते हो कि जो कुछ
रब करता है वह ठीक नहीं। ऐ इसराईली क़ौम,
सुनो! यह कैसी बात है कि मेरा अमल ठीक
नहीं? अपने ही आमाल पर ग़ौर करो! वही
दुरुस्त नहीं। 26अगर रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़
ज़िंदगी तर्क करके गुनाह करे तो वह इस बिना
पर मर जाएगा। अपनी नारास्ती की वजह से
ही वह मर जाएगा। 27इसके बरअक्स अगर
बेदीन अपनी बेदीन ज़िंदगी तर्क करके रास्ती और

इनसाफ़ की राह पर चलने लगे तो वह अपनी
जान को छुड़ाएगा। 28क्योंकि अगर वह अपना
क़ुसूर तसलीम करके अपने गुनाहों से मुँह मोड़ ले
तो वह मरेगा नहीं बल्कि ज़िंदा रहेगा। 29लेकिन
इसराईली क़ौम दावा करती है कि जो कुछ रब
करता है वह ठीक नहीं। ऐ इसराईली क़ौम, यह
कैसी बात है कि मेरा अमल ठीक नहीं? अपने ही
आमाल पर ग़ौर करो! वही दुरुस्त नहीं।

30इसलिए रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
ऐ इसराईल की क़ौम, मैं तेरी अदालत करूँगा,
हर एक का उसके कामों के मुवाफ़िक़ फ़ैसला
करूँगा। चुनाँचे ख़बरदार! तौबा करके अपनी
बेवफ़ा हरकतों से मुँह फेरो, वरना तुम गुनाह में
फँसकर गिर जाओगे। 31अपने तमाम ग़लत काम
तर्क करके नया दिल और नई रूह अपना लो। ऐ
इसराईलियो, तुम क्यों मर जाओ? 32क्योंकि मैं
किसी की मौत से ख़ुश नहीं होता। चुनाँचे तौबा
करो, तब ही तुम ज़िंदा रहोगे। यह रब क़ादिरे-
मुतलक़ का फ़रमान है।

इसराईली बुज़ुर्गों पर मातमी गीत

19 ऐ नबी, इसराईल के रईसों पर मातमी
गीत गा,

2‘तेरी माँ कितनी ज़बरदस्त शेरनी थी। जवान
शेरबबरों के दरमियान ही अपना घर बनाकर उसने
अपने बच्चों को पाल लिया।

3एक बच्चे को उसने ख़ास तरबियत दी। जब
बड़ा हुआ तो जानवरों को फाड़ना सीख लिया,
बल्कि इनसान भी उस की ख़ुराक बन गए।

4इसकी ख़बर दीगर अक़वाम तक पहुँची तो
उन्होंने उसे अपने गढ़े में पकड़ लिया। वह उस
की नाक में काँटे डालकर उसे मिसर में घसीट ले
गए।

5जब शेरनी के इस बच्चे पर से उम्मीद जाती
रही तो उसने दीगर बच्चों में से एक को चुनकर
उसे ख़ास तरबियत दी।

6यह भी ताक़तवर होकर दीगर शेरों में घूमने
फिरने लगा। उसने जानवरों को फाड़ना सीख
लिया, बल्कि इनसान भी उस की ख़ुराक बन गए।

7उनके क़िलों को गिराकर उसने उनके शहरों
को ख़ाक में मिला दिया। उस की दहाड़ती आवाज़
से मुल्क बाशिंदों समेत ख़ौफ़ज़दा हो गया।

8तब इर्दगिर्द के सूबों में बसनेवाली अक़वाम
उससे लड़ने आईं। उन्होंने अपना जाल उस पर
डाल दिया, उसे अपने गढ़े में पकड़ लिया।

9वह उस की गरदन में पट्टा और नाक में काँटे
डालकर उसे शाहे-बाबल के पास घसीट ले गए।
वहाँ उसे क़ैद में डाला गया ताकि आइंदा इसराईल
के पहाड़ों पर उस की गरजती आवाज़ सुनाई न
दे।

10तेरी माँ पानी के किनारे लगाई गई अंगूर
की-सी बेल थी। बेल कसरत के पानी के बाइस
फलदार और शाख़दार थी।

11उस की शाख़ें इतनी मज़बूत थीं कि उनसे
शाही असा बन सकते थे। वह बाक़ी पौदों से कहीं
ज़्यादा ऊँची थी बल्कि उस की शाख़ें दूर दूर तक
नज़र आती थीं।

12लेकिन आख़िरकार लोगों ने तैश में आकर
उसे उखाड़कर फेंक दिया। मशरिक़ी लू ने उसका
फल मुरझाने दिया। सब कुछ उतारा गया,
लिहाज़ा वह सूख गया और उसका मज़बूत तना
नज़रे-आतिश हुआ।

13अब बेल को रेगिस्तान में लगाया गया है,
वहाँ जहाँ ख़ुश्क और प्यासी ज़मीन होती है।

14उसके तने की एक टहनी से आग ने
निकलकर उसका फल भस्म कर दिया। अब कोई
मज़बूत शाख़ नहीं रही जिससे शाही असा बन
सके’।”

दर्जे-बाला गीत मातमी है और आहो-ज़ारी
करने के लिए इस्तेमाल हुआ है।

इसराईल की मुसलसल बेवफ़ाई

20 यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन की
जिलावतनी के सातवें साल में
इसराईली क़ौम के कुछ बुज़ुर्ग मेरे पास आए
ताकि रब से कुछ दरियाफ़्त करें। पाँचवें महीने का
दसवाँ दिन[a] था। वह मेरे सामने बैठ गए। 2तब
रब मुझसे हमकलाम हुआ, 3“ऐ आदमज़ाद,
इसराईल के बुज़ुर्गों को बता,

‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि क्या तुम
मुझसे दरियाफ़्त करने आए हो? मेरी हयात की
क़सम, मैं तुम्हें कोई जवाब नहीं दूँगा! यह रब
क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।’

4ऐ आदमज़ाद, क्या तू उनकी अदालत करने
के लिए तैयार है? फिर उनकी अदालत कर!
उन्हें उनके बापदादा की क़ाबिले-घिन हरकतों
का एहसास दिला। 5उन्हें बता, ‘रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है कि इसराईली क़ौम को चुनते
वक़्त मैंने अपना हाथ उठाकर उससे क़सम खाई।
मुल्के-मिसर में ही मैंने अपने आपको उन पर
ज़ाहिर किया और क़सम खाकर कहा कि मैं रब
तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 6यह मेरा अटल वादा है कि मैं
तुम्हें मिसर से निकालकर एक मुल्क में पहुँचा
दूँगा जिसका जायज़ा मैं तुम्हारी ख़ातिर ले चुका
हूँ। यह मुल्क दीगर तमाम ममालिक से कहीं
ज़्यादा ख़ूबसूरत है, और इसमें दूध और शहद की
कसरत है। 7उस वक़्त मैंने इसराईलियों से कहा,
“हर एक अपने घिनौने बुतों को फेंक दे! मिसर
के देवताओं से लिपटे न रहो, क्योंकि उनसे तुम
अपने आपको नापाक कर रहे हो। मैं रब तुम्हारा
ख़ुदा हूँ।”

8लेकिन वह मुझसे बाग़ी हुए और मेरी सुनने
के लिए तैयार न थे। किसी ने भी अपने बुतों को
न फेंका बल्कि वह इन घिनौनी चीज़ों से लिपटे
रहे और मिसरी देवताओं को तर्क न किया। यह
देखकर मैं वहीं मिसर में अपना ग़ज़ब उन पर
नाज़िल करना चाहता था। उसी वक़्त मैं अपना
ग़ुस्सा उन पर उतारना चाहता था। 9लेकिन मैं
बाज़ रहा, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि जिन
अक़वाम के दरमियान इसराईली रहते थे उनके
सामने मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए। क्योंकि
उन क़ौमों की मौजूदगी में ही मैंने अपने आपको
इसराईलियों पर ज़ाहिर करके वादा किया था कि
मैं तुम्हें मिसर से निकाल लाऊँगा।

10चुनाँचे मैं उन्हें मिसर से निकालकर रेगिस्तान
में लाया। 11वहाँ मैंने उन्हें अपनी हिदायात दीं, वह
अहकाम जिनकी पैरवी करने से इनसान जीता
रहता है। 12मैंने उन्हें सबत का दिन भी अता
किया। मैं चाहता था कि आराम का यह दिन मेरे
उनके साथ अहद का निशान हो, कि इससे लोग
जान लें कि मैं रब ही उन्हें मुक़द्दस बनाता हूँ।

13लेकिन रेगिस्तान में भी इसराईली मुझसे
बाग़ी हुए। उन्होंने मेरी हिदायात के मुताबिक़
ज़िंदगी न गुज़ारी बल्कि मेरे अहकाम को मुस्तरद
कर दिया, हालाँकि इनसान उनकी पैरवी करने
से ही जीता रहता है। उन्होंने सबत की भी बड़ी
बेहुरमती की। यह देखकर मैं अपना ग़ज़ब उन
पर नाज़िल करके उन्हें वहीं रेगिस्तान में हलाक
करना चाहता था। 14ताहम मैं बाज़ रहा, क्योंकि
मैं नहीं चाहता था कि उन अक़वाम के सामने मेरे
नाम की बेहुरमती हो जाए जिनके देखते देखते
मैं इसराईलियों को मिसर से निकाल लाया था।
15चुनाँचे मैंने यह करने के बजाए अपना हाथ
उठाकर क़सम खाई, “मैं तुम्हें उस मुल्क में नहीं
ले जाऊँगा जो मैंने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किया
था, हालाँकि उसमें दूध और शहद की कसरत
है और वह दीगर तमाम ममालिक की निसबत
कहीं ज़्यादा ख़ूबसूरत है। 16क्योंकि तुमने मेरी
हिदायात को रद्द करके मेरे अहकाम के मुताबिक़
ज़िंदगी न गुज़ारी बल्कि सबत के दिन की भी
बेहुरमती की। अभी तक तुम्हारे दिल बुतों से
लिपटे रहते हैं।”

[a] 14 अगस्त।

17लेकिन एक बार फिर मैंने उन पर तरस
खाया। न मैंने उन्हें तबाह किया, न पूरी क़ौम को
रेगिस्तान में मिटा दिया। 18रेगिस्तान में ही मैंने
उनके बेटों को आगाह किया, "अपने बापदादा
के क़वायद के मुताबिक़ ज़िंदगी मत गुज़ारना।
न उनके अहकाम पर अमल करो, न उनके बुतों
की पूजा से अपने आपको नापाक करो। 19मैं
रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मेरी हिदायात के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ारो और एहतियात से मेरे अहकाम पर
अमल करो। 20मेरे सबत के दिन आराम करके
उन्हें मुक़द्दस मानो ताकि वह मेरे साथ बँधे हुए
अहद का निशान रहें। तब तुम जान लोगे कि मैं
रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।"

21लेकिन यह बच्चे भी मुझसे बाग़ी हुए। न
उन्होंने मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी,
न एहतियात से मेरे अहकाम पर अमल किया,
हालाँकि इनसान उनकी पैरवी करने से ही जीता
रहता है। उन्होंने मेरे सबत के दिनों की भी
बेहुरमती की। यह देखकर मैं अपना ग़ुस्सा उन पर
नाज़िल करके उन्हें वहीं रेगिस्तान में तबाह करना
चाहता था। 22लेकिन एक बार फिर मैं अपने हाथ
को रोककर बाज़ रहा, क्योंकि मैं नहीं चाहता था
कि उन अक़वाम के सामने मेरे नाम की बेहुरमती
हो जाए जिनके देखते देखते मैं इसराईलियों को
मिसर से निकाल लाया था। 23चुनाँचे मैंने यह
करने के बजाए अपना हाथ उठाकर क़सम खाई,
"मैं तुम्हें दीगर अक़वामो-ममालिक में मुंतशिर
करूँगा, 24क्योंकि तुमने मेरे अहकाम की पैरवी
नहीं की बल्कि मेरी हिदायात को रद्द कर दिया। गो
मैंने सबत का दिन मानने का हुक्म दिया था तो भी
तुमने आराम के इस दिन की बेहुरमती की। और
यह भी काफ़ी नहीं था बल्कि तुम अपने बापदादा
के बुतों के भी पीछे लगे रहे।"

25तब मैंने उन्हें ऐसे अहकाम दिए जो अच्छे
नहीं थे, ऐसी हिदायात जो इनसान को जीने
नहीं देतीं। 26नीज़, मैंने होने दिया कि वह अपने
पहलौठों को क़ुरबान करके अपने आपको नापाक
करें। मक़सद यह था कि उनके रोंगटे खड़े हो जाएँ
और वह जान लें कि मैं ही रब हूँ।'

27चुनाँचे ऐ आदमज़ाद, इसराईली क़ौम को
बता, 'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुम्हारे
बापदादा ने इसमें भी मेरी तकफ़ीर की कि
वह मुझसे बेवफ़ा हुए। 28मैंने तो उनसे मुल्के-
इसराईल देने की क़सम खाकर वादा किया था।
लेकिन ज्योंही मैं उन्हें उसमें लाया तो जहाँ भी
कोई ऊँची जगह या सायादार दरख़्त नज़र आया
वहाँ वह अपने जानवरों को ज़बह करने, तैश
दिलानेवाली क़ुरबानियाँ चढ़ाने, ख़ुशबूदार बख़ूर
जलाने और मै की नज़रें पेश करने लगे। 29मैंने
उनका सामना करके कहा, "यह किस तरह की
ऊँची जगहें हैं जहाँ तुम जाते हो?" आज तक यह
क़ुरबानगाहें ऊँची जगहें कहलाती हैं।'

30ऐ आदमज़ाद, इसराईली क़ौम को बता, 'रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि क्या तुम अपने
बापदादा की हरकतें अपनाकर अपने आपको
नापाक करना चाहते हो? क्या तुम भी उनके
घिनौने बुतों के पीछे लगकर ज़िना करना चाहते
हो? 31क्योंकि अपने नज़राने पेश करने और
अपने बच्चों को क़ुरबान करने से तुम अपने
आपको अपने बुतों से आलूदा करते हो। ऐ
इसराईली क़ौम, आज तक यही तुम्हारा रवैया है!
तो फिर मैं क्या करूँ? क्या मुझे तुम्हें जवाब देना
चाहिए जब तुम मुझसे कुछ दरियाफ़्त करने के
लिए आते हो? हरगिज़ नहीं! मेरी हयात की
क़सम, मैं तुम्हें जवाब में कुछ नहीं बताऊँगा। यह
रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

अल्लाह अपनी क़ौम को वापस लाएगा

32तुम कहते हो, "हम दीगर क़ौमों की मानिंद
होना चाहते, दुनिया के दूसरे ममालिक की तरह
लकड़ी और पत्थर की चीज़ों की इबादत करना
चाहते हैं।" गो यह ख़याल तुम्हारे ज़हनों में उभर
आया है, लेकिन ऐसा कभी नहीं होगा। 33रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात की
क़सम, मैं बड़े ग़ुस्से और ज़ोरदार तरीक़े से अपनी

क़ुदरत का इज़हार करके तुम पर हुकूमत करूँगा। 34मैं बड़े ग़ुस्से और ज़ोरदार तरीक़े से अपनी क़ुदरत का इज़हार करके तुम्हें उन क़ौमों और ममालिक से निकालकर जमा करूँगा जहाँ तुम मुंतशिर हो गए हो। 35तब मैं तुम्हें अक़वाम के रेगिस्तान में लाकर तुम्हारे रूबरू तुम्हारी अदालत करूँगा। 36जिस तरह मैंने तुम्हारे बापदादा की अदालत मिसर के रेगिस्तान में की उसी तरह तुम्हारी भी अदालत करूँगा। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है। 37जिस तरह गल्लाबान भेड़-बकरियों को अपनी लाठी के नीचे से गुज़रने देता है ताकि उन्हें गिन ले उसी तरह मैं तुम्हें अपनी लाठी के नीचे से गुज़रने दूँगा और तुम्हें अहद के बंधन में शरीक करूँगा। 38जो बेवफ़ा होकर मुझसे बाग़ी हो गए हैं उन्हें मैं तुमसे दूर कर दूँगा ताकि तुम पाक हो जाओ। अगरचे मैं उन्हें भी उन दीगर ममालिक से निकाल लाऊँगा जिनमें वह रह रहे हैं तो भी वह मुल्के-इसराईल में दाख़िल नहीं होंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।

39जहाँ तेरा ताल्लुक़ है, ऐ इसराईली क़ौम, रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जाओ, हर एक अपने बुतों की इबादत करता जाए अगर तुम मेरी नहीं सुनने के। लेकिन तुम अपनी क़ुरबानियों और बुतों की पूजा से मेरे मुक़द्दस नाम की बेहुरमती नहीं करोगे।

40क्योंकि रब फ़रमाता है कि आइंदा पूरी इसराईली क़ौम मेरे मुक़द्दस पहाड़ यानी इसराईल के बुलंद पहाड़ सिय्यून पर मेरी ख़िदमत करेगी। वहाँ मैं ख़ुशी से उन्हें क़बूल करूँगा, और वहाँ मैं तुम्हारी क़ुरबानियाँ, तुम्हारे पहले फल और तुम्हारे तमाम मुक़द्दस हदिये तलब करूँगा। 41मेरे तुम्हें उन अक़वाम और ममालिक से निकालकर जमा करने के बाद जिनमें तुम मुंतशिर हो गए हो तुम इसराईल में मुझे क़ुरबानियाँ पेश करोगे, और मैं उनकी ख़ुशबू सूँघकर ख़ुशी से तुम्हें क़बूल करूँगा। यों मैं तुम्हारे ज़रीए दीगर अक़वाम पर ज़ाहिर करूँगा कि मैं क़ुद्दूस ख़ुदा हूँ। 42तब जब मैं तुम्हें मुल्के-इसराईल यानी उस मुल्क में लाऊँगा जिसका वादा मैंने क़सम खाकर तुम्हारे बापदादा से किया था तो तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ। 43वहाँ तुम्हें अपना वह चाल-चलन और अपनी वह हरकतें याद आएँगी जिनसे तुमने अपने आपको नापाक कर दिया था, और तुम अपने तमाम बुरे आमाल के बाइस अपने आपसे घिन खाओगे। 44ऐ इसराईली क़ौम, तुम जान लोगे कि मैं रब हूँ जब मैं अपने नाम की ख़ातिर नरमी से तुमसे पेश आऊँगा, हालाँकि तुम अपने बुरे सुलूक और तबाहकुन हरकतों की वजह से सख़्त सज़ा के लायक़ थे। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है’।”

जंगल में आग लगने की तमसील

45रब मुझसे हमकलाम हुआ, 46“ऐ आदमज़ाद, जुनूब की तरफ़ रुख़ करके उसके ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! दश्ते-नजब के जंगल के ख़िलाफ़ नबुव्वत करके 47उसे बता, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं तुझमें ऐसी आग लगानेवाला हूँ जो तेरे तमाम दरख़्तों को भस्म करेगी, ख़ाह वह हरे-भरे या सूखे हुए हों। इस आग के भड़कते शोले नहीं बुझेंगे बल्कि जुनूब से लेकर शिमाल तक हर चेहरे को झुलसा देंगे। 48हर एक को नज़र आएगा कि यह आग मेरे, रब के हाथ ने लगाई है। यह बुझेगी नहीं’।”

49यह सुनकर मैं बोला, “ऐ क़ादिरे-मुतलक़, यह बताने का क्या फ़ायदा है? लोग पहले से मेरे बारे में कहते हैं कि यह हमेशा नाक़ाबिले-समझ तमसीलें पेश करता है।”

रब इसराईल के ख़िलाफ़ तलवार चलाने को है

21 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ आदमज़ाद, यरूशलम की तरफ़ रुख़ करके मुक़द्दस जगहों और मुल्के-इसराईल के ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! 3मुल्क को बता, ‘रब फ़रमाता है कि अब मैं तुझसे निपट लूँगा!

अपनी तलवार मियान से खींचकर मैं तेरे तमाम
बाशिंदों को मिटा दूँगा, ख़ाह रास्तबाज़ हों या
बेदीन। 4क्योंकि मैं रास्तबाज़ों को बेदीनों समेत
मार डालूँगा, इसलिए मेरी तलवार मियान से
निकलकर जुनूब से लेकर शिमाल तक हर शख़्स
पर टूट पड़ेगी। 5तब तमाम लोगों को पता चलेगा
कि मैं, रब ने अपनी तलवार को मियान से खींच
लिया है। तलवार मारती रहेगी और मियान में
वापस नहीं आएगी।'

6ऐ आदमज़ाद, आहें भर भरकर यह पैग़ाम
सुना! लोगों के सामने इतनी तलख़ी से आहो-
ज़ारी कर कि कमर में दर्द होने लगे। 7जब वह
तुझसे पूछें, 'आप क्यों कराह रहे हैं?' तो उन्हें
जवाब दे, 'मुझे एक हौलनाक ख़बर का इल्म है
जो अभी आनेवाली है। जब यहाँ पहुँचेगी तो हर
एक की हिम्मत टूट जाएगी और हर हाथ बेहिसो-
हरकत हो जाएगा। हर जान हौसला हारेगी और
हर घुटना डाँवाँडोल हो जाएगा। रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है कि इस ख़बर का वक़्त क़रीब
आ गया है, जो कुछ पेश आना है वह जल्द ही पेश
आएगा'।"

8रब एक बार फिर मुझसे हमकलाम हुआ,
9"ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत करके लोगों को बता,

'तलवार को रगड़ रगड़कर तेज़ कर दिया गया
है। 10अब वह क़त्लो-ग़ारत के लिए तैयार है,
बिजली की तरह चमकने लगी है। हम यह देखकर
किस तरह ख़ुश हो सकते हैं? ऐ मेरे बेटे, तूने
लाठी और हर तरबियत को हक़ीर जाना है।
11चुनाँचे तलवार को तेज़ करवाने के लिए भेजा
गया ताकि उसे ख़ूब इस्तेमाल किया जा सके।
अब वह रगड़ रगड़कर तेज़ की गई है, अब वह
क़ातिल के हाथ के लिए तैयार है।'

12ऐ आदमज़ाद, चीख़ उठ! वावैला कर!
अफ़सोस से अपना सीना पीट! तलवार मेरी क़ौम
और इसराईल के बुज़ुर्गों के ख़िलाफ़ चलने लगी
है, और सब उस की ज़द में आ जाएंगे। 13क्योंकि
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जाँच-पड़ताल का
वक़्त आ गया है, और लाज़िम है कि वह आए,
क्योंकि तूने लाठी की तरबियत को हक़ीर जाना
है।

14चुनाँचे ऐ आदमज़ाद, अब ताली बजा-
कर नबुव्वत कर! तलवार को दो बल्कि तीन
बार उन पर टूटने दे! क्योंकि क़त्लो-ग़ारत की
यह मोहलक तलवार क़ब्ज़े तक मक़तूलों में
घोंपी जाएगी। 15मैंने तलवार को उनके शहरों
के हर दरवाज़े पर खड़ा कर दिया है ताकि आने
जानेवालों को मार डाले, हर दिल हिम्मत हारे और
मुतअद्दिद अफ़राद हलाक हो जाएँ। अफ़सोस!
उसे बिजली की तरह चमकाया गया है, वह
क़त्लो-ग़ारत के लिए तैयार है।

16ऐ तलवार, दाईं और बाईं तरफ़ घूमती फिर,
जिस तरफ़ भी तू मुड़े उस तरफ़ मारती जा! 17मैं
भी तालियाँ बजाकर अपना ग़ुस्सा इसराईल पर
उतारूँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।"

दो रास्तों का नक़्शा, बाबल के ज़रीए यरूशलम की तबाही

18रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 19"ऐ
आदमज़ाद, नक़्शा बनाकर उस पर वह दो रास्ते
दिखा जो शाहे-बाबल की तलवार इख़्तियार कर
सकती है। दोनों रास्ते एक ही मुल्क से शुरू हो
जाएँ। जहाँ यह एक दूसरे से अलग हो जाते हैं
वहाँ दो सायन-बोर्ड खड़े कर जो दो मुख़्तलिफ़
शहरों के रास्ते दिखाएँ, 20एक अम्मोनियों के
शहर रब्बा का और दूसरा यहूदाह के क़िलाबंद
शहर यरूशलम का।

यह वह दो रास्ते हैं जो शाहे-बाबल की तलवार
इख़्तियार कर सकती है। 21क्योंकि जहाँ यह
दो रास्ते एक दूसरे से अलग हो जाते हैं वहाँ
शाहे-बाबल रुककर मालूम करेगा कि कौन-सा
रास्ता इख़्तियार करना है। वह तीरों के ज़रीए
क़ुरा डालेगा, अपने बुतों से इशारा मिलने की
कोशिश करेगा और किसी जानवर की कलेजी का
मुआयना करेगा। 22तब उसे यरूशलम का रास्ता
इख़्तियार करने की हिदायत मिलेगी, चुनाँचे
वह अपने फ़ौजियों के साथ यरूशलम के पास

पहुँचकर क़त्लो-ग़ारत का हुक्म देगा। तब वह ज़ोर
से जंग के नारे लगा लगाकर शहर को पुश्ते से घेर
लेंगे, मुहासरे के बुर्ज तामीर करेंगे और दरवाज़ों
को तोड़ने की क़िलाशिकन मशीनें खड़ी करेंगे।
23जिन्होंने शाहे-बाबल से वफ़ादारी की क़सम
खाई है उन्हें यह पेशगोई ग़लत लगेगी, लेकिन वह
उन्हें उनके क़ुसूर की याद दिलाकर उन्हें गिरिफ़्तार
करेगा।

24चुनाँचे रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, 'तुम
लोगों ने ख़ुद अलानिया तौर पर बेवफ़ा होने से
अपने क़ुसूर की याद दिलाई है। तुम्हारे तमाम
आमाल में तुम्हारे गुनाह नज़र आते हैं। इसलिए
तुमसे सख़्ती से निपटा जाएगा।

25ऐ इसराईल के बिगड़े हुए और बेदीन
रईस, अब वह वक़्त आ गया है जब तुझे
हतमी सज़ा दी जाएगी। 26रब क़ादिरे-मुत-
लक़ फ़रमाता है कि पगड़ी को उतार, ताज को
दूर कर! अब सब कुछ उलट जाएगा। ज़लील
को सरफ़राज़ और सरफ़राज़ को ज़लील किया
जाएगा।

27मैं यरूशलम को मलबे का ढेर, मलबे का
ढेर, मलबे का ढेर बना दूँगा। और शहर उस वक़्त
तक नए सिरे से तामीर नहीं किया जाएगा जब
तक वह न आए जो हक़दार है। उसी के हवाले मैं
यरूशलम करूँगा।'

अम्मोनी भी तलवार की ज़द में आएँगे

28ऐ आदमज़ाद, अम्मोनियों और उनकी लान-
तान के जवाब में नबुव्वत कर! उन्हें बता,

'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि तल-
वार क़त्लो-ग़ारत के लिए मियान से खींच ली गई
है, उसे रगड़ रगड़कर तेज़ किया गया है ताकि
बिजली की तरह चमकते हुए मारती जाए।

29तेरे नबियों ने तुझे फ़रेबदेह रोयाएँ और झूटे
पैग़ामात सुनाए हैं। लेकिन तलवार बेदीनों की
गरदन पर नाज़िल होनेवाली है, क्योंकि वह वक़्त
आ गया है जब उन्हें हतमी सज़ा दी जाए।

30लेकिन इसके बाद अपनी तलवार को मियान
में वापस डाल, क्योंकि मैं तुझे भी सज़ा दूँगा।
जहाँ तू पैदा हुआ, तेरे अपने वतन में मैं तेरी
अदालत करूँगा। 31मैं अपना ग़ज़ब तुझ पर
नाज़िल करूँगा, अपने क़हर की आग तेरे ख़िलाफ़
भड़काऊँगा। मैं तुझे ऐसे वहशी आदमियों के
हवाले करूँगा जो तबाह करने का फ़न ख़ूब जानते
हैं। 32तू आग का ईंधन बन जाएगा, तेरा ख़ून तेरे
अपने मुल्क में बह जाएगा। आइंदा तुझे कोई याद
नहीं करेगा। क्योंकि यह मेरा, रब का फ़रमान
है'।"

यरूशलम ख़ूनरेज़ी का शहर है

22 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,
2"ऐ आदमज़ाद, क्या तू यरूशलम
की अदालत करने के लिए तैयार है? क्या तू इस
क़ातिल शहर पर फ़ैसला करने के लिए मुस्तैद
है? फिर उस पर उस की मकरूह हरकतें ज़ाहिर
कर। 3उसे बता,

'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ
यरूशलम बेटी, तेरा अंजाम क़रीब ही है, और
यह तेरा अपना क़ुसूर है। क्योंकि तूने अपने
दरमियान मासूमों का ख़ून बहाया और अपने लिए
बुत बनाकर अपने आपको नापाक कर दिया है।
4अपनी ख़ूनरेज़ी से तू मुजरिम बन गई है, अपनी
बुतपरस्ती से नापाक हो गई है। तू ख़ुद अपनी
अदालत का दिन क़रीब लाई है। इसी वजह से तेरा
अंजाम क़रीब आ गया है, इसी लिए मैं तुझे दीगर
अक़वाम की लान-तान और तमाम ममालिक के
मज़ाक़ का निशाना बना दूँगा। 5सब तुझ पर ठट्ठा
मारेंगे, ख़ाह वह क़रीब हों या दूर। तेरे नाम पर
दाग़ लग गया है, तुझमें फ़साद हद से ज़्यादा बढ़
गया है।

6इसराईल का जो भी बुज़ुर्ग तुझमें रहता है
वह अपनी पूरी ताक़त से ख़ून बहाने की कोशिश
करता है। 7तेरे बाशिंदे अपने माँ-बाप को हक़ीर
जानते हैं। वह परदेसी पर सख़्ती करके यतीमों
और बेवाओं पर ज़ुल्म करते हैं। 8जो मुझे मुक़द्दस

है उसे तू पाँवों तले कुचल देती है। तू मेरे सबत के
दिनों की बेहुरमती भी करती है।
9तुझमें ऐसे तोहमत लगानेवाले हैं जो ख़ूनरेज़ी
पर तुले हुए हैं। तेरे बाशिंदे पहाड़ों की नाजायज़
क़ुरबानगाहों के पास क़ुरबानियाँ खाते और तेरे
दरमियान शर्मनाक हरकतें करते हैं। 10बेटा माँ
से हमबिसतर होकर बाप की बेहुरमती करता है,
शौहर माहवारी के दौरान बीवी से सोहबत करके
उससे ज़्यादती करता है। 11एक अपने पड़ोसी
की बीवी से ज़िना करता है जबकि दूसरा अपनी
बहू की बेहुरमती और तीसरा अपनी सगी बहन
की इसमतदरी करता है। 12तुझमें ऐसे लोग हैं
जो रिश्वत के एवज़ क़त्ल करते हैं। सूद क़ाबिले-
क़बूल है, और लोग एक दूसरे पर ज़ुल्म करके
नाजायज़ नफ़ा कमाते हैं। रब क़ादिरे-मुतलक़
फ़रमाता है कि ऐ यरूशलम, तू मुझे सरासर भूल
गई है!
13तेरा नाजायज़ नफ़ा और तेरे बीच में ख़ूनरेज़ी
देखकर मैं ग़ुस्से में ताली बजाता हूँ। 14सोच ले!
जिस दिन मैं तुझसे निपटूँगा तो क्या तेरा हौसला
क़ायम और तेरे हाथ मज़बूत रहेंगे? यह मेरा, रब
का फ़रमान है, और मैं यह करूँगा भी। 15मैं तुझे
दीगर अक़वामो-ममालिक में मुंतशिर करके तेरी
नापाकी दूर करूँगा। 16फिर जब दीगर क़ौमों के
देखते देखते तेरी बेहुरमती हो जाएगी तब तू जान
लेगी कि मैं ही रब हूँ’।”

इसराईली क़ौम भट्टी में धात का मैल है

17रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, 18“ऐ
आदमज़ाद, इसराईली क़ौम मेरे नज़दीक उस मैल
की मानिंद बन गई है जो चाँदी को ख़ालिस करने
के बाद भट्टी में बाक़ी रह जाता है। सबके सब उस
ताँबे, टीन, लोहे और सीसे की मानिंद हैं जो भट्टी
में रह जाता है। वह कचरा ही हैं। 19चुनाँचे रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि चूँकि तुम भट्टी
में बचा हुआ मैल हो इसलिए मैं तुम्हें यरूशलम
में इकट्ठा करके 20भट्टी में फेंक दूँगा। जिस तरह
चाँदी, ताँबे, लोहे, सीसे और टीन की आमेज़िश
को तपती भट्टी में फेंका जाता है ताकि पिघल
जाए उसी तरह मैं तुम्हें ग़ुस्से में इकट्ठा करूँगा
और भट्टी में फेंककर पिघला दूँगा। 21मैं तुम्हें
जमा करके आग में फेंक दूँगा और बड़े ग़ुस्से से
हवा देकर तुम्हें पिघला दूँगा। 22जिस तरह चाँदी
भट्टी में पिघल जाती है उसी तरह तुम यरूशलम
में पिघल जाओगे। तब तुम जान लोगे कि मैं रब
ने अपना ग़ज़ब तुम पर नाज़िल किया है।”

पूरी क़ौम क़ुसूरवार है

23रब मुझसे हमकलाम हुआ, 24“ऐ
आदमज़ाद, मुल्के-इसराईल को बता, ‘ग़ज़ब
के दिन तुझ पर मेंह नहीं बरसेगा बल्कि तू बारिश
से महरूम रहेगा।’
25मुल्क के बीच में साज़िश करनेवाले राहनुमा
शेरबबर की मानिंद हैं जो दहाड़ते दहाड़ते अपना
शिकार फाड़ लेते हैं। वह लोगों को हड़प करके
उनके ख़ज़ाने और क़ीमती चीज़ें छीन लेते और
मुल्क के दरमियान ही मुतअद्दिद औरतों को बेवाएँ
बना देते हैं।
26मुल्क के इमाम मेरी शरीअत से ज़्यादती
करके उन चीज़ों की बेहुरमती करते हैं जो मुझे
मुक़द्दस हैं। न वह मुक़द्दस और आम चीज़ों में
इम्तियाज़ करते, न पाक और नापाक अशया का
फ़रक़ सिखाते हैं। नीज़, वह मेरे सबत के दिन
अपनी आँखों को बंद रखते हैं ताकि उस की
बेहुरमती नज़र न आए। यों उनके दरमियान ही
मेरी बेहुरमती की जाती है।
27मुल्क के दरमियान के बुज़ुर्ग भेड़ियों की
मानिंद हैं जो अपने शिकार को फाड़ फाड़कर ख़ून
बहाते और लोगों को मौत के घाट उतारते हैं ताकि
नारवा नफ़ा कमाएँ।
28मुल्क के नबी फ़रेबदेह रोयाएँ और झूटे
पैग़ामात सुनाकर लोगों के बुरे कामों पर सफेदी
फेर देते हैं ताकि उनकी ग़लतियाँ नज़र न आएँ।
वह कहते हैं, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है’
हालाँकि रब ने उन पर कुछ नाज़िल नहीं किया
होता।

29मुल्क के आम लोग भी एक दूसरे का इस्तेह्साल करते हैं। वह डकैत बनकर ग़रीबों और ज़रूरतमंदों पर ज़ुल्म करते और परदेसियों से बदसुलूकी करके उनका हक़ मारते हैं।

30इसराईल में मैं ऐसे आदमी की तलाश में रहा जो मुल्क के लिए हिफ़ाज़ती चारदीवारी तामीर करे, जो मेरे हुज़ूर आकर दीवार के रख़ने में खड़ा हो जाए ताकि मैं मुल्क को तबाह न करूँ। लेकिन मुझे एक भी न मिला जो इस क़ाबिल हो।
31चुनाँचे मैं अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करूँगा और उन्हें अपने सख़्त क़हर से भस्म करूँगा। तब उनके ग़लत कामों का नतीजा उनके अपने सरों पर आएगा। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।”

बेहया बहनें अहोला और अहोलीबा

23 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ आदमज़ाद, दो औरतों की कहानी सुन ले। दोनों एक ही माँ की बेटियाँ थीं।
3वह अभी जवान ही थीं जब मिसर में कसबी बन गईं। वहीं मर्द दोनों कुँवारियों की छातियाँ सहलाकर अपना दिल बहलाते थे। 4बड़ी का नाम अहोला और छोटी का नाम अहोलीबा था। अहोला सामरिया और अहोलीबा यरूशलम है। मैं दोनों का मालिक बन गया, और दोनों के बेटे-बेटियाँ पैदा हुए।

5गो मैं अहोला का मालिक था तो भी वह ज़िना करने लगी। शहवत से भरकर वह जंगजू असूरियों के पीछे पड़ गई, और यही उसके आशिक़ बन गए। 6शानदार कपड़ों से मुलब्बस यह गवर्नर और फ़ौजी अफ़सर उसे बड़े प्यारे लगे। सब ख़ूबसूरत जवान और अच्छे घुड़सवार थे। 7असूर के चीदा चीदा बेटों से उसने ज़िना किया। जिसकी भी उसे शहवत थी उससे और उसके बुतों से वह नापाक हुई। 8लेकिन उसने जवानी में मिसरियों के साथ जो ज़िनाकारी शुरू हुई वह भी न छोड़ी। वही लोग थे जो उसके साथ उस वक़्त हमबिसतर हुए थे जब वह अभी कुँवारी थी, जिन्होंने उस की छातियाँ सहलाकर अपनी गंदी ख़ाहिशात उससे पूरी की थीं।

9यह देखकर मैंने उसे उसके असूरी आशिक़ों के हवाले कर दिया, उन्हीं के हवाले जिनकी शदीद शहवत उसे थी। 10उन्हीं से अहोला की अदालत हुई। उन्होंने उसके कपड़े उतारकर उसे बरहना कर दिया और उसके बेटे-बेटियों को उससे छीन लिया। उसे ख़ुद उन्होंने तलवार से मार डाला। यों वह दीगर औरतों के लिए इबरतअंगेज़ मिसाल बन गई।

11गो उस की बहन अहोलीबा ने यह सब कुछ देखा तो भी वह शहवत और ज़िनाकारी के लिहाज़ से अपनी बहन से कहीं ज़्यादा आगे बढ़ी। 12वह भी शहवत के मारे असूरियों के पीछे पड़ गई। यह ख़ूबसूरत जवान सब उसे प्यारे थे, ख़ाह असूरी गवर्नर या अफ़सर, ख़ाह शानदार कपड़ों से मुलब्बस फ़ौजी या अच्छे घुड़सवार थे। 13मैंने देखा कि उसने भी अपने आपको नापाक कर दिया। इसमें दोनों बेटियाँ एक जैसी थीं।

14लेकिन अहोलीबा की ज़िनाकाराना हरकतें कहीं ज़्यादा बुरी थीं। एक दिन उसने दीवार पर बाबल के मर्दों की तस्वीर देखी। तस्वीर लाल रंग से खींची हुई थी। 15मर्दों की कमर में पटका और सर पर पगड़ी बँधी हुई थी। वह बाबल के उन अफ़सरों की मानिंद लगते थे जो रथों पर सवार लड़ते हैं। 16मर्दों की तस्वीर देखते ही अहोलीबा के दिल में उनके लिए शदीद आरज़ू पैदा हुई। चुनाँचे उसने अपने क़ासिदों को बाबल भेजकर उन्हें आने की दावत दी। 17तब बाबल के मर्द उसके पास आए और उससे हमबिसतर हुए। अपनी ज़िनाकारी से उन्होंने उसे नापाक कर दिया। लेकिन उनसे नापाक होने के बाद उसने तंग आकर अपना मुँह उनसे फेर लिया।

18जब उसने खुले तौर पर उनसे ज़िना करके अपनी बरहनगी सब पर ज़ाहिर की तो मैंने तंग आकर अपना मुँह उससे फेर लिया, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मैंने अपना मुँह उस की बहन से भी फेर लिया था। 19लेकिन यह भी उसके

लिए काफ़ी न था बल्कि उसने अपनी ज़िनाकारी
में मज़ीद इज़ाफ़ा किया। उसे जवानी के दिन
याद आए जब वह मिसर में कसबी थी। 20वह
शहवत के मारे पहले आशिक़ों की आरज़ू करने
लगी, उनसे जो गधों और घोड़ों की-सी जिंसी
ताक़त रखते थे। 21क्योंकि तू अपनी जवानी की
ज़िनाकारी दोहराने की मुतमन्नी थी। तू एक बार
फिर उनसे हमबिसतर होना चाहती थी जो मिसर
में तेरी छातियाँ सहलाकर अपना दिल बहलाते
थे।

22चुनाँचे रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, 'ऐ
अहोलीबा, मैं तेरे आशिक़ों को तेरे ख़िलाफ़
खड़ा करूँगा। जिनसे तूने तंग आकर अपना
मुँह फेर लिया था उन्हें मैं चारों तरफ़ से तेरे
ख़िलाफ़ लाऊँगा। 23बाबल, कसदियों, फ़िक़ोद,
शोअ और क़ोअ के फ़ौजी मिलकर तुझ पर टूट
पड़ेंगे। घुड़सवार असूरी भी उनमें शामिल होंगे,
ऐसे ख़ूबसूरत जवान जो सब गवर्नर, अफ़सर,
रथसवार फ़ौजी और ऊँचे तबक़े के अफ़राद होंगे।
24शिमाल से वह रथों और मुख़्तलिफ़ क़ौमों के
मुतअद्दिद फ़ौजियों समेत तुझ पर हमला करेंगे।
वह तुझे यों घेर लेंगे कि हर तरफ़ छोटी और
बड़ी ढालें, हर तरफ़ ख़ोद नज़र आएँगे। मैं तुझे
उनके हवाले कर दूँगा ताकि वह तुझे सज़ा देकर
अपने क़वानीन के मुताबिक़ तेरी अदालत करें।
25तू मेरी ग़ैरत का तजरबा करेगी, क्योंकि यह
लोग ग़ुस्से में तुझसे निपट लेंगे। वह तेरी नाक
और कानों को काट डालेंगे और बचे हुओं को
तलवार से मौत के घाट उतारेंगे। तेरे बेटे-बेटियों
को वह ले जाएंगे, और जो कुछ उनके पीछे रह
जाए वह भस्म हो जाएगा। 26वह तेरे लिबास और
तेरे ज़ेवरात को तुझ पर से उतारेंगे।

27यों मैं तेरी वह फ़हहाशी और ज़िनाकारी रोक
दूँगा जिसका सिलसिला तूने मिसर में शुरू किया
था। तब न तू आरज़ूमंद नज़रों से इन चीज़ों की
तरफ़ देखेगी, न मिसर को याद करेगी। 28क्योंकि
रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं तुझे उनके
हवाले करने को हूँ जो तुझसे नफ़रत करते हैं,
उनके हवाले जिनसे तूने तंग आकर अपना मुँह
फेर लिया था। 29वह बड़ी नफ़रत से तेरे साथ
पेश आएँगे। जो कुछ तूने मेहनत से कमाया उसे
वह छीनकर तुझे नंगी और बरहना छोड़ेंगे। तब
तेरी ज़िनाकारी का शर्मनाक अंजाम और तेरी
फ़हहाशी सब पर ज़ाहिर हो जाएगी। 30तब तुझे
इसका अज्र मिलेगा कि तू क़ौमों के पीछे पड़कर
ज़िना करती रही, कि तूने उनके बुतों की पूजा
करके अपने आपको नापाक कर दिया है।

31तू अपनी बहन के नमूने पर चल पड़ी,
इसलिए मैं तुझे वही प्याला पिलाऊँगा जो उसे
पीना पड़ा। 32रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
तुझे अपनी बहन का प्याला पीना पड़ेगा जो बड़ा
और गहरा है। और तू उस वक़्त तक उसे पीती
रहेगी जब तक मज़ाक़ और लान-तान का निशाना
न बन गई हो। 33दहशत और तबाही का प्याला
पी पीकर तू मदहोशी और दुख से भर जाएगी। तू
अपनी बहन सामरिया का यह प्याला 34आख़िरी
क़तरे तक पी लेगी, फिर प्याले को पाश पाश
करके उसके टुकड़े चबा लेगी और अपने सीने को
फाड़ लेगी।' यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान
है। 35रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, 'तूने मुझे
भूलकर अपना मुँह मुझसे फेर लिया है। अब
तुझे अपनी फ़हहाशी और ज़िनाकारी का नतीजा
भुगतना पड़ेगा'।"

36रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, "ऐ
आदमज़ाद, क्या तू अहोला और अहोलीबा की
अदालत करने के लिए तैयार है? फिर उन पर
उनकी मकरूह हरकतें ज़ाहिर कर। 37उनसे दो
जुर्म सरज़द हुए हैं, ज़िना और क़त्ल। उन्होंने बुतों
से ज़िना किया और अपने बच्चों को जलाकर उन्हें
खिलाया, उन बच्चों को जो उन्होंने मेरे हाँ जन्म
दिए थे। 38लेकिन यह उनके लिए काफ़ी नहीं
था। साथ साथ उन्होंने मेरा मक़दिस नापाक और
मेरे सबत के दिनों की बेहुरमती की। 39क्योंकि
जब कभी वह अपने बच्चों को अपने बुतों के हुज़ूर
क़ुरबान करती थीं उसी दिन वह मेरे घर में आकर

उस की बेहुरमती करती थीं। मेरे ही घर में वह ऐसी हरकतें करती थीं।

40यह भी इन दो बहनों के लिए काफ़ी नहीं था बल्कि आदमियों की तलाश में उन्होंने अपने क़ासिदों को दूर दूर तक भेज दिया। जब मर्द पहुँचे तो तूने उनके लिए नहाकर अपनी आँखों में सुरमा लगाया और अपने ज़ेवरात पहन लिए। 41फिर तू शानदार सोफ़े पर बैठ गई। तेरे सामने मेज़ थी जिस पर तूने मेरे लिए मख़सूस बख़ूर और तेल रखा था। 42रेगिस्तान से सिबा के मुतअद्दिद आदमी लाए गए तो शहर में शोर मच गया, और लोगों ने सुकून का साँस लिया। आदमियों ने दोनों बहनों के बाज़ुओं में कड़े पहनाए और उनके सरों पर शानदार ताज रखे। 43तब मैंने ज़िनाकारी से घिसी-फटी औरत के बारे में कहा, 'अब वह उसके साथ ज़िना करें, क्योंकि वह ज़िनाकार ही है।' 44ऐसा ही हुआ। मर्द उन बेहया बहनों अहोला और अहोलीबा से यों हमबिसतर हुए जिस तरह कसबियों से।

45लेकिन रास्तबाज़ आदमी उनकी अदालत करके उन्हें ज़िना और क़त्ल के मुजरिम ठहराएँगे। क्योंकि दोनों बहनें ज़िनाकार और क़ातिल ही हैं। 46रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि उनके ख़िलाफ़ जुलूस निकालकर उन्हें दहशत और लूट-मार के हवाले करो। 47लोग उन्हें संगसार करके तलवार से टुकड़े टुकड़े करें, वह उनके बेटे-बेटियों को मार डालें और उनके घरों को नज़रे-आतिश करें।

48यों मैं मुल्क में ज़िनाकारी ख़त्म करूँगा। इससे तमाम औरतों को तंबीह मिलेगी कि वह तुम्हारे शर्मनाक नमूने पर न चलें। 49तुम्हें ज़िनाकारी और बुतपरस्ती की मुनासिब सज़ा मिलेगी। तब तुम जान लोगी कि मैं रब क़ादिरे-मुतलक़ हूँ।"

यरूशलम आग पर ज़ंगआलूदा देग है

24 यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के नवें साल में रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ। दसवें महीने का दसवाँ दिन[a] था। पैग़ाम यह था, 2"ऐ आदमज़ाद, इसी दिन की तारीख़ लिख ले, क्योंकि इसी दिन शाहे-बाबल यरूशलम का मुहासरा करने लगा है। 3फिर इस सरकश क़ौम इसराईल को तमसील पेश करके बता,

'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि आग पर देग रखकर उसमें पानी डाल दे। 4फिर उसे बेहतरीन गोश्त से भर दे। रान और शाने के टुकड़े, नीज़ बेहतरीन हड्डियाँ उसमें डाल दे। 5सिर्फ़ बेहतरीन भेड़ों का गोश्त इस्तेमाल कर। ध्यान दे कि देग के नीचे आग ज़ोर से भड़कती रहे। गोश्त को हड्डियों समेत ख़ूब पकने दे।

6रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि यरूशलम पर अफ़सोस जिसमें इतना ख़ून बहाया गया है! यह शहर देग है जिसमें ज़ंग लगा है, ऐसा ज़ंग जो उतरता नहीं। अब गोश्त के टुकड़ों को यके बाद दीगरे देग से निकाल दे। उन्हें किसी तरतीब से मत निकालना बल्कि क़ुरा डाले बग़ैर निकाल दे।

7जो ख़ून यरूशलम ने बहाया वह अब तक उसमें मौजूद है। क्योंकि वह मिट्टी पर न गिरा जो उसे जज़ब कर सकती बल्कि नंगी चट्टान पर। 8मैंने ख़ुद यह ख़ून नंगी चट्टान पर बहने दिया ताकि वह छुप न जाए बल्कि मेरा ग़ज़ब यरूशलम पर नाज़िल हो जाए और मैं बदला लूँ।

9रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि यरूशलम पर अफ़सोस जिसने इतना ख़ून बहाया है! मैं भी तेरे नीचे लकड़ी का बड़ा ढेर लगाऊँगा। 10आ, लकड़ी का बड़ा ढेर करके आग लगा दे। गोश्त को ख़ूब पका, फिर शोरबा निकालकर हड्डियों को भस्म होने दे। 11इसके बाद ख़ाली देग को जलते कोयलों पर रख दे ताकि पीतल गरम

[a]15 जनवरी।

होकर तमतमाने लगे और देग में मैल पिघल जाए,
उसका ज़ंग उतर जाए।
12लेकिन बेफ़ायदा! इतना ज़ंग लगा है कि वह
आग में भी नहीं उतरता।
13ऐ यरूशलम, अपनी बेहया हरकतों से तूने
अपने आपको नापाक कर दिया है। अगरचे मैं ख़ुद
तुझे पाक-साफ़ करना चाहता था तो भी तू पाक-
साफ़ न हुई। अब तू उस वक़्त तक पाक नहीं होगी
जब तक मैं अपना पूरा ग़ुस्सा तुझ पर उतार न लूँ।
14मेरे रब का यह फ़रमान पूरा होनेवाला है, और
मैं ध्यान से उसे अमल में लाऊँगा। न मैं तुझ पर
तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा। मैं तेरे चाल-चलन
और आमाल के मुताबिक़ तेरी अदालत करूँगा।'
यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।"

बीवी की वफ़ात पर हिज़क़ियेल मातम न करे

15रब मुझसे हमकलाम हुआ, 16"ऐ
आदमज़ाद, मैं तुझसे अचानक तेरी आँख का
तारा छीन लूँगा। लेकिन लाज़िम है कि तू न
आहो-ज़ारी करे, न आँसू बहाए। 17बेशक चुपके
से कराहता रह, लेकिन अपनी अज़ीज़ा के लिए
अलानिया मातम न कर। न सर से पगड़ी उतार
और न पाँवों से जूते। न दाढ़ी को ढाँपना, न
जनाज़े का खाना खा।"
18सुबह को मैंने क़ौम को यह पैग़ाम सुनाया,
और शाम को मेरी बीवी इंतक़ाल कर गई। अगली
सुबह मैंने वह कुछ किया जो रब ने मुझे करने को
कहा था। 19यह देखकर लोगों ने मुझसे पूछा,
"आपके रवय्ये का हमारे साथ क्या ताल्लुक़ है?
ज़रा हमें बताएँ।"
20मैंने जवाब दिया, "रब ने मुझे 21आप
इसराईलियों को यह पैग़ाम सुनाने को कहा, 'रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरा घर तुम्हारे
नज़दीक पनाहगाह है जिस पर तुम फ़ख़र करते
हो। लेकिन यह मक़दिस जो तुम्हारी आँख का
तारा और जान का प्यारा है तबाह होनेवाला है। मैं
उस की बेहुरमती करने को हूँ। और तुम्हारे जितने
बेटे-बेटियाँ यरूशलम में पीछे रह गए थे वह सब
तलवार की ज़द में आकर मर जाएंगे। 22तब तुम
वह कुछ करोगे जो हिज़क़ियेल इस वक़्त कर रहा
है। न तुम अपनी दाढ़ियों को ढाँपोगे, न जनाज़े
का खाना खाओगे। 23न तुम सर से पगड़ी, न
पाँवों से जूते उतारोगे। तुम्हारे हाँ न मातम का
शोर, न रोने की आवाज़ सुनाई देगी बल्कि तुम
अपने गुनाहों के सबब से ज़ाया होते जाओगे। तुम
चुपके से एक दूसरे के साथ बैठकर कराहते रहोगे।
24हिज़क़ियेल तुम्हारे लिए निशान है। जो कुछ वह
इस वक़्त कर रहा है वह तुम भी करोगे। तब तुम
जान लोगे कि मैं रब क़ादिरे-मुतलक़ हूँ'।"
25रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, "ऐ
आदमज़ाद, यह घर इसराईलियों के नज़दीक
पनाहगाह है जिसके बारे में वह ख़ास ख़ुशी
महसूस करते हैं, जिस पर वह फ़ख़र करते हैं।
लेकिन मैं यह मक़दिस जो उनकी आँख का तारा
और जान का प्यारा है उनसे छीन लूँगा और साथ
साथ उनके बेटे-बेटियों को भी। जिस दिन यह
पेश आएगा 26उस दिन एक आदमी बचकर तुझे
इसकी ख़बर पहुँचाएगा। 27उसी वक़्त तू दुबारा
बोल सकेगा। तू गूँगा नहीं रहेगा बल्कि उससे बातें
करने लगेगा। यों तू इसराईलियों के लिए निशान
होगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।"

अम्मोनियों का मुल्क उन से छीन लिया जाएगा

25 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2"ऐ
आदमज़ाद, अम्मोनियों के मुल्क की
तरफ़ रुख़ करके उनके ख़िलाफ़ नबुव्वत कर।
3उन्हें बता,
'सुनो रब क़ादिरे-मुतलक़ का कलाम! वह
फ़रमाता है कि ऐ अम्मोन बेटी, तूने ख़ुश होकर
क़हक़हा लगाया जब मेरे मक़दिस की बेहुरमती
हुई, मुल्के-इसराईल तबाह हुआ और यहूदाह
के बाशिंदे जिलावतन हुए। 4इसलिए मैं तुझे
मशरिक़ी क़बीलों के हवाले करूँगा जो अपने डेरे
तुझमें लगाकर पूरी बस्तियाँ क़ायम करेंगे। वह
तेरा ही फल खाएँगे, तेरा ही दूध पिएँगे। 5रब्बा

शहर को मैं ऊँटों की चरागाह में बदल दूँगा और
मुल्के-अम्मोन को भेड़-बकरियों की आरामगाह
बना दूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।
6क्योंकि रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
तूने तालियाँ बजा बजाकर और पाँव ज़मीन पर
मार मारकर इसराईल के अंजाम पर अपनी दिली
ख़ुशी का इज़हार किया। तेरी इसराईल के लिए
हिक़ारत साफ़ तौर पर नज़र आई। 7इसलिए
मैं अपना हाथ तेरे ख़िलाफ़ बढ़ाकर तुझे दीगर
अक़वाम के हवाले कर दूँगा ताकि वह तुझे लूट
लें। मैं तुझे यों मिटा दूँगा कि अक़वामो-ममालिक
में तेरा नामो-निशान तक नहीं रहेगा। तब तू जान
लेगी कि मैं ही रब हूँ'।"

मोआब के शहर तबाह हो जाएंगे

8"रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मोआब
और सईर इसराईल का मज़ाक़ उड़ाकर कहते
हैं, 'लो, देखो यहूदाह के घराने का हाल! अब
वह भी बाक़ी क़ौमों की तरह बन गया है।'
9इसलिए मैं मोआब की पहाड़ी ढलानों को
उनके शहरों से महरूम करूँगा। मुल्क के एक
सिरे से दूसरे सिरे तक एक भी आबादी नहीं
रहेगी। गो मोआबी अपने शहरों बैत-यसीमोत,
बाल-मऊन और क़िरियतायम पर ख़ास फ़ख़र
करते हैं, लेकिन वह भी ज़मीनबोस हो जाएंगे।
10अम्मोन की तरह मैं मोआब को भी मशरिक़ी
क़बीलों के हवाले करूँगा। आख़िरकार अक़वाम
में अम्मोनियों की याद तक नहीं रहेगी, 11और
मोआब को भी मुझसे मुनासिब सज़ा मिलेगी। तब
वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।"

अल्लाह अदोमियों से इंतक़ाम लेगा

12"रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि यहूदाह
से इंतक़ाम लेने से अदोम ने संगीन गुनाह किया
है। 13इसलिए मैं अपना हाथ अदोम के ख़िलाफ़
बढ़ाकर उसके इनसानो-हैवान को मार डालूँगा,
और वह तलवार से मारे जाएंगे। तेमान से लेकर
ददान तक यह मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाएगा।
यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है। 14रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि अपनी क़ौम के
हाथों मैं अदोम से बदला लूँगा, और इसराईल मेरे
ग़ज़ब और क़हर के मुताबिक़ ही अदोम से निपट
लेगा। तब वह मेरा इंतक़ाम जान लेंगे।"

फ़िलिस्तियों का ख़ातमा

15"रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
फ़िलिस्तियों ने बड़े ज़ुल्म के साथ यहूदाह से
बदला लिया है। उन्होंने उस पर अपनी दिली
हिक़ारत और दायमी दुश्मनी का इज़हार किया
और इंतक़ाम लेकर उसे तबाह करने की कोशिश
की। 16इसलिए रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है
कि मैं अपना हाथ फ़िलिस्तियों के ख़िलाफ़ बढ़ाने
को हूँ। मैं इन करेतियों और साहिली इलाक़े के
बचे हुओं को मिटा दूँगा। 17मैं अपना ग़ज़ब उन
पर नाज़िल करके सख़्ती से उनसे बदला लूँगा।
तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।"

सूर का सत्यानास

26 यहूयाकीन बादशाह की जिला-
वतनी के 11वें साल में रब मुझसे
हमकलाम हुआ। महीने का पहला दिन था।
2"ऐ आदमज़ाद, सूर बेटी यरूशलम की तबाही
देखकर ख़ुश हुई है। वह कहती है, 'लो, अक़वाम
का दरवाज़ा टूट गया है! अब मैं ही इसकी
ज़िम्मेदारियाँ निभाऊँगी। अब जब यरूशलम
वीरान है तो मैं ही फ़रोग़ पाऊँगी।'
3जवाब में रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
ऐ सूर, मैं तुझसे निपट लूँगा! मैं मुतअद्दिद क़ौमों
को तेरे ख़िलाफ़ भेजूँगा। समुंदर की ज़बरदस्त
मौजों की तरह वह तुझ पर टूट पड़ेंगी। 4वह सूर
शहर की फ़सील को ढाकर उसके बुर्जों को ख़ाक
में मिला देंगी। तब मैं उसे इतने ज़ोर से झाड़ दूँगा
कि मिट्टी तक नहीं रहेगी। ख़ाली चट्टान ही नज़र
आएगी। 5रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि वह
समुंदर के दरमियान ऐसी जगह रहेगी जहाँ मछेरे
अपने जालों को सुखाने के लिए बिछा देंगे। दीगर

अक़वाम उसे लूट लेंगी, 6और ख़ुश्की पर उस की आबादियाँ तलवार की ज़द में आ जाएँगी। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।

7क्योंकि रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं बाबल के बादशाह नबूकदनज़्ज़र को तेरे ख़िलाफ़ भेजूँगा जो घोड़े, रथ, घुड़सवार और बड़ी फ़ौज लेकर शिमाल से तुझ पर हमला करेगा। 8ख़ुश्की पर तेरी आबादियों को वह तलवार से तबाह करेगा, फिर पुश्ते और बुर्जों से तुझे घेर लेगा। उसके फ़ौजी अपनी ढालें उठाकर तुझ पर हमला करेंगे। 9बादशाह अपनी क़िलाशिकन मशीनों से तेरी फ़सील को ढा देगा और अपने आलात से तेरे बुर्जों को गिरा देगा। 10जब उसके बेशुमार घोड़े चल पड़ेंगे तो इतनी गर्द उड़ जाएगी कि तू उसमें डूब जाएगी। जब बादशाह तेरी फ़सील को तोड़ तोड़कर तेरे दरवाज़ों में दाख़िल होगा तो तेरी दीवारें घोड़ों और रथों के शोर से लरज़ उठेंगी। 11उसके घोड़ों के खुर तेरी तमाम गलियों को कुचल देंगे, और तेरे बाशिंदे तलवार से मर जाएंगे, तेरे मज़बूत सतून ज़मीनबोस हो जाएंगे। 12दुश्मन तेरी दौलत छीन लेंगे और तेरी तिजारत का माल लूट लेंगे। वह तेरी दीवारों को गिराकर तेरी शानदार इमारतों को मिसमार करेंगे, फिर तेरे पत्थर, लकड़ी और मलबा समुंदर में फेंक देंगे। 13मैं तेरे गीतों का शोर बंद करूँगा। आइंदा तेरे सरोदों की आवाज़ सुनाई नहीं देगी। 14मैं तुझे नंगी चट्टान में तबदील करूँगा, और मछेरे तुझे अपने जाल बिछाकर सुखाने के लिए इस्तेमाल करेंगे। आइंदा तुझे कभी दुबारा तामीर नहीं किया जाएगा। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

15रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ सूर बेटी, साहिली इलाक़े काँप उठेंगे जब तू धड़ाम से गिर जाएगी, जब हर तरफ़ ज़ख़मी लोगों की कराहती आवाज़ें सुनाई देंगी, हर गली में क़त्लो-ग़ारत का शोर मचेगा। 16तब साहिली इलाक़ों के तमाम हुक्मरान अपने तख़्तों से उतरकर अपने चोग़े और शानदार लिबास उतारेंगे। वह मातमी कपड़े पहनकर ज़मीन पर बैठ जाएंगे और बार बार लरज़ उठेंगे, यहाँ तक वह तेरे अंजाम पर परेशान होंगे। 17तब वह तुझ पर मातम करके गीत गाएँगे,

‘हाय, तू कितने धड़ाम से गिरकर तबाह हुई है! ऐ साहिली शहर, ऐ सूर बेटी, पहले तू अपने बाशिंदों समेत समुंदर के दरमियान रहकर कितनी मशहूर और ताक़तवर थी। गिर्दो-नवाह के तमाम बाशिंदे तुझसे दहशत खाते थे। 18अब साहिली इलाक़े तेरे अंजाम को देखकर थरथरा रहे हैं। समुंदर के जज़ीरे तेरे ख़ातमे की ख़बर सुनकर दहशतज़दा हो गए हैं।’

19रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ सूर बेटी, मैं तुझे वीरानो-सुनसान करूँगा। तू उन दीगर शहरों की मानिंद बन जाएगी जो नेस्तो-नाबूद हो गए हैं। मैं तुझ पर सैलाब लाऊँगा, और गहरा पानी तुझे ढाँप देगा। 20मैं तुझे पाताल में उतरने दूँगा, और तू उस क़ौम के पास पहुँचेगी जो क़दीम ज़माने से ही वहाँ बसती है। तब तुझे ज़मीन की गहराइयों में रहना पड़ेगा, वहाँ जहाँ क़दीम ज़मानों के खंडरात हैं। तू मुरदों के मुल्क में रहेगी और कभी ज़िंदगी के मुल्क में वापस नहीं आएगी, न वहाँ अपना मक़ाम दुबारा हासिल करेगी। 21मैं होने दूँगा कि तेरा अंजाम दहशतनाक होगा, और तू सरासर तबाह हो जाएगी। लोग तेरा खोज लगाएँगे लेकिन तुझे कभी नहीं पाएँगे। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।”

सूर के अंजाम पर मातमी गीत

27 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ आदमज़ाद, सूर बेटी पर मातमी गीत गा, 3उस शहर पर जो समुंदर की गुज़रगाह पर वाक़े है और मुतअद्दिद साहिली क़ौमों से तिजारत करता है। उससे कह,

‘रब फ़रमाता है कि ऐ सूर बेटी, तू अपने आप पर बहुत फ़ख़र करके कहती है कि वाह, मेरा हुस्न कमाल का है। 4और वाक़ई, तेरा इलाक़ा समुंदर के बीच में ही है, और जिन्होंने तुझे तामीर किया उन्होंने तेरे हुस्न को तकमील तक पहुँचाया,

5तुझे शानदार बहरी जहाज़ की मानिंद बनाया।
तेरे तख़्ते सनीर में उगनेवाले जूनीपर के दरख़्तों
से बनाए गए, तेरा मस्तूल लुबनान का देवदार का
दरख़्त था। 6तेरे चप्पू बसन के बलूत के दरख़्तों
से बनाए गए, जबकि तेरे फ़र्श के लिए क़ुबरुस
से सरो की लकड़ी लाई गई, फिर उसे हाथीदाँत
से आरास्ता किया गया। 7नफ़ीस कतान का तेरा
रंगदार बादबान मिसर का था। वह तेरा इम्तियाज़ी
निशान बन गया। तेरे तिरपालों का क़िरमिज़ी और
अरग़वानी रंग इलीसा के साहिली इलाक़े से लाया
गया।

8सैदा और अरवद के मर्द तेरे चप्पू मारते थे,
सूर के अपने ही दाना तेरे मल्लाह थे। 9जबल[a] के
बुज़ुर्ग और दानिशमंद आदमी ध्यान देते थे कि तेरी
दर्ज़ें बंद रहें। तमाम बहरी जहाज़ अपने मल्लाहों
समेत तेरे पास आया करते थे ताकि तेरे साथ
तिजारत करें। 10फ़ारस, लुदिया और लिबिया
के अफ़राद तेरी फ़ौज में ख़िदमत करते थे। तेरी
दीवारों से लटकी उनकी ढालों और ख़ोदों ने तेरी
शान मज़ीद बढ़ा दी। 11अरवद और ख़लक[b] के
आदमी तेरी फ़सील का दिफ़ा करते थे, जम्माद के
फ़ौजी तेरे बुर्जों में पहरादारी करते थे। तेरी दीवारों
से लटकी हुई उनकी ढालों ने तेरे हुस्न को कमाल
तक पहुँचा दिया।

12तू अमीर थी, तुझमें मालो-असबाब की
कसरत की तिजारत की जाती थी। इसलिए
तरसीस तुझे चाँदी, लोहा, टीन और सीसा देकर
तुझसे सौदा करता था। 13यूनान, तूबल और
मसक तुझसे तिजारत करते, तेरा माल ख़रीदकर
मुआवज़े में ग़ुलाम और पीतल का सामान देते
थे। 14बैत-तुजरमा के ताजिर तेरे माल के लिए
तुझे आम घोड़े, फ़ौजी घोड़े और ख़च्चर पहुँचाते
थे। 15ददान के आदमी तेरे साथ तिजारत करते
थे, हाँ मुतअद्दिद साहिली इलाक़े तेरे गाहक थे।
उनके साथ सौदाबाज़ी करके तुझे हाथीदाँत और
आबनूस की लकड़ी मिलती थी। 16शाम तेरी
पैदावार की कसरत की वजह से तेरे साथ तिजारत
करता था। मुआवज़े में तुझे फ़ीरोज़ा, अरग़वानी
रंग, रंगदार कपड़े, बारीक कतान, मूँगा और
याक़ूत मिलता था। 17यहूदाह और इसराईल तेरे
गाहक थे। तेरा माल ख़रीदकर वह तुझे मिन्नीत
का गंदुम, पन्नग की टिक्कियाँ, शहद, ज़ैतून
का तेल और बलसान देते थे। 18दमिश्क़ तेरी
वाफ़िर पैदावार और माल की कसरत की वजह
से तेरे साथ कारोबार करता था। उससे तुझे
हलबून की मै और साहर की ऊन मिलती थी।
19विदान और यूनान तेरे गाहक थे। वह ऊज़ाल
का ढाला हुआ लोहा, दारचीनी और कलमस
का मसाला पहुँचाते थे। 20ददान से तिजारत
करने से तुझे ज़ीनपोश मिलती थी। 21अरब और
क़ीदार के तमाम हुक्मरान तेरे गाहक थे। तेरे
माल के एवज़ वह भेड़ के बच्चे, मेंढे और बकरे
देते थे। 22सबा और रामा के ताजिर तेरा माल
हासिल करने के लिए तुझे बेहतरीन बलसान, हर
क़िस्म के जवाहिर और सोना देते थे। 23हारान,
कन्ना, अदन, सबा, असूर और कुल मादी सब तेरे
साथ तिजारत करते थे। 24वह तेरे पास आकर
तुझे शानदार लिबास, क़िरमिज़ी रंग की चादरें,
रंगदार कपड़े और कम्बल, नीज़ मज़बूत रस्से पेश
करते थे। 25तरसीस के उम्दा जहाज़ तेरा माल
मुख़्तलिफ़ ममालिक में पहुँचाते थे। यों तू जहाज़
की मानिंद समुंदर के बीच में रहकर दौलत और
शान से मालामाल हो गई। 26तेरे चप्पू चलानेवाले
तुझे दूर दूर तक पहुँचाते हैं।

लेकिन वह वक़्त क़रीब है जब मशरिक़ से तेज़
आँधी आकर तुझे समुंदर के दरमियान ही टुकड़े
टुकड़े कर देगी। 27जिस दिन तू गिर जाएगी उस
दिन तेरी तमाम मिलकियत समुंदर के बीच में ही
डूब जाएगी। तेरी दौलत, तेरा सौदा, तेरे मल्लाह,
तेरे बहरी मुसाफ़िर, तेरी दर्ज़ें बंद रखनेवाले, तेरे
ताजिर, तेरे तमाम फ़ौजी और बाक़ी जितने भी
तुझ पर सवार हैं सबके सब ग़रक़ हो जाएंगे।

[a]Biblos

[b]ग़ालिबन Cilicia।

28तेरे मल्लाहों की चीख़ती-चिल्लाती आवाज़ें
सुनकर साहिली इलाक़े काँप उठेंगे। 29तमाम
चप्पू चलानेवाले, मल्लाह और बहरी मुसाफ़िर
अपने जहाज़ों से उतरकर साहिल पर खड़े हो
जाएंगे। 30वह ज़ोर से रो पड़ेंगे, बड़ी तलख़ी
से गिर्याओ-ज़ारी करेंगे। अपने सरों पर ख़ाक
डालकर वह राख में लोट-पोट हो जाएंगे। 31तेरी
ही वजह से वह अपने सरों को मुँडवाकर टाट का
लिबास ओढ़ लेंगे, वह बड़ी बेचैनी और तलख़ी
से तुझ पर मातम करेंगे। 32तब वह ज़ारो-क़तार
रोकर मातम का गीत गाएँगे,

"हाय, कौन समुंदर से घिरे हुए सूर की तरह
ख़ामोश हो गया है?"

33जब तिजारत का माल समुंदर की चारों तरफ़
से तुझ तक पहुँचता था तो तू मुतअद्दिद क़ौमों को
सेर करती थी। दुनिया के बादशाह तेरी दौलत और
तिजारती सामान की कसरत से अमीर हुए।

34अफ़सोस! अब तू पाश पाश होकर समुंदर
की गहराइयों में ग़ायब हो गई है। तेरा माल और
तेरे तमाम अफ़राद तेरे साथ डूब गए हैं।

35साहिली इलाक़ों में बसनेवाले घबरा गए हैं।
उनके बादशाहों के रोंगटे खड़े हो गए, उनके चेहरे
परेशान नज़र आते हैं।

36दीगर अक़वाम के ताजिर तुझे देखकर
"तौबा तौबा" कहते हैं। तेरा हौलनाक अंजाम
अचानक ही आ गया है। अब से तू कभी नहीं
उठेगी'।"

सूर के हुक्मरान के लिए पैग़ाम

28 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2"ऐ
आदमज़ाद, सूर के हुक्मरान को बता,

'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि तू मग़रूर
हो गया है। तू कहता है कि मैं ख़ुदा हूँ, मैं
समुंदर के दरमियान ही अपने तख़्ते-इलाही पर
बैठा हूँ। लेकिन तू ख़ुदा नहीं बल्कि इनसान
है, गो तू अपने आपको ख़ुदा-सा समझता है।
3बेशक तू अपने आपको दानियाल से कहीं ज़्यादा
दानिशमंद समझकर कहता है कि कोई भी भेद
मुझसे पोशीदा नहीं रहता। 4और यह हक़ीक़त
भी है कि तूने अपनी हिकमत और समझ से बहुत
दौलत हासिल की है, सोने और चाँदी से अपने
ख़ज़ानों को भर दिया है। 5बड़ी दानिशमंदी से तूने
तिजारत के ज़रीए अपनी दौलत बढ़ाई। लेकिन
जितनी तेरी दौलत बढ़ती गई उतना ही तेरा ग़ुरूर
भी बढ़ता गया।

6चुनाँचे रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
चूँकि तू अपने आपको ख़ुदा-सा समझता है
7इसलिए मैं सबसे ज़ालिम क़ौमों को तेरे ख़िलाफ़
भेजूँगा जो अपनी तलवारों को तेरी ख़ूबसूरती
और हिकमत के ख़िलाफ़ खींचकर तेरी शानो-
शौकत की बेहुरमती करेंगी। 8वह तुझे पाताल में
उतारेंगी। समुंदर के बीच में ही तुझे मार डाला
जाएगा। 9क्या तू उस वक़्त अपने क़ातिलों से
कहेगा कि मैं ख़ुदा हूँ? हरगिज़ नहीं! अपने
क़ातिलों के हाथ में होते वक़्त तू ख़ुदा नहीं बल्कि
इनसान साबित होगा। 10तू अजनबियों के हाथों
नामख़तून की-सी वफ़ात पाएगा। यह मेरा, रब
क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है'।"

11रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, 12"ऐ
आदमज़ाद, सूर के बादशाह पर मातमी गीत
गाकर उससे कह,

'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुझ
पर कामिलियत का ठप्पा था। तू हिक-
मत से भरपूर था, तेरा हुस्न कमाल का था।
13अल्लाह के बाग़े-अदन में रहकर तू हर क़िस्म
के जवाहिर से सजा हुआ था। लाल,[a] ज़बरजद,[b]
हजरुल-क़मर,[c] पुखराज,[d] अक़ीक़े-अहमर[e] और

[a]या एक क़िस्म का सुर्ख़ अक़ीक़। याद रहे कि चूँकि क़दीम ज़माने के अकसर जवाहिरात के नाम मतरूक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़्तलिफ़ तरजुमा हो सकता है।

[b]peridot
[c]moonstone
[d]topas
[e]carnelian

यशब,[a] संगे-लाजवर्द,[b] फ़ीरोज़ा और ज़ुमुर्रद सब तुझे आरास्ता करते थे। सब कुछ सोने के काम से मज़ीद ख़ूबसूरत बनाया गया था। जिस दिन तुझे ख़लक़ किया गया उसी दिन यह चीज़ें तेरे लिए तैयार हुईं।

14मैंने तुझे अल्लाह के मुक़द्दस पहाड़ पर खड़ा किया था। वहाँ तू करूबी फ़रिश्ते की हैसियत से अपने पर फैलाए पहरादारी करता था, वहाँ तू जलते हुए पत्थरों के दरमियान ही घुमता-फिरता रहा।

15जिस दिन तुझे ख़लक़ किया गया तेरा चाल-चलन बेइलज़ाम था, लेकिन अब तुझमें नाइनसाफ़ी पाई गई है। **16**तिजारत में कामयाबी की वजह से तू ज़ुल्मो-तशद्दुद से भर गया और गुनाह करने लगा।

यह देखकर मैंने तुझे अल्लाह के पहाड़ पर से उतार दिया। मैंने तुझे जो पहरादारी करनेवाला फ़रिश्ता था तबाह करके जलते हुए पत्थरों के दरमियान से निकाल दिया। **17**तेरी ख़ूबसूरती तेरे लिए ग़ुरूर का बाइस बन गई, हाँ तेरी शानो-शौकत ने तुझे इतना फुला दिया कि तेरी हिकमत जाती रही। इसी लिए मैंने तुझे ज़मीन पर पटख़कर दीगर बादशाहों के सामने तमाशा बना दिया। **18**अपने बेशुमार गुनाहों और बेइनसाफ़ तिजारत से तूने अपने मुक़द्दस मक़ामों की बेहुरमती की है। जवाब में मैंने होने दिया कि आग तेरे दरमियान से निकलकर तुझे भस्म करे। मैंने तुझे तमाशा देखनेवाले तमाम लोगों के सामने ही राख कर दिया। **19**जितनी भी क़ौमें तुझे जानती थीं उनके रोंगटे खड़े हो गए। तेरा हौलनाक अंजाम अचानक ही आ गया है। अब से तू कभी नहीं उठेगा'।"

सैदा को सज़ा दी जाएगी

20रब मुझसे हमकलाम हुआ, **21**"ऐ आदमज़ाद, सैदा की तरफ़ रुख़ करके उसके ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! **22**रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ सैदा, मैं तुझसे निपट लूँगा। तेरे दरमियान ही मैं अपना जलाल दिखाऊँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ, क्योंकि मैं शहर की अदालत करके अपना मुक़द्दस किरदार उन पर ज़ाहिर करूँगा। **23**मैं उसमें मोहलक वबा फैलाकर उस की गलियों में ख़ून बहा दूँगा। उसे चारों तरफ़ से तलवार घेर लेगी तो उसमें फँसे हुए लोग हलाक हो जाएंगे। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।

इसराईल की बहाली

24इस वक़्त इसराईल के पड़ोसी उसे हक़ीर जानते हैं। अब तक वह उसे चुभनेवाले ख़ार और ज़ख़मी करनेवाले काँटे हैं। लेकिन आइंदा ऐसा नहीं होगा। तब वह जान लेंगे कि मैं रब क़ादिरे-मुतलक़ हूँ। **25**क्योंकि रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि दीगर अक़वाम के देखते देखते मैं ज़ाहिर करूँगा कि मैं मुक़द्दस हूँ। क्योंकि मैं इसराईलियों को उन अक़वाम में से निकालकर जमा करूँगा जहाँ मैंने उन्हें मुंतशिर कर दिया था। तब वह अपने वतन में जा बसेंगे, उस मुल्क में जो मैंने अपने ख़ादिम याक़ूब को दिया था। **26**वह हिफ़ाज़त से उसमें रहकर घर तामीर करेंगे और अंगूर के बाग़ लगाएँगे। लेकिन जो पड़ोसी उन्हें हक़ीर जानते थे उनकी मैं अदालत करूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं रब उनका ख़ुदा हूँ।"

मिसर को सज़ा मिलेगी

29 यहूयाकीन बादशाह की जिला-वतनी के दसवें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ। दसवें महीने का 11वाँ दिन[c] था। रब ने फ़रमाया, **2**"ऐ आदमज़ाद, मिसर के बादशाह फ़िरौन की तरफ़ रुख़ करके उसके और तमाम मिसर के ख़िलाफ़ नबुव्वत कर!

[a]jasper
[b]lapis lazuli
[c]7 जनवरी।

3उसे बता, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
ऐ शाहे-मिसर फ़िरौन, मैं तुझसे निपटने को हूँ।
बेशक तू एक बड़ा अज़दहा है जो दरियाए-नील
की मुख़्तलिफ़ शाख़ों के बीच में लेटा हुआ कहता
है कि यह दरिया मेरा ही है, मैंने ख़ुद उसे बनाया।
4लेकिन मैं तेरे मुँह में काँटे डालकर तुझे दरिया
से निकाल लाऊँगा। मेरे कहने पर तेरी नदियों
की तमाम मछलियाँ तेरे छिलकों के साथ लगकर
तेरे साथ पकड़ी जाएँगी। 5मैं तुझे इन तमाम
मछलियों समेत रेगिस्तान में फेंक छोड़ूँगा। तू खुले
मैदान में गिरकर पड़ा रहेगा। न कोई तुझे इकट्ठा
करेगा, न जमा करेगा बल्कि मैं तुझे दरिंदों और
परिंदों को खिला दूँगा। 6तब मिसर के तमाम
बाशिंदे जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।

तू इसराईल के लिए सरकंडे की कच्ची छड़ी
साबित हुआ है। 7जब उन्होंने तुझे पकड़ने की
कोशिश की तो तूने टुकड़े टुकड़े होकर उनके
कंधे को ज़ख़मी कर दिया। जब उन्होंने अपना
पूरा वज़न तुझ पर डाला तो तू टूट गया, और
उनकी कमर डाँवाँडोल हो गई। 8इसलिए रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं तेरे ख़िलाफ़
तलवार भेजूँगा जो मुल्क में से इनसानो-हैवान
मिटा डालेगी। 9मुल्के-मिसर वीरानो-सुनसान हो
जाएगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।

चूँकि तूने दावा किया, “दरियाए-नील मेरा ही
है, मैंने ख़ुद उसे बनाया” 10इसलिए मैं तुझसे
और तेरी नदियों से निपट लूँगा। मिसर में हर
तरफ़ खंडरात नज़र आएँगे। शिमाल में मिजदाल
से लेकर जुनूबी शहर असवान बल्कि एथोपिया
की सरहद तक मैं मिसर को वीरानो-सुनसान
कर दूँगा। 11न इनसान और न हैवान का पाँव
उसमें से गुज़रेगा। चालीस साल तक उसमें कोई
नहीं बसेगा। 12इर्दगिर्द के दीगर तमाम ममालिक
की तरह मैं मिसर को भी उजाड़ूँगा, इर्दगिर्द के
दीगर तमाम शहरों की तरह मैं मिसर के शहर भी
मलबे के ढेर बना दूँगा। चालीस साल तक उनकी
यही हालत रहेगी। साथ साथ मैं मिसरियों को
मुख़्तलिफ़ अक़वामो-ममालिक में मुंतशिर कर
दूँगा।

13लेकिन रब क़ादिरे-मुतलक़ यह भी फ़रमाता
है कि चालीस साल के बाद मैं मिसरियों को
उन ममालिक से निकालकर जमा करूँगा जहाँ
मैंने उन्हें मुंतशिर कर दिया था। 14मैं मिसर को
बहाल करके उन्हें उनके आबाई वतन यानी जुनूबी
मिसर में वापस लाऊँगा। वहाँ वह एक ग़ैरअहम
सलतनत क़ायम करेंगे 15जो बाक़ी ममालिक की
निसबत छोटी होगी। आइंदा वह दीगर क़ौमों पर
अपना रोब नहीं डालेंगे। मैं ख़ुद ध्यान दूँगा कि
वह आइंदा इतने कमज़ोर रहें कि दीगर क़ौमों पर
हुकूमत न कर सकें। 16आइंदा इसराईल न मिसर
पर भरोसा करने और न उससे लिपट जाने की
आज़माइश में पड़ेगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही
रब क़ादिरे-मुतलक़ हूँ’।”

शाहे-बाबल को मिसर मिलेगा

17यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के
27वें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ।
पहले महीने का पहला दिन[a] था। उसने
फ़रमाया, 18“ऐ आदमज़ाद, जब शाहे-बाबल
नबूकदनज़्ज़र ने सूर का मुहासरा किया तो उस
की फ़ौज को सख़्त मेहनत करनी पड़ी। हर सर
गंजा हुआ, हर कंधे की जिल्द छिल गई। लेकिन न
उसे और न उस की फ़ौज को मेहनत का मुनासिब
अज्र मिला।

19इसलिए रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
मैं शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र को मिसर दे दूँगा।
उस की दौलत को वह उठाकर ले जाएगा। अपनी
फ़ौज को पैसे देने के लिए वह मिसर को लूट
लेगा। 20चूँकि नबूकदनज़्ज़र और उस की फ़ौज
ने मेरे लिए ख़ूब मेहनत-मशक़्क़त की इसलिए
मैंने उसे मुआवज़े के तौर पर मिसर दे दिया है।
यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

[a]26 अप्रैल।

21जब यह कुछ पेश आएगा तो मैं इसराईल
को नई ताक़त दूँगा। ऐ हिज़क़ियेल, उस वक़्त मैं
तेरा मुँह खोल दूँगा, और तू दुबारा उनके दरमियान
बोलेगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।"

मिसर की ताक़त ख़त्म हो जाएगी

30 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2"ऐ
आदमज़ाद, नबुव्वत करके यह पैग़ाम
सुना दे,

'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि आहो-
ज़ारी करो! उस दिन पर अफ़सोस 3जो
आनेवाला है। क्योंकि रब का दिन क़रीब ही है।
उस दिन घने बादल छा जाएंगे, और मैं अक़वाम
की अदालत करूँगा। 4मिसर पर तलवार नाज़िल
होकर वहाँ के बाशिंदों को मार डालेगी। मुल्क की
दौलत छीन ली जाएगी, और उस की बुनियादों
को ढा दिया जाएगा। यह देखकर एथोपिया लरज़
उठेगा, 5क्योंकि उसके लोग भी तलवार की ज़द
में आ जाएंगे। कई क़ौमों के अफ़राद मिसरियों के
साथ हलाक हो जाएंगे। एथोपिया के, लिबिया के,
लुदिया के, मिसर में बसनेवाले तमाम अजनबी
क़ौमों के, कूब के और मेरे अहद की क़ौम
इसराईल के लोग हलाक हो जाएंगे। 6रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है कि मिसर को सहारा देनेवाले
सब गिर जाएंगे, और जिस ताक़त पर वह फ़ख़र
करता है वह जाती रहेगी। शिमाल में मिजदाल से
लेकर जुनूबी शहर असवान तक उन्हें तलवार मार
डालेगी। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।
7इर्दगिर्द के दीगर ममालिक की तरह मिसर भी
वीरानो-सुनसान होगा, इर्दगिर्द के दीगर शहरों की
तरह उसके शहर भी मलबे के ढेर होंगे। 8जब मैं
मिसर में यों आग लगाकर उसके मददगारों को
कुचल डालूँगा तो लोग जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।

9अब तक एथोपिया अपने आपको मह-
फ़ूज़ समझता है, लेकिन उस दिन मेरी तरफ़
से क़ासिद निकलकर उस मुल्क के बाशिंदों को
ऐसी ख़बर पहुँचाएँगे जिससे वह थरथरा उठेंगे।
क्योंकि क़ासिद कश्तियों में बैठकर दरियाए-नील
के ज़रीए उन तक पहुँचेंगे और उन्हें इत्तला देंगे
कि मिसर तबाह हो गया है। यह सुनकर वहाँ
के लोग काँप उठेंगे। यक़ीन करो, यह दिन जल्द
ही आनेवाला है। 10रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता
है कि शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र के ज़रीए मैं
मिसर की शानो-शौकत छीन लूँगा। 11उसे फ़ौज
समेत मिसर में लाया जाएगा ताकि उसे तबाह
करे। तब अक़वाम में से सबसे ज़ालिम यह लोग
अपनी तलवारों को चलाकर मुल्क को मक़तूलों
से भर देंगे। 12मैं दरियाए-नील की शाख़ों को
ख़ुश्क करूँगा और मिसर को फ़रोख़्त करके शरीर
आदमियों के हवाले कर दूँगा। परदेसियों के ज़रीए
मैं मुल्क और जो कुछ भी उसमें है तबाह कर दूँगा।
यह मेरा, रब का फ़रमान है।

13रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं मिसरी
बुतों को बरबाद करूँगा और मेंफ़िस के मुजस्समे
हटा दूँगा। मिसर में हुक्मरान नहीं रहेगा, और मैं
मुल्क पर ख़ौफ़ तारी करूँगा। 14मेरे हुक्म पर
जुनूबी मिसर बरबाद और ज़ुअन नज़्रे-आतिश
होगा। मैं थीबस की अदालत 15और मिसरी
क़िले पलूसियम पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करूँगा।
हाँ, थीबस की शानो-शौकत नेस्तो-नाबूद हो
जाएगी। 16मैं मिसर को नज़्रे-आतिश करूँगा।
तब पलूसियम दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह
पेचो-ताब खाएगा, थीबस दुश्मन के क़ब्ज़े में
आएगा और मेंफ़िस मुसलसल मुसीबत में फँसा
रहेगा। 17दुश्मन की तलवार हीलियोपुलिस और
बूबस्तिस के जवानों को मार डालेगी जबकि बची
हुई औरतें ग़ुलाम बनकर जिलावतन हो जाएँगी।
18तहफ़नहीस में दिन तारीक हो जाएगा जब मैं
वहाँ मिसर के जुए को तोड़ दूँगा। वहीं उस की
ज़बरदस्त ताक़त जाती रहेगी। घना बादल शहर
पर छा जाएगा, और गिर्दो-नवाह की आबादियाँ
क़ैदी बनकर जिलावतन हो जाएँगी। 19यों मैं
मिसर की अदालत करूँगा और वह जान लेंगे कि
मैं ही रब हूँ'।"

20यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के
ग्यारहवें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ। पहले

महीने का सातवाँ दिन[a] था। उसने फ़रमाया था,
21“ऐ आदमज़ाद, मैंने मिसरी बादशाह फ़िरौन
का बाज़ू तोड़ डाला है। शफ़ा पाने के लिए लाज़िम
था कि बाज़ू पर पट्टी बाँधी जाए, कि टूटी हुई हड्डी
के साथ खपच्ची बाँधी जाए ताकि बाज़ू मज़बूत
होकर तलवार चलाने के क़ाबिल हो जाए। लेकिन
इस क़िस्म का इलाज हुआ नहीं।

22चुनाँचे रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं
मिसरी बादशाह फ़िरौन से निपटकर उसके दोनों
बाज़ुओं को तोड़ डालूँगा, सेहतमंद बाज़ू को भी
और टूटे हुए को भी। तब तलवार उसके हाथ से
गिर जाएगी 23और मैं मिसरियों को मुख़्तलिफ़
अक़वामो-ममालिक में मुंतशिर कर दूँगा।

24मैं शाहे-बाबल के बाज़ुओं को तक़वियत
देकर उसे अपनी ही तलवार पकड़ा दूँगा। लेकिन
फ़िरौन के बाज़ुओं को मैं तोड़ डालूँगा, और वह
शाहे-बाबल के सामने मरनेवाले ज़ख़मी आदमी
की तरह कराह उठेगा। 25शाहे-बाबल के बाज़ुओं
को मैं तक़वियत दूँगा जबकि फ़िरौन के बाज़ू
बेहिसो-हरकत हो जाएंगे। जिस वक़्त मैं अपनी
तलवार को शाहे-बाबल को पकड़ा दूँगा और
वह उसे मिसर के ख़िलाफ़ चलाएगा उस वक़्त
लोग जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। 26हाँ, जिस
वक़्त मैं मिसरियों को दीगर अक़वामो-ममालिक
में मुंतशिर कर दूँगा उस वक़्त वह जान लेंगे कि
मैं ही रब हूँ।”

मिसरी दरख़्त धड़ाम से गिर जाएगा

31 यहूयाकीन बादशाह की जिला-
वतनी के ग्यारहवें साल में रब मुझसे
हमकलाम हुआ। तीसरे महीने का पहला दिन[b]
था। उसने फ़रमाया, 2“ऐ आदमज़ाद, मिसरी
बादशाह फ़िरौन और उस की शानो-शौकत से
कह,

‘कौन तुझ जैसा अज़ीम था? 3तू सरो
का दरख़्त, लुबनान का देवदार का दरख़्त था,
जिसकी ख़ूबसूरत और घनी शाख़ें जंगल को
साया देती थीं। वह इतना बड़ा था कि उस की
चोटी बादलों में ओझल थी। 4पानी की कसरत ने
उसे इतनी तरक़्क़ी दी, गहरे चश्मों ने उसे बड़ा
बना दिया। उस की नदियाँ तने के चारों तरफ़
बहती थीं और फिर आगे जाकर खेत के बाक़ी
तमाम दरख़्तों को भी सेराब करती थीं। 5चुनाँचे
वह दीगर दरख़्तों से कहीं ज़्यादा बड़ा था। उस
की शाख़ें बढ़ती और उस की टहनियाँ लंबी होती
गईं। वाफ़िर पानी के बाइस वह ख़ूब फैलता गया।
6तमाम परिंदे अपने घोंसले उस की शाख़ों में
बनाते थे। उस की शाख़ों की आड़ में जंगली
जानवरों के बच्चे पैदा होते, उसके साये में तमाम
अज़ीम क़ौमें बसती थीं। 7चूँकि दरख़्त की जड़ों
को पानी की कसरत मिलती थी इसलिए उस की
लंबाई और शाख़ें क़ाबिले-तारीफ़ और ख़ूबसूरत
बन गईं। 8बाग़े-ख़ुदा के देवदार के दरख़्त उसके
बराबर नहीं थे। न जूनीपर की टहनियाँ, न चनार
की शाख़ें उस की शाख़ों के बराबर थीं। बाग़े-
ख़ुदा में कोई भी दरख़्त उस की ख़ूबसूरती का
मुक़ाबला नहीं कर सकता था। 9मैंने ख़ुद उसे
मुतअद्दिद डालियाँ मुहैया करके ख़ूबसूरत बनाया
था। अल्लाह के बाग़े-अदन के तमाम दीगर दरख़्त
उससे रश्क खाते थे।

10लेकिन अब रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़र-
माता है कि जब दरख़्त इतना बड़ा हो गया कि
उस की चोटी बादलों में ओझल हो गई तो वह
अपने क़द पर फ़ख़र करके मग़रूर हो गया।

11यह देखकर मैंने उसे अक़वाम के सबसे बड़े
हुक्मरान के हवाले कर दिया ताकि वह उस की
बेदीनी के मुताबिक़ उससे निपट ले। मैंने उसे
निकाल दिया, 12तो अजनबी अक़वाम के सबसे
ज़ालिम लोगों ने उसे टुकड़े टुकड़े करके ज़मीन
पर छोड़ दिया। तब उस की शाख़ें पहाड़ों पर और
तमाम वादियों में गिर गईं, उस की टहनियाँ टूटकर
मुल्क की तमाम घाटियों में पड़ी रहीं। दुनिया
की तमाम अक़वाम उसके साये में से निकलकर

[a]29 अप्रैल।

[b]21 जून।

वहाँ से चली गईं। 13तमाम परिंदे उसके कटे हुए तने पर बैठ गए, तमाम जंगली जानवर उस की सूखी हुई शाख़ों पर लेट गए। 14यह इसलिए हुआ कि आइंदा पानी के किनारे पर लगा कोई भी दरख़्त इतना बड़ा न हो कि उस की चोटी बादलों में ओझल हो जाए और नतीजतन वह अपने आपको दूसरों से बरतर समझे। क्योंकि सबके लिए मौत और ज़मीन की गहराइयाँ मुक़र्रर हैं, सबको पाताल में उतरकर मुरदों के दरमियान बसना है।

15रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जिस वक़्त यह दरख़्त पाताल में उतर गया उस दिन मैंने गहराइयों के चश्मों को उस पर मातम करने दिया और उनकी नदियों को रोक दिया ताकि पानी इतनी कसरत से न बहे। उस की ख़ातिर मैंने लुबनान को मातमी लिबास पहनाए। तब खुले मैदान के तमाम दरख़्त मुरझा गए। 16वह इतने धड़ाम से गिर गया जब मैंने उसे पाताल में उनके पास उतार दिया जो गढ़े में उतर चुके थे कि दीगर अक़वाम को धच्का लगा। लेकिन बाग़े-अदन के बाक़ी तमाम दरख़्तों को तसल्ली मिली। क्योंकि गो लुबनान के इन चीदा और बेहतरीन दरख़्तों को पानी की कसरत मिलती रही थी ताहम यह भी पाताल में उतर गए थे। 17गो यह बड़े दरख़्त की ताक़त रहे थे और अक़वाम के दरमियान रहकर उसके साये में अपना घर बना लिया था तो भी यह बड़े दरख़्त के साथ वहाँ उतर गए जहाँ मक़तूल उनके इंतज़ार में थे।

18ऐ मिसर, अज़मत और शान के लिहाज़ से बाग़े-अदन का कौन-सा दरख़्त तेरा मुक़ाबला कर सकता है? लेकिन तुझे बाग़े-अदन के दीगर दरख़्तों के साथ ज़मीन की गहराइयों में उतारा जाएगा। वहाँ तू नामख़तूनों और मक़तूलों के दरमियान पड़ा रहेगा। रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि यही फ़िरौन और उस की शानो-शौकत का अंजाम होगा'।"

अज़दहे फ़िरौन को मारा जाएगा

32 यहूयाकीन बादशाह के 12वें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ। 12वें महीने का पहला दिन[a] था। मुझे यह पैग़ाम मिला, 2"ऐ आदमज़ाद, मिसर के बादशाह फ़िरौन पर मातमी गीत गाकर उसे बता,

'गो अक़वाम के दरमियान तुझे जवान शेरबबर समझा जाता है, लेकिन दर-हक़ीक़त तू दरियाए-नील की शाख़ों में रहनेवाला अज़दहा है जो अपनी नदियों को उबलने देता और पाँवों से पानी को ज़ोर से हरकत में लाकर गदला कर देता है।

3रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं मुतअद्दिद क़ौमों को जमा करके तेरे पास भेजूँगा ताकि तुझ पर जाल डालकर तुझे पानी से खींच निकालें। 4तब मैं तुझे ज़ोर से ख़ुश्की पर पटख़ दूँगा, खुले मैदान पर ही तुझे फेंक छोड़ूँगा। तमाम परिंदे तुझ पर बैठ जाएंगे, तमाम जंगली जानवर तुझे खा खाकर सेर हो जाएंगे। 5तेरा गोश्त मैं पहाड़ों पर फेंक दूँगा, तेरी लाश से वादियों को भर दूँगा। 6तेरे बहते ख़ून से मैं ज़मीन को पहाड़ों तक सेराब करूँगा, घाटियाँ तुझसे भर जाएँगी।

7जिस वक़्त मैं तेरी ज़िंदगी की बत्ती बुझा दूँगा उस वक़्त मैं आसमान को ढाँप दूँगा। सितारे तारीक हो जाएंगे, सूरज बादलों में छुप जाएगा और चाँद की रौशनी नज़र नहीं आएगी। 8जो कुछ भी आसमान पर चमकता-दमकता है उसे मैं तेरे बाइस तारीक कर दूँगा। तेरे पूरे मुल्क पर तारीकी छा जाएगी। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

9बहुत क़ौमों के दिल घबरा जाएंगे जब मैं तेरे अंजाम की ख़बर दीगर अक़वाम तक पहुँचाऊँगा, ऐसे ममालिक तक जिनसे तू नावाक़िफ़ है। 10मुतअद्दिद क़ौमों के सामने ही मैं तुझ पर तलवार चला दूँगा। यह देखकर उन पर दहशत तारी हो जाएगी, और उनके बादशाहों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। जिस दिन तू धड़ाम से गिर जाएगा

---

[a]3 मार्च।

उस दिन उन पर मरने का इतना ख़ौफ़ छा जाएगा
कि वह बार बार काँप उठेंगे।
11क्योंकि रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
शाहे-बाबल की तलवार तुझ पर हमला करेगी।
12तेरी शानदार फ़ौज उसके सूरमाओं की तलवार
से गिरकर हलाक हो जाएगी। दुनिया के सबसे
ज़ालिम आदमी मिसर का ग़ुरूर और उस की
तमाम शानो-शौकत ख़ाक में मिला देंगे। 13मैं
वाफ़िर पानी के पास खड़े उसके मवेशी को भी
बरबाद करूँगा। आइंदा यह पानी न इनसान, न
हैवान के पाँवों से गदला होगा। 14रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है कि उस वक़्त मैं होने दूँगा कि
उनका पानी साफ़-शफ़्फ़ाफ़ हो जाए और नदियाँ
तेल की तरह बहने लगें। 15मैं मिसर को वीरानो-
सुनसान करके हर चीज़ से महरूम करूँगा, मैं
उसके तमाम बाशिंदों को मार डालूँगा। तब वह
जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ’।”

16रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “ला-
ज़िम है कि दर्जे-बाला मातमी गीत को गाया जाए।
दीगर अक़वाम उसे गाएँ, वह मिसर और उस की
शानो-शौकत पर मातम का यह गीत ज़रूर गाएँ।”

पाताल में दीगर अक़वाम मिसर के इंतज़ार में हैं

17यहूयाकीन बादशाह के 12वें साल में रब
मुझसे हमकलाम हुआ। महीने का 15वाँ दिन
था। उसने फ़रमाया, 18“ऐ आदमज़ाद, मिसर की
शानो-शौकत पर वावैला कर। उसे दीगर अज़ीम
अक़वाम के साथ पाताल में उतार दे। उसे उनके
पास पहुँचा दे जो पहले गढ़े में पहुँच चुके हैं।
19मिसर को बता,

‘अब तेरी ख़ूबसूरती कहाँ गई? अब तू इसमें
किसका मुक़ाबला कर सकता है? उतर जा!
पाताल में नामख़तूनों के पास ही पड़ा रह।’
20क्योंकि लाज़िम है कि मिसरी मक़तूलों के बीच
में ही गिरकर हलाक हो जाएँ। तलवार उन पर
हमला करने के लिए खींची जा चुकी है। अब
मिसर को उस की तमाम शानो-शौकत के साथ
घसीटकर पाताल में ले जाओ! 21तब पाताल
में बड़े सूरमे मिसर और उसके मददगारों का
इस्तक़बाल करके कहेंगे, ‘लो, अब यह भी उतर
आए हैं, यह भी यहाँ पड़े नामख़तूनों और मक़तूलों
में शामिल हो गए हैं।’

22वहाँ असूर पहले से अपनी पूरी फ़ौज समेत
पड़ा है, और उसके इर्दगिर्द तलवार के मक़तूलों
की क़ब्रें हैं। 23असूर को पाताल के सबसे गहरे
गढ़े में क़ब्रें मिल गईं, और इर्दगिर्द उस की फ़ौज
दफ़न हुई है। पहले यह ज़िंदों के मुल्क में चारों
तरफ़ दहशत फैलाते थे, लेकिन अब ख़ुद तलवार
से हलाक हो गए हैं।

24वहाँ ऐलाम भी अपनी तमाम शानो-शौकत
समेत पड़ा है। उसके इर्दगिर्द दफ़न हुए फ़ौजी
तलवार की ज़द में आ गए थे। अब सब उतरकर
नामख़तूनों में शामिल हो गए हैं, गो ज़िंदों के
मुल्क में लोग उनसे शदीद दहशत खाते थे। अब
वह भी पाताल में उतरे हुए दीगर लोगों की तरह
अपनी रुसवाई भुगत रहे हैं। 25ऐलाम का बिस्तर
मक़तूलों के दरमियान ही बिछाया गया है, और
उसके इर्दगिर्द उस की तमाम शानदार फ़ौज को
क़ब्रें मिल गई हैं। सब नामख़तून, सब मक़तूल
हैं, गो ज़िंदों के मुल्क में लोग उनसे सख़्त दहशत
खाते थे। अब वह भी पाताल में उतरे हुए दीगर
लोगों की तरह अपनी रुसवाई भुगत रहे हैं। उन्हें
मक़तूलों के दरमियान ही जगह मिल गई है।

26वहाँ मसक-तूबल भी अपनी तमाम शानो-
शौकत समेत पड़ा है। उसके इर्दगिर्द दफ़न हुए
फ़ौजी तलवार की ज़द में आ गए थे। अब सब
नामख़तूनों में शामिल हो गए हैं, गो ज़िंदों के मुल्क
में लोग उनसे शदीद दहशत खाते थे। 27और उन्हें
उन सूरमाओं के पास जगह नहीं मिली जो क़दीम
ज़माने में नामख़तूनों के दरमियान फ़ौत होकर
अपने हथियारों के साथ पाताल में उतर आए थे
और जिनके सरों के नीचे तलवार रखी गई। उनका
क़ुसूर उनकी हड्डियों पर पड़ा रहता है, गो ज़िंदों के
मुल्क में लोग इन जंगजुओं से दहशत खाते थे।

28ऐ फ़िरौन, तू भी पाश पाश होकर नामख़तूनों
और मक़तूलों के दरमियान पड़ा रहेगा। 29अदोम
पहले से अपने बादशाहों और रईसों समेत वहाँ
पहुँच चुका होगा। गो वह पहले इतने ताक़तवर
थे, लेकिन अब मक़तूलों में शामिल हैं, उन
नामख़तूनों में जो पाताल में उतर गए हैं। 30इस
तरह शिमाल के तमाम हुक्मरान और सैदा के
तमाम बाशिंदे भी वहाँ आ मौजूद होंगे। वह भी
मक़तूलों के साथ पाताल में उतर गए हैं। गो
उनकी ज़बरदस्त ताक़त लोगों में दहशत फैलाती
थी, लेकिन अब वह शरमिंदा हो गए हैं, अब वह
नामख़तून हालत में मक़तूलों के साथ पड़े हैं। वह
भी पाताल में उतरे हुए बाक़ी लोगों के साथ अपनी
रुसवाई भुगत रहे हैं।

31तब फ़िरौन इन सबको देखकर तसल्ली
पाएगा, गो उस की तमाम शानो-शौकत पाताल
में उतर गई होगी। रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता
है कि फ़िरौन और उस की पूरी फ़ौज तलवार की
ज़द में आ जाएंगे।

32पहले मेरी मरज़ी थी कि फ़िरौन ज़िंदों के
मुल्क में ख़ौफ़ो-हिरास फैलाए, लेकिन अब उसे
उस की तमाम शानो-शौकत के साथ नामख़तूनों
और मक़तूलों के दरमियान रखा जाएगा। यह मेरा
रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।"

हिज़क़ियेल इसराईल का पहरेदार है

33 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2"ऐ
आदमज़ाद, अपने हमवतनों को यह
पैग़ाम पहुँचा दे,

'जब कभी मैं किसी मुल्क में जंग छेड़ता हूँ
तो उस मुल्क के बाशिंदे अपने मर्दों में से एक
को चुनकर अपना पहरेदार बना लेते हैं। 3पहरेदार
की ज़िम्मेदारी यह है कि ज्योंही दुश्मन नज़र आए
त्योंही नरसिंगा बजाकर लोगों को आगाह करे।
4उस वक़्त जो नरसिंगे की आवाज़ सुनकर परवा
न करे वह ख़ुद ज़िम्मेदार ठहरेगा अगर दुश्मन उस
पर हमला करके उसे क़त्ल करे। 5यह उसका
अपना क़ुसूर होगा, क्योंकि उसने नरसिंगे की
आवाज़ सुनने के बावुजूद परवा न की। लेकिन
अगर वह पहरेदार की ख़बर मान ले तो अपनी
जान को बचाएगा।

6अब फ़र्ज़ करो कि पहरेदार दुश्मन को देखे
लेकिन न नरसिंगा बजाए, न लोगों को आगाह
करे। अगर नतीजे में कोई क़त्ल हो जाए तो
वह अपने गुनाहों के बाइस ही मर जाएगा।
लेकिन मैं पहरेदार को उस की मौत का ज़िम्मेदार
ठहराऊँगा।'

7ऐ आदमज़ाद, मैंने तुझे इसराईली क़ौम की
पहरादारी करने की ज़िम्मेदारी दी है। इसलिए
लाज़िम है कि जब भी मैं कुछ फ़रमाऊँ तो तू
मेरी सुनकर इसराईलियों को मेरी तरफ़ से आगाह
करे। 8अगर मैं किसी बेदीन को बताना चाहूँ, 'तू
यक़ीनन मरेगा' तो लाज़िम है कि तू उसे यह
सुनाकर उस की ग़लत राह से आगाह करे। अगर
तू ऐसा न करे तो गो बेदीन अपने गुनाहों के
बाइस ही मरेगा ताहम मैं तुझे ही उस की मौत
का ज़िम्मेदार ठहराऊँगा। 9लेकिन अगर तू उसे
उस की ग़लत राह से आगाह करे और वह न माने
तो वह अपने गुनाहों के बाइस मरेगा, लेकिन तूने
अपनी जान को बचाया होगा।

तौबा करो!

10ऐ आदमज़ाद, इसराईलियों को बता, तुम
आहें भर भरकर कहते हो, 'हाय हम अपने
जरायम और गुनाहों के बाइस गल-सड़कर तबाह
हो रहे हैं। हम किस तरह जीते रहें?' 11लेकिन
रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, 'मेरी हयात की
क़सम, मैं बेदीन की मौत से ख़ुश नहीं होता बल्कि
मैं चाहता हूँ कि वह अपनी ग़लत राह से हटकर
ज़िंदा रहे। चुनाँचे तौबा करो! अपनी ग़लत राहों
को तर्क करके वापस आओ! ऐ इसराईली क़ौम,
क्या ज़रूरत है कि तू मर जाए?'

12ऐ आदमज़ाद, अपने हमवतनों को बता,

'अगर रास्तबाज़ ग़लत काम करे तो यह बात
उसे नहीं बचाएगी कि पहले रास्तबाज़ था। अगर
वह गुनाह करे तो उसे ज़िंदा नहीं छोड़ा जाएगा।

इसके मुक़ाबले में अगर बेदीन अपनी बेदीनी से
तौबा करके वापस आए तो यह बात उस की
तबाही का बाइस नहीं बनेगी कि पहले बेदीन
था।’ 13हो सकता है मैं रास्तबाज़ को बताऊँ,
‘तू ज़िंदा रहेगा।’ अगर वह यह सुनकर समझने
लगे, ‘मेरी रास्तबाज़ी मुझे हर सूरत में बचाएगी’
और नतीजे में ग़लत काम करे तो मैं उसके तमाम
रास्त कामों का लिहाज़ नहीं करूँगा बल्कि उसके
ग़लत काम के बाइस उसे सज़ाए-मौत दूँगा।
14लेकिन फ़र्ज़ करो मैं किसी बेदीन आदमी को
बताऊँ, ‘तू यक़ीनन मरेगा।’ हो सकता है वह
यह सुनकर अपने गुनाह से तौबा करके इनसाफ़
और रास्तबाज़ी करने लगे। 15वह अपने क़र्ज़दार
को वह कुछ वापस करे जो ज़मानत के तौर पर
मिला था, वह चोरी हुई चीज़ें वापस कर दे, वह
ज़िंदगीबख़्श हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे,
ग़रज़ वह हर बुरे काम से गुरेज़ करे। इस सूरत
में वह मरेगा नहीं बल्कि ज़िंदा ही रहेगा। 16जो
भी गुनाह उससे सरज़द हुए थे वह मैं याद नहीं
करूँगा। चूँकि उसने बाद में वह कुछ किया जो
मुंसिफ़ाना और रास्त था इसलिए वह यक़ीनन
ज़िंदा रहेगा।

17तेरे हमवतन एतराज़ करते हैं कि रब का
सुलूक सहीह नहीं है जबकि उनका अपना सुलूक
सहीह नहीं है। 18अगर रास्तबाज़ अपना रास्त
चाल-चलन छोड़कर बदी करने लगे तो उसे
सज़ाए-मौत दी जाएगी। 19इसके मुक़ाबले में
अगर बेदीन अपना बेदीन चाल-चलन छोड़कर वह
कुछ करने लगे जो मुंसिफ़ाना और रास्त है तो वह
इस बिना पर ज़िंदा रहेगा।

20ऐ इसराईलियो, तुम दावा करते हो कि रब
का सुलूक सहीह नहीं है। लेकिन ऐसा हरगिज़
नहीं है! तुम्हारी अदालत करते वक़्त मैं हर एक
के चाल-चलन का ख़याल करूँगा।”

यरूशलम पर दुश्मन के क़ब्ज़े की ख़बर

21यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के
12वें साल में एक आदमी मेरे पास आया। 10वें
महीने का पाँचवाँ दिन[a] था। यह आदमी यरूशलम
से भाग निकला था। उसने कहा, “यरूशलम
दुश्मन के क़ब्ज़े में आ गया है!”

22एक दिन पहले रब का हाथ शाम के वक़्त
मुझ पर आया था, और अगले दिन जब यह
आदमी सुबह के वक़्त पहुँचा तो रब ने मेरे मुँह
को खोल दिया, और मैं दुबारा बोल सका।

बचे हुए इसराईली अपने आप पर ग़लत एतमाद करते हैं

23रब मुझसे हमकलाम हुआ, 24“ऐ
आदमज़ाद, मुल्के-इसराईल के खंडरात में
रहनेवाले लोग कह रहे हैं, ‘गो इब्राहीम सिर्फ़
एक आदमी था तो भी उसने पूरे मुल्क पर क़ब्ज़ा
किया। उस की निसबत हम बहुत हैं, इसलिए
लाज़िम है कि हमें यह मुल्क हासिल हो।’ 25उन्हें
बता,

‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुम गोश्त
खाते हो जिसमें ख़ून है, तुम्हारे हाँ बुतपरस्ती और
ख़ूनरेज़ी आम है। तो फिर मुल्क किस तरह तुम्हें
हासिल हो सकता है? 26तुम अपनी तलवार
पर भरोसा रखकर क़ाबिले-घिन हरकतें करते हो,
हत्ता कि हर एक अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना
करता है। तो फिर मुल्क किस तरह तुम्हें हासिल
हो सकता है?’

27उन्हें बता, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़र-
माता है कि मेरी हयात की क़सम, जो इसराईल
के खंडरात में रहते हैं वह तलवार की ज़द में
आकर हलाक हो जाएंगे, जो बचकर खुले मैदान
में जा बसे हैं उन्हें मैं दरिंदों को खिला दूँगा, और
जिन्होंने पहाड़ी क़िलों और ग़ारों में पनाह ली है वह
मोहलक बीमारियों का शिकार हो जाएंगे। 28मैं
मुल्क को वीरानो-सुनसान कर दूँगा। जिस ताक़त
पर वह फ़ख़र करते हैं वह जाती रहेगी। इसराईल

[a]8 जनवरी।

का पहाड़ी इलाक़ा भी इतना तबाह हो जाएगा
कि लोग उसमें से गुज़रने से गुरेज़ करेंगे। 29फिर
जब मैं मुल्क को उनकी मकरूह हरकतों के बाइस
वीरानो-सुनसान कर दूँगा तब वह जान लेंगे कि मैं
ही रब हूँ।’

जिलावतन इसराईलियों की बेपरवाई

30ऐ आदमज़ाद, तेरे हमवतन अपने घरों की
दीवारों और दरवाज़ों के पास खड़े होकर तेरा
ज़िक्र करते हैं। वह कहते हैं, ‘आओ, हम नबी के
पास जाकर वह पैग़ाम सुनें जो रब की तरफ़ से
आया है।’ 31लेकिन गो इन लोगों के हुजूम आकर
तेरे पैग़ामात सुनने के लिए तेरे सामने बैठ जाते
हैं तो भी वह उन पर अमल नहीं करते। क्योंकि
उनकी ज़बान पर इश्क़ के ही गीत हैं। उन्हीं पर
वह अमल करते हैं, जबकि उनका दिल नारवा
नफ़ा के पीछे पड़ा रहता है। 32असल में वह तेरी
बातें यों सुनते हैं जिस तरह किसी गुलूकार के
गीत जो महारत से साज़ बजाकर सुरीली आवाज़
से इश्क़ के गीत गाए। गो वह तेरी बातें सुनकर
ख़ुश हो जाते हैं तो भी उन पर अमल नहीं करते।
33लेकिन यक़ीनन एक दिन आनेवाला है जब वह
जान लेंगे कि हमारे दरमियान नबी रहा है।”

इसराईल के बेपरवा गल्लाबान

34 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ
आदमज़ाद, इसराईल के गल्ला-
बानों के ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! उन्हें बता,
‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि इस-
राईल के गल्लाबानों पर अफ़सोस जो सिर्फ़
अपनी ही फ़िकर करते हैं। क्या गल्लाबान को
रेवड़ की फ़िकर नहीं करनी चाहिए? 3तुम भेड़-
बकरियों का दूध पीते, उनकी ऊन के कपड़े
पहनते और बेहतरीन जानवरों का गोश्त खाते
हो। तो भी तुम रेवड़ की देख-भाल नहीं करते!
4न तुमने कमज़ोरों को तक़वियत, न बीमारों को
शफ़ा दी या ज़ख़मियों की मरहम-पट्टी की। न तुम
आवारा फिरनेवालों को वापस लाए, न गुमशुदा
जानवरों को तलाश किया बल्कि सख़्ती और
ज़ालिमाना तरीक़े से उन पर हुकूमत करते रहे।
5गल्लाबान न होने की वजह से भेड़-बकरियाँ
तित्तर-बित्तर होकर दरिंदों का शिकार हो गईं।
6मेरी भेड़-बकरियाँ तमाम पहाड़ों और बुलंद
जगहों पर आवारा फिरती रहीं। सारी ज़मीन पर
वह मुंतशिर हो गईं, और कोई नहीं था जो उन्हें
ढूँडकर वापस लाता।
7चुनाँचे ऐ गल्लाबानो, रब का जवाब सुनो!
8रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात
की क़सम, मेरी भेड़-बकरियाँ लुटेरों का शिकार
और तमाम दरिंदों की ग़िज़ा बन गई हैं। उनकी
देख-भाल करनेवाला कोई नहीं है। मेरे गल्लाबान
मेरे रेवड़ को ढूँडकर वापस नहीं लाते बल्कि
सिर्फ़ अपना ही ख़याल करते हैं। 9चुनाँचे
ऐ गल्लाबानो, रब का जवाब सुनो! 10रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं गल्लाबानों
से निपटकर उन्हें अपनी भेड़-बकरियों के लिए
ज़िम्मेदार ठहराऊँगा। तब मैं उन्हें गल्लाबानी की
ज़िम्मेदारी से फ़ारिग़ करूँगा ताकि सिर्फ़ अपना
ही ख़याल करने का सिलसिला ख़त्म हो जाए। मैं
अपनी भेड़-बकरियों को उनके मुँह से निकालकर
बचाऊँगा ताकि आइंदा वह उन्हें न खाएँ।

अल्लाह अच्छा चरवाहा है

11रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि आइंदा
मैं ख़ुद अपनी भेड़-बकरियों को ढूँडकर वापस
लाऊँगा, ख़ुद उनकी देख-भाल करूँगा। 12जिस
तरह चरवाहा चारों तरफ़ बिखरी हुई अपनी भेड़-
बकरियों को इकट्ठा करके उनकी देख-भाल करता
है उसी तरह मैं अपनी भेड़-बकरियों की देख-भाल
करूँगा। मैं उन्हें उन तमाम मक़ामों से निकालकर
बचाऊँगा जहाँ उन्हें घने बादलों और तारीकी के
दिन मुंतशिर कर दिया गया था। 13मैं उन्हें दीगर
अक़वाम और ममालिक में से निकालकर जमा
करूँगा और उन्हें उनके अपने मुल्क में वापस
लाकर इसराईल के पहाड़ों, घाटियों और तमाम
आबादियों में चराऊँगा। 14तब मैं अच्छी चरागाहों

में उनकी देख-भाल करूँगा, और वह इसराईल की
बुलंदियों पर ही चरेंगी। वहाँ वह सरसब्ज़ मैदानों
में आराम करके इसराईल के पहाड़ों पर बेहतरीन
घास चरेंगी। 15रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है
कि मैं ख़ुद अपनी भेड़-बकरियों की देख-भाल
करूँगा, ख़ुद उन्हें बिठाऊँगा।

16मैं गुमशुदा भेड़-बकरियों का खोज लगाऊँगा
और आवारा फिरनेवालों को वापस लाऊँगा। मैं
ज़ख़मियों की मरहम-पट्टी करूँगा और कमज़ोरों
को तक़वियत दूँगा। लेकिन मोटे-ताज़े और
ताक़तवर जानवरों को मैं ख़त्म करूँगा। मैं
इनसाफ़ से रेवड़ की गल्लाबानी करूँगा।

17रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ मेरे
रेवड़, जहाँ भेड़ों, मेंढों और बकरों के दरमियान
नाइनसाफ़ी है वहाँ मैं उनकी अदालत करूँगा।
18क्या यह तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं कि तुम्हें खाने
के लिए चरागाह का बेहतरीन हिस्सा और पीने के
लिए साफ़-शफ़्फ़ाफ़ पानी मिल गया है? तुम
बाक़ी चरागाह को क्यों रौंदते और बाक़ी पानी
को पाँवों से गदला करते हो? 19मेरा रेवड़ क्यों
तुमसे कुचली हुई घास खाए और तुम्हारा गदला
किया हुआ पानी पिए?

20रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जहाँ
मोटी और दुबली भेड़-बकरियों के दरमियान
नाइनसाफ़ी है वहाँ मैं ख़ुद फ़ैसला करूँगा।
21क्योंकि तुम मोटी भेड़ों ने कमज़ोरों को कंधों
से धक्का देकर और सींगों से मार मारकर अच्छी
घास से भगा दिया है। 22लेकिन मैं अपनी भेड़-
बकरियों को तुमसे बचा लूँगा। आइंदा उन्हें लूटा
नहीं जाएगा बल्कि मैं ख़ुद उनमें इनसाफ़ क़ायम
रखूँगा।

अमनो-अमान की सलतनत

23मैं उन पर एक ही गल्लाबान यानी अपने
ख़ादिम दाऊद को मुक़र्रर करूँगा जो उन्हें चराकर
उनकी देख-भाल करेगा। वही उनका सहीह
चरवाहा रहेगा। 24मैं, रब उनका ख़ुदा हूँगा
और मेरा ख़ादिम दाऊद उनके दरमियान उनका
हुक्मरान होगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।

25मैं इसराईलियों के साथ सलामती का अहद
बाँधकर दरिंदों को मुल्क से निकाल दूँगा। फिर
वह हिफ़ाज़त से सो सकेंगे, ख़ाह रेगिस्तान में
हों या जंगल में। 26मैं उन्हें और अपने पहाड़ के
इर्दगिर्द के इलाक़े को बरकत दूँगा। मैं मुल्क में
वक़्त पर बारिश बरसाता रहूँगा। ऐसी मुबारक
बारिशें होंगी 27कि मुल्क के बाग़ों और खेतों
में ज़बरदस्त फ़सलें पकेंगी। लोग अपने मुल्क
में महफ़ूज़ होंगे। फिर जब मैं उनके जुए को
तोड़कर उन्हें उनसे रिहाई दूँगा जिन्होंने उन्हें ग़ुलाम
बनाया था तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।
28आइंदा न दीगर अक़वाम उन्हें लूटेंगी, न वह
दरिंदों की ख़ुराक बनेंगे बल्कि वह हिफ़ाज़त से
अपने घरों में बसेंगे। डरानेवाला कोई नहीं होगा।
29मेरे हुक्म पर ज़मीन ऐसी फ़सलें पैदा करेगी
जिनकी शोहरत दूर दूर तक फैलेगी। आइंदा न
वह भूके मरेंगे, न उन्हें दीगर अक़वाम की लान-
तान सुननी पड़ेगी। 30रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा
फ़रमाता है कि उस वक़्त वह जान लेंगे कि मैं जो
रब उनका ख़ुदा हूँ उनके साथ हूँ, कि इसराईली
मेरी क़ौम हैं। 31रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है
कि तुम मेरा रेवड़, मेरी चरागाह की भेड़-बकरियाँ
हो। तुम मेरे लोग, और मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँ’।”

अदोम रेगिस्तान बनेगा

35 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2“ऐ
आदमज़ाद, सईर के पहाड़ी इलाक़े
की तरफ़ रुख़ करके उसके ख़िलाफ़ नबुव्वत कर!
3उसे बता,

‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ सईर
के पहाड़ी इलाक़े, अब मैं तुझसे निपट लूँगा। मैं
अपना हाथ तेरे ख़िलाफ़ उठाकर तुझे वीरानो-
सुनसान कर दूँगा। 4मैं तेरे शहरों को मलबे के
ढेर बना दूँगा, और तू सरासर उजड़ जाएगा। तब
तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ।

5तू हमेशा इसराईलियों का सख़्त दुश्मन रहा है,
और जब उन पर आफ़त आई और उनकी सज़ा
उरूज तक पहुँची तो तू भी तलवार लेकर उन पर
टूट पड़ा। 6इसलिए रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता
है कि मेरी हयात की क़सम, मैं तुझे क़त्लो-ग़ारत
के हवाले करूँगा, और क़त्लो-ग़ारत तेरा ताक़्क़ुब
करती रहेगी। चूँकि तूने क़त्लो-ग़ारत करने से
नफ़रत न की, इसलिए क़त्लो-ग़ारत तेरे पीछे पड़ी
रहेगी। 7मैं सईर के पहाड़ी इलाक़े को वीरानो-
सुनसान करके वहाँ के तमाम आने जानेवालों को
मिटा डालूँगा। 8तेरे पहाड़ी इलाक़े को मैं मक़तूलों
से भर दूँगा। तलवार की ज़द में आनेवाले हर तरफ़
पड़े रहेंगे। तेरी पहाड़ियों, वादियों और तमाम
घाटियों में लाशें नज़र आएँगी। 9मेरे हुक्म पर तू
अबद तक वीरान रहेगा, और तेरे शहर ग़ैरआबाद
रहेंगे। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ।

10तू बोला, "इसराईल और यहूदाह की दोनों
क़ौमें अपने इलाक़ों समेत मेरी ही हैं! आओ हम
उन पर क़ब्ज़ा करें।" तुझे ख़याल तक नहीं आया
कि रब वहाँ मौजूद है। 11इसलिए रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम, मैं
तुझसे वही सुलूक करूँगा जो तूने उनसे किया जब
तूने ग़ुस्से और हसद के आलम में उन पर अपनी
पूरी नफ़रत का इज़हार किया। लेकिन उन्हीं पर मैं
अपने आपको ज़ाहिर करूँगा जब मैं तेरी अदालत
करूँगा। 12उस वक़्त तू जान लेगा कि मैं, रब ने
वह तमाम कुफ़र सुन लिया है जो तूने इसराईल
के पहाड़ों के ख़िलाफ़ बका है। क्योंकि तूने कहा,
"यह उजड़ गए हैं, अब यह हमारे क़ब्ज़े में आ
गए हैं और हम उन्हें खा सकते हैं।" 13तूने शेख़ी
मार मारकर मेरे ख़िलाफ़ कुफ़र बका है, लेकिन
ख़बरदार! मैंने इन तमाम बातों पर तवज्जुह दी है।
14रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि तूने ख़ुशी
मनाई कि पूरा मुल्क वीरानो-सुनसान है, लेकिन
मैं तुझे भी उतना ही वीरान कर दूँगा। 15तू कितना
ख़ुश हुआ जब इसराईल की मौरूसी ज़मीन उजड़
गई! अब मैं तेरे साथ भी ऐसा ही करूँगा। ऐ सईर
के पहाड़ी इलाक़े, तू पूरे अदोम समेत वीरानो-
सुनसान हो जाएगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही
रब हूँ।'

इसराईल अपने वतन वापस आएगा

36 ऐ आदमज़ाद, इसराईल के पहा-
ड़ों के बारे में नबुव्वत करके कह,
'ऐ इसराईल के पहाड़ो, रब का कलाम सुनो!
2रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि दुश्मन बग़लें
बजाकर कहता है कि क्या ख़ूब, इसराईल की
क़दीम बुलंदियाँ हमारे क़ब्ज़े में आ गई हैं!
3क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि उन्होंने तुम्हें
उजाड़ दिया, तुम्हें चारों तरफ़ से तंग किया है।
नतीजे में तुम दीगर अक़्वाम के क़ब्ज़े में आ गई
हो और लोग तुम पर कुफ़र बकने लगे हैं। 4चुनाँचे
ऐ इसराईल के पहाड़ो, रब क़ादिरे-मुतलक़ का
कलाम सुनो!

रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ पहाड़ो
और पहाड़ियो, ऐ घाटियो और वादियो, ऐ
खंडरात और इनसान से ख़ाली शहरो, तुम गिर्दो-
नवाह की अक़्वाम के लिए लूट-मार और मज़ाक़
का निशाना बन गए हो।

5इसलिए रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
मैंने बड़ी ग़ैरत से इन बाक़ी अक़्वाम की
सरज़निश की है, ख़ासकर अदोम की। क्योंकि
वह मेरी क़ौम का नुक़सान देखकर शादियाना
बजाने लगीं और अपनी हिक़ारत का इज़हार
करके मेरे मुल्क पर क़ब्ज़ा किया ताकि उस की
चरागाह को लूट लें। 6ऐ पहाड़ो और पहाड़ियो,
ऐ घाटियो और वादियो, रब क़ादिरे-मुतलक़
फ़रमाता है कि चूँकि दीगर अक़्वाम ने तेरी इतनी
रुसवाई की है इसलिए मैं अपनी ग़ैरत और अपना
ग़ज़ब उन पर नाज़िल करूँगा। 7मैं रब क़ादिरे-
मुतलक़ अपना हाथ उठाकर क़सम खाता हूँ कि
गिर्दो-नवाह की इन अक़्वाम की भी रुसवाई की
जाएगी।

8लेकिन ऐ इसराईल के पहाड़ो, तुम पर दुबारा
हरियाली फले-फूलेगी। तुम नए सिरे से मेरी क़ौम
इसराईल के लिए फल लाओगे, क्योंकि वह जल्द

ही वापस आनेवाली है। 9मैं दुबारा तुम्हारी तरफ़
रुजू करूँगा, दुबारा तुम पर मेहरबानी करूँगा। तब
लोग नए सिरे से तुम पर हल चलाकर बीज बोएँगे।
10मैं तुम पर की आबादी बढ़ा दूँगा। क्योंकि
तमाम इसराईली आकर तुम्हारी ढलानों पर अपने
घर बना लेंगे। तुम्हारे शहर दुबारा आबाद हो
जाएंगे, और खंडरात की जगह नए घर बन
जाएंगे। 11मैं तुम पर बसनेवाले इनसानो-हैवान
की तादाद बढ़ा दूँगा, और वह बढ़कर फलें-
फूलेंगे। मैं होने दूँगा कि तुम्हारे इलाक़े में माज़ी
की तरह आबादी होगी, पहले की निसबत मैं तुम
पर कहीं ज़्यादा मेहरबानी करूँगा। तब तुम जान
लोगे कि मैं ही रब हूँ।
12मैं अपनी क़ौम इसराईल को तुम्हारे पास
पहुँचा दूँगा, और वह दुबारा तुम्हारी ढलानों पर
घूमते फिरेंगे। वह तुम पर क़ब्ज़ा करेंगे, और तुम
उनकी मौरूसी ज़मीन होगे। आइंदा कभी तुम
उन्हें उनकी औलाद से महरूम नहीं करोगे। 13रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि बेशक लोग तुम्हारे
बारे में कहते हैं कि तुम लोगों को हड़प करके
अपनी क़ौम को उस की औलाद से महरूम कर
देते हो। 14लेकिन आइंदा ऐसा नहीं होगा। आइंदा
तुम न आदमियों को हड़प करोगे, न अपनी क़ौम
को उस की औलाद से महरूम करोगे। यह रब
क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है। 15मैं ख़ुद होने
दूँगा कि आइंदा तुम्हें दीगर अक़वाम की लान-तान
नहीं सुननी पड़ेगी। आइंदा तुम्हें उनका मज़ाक़
बरदाश्त नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि ऐसा कभी
होगा नहीं कि तुम अपनी क़ौम के लिए ठोकर का
बाइस हो। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान
है'।"

अल्लाह अपनी क़ौम को नया दिल और नया रूह बख़्शेगा

16रब मुझसे हमकलाम हुआ, 17"ऐ
आदमज़ाद, जब इसराईली अपने मुल्क में आबाद
थे तो मुल्क उनके चाल-चलन और हरकतों से
नापाक हुआ। वह अपने बुरे रवय्ये के बाइस
मेरी नज़र में माहवारी में मुब्तला औरत की तरह
नापाक थे। 18उनके हाथों लोग क़त्ल हुए, उनकी
बुतपरस्ती से मुल्क नापाक हो गया।
जवाब में मैंने उन पर अपना ग़ज़ब नाज़िल
किया। 19मैंने उन्हें मुख़्तलिफ़ अक़वामो-
ममालिक में मुंतशिर करके उनके चाल-चलन
और ग़लत कामों की मुनासिब सज़ा दी।
20लेकिन जहाँ भी वह पहुँचे वहाँ उन्हीं के सबब
से मेरे मुक़द्दस नाम की बेहुरमती हुई। क्योंकि
जिनसे भी उनकी मुलाक़ात हुई उन्होंने कहा, 'गो
यह रब की क़ौम हैं तो भी इन्हें उसके मुल्क को
छोड़ना पड़ा!' 21यह देखकर कि जिस क़ौम में
भी इसराईली जा बसे वहाँ उन्होंने मेरे मुक़द्दस
नाम की बेहुरमती की मैं अपने नाम की फ़िकर
करने लगा। 22इसलिए इसराईली क़ौम को बता,
'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जो कुछ मैं
करनेवाला हूँ वह मैं तेरी ख़ातिर नहीं करूँगा बल्कि
अपने मुक़द्दस नाम की ख़ातिर। क्योंकि तुमने
दीगर अक़वाम में मुंतशिर होकर उस की बेहुरमती
की है। 23मैं ज़ाहिर करूँगा कि मेरा अज़ीम
नाम कितना मुक़द्दस है। तुमने दीगर अक़वाम के
दरमियान रहकर उस की बेहुरमती की है, लेकिन
मैं उनकी मौजूदगी में तुम्हारी मदद करके अपना
मुक़द्दस किरदार उन पर ज़ाहिर करूँगा। तब वह
जान लेंगी कि मैं ही रब हूँ। यह रब क़ादिरे-मुतलक़
का फ़रमान है।
24मैं तुम्हें दीगर अक़वामो-ममालिक से
निकाल दूँगा और तुम्हें जमा करके तुम्हारे अपने
मुल्क में वापस लाऊँगा। 25मैं तुम पर साफ़ पानी
छिड़कूँगा तो तुम पाक-साफ़ हो जाओगे। हाँ, मैं
तुम्हें तमाम नापाकियों और बुतों से पाक-साफ़
कर दूँगा।
26तब मैं तुम्हें नया दिल बख़्शकर तुममें नई
रूह डाल दूँगा। मैं तुम्हारा संगीन दिल निकालकर
तुम्हें गोश्त-पोस्त का नरम दिल अता करूँगा।
27क्योंकि मैं अपना ही रूह तुममें डालकर तुम्हें
इस क़ाबिल बना दूँगा कि तुम मेरी हिदायात की
पैरवी और मेरे अहकाम पर ध्यान से अमल कर

सको। 28तब तुम दुबारा उस मुल्क में सुकूनत
करोगे जो मैंने तुम्हारे बापदादा को दिया था। तुम
मेरी क़ौम होगे, और मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँगा। 29मैं
ख़ुद तुम्हें तुम्हारी तमाम नापाकी से छुड़ाऊँगा।
आइंदा मैं तुम्हारे मुल्क में काल पड़ने नहीं दूँगा
बल्कि अनाज को उगने और बढ़ने का हुक्म
दूँगा। 30मैं बाग़ों और खेतों की पैदावार बढ़ा दूँगा
ताकि आइंदा तुम्हें मुल्क में काल पड़ने के बाइस
दीगर क़ौमों के ताने सुनने न पड़ें। 31तब तुम्हारी
बुरी राहें और ग़लत हरकतें तुम्हें याद आएँगी,
और तुम अपने गुनाहों और बुतपरस्ती के बाइस
अपने आपसे घिन खाओगे। 32लेकिन याद रहे
कि मैं यह सब कुछ तुम्हारी ख़ातिर नहीं कर रहा।
रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ इसराईली
क़ौम, शर्म करो! अपने चाल-चलन पर शर्मसार
हो!

33रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जिस
दिन मैं तुम्हें तुम्हारे तमाम गुनाहों से पाक-साफ़
करूँगा उस दिन मैं तुम्हें दुबारा तुम्हारे शहरों में
आबाद करूँगा। तब खंडरात पर नए घर बनेंगे।
34गो इस वक़्त मुल्क में से गुज़रनेवाले हर
मुसाफ़िर को उस की तबाहशुदा हालत नज़र
आती है, लेकिन उस वक़्त ऐसा नहीं होगा बल्कि
ज़मीन की खेतीबाड़ी की जाएगी। 35लोग यह
देखकर कहेंगे, "पहले सब कुछ वीरानो-सुनसान
था, लेकिन अब मुल्क बाग़े-अदन बन गया है!
पहले उसके शहर ज़मीनबोस थे और उनकी जगह
मलबे के ढेर नज़र आते थे। लेकिन अब उनकी
नए सिरे से क़िलाबंदी हो गई है और लोग उनमें
आबाद हैं।" 36फिर इर्दगिर्द की जितनी क़ौमें बच
गई होंगी वह जान लेंगी कि मैं, रब ने नए सिरे से
वह कुछ तामीर किया है जो पहले ढा दिया गया
था, मैंने वीरान ज़मीन में दुबारा पौदे लगाए हैं।
यह मेरा, रब का फ़रमान है, और मैं यह करूँगा
भी।

37क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि एक बार
फिर मैं इसराईली क़ौम की इल्तिजाएँ सुनकर
बाशिंदों की तादाद रेवड़ की तरह बढ़ा दूँगा।
38जिस तरह माज़ी में ईद के दिन यरूशलम में
हर तरफ़ क़ुरबानी की भेड़-बकरियाँ नज़र आती
थीं उसी तरह मुल्क के शहरों में दुबारा हुजूम के
हुजूम नज़र आएँगे। तब वह जान लेंगे कि मैं ही
रब हूँ'।"

हड्डियों से भरी वादी की रोया

37 एक दिन रब का हाथ मुझ पर आ
ठहरा। रब ने मुझे अपने रूह से बाहर
ले जाकर एक खुली वादी के बीच में खड़ा किया।
वादी हड्डियों से भरी थी। 2उसने मुझे उनमें से
गुज़रने दिया तो मैंने देखा कि वादी की ज़मीन पर
बेशुमार हड्डियाँ बिखरी पड़ी हैं। यह हड्डियाँ सरासर
सूखी हुई थीं।

3रब ने मुझसे पूछा, "ऐ आदमज़ाद, क्या यह
हड्डियाँ दुबारा ज़िंदा हो सकती हैं?" मैंने जवाब
दिया, "ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, तू ही जानता है।"
4तब उसने फ़रमाया, "नबुव्वत करके हड्डियों
को बता, 'ऐ सूखी हुई हड्डियो, रब का कलाम
सुनो! 5रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
मैं तुममें दम डालूँगा तो तुम दुबारा ज़िंदा हो
जाओगी। 6मैं तुम पर नसें और गोश्त चढ़ाकर
सब कुछ जिल्द से ढाँप दूँगा। मैं तुममें दम डाल
दूँगा, और तुम ज़िंदा हो जाओगी। तब तुम जान
लोगी कि मैं ही रब हूँ'।"

7मैंने ऐसा ही किया। और ज्योंही मैं नबुव्वत
करने लगा तो शोर मच गया। हड्डियाँ खड़खड़ाते
हुए एक दूसरी के साथ जुड़ गईं, और होते होते पूरे
ढाँचे बन गए। 8मेरे देखते देखते नसें और गोश्त
ढाँचों पर चढ़ गया और सब कुछ जिल्द से ढाँपा
गया। लेकिन अब तक जिस्मों में दम नहीं था।

9फिर रब ने फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत
करके दम से मुख़ातिब हो जा, 'ऐ दम, रब क़ादिरे-
मुतलक़ फ़रमाता है कि चारों तरफ़ से आकर
मक़तूलों पर फूँक मार ताकि दुबारा ज़िंदा हो
जाएँ'।"

10मैंने ऐसा ही किया तो मक़तूलों में दम आ
गया, और वह ज़िंदा होकर अपने पाँवों पर खड़े

हो गए। एक निहायत बड़ी फ़ौज वुजूद में आ गई
थी!
11तब रब ने फ़रमाया, “ऐ आदमज़ाद, यह
हड्डियाँ इसराईली क़ौम के तमाम अफ़राद हैं।
वह कहते हैं, ‘हमारी हड्डियाँ सूख गई हैं, हमारी
उम्मीद जाती रही है। हम ख़त्म ही हो गए हैं!’
12चुनाँचे नबुव्वत करके उन्हें बता,
‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ मेरी
क़ौम, मैं तुम्हारी क़ब्रों को खोल दूँगा और तुम्हें
उनमें से निकालकर मुल्के-इसराईल में वापस
लाऊँगा। 13ऐ मेरी क़ौम, जब मैं तुम्हारी क़ब्रों को
खोल दूँगा और तुम्हें उनमें से निकाल लाऊँगा तब
तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ। 14मैं अपना रूह
तुममें डाल दूँगा तो तुम ज़िंदा हो जाओगे। फिर
मैं तुम्हें तुम्हारे अपने मुल्क में बसा दूँगा। तब तुम
जान लोगे कि यह मेरा, रब का फ़रमान है और मैं
यह करूँगा भी’।”

यहूदाह और इसराईल मुत्तहिद हो जाएंगे

15रब मुझसे हमकलाम हुआ, 16“ऐ
आदमज़ाद, लकड़ी का टुकड़ा लेकर उस पर
लिख दे, ‘जुनूबी क़बीला यहूदाह और जितने
इसराईली क़बीले उसके साथ मुत्तहिद हैं।’ फिर
लकड़ी का एक और टुकड़ा लेकर उस पर लिख
दे, ‘शिमाली क़बीला यूसुफ़ यानी इफ़राईम और
जितने इसराईली क़बीले उसके साथ मुत्तहिद हैं।’
17अब लकड़ी के दोनों टुकड़े एक दूसरे के साथ
यों जोड़ दे कि तेरे हाथ में एक हो जाएँ।
18तेरे हमवतन तुझसे पूछेंगे, ‘क्या आप
हमें इसका मतलब नहीं बताएँगे?’ 19तब
उन्हें बता, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता
है कि मैं यूसुफ़ यानी लकड़ी के मालिक
इफ़राईम और उसके साथ मुत्तहिद इसरा-
ईली क़बीलों को लेकर यहूदाह की लकड़ी के
साथ जोड़ दूँगा। मेरे हाथ में वह लकड़ी का एक
ही टुकड़ा बन जाएंगे।’
20अपने हमवतनों की मौजूदगी में लकड़ी के
मज़कूरा टुकड़े हाथ में थामे रख 21और साथ साथ
उन्हें बता, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं
इसराईलियों को उन क़ौमों में से निकाल लाऊँगा
जहाँ वह जा बसे हैं। मैं उन्हें जमा करके उनके
अपने मुल्क में वापस लाऊँगा। 22वहीं इसराईल
के पहाड़ों पर मैं उन्हें मुत्तहिद करके एक ही क़ौम
बना दूँगा। उन पर एक ही बादशाह हुकूमत करेगा।
आइंदा वह न कभी दो क़ौमों में तक़सीम हो
जाएंगे, न दो सलतनतों में। 23आइंदा वह अपने
आपको न अपने बुतों या बाक़ी मकरूह चीज़ों से
नापाक करेंगे, न उन गुनाहों से जो अब तक करते
आए हैं। मैं उन्हें उन तमाम मक़ामों से निकालकर
छुड़ाऊँगा जिनमें उन्होंने गुनाह किया है। मैं उन्हें
पाक-साफ़ करूँगा। यों वह मेरी क़ौम होंगे और मैं
उनका ख़ुदा हूँगा। 24मेरा ख़ादिम दाऊद उनका
बादशाह होगा, उनका एक ही गल्लाबान होगा।
तब वह मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेंगे
और ध्यान से मेरे अहकाम पर अमल करेंगे।
25जो मुल्क मैंने अपने ख़ादिम याक़ूब को
दिया था और जिसमें तुम्हारे बापदादा रहते थे
उसमें इसराईली दुबारा बसेंगे। हाँ, वह और उनकी
औलाद हमेशा तक उसमें आबाद रहेंगे, और मेरा
ख़ादिम दाऊद अबद तक उन पर हुकूमत करेगा।
26तब मैं उनके साथ सलामती का अहद बाँधूँगा,
एक ऐसा अहद जो हमेशा तक क़ायम रहेगा। मैं
उन्हें क़ायम करके उनकी तादाद बढ़ाता जाऊँगा,
और मेरा मक़दिस अबद तक उनके दरमियान
रहेगा। 27वह मेरी सुकूनतगाह के साये में बसेंगे।
मैं उनका ख़ुदा हूँगा, और वह मेरी क़ौम होंगे।
28जब मेरा मक़दिस अबद तक उनके दरमियान
होगा तो दीगर अक़वाम जान लेंगी कि मैं ही रब हूँ,
कि इसराईल को मुक़द्दस करनेवाला मैं ही हूँ’।”

इसराईल का दुश्मन जूज

38 रब मुझसे हमकलाम हुआ,
2“ऐ आदमज़ाद, मुल्के-माजूज के
हुक्मरान जूज की तरफ़ रुख़ कर जो मसक और
तूबल का आला रईस है। उसके ख़िलाफ़ नबुव्वत
करके 3कह,

'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ मसक और तूबल के आला रईस जूज, अब मैं तुझसे निपट लूँगा। 4मैं तेरे मुँह को फेर दूँगा, तेरे मुँह में काँटे डालकर तुझे पूरी फ़ौज समेत निकाल दूँगा। शानदार वरदियों से आरास्ता तेरे तमाम घुड़सवार और फ़ौजी अपने घोड़ों समेत निकल आएँगे, गो तेरी बड़ी फ़ौज के मर्द छोटी और बड़ी ढालें उठाए फिरेंगे, और हर एक तलवार से लैस होगा। 5फ़ारस, एथोपिया और लिबिया के मर्द भी फ़ौज में शामिल होंगे। हर एक बड़ी ढाल और ख़ोद से मुसल्लह होगा। 6जुमर और शिमाल के दूर-दराज़ इलाक़े बैत-तुजरमा के तमाम दस्ते भी साथ होंगे। ग़रज़ उस वक़्त बहुत-सी क़ौमें तेरे साथ निकलेंगी। 7चुनाँचे मुस्तैद हो जा! जितने लशकर तेरे इर्दगिर्द जमा हो गए हैं उनके साथ मिलकर ख़ूब तैयारियाँ कर! उनके लिए पहरादारी कर।

8मुतअद्दिद दिनों के बाद तुझे मुल्के-इसराईल पर हमला करने के लिए बुलाया जाएगा जिसे अभी जंग से छुटकारा मिला होगा और जिसके जिलावतन दीगर बहुत-सी क़ौमों में से वापस आ गए होंगे। गो इसराईल का पहाड़ी इलाक़ा बड़ी देर से बरबाद हुआ होगा, लेकिन उस वक़्त उसके बाशिंदे जिलावतनी से वापस आकर अमनो-अमान से उसमें बसेंगे।

9तब तू तूफ़ान की तरह आगे बढ़ेगा, तेरे दस्ते बादल की तरह पूरे मुल्क पर छा जाएंगे। तेरे साथ बहुत-सी क़ौमें होंगी। 10रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि उस वक़्त तेरे ज़हन में बुरे ख़यालात उभर आएँगे और तू शरीर मनसूबे बाँधेगा। 11तू कहेगा, "यह मुल्क खुला है, और उसके बाशिंदे आराम और सुकून के साथ रह रहे हैं। आओ, मैं उन पर हमला करूँ, क्योंकि वह अपनी हिफ़ाज़त नहीं कर सकते। न उनकी चारदीवारी है, न दरवाज़ा या कुंडा। 12मैं इसराईलियों को लूट लूँगा। जो शहर पहले खंडरात थे लेकिन अब नए सिरे से आबाद हुए हैं उन पर मैं टूट पड़ूँगा। जो जिलावतन दीगर अक़्वाम से वापस आ गए हैं उनकी दौलत मैं छीन लूँगा। क्योंकि उन्हें काफ़ी माल-मवेशी हासिल हुए हैं, और अब वह दुनिया के मरकज़ में आ बसे हैं।" 13सबा, ददान और तरसीस के ताजिर और बुज़ुर्ग पूछेंगे कि क्या तूने वाक़ई अपने फ़ौजियों को लूट-मार के लिए इकट्ठा कर लिया है? क्या तू वाक़ई सोना-चाँदी, माल-मवेशी और बाक़ी बहुत-सी दौलत छीनना चाहता है?'

14ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत करके जूज को बता, 'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि उस वक़्त तुझे पता चलेगा कि मेरी क़ौम इसराईल सुकून से ज़िंदगी गुज़ार रही है, 15और तू दूर-दराज़ शिमाल के अपने मुल्क से निकलेगा। तेरी वसी और ताक़तवर फ़ौज में मुतअद्दिद क़ौमें शामिल होंगी, और सब घोड़ों पर सवार 16मेरी क़ौम इसराईल पर धावा बोल देंगे। वह उस पर बादल की तरह छा जाएंगे। ऐ जूज, उन आख़िरी दिनों में मैं ख़ुद तुझे अपने मुल्क पर हमला करने दूँगा ताकि दीगर अक़्वाम मुझे जान लें। क्योंकि जो कुछ मैं उनके देखते देखते तेरे साथ करूँगा उससे मेरा मुक़द्दस किरदार उन पर ज़ाहिर हो जाएगा। 17रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि तू वही है जिसका ज़िक्र मैंने माज़ी में किया था। क्योंकि माज़ी में मेरे ख़ादिम यानी इसराईल के नबी काफ़ी सालों से पेशगोई करते रहे कि मैं तुझे इसराईल के ख़िलाफ़ भेजूँगा।

अल्लाह ख़ुद जूज को तबाह करेगा

18रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जिस दिन जूज मुल्के-इसराईल पर हमला करेगा उस दिन मैं आग-बगूला हो जाऊँगा। 19मैं फ़रमाता हूँ कि उस दिन मेरी ग़ैरत और शदीद क़हर यों भड़क उठेगा कि यक़ीनन मुल्के-इसराईल में ज़बरदस्त ज़लज़ला आएगा। 20सब मेरे सामने थरथरा उठेंगे, ख़ाह मछलियाँ हों या परिंदे, ख़ाह ज़मीन पर चलने और रेंगनेवाले जानवर हों या इनसान। पहाड़ उनकी गुज़रगाहों समेत ख़ाक में मिलाए जाएंगे, और हर दीवार गिर जाएगी।

21रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं
अपने तमाम पहाड़ी इलाक़े में जूज के ख़िलाफ़
तलवार भेजूँगा। तब सब आपस में लड़ने लगेंगे।
22मैं उनमें मोहलक बीमारियाँ और क़त्लो-ग़ारत
फैलाकर उनकी अदालत करूँगा। साथ साथ
मैं मूसलाधार बारिश, ओले, आग और गंधक
जूज और उस की बैनुल-अक़वामी फ़ौज पर
बरसा दूँगा। 23यों मैं अपना अज़ीम और मुक़द्दस
किरदार मुतअद्दिद क़ौमों पर ज़ाहिर करूँगा, उनके
देखते देखते अपने आपका इज़हार करूँगा। तब
वह जान लेंगी कि मैं ही रब हूँ।'

39 ऐ आदमज़ाद, जूज के ख़िलाफ़
नबुव्वत करके कह,

'रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ मसक
और तूबल के आला रईस जूज, अब मैं
तुझसे निपट लूँगा। 2मैं तेरा मुँह फेर दूँगा और
तुझे शिमाल के दूर-दराज़ इलाक़े से घसीटकर
इसराईल के पहाड़ों पर लाऊँगा। 3वहाँ मैं तेरे बाएँ
हाथ से कमान हटाऊँगा और तेरे दाएँ हाथ से तीर
गिरा दूँगा। 4इसराईल के पहाड़ों पर ही तू अपने
तमाम बैनुल-अक़वामी फ़ौजियों के साथ हलाक
हो जाएगा। मैं तुझे हर क़िस्म के शिकारी परिंदों
और दरिंदों को खिला दूँगा। 5क्योंकि तेरी लाश
खुले मैदान में गिरकर पड़ी रहेगी। यह मेरा, रब
क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

6मैं माजूज पर और अपने आपको मह-
फ़ूज़ समझनेवाले साहिली इलाक़ों पर आग
भेजूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। 7अपनी
क़ौम इसराईल के दरमियान ही मैं अपना मुक़द्दस
नाम ज़ाहिर करूँगा। आइंदा मैं अपने मुक़द्दस नाम
की बेहुरमती बरदाश्त नहीं करूँगा। तब अक़वाम
जान लेंगी कि मैं रब और इसराईल का क़ुद्दूस हूँ।
8रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि यह सब कुछ
होनेवाला है, यह ज़रूर पेश आएगा! वही दिन है
जिसका ज़िक्र मैं कर चुका हूँ।

जूज और उस की फ़ौज की तदफ़ीन

9फिर इसराईली शहरों के बाशिंदे मैदाने-जंग
में जाकर दुश्मन के असला को ईंधन के लिए
जमा करेंगे। इतनी छोटी और बड़ी ढालें, कमान,
तीर, लाठियाँ और नेज़े इकट्ठे हो जाएंगे कि सात
साल तक किसी और ईंधन की ज़रूरत नहीं
होगी। 10इसराईलियों को खुले मैदान में लकड़ी
चुनने या जंगल में दरख़्त काटने की ज़रूरत नहीं
होगी, क्योंकि वह यह हथियार ईंधन के तौर पर
इस्तेमाल करेंगे। अब वह उन्हें लूटेंगे जिन्होंने उन्हें
लूट लिया था, वह उनसे माल-मवेशी छीन लेंगे
जिन्होंने उनसे सब कुछ छीन लिया था। यह रब
क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

11उस दिन मैं इसराईल में जूज के लिए
क़ब्रिस्तान मुक़र्रर करूँगा। यह क़ब्रिस्तान वादीए-
अबारीम[a] में होगा जो बहीराए-मुरदार के मशरिक़
में है। जूज के साथ उस की तमाम फ़ौज भी
दफ़न होगी, इसलिए मुसाफ़िर आइंदा उसमें से
नहीं गुज़र सकेंगे। तब वह जगह वादीए-हमून
जूज[b] भी कहलाएगी। 12जब इसराईली तमाम
लाशें दफ़नाकर मुल्क को पाक-साफ़ करेंगे तो
सात महीने लगेंगे। 13तमाम उम्मत इस काम में
मसरूफ़ रहेगी। रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है
कि जिस दिन मैं दुनिया पर अपना जलाल ज़ाहिर
करूँगा उस दिन यह उनके लिए शोहरत का बाइस
होगा।

14सात महीनों के बाद कुछ आदमियों को
अलग करके कहा जाएगा कि पूरे मुल्क में से
गुज़रकर मालूम करें कि अभी कहाँ कहाँ लाशें
पड़ी हैं। क्योंकि लाज़िम है कि सब दफ़न हो जाएँ
ताकि मुल्क दुबारा पाक-साफ़ हो जाए। 15जहाँ
कहीं कोई लाश नज़र आए उस जगह की वह
निशानदेही करेंगे ताकि दफ़नानेवाले उसे वादीए-
हमून जूज में ले जाकर दफ़न करें। 16यों मुल्क को
पाक-साफ़ किया जाएगा। उस वक़्त से इसराईल
के एक शहर का नाम हमूना[c] कहलाएगा।'

[a]या गुज़रनेवालों की वादी।
[b]जूज के फ़ौजी हुजूम की वादी।
[c]हुजूम यानी जूज के।

17ऐ आदमज़ाद, रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़र-
माता है कि हर क़िस्म के परिंदे और दरिंदे बुलाकर
कह, 'आओ, इधर जमा हो जाओ! चारों तरफ़
से आकर इसराईल के पहाड़ी इलाक़े में जमा हो
जाओ! क्योंकि यहाँ मैं तुम्हारे लिए क़ुरबानी
की ज़बरदस्त ज़ियाफ़त तैयार कर रहा हूँ। यहाँ
तुम्हें गोश्त खाने और ख़ून पीने का सुनहरा मौक़ा
मिलेगा। 18तुम सूरमाओं का गोश्त खाओगे और
दुनिया के हुक्मरानों का ख़ून पियोगे। सब बसन
के मोटे-ताज़े मेंढों, भेड़ के बच्चों, बकरों और
बैलों जैसे मज़ेदार होंगे। 19क्योंकि जो क़ुरबानी
में तुम्हारे लिए तैयार कर रहा हूँ उस की चरबी तुम
जी भरकर खाओगे, उसका ख़ून पी पीकर मस्त
हो जाओगे। 20रब फ़रमाता है कि तुम मेरी मेज़
पर बैठकर घोड़ों और घुड़सवारों, सूरमाओं और
हर क़िस्म के फ़ौजियों से सेर हो जाओगे।'

रब अपनी क़ौम वापस लाएगा

21यों मैं दीगर अक़वाम पर अपना जलाल
ज़ाहिर करूँगा। क्योंकि जब मैं जूज और उस
की फ़ौज की अदालत करके उनसे निपट लूँगा
तो तमाम अक़वाम इसकी गवाह होंगी। 22तब
इसराईली क़ौम हमेशा के लिए जान लेगी कि
मैं रब उसका ख़ुदा हूँ। 23और दीगर अक़वाम
जान लेंगी कि इसराईली अपने गुनाहों के सबब
से जिलावतन हुए। वह जान लेंगी कि चूँकि
इसराईली मुझसे बेवफ़ा हुए, इसी लिए मैंने
अपना मुँह उनसे छुपाकर उन्हें उनके दुश्मनों के
हवाले कर दिया, इसी लिए वह सब तलवार की
ज़द में आकर हलाक हुए। 24क्योंकि मैंने उन्हें
उनकी नापाकी और जरायम का मुनासिब बदला
देकर अपना चेहरा उनसे छुपा लिया था।

25चुनाँचे रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
अब मैं याक़ूब की औलाद को बहाल करके तमाम
इसराईली क़ौम पर तरस खाऊँगा। अब मैं बड़ी
ग़ैरत से अपने मुक़द्दस नाम का दिफ़ा करूँगा।
26जब इसराईली सुकून से और ख़ौफ़ खाए बग़ैर
अपने मुल्क में रहेंगे तो वह अपनी रुसवाई और
मेरे साथ बेवफ़ाई का एतराफ़ करेंगे। 27मैं उन्हें
दीगर अक़वाम और उनके दुश्मनों के ममालिक में
से जमा करके उन्हें वापस लाऊँगा और यों उनके
ज़रीए अपना मुक़द्दस किरदार मुतअद्दिद अक़वाम
पर ज़ाहिर करूँगा। 28तब वह जान लेंगे कि मैं ही
रब हूँ। क्योंकि उन्हें अक़वाम में जिलावतन करने
के बाद मैं उन्हें उनके अपने ही मुल्क में दुबारा जमा
करूँगा। एक भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा। 29रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि आइंदा मैं अपना
चेहरा उनसे नहीं छुपाऊँगा। क्योंकि मैं अपना रूह
इसराईली क़ौम पर उंडेल दूँगा।"

रब के नए घर की रोया

40 हमारी जिलावतनी के 25वें साल में
रब का हाथ मुझ पर आ ठहरा और वह
मुझे यरूशलम ले गया। महीने का दसवाँ दिन[a]
था। उस वक़्त यरूशलम को दुश्मन के क़ब्ज़े में
आए 14 साल हो गए थे। 2इलाही रोयाओं में
अल्लाह ने मुझे मुल्के-इसराईल के एक निहायत
बुलंद पहाड़ पर पहुँचाया। पहाड़ के जुनूब में मुझे
एक शहर-सा नज़र आया। 3अल्लाह मुझे शहर
के क़रीब ले गया तो मैंने शहर के दरवाज़े में खड़े
एक आदमी को देखा जो पीतल का बना हुआ
लग रहा था। उसके हाथ में कतान की रस्सी और
फ़ीता था। 4उसने मुझसे कहा, "ऐ आदमज़ाद,
ध्यान से देख, ग़ौर से सुन! जो कुछ भी मैं तुझे
दिखाऊँगा, उस पर तवज्जुह दे। क्योंकि तुझे इसी
लिए यहाँ लाया गया है कि मैं तुझे यह दिखाऊँ।
जो कुछ भी तू देखे उसे इसराईली क़ौम को सुना
दे!"

रब के घर के बैरूनी सहन का मशरिक़ी दरवाज़ा

5मैंने देखा कि रब के घर का सहन चारदीवारी
से घिरा हुआ है। जो फ़ीता मेरे राहनुमा के हाथ में
था उस की लंबाई साढ़े 10 फ़ुट थी। इसके ज़रीए

[a] 28 अप्रैल।

उसने चारदीवारी को नाप लिया। दीवार की मोटाई और ऊँचाई दोनों साढ़े दस दस फ़ुट थी।

6फिर मेरा राहनुमा मशरिक़ी दरवाज़े के पास पहुँचानेवाली सीढ़ी पर चढ़कर दरवाज़े की दहलीज़ पर रुक गया। जब उसने उस की पैमाइश की तो उस की गहराई साढ़े 10 फ़ुट निकली।

7जब वह दरवाज़े में खड़ा हुआ तो दाईं और बाईं तरफ़ पहरेदारों के तीन तीन कमरे नज़र आए। हर कमरे की लंबाई और चौड़ाई साढ़े दस दस फ़ुट थी। कमरों के दरमियान की दीवार पौने नौ फ़ुट मोटी थी। इन कमरों के बाद एक और दहलीज़ थी जो साढ़े 10 फ़ुट गहरी थी। उस पर से गुज़रकर हम दरवाज़े से मुलहिक़ एक बरामदे में
आए जिसका रुख़ रब के घर की तरफ़ था। 8मेरे
राहनुमा ने बरामदे की पैमाइश की 9तो पता चला
कि उस की लंबाई 14 फ़ुट है। दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ू साढ़े तीन तीन फ़ुट मोटे थे। बरामदे
का रुख़ रब के घर की तरफ़ था। 10पहरेदारों के
मज़कूरा कमरे सब एक जैसे बड़े थे, और उनके दरमियानवाली दीवारें सब एक जैसी मोटी थीं।

11इसके बाद उसने दरवाज़े की गुज़रगाह की चौड़ाई नापी। यह मिल मिलाकर पौने 23 फ़ुट थी, अलबत्ता जब किवाड़ खुले थे तो उनके दरमियान का फ़ासला साढ़े 17 फ़ुट था।
12पहरेदारों के हर कमरे के सामने एक छोटी-सी दीवार थी जिसकी ऊँचाई 21 इंच थी जबकि हर कमरे की लंबाई और ऊँचाई साढ़े दस दस फ़ुट
थी। 13फिर मेरे राहनुमा ने वह फ़ासला नापा जो इन कमरों में से एक की पिछली दीवार से लेकर उसके मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था। मालूम हुआ कि पौने 44 फ़ुट है।

14सहन में दरवाज़े से मुलहिक़ वह बरामदा था जिसका रुख़ रब के घर की तरफ़ था। उस की
चौड़ाई 33 फ़ुट थी।[a] 15जो बाहर से दरवाज़े में दाख़िल होता था वह साढ़े 87 फ़ुट के बाद ही सहन में पहुँचता था।

16पहरेदारों के तमाम कमरों में छोटी खिड़कियाँ थीं। कुछ बैरूनी दीवार में थीं, कुछ कमरों के दरमियान की दीवारों में। दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ुओं में खजूर के दरख़्त मुनक़्क़श थे।

रब के घर का बैरूनी सहन

17फिर मेरा राहनुमा दरवाज़े में से गुज़रकर मुझे रब के घर के बैरूनी सहन में लाया। चारदीवारी के साथ साथ 30 कमरे बनाए गए थे जिनके सामने
पत्थर का फ़र्श था। 18यह फ़र्श चारदीवारी के साथ साथ था। जहाँ दरवाज़ों की गुज़रगाहें थीं वहाँ फ़र्श उनकी दीवारों से लगता था। जितना लंबा इन गुज़रगाहों का वह हिस्सा था जो सहन में था उतना ही चौड़ा फ़र्श भी था। यह फ़र्श अंदरूनी सहन की निसबत नीचा था।

19बैरूनी और अंदरूनी सहनों के दरमियान भी दरवाज़ा था। यह बैरूनी दरवाज़े के मुक़ाबिल था। जब मेरे राहनुमा ने दोनों दरवाज़ों का दरमियानी फ़ासला नापा तो मालूम हुआ कि 175 फ़ुट है।

बैरूनी सहन का शिमाली दरवाज़ा

20इसके बाद उसने चारदीवारी के शिमाली दरवाज़े की पैमाइश की।

21इस दरवाज़े में भी दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन कमरे थे जो मशरिक़ी दरवाज़े के कमरों जितने बड़े थे। उसमें से गुज़रकर हम वहाँ भी दरवाज़े से मुलहिक़ बरामदे में आए जिसका रुख़ रब के घर की तरफ़ था। उस की और उसके सतून-नुमा बाज़ुओं की लंबाई और चौड़ाई उतनी ही थी जितनी मशरिक़ी दरवाज़े के बरामदे और उसके सतून-नुमा बाज़ुओं की थी। गुज़रगाह की पूरी लंबाई साढ़े 87 फ़ुट थी। जब मेरे राहनुमा ने वह फ़ासला नापा जो पहरेदारों के कमरों में से एक की पिछली दीवार से लेकर उसके मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था तो मालूम

[a]इबरानी मतन में इस आयत का मतलब ग़ैरवाज़िह है।

हुआ कि पौने 44 फ़ुट है। 22दरवाज़े से मुलहिक़ बरामदा, खिड़कियाँ और कंदा किए गए खजूर के दरख़्त उसी तरह बनाए गए थे जिस तरह मशरिक़ी दरवाज़े में। बाहर एक सीढ़ी दरवाज़े तक पहुँचाती थी जिसके सात क़दमचे थे। मशरिक़ी दरवाज़े की तरह शिमाली दरवाज़े के अंदरूनी सिरे के साथ एक बरामदा मुलहिक़ था जिससे होकर इनसान सहन में पहुँचता था।

23मशरिक़ी दरवाज़े की तरह इस दरवाज़े के मुक़ाबिल भी अंदरूनी सहन में पहुँचानेवाला दरवाज़ा था। दोनों दरवाज़ों का दरमियानी फ़ासला 175 फ़ुट था।

बैरूनी सहन का जुनूबी दरवाज़ा

24इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे बाहर ले गया। चलते चलते हम जुनूबी चारदीवारी के पास पहुँचे। वहाँ भी दरवाज़ा नज़र आया। उसमें से गुज़रकर हम वहाँ भी दरवाज़े से मुलहिक़ बरामदे में आए जिसका रुख़ रब के घर की तरफ़ था। यह बरामदा दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ुओं समेत दीगर दरवाज़ों के बरामदे जितना बड़ा था। 25दरवाज़े और बरामदे की खिड़कियाँ भी दीगर खिड़कियों की मानिंद थीं। गुज़रगाह की पूरी लंबाई साढ़े 87 फ़ुट थी। जब उसने वह फ़ासला नापा जो पहरेदारों के कमरों में से एक की पिछली दीवार से लेकर उसके मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था तो मालूम हुआ कि पौने 44 फ़ुट है। 26बाहर एक सीढ़ी दरवाज़े तक पहुँचाती थी जिसके सात क़दमचे थे। दीगर दरवाज़ों की तरह जुनूबी दरवाज़े के अंदरूनी सिरे के साथ बरामदा मुलहिक़ था जिससे होकर इनसान सहन में पहुँचता था। बरामदे के दोनों सतून-नुमा बाज़ुओं पर खजूर के दरख़्त कंदा किए गए थे।

27इस दरवाज़े के मुक़ाबिल भी अंदरूनी सहन में पहुँचानेवाला दरवाज़ा था। दोनों दरवाज़ों का दरमियानी फ़ासला 175 फ़ुट था।

अंदरूनी सहन का जुनूबी दरवाज़ा

28फिर मेरा राहनुमा जुनूबी दरवाज़े में से गुज़रकर मुझे अंदरूनी सहन में लाया। जब उसने वहाँ का दरवाज़ा नापा तो मालूम हुआ कि वह बैरूनी दरवाज़ों की मानिंद है। 29-30पहरेदारों के कमरे, बरामदा और उसके सतून-नुमा बाज़ू सब पैमाइश के हिसाब से दीगर दरवाज़ों की मानिंद थे। इस दरवाज़े और इसके साथ मुलहिक़ बरामदे में भी खिड़कियाँ थीं। गुज़रगाह की पूरी लंबाई साढ़े 87 फ़ुट थी। जब मेरे राहनुमा ने वह फ़ासला नापा जो पहरेदारों के कमरे में से एक की पिछली दीवार से लेकर उसके मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था तो मालूम हुआ कि पौने 44 फ़ुट है। 31लेकिन उसके बरामदे का रुख़ बैरूनी सहन की तरफ़ था। उसमें पहुँचने के लिए एक सीढ़ी बनाई गई थी जिसके आठ क़दमचे थे। दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ुओं पर खजूर के दरख़्त कंदा किए गए थे।

अंदरूनी सहन का मशरिक़ी दरवाज़ा

32इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे मशरिक़ी दरवाज़े से होकर अंदरूनी सहन में लाया। जब उसने यह दरवाज़ा नापा तो मालूम हुआ कि यह भी दीगर दरवाज़ों जितना बड़ा है। 33पहरेदारों के कमरे, दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ू और बरामदा पैमाइश के हिसाब से दीगर दरवाज़ों की मानिंद थे। यहाँ भी दरवाज़े और बरामदे में खिड़कियाँ लगी थीं। गुज़रगाह की लंबाई साढ़े 87 फ़ुट और चौड़ाई पौने 44 फ़ुट थी। 34इस दरवाज़े के बरामदे का रुख़ भी बैरूनी सहन की तरफ़ था। दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ुओं पर खजूर के दरख़्त कंदा किए गए थे। बरामदे में पहुँचने के लिए एक सीढ़ी बनाई गई थी जिसके आठ क़दमचे थे।

अंदरूनी सहन का शिमाली दरवाज़ा

35फिर मेरा राहनुमा मुझे शिमाली दरवाज़े के पास लाया। उस की पैमाइश करने पर मालूम हुआ कि यह भी दीगर दरवाज़ों जितना बड़ा है।

36पहरेदारों के कमरे, सतून-नुमा बाज़ू, बरामदा और दीवारों में खिड़कियाँ भी दूसरे दरवाज़ों की मानिंद थीं। गुज़रगाह की लंबाई साढ़े 87 फ़ुट और चौड़ाई पौने 44 फ़ुट थी। 37उसके बरामदे का रुख़ भी बैरूनी सहन की तरफ़ था। दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ुओं पर खजूर के दरख़्त कंदा किए गए थे। उसमें पहुँचने के लिए एक सीढ़ी बनाई गई थी जिसके आठ क़दमचे थे।

अंदरूनी शिमाली दरवाज़े के पास ज़बह का बंदोबस्त

38अंदरूनी शिमाली दरवाज़े के बरामदे में दरवाज़ा था जिसमें से गुज़रकर इनसान उस कमरे में दाख़िल होता था जहाँ उन ज़बह किए हुए जानवरों को धोया जाता था जिन्हें भस्म करना होता था। 39बरामदे में चार मेज़ें थीं, कमरे के दोनों तरफ़ दो दो मेज़ें। इन मेज़ों पर उन जानवरों को ज़बह किया जाता था जो भस्म होनेवाली क़ुरबानियों, गुनाह की क़ुरबानियों और क़ुसूर की क़ुरबानियों के लिए मख़सूस थे। 40इस बरामदे से बाहर मज़ीद चार ऐसी मेज़ें थीं, दो एक तरफ़ और दो दूसरी तरफ़। 41मिल मिलाकर आठ मेज़ें थीं जिन पर क़ुरबानियों के जानवर ज़बह किए जाते थे। चार बरामदे के अंदर और चार उससे बाहर के सहन में थीं।

42बरामदे की चार मेज़ें तराशे हुए पत्थर से बनाई गई थीं। हर एक की लंबाई और चौड़ाई साढ़े 31 इंच और ऊँचाई 21 इंच थी। उन पर वह तमाम आलात पड़े थे जो जानवरों को भस्म होनेवाली क़ुरबानी और बाक़ी क़ुरबानियों के लिए तैयार करने के लिए दरकार थे। 43जानवरों का गोश्त इन मेज़ों पर रखा जाता था। इर्दगिर्द की दीवारों में तीन तीन इंच लंबी हुकें लगी थीं।

44फिर हम अंदरूनी सहन में दाख़िल हुए। वहाँ शिमाली दरवाज़े के साथ एक कमरा मुलहिक़ था जो अंदरूनी सहन की तरफ़ खुला था और जिसका रुख़ जुनूब की तरफ़ था। जुनूबी दरवाज़े के साथ भी ऐसा कमरा था। उसका रुख़ शिमाल की तरफ़ था। 45मेरे राहनुमा ने मुझसे कहा, "जिस कमरे का रुख़ जुनूब की तरफ़ है वह उन इमामों के लिए है जो रब के घर की देख-भाल करते हैं, 46जबकि जिस कमरे का रुख़ शिमाल की तरफ़ है वह उन इमामों के लिए है जो क़ुरबानगाह की देख-भाल करते हैं। तमाम इमाम सदोक़ की औलाद हैं। लावी के क़बीले में से सिर्फ़ उन्हीं को रब के हुज़ूर आकर उस की ख़िदमत करने की इजाज़त है।"

अंदरूनी सहन और रब का घर

47मेरे राहनुमा ने अंदरूनी सहन की पैमाइश की। उस की लंबाई और चौड़ाई पौने दो दो सौ फ़ुट थी। क़ुरबानगाह इस सहन में रब के घर के सामने ही थी। 48फिर उसने मुझे रब के घर के बरामदे में ले जाकर दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ुओं की पैमाइश की। मालूम हुआ कि यह पौने 9 फ़ुट मोटे हैं। दरवाज़े की चौड़ाई साढ़े 24 फ़ुट थी जबकि दाएँ-बाएँ की दीवारों की लंबाई सवा पाँच पाँच फ़ुट थी। 49चुनाँचे बरामदे की पूरी चौड़ाई 35 और लंबाई 21 फ़ुट थी। उसमें दाख़िल होने के लिए दस क़दमचोंवाली सीढ़ी बनाई गई थी। दरवाज़े के दोनों सतून-नुमा बाज़ुओं के साथ साथ एक एक सतून खड़ा किया गया था।

41 इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे रब के घर के पहले कमरे यानी 'मुक़द्दस कमरा' में ले गया। उसने दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ू नापे तो मालूम हुआ कि साढ़े दस दस फ़ुट मोटे हैं। 2दरवाज़े की चौड़ाई साढ़े 17 फ़ुट थी, और दाएँ-बाएँ की दीवारें पौने नौ नौ फ़ुट लंबी थीं। कमरे की पूरी लंबाई 70 फ़ुट और चौड़ाई 35 फ़ुट थी।

3फिर वह आगे बढ़कर सबसे अंदरूनी कमरे में दाख़िल हुआ। उसने दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ुओं की पैमाइश की तो मालूम हुआ कि साढ़े तीन तीन फ़ुट मोटे हैं। दरवाज़े की चौड़ाई साढ़े 10 फ़ुट थी, और दाएँ-बाएँ की दीवारें सवा बारह बारह फ़ुट लंबी थीं। 4अंदरूनी कमरे की लंबाई

और चौड़ाई पैंतीस पैंतीस फ़ुट थी। वह बोला, “यह मुक़द्दसतरीन कमरा है।”

रब के घर से मुलहिक़ कमरे

5फिर उसने रब के घर की बैरूनी दीवार नापी। उस की मोटाई साढ़े 10 फ़ुट थी। दीवार के साथ साथ कमरे तामीर किए गए थे। हर कमरे की चौड़ाई 7 फ़ुट थी। 6कमरों की तीन मनज़िलें थीं, कुल 30 कमरे थे। रब के घर की बैरूनी दीवार दूसरी मनज़िल पर पहली मनज़िल की निसबत कम मोटी और तीसरी मनज़िल पर दूसरी मनज़िल की निसबत कम मोटी थी। नतीजतन हर मनज़िल का वज़न उस की बैरूनी दीवार पर था और ज़रूरत नहीं थी कि इस दीवार में शहतीर लगाएँ। 7चुनाँचे दूसरी मनज़िल पहली की निसबत चौड़ी और तीसरी दूसरी की निसबत चौड़ी थी। एक सीढ़ी निचली मनज़िल से दूसरी और तीसरी मनज़िल तक पहुँचाती थी।

8-11इन कमरों की बैरूनी दीवार पौने 9 फ़ुट मोटी थी। जो कमरे रब के घर की शिमाली दीवार में थे उनमें दाख़िल होने का एक दरवाज़ा था, और इसी तरह जुनूबी कमरों में दाख़िल होने का एक दरवाज़ा था। मैंने देखा कि रब का घर एक चबूतरे पर तामीर हुआ है। इसका जितना हिस्सा उसके इर्दगिर्द नज़र आता था वह पौने 9 फ़ुट चौड़ा और साढ़े 10 फ़ुट ऊँचा था। रब के घर की बैरूनी दीवार से मुलहिक़ कमरे इस पर बनाए गए थे। इस चबूतरे और इमामों से मुस्तामल मकानों के दरमियान खुली जगह थी जिसका फ़ासला 35 फ़ुट था। यह खुली जगह रब के घर के चारों तरफ़ नज़र आती थी।

मग़रिब में इमारत

12इस खुली जगह के मग़रिब में एक इमारत थी जो साढ़े 157 फ़ुट लंबी और साढ़े 122 फ़ुट चौड़ी थी। उस की दीवारें चारों तरफ़ पौने नौ नौ फ़ुट मोटी थीं।

रब के घर की बैरूनी पैमाइश

13फिर मेरे राहनुमा ने बाहर से रब के घर की पैमाइश की। उस की लंबाई 175 फ़ुट थी। रब के घर की पिछली दीवार से मग़रिबी इमारत तक का फ़ासला भी 175 फ़ुट था। 14फिर उसने रब के घर के सामनेवाली यानी मशरिक़ी दीवार शिमाल और जुनूब में खुली जगह समेत की पैमाइश की। मालूम हुआ कि उसका फ़ासला भी 175 फ़ुट है। 15उसने मग़रिब में उस इमारत की लंबाई नापी जो रब के घर के पीछे थी। मालूम हुआ कि यह भी दोनों पहलुओं की गुज़रगाहों समेत 175 फ़ुट लंबी है।

रब के घर का अंदरूनी हिस्सा

रब के घर के बरामदे, मुक़द्दस कमरे और मुक़द्दसतरीन कमरे की दीवारों पर 16फ़र्श से लेकर खिड़कियों तक लकड़ी के तख़्ते लगाए गए थे। इन खिड़कियों को बंद किया जा सकता था। 17रब के घर की अंदरूनी दीवारों पर दरवाज़ों के ऊपर तक तस्वीरें कंदा की गई थीं। 18खजूर के दरख़्तों और करूबी फ़रिश्तों की तस्वीरें बारी बारी नज़र आती थीं। हर फ़रिश्ते के दो चेहरे थे। 19इनसान का चेहरा एक तरफ़ के दरख़्त की तरफ़ देखता था जबकि शेरबबर का चेहरा दूसरी तरफ़ के दरख़्त की तरफ़ देखता था। यह दरख़्त और करूबी पूरी दीवार पर बारी बारी मुनक़्क़श किए गए थे, 20फ़र्श से लेकर दरवाज़ों के ऊपर तक। 21मुक़द्दस कमरे में दाख़िल होनेवाले दरवाज़े के दोनों बाज़ू मुरब्बा थे।

लकड़ी की क़ुरबानगाह

मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े के सामने 22लकड़ी की क़ुरबानगाह नज़र आई। उस की ऊँचाई सवा 5 फ़ुट और चौड़ाई साढ़े तीन फ़ुट थी। उसके कोने, पाया और चारों पहलू लकड़ी से बने थे। उसने मुझसे कहा, “यह वही मेज़ है जो रब के हुज़ूर रहती है।”

दरवाज़े

23मुक़द्दस कमरे में दाख़िल होने का एक
दरवाज़ा था और मुक़द्दसतरीन कमरे का एक।
24हर दरवाज़े के दो किवाड़ थे, वह दरमियान
में से खुलते थे। 25दीवारों की तरह मुक़द्दस
कमरे के दरवाज़े पर भी खजूर के दरख़्त और
करूबी फ़रिश्ते कंदा किए गए थे। और बरामदे
के बाहरवाले दरवाज़े के ऊपर लकड़ी की छोटी-
सी छत बनाई गई थी।

26बरामदे के दोनों तरफ़ खिड़कियाँ थीं, और
दीवारों पर खजूर के दरख़्त कंदा किए गए थे।

इमामों के लिए मख़सूस कमरे

42 इसके बाद हम दुबारा बैरूनी सहन में
आए। मेरा राहनुमा मुझे रब के घर के
शिमाल में वाक़े एक इमारत के पास ले गया जो
रब के घर के पीछे यानी मग़रिब में वाक़े इमारत
के मुक़ाबिल थी। 2यह इमारत 175 फ़ुट लंबी
और साढ़े 87 फ़ुट चौड़ी थी।

3उसका रुख़ अंदरूनी सहन की उस खुली
जगह की तरफ़ था जो 35 फ़ुट चौड़ी थी। दूसरा
रुख़ बैरूनी सहन के पक्के फ़र्श की तरफ़ था।

मकान की तीन मनज़िलें थीं। दूसरी मनज़िल
पहली की निसबत कम चौड़ी और तीसरी दूसरी
की निसबत कम चौड़ी थी। 4मकान के शिमाली
पहलू में एक गुज़रगाह थी जो एक सिरे से
दूसरे सिरे तक ले जाती थी। उस की लंबाई
175 फ़ुट और चौड़ाई साढ़े 17 फ़ुट थी। कमरों
के दरवाज़े सब शिमाल की तरफ़ खुलते थे।
5-6दूसरी मनज़िल के कमरे पहली मनज़िल की
निसबत कम चौड़े थे ताकि उनके सामने टैरस
हो। इसी तरह तीसरी मनज़िल के कमरे दूसरी
की निसबत कम चौड़े थे। इस इमारत में सहन
की दूसरी इमारतों की तरह सतून नहीं थे।

7कमरों के सामने एक बैरूनी दीवार थी जो उन्हें
बैरूनी सहन से अलग करती थी। उस की लंबाई
साढ़े 87 फ़ुट थी, 8क्योंकि बैरूनी सहन की तरफ़
कमरों की मिल मिलाकर लंबाई साढ़े 87 फ़ुट
थी अगरचे पूरी दीवार की लंबाई 175 फ़ुट थी।
9बैरूनी सहन से इस इमारत में दाख़िल होने के
लिए मशरिक़ की तरफ़ से आना पड़ता था। वहाँ
एक दरवाज़ा था।

10रब के घर के जुनूब में उस जैसी एक
और इमारत थी जो रब के घर के पीछेवाली
यानी मग़रिबी इमारत के मुक़ाबिल थी। 11उसके
कमरों के सामने भी मज़कूरा शिमाली इमारत
जैसी गुज़रगाह थी। उस की लंबाई और चौड़ाई,
डिज़ायन और दरवाज़े, ग़रज़ सब कुछ शिमाली
मकान की मानिंद था। 12कमरों के दरवाज़े जुनूब
की तरफ़ थे, और उनके सामने भी एक हिफ़ाज़ती
दीवार थी। बैरूनी सहन से इस इमारत में दाख़िल
होने के लिए मशरिक़ से आना पड़ता था। उसका
दरवाज़ा भी गुज़रगाह के शुरू में था।

13उस आदमी ने मुझसे कहा, "यह दोनों
इमारतें मुक़द्दस हैं। जो इमाम रब के हुज़ूर आते
हैं वह इन्हीं में मुक़द्दसतरीन क़ुरबानियाँ खाते हैं।
चूँकि यह कमरे मुक़द्दस हैं इसलिए इमाम इनमें
मुक़द्दसतरीन क़ुरबानियाँ रखेंगे, ख़ाह ग़ल्ला,
गुनाह या क़ुसूर की क़ुरबानियाँ क्यों न हों। 14जो
इमाम मक़दिस से निकलकर बैरूनी सहन में
जाना चाहें उन्हें इन कमरों में वह मुक़द्दस लिबास
उतारकर छोड़ना है जो उन्होंने रब की ख़िदमत
करते वक़्त पहने हुए थे। लाज़िम है कि वह पहले
अपने कपड़े बदलें, फिर ही वहाँ जाएँ जहाँ बाक़ी
लोग जमा होते हैं।"

बाहर से रब के घर की चारदीवारी की पैमाइश

15रब के घर के इहाते में सब कुछ नापने के
बाद मेरा राहनुमा मुझे मशरिक़ी दरवाज़े से बाहर
ले गया और बाहर से चारदीवारी की पैमाइश करने
लगा। 16-20फ़ीते से पहले मशरिक़ी दीवार नापी,
फिर शिमाली, जुनूबी और मग़रिबी दीवार। हर
दीवार की लंबाई 875 फ़ुट थी। इस चारदीवारी
का मक़सद यह था कि जो कुछ मुक़द्दस है वह
उससे अलग किया जाए जो मुक़द्दस नहीं है।

रब अपने घर में वापस आ जाता है

43 मेरा राहनुमा मुझे दुबारा रब के घर
के मशरिक़ी दरवाज़े के पास ले गया।
2अचानक इसराईल के ख़ुदा का जलाल मशरिक़
से आता हुआ दिखाई दिया। ज़बरदस्त आबशार
का-सा शोर सुनाई दिया, और ज़मीन उसके
जलाल से चमक रही थी। 3रब मुझ पर यों ज़ाहिर
हुआ जिस तरह दीगर रोयाओं में, पहले दरियाए-
किबार के किनारे और फिर उस वक़्त जब वह
यरूशलम को तबाह करने आया था।

मैं मुँह के बल गिर गया। 4रब का जलाल
मशरिक़ी दरवाज़े में से रब के घर में दाख़िल हुआ।
5फिर अल्लाह का रूह मुझे उठाकर अंदरूनी
सहन में ले गया। वहाँ मैंने देखा कि पूरा घर रब
के जलाल से मामूर है।

6मेरे पास खड़े आदमी की मौजूदगी में कोई रब
के घर में से मुझसे मुख़ातिब हुआ,

7"ऐ आदमज़ाद, यह मेरे तख़्त और मेरे
पाँवों के तल्वों का मक़ाम है। यहीं मैं हमेशा
तक इसराईलियों के दरमियान सुकूनत करूँगा।
आइंदा न कभी इसराईली और न उनके बादशाह
मेरे मुक़द्दस नाम की बेहुरमती करेंगे। न वह
अपनी ज़िनाकाराना बुतपरस्ती से, न बादशाहों
की लाशों से मेरे नाम की बेहुरमती करेंगे। 8माज़ी
में इसराईल के बादशाहों ने अपने महलों को मेरे
घर के साथ ही तामीर किया। उनकी दहलीज़
मेरी दहलीज़ के साथ और उनके दरवाज़े का बाज़ू
मेरे दरवाज़े के बाज़ू के साथ लगता था। एक ही
दीवार उन्हें मुझसे अलग रखती थी। यों उन्होंने
अपनी मकरूह हरकतों से मेरे मुक़द्दस नाम की
बेहुरमती की, और जवाब में मैंने अपने ग़ज़ब में
उन्हें हलाक कर दिया। 9लेकिन अब वह अपनी
ज़िनाकाराना बुतपरस्ती और अपने बादशाहों की
लाशें मुझसे दूर रखेंगे। तब मैं हमेशा तक उनके
दरमियान सुकूनत करूँगा।

10ऐ आदमज़ाद, इसराईलियों को इस घर के
बारे में बता दे ताकि उन्हें अपने गुनाहों पर शर्म
आए। वह ध्यान से नए घर के नक़्शे का मुतालआ
करें। 11अगर उन्हें अपनी हरकतों पर शर्म आए
तो उन्हें घर की तफ़सीलात भी दिखा दे, यानी
उस की तरतीब, उसके आने जाने के रास्ते और
उसका पूरा इंतज़ाम तमाम क़वायद और अहकाम
समेत। सब कुछ उनके सामने ही लिख दे ताकि
वह उसके पूरे इंतज़ाम के पाबंद रहें और उसके
तमाम क़वायद की पैरवी करें। 12रब के घर के
लिए मेरी हिदायत सुन! इस पहाड़ की चोटी
गिर्दो-नवाह के तमाम इलाक़े समेत मुक़द्दसतरीन
जगह है। यह घर के लिए मेरी हिदायत है।"

भस्म होनेवाली क़ुरबानियों की क़ुरबानगाह

13क़ुरबानगाह यों बनाई गई थी कि उसका
पाया नाली से घिरा हुआ था जो 21 इंच गहरी
और उतनी ही चौड़ी थी। बाहर की तरफ़ नाली के
किनारे पर छोटी-सी दीवार थी जिसकी ऊँचाई 9
इंच थी। 14क़ुरबानगाह के तीन हिस्से थे। सबसे
निचला हिस्सा साढ़े तीन फ़ुट ऊँचा था। इस पर
बना हुआ हिस्सा 7 फ़ुट ऊँचा था, लेकिन उस की
चौड़ाई कुछ कम थी, इसलिए चारों तरफ़ निचले
हिस्से का ऊपरवाला किनारा नज़र आता था। इस
किनारे की चौड़ाई 21 इंच थी। तीसरा और सबसे
ऊपरवाला हिस्सा भी इसी तरह बनाया गया
था। वह दूसरे हिस्से की निसबत कम चौड़ा था,
इसलिए चारों तरफ़ दूसरे हिस्से का ऊपरवाला
किनारा नज़र आता था। इस किनारे की चौड़ाई
भी 21 इंच थी। 15तीसरे हिस्से पर क़ुरबानियाँ
जलाई जाती थीं, और चारों कोनों पर सींग लगे
थे। यह हिस्सा भी 7 फ़ुट ऊँचा था। 16क़ुरबानगाह
की ऊपरवाली सतह मुरब्बा शक्ल की थी। उस
की चौड़ाई और लंबाई इक्कीस इक्कीस फ़ुट थी।
17दूसरा हिस्सा भी मुरब्बा शक्ल का था। उस की
चौड़ाई और लंबाई साढ़े चौबीस चौबीस फ़ुट थी।
उसका ऊपरवाला किनारा नज़र आता था, और
उस पर 21 इंच चौड़ी नाली थी, यों कि किनारे पर
छोटी-सी दीवार थी जिसकी ऊँचाई साढ़े 10 इंच

थी। क़ुरबानगाह पर चढ़ने के लिए उसके मशरिक़
में सीढ़ी थी।

क़ुरबानगाह की मख़सूसियत

18फिर रब मुझसे हमकलाम हुआ, "ऐ
आदमज़ाद, रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
इस क़ुरबानगाह को तामीर करने के बाद तुझे
इस पर क़ुरबानियाँ जलाकर इसे मख़सूस करना
है। साथ साथ इस पर क़ुरबानियों का ख़ून भी
छिड़कना है। इस सिलसिले में मेरी हिदायात सुन!
19सिर्फ़ लावी के क़बीले के उन इमामों को रब
के घर में मेरे हुज़ूर ख़िदमत करने की इजाज़त है
जो सदोक़ की औलाद हैं।

रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि उन्हें एक
जवान बैल दे ताकि वह उसे गुनाह की क़ुरबानी के
तौर पर पेश करें। 20इस बैल का कुछ ख़ून लेकर
क़ुरबानगाह के चारों सींगों, निचले हिस्से के चारों
कोनों और इर्दगिर्द उसके किनारे पर लगा दे। यों
तू क़ुरबानगाह का कफ़्फ़ारा देकर उसे पाक-साफ़
करेगा। 21इसके बाद जवान बैल को मक़दिस से
बाहर किसी मुक़र्ररा जगह पर ले जा। वहाँ उसे
जला देना है।

22अगले दिन एक बेऐब बकरे को क़ुरबान कर।
यह भी गुनाह की क़ुरबानी है, और इसके ज़रीए
क़ुरबानगाह को पहली क़ुरबानी की तरह पाक-
साफ़ करना है।

23पाक-साफ़ करने के इस सिलसिले की
तकमील पर एक बेऐब बैल और एक बेऐब मेंढे
को चुनकर 24रब को पेश कर। इमाम इन जानवरों
पर नमक छिड़ककर इन्हें रब को भस्म होनेवाली
क़ुरबानी के तौर पर पेश करें।

25लाज़िम है कि तू सात दिन तक रोज़ाना एक
बकरा, एक जवान बैल और एक मेंढा क़ुरबान
करे। सब जानवर बेऐब हों। 26सात दिनों की इस
कारखाई से तुम क़ुरबानगाह का कफ़्फ़ारा देकर
उसे पाक-साफ़ और मख़सूस करोगे। 27आठवें
दिन से इमाम बाक़ायदा क़ुरबानियाँ शुरू कर
सकेंगे। उस वक़्त से वह तुम्हारे लिए भस्म
होनेवाली और सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाएँगे।
तब तुम मुझे मंज़ूर होगे। यह रब क़ादिरे-मुतलक़
का फ़रमान है।"

रब के घर का बैरूनी मशरिक़ी दरवाज़ा बंद किया जाता है

44 मेरा राहनुमा मुझे दुबारा मक़दिस के
बैरूनी मशरिक़ी दरवाज़े के पास ले
गया। अब वह बंद था। 2रब ने फ़रमाया, "अब
से यह दरवाज़ा हमेशा तक बंद रहे। इसे कभी
नहीं खोलना है। किसी को भी इसमें से दाख़िल
होने की इजाज़त नहीं, क्योंकि रब जो इसराईल
का ख़ुदा है इस दरवाज़े में से होकर रब के घर में
दाख़िल हुआ है। 3सिर्फ़ इसराईल के हुक्मरान को
इस दरवाज़े में बैठने और मेरे हुज़ूर क़ुरबानी का
अपना हिस्सा खाने की इजाज़त है। लेकिन इसके
लिए वह दरवाज़े में से गुज़र नहीं सकेगा बल्कि
बैरूनी सहन की तरफ़ से उसमें दाख़िल होगा।
वह दरवाज़े के साथ मुलहिक़ बरामदे से होकर
वहाँ पहुँचेगा और इसी रास्ते से वहाँ से निकलेगा
भी।"

अकसर लावियों की ख़िदमत को महदूद किया जाता है

4फिर मेरा राहनुमा मुझे शिमाली दरवाज़े में से
होकर दुबारा अंदरूनी सहन में ले गया। हम रब के
घर के सामने पहुँचे। मैंने देखा कि रब का घर रब
के जलाल से मामूर हो रहा है। मैं मुँह के बल गिर
गया।

5रब ने फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, ध्यान से
देख, ग़ौर से सुन! रब के घर के बारे में उन तमाम
हिदायात पर तवज्जुह दे जो मैं तुझे बतानेवाला
हूँ। ध्यान दे कि कौन कौन उसमें जा सकेगा। 6इस
सरकश क़ौम इसराईल को बता,

'ऐ इसराईली क़ौम, रब क़ादिरे-मुतलक़
फ़रमाता है कि तुम्हारी मकरूह हरकतें बहुत हैं,
अब बस करो! 7तुम परदेसियों को मेरे मक़दिस
में लाए हो, ऐसे लोगों को जो बातिन और ज़ाहिर

में नामख़तून हैं। और यह तुमने उस वक़्त किया
जब तुम मुझे मेरी ख़ुराक यानी चरबी और ख़ून
पेश कर रहे थे। यों तुमने मेरे घर की बेहुरमती
करके अपनी घिनौनी हरकतों से वह अहद तोड़
डाला है जो मैंने तुम्हारे साथ बाँधा था। 8तुम
ख़ुद मेरे मक़दिस में ख़िदमत नहीं करना चाहते
थे बल्कि तुमने परदेसियों को यह ज़िम्मेदारी दी
थी कि वह तुम्हारी जगह यह ख़िदमत अंजाम दें।

9इसलिए रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
आइंदा जो भी ग़ैरमुल्की अंदरूनी और बैरूनी तौर
पर नामख़तून है उसे मेरे मक़दिस में दाख़िल
होने की इजाज़त नहीं। इसमें वह अजनबी भी
शामिल हैं जो इसराईलियों के दरमियान रहते
हैं। 10जब इसराईली भटक गए और मुझसे दूर
होकर बुतों के पीछे लग गए तो अकसर लावी
भी मुझसे दूर हुए। अब उन्हें अपने गुनाह की
सज़ा भुगतनी पड़ेगी। 11आइंदा वह मेरे मक़दिस
में हर क़िस्म की ख़िदमत नहीं करेंगे। उन्हें सिर्फ़
दरवाज़ों की पहरादारी करने और जानवरों को
ज़बह करने की इजाज़त होगी। इन जानवरों में
भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ भी शामिल होंगी और
ज़बह की क़ुरबानियाँ भी। लावी क़ौम की ख़िदमत
के लिए रब के घर में हाज़िर रहेंगे, 12लेकिन चूँकि
वह अपने हमवतनों के बुतों के सामने लोगों की
ख़िदमत करके उनके लिए गुनाह का बाइस बने
रहे इसलिए मैंने अपना हाथ उठाकर क़सम खाई
है कि उन्हें इसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी। यह रब
क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

13अब से वह इमाम की हैसियत से मेरे क़रीब
आकर मेरी ख़िदमत नहीं करेंगे, अब से वह
उन चीज़ों के क़रीब नहीं आएँगे जिनको मैंने
मुक़द्दसतरीन क़रार दिया है। 14इसके बजाए मैं
उन्हें रब के घर के निचले दर्जे की ज़िम्मेदारियाँ
दूँगा।

इमामों के लिए हिदायात

15लेकिन रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि
लावी का एक ख़ानदान उनमें शामिल नहीं है।
सदोक़ का ख़ानदान आइंदा भी मेरी ख़िदमत
करेगा। उसके इमाम उस वक़्त भी वफ़ादारी
से मेरे मक़दिस में मेरी ख़िदमत करते रहे जब
इसराईल के बाक़ी लोग मुझसे दूर हो गए
थे। इसलिए यह आइंदा भी मेरे हुज़ूर आकर
मुझे क़ुरबानियों की चरबी और ख़ून पेश करेंगे।
16सिर्फ़ यही इमाम मेरे मक़दिस में दाख़िल होंगे
और मेरी मेज़ पर मेरी ख़िदमत करके मेरे तमाम
फ़रायज़ अदा करेंगे।

17जब भी इमाम अंदरूनी दरवाज़े में दाख़िल
होते हैं तो लाज़िम है कि वह कतान के कपड़े
पहन लें। अंदरूनी सहन और रब के घर में ख़िदमत
करते वक़्त ऊन के कपड़े पहनना मना है। 18वह
कतान की पगड़ी और पाजामा पहनें, क्योंकि
उन्हें पसीना दिलानेवाले कपड़ों से गुरेज़ करना
है। 19जब भी इमाम अंदरूनी सहन से दुबारा
बैरूनी सहन में जाना चाहें तो लाज़िम है कि वह
ख़िदमत के लिए मुस्तामल कपड़ों को उतारें। वह
इन कपड़ों को मुक़द्दस कमरों में छोड़ आएँ और
आम कपड़े पहन लें, ऐसा न हो कि मुक़द्दस कपड़े
छूने से आम लोगों की जान ख़तरे में पड़ जाए।

20न इमाम अपना सर मुँडवाएँ, न उनके बाल
लंबे हों बल्कि वह उन्हें कटवाते रहें। 21इमाम को
अंदरूनी सहन में दाख़िल होने से पहले मै पीना
मना है।

22इमाम को किसी तलाक़शुदा औरत या बेवा
से शादी करने की इजाज़त नहीं है। वह सिर्फ़
इसराईली कुँवारी से शादी करे। सिर्फ़ उस वक़्त
बेवा से शादी करने की इजाज़त है जब मरहूम
शौहर इमाम था।

23इमाम अवाम को मुक़द्दस और ग़ैर-
मुक़द्दस चीज़ों में फ़रक़ की तालीम दें। वह उन्हें
नापाक और पाक चीज़ों में इम्तियाज़ करना
सिखाएँ। 24अगर तनाज़ा हो तो इमाम मेरे
अहकाम के मुताबिक़ ही उस पर फ़ैसला करें।
उनका फ़र्ज़ है कि वह मेरी मुक़र्ररा ईदों को मेरी
हिदायात और क़वायद के मुताबिक़ ही मनाएँ।
वह मेरा सबत का दिन मख़सूसो-मुक़द्दस रखें।

25इमाम अपने आपको किसी लाश के पास
जाने से नापाक न करे। इसकी इजाज़त सिर्फ़
इसी सूरत में है कि उसके माँ-बाप, बच्चों, भाइयों
या ग़ैरशादीशुदा बहनों में से कोई इंतक़ाल कर
जाए। 26अगर कभी ऐसा हो तो वह अपने
आपको पाक-साफ़ करने के बाद मज़ीद सात दिन
इंतज़ार करे, 27फिर मक़दिस के अंदरूनी सहन
में जाकर अपने लिए गुनाह की क़ुरबानी पेश करे।
तब ही वह दुबारा मक़दिस में ख़िदमत कर सकता
है। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

28सिर्फ़ मैं ही इमामों का मौरूसी हिस्सा हूँ।
उन्हें इसराईल में मौरूसी मिलकियत मत देना,
क्योंकि मैं ख़ुद उनकी मौरूसी मिलकियत हूँ।
29खाने के लिए इमामों को ग़ल्ला, गुनाह और
क़ुसूर की क़ुरबानियाँ मिलेंगी, नीज़ इसराईल में
वह सब कुछ जो रब के लिए मख़सूस किया
जाता है। 30इमामों को फ़सल के पहले फल का
बेहतरीन हिस्सा और तुम्हारे तमाम हदिये मिलेंगे।
उन्हें अपने गुँधे हुए आटे से भी हिस्सा देना है। तब
अल्लाह की बरकत तेरे घराने पर ठहरेगी।

31जो परिंदा या दीगर जानवर फ़ितरी तौर पर
या किसी दूसरे जानवर के हमले से मर जाए
उसका गोश्त खाना इमाम के लिए मना है।

इसराईल में रब का हिस्सा

45 जब तुम मुल्क को क़ुरा डालकर
क़बीलों में तक़सीम करोगे तो एक
हिस्से को रब के लिए मख़सूस करना है। उस
ज़मीन की लंबाई साढ़े 12 किलोमीटर और
चौड़ाई 10 किलोमीटर होगी। पूरी ज़मीन मुक़द्दस
होगी।

2इस ख़ित्ते में एक प्लाट रब के घर के लिए
मख़सूस होगा। उस की लंबाई भी 875 फ़ुट होगी
और उस की चौड़ाई भी। उसके इर्दगिर्द खुली
जगह होगी जिसकी चौड़ाई साढ़े 87 फ़ुट होगी।
3ख़ित्ते का आधा हिस्सा अलग किया जाए।
उस की लंबाई साढ़े 12 किलोमीटर और चौड़ाई
5 किलोमीटर होगी, और उसमें मक़दिस यानी
मुक़द्दसतरीन जगह होगी। 4यह ख़ित्ता मुल्क का
मुक़द्दस इलाक़ा होगा। वह उन इमामों के लिए
मख़सूस होगा जो मक़दिस में उस की ख़िदमत
करते हैं। उसमें उनके घर और मक़दिस का
मख़सूस प्लाट होगा।

5ख़ित्ते का दूसरा हिस्सा उन बाक़ी लावियों को
दिया जाएगा जो रब के घर में ख़िदमत करेंगे।
यह उनकी मिलकियत होगी, और उसमें वह
अपनी आबादियाँ बना सकेंगे। उस की लंबाई और
चौड़ाई पहले हिस्से के बराबर होगी।

6मुक़द्दस ख़ित्ते से मुलहिक़ एक और
ख़ित्ता होगा जिसकी लंबाई साढ़े 12 किलो-
मीटर और चौड़ाई ढाई किलोमीटर होगी। यह
एक ऐसे शहर के लिए मख़सूस होगा जिसमें
कोई भी इसराईली रह सकेगा।

हुक्मरान के लिए ज़मीन

7हुक्मरान के लिए भी ज़मीन अलग करनी
है। यह ज़मीन मुक़द्दस ख़ित्ते की मशरिक़ी हद
से लेकर मुल्क की मशरिक़ी सरहद तक और
मुक़द्दस ख़ित्ते की मग़रिबी हद से लेकर समुंदर
तक होगी। चुनाँचे मशरिक़ से मग़रिब तक मुक़द्दस
ख़ित्ते और हुक्मरान के इलाक़े का मिल मिलाकर
फ़ासला उतना है जितना क़बायली इलाक़ों का
है। 8यह इलाक़ा मुल्के-इसराईल में हुक्मरान का
हिस्सा होगा। फिर वह आइंदा मेरी क़ौम पर ज़ुल्म
नहीं करेगा बल्कि मुल्क के बाक़ी हिस्से को
इसराईल के क़बीलों पर छोड़ेगा।

हुक्मरान के लिए हिदायात

9रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ
इसराईली हुक्मरानो, अब बस करो! अपनी ग़लत
हरकतों से बाज़ आओ। अपना ज़ुल्मो-तशद्दुद
छोड़कर इनसाफ़ और रास्तबाज़ी क़ायम करो।
मेरी क़ौम को उस की मौरूसी ज़मीन से भगाने से
बाज़ आओ। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान
है।

10सहीह तराज़ू इस्तेमाल करो, तुम्हारे बाट और पैमाइश के आलात ग़लत न हों। 11ग़ल्ला नापने का बरतन बनाम ऐफ़ा माए नापने के बरतन बनाम बत जितना बड़ा हो। दोनों के लिए कसौटी ख़ोमर है। एक ख़ोमर 10 ऐफ़ा और 10 बत के बराबर है। 12तुम्हारे बाट यों हों कि 20 जीरह 1 मिस्क़ाल के बराबर और 60 मिस्क़ाल 1 माना के बराबर हों।

13दर्जे-ज़ैल तुम्हारे बाक़ायदा हदिये हैं :

अनाज : तुम्हारी फ़सल का 60वाँ हिस्सा,

जौ : तुम्हारी फ़सल का 60वाँ हिस्सा,

14ज़ैतून का तेल : तुम्हारी फ़सल का 100वाँ हिस्सा (तेल को बत के हिसाब से नापना है। 10 बत 1 ख़ोमर और 1 कोर के बराबर है।),

15200 भेड़-बकरियों में से एक।

यह चीज़ें ग़ल्ला की नज़रों के लिए, भस्म होनेवाली क़ुरबानियों और सलामती की क़ुरबानियों के लिए मुक़र्रर हैं। उनसे क़ौम का कफ़्फ़ारा दिया जाएगा। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

16लाज़िम है कि तमाम इसराईली यह हदिये मुल्क के हुक्मरान के हवाले करें। 17हुक्मरान का फ़र्ज़ होगा कि वह नए चाँद की ईदों, सबत के दिनों और दीगर ईदों पर तमाम इसराईली क़ौम के लिए क़ुरबानियाँ मुहैया करे। इनमें भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ, गुनाह और सलामती की क़ुरबानियाँ और ग़ल्ला और मै की नज़रें शामिल होंगी। यों वह इसराईल का कफ़्फ़ारा देगा।

बड़ी ईदों पर क़ुरबानियाँ

18रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि पहले महीने[a] के पहले दिन को एक बेऐब बैल को क़ुरबान करके मक़दिस को पाक-साफ़ कर। 19इमाम बैल का ख़ून लेकर उसे रब के घर के दरवाज़ों के बाज़ुओं, क़ुरबानगाह के दरमियानी हिस्से के कोनों और अंदरूनी सहन में पहुँचानेवाले दरवाज़ों के बाज़ुओं पर लगा दे। 20यही अमल पहले महीने के सातवें दिन भी कर ताकि उन सबका कफ़्फ़ारा दिया जाए जिन्होंने ग़ैरइरादी तौर पर या बेख़बरी से गुनाह किया हो। यों तुम रब के घर का कफ़्फ़ारा दोगे।

21पहले महीने के चौधवें दिन फ़सह की ईद का आग़ाज़ हो। उसे सात दिन मनाओ, और उसके दौरान सिर्फ़ बेख़मीरी रोटी खाओ। 22पहले दिन मुल्क का हुक्मरान अपने और तमाम क़ौम के लिए गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर एक बैल पेश करे। 23नीज़, वह ईद के सात दिन के दौरान रोज़ाना सात बेऐब बैल और सात मेंढे भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर क़ुरबान करे और गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर एक एक बकरा पेश करे। 24वह हर बैल और हर मेंढे के साथ साथ ग़ल्ला की नज़र भी पेश करे। इसके लिए वह फ़ी जानवर 16 किलोग्राम मैदा और 4 लिटर तेल मुहैया करे।

25सातवें महीने[b] के पंद्रहवें दिन झोंपड़ियों की ईद शुरू होती है। हुक्मरान इस ईद पर भी सात दिन के दौरान वही क़ुरबानियाँ पेश करे जो फ़सह की ईद के लिए दरकार हैं यानी गुनाह की क़ुरबानियाँ, भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ, ग़ल्ला की नज़रें और तेल।

ईदों पर हुक्मरान की जानिब से क़ुरबानियाँ

46 रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि लाज़िम है कि अंदरूनी सहन में पहुँचानेवाला मशरिक़ी दरवाज़ा इतवार से लेकर जुमे तक बंद रहे। उसे सिर्फ़ सबत और नए चाँद के दिन खोलना है। 2उस वक़्त हुक्मरान बैरूनी सहन से होकर मशरिक़ी दरवाज़े के बरामदे में दाख़िल हो जाए और उसमें से गुज़रकर दरवाज़े के बाज़ू के पास खड़ा हो जाए। वहाँ से वह इमामों को उस की भस्म होनेवाली और सलामती की क़ुरबानियाँ पेश करते हुए देख सकेगा। दरवाज़े की दहलीज़ पर वह सिजदा करेगा, फिर चला जाएगा। यह दरवाज़ा शाम तक खुला रहे। 3लाज़िम है कि

[a]मार्च ता अप्रैल।

[b]सितंबर ता अक्तूबर।

बाक़ी इसराईली सबत और नए चाँद के दिन बैरूनी सहन में इबादत करें। वह इसी मशरिक़ी दरवाज़े के पास आकर मेरे हुज़ूर औंधे मुँह हो जाएँ।

4सबत के दिन हुक्मरान छः बेऐब भेड़ के बच्चे और एक बेऐब मेंढा चुनकर रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करे। 5वह हर
मेंढे के साथ ग़ल्ला की नज़र भी पेश करे यानी 16 किलोग्राम मैदा और 4 लिटर ज़ैतून का तेल। हर भेड़ के बच्चे के साथ वह उतना ही ग़ल्ला दे जितना जी चाहे। 6नए चाँद के दिन वह एक जवान
बैल, छः भेड़ के बच्चे और एक मेंढा पेश करे। सब बेऐब हों। 7जवान बैल और मेंढे के साथ ग़ल्ला की
नज़र भी पेश की जाए। ग़ल्ला की यह नज़र 16 किलोग्राम मैदे और 4 लिटर ज़ैतून के तेल पर मुश्तमिल हो। वह हर भेड़ के बच्चे के साथ उतना ही ग़ल्ला दे जितना जी चाहे।

8हुक्मरान अंदरूनी मशरिक़ी दरवाज़े में बैरूनी सहन से होकर दाख़िल हो, और वह इसी रास्ते से निकले भी। 9जब बाक़ी इसराईली किसी ईद
पर रब को सिजदा करने आएँ तो जो शिमाली दरवाज़े से बैरूनी सहन में दाख़िल हों वह इबादत के बाद जुनूबी दरवाज़े से निकलें, और जो जुनूबी दरवाज़े से दाख़िल हों वह शिमाली दरवाज़े से निकलें। कोई उस दरवाज़े से न निकले जिसमें से वह दाख़िल हुआ बल्कि मुक़ाबिल के दरवाज़े
से। 10हुक्मरान उस वक़्त सहन में दाख़िल हो जब बाक़ी इसराईली दाख़िल हो रहे हों, और वह उस वक़्त रवाना हो जब बाक़ी इसराईली रवाना हो जाएँ।

11ईदों और मुक़र्ररा तहवारों पर बैल और मेंढे के साथ ग़ल्ला की नज़र पेश की जाए। ग़ल्ला की यह नज़र 16 किलोग्राम मैदे और 4 लिटर ज़ैतून के तेल पर मुश्तमिल हो। हुक्मरान भेड़ के बच्चों के साथ उतना ही ग़ल्ला दे जितना जी चाहे।

12जब हुक्मरान अपनी ख़ुशी से मुझे क़ुरबानी पेश करना चाहे ख़ाह भस्म होने वाली या सलामती की क़ुरबानी हो, तो उसके लिए अंदरूनी दरवाज़े का मशरिक़ी दरवाज़ा खोला जाए। वहाँ वह अपनी क़ुरबानी यों पेश करे जिस तरह सबत के दिन करता है। उसके निकलने पर यह दरवाज़ा बंद कर दिया जाए।

रोज़ाना की क़ुरबानी

13इसराईल रब को हर सुबह एक बेऐब यकसाला भेड़ का बच्चा पेश करे। भस्म होनेवाली यह क़ुरबानी रोज़ाना चढ़ाई जाए। 14साथ साथ
ग़ल्ला की नज़र पेश की जाए। इसके लिए सवा लिटर ज़ैतून का तेल ढाई किलोग्राम मैदे के साथ मिलाया जाए। ग़ल्ला की यह नज़र हमेशा ही मुझे पेश करनी है। 15लाज़िम है कि हर सुबह भेड़ का
बच्चा, मैदा और तेल मेरे लिए जलाया जाए।

हुक्मरान की मौरूसी ज़मीन

16क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि अगर इसराईल का हुक्मरान अपने किसी बेटे को कुछ मौरूसी ज़मीन दे तो यह ज़मीन बेटे की मौरूसी ज़मीन बनकर उस की औलाद की मिलकियत रहेगी। 17लेकिन अगर हुक्मरान कुछ मौरूसी
ज़मीन अपने किसी मुलाज़िम को दे तो यह ज़मीन सिर्फ़ अगले बहाली के साल तक मुलाज़िम के हाथ में रहेगी। फिर यह दुबारा हुक्मरान के क़ब्ज़े में वापस आएगी। क्योंकि यह मौरूसी ज़मीन मुस्तक़िल तौर पर उस की और उसके बेटों की मिलकियत है। 18हुक्मरान को जबरन
दूसरे इसराईलियों की मौरूसी ज़मीन अपनाने की इजाज़त नहीं। लाज़िम है कि जो भी ज़मीन वह अपने बेटों में तक़सीम करे वह उस की अपनी ही मौरूसी ज़मीन हो। मेरी क़ौम में से किसी को निकालकर उस की मौरूसी ज़मीन से महरूम करना मना है’।”

रब के घर का किचन

19इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे उन कमरों के दरवाज़े के पास ले गया जिनका रुख़ शिमाल की तरफ़ था और जो अंदरूनी सहन के जुनूबी

दरवाज़े के क़रीब थे। यह इमामों के मुक़द्दस कमरे
हैं। उसने मुझे कमरों के मग़रिबी सिरे में एक
जगह दिखा कर 20कहा, “यहाँ इमाम वह गोश्त
उबालेंगे जो गुनाह और क़ुसूर की क़ुरबानियों में से
उनका हिस्सा बनता है। यहाँ वह ग़ल्ला की नज़र
लेकर रोटी भी बनाएँगे। क़ुरबानियों में से कोई भी
चीज़ बैरूनी सहन में नहीं लाई जा सकती, ऐसा न
हो कि मुक़द्दस चीज़ें छूने से आम लोगों की जान
ख़तरे में पड़ जाए।”

21फिर मेरा राहनुमा दुबारा मेरे साथ बैरूनी
सहन में आ गया। वहाँ उसने मुझे उसके चार कोने
दिखाए। हर कोने में एक सहन था 22जिसकी
लंबाई 70 फ़ुट और चौड़ाई साढ़े 52 फ़ुट थी।
हर सहन इतना ही बड़ा था 23और एक दीवार
से घिरा हुआ था। दीवार के साथ साथ चूल्हे थे।
24मेरे राहनुमा ने मुझे बताया, “यह वह किचन हैं
जिनमें रब के घर के ख़ादिम लोगों की पेशकरदा
क़ुरबानियाँ उबालेंगे।”

रब के घर में से निकलनेवाला दरिया

47 इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे एक बार
फिर रब के घर के दरवाज़े के पास
ले गया। यह दरवाज़ा मशरिक़ में था, क्योंकि रब
के घर का रुख़ ही मशरिक़ की तरफ़ था। मैंने
देखा कि दहलीज़ के नीचे से पानी निकल रहा
है। दरवाज़े से निकलकर वह पहले रब के घर
की जुनूबी दीवार के साथ साथ बहता था, फिर
क़ुरबानगाह के जुनूब में से गुज़रकर मशरिक़ की
तरफ़ बह निकला। 2मेरा राहनुमा मेरे साथ बैरूनी
सहन के शिमाली दरवाज़े में से निकला। बाहर
चारदीवारी के साथ साथ चलते चलते हम बैरूनी
सहन के मशरिक़ी दरवाज़े के पास पहुँच गए। मैंने
देखा कि पानी इस दरवाज़े के जुनूबी हिस्से में से
निकल रहा है।

3हम पानी के किनारे किनारे चल पड़े। मेरे
राहनुमा ने अपने फ़ीते के साथ आधा किलोमीटर
का फ़ासला नापा। फिर उसने मुझे पानी में से
गुज़रने को कहा। यहाँ पानी टख़नों तक पहुँचता
था। 4उसने मज़ीद आधे किलोमीटर का फ़ासला
नापा, फिर मुझे दुबारा पानी में से गुज़रने को
कहा। अब पानी घुटनों तक पहुँचा। जब उसने
तीसरी मरतबा आधा किलोमीटर का फ़ासला
नापकर मुझे उसमें से गुज़रने दिया तो पानी
कमर तक पहुँचा। 5एक आख़िरी दफ़ा उसने आधे
किलोमीटर का फ़ासला नापा। अब मैं पानी में से
गुज़र न सका। पानी इतना गहरा था कि उसमें से
गुज़रने के लिए तैरने की ज़रूरत थी।

6उसने मुझसे पूछा, “ऐ आदमज़ाद, क्या तूने
ग़ौर किया है?” फिर वह मुझे दरिया के किनारे
तक वापस लाया।

7जब वापस आया तो मैंने देखा कि दरिया
के दोनों किनारों पर मुतअद्दिद दरख़्त लगे हैं।
8वह बोला, “यह पानी मशरिक़ की तरफ़ बहकर
वादीए-यरदन में पहुँचता है। उसे पार करके वह
बहीराए-मुरदार में आ जाता है। उसके असर से
बहीराए-मुरदार का नमकीन पानी पीने के क़ाबिल
हो जाएगा। 9जहाँ भी दरिया बहेगा वहाँ के
बेशुमार जानदार जीते रहेंगे। बहुत मछलियाँ होंगी,
और दरिया बहीराए-मुरदार का नमकीन पानी पीने
के क़ाबिल बनाएगा। जहाँ से भी गुज़रेगा वहाँ
सब कुछ फलता-फूलता रहेगा। 10ऐन-जदी से
लेकर ऐन-अजलैम तक उसके किनारों पर मछेरे
खड़े होंगे। हर तरफ़ उनके जाल सूखने के लिए
फैलाए हुए नज़र आएँगे। दरिया में हर क़िस्म
की मछलियाँ होंगी, उतनी जितनी बहीराए-रूम में
पाई जाती हैं। 11सिर्फ़ बहीराए-मुरदार के इर्दगिर्द
की दलदली जगहों और जोहड़ों का पानी नमकीन
रहेगा, क्योंकि वह नमक हासिल करने के लिए
इस्तेमाल होगा। 12दरिया के दोनों किनारों पर
हर क़िस्म के फलदार दरख़्त उगेंगे। इन दरख़्तों
के पत्ते न कभी मुरझाएँगे, न कभी उनका फल
ख़त्म होगा। वह हर महीने फल लाएँगे, इसलिए
कि मक़दिस का पानी उनकी आबपाशी करता
रहेगा। उनका फल लोगों की ख़ुराक बनेगा, और
उनके पत्ते शफ़ा देंगे।”

इसराईल की सरहद्दें

13फिर रब क़ादिरे-मुतलक़ ने फ़रमाया, “मैं
तुझे उस मुल्क की सरहद्दें बताता हूँ जो बारह
क़बीलों में तक़सीम करना है। यूसुफ़ को दो हिस्से
देने हैं, बाक़ी क़बीलों को एक एक हिस्सा। 14मैंने
अपना हाथ उठाकर क़सम खाई थी कि मैं यह
मुल्क तुम्हारे बापदादा को अता करूँगा, इसलिए
तुम यह मुल्क मीरास में पाओगे। अब उसे आपस
में बराबर तक़सीम कर लो।

15शिमाली सरहद बहीराए-रूम से शुरू होकर
मशरिक़ की तरफ़ हतलून, लबो-हमात और
सिदाद के पास से गुज़रती है। 16वहाँ से वह बेरोता
और सिबरैम के पास पहुँचती है (सिबरैम मुल्के-
दमिश्क़ और मुल्के-हमात के दरमियान वाक़े है)।
फिर सरहद हसर-एनान शहर तक आगे निकलती
है जो हौरान की सरहद पर वाक़े है। 17ग़रज़
शिमाली सरहद बहीराए-रूम से लेकर हसर-एनान
तक पहुँचती है। दमिश्क़ और हमात की सरहद्दें
उसके शिमाल में हैं।

18मुल्क की मशरिक़ी सरहद वहाँ शुरू होती है
जहाँ दमिश्क़ का इलाक़ा हौरान के पहाड़ी इलाक़े
से मिलता है। वहाँ से सरहद दरियाए-यरदन के
साथ साथ चलती हुई जुनूब में बहीराए-रूम के
पास तमर शहर तक पहुँचती है। यों दरियाए-
यरदन मुल्के-इसराईल की मशरिक़ी सरहद और
मुल्के-जिलियाद की मग़रिबी सरहद है।

19जुनूबी सरहद तमर से शुरू होकर जु-
नूब-मग़रिब की तरफ़ चलती चलती मरीबा-
क़ादिस के चश्मों तक पहुँचती है। फिर वह
शिमाल-मग़रिब की तरफ़ रुख़ करके मिसर की
सरहद यानी वादीए-मिसर के साथ साथ बहीराए-
रूम तक पहुँचती है।

20मग़रिबी सरहद बहीराए-रूम है जो शिमाल
में लबो-हमात के मुक़ाबिल ख़त्म होती है।

21मुल्क को अपने क़बीलों में तक़सीम करो!
22यह तुम्हारी मौरूसी ज़मीन होगी। जब तुम
क़ुरा डालकर उसे आपस में तक़सीम करो तो
उन ग़ैरमुल्कियों को भी ज़मीन मिलनी है जो
तुम्हारे दरमियान रहते और जिनके बच्चे यहाँ
पैदा हुए हैं। तुम्हारा उनके साथ वैसा सुलूक हो
जैसा इसराईलियों के साथ। क़ुरा डालते वक़्त
उन्हें इसराईली क़बीलों के साथ ज़मीन मिलनी
है। 23रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जिस
क़बीले में भी परदेसी आबाद हों वहाँ तुम्हें उन्हें
मौरूसी ज़मीन देनी है।

क़बीलों में मुल्क की तक़सीम

48 1-7इसराईल की शिमाली सरहद
बहीराए-रूम से शुरू होकर मश-
रिक़ की तरफ़ हतलून, लबो-हमात और हसर-
एनान के पास से गुज़रती है। दमिश्क़ और हमात
सरहद के शिमाल में हैं। हर क़बीले को मुल्क
का एक हिस्सा मिलेगा। हर ख़ित्ते का एक
सिरा मुल्क की मशरिक़ी सरहद और दूसरा सिरा
मग़रिबी सरहद होगा। शिमाल से लेकर जुनूब तक
क़बायली इलाक़ों की यह तरतीब होगी : दान,
आशर, नफ़ताली, मनस्सी, इफ़राईम, रूबिन और
यहूदाह।

मुल्क के बीच में मख़सूस इलाक़ा

8यहूदाह के जुनूब में वह इलाक़ा होगा जो तुम्हें
मेरे लिए अलग करना है। क़बायली इलाक़ों की
तरह उसका भी एक सिरा मुल्क की मशरिक़ी
सरहद और दूसरा सिरा मग़रिबी सरहद होगा।
शिमाल से जुनूब तक का फ़ासला साढ़े 12
किलोमीटर है। उसके बीच में मक़दिस है।

9इस इलाक़े के दरमियान एक ख़ास ख़ित्ता
होगा। मशरिक़ से मग़रिब तक उसका फ़ासला
साढ़े 12 किलोमीटर होगा जबकि शिमाल से
जुनूब तक फ़ासला 10 किलोमीटर होगा। रब के
लिए मख़सूस इस ख़ित्ते 10का एक हिस्सा इमामों
के लिए मख़सूस होगा। इस हिस्से का फ़ासला
मशरिक़ से मग़रिब तक साढ़े 12 किलोमीटर और
शिमाल से जुनूब तक 5 किलोमीटर होगा। इसके
बीच में ही रब का मक़दिस होगा। 11यह मुक़द्दस

इलाक़ा लावी के ख़ानदान सदोक़ के मख़सूसो-मुक़द्दस किए गए इमामों को दिया जाएगा। क्योंकि जब इसराईली मुझसे बरगश्ता हुए तो बाक़ी लावी उनके साथ भटक गए, लेकिन सदोक़ का ख़ानदान वफ़ादारी से मेरी ख़िदमत करता रहा। 12इसलिए उन्हें मेरे लिए मख़सूस इलाक़े का मुक़द्दसतरीन हिस्सा मिलेगा। यह लावियों के ख़ित्ते के शिमाल में होगा। 13इमामों के जुनूब में बाक़ी लावियों का ख़ित्ता होगा। मशरिक़ से मग़रिब तक उसका फ़ासला साढ़े 12 किलोमीटर और शिमाल से जुनूब तक 5 किलोमीटर होगा।

14रब के लिए मख़सूस यह इलाक़ा पूरे मुल्क का बेहतरीन हिस्सा है। उसका कोई भी प्लाट किसी दूसरे के हाथ में देने की इजाज़त नहीं। उसे न बेचा जाए, न किसी दूसरे को किसी प्लाट के एवज़ में दिया जाए। क्योंकि यह इलाक़ा रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है।

15रब के मक़दिस के इस ख़ास इलाक़े के जुनूब में एक और ख़ित्ता होगा जिसकी लंबाई साढ़े 12 किलोमीटर और चौड़ाई अढ़ाई किलोमीटर है। वह मुक़द्दस नहीं है बल्कि आम लोगों की रिहाइश के लिए होगा। इसके बीच में शहर होगा, जिसके इर्दगिर्द चरागाहें होंगी। 16यह शहर मुरब्बा शक्ल का होगा। लंबाई और चौड़ाई दोनों सवा दो दो किलोमीटर होगी।

17शहर के चारों तरफ़ जानवरों को चराने की खुली जगह होगी जिसकी चौड़ाई 133 मीटर होगी। 18चूँकि शहर अपने ख़ित्ते के बीच में होगा इसलिए मज़कूरा खुली जगह के मशरिक़ में एक ख़ित्ता बाक़ी रह जाएगा जिसका मशरिक़ से शहर तक फ़ासला 5 किलोमीटर और शिमाल से जुनूब तक फ़ासला अढ़ाई किलोमीटर होगा। शहर के मग़रिब में भी इतना ही बड़ा ख़ित्ता होगा। इन दो ख़ित्तों में खेतीबाड़ी की जाएगी जिसकी पैदावार शहर में काम करनेवालों की ख़ुराक होगी। 19शहर में काम करनेवाले तमाम क़बीलों के होंगे। वही इन खेतों की खेतीबाड़ी करेंगे।

20चुनाँचे मेरे लिए अलग किया गया यह पूरा इलाक़ा मुरब्बा शक्ल का है। उस की लंबाई और चौड़ाई साढ़े बारह बारह किलोमीटर है। इसमें शहर भी शामिल है।

21-22मज़कूरा मुक़द्दस ख़ित्ते में मक़दिस, इमामों और बाक़ी लावियों की ज़मीनें हैं। उसके मशरिक़ और मग़रिब में बाक़ीमाँदा ज़मीन हुक्मरान की मिलकियत है। मुक़द्दस ख़ित्ते के मशरिक़ में हुक्मरान की ज़मीन मुल्क की मशरिक़ी सरहद तक होगी और मुक़द्दस ख़ित्ते के मग़रिब में वह समुंदर तक होगी। शिमाल से जुनूब तक वह मुक़द्दस ख़ित्ते जितनी चौड़ी यानी साढ़े 12 किलोमीटर होगी। शिमाल में यहूदाह का क़बायली इलाक़ा होगा और जुनूब में बिनयमीन का।

दीगर क़बीलों की ज़मीन

23-27मुल्क के इस ख़ास दरमियानी हिस्से के जुनूब में बाक़ी क़बीलों को एक एक इलाक़ा मिलेगा। हर इलाक़े का एक सिरा मुल्क की मशरिक़ी सरहद और दूसरा सिरा बहीराए-रूम होगा। शिमाल से लेकर जुनूब तक क़बायली इलाक़ों की यह तरतीब होगी : बिनयमीन, शमाऊन, इशकार, ज़बूलून और जद।

28जद के क़बीले की जुनूबी सरहद मुल्क की सरहद भी है। वह तमर से जुनूब-मग़रिब में मरीबा-क़ादिस के चश्मों तक चलती है, फिर मिसर की सरहद यानी वादीए-मिसर के साथ साथ शिमाल-मग़रिब का रुख़ करके बहीराए-रूम तक पहुँचती है।

29रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि यही तुम्हारा मुल्क होगा! उसे इसराईली क़बीलों में तक़सीम करो। जो कुछ भी उन्हें क़ुरा डालकर मिले वह उनकी मौरूसी ज़मीन होगी।

यरूशलम के दरवाज़े

30-34यरूशलम शहर के 12 दरवाज़े होंगे। फ़सील की चारों दीवारें सवा दो दो किलोमीटर

लंबी होंगी। हर दीवार के तीन दरवाज़े होंगे, ग़रज़ कुल बारह दरवाज़े होंगे। हर एक का नाम किसी क़बीले का नाम होगा। चुनाँचे शिमाल में रूबिन का दरवाज़ा, यहूदाह का दरवाज़ा और लावी का दरवाज़ा होगा, मशरिक़ में यूसुफ़ का दरवाज़ा, बिनयमीन का दरवाज़ा और दान का दरवाज़ा होगा, जुनूब में शमाऊन का दरवाज़ा, इशकार का दरवाज़ा और ज़बूलून का दरवाज़ा होगा, और मग़रिब में जद का दरवाज़ा, आशर का दरवाज़ा और नफ़ताली का दरवाज़ा होगा।
35फ़सील की पूरी लंबाई 9 किलोमीटर है।

तब शहर ‘यहाँ रब है’ कहलाएगा।!”

दानियाल

दानियाल और उसके दोस्त शाहे-बाबल के दरबार में

1 शाहे-यहूदाह यहूयक़ीम की सलतनत
के तीसरे साल में शाहे-बाबल नबू-
कदनज़्ज़र ने यरूशलम आकर उसका
मुहासरा किया। 2उस वक़्त रब ने यहूयक़ीम
और अल्लाह के घर का काफ़ी सामान
नबूकदनज़्ज़र के हवाले कर दिया। नबूकद-
नज़्ज़र ने यह चीज़ें मुल्के-बाबल में ले जाकर
अपने देवता के मंदिर के ख़ज़ाने में महफ़ूज़ कर
दीं।

3फिर उसने अपने दरबार के आला अफ़सर
अश्पनाज़ को हुक्म दिया, “यहूदाह के शाही
ख़ानदान और ऊँचे तबक़े के ख़ानदानों की
तफ़तीश करो। उनमें से कुछ ऐसे नौजवानों को
चुनकर ले आओ 4जो बेऐब, ख़ूबसूरत, हिकमत
के हर लिहाज़ से समझदार, तालीमयाफ़्ता और
समझने में तेज़ हों। ग़रज़ यह आदमी शाही महल
में ख़िदमत करने के क़ाबिल हों। उन्हें बाबल
की ज़बान लिखने और बोलने की तालीम दो।”
5बादशाह ने मुक़र्रर किया कि रोज़ाना उन्हें शाही
बावरचीख़ाने से कितना खाना और मै मिलनी है।
तीन साल की तरबियत के बाद उन्हें बादशाह की
ख़िदमत के लिए हाज़िर होना था।

6जब इन नौजवानों को चुना गया तो
चार आदमी उनमें शामिल थे जिनके नाम
दानियाल, हननियाह, मीसाएल और अज़रि-
याह थे। 7दरबार के आला अफ़सर ने उनके नए
नाम रखे। दानियाल बेल्तशज़्ज़र में बदल गया,
हननियाह सद्रक में, मीसाएल मीसक में और
अज़रियाह अबद-नजू में।

8लेकिन दानियाल ने मुसम्मम इरादा कर लिया
कि मैं अपने आपको शाही खाना खाने और शाही
मै पीने से नापाक नहीं करूँगा। उसने दरबार
के आला अफ़सर से इन चीज़ों से परहेज़ करने
की इजाज़त माँगी। 9अल्लाह ने पहले से इस
अफ़सर का दिल नरम कर दिया था, इसलिए
वह दानियाल का ख़ास लिहाज़ करता और उस
पर मेहरबानी करता था। 10लेकिन दानियाल की
दरख़ास्त सुनकर उसने जवाब दिया, “मुझे अपने
आक़ा बादशाह से डर है। उन्हीं ने मुतैयिन किया
कि तुम्हें क्या क्या खाना और पीना है। अगर उन्हें
पता चले कि तुम दूसरे नौजवानों की निसबत
दुबले-पतले और कमज़ोर लगे तो वह मेरा सर
क़लम करेंगे।” 11तब दानियाल ने उस निगरान
से बात की जिसे दरबार के आला अफ़सर ने
दानियाल, हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह
पर मुक़र्रर किया था। वह बोला, 12“ज़रा दस
दिन तक अपने ख़ादिमों को आज़माएँ। इतने में
हमें खाने के लिए सिर्फ़ साग-पात और पीने के
लिए पानी दीजिए। 13इसके बाद हमारी सूरत
का मुक़ाबला उन दीगर नौजवानों के साथ करें

जो शाही खाना खाते हैं। फिर ही फ़ैसला करें
कि आइंदा अपने ख़ादिमों के साथ कैसा सुलूक
करेंगे।”
14निगरान मान गया। दस दिन तक वह
उन्हें साग-पात खिलाकर और पानी पिलाकर
आज़माता रहा। 15दस दिन के बाद क्या देखता
है कि दानियाल और उसके तीन दोस्त शाही
खाना खानेवाले दीगर नौजवानों की निसबत कहीं
ज़्यादा सेहतमंद और मोटे-ताज़े लग रहे हैं। 16तब
निगरान उनके लिए मुक़र्ररा शाही खाने और मै का
इंतज़ाम बंद करके उन्हें सिर्फ़ साग-पात खिलाने
लगा। 17अल्लाह ने इन चार आदमियों को अदब
और हिकमत के हर शोबे में इल्म और समझ अता
की। नीज़, दानियाल हर क़िस्म की रोया और
ख़ाब की ताबीर कर सकता था।
18मुक़र्ररा तीन साल के बाद दरबार के आला
अफ़सर ने तमाम नौजवानों को नबूकदनज़्ज़र
के सामने पेश किया। 19जब बादशाह ने उनसे
गुफ़्तगू की तो मालूम हुआ कि दानियाल,
हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह दूसरों पर
सबक़त रखते हैं। चुनाँचे चारों बादशाह के
मुलाज़िम बन गए। 20जब भी किसी मामले
में ख़ास हिकमत और समझ दरकार होती तो
बादशाह ने देखा कि यह चार नौजवान मशवरा
देने में पूरी सलतनत के तमाम क़िस्मत का हाल
बतानेवालों और जादूगरों से दस गुना ज़्यादा
क़ाबिल हैं।
21दानियाल ख़ोरस की हुकूमत के पहले साल
तक शाही दरबार में ख़िदमत करता रहा।

नबूकदनज़्ज़र का ख़ाब

2 अपनी हुकूमत के दूसरे साल में
नबूकदनज़्ज़र ने ख़ाब देखा। ख़ाब इतना
हौलनाक था कि वह घबराकर जाग उठा।
2उसने हुक्म दिया कि तमाम क़िस्मत का हाल
बतानेवाले, जादूगर, अफ़सूँगर और नजूमी मेरे
पास आकर ख़ाब का मतलब बताएँ। जब वह
हाज़िर हुए 3तो बादशाह बोला, “मैंने एक ख़ाब
देखा है जो मुझे बहुत परेशान कर रहा है। अब मैं
उसका मतलब जानना चाहता हूँ।”
4नुजूमियों ने अरामी ज़बान में जवाब दिया,
“बादशाह सलामत अपने ख़ादिमों के सामने यह
ख़ाब बयान करें तो हम उस की ताबीर करेंगे।”
5लेकिन बादशाह बोला, “नहीं, तुम ही मुझे
वह कुछ बताओ और उस की ताबीर करो जो मैंने
ख़ाब में देखा। अगर तुम यह न कर सको तो मैं
हुक्म दूँगा कि तुम्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए
और तुम्हारे घर कचरे के ढेर हो जाएँ। यह मेरा
मुसम्मम इरादा है। 6लेकिन अगर तुम मुझे वह
कुछ बताकर उस की ताबीर करो जो मैंने ख़ाब
में देखा तो मैं तुम्हें अच्छे तोह्फ़े और इनाम दूँगा,
नीज़ तुम्हारी ख़ास इज़्ज़त करूँगा। अब शुरू करो!
मुझे वह कुछ बताओ और उस की ताबीर करो जो
मैंने ख़ाब में देखा।”
7एक बार फिर उन्होंने मिन्नत की, “बाद-
शाह अपने ख़ादिमों के सामने अपना ख़ाब बताएँ
तो हम ज़रूर उस की ताबीर करेंगे।”
8बादशाह ने जवाब दिया, “मुझे साफ़ पता
है कि तुम क्या कर रहे हो! तुम सिर्फ़ टाल-
मटोल कर रहे हो, क्योंकि तुम समझ गए हो कि
मेरा इरादा पक्का है। 9अगर तुम मुझे ख़ाब न
बताओ तो तुम सबको एक ही सज़ा दी जाएगी।
क्योंकि तुम सब झूट और ग़लत बातें पेश करने
पर मुत्तफ़िक़ हो गए हो, यह उम्मीद रखते हुए
कि हालात किसी वक़्त बदल जाएंगे। मुझे ख़ाब
बताओ तो मुझे पता चल जाएगा कि तुम मुझे उस
की सहीह ताबीर पेश कर सकते हो।”
10नुजूमियों ने एतराज़ किया, “दुनिया में कोई
भी इनसान वह कुछ नहीं कर पाता जो बादशाह
माँगते हैं। यह कभी हुआ भी नहीं कि किसी
बादशाह ने ऐसी बात किसी क़िस्मत का हाल
बतानेवाले, जादूगर या नजूमी से तलब की, ख़ाह
बादशाह कितना अज़ीम क्यों न था। 11जिस चीज़
का तक़ाज़ा बादशाह करते हैं वह हद से ज़्यादा
मुश्किल है। सिर्फ़ देवता ही यह बात बादशाह पर

ज़ाहिर कर सकते हैं, लेकिन वह तो इनसान के
दरमियान रहते नहीं।”

12यह सुनकर बादशाह आग-बगूला हो गया।
बड़े ग़ुस्से में उसने हुक्म दिया कि बाबल के तमाम
दानिशमंदों को सज़ाए-मौत दी जाए। 13फ़रमान
सादिर हुआ कि दानिशमंदों को मार डालना है।
चुनाँचे दानियाल और उसके दोस्तों को भी तलाश
किया गया ताकि उन्हें सज़ाए-मौत दें।

14शाही मुहाफ़िज़ों का अफ़सर बनाम अरयूक
अभी दानिशमंदों को मार डालने के लिए
रवाना हुआ कि दानियाल बड़ी हिकमत और
मौक़ाशनासी से उससे मुख़ातिब हुआ। 15उसने
अफ़सर से पूछा, “बादशाह ने इतना सख़्त
फ़रमान क्यों जारी किया?” अरयूक ने दानियाल
को सारा मामला बयान किया। 16दानियाल
फ़ौरन बादशाह के पास गया और उससे दरख़ास्त
की, “ज़रा मुझे कुछ मोहलत दीजिए ताकि मैं
बादशाह के ख़ाब की ताबीर कर सकूँ।” 17फिर
वह अपने घर वापस गया और अपने दोस्तों
हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह को तमाम
सूरते-हाल सुनाई। 18वह बोला, “आसमान के
ख़ुदा से इल्तिजा करें कि वह मुझ पर रहम करे।
मिन्नत करें कि वह मेरे लिए भेद खोले ताकि हम
दीगर दानिशमंदों के साथ हलाक न हो जाएँ।”

19रात के वक़्त दानियाल ने रोया देखी जिसमें
उसके लिए भेद खोला गया। तब उसने आसमान
के ख़ुदा की हम्दो-सना की,

20“अल्लाह के नाम की तमजीद अज़ल से
अबद तक हो। वही हिकमत और क़ुव्वत का
मालिक है। 21वही औक़ात और ज़माने बदलने
देता है। वही बादशाहों को तख़्त पर बिठा देता और
उन्हें तख़्त पर से उतार देता है। वही दानिशमंदों
को दानाई और समझदारों को समझ अता करता
है। 22वही गहरी और पोशीदा बातें ज़ाहिर करता
है। जो कुछ अंधेरे में छुपा रहता है उसका इल्म
वह रखता है, क्योंकि वह रौशनी से घिरा रहता
है। 23ऐ मेरे बापदादा के ख़ुदा, मैं तेरी हम्दो-सना
करता हूँ! तूने मुझे हिकमत और ताक़त अता
की है। जो बात हमने तुझसे माँगी वह तूने हम पर
ज़ाहिर की, क्योंकि तूने हम पर बादशाह का ख़ाब
ज़ाहिर किया है।”

24फिर दानियाल अरयूक के पास गया जिसे
बादशाह ने बाबल के दानिशमंदों को सज़ाए-मौत
देने की ज़िम्मेदारी दी थी। उसने उससे दरख़ास्त
की, “बाबल के दानिशमंदों को मौत के घाट न
उतारें, क्योंकि मैं बादशाह के ख़ाब की ताबीर कर
सकता हूँ। मुझे बादशाह के हुज़ूर पहुँचा दें तो मैं
उन्हें सब कुछ बता दूँगा।”

25यह सुनकर अरयूक भागकर दानियाल
को बादशाह के हुज़ूर ले गया। वह बोला,
“मुझे यहूदाह के जिलावतनों में से एक
आदमी मिल गया जो बादशाह को ख़ाब
का मतलब बता सकता है।” 26तब नबूकद-
नज़्ज़र ने दानियाल से जो बेल्तशज़्ज़र कहलाता
था पूछा, “क्या तुम मुझे वह कुछ बता सकते हो
जो मैंने ख़ाब में देखा? क्या तुम उस की ताबीर
कर सकते हो?”

27दानियाल ने जवाब दिया, “जो भेद बादशाह
जानना चाहते हैं उसे खोलने की कुंजी किसी
भी दानिशमंद, जादूगर, क़िस्मत का हाल
बतानेवाले या ग़ैबदान के पास नहीं होती।
28लेकिन आसमान पर एक ख़ुदा है जो भेदों का
मतलब इनसान पर ज़ाहिर कर देता है। उसी ने
नबूकदनज़्ज़र बादशाह को दिखाया कि आनेवाले
दिनों में क्या कुछ पेश आएगा। सोते वक़्त आपने
ख़ाब में रोया देखी। 29ऐ बादशाह, जब आप
पलंग पर लेटे हुए थे तो आपके ज़हन में आनेवाले
दिनों के बारे में ख़यालात उभर आए। तब भेदों
को खोलनेवाले ख़ुदा ने आप पर ज़ाहिर किया कि
आनेवाले दिनों में क्या कुछ पेश आएगा। 30इस
भेद का मतलब मुझ पर ज़ाहिर हुआ है, लेकिन
इसलिए नहीं कि मुझे दीगर तमाम दानिशमंदों
से ज़्यादा हिकमत हासिल है बल्कि इसलिए कि
आपको भेद का मतलब मालूम हो जाए और आप
समझ सकें कि आपके ज़हन में क्या कुछ उभर
आया है।

31ऐ बादशाह, रोया में आपने अपने सामने
एक बड़ा और लंबा-तड़ंगा मुजस्समा देखा जो
तेज़ी से चमक रहा था। शक्लो-सूरत ऐसी थी कि
इनसान के रोंगटे खड़े हो जाते थे। 32सर ख़ालिस
सोने का था जबकि सीना और बाज़ू चाँदी के,
पेट और रान पीतल की 33और पिंडलियाँ लोहे
की थीं। उसके पाँवों का आधा हिस्सा लोहा और
आधा हिस्सा पकी हुई मिट्टी था। 34आप इस
मंज़र पर ग़ौर ही कर रहे थे कि अचानक किसी
पहाड़ी ढलान से पत्थर का बड़ा टुकड़ा अलग
हुआ। यह बग़ैर किसी इनसानी हाथ के हुआ।
पत्थर ने धड़ाम से मुजस्समे के लोहे और मिट्टी
के पाँवों पर गिरकर दोनों को चूर चूर कर दिया।
35नतीजे में पूरा मुजस्समा पाश पाश हो गया।
जितना भी लोहा, मिट्टी, पीतल, चाँदी और सोना
था वह उस भूसे की मानिंद बन गया जो गाहते
वक़्त बाक़ी रह जाता है। हवा ने सब कुछ यों उड़ा
दिया कि इन चीज़ों का नामो-निशान तक न रहा।
लेकिन जिस पत्थर ने मुजस्समे को गिरा दिया वह
ज़बरदस्त पहाड़ बनकर इतना बढ़ गया कि पूरी
दुनिया उससे भर गई।

36यही बादशाह का ख़ाब था। अब हम बादशाह
को ख़ाब का मतलब बताते हैं। 37ऐ बादशाह,
आप शहनशाह हैं। आसमान के ख़ुदा ने आपको
सलतनत, क़ुव्वत, ताक़त और इज़्ज़त से नवाज़ा
है। 38उसने इनसान को जंगली जानवरों और
परिंदों समेत आप ही के हवाले कर दिया है।
जहाँ भी वह बसते हैं उसने आपको ही उन पर
मुक़र्रर किया है। आप ही मज़कूरा सोने का सर
हैं। 39आपके बाद एक और सलतनत क़ायम हो
जाएगी, लेकिन उस की ताक़त आपकी सलतनत
से कम होगी। फिर पीतल की एक तीसरी
सलतनत वुजूद में आएगी जो पूरी दुनिया पर
हुकूमत करेगी। 40आख़िर में एक चौथी सलतनत
आएगी जो लोहे जैसी ताक़तवर होगी। जिस तरह
लोहा सब कुछ तोड़कर पाश पाश कर देता है
उसी तरह वह दीगर सबको तोड़कर पाश पाश
करेगी। 41आपने देखा कि मुजस्समे के पाँवों और
उँगलियों में कुछ लोहा और कुछ पकी हुई मिट्टी
थी। इसका मतलब है, इस सलतनत के दो अलग
हिस्से होंगे। लेकिन जिस तरह ख़ाब में मिट्टी के
साथ लोहा मिलाया गया था उसी तरह चौथी
सलतनत में लोहे की कुछ न कुछ ताक़त होगी।
42ख़ाब में पाँवों की उँगलियों में कुछ लोहा भी
था और कुछ मिट्टी भी। इसका मतलब है, चौथी
सलतनत का एक हिस्सा ताक़तवर और दूसरा
नाज़ुक होगा। 43लोहे और मिट्टी की मिलावट का
मतलब है कि गो लोग आपस में शादी करने से
एक दूसरे के साथ मुत्तहिद होने की कोशिश करेंगे
तो भी वह एक दूसरे से पैवस्त नहीं रहेंगे, बिलकुल
उसी तरह जिस तरह लोहा मिट्टी के साथ पैवस्त
नहीं रह सकता।

44जब यह बादशाह हुकूमत करेंगे, उन्हीं दिनों
में आसमान का ख़ुदा एक बादशाही क़ायम करेगा
जो न कभी तबाह होगी, न किसी दूसरी क़ौम के
हाथ में आएगी। यह बादशाही इन दीगर तमाम
सलतनतों को पाश पाश करके ख़त्म करेगी,
लेकिन ख़ुद अबद तक क़ायम रहेगी। 45यही
ख़ाब में उस पत्थर का मतलब है जिसने बग़ैर
किसी इनसानी हाथ के पहाड़ी ढलान से अलग
होकर मुजस्समे के लोहे, पीतल, मिट्टी, चाँदी
और सोने को पाश पाश कर दिया। इस तरीक़े
से अज़ीम ख़ुदा ने बादशाह पर ज़ाहिर किया है
कि मुस्तक़बिल में क्या कुछ पेश आएगा। यह
ख़ाब क़ाबिले-एतमाद और उस की ताबीर सहीह
है।”

46यह सुनकर नबूकदनज़्ज़र बादशाह ने औंधे
मुँह होकर दानियाल को सिजदा किया और हुक्म
दिया कि दानियाल को ग़ल्ला और बख़ूर की
क़ुरबानियाँ पेश की जाएँ। 47दानियाल से उसने
कहा, “यक़ीनन, तुम्हारा ख़ुदा ख़ुदाओं का ख़ुदा
और बादशाहों का मालिक है। वह वाक़ई भेदों
को खोलता है, वरना तुम यह भेद मेरे लिए खोल
न पाते।” 48नबूकदनज़्ज़र ने दानियाल को बड़ा
ओहदा और मुतअद्दिद बेशक़ीमत तोह्फ़े दिए।
उसने उसे पूरे सूबा बाबल का गवर्नर बना दिया।

साथ साथ दानियाल बाबल के तमाम दानिशमंदों
पर मुक़र्रर हुआ। 49उस की गुज़ारिश पर बादशाह
ने सद्रक, मीसक और अबद-नजू को सूबा बाबल
की इंतज़ामिया पर मुक़र्रर किया। दानियाल ख़ुद
शाही दरबार में हाज़िर रहता था।

सोने के बुत की पूजा करने का हुक्म

3 एक दिन नबूकदनज़्ज़र ने सोने का
मुजस्समा बनवाया। उस की ऊँचाई 90
फ़ुट और चौड़ाई 9 फ़ुट थी। उसने हुक्म दिया
कि बुत को सूबा बाबल के मैदान बनाम दूरा में
खड़ा किया जाए। 2फिर उसने तमाम सूबेदारों,
गवर्नरों, मुन्तज़िमों, मुशीरों, ख़ज़ानचियों, जजों,
मजिस्ट्रेटों, और सूबों के दीगर तमाम बड़े बड़े
सरकारी मुलाज़िमों को पैग़ाम भेजा कि मुजस्समे
की मख़सूसियत के लिए आकर जमा हो जाओ।
3चुनाँचे सब बुत की मख़सूसियत के लिए जमा
हो गए। जब सब उसके सामने खड़े थे 4तो शाही
नक़ीब ने बुलंद आवाज़ से एलान किया,

"ऐ मुख़्तलिफ़ क़ौमों, उम्मतों और ज़बानों के
लोगो, सुनो! बादशाह फ़रमाता है, 5'ज्योंही
नरसिंगा, शहनाई, संतूर, सरोद, ऊद, बीन और
दीगर तमाम साज़ बजेंगे तो लाज़िम है कि सब
औंधे मुँह होकर बादशाह के खड़े किए गए सोने
के बुत को सिजदा करें। 6जो भी सिजदा न करे
उसे फ़ौरन भड़कती भट्टी में फेंका जाएगा'।"

7चुनाँचे ज्योंही साज़ बजने लगे तो मुख़्तलिफ़
क़ौमों, उम्मतों और ज़बानों के तमाम लोग मुँह
के बल होकर नबूकदनज़्ज़र के खड़े किए गए बुत
को सिजदा करने लगे।

8उस वक़्त कुछ नजूमी बादशाह के पास
आकर यहूदियों पर इलज़ाम लगाने लगे। 9वह
बोले, "बादशाह सलामत अबद तक जीते रहें!
10ऐ बादशाह, आपने फ़रमाया, 'ज्योंही नरसिंगा,
शहनाई, संतूर, सरोद, ऊद, बीन और दीगर तमाम
साज़ बजेंगे तो लाज़िम है कि सब औंधे मुँह
होकर बादशाह के खड़े किए गए इस सोने के बुत
को सिजदा करें। 11जो भी सिजदा न करे उसे
भड़कती भट्टी में फेंका जाएगा।' 12लेकिन कुछ
यहूदी आदमी हैं जो आपकी परवा ही नहीं करते,
हालाँकि आपने उन्हें सूबा बाबल की इंतज़ामिया
पर मुक़र्रर किया था। यह आदमी बनाम सद्रक,
मीसक और अबद-नजू न आपके देवताओं की
पूजा करते, न सोने के उस बुत की परस्तिश करते
हैं जो आपने खड़ा किया है।"

13यह सुनकर नबूकदनज़्ज़र आपे से बाहर हो
गया। उसने सीधा सद्रक, मीसक और अबद-नजू
को बुलाया। जब पहुँचे 14तो बोला, "ऐ सद्रक,
मीसक और अबद-नजू, क्या यह सहीह है कि न
तुम मेरे देवताओं की पूजा करते, न मेरे खड़े किए
गए मुजस्समे की परस्तिश करते हो? 15मैं तुम्हें
एक आख़िरी मौक़ा देता हूँ। साज़ दुबारा बजेंगे तो
तुम्हें मुँह के बल होकर मेरे बनवाए हुए मुजस्समे
को सिजदा करना है। अगर तुम ऐसा न करो तो
तुम्हें सीधा भड़कती भट्टी में फेंका जाएगा। तब
कौन-सा ख़ुदा तुम्हें मेरे हाथ से बचा सकेगा?"

16सद्रक, मीसक और अबद-नजू ने जवाब
दिया, "ऐ नबूकदनज़्ज़र, इस मामले में हमें
अपना दिफ़ा करने की ज़रूरत नहीं है। 17जिस
ख़ुदा की ख़िदमत हम करते हैं वह हमें बचा
सकता है, ख़ाह हमें भड़कती भट्टी में क्यों न फेंका
जाए। ऐ बादशाह, वह हमें ज़रूर आपके हाथ से
बचाएगा। 18लेकिन अगर वह हमें न भी बचाए तो
भी आपको मालूम हो कि न हम आपके देवताओं
की पूजा करेंगे, न आपके खड़े किए गए सोने के
मुजस्समे की परस्तिश करेंगे।"

19यह सुनकर नबूकदनज़्ज़र आग-बगूला हो
गया। सद्रक, मीसक और अबद-नजू के सामने
उसका चेहरा बिगड़ गया और उसने हुक्म दिया
कि भट्टी को मामूल की निसबत सात गुना ज़्यादा
गरम किया जाए। 20फिर उसने कहा कि बेहतरीन
फ़ौजियों में से चंद एक सद्रक, मीसक और
अबद-नजू को बाँधकर भड़कती भट्टी में फेंक दें।
21तीनों को बाँधकर भड़कती भट्टी में फेंका गया।
उनके चोग़े, पाजामे और टोपियाँ उतारी न गईं।
22चूँकि बादशाह ने भट्टी को गरम करने पर ख़ास

ज़ोर दिया था इसलिए आग इतनी तेज़ हुई कि जो फ़ौजी सद्रक, मीसक और अबद-नजू को लेकर भट्टी के मुँह तक चढ़ गए वह फ़ौरन नज़रे-आतिश हो गए। 23उनके क़ैदी बँधी हुई हालत में शोलाज़न आग में गिर गए।

24अचानक नबूकदनज़्ज़र बादशाह चौंक उठा। उसने उछलकर अपने मुशीरों से पूछा, "हमने तो तीन आदमियों को बाँधकर भट्टी में फेंकवाया कि नहीं?" उन्होंने जवाब दिया, "जी, ऐ बादशाह।" 25वह बोला, "तो फिर यह क्या है? मुझे चार आदमी आग में इधर-उधर फिरते हुए नज़र आ रहे हैं। न वह बँधे हुए हैं, न उन्हें नुक़सान पहुँच रहा है। चौथा आदमी देवताओं का बेटा-सा लग रहा है।"

26नबूकदनज़्ज़र जलती हुई भट्टी के मुँह के क़रीब गया और पुकारा, "ऐ सद्रक, मीसक और अबद-नजू, ऐ अल्लाह तआला के बंदो, निकल आओ! इधर आओ।" तब सद्रक, मीसक और अबद-नजू आग से निकल आए। 27सूबेदार, गवर्नर, मुन्तज़िम और शाही मुशीर उनके गिर्द जमा हुए तो देखा कि आग ने उनके जिस्मों को नुक़सान नहीं पहुँचाया। बालों में से एक भी झुलस नहीं गया था, न उनके लिबास आग से मुतअस्सिर हुए थे। आग और धुएँ की बू तक नहीं थी।

28तब नबूकदनज़्ज़र बोला, "सद्रक, मीसक और अबद-नजू के ख़ुदा की तमजीद हो जिसने अपने फ़रिश्ते को भेजकर अपने बंदों को बचाया। उन्होंने उस पर भरोसा रखकर बादशाह के हुक्म की नाफ़रमानी की। अपने ख़ुदा के सिवा किसी और की ख़िदमत या परस्तिश करने से पहले वह अपनी जान को देने के लिए तैयार थे। 29चुनाँचे मेरा हुक्म सुनो! सद्रक, मीसक और अबद-नजू के ख़ुदा के ख़िलाफ़ कुफ़्र बकना तमाम क़ौमों, उम्मतों और ज़बानों के अफ़राद के लिए सख़्त मना है। जो भी ऐसा करे उसे टुकड़े टुकड़े कर दिया जाएगा और उसके घर को कचरे का ढेर बनाया जाएगा। क्योंकि कोई भी देवता इस तरह नहीं बचा सकता।" 30फिर बादशाह ने तीनों आदमियों को सूबा बाबल में सरफ़राज़ किया।

नबूकदनज़्ज़र के दूसरे ख़ाब की ताबीर

4 नबूकदनज़्ज़र दुनिया की तमाम क़ौमों, उम्मतों और ज़बानों के अफ़राद को ज़ैल का पैग़ाम भेजता है,

सबकी सलामती हो! 2मैंने सबको उन इलाही निशानात और मोजिज़ात से आगाह करने का फ़ैसला किया है जो अल्लाह तआला ने मेरे लिए किए हैं। 3उसके निशान कितने अज़ीम, उसके मोजिज़ात कितने ज़बरदस्त हैं! उस की बादशाही अबदी है, उस की सलतनत नसल-दर-नसल क़ायम रहती है।

4मैं, नबूकदनज़्ज़र ख़ुशी और सुकून से अपने महल में रहता था। 5लेकिन एक दिन मैं एक ख़ाब देखकर बहुत घबरा गया। मैं पलंग पर लेटा हुआ था कि इतनी हौलनाक बातें और रोयाएँ मेरे सामने से गुज़रीं कि मैं डर गया। 6तब मैंने हुक्म दिया कि बाबल के तमाम दानिशमंद मेरे पास आएँ ताकि मेरे लिए ख़ाब की ताबीर करें। 7क़िस्मत का हाल बतानेवाले, जादूगर, नजूमी और ग़ैबदान पहुँचे तो मैंने उन्हें अपना ख़ाब बयान किया, लेकिन वह उस की ताबीर करने में नाकाम रहे।

8आख़िरकार दानियाल मेरे हुज़ूर आया जिसका नाम बेल्तशज़्ज़र रखा गया है (मेरे देवता का नाम बेल है)। दानियाल में मुक़द्दस देवताओं की रूह है। उसे भी मैंने अपना ख़ाब सुनाया। 9मैं बोला, "ऐ बेल्तशज़्ज़र, तुम जादूगरों के सरदार हो, और मैं जानता हूँ कि मुक़द्दस देवताओं की रूह तुममें है। कोई भी भेद तुम्हारे लिए इतना मुश्किल नहीं है कि तुम उसे खोल न सको। अब मेरा ख़ाब सुनकर उस की ताबीर करो!

10पलंग पर लेटे हुए मैंने रोया में देखा कि दुनिया के बीच में निहायत लंबा-सा दरख़्त लगा है। 11यह दरख़्त इतना ऊँचा और तनावर होता गया कि आख़िरकार उस की चोटी आसमान तक

पहुँच गई और वह दुनिया की इंतहा तक नज़र
आया। 12उसके पत्ते ख़ूबसूरत थे, और वह बहुत
फल लाता था। उसके साये में जंगली जानवर
पनाह लेते, उस की शाख़ों में परिंदे बसेरा करते
थे। हर इनसानो-हैवान को उससे ख़ुराक मिलती
थी।

13मैं अभी दरख़्त को देख रहा था कि
एक मुक़द्दस फ़रिश्ता आसमान से उतर आया।
14उसने बड़े ज़ोर से आवाज़ दी, 'दरख़्त को
काट डालो! उस की शाख़ें तोड़ दो, उसके पत्ते
झाड़ दो, उसका फल बिखेर दो! जानवर उसके
साये में से निकलकर भाग जाएँ, परिंदे उस की
शाख़ों से उड़ जाएँ। 15लेकिन उसका मुढ जड़ों
समेत ज़मीन में रहने दो। उसे लोहे और पीतल
की ज़ंजीरों में जकड़कर खुले मैदान की घास में
छोड़ दो। वहाँ उसे आसमान की ओस तर करे,
और जानवरों के साथ ज़मीन की घास ही उसको
नसीब हो। 16सात साल तक उसका इनसानी
दिल जानवर के दिल में बदल जाए। 17क्योंकि
मुक़द्दस फ़रिश्तों ने फ़तवा दिया है कि ऐसा ही हो
ताकि इनसान जान ले कि अल्लाह तआला का
इख़्तियार इनसानी सलतनतों पर है। वह अपनी
ही मरज़ी से लोगों को उन पर मुक़र्रर करता है,
ख़ाह वह कितने ज़लील क्यों न हों।'

18मैं, नबूकदनज़्ज़र ने ख़ाब में यह कुछ देखा।
ऐ बेल्तशज़्ज़र, अब मुझे इसकी ताबीर पेश करो।
मेरी सलतनत के तमाम दानिशमंद इसमें नाकाम
रहे हैं। लेकिन तुम यह कर पाओगे, क्योंकि तुममें
मुक़द्दस देवताओं की रूह है।"

19तब बेल्तशज़्ज़र यानी दानियाल के रोंगटे
खड़े हो गए, और जो ख़यालात उभर आए उनसे
उस पर काफ़ी देर तक सख़्त दहशत तारी रही।
आख़िरकार बादशाह बोला, "ऐ बेल्तशज़्ज़र,
ख़ाब और उसका मतलब तुझे इतना दहशतज़दा
न करे।" बेल्तशज़्ज़र ने जवाब दिया, "मेरे
आक़ा, काश ख़ाब की बातें आपके दुश्मनों और
मुख़ालिफ़ों को पेश आएँ! 20आपने एक दरख़्त
देखा जो इतना ऊँचा और तनावर हो गया कि
उस की चोटी आसमान तक पहुँची और वह पूरी
दुनिया को नज़र आया। 21उसके पत्ते ख़ूबसूरत
थे, और वह बहुत-सा फल लाता था। उसके साये
में जंगली जानवर पनाह लेते, उस की शाख़ों
में परिंदे बसेरा करते थे। हर इनसानो-हैवान को
उससे ख़ुराक मिलती थी।

22ऐ बादशाह, आप ही यह दरख़्त हैं! आप
ही बड़े और ताक़तवर हो गए हैं बल्कि आपकी
अज़मत बढ़ते बढ़ते आसमान से बातें करने लगी,
आपकी सलतनत दुनिया की इंतहा तक फैल गई
है। 23ऐ बादशाह, इसके बाद आपने एक मुक़द्दस
फ़रिश्ते को देखा जो आसमान से उतरकर बोला,
'दरख़्त को काट डालो! उसे तबाह करो, लेकिन
उसका मुढ जड़ों समेत ज़मीन में रहने दो। उसे
लोहे और पीतल की ज़ंजीरों में जकड़कर खुले
मैदान की घास में छोड़ दो। वहाँ उसे आसमान
की ओस तर करे, और जानवरों के साथ ज़मीन
की घास ही उसको नसीब हो। सात साल यों ही
गुज़र जाएँ।'

24ऐ बादशाह, इसका मतलब यह है,
अल्लाह तआला ने मेरे आक़ा बादशाह के
बारे में फ़ैसला किया है 25कि आपको
इनसानी संगत से निकालकर भगाया जाए-
गा। तब आप जंगली जानवरों के साथ रहकर
बैलों की तरह घास चरेंगे और आसमान की ओस
से तर हो जाएंगे। सात साल यों ही गुज़रेंगे।
फिर आख़िरकार आप इक़रार करेंगे कि अल्लाह
तआला का इनसानी सलतनतों पर इख़्तियार है,
वह अपनी ही मरज़ी से लोगों को उन पर मुक़र्रर
करता है। 26लेकिन ख़ाब में यह भी कहा गया
कि दरख़्त के मुढ को जड़ों समेत ज़मीन में छोड़ा
जाए। इसका मतलब है कि आपकी सलतनत
ताहम क़ायम रहेगी। जब आप एतराफ़ करेंगे
कि तमाम इख़्तियार आसमान के हाथ में है तो
आपको सलतनत वापस मिलेगी। 27ऐ बादशाह,
अब मेहरबानी से मेरा मशवरा क़बूल फ़रमाएँ।
इनसाफ़ करके और मज़लूमों पर करम फ़रमाकर

अपने गुनाहों को दूर करें। शायद ऐसा करने से
आपकी ख़ुशहाली क़ायम रहे।”
28दानियाल की हर बात नबूकदनज़्ज़र को पेश
आई। 29बारह महीने के बाद बादशाह बाबल में
अपने शाही महल की छत पर टहल रहा था।
30तब वह कहने लगा, “लो, यह अज़ीम शहर
देखो जो मैंने अपनी रिहाइश के लिए तामीर किया
है! यह सब कुछ मैंने अपनी ही ज़बरदस्त क़ुव्वत
से बना लिया है ताकि मेरी शानो-शौकत मज़ीद
बढ़ती जाए।”
31बादशाह यह बात बोल ही रहा था कि
आसमान से आवाज़ सुनाई दी, “ऐ नबूकदनज़्ज़र
बादशाह, सुन! सलतनत तुझसे छीन ली गई
है। 32तुझे इनसानी संगत से निकालकर भगाया
जाएगा, और तू जंगली जानवरों के साथ रहकर
बैल की तरह घास चरेगा। सात साल यों ही
गुज़र जाएंगे। फिर आख़िरकार तू इक़रार करेगा
कि अल्लाह तआला का इनसानी सलतनतों पर
इख़्तियार है, वह अपनी ही मरज़ी से लोगों को
उन पर मुक़र्रर करता है।”
33ज्योंही आवाज़ बंद हुई तो ऐसा ही हुआ।
नबूकदनज़्ज़र को इनसानी संगत से निकालकर
भगाया गया, और वह बैलों की तरह घास चरने
लगा। उसका जिस्म आसमान की ओस से तर
होता रहा। होते होते उसके बाल उक़ाब के परों
जितने लंबे और उसके नाख़ुन परिंदे के चंगुल
की मानिंद हुए। 34लेकिन सात साल गुज़रने के
बाद मैं, नबूकदनज़्ज़र अपनी आँखों को आसमान
की तरफ़ उठाकर दुबारा होश में आया। तब मैंने
अल्लाह तआला की तमजीद की, मैंने उस की
हम्दो-सना की जो हमेशा तक ज़िंदा है। उस
की हुकूमत अबदी है, उस की सलतनत नसल-
दर-नसल क़ायम रहती है। 35उस की निसबत
दुनिया के तमाम बाशिंदे सिफ़र के बराबर हैं। वह
आसमानी फ़ौज और दुनिया के बाशिंदों के साथ
जो जी चाहे करता है। उसे कुछ करने से कोई नहीं
रोक सकता, कोई उससे जवाब तलब करके पूछ
नहीं सकता, “तूने क्या किया?”
36ज्योंही मैं दुबारा होश में आया तो मुझे पहली
शाही इज़्ज़त और शानो-शौकत भी अज़ सरे-
नौ हासिल हुई। मेरे मुशीर और शुरफ़ा दुबारा
मेरे सामने हाज़िर हुए, और मुझे दुबारा तख़्त पर
बिठाया गया। पहले की निसबत मेरी अज़मत में
इज़ाफ़ा हुआ।
37अब मैं, नबूकदनज़्ज़र आसमान के बादशाह
की हम्दो-सना करता हूँ। मैं उसी को जलाल देता
हूँ, क्योंकि जो कुछ भी वह करे वह सहीह है। उस
की तमाम राहें मुंसिफ़ाना हैं। जो मग़रूर होकर
ज़िंदगी गुज़ारते हैं उन्हें वह पस्त करने के क़ाबिल
है।

बेलशज़्ज़र की ज़ियाफ़त

5 एक दिन बेलशज़्ज़र बादशाह अपने बड़ों
के हज़ार अफ़राद के लिए ज़बरदस्त
ज़ियाफ़त करके उनके साथ मै पीने लगा। 2नशे
में उसने हुक्म दिया, “सोने-चाँदी के जो प्याले मेरे
बाप नबूकदनज़्ज़र ने यरूशलम में वाक़े अल्लाह
के घर से छीन लिए थे वह मेरे पास ले आओ
ताकि मैं अपने बड़ों, बीवियों और दाश्ताओं के
साथ उनसे मै पी लूँ।” 3चुनाँचे यरूशलम में वाक़े
अल्लाह के घर से लूटे हुए प्याले उसके पास
लाए गए, और सब उनसे मै पी कर 4सोने, चाँदी,
पीतल, लोहे, लकड़ी और पत्थर के अपने बुतों
की तमजीद करने लगे।
5उसी लमहे शाही महल के हाल में इनसानी
हाथ की उँगलियाँ नज़र आईं जो शमादान के
मुक़ाबिल दीवार के पलस्तर पर कुछ लिखने
लगीं। जब बादशाह ने हाथ को लिखते हुए देखा
6तो उसका चेहरा डर के मारे फ़क़ हो गया। उस
की कमर के जोड़ ढीले पड़ गए, और उसके घुटने
एक दूसरे से टकराने लगे।
7वह ज़ोर से चीख़ा, “जादूगरों, नुजूमियों और
ग़ैबदानों को बुलाओ!” बाबल के दानिशमंद पहुँचे
तो वह बोला, “जो भी लिखे हुए अलफ़ाज़ पढ़कर
मुझे उनका मतलब बता सके उसे अरग़वानी रंग
का लिबास पहनाया जाएगा। उसके गले में सोने

की ज़ंजीर पहनाई जाएगी, और हुकूमत में सिर्फ़
दो लोग उससे बड़े होंगे।”
8बादशाह के दानिशमंद क़रीब आए, लेकिन
न वह लिखे हुए अलफ़ाज़ पढ़ सके, न उनका
मतलब बादशाह को बता सके। 9तब बेलशज़्ज़र
बादशाह निहायत परेशान हुआ, और उसका चेहरा
मज़ीद माँद पड़ गया। उसके शुरफ़ा भी सख़्त
परेशान हो गए।
10बादशाह और शुरफ़ा की बातें मलिका तक
पहुँच गईं तो वह ज़ियाफ़त के हाल में दाख़िल
हुई। कहने लगी, “बादशाह अबद तक जीते
रहें! घबराने या माँद पड़ने की क्या ज़रूरत है?
11आपकी बादशाही में एक आदमी है जिसमें
मुक़द्दस देवताओं की रूह है। आपके बाप के दौरे-
हुकूमत में साबित हुआ कि वह देवताओं की-
सी बसीरत, फ़हम और हिकमत का मालिक
है। आपके बाप नबूकदनज़्ज़र बादशाह ने उसे
क़िस्मत का हाल बतानेवालों, जादूगरों, नुजूमियों
और ग़ैबदानों पर मुक़र्रर किया था, 12क्योंकि
उसमें ग़ैरमामूली ज़िहानत, इल्म और समझ पाई
जाती है। वह ख़ाबों की ताबीर करने और पहेलियाँ
और पेचीदा मसले हल करने में माहिर साबित
हुआ है। आदमी का नाम दानियाल है, गो बादशाह
ने उसका नाम बेल्तशज़्ज़र रखा था। मेरा मशवरा
है कि आप उसे बुलाएँ, क्योंकि वह आपको ज़रूर
लिखे हुए अलफ़ाज़ का मतलब बताएगा।”
13यह सुनकर बादशाह ने दानियाल को फ़ौरन
बुला लिया। जब पहुँचा तो बादशाह उससे
मुख़ातिब हुआ, “क्या तुम वह दानियाल हो
जिसे मेरे बाप नबूकदनज़्ज़र बादशाह यहूदाह
के जिलावतनों के साथ यहूदाह से यहाँ लाए
थे? 14सुना है कि देवताओं की रूह तुममें है,
कि तुम बसीरत, फ़हम और ग़ैरमामूली हिकमत
के मालिक हो। 15दानिशमंदों और नुजूमियों
को मेरे सामने लाया गया है ताकि दीवार पर
लिखे हुए अलफ़ाज़ पढ़कर मुझे उनका मतलब
बताएँ, लेकिन वह नाकाम रहे हैं। 16अब मुझे
बताया गया कि तुम ख़ाबों की ताबीर और पेचीदा
मसलों को हल करने में माहिर हो। अगर तुम
यह अलफ़ाज़ पढ़कर मुझे इनका मतलब बता
सको तो तुम्हें अरग़वानी रंग का लिबास पहनाया
जाएगा। तुम्हारे गले में सोने की ज़ंजीर पहनाई
जाएगी, और हुकूमत में सिर्फ़ दो लोग तुमसे बड़े
होंगे।”
17दानियाल ने जवाब दिया, “मुझे अज्र न दें,
अपने तोह्फ़े किसी और को दीजिए। मैं बादशाह
को यह अलफ़ाज़ और इनका मतलब वैसे ही
बता दूँगा। 18ऐ बादशाह, जो सलतनत, अज़मत
और शानो-शौकत आपके बाप नबूकदनज़्ज़र को
हासिल थी वह अल्लाह तआला से मिली थी।
19उसी ने उन्हें वह अज़मत अता की थी जिसके
बाइस तमाम क़ौमों, उम्मतों और ज़बानों के
अफ़राद उनसे डरते और उनके सामने काँपते
थे। जिसे वह मार डालना चाहते थे उसे मारा
गया, जिसे वह ज़िंदा छोड़ना चाहते थे वह ज़िंदा
रहा। जिसे वह सरफ़राज़ करना चाहते थे वह
सरफ़राज़ हुआ और जिसे पस्त करना चाहते थे
वह पस्त हुआ। 20लेकिन वह फूलकर हद से
ज़्यादा मग़रूर हो गए, इसलिए उन्हें तख़्त से
उतारा गया, और वह अपनी क़दरो-मनज़िलत खो
बैठे। 21उन्हें इनसानी संगत से निकालकर भगाया
गया, और उनका दिल जानवर के दिल की मानिंद
बन गया। उनका रहन-सहन जंगली गधों के साथ
था, और वह बैलों की तरह घास चरने लगे। उनका
जिस्म आसमान की ओस से तर रहता था। यह
हालत उस वक़्त तक रही जब तक कि उन्होंने
इक़रार न किया कि अल्लाह तआला का इनसानी
सलतनतों पर इख़्तियार है, वह अपनी ही मरज़ी
से लोगों को उन पर मुक़र्रर करता है।
22ऐ बेलशज़्ज़र बादशाह, गो आप उनके बेटे
हैं और इस बात का इल्म रखते हैं तो भी आप
फ़रोतन न रहे 23बल्कि आसमान के मालिक के
ख़िलाफ़ उठ खड़े हो गए हैं। आपने हुक्म दिया
कि उसके घर के प्याले आपके हुज़ूर लाए जाएँ,
और आपने अपने बड़ों, बीवियों और दाश्ताओं के
साथ उन्हें मै पीने के लिए इस्तेमाल किया। साथ

साथ आपने अपने देवताओं की तमजीद की गो
वह चाँदी, सोने, पीतल, लोहे, लकड़ी और पत्थर
के बुत ही हैं। न वह देख सकते, न सुन या समझ
सकते हैं। लेकिन जिस ख़ुदा के हाथ में आपकी
जान और आपकी तमाम राहें हैं उसका एहतराम
आपने नहीं किया।

24इसी लिए उसने हाथ भेजकर दीवार पर यह
अलफ़ाज़ लिखवा दिए। 25और लिखा यह है,
‘मिने मिने तक़ेलो-फ़रसीन।’

26‘मिने’ का मतलब ‘गिना हुआ’ है। यानी
आपकी सलतनत के दिन गिने हुए हैं, अल्लाह
ने उन्हें इख़्तिताम तक पहुँचाया है।

27‘तक़ेल’ का मतलब ‘तोला हुआ’ है। यानी
अल्लाह ने आपको तोलकर मालूम किया है कि
आपका वज़न कम है।

28‘फ़रसीन’ का मतलब ‘तक़सीम हुआ’
है। यानी आपकी बादशाही को मादियों और
फ़ारसियों में तक़सीम किया जाएगा।”

29दानियाल ख़ामोश हुआ तो बेलशज़्ज़र ने
हुक्म दिया कि उसे अरग़वानी रंग का लिबास
पहनाया जाए और उसके गले में सोने की ज़ंजीर
पहनाई जाए। साथ साथ एलान किया गया कि
अब से हुकूमत में सिर्फ़ दो आदमी दानियाल से
बड़े हैं।

30उसी रात शाहे-बाबल बेलशज़्ज़र को क़त्ल
किया गया, 31और दारा मादी तख़्त पर बैठ गया।
उस की उम्र 62 साल थी।

दानियाल शेरबबर की माँद में

6 दारा ने सलतनत के तमाम सूबों पर 120
सूबेदार मुतैयिन करने का फ़ैसला किया।
2उन पर तीन वज़ीर मुक़र्रर थे जिनमें से एक
दानियाल था। गवर्नर उनके सामने जवाबदेह थे
ताकि बादशाह को नुक़सान न पहुँचे। 3जल्द
ही पता चला कि दानियाल दूसरे वज़ीरों और
सूबेदारों पर सबक़त रखता था, क्योंकि वह
ग़ैरमामूली ज़िहानत का मालिक था। नतीजतन
बादशाह ने उसे पूरी सलतनत पर मुक़र्रर करने
का इरादा किया। 4जब दीगर वज़ीरों और सूबेदारों
को यह बात मालूम हुई तो वह दानियाल पर
इलज़ाम लगाने का बहाना ढूँडने लगे। लेकिन वह
अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाने में इतना क़ाबिले-
एतमाद था कि वह नाकाम रहे। क्योंकि न वह
रिश्वतख़ोर था, न किसी काम में सुस्त।

5आख़िरकार वह आदमी आपस में कहने लगे,
“इस तरीक़े से हमें दानियाल पर इलज़ाम लगाने
का मौक़ा नहीं मिलेगा। लेकिन एक बात है जो
इलज़ाम का बाइस बन सकती है यानी उसके
ख़ुदा की शरीअत।” 6तब वह गुरोह की सूरत में
बादशाह के सामने हाज़िर हुए और कहने लगे,
“दारा बादशाह अबद तक जीते रहें! 7सलतनत
के तमाम वज़ीर, गवर्नर, सूबेदार, मुशीर और
मुन्तज़िम आपस में मशवरा करके मुत्तफ़िक़ हुए
हैं कि अगले 30 दिन के दौरान सबको सिर्फ़
बादशाह से दुआ करनी चाहिए। बादशाह एक
फ़रमान सादिर करें कि जो भी किसी और माबूद
या इनसान से इल्तिजा करे उसे शेरों की माँद में
फेंका जाएगा। ध्यान देना चाहिए कि सब ही इस
पर अमल करें। 8ऐ बादशाह, गुज़ारिश है कि आप
यह फ़रमान ज़रूर सादिर करें बल्कि लिखकर
उस की तसदीक़ भी करें ताकि उसे तबदील न
किया जा सके। तब वह मादियों और फ़ारसियों
के क़वानीन का हिस्सा बनकर मनसूख़ नहीं किया
जा सकेगा।”

9दारा बादशाह मान गया। उसने फ़रमान
लिखवाकर उस की तसदीक़ की।

10जब दानियाल को मालूम हुआ कि फ़रमान
सादिर हुआ है तो वह सीधा अपने घर में चला
गया। छत पर एक कमरा था जिसकी खुली
खिड़कियों का रुख़ यरूशलम की तरफ़ था। इस
कमरे में दानियाल रोज़ाना तीन बार अपने घुटने
टेककर दुआ और अपने ख़ुदा की सताइश करता
था। अब भी उसने यह सिलसिला जारी रखा।
11ज्योंही दानियाल अपने ख़ुदा से दुआ और
इल्तिजा कर रहा था तो उसके दुश्मनों ने गुरोह की
सूरत में घर में घुसकर उसे यह करते हुए पाया।

12तब वह बादशाह के पास गए और उसे शाही फ़रमान की याद दिलाई, "क्या आपने फ़रमान सादिर नहीं किया था कि अगले 30 दिन के दौरान सबको सिर्फ़ बादशाह से दुआ करनी है, और जो किसी और माबूद या इनसान से इल्तिजा करे उसे शेरों की माँद में फेंका जाएगा?" बादशाह ने जवाब दिया, "जी, यह फ़रमान क़ायम है बल्कि मादियों और फ़ारसियों के क़वानीन का हिस्सा है जो मनसूख़ नहीं किया जा सकता।" 13उन्होंने कहा, "ऐ बादशाह, दानियाल जो यहूदाह के जिलावतनों में से है न आपकी परवा करता, न उस फ़रमान की जिसकी आपने लिखकर तसदीक़ की। अभी तक वह रोज़ाना तीन बार अपने ख़ुदा से दुआ करता है।"

14यह सुनकर बादशाह को बड़ी दिक़्क़त महसूस हुई। पूरा दिन वह सोचता रहा कि मैं दानियाल को किस तरह बचाऊँ। सूरज के ग़ुरूब होने तक वह उसे छुड़ाने के लिए कोशाँ रहा। 15लेकिन आख़िरकार वह आदमी गुरोह की सूरत में दुबारा बादशाह के हुज़ूर आए और कहने लगे, "बादशाह को याद रहे कि मादियों और फ़ारसियों के क़वानीन के मुताबिक़ जो भी फ़रमान बादशाह सादिर करे उसे तबदील नहीं किया जा सकता।" 16चुनाँचे बादशाह ने हुक्म दिया कि दानियाल को पकड़कर शेरों की माँद में फेंका जाए। ऐसा ही हुआ। बादशाह बोला, "ऐ दानियाल, जिस ख़ुदा की इबादत तुम बिलानाग़ा करते आए हो वह तुम्हें बचाए।" 17फिर माँद के मुँह पर पत्थर रखा गया, और बादशाह ने अपनी मुहर और अपने बड़ों की मुहरें उस पर लगाईं ताकि कोई भी उसे खोलकर दानियाल की मदद न करे।

18इसके बाद बादशाह शाही महल में वापस चला गया और पूरी रात रोज़ा रखे हुए गुज़ारी। न कुछ उसका दिल बहलाने के लिए उसके पास लाया गया, न उसे नींद आई।

19जब पौ फटने लगी तो वह उठकर शेरों की माँद के पास गया। 20उसके क़रीब पहुँचकर बादशाह ने ग़मगीन आवाज़ से पुकारा, "ऐ ज़िंदा ख़ुदा के बंदे दानियाल, क्या तुम्हारे ख़ुदा जिसकी तुम बिलानाग़ा इबादत करते रहे हो तुम्हें शेरों से बचा सका?" 21दानियाल ने जवाब दिया, "बादशाह अबद तक जीते रहें! 22मेरे ख़ुदा ने अपने फ़रिश्ते को भेज दिया जिसने शेरों के मुँह को बंद किए रखा। उन्होंने मुझे कोई भी नुक़सान न पहुँचाया, क्योंकि अल्लाह के सामने मैं बेक़ुसूर हूँ। बादशाह सलामत के ख़िलाफ़ भी मुझसे जुर्म नहीं हुआ।"

23यह सुनकर बादशाह आपे में न समाया। उसने दानियाल को माँद से निकालने का हुक्म दिया। जब उसे खींचकर निकाला गया तो मालूम हुआ कि उसे कोई भी नुक़सान नहीं पहुँचा। यों उसे अल्लाह पर भरोसा रखने का अज्र मिला। 24लेकिन जिन आदमियों ने दानियाल पर इलज़ाम लगाया था उनका बुरा अंजाम हुआ। बादशाह के हुक्म पर उन्हें उनके बाल-बच्चों समेत शेरों की माँद में फेंका गया। माँद के फ़र्श पर गिरने से पहले ही शेर उन पर झपट पड़े और उन्हें फाड़कर उनकी हड्डियों को चबा लिया।

25फिर दारा बादशाह ने सलतनत की तमाम क़ौमों, उम्मतों और अहले-ज़बान को ज़ैल का पैग़ाम भेजा,

"सबकी सलामती हो! 26मेरा फ़रमान सुनो! लाज़िम है कि मेरी सलतनत की हर जगह लोग दानियाल के ख़ुदा के सामने थरथराएँ और उसका ख़ौफ़ मानें। क्योंकि वह ज़िंदा ख़ुदा और अबद तक क़ायम है। न कभी उस की बादशाही तबाह, न उस की हुकूमत ख़त्म होगी। 27वही बचाता और नजात देता है, वही आसमानो-ज़मीन पर इलाही निशान और मोजिज़े दिखाता है। उसी ने दानियाल को शेरों के क़ब्ज़े से बचाया।"

28चुनाँचे दानियाल को दारा बादशाह और फ़ारस के बादशाह ख़ोरस के दौरे-हुकूमत में बहुत कामयाबी हासिल हुई।

दानियाल की पहली रोया : चार जानवर

7 शाहे-बाबल बेलशज़्ज़र की हुकूमत के
पहले साल में दानियाल ने ख़ाब में रोया
देखी। जाग उठने पर उसने वह कुछ क़लमबंद
कर लिया जो ख़ाब में देखा था। ज़ैल में इसका
बयान है,

2रात के वक़्त मैं, दानियाल ने रोया में देखा
कि आसमान की चारों हवाएँ ज़ोर से बड़े समुंदर
को मुतलातिम कर रही हैं। 3फिर चार बड़े जानवर
समुंदर से निकल आए जो एक दूसरे से मुख़्तलिफ़
थे।

4पहला जानवर शेरबबर जैसा था, लेकिन
उसके उक़ाब के पर थे। मेरे देखते ही उसके परों
को नोच लिया गया और उसे उठाकर इनसान की
तरह पिछले दो पैरों पर खड़ा किया गया। उसे
इनसान का दिल भी मिल गया।

5दूसरा जानवर रीछ जैसा था। उसका एक
पहलू खड़ा किया गया था, और वह अपने दाँतों
में तीन पसलियाँ पकड़े हुए था। उसे बताया गया,
“उठ, जी भरकर गोश्त खा ले!”

6फिर मैंने तीसरे जानवर को देखा। वह चीते
जैसा था, लेकिन उसके चार सर थे। उसे हुकूमत
करने का इख़्तियार दिया गया।

7इसके बाद रात की रोया में एक चौथा जानवर
नज़र आया जो डरावना, हौलनाक और निहायत
ही ताक़तवर था। अपने लोहे के बड़े बड़े दाँतों से
वह सब कुछ खाता और चूर चूर करता था। जो
कुछ बच जाता उसे वह पाँवों तले रौंद देता था। यह
जानवर दीगर जानवरों से मुख़्तलिफ़ था। उसके
दस सींग थे। 8मैं सींगों पर ग़ौर ही कर रहा था
कि एक और छोटा-सा सींग उनके दरमियान से
निकल आया। पहले दस सींगों में से तीन को नोच
लिया गया ताकि उसे जगह मिल जाए। छोटे सींग
पर इनसानी आँखें थीं, और उसका मुँह बड़ी बड़ी
बातें करता था।

9मैं देख ही रहा था कि तख़्त लगाए गए और
क़दीमुल-ऐयाम बैठ गया। उसका लिबास बर्फ़
जैसा सफ़ेद और उसके बाल ख़ालिस ऊन की
मानिंद थे। जिस तख़्त पर वह बैठा था वह आग
की तरह भड़क रहा था, और उस पर शोलाज़न
पहिये लगे थे। 10उसके सामने से आग की नहर
बहकर निकल रही थी। बेशुमार हस्तियाँ उस की
ख़िदमत के लिए खड़ी थीं। लोग अदालत के लिए
बैठ गए, और किताबें खोली गईं।

11मैंने ग़ौर किया कि छोटा सींग बड़ी बड़ी
बातें कर रहा है। मैं देखता रहा तो चौथे जानवर
को क़त्ल किया गया। उसका जिस्म तबाह हुआ
और भड़कती आग में फेंका गया। 12दीगर तीन
जानवरों की हुकूमत उनसे छीन ली गई, लेकिन
उन्हें कुछ देर के लिए ज़िंदा रहने की इजाज़त दी
गई।

13रात की रोया में मैंने यह भी देखा कि
आसमान के बादलों के साथ साथ कोई आ रहा
है जो इब्ने-आदम-सा लग रहा है। जब क़दीमुल-
ऐयाम के क़रीब पहुँचा तो उसके हुज़ूर लाया गया।
14उसे सलतनत, इज़्ज़त और बादशाही दी गई,
और हर क़ौम, उम्मत और ज़बान के अफ़राद ने
उस की परस्तिश की। उस की हुकूमत अबदी है
और कभी ख़त्म नहीं होगी। उस की बादशाही
कभी तबाह नहीं होगी।

15मैं, दानियाल सख़्त परेशान हुआ, क्योंकि
रोया से मुझ पर दहशत छा गई थी। 16इसलिए
मैंने वहाँ खड़े किसी के पास जाकर उससे
गुज़ारिश की कि वह मुझे इन तमाम बातों
का मतलब बताए। उसने मुझे इनका मतलब
बताया, 17“चार बड़े जानवर चार सलतनतें हैं
जो ज़मीन से निकलकर क़ायम हो जाएँगी।
18लेकिन अल्लाह तआला के मुक़द्दसीन को
हक़ीक़ी बादशाही मिलेगी, वह बादशाही जो अबद
तक हासिल रहेगी।”

19मैं चौथे जानवर के बारे में मज़ीद जानना
चाहता था, उस जानवर के बारे में जो दीगर
जानवरों से इतना मुख़्तलिफ़ और इतना हौलनाक
था। क्योंकि उसके दाँत लोहे और पंजे पीतल के
थे, और वह सब कुछ खाता और चूर चूर करता

था। जो बच जाता उसे वह पाँवों तले रौंद देता
था। 20मैं उसके सर के दस सींगों और उनमें से
निकले हुए छोटे सींग के बारे में भी मज़ीद जानना
चाहता था। क्योंकि छोटे सींग के निकलने पर
दस सींगों में से तीन निकलकर गिर गए, और
यह सींग बढ़कर साथवाले सींगों से कहीं बड़ा
नज़र आया। उस की आँखें थीं, और उसका मुँह
बड़ी बड़ी बातें करता था। 21रोया में मैंने देखा
कि छोटे सींग ने मुक़द्दसीन से जंग करके उन्हें
शिकस्त दी। 22लेकिन फिर क़दीमुल-ऐयाम आ
पहुँचा और अल्लाह तआला के मुक़द्दसीन के लिए
इनसाफ़ क़ायम किया। फिर वह वक़्त आया जब
मुक़द्दसीन को बादशाही हासिल हुई।

23जिससे मैंने रोया का मतलब पूछा था उसने
कहा, "चौथे जानवर से मुराद ज़मीन पर एक
चौथी बादशाही है जो दीगर तमाम बादशाहियों
से मुख़्तलिफ़ होगी। वह तमाम दुनिया को खा
जाएगी, उसे रौंदकर चूर चूर कर देगी। 24दस
सींगों से मुराद दस बादशाह हैं जो इस बादशाही
से निकल आएँगे। उनके बाद एक और बादशाह
आएगा जो गुज़रे बादशाहों से मुख़्तलिफ़ होगा
और तीन बादशाहों को ख़ाक में मिला देगा। 25वह
अल्लाह तआला के ख़िलाफ़ कुफ़्र बकेगा, और
मुक़द्दसीन उसके तहत पिसते रहेंगे, यहाँ तक कि
वह ईदों के मुक़र्ररा औक़ात और शरीअत को
तबदील करने की कोशिश करेगा। मुक़द्दसीन को
एक अरसे, दो अरसों और आधे अरसे के लिए
उसके हवाले किया जाएगा।

26लेकिन फिर लोग उस की अदालत के
लिए बैठ जाएंगे। उस की हुकूमत उससे छीन
ली जाएगी, और वह मुकम्मल तौर पर तबाह
हो जाएगी। 27तब आसमान तले की तमाम
सलतनतों की बादशाहत, सलतनत और अज़मत
अल्लाह तआला की मुक़द्दस क़ौम के हवाले कर
दी जाएगी। अल्लाह तआला की बादशाही अबदी
होगी, और तमाम हुक्मरान उस की ख़िदमत
करके उसके ताबे रहेंगे।"

28मुझे मज़ीद कुछ नहीं बताया गया। मैं,
दानियाल इन बातों से बहुत परेशान हुआ, और
मेरा चेहरा माँद पड़ गया, लेकिन मैंने मामला
अपने दिल में महफ़ूज़ रखा।

दानियाल की दूसरी रोया : मेंढा और बकरा

8 बेलशज़्ज़र बादशाह के दौरे-हुकूमत के
तीसरे साल में मैं, दानियाल ने एक और
रोया देखी। 2रोया में मैं सूबा ऐलाम के क़िलाबंद
शहर सोसन की नहर ऊलाई के किनारे पर खड़ा
था। 3जब मैंने अपनी निगाह उठाई तो किनारे पर
मेरे सामने ही एक मेंढा खड़ा था। उसके दो बड़े
सींग थे जिनमें से एक ज़्यादा बड़ा था। लेकिन
वह दूसरे के बाद ही बड़ा हो गया था। 4मेरी नज़रों
के सामने मेंढा मग़रिब, शिमाल और जुनूब की
तरफ़ सींग मारने लगा। न कोई जानवर उसका
मुक़ाबला कर सका, न कोई उसके क़ाबू से बचा
सका। जो जी चाहे करता था और होते होते बहुत
बड़ा हो गया।

5मैं उस पर ग़ौर ही कर रहा था कि अचानक
मग़रिब से आते हुए एक बकरा दिखाई दिया। उस
की आँखों के दरमियान ज़बरदस्त सींग था, और
वह ज़मीन को छुए बग़ैर चल रहा था। पूरी दुनिया
को उबूर करके 6वह दो सींगोंवाले उस मेंढे के पास
पहुँच गया जो मैंने नहर के किनारे खड़ा देखा था।
बड़े तैश में आकर वह उस पर टूट पड़ा। 7मैंने देखा
कि वह मेंढे के पहलू से टकरा गया। बड़े ग़ुस्से में
उसने उसे यों मारा कि मेंढे के दोनों सींग टुकड़े
टुकड़े हो गए। इस बेबस हालत में मेंढा उसका
मुक़ाबला न कर सका। बकरे ने उसे ज़मीन पर
पटख़कर पाँवों तले कुचल दिया। कोई नहीं था
जो मेंढे को बकरे के क़ाबू से बचाए।

8बकरा निहायत ताक़तवर हो गया। ले-
किन ताक़त के उरूज पर ही उसका बड़ा सींग
टूट गया, और उस की जगह मज़ीद चार ज़बरदस्त
सींग निकल आए जिनका रुख़ आसमान की चार
सिम्तों की तरफ़ था। 9उनके एक सींग में से एक
और सींग निकल आया जो इब्तिदा में छोटा था।

लेकिन वह जुनूब, मशरिक़ और ख़ूबसूरत मुल्क इसराईल की तरफ़ बढ़ते बढ़ते बहुत ताक़तवर हो गया। 10फिर वह आसमानी फ़ौज तक बढ़ गया। वहाँ उसने कुछ फ़ौजियों और सितारों को ज़मीन पर फेंककर पाँवों तले कुचल दिया। 11वह बढ़ते बढ़ते आसमानी फ़ौज के कमाँडर तक भी पहुँच गया और उसे उन क़ुरबानियों से महरूम कर दिया जो उसे रोज़ाना पेश की जाती थीं। साथ साथ सींग ने उसके मक़दिस के मक़ाम को तबाह कर दिया। 12उस की फ़ौज से रोज़ाना की क़ुरबानियों की बेहुरमती हुई, और सींग ने सच्चाई को ज़मीन पर पटख़ दिया। जो कुछ भी उसने किया उसमें वह कामयाब रहा।

13फिर मैंने दो मुक़द्दस हस्तियों को आपस में बात करते हुए सुना। एक ने पूछा, "इस रोया में पेश किए गए हालात कब तक क़ायम रहेंगे, यानी जो कुछ रोज़ाना की क़ुरबानियों के साथ हो रहा है, यह तबाहकुन बेहुरमती और यह बात कि मक़दिस को पामाल किया जा रहा है?" 14दूसरे ने जवाब में मुझे बताया, "हालात 2,300 शामों और सुबहों तक यों ही रहेंगे। इसके बाद मक़दिस को नए सिरे से मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाएगा।"

15मैं देखे हुए वाक़ियात को समझने की कोशिश कर ही रहा था कि कोई मेरे सामने खड़ा हुआ जो मर्द जैसा लग रहा था। 16साथ साथ मैंने नहर ऊलाई की तरफ़ से किसी शख़्स की आवाज़ सुनी जिसने कहा, "ऐ जिबराईल, इस आदमी को रोया का मतलब बता दे।" 17फ़रिश्ता मेरे क़रीब आया तो मैं सख़्त घबराकर मुँह के बल गिर गया। लेकिन वह बोला, "ऐ आदमज़ाद, जान ले कि इस रोया का ताल्लुक़ आख़िरी ज़माने से है।"

18जब वह मुझसे बात कर रहा था तो मैं मदहोश हालत में मुँह के बल पड़ा रहा। अब फ़रिश्ते ने मुझे छूकर पाँवों पर खड़ा किया। 19वह बोला, "मैं तुझे समझा देता हूँ कि उस आख़िरी ज़माने में क्या कुछ पेश आएगा जब अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा। क्योंकि रोया का ताल्लुक़ आख़िरी ज़माने से है। 20दो सींगों के जिस मेंढे को तूने देखा वह मादी और फ़ारस के बादशाहों की नुमाइंदगी करता है। 21लंबे बालों का बकरा यूनान का बादशाह है। उस की आँखों के दरमियान लगा बड़ा सींग यूनानी शहनशाही का पहला बादशाह है। 22तूने देखा कि यह सींग टूट गया और उस की जगह चार सींग निकल आए। इसका मतलब है कि पहली बादशाही से चार और निकल आएँगी। लेकिन चारों की ताक़त पहली की निसबत कम होगी। 23उनकी हुकूमत के आख़िरी ऐयाम में बेवफ़ाओं की बदकिरदारी उरूज तक पहुँच गई होगी।

उस वक़्त एक गुस्ताख़ और साज़िश का माहिर बादशाह तख़्त पर बैठेगा। 24वह बहुत ताक़तवर हो जाएगा, लेकिन यह उस की अपनी ताक़त नहीं होगी। वह हैरतअंगेज़ बरबादी का बाइस बनेगा, और जो कुछ भी करेगा उसमें कामयाब होगा। वह ज़ोरावरों और मुक़द्दस क़ौम को तबाह करेगा। 25अपनी समझ और फ़रेब के ज़रीए वह कामयाब रहेगा। तब वह मुतकब्बिर हो जाएगा। जब लोग अपने आपको महफ़ूज़ समझेंगे तो वह उन्हें मौत के घाट उतारेगा। आख़िरकार वह हुक्मरानों के हुक्मरान के ख़िलाफ़ भी उठेगा। लेकिन वह पाश पाश हो जाएगा, अलबत्ता इनसानी हाथ से नहीं।

26ऐ दानियाल, शामों और सुबहों के बारे में जो रोया तुझ पर ज़ाहिर हुई वह सच्ची है। लेकिन फ़िलहाल उसे पोशीदा रख, क्योंकि यह वाक़ियात अभी पेश नहीं आएँगे बल्कि बहुत दिनों के गुज़र जाने के बाद ही।"

27इसके बाद मैं, दानियाल निढाल होकर कई दिनों तक बीमार रहा। फिर मैं उठा और बादशाह की ख़िदमत में दुबारा अपने फ़रायज़ अदा करने लगा। मैं रोया से सख़्त परेशान था, और कोई नहीं था जो मुझे उसका मतलब बता सके।

दानियाल अपनी क़ौम की शफ़ाअत करता है

9 दारा बिन अख़स्वेरुस बाबल के तख़्त पर बैठ गया था। इस मादी बादशाह 2की हुकूमत के पहले साल में मैं, दानियाल ने पाक

नविश्तों की तहक़ीक़ की। मैंने ख़ासकर उस
पर ग़ौर किया जो रब ने यरमियाह नबी की
मारिफ़त फ़रमाया था। उसके मुताबिक़ यरूशलम
की तबाहशुदा हालत 70 साल तक क़ायम रहेगी।
3चुनाँचे मैंने रब अपने ख़ुदा की तरफ़ रुजू किया
ताकि अपनी दुआ और इल्तिजाओं से उस की
मरज़ी दरियाफ़्त करूँ। साथ साथ मैंने रोज़ा रखा,
टाट का लिबास ओढ़ लिया और अपने सर पर
राख डाल ली। 4मैंने रब अपने ख़ुदा से दुआ करके
इक़रार किया,

"ऐ रब, तू कितना अज़ीम और महीब ख़ुदा
है! जो भी तुझे प्यार करता और तेरे अहकाम के
ताबे रहता है उसके साथ तू अपना अहद क़ायम
रखता और उस पर मेहरबानी करता है। 5लेकिन
हमने गुनाह और बदी की है। हम बेदीन और बाग़ी
होकर तेरे अहकाम और हिदायात से भटक गए हैं।
6हमने नबियों की नहीं सुनी, हालाँकि तेरे ख़ादिम
तेरा नाम लेकर हमारे बादशाहों, बुज़ुर्गों, बापदादा
बल्कि मुल्क के तमाम बाशिंदों से मुख़ातिब हुए।
7ऐ रब, तू हक़-बजानिब है जबकि इस दिन
हम सब शर्मसार हैं, ख़ाह यहूदाह, यरूशलम या
इसराईल के हों, ख़ाह क़रीब या उन तमाम दूर-
दराज़ ममालिक में रहते हों जहाँ तूने हमें हमारी
बेवफ़ाई के सबब से मुंतशिर कर दिया है। क्योंकि
हम तेरे ही साथ बेवफ़ा रहे हैं। 8ऐ रब, हम
अपने बादशाहों, बुज़ुर्गों और बापदादा समेत बहुत
शर्मसार हैं, क्योंकि हमने तेरा ही गुनाह किया है।

9लेकिन रब हमारा ख़ुदा रहीम है और ख़ुशी
से मुआफ़ करता है, गो हम उससे सरकश हुए
हैं। 10न हम रब अपने ख़ुदा के ताबे रहे, न
उसके उन अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी
जो उसने हमें अपने ख़ादिमों यानी नबियों की
मारिफ़त दिए थे। 11तमाम इसराईल तेरी शरीअत
की ख़िलाफ़वरज़ी करके सहीह राह से भटक गया
है, कोई तेरी सुनने के लिए तैयार नहीं था।

अल्लाह के ख़ादिम मूसा ने शरीअत में क़सम
खाकर लानतें भेजी थीं, और अब यह लानतें हम
पर नाज़िल हुई हैं, इसलिए कि हमने तेरा गुनाह
किया। 12जो कुछ तूने हमारे और हमारे हुक्मरानों
के ख़िलाफ़ फ़रमाया था वह पूरा हुआ, और हम
पर बड़ी आफ़त आई। आसमान तले कहीं भी
ऐसी मुसीबत नहीं आई जिस तरह यरूशलम को
पेश आई है। 13मूसा की शरीअत में मज़कूर हर
वह लानत हम पर नाज़िल हुई जो नाफ़रमानों पर
भेजी गई है। तो भी न हमने अपने गुनाहों को
छोड़ा, न तेरी सच्चाई पर ध्यान दिया, हालाँकि
इससे हम रब अपने ख़ुदा का ग़ज़ब ठंडा कर
सकते थे। 14इसी लिए रब हम पर आफ़त लाने
से न झिजका। क्योंकि जो कुछ भी रब हमारा
ख़ुदा करता है उसमें वह हक़-बजानिब होता है।
लेकिन हमने उस की न सुनी।

15ऐ रब हमारे ख़ुदा, तू बड़ी क़ुदरत का इज़हार
करके अपनी क़ौम को मिसर से निकाल लाया।
यों तेरे नाम को वह इज़्ज़तो-जलाल मिला जो
आज तक क़ायम रहा है। इसके बावुजूद हमने
गुनाह किया, हमसे बेदीन हरकतें सरज़द हुई हैं।
16ऐ रब, तू अपने मुंसिफ़ाना कामों में वफ़ादार
रहा है! अब भी इसका लिहाज़ कर और अपने
सख़्त ग़ज़ब को अपने शहर और मुक़द्दस पहाड़
यरूशलम से दूर कर! यरूशलम और तेरी क़ौम
गिर्दो-नवाह की क़ौमों के लिए मज़ाक़ का निशाना
बन गई है, गो हम मानते हैं कि यह हमारे गुनाहों
और हमारे बापदादा की ख़ताओं की वजह से हो
रहा है।

17ऐ हमारे ख़ुदा, अब अपने ख़ादिम की
दुआओं और इल्तिजाओं को सुन! ऐ रब, अपनी
ही ख़ातिर अपने तबाहशुदा मक़दिस पर अपने
चेहरे का मेहरबान नूर चमका। 18ऐ मेरे ख़ुदा,
कान लगाकर मेरी सुन! अपनी आँखें खोल!
उस शहर के खंडरात पर नज़र कर जिस पर तेरे
ही नाम का ठप्पा लगा है। हम इसलिए तुझसे
इल्तिजाएँ नहीं कर रहे कि हम रास्तबाज़ हैं बल्कि
इसलिए कि तू निहायत मेहरबान है। 19ऐ रब,
हमारी सुन! ऐ रब, हमें मुआफ़ कर! ऐ मेरे ख़ुदा,
अपनी ख़ातिर देर न कर, क्योंकि तेरे शहर और
क़ौम पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।"

70 हफ़्तों का भेद

20यों मैं दुआ करता और अपने और अपनी
क़ौम इसराईल के गुनाहों का इक़रार करता
गया। मैं ख़ासकर अपने ख़ुदा के मुक़द्दस पहाड़
यरूशलम के लिए रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर
फ़रियाद कर रहा था।
21मैं दुआ कर ही रहा था कि जिबराईल जिसे
मैंने दूसरी रोया में देखा था मेरे पास आ पहुँचा।
रब के घर में शाम की क़ुरबानी पेश करने का
वक़्त था। मैं बहुत ही थक गया था। 22उसने
मुझे समझाकर कहा, “ऐ दानियाल, अब मैं
तुझे समझ और बसीरत देने के लिए आया हूँ।
23ज्योंही तू दुआ करने लगा तो अल्लाह ने जवाब
दिया, क्योंकि तू उस की नज़र में गिराँक़दर है। मैं
तुझे यह जवाब सुनाने आया हूँ। अब ध्यान से रोया
को समझ ले! 24तेरी क़ौम और तेरे मुक़द्दस शहर
के लिए 70 हफ़्ते मुक़र्रर किए गए हैं ताकि उतने
में जरायम और गुनाहों का सिलसिला ख़त्म किया
जाए, क़ुसूर का कफ़्फ़ारा दिया जाए, अबदी
रास्ती क़ायम की जाए, रोया और पेशगोई की
तसदीक़ की जाए और मुक़द्दसतरीन जगह को
मसह करके मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाए।
25अब जान ले और समझ ले कि यरू-
शलम को दुबारा तामीर करने का हुक्म दिया
जाएगा, लेकिन मज़ीद सात हफ़्ते गुज़रेंगे, फिर
ही अल्लाह एक हुक्मरान को इस काम के लिए
चुनकर मसह करेगा। तब शहर को 62 हफ़्तों
के अंदर चौकों और ख़ंदक़ों समेत नए सिरे से
तामीर किया जाएगा, गो इस दौरान वह काफ़ी
मुसीबत से दोचार होगा। 26इन 62 हफ़्तों के बाद
अल्लाह के मसह किए गए बंदे को क़त्ल किया
जाएगा, और उसके पास कुछ भी नहीं होगा। उस
वक़्त एक और हुक्मरान की क़ौम आकर शहर
और मक़दिस को तबाह करेगी। इख़्तिताम सैलाब
की सूरत में आएगा, और आख़िर तक जंग जारी
रहेगी, ऐसी तबाही होगी जिसका फ़ैसला हो चुका
है। 27एक हफ़्ते तक यह हुक्मरान मुतअद्दिद
लोगों को एक अहद के तहत रहने पर मजबूर
करेगा। इस हफ़्ते के बीच में वह ज़बह और
ग़ल्ला की क़ुरबानियों का इंतज़ाम बंद करेगा और
मक़दिस के एक तरफ़ वह कुछ खड़ा करेगा जो
बेहुरमती और तबाही का बाइस है। लेकिन तबाह
करनेवाले का ख़ातमा भी मुक़र्रर किया गया है,
और आख़िरकार वह भी तबाह हो जाएगा।”

दानियाल की आख़िरी रोया

10 फ़ारस के बादशाह ख़ोरस की
हुकूमत के तीसरे साल में बेल्त-
शज़्ज़र यानी दानियाल पर एक बात ज़ाहिर हुई
जो यक़ीनी है और जिसका ताल्लुक़ एक बड़ी
मुसीबत से है। उसे रोया में इस पैग़ाम की समझ
हासिल हुई।
2उन दिनों में मैं, दानियाल तीन पूरे हफ़्ते
मातम कर रहा था। 3न मैंने उम्दा खाना खाया,
न गोश्त या मै मेरे होंटों तक पहुँची। तीन पूरे
हफ़्ते मैंने हर ख़ुशबूदार तेल से परहेज़ किया।
4पहले महीने के 24वें दिन[a] मैं बड़े दरिया दिजला
के किनारे पर खड़ा था। 5मैंने निगाह उठाई तो
क्या देखता हूँ कि मेरे सामने कतान से मुलब्बस
आदमी खड़ा है जिसकी कमर में ख़ालिस सोने का
पटका बँधा हुआ है। 6उसका जिस्म पुखराज[b]
जैसा था, उसका चेहरा आसमानी बिजली की
तरह चमक रहा था, और उस की आँखें भड़कती
मशालों की मानिंद थीं। उसके बाज़ू और पाँव
पालिश किए हुए पीतल की तरह दमक रहे थे।
बोलते वक़्त यों लग रहा था कि बड़ा हुजूम शोर
मचा रहा है।
7सिर्फ़ मैं, दानियाल ने यह रोया देखी। मेरे
साथियों ने उसे न देखा। तो भी अचानक उन पर
इतनी दहशत तारी हुई कि वह भागकर छुप गए।
8चुनाँचे मैं अकेला ही रह गया। लेकिन यह अज़ीम
रोया देखकर मेरी सारी ताक़त जाती रही। मेरे
चेहरे का रंग माँद पड़ गया और मैं बेबस हुआ।

[a] 23 अप्रैल।

[b] topas

9फिर वह बोलने लगा। उसे सुनते ही मैं मुँह के
बल गिरकर मदहोश हालत में ज़मीन पर पड़ा
रहा। 10तब एक हाथ ने मुझे छूकर हिलाया। उस
की मदद से मैं अपने हाथों और घुटनों के बल हो
सका।

11वह आदमी बोला, "ऐ दानियाल, तू अल्लाह
के नज़दीक बहुत गिराँक़दर है! जो बातें मैं तुझसे
करूँगा उन पर ग़ौर कर। खड़ा हो जा, क्योंकि
इस वक़्त मुझे तेरे ही पास भेजा गया है।" तब
मैं थरथराते हुए खड़ा हो गया। 12उसने अपनी
बात जारी रखी, "ऐ दानियाल, मत डरना! जब
से तूने समझ हासिल करने और अपने ख़ुदा के
सामने झुकने का पूरा इरादा कर रखा है, उसी
दिन से तेरी सुनी गई है। मैं तेरी दुआओं के जवाब
में आ गया हूँ। 13लेकिन फ़ारसी बादशाही का
सरदार 21 दिन तक मेरे रास्ते में खड़ा रहा। फिर
मीकाएल जो अल्लाह के सरदार फ़रिश्तों में से
एक है मेरी मदद करने आया, और मेरी जान
फ़ारसी बादशाही के उस सरदार के साथ लड़ने
से छूट गई। 14मैं तुझे वह कुछ सुनाने को आया
हूँ जो आख़िरी दिनों में तेरी क़ौम को पेश आएगा।
क्योंकि रोया का ताल्लुक़ आनेवाले वक़्त से है।"

15जब वह मेरे साथ यह बातें कर रहा था तो मैं
ख़ामोशी से नीचे ज़मीन की तरफ़ देखता रहा।
16फिर जो आदमी-सा लग रहा था उसने मेरे
होंटों को छू दिया, और मैं मुँह खोलकर बोलने
लगा। मैंने अपने सामने खड़े फ़रिश्ते से कहा,
"ऐ मेरे आक़ा, यह रोया देखकर मैं दर्दे-ज़ह में
मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खाने लगा हूँ।
मेरी ताक़त जाती रही है। 17ऐ मेरे आक़ा, आपका
ख़ादिम किस तरह आपसे बात कर सकता है?
मेरी ताक़त तो जवाब दे गई है, साँस लेना भी
मुश्किल हो गया है।"

18जो आदमी-सा लग रहा था उसने मुझे एक
बार फिर छूकर तक़वियत दी 19और बोला, "ऐ
तू जो अल्लाह की नज़र में गिराँक़दर है, मत
डरना! तेरी सलामती हो। हौसला रख, मज़बूत
हो जा!" ज्योंही उसने मुझसे बात की मुझे
तक़वियत मिली, और मैं बोला, "अब मेरे आक़ा
बात करें, क्योंकि आपने मुझे तक़वियत दी है।"

20उसने कहा, "क्या तू मेरे आने का मक़सद
जानता है? जल्द ही मैं दुबारा फ़ारस के सरदार से
लड़ने चला जाऊँगा। और उससे निपटने के बाद
यूनान का सरदार आएगा। 21लेकिन पहले मैं तेरे
सामने वह कुछ बयान करता हूँ जो 'सच्चाई की
किताब' में लिखा है। (इन सरदारों से लड़ने में
मेरी मदद कोई नहीं करता सिवाए तुम्हारे सरदार
फ़रिश्ते मीकाएल के।

11 मादी बादशाह दारा की हुकूमत के
पहले साल से ही मैं मीकाएल के साथ
खड़ा रहा हूँ ताकि उसको सहारा दूँ और उस की
हिफ़ाज़त करूँ।)

शिमाली और जुनूबी सलतनतों की जंगें

2अब मैं तुझे वह कुछ बताता हूँ जो यक़ीनन
पेश आएगा। फ़ारस में मज़ीद तीन बादशाह तख़्त
पर बैठेंगे। इसके बाद एक चौथा आदमी बादशाह
बनेगा जो तमाम दूसरों से कहीं ज़्यादा दौलतमंद
होगा। जब वह दौलत के बाइस ताक़तवर हो
जाएगा तो वह यूनानी ममलकत से लड़ने के लिए
सब कुछ जमा करेगा।

3फिर एक ज़ोरावर बादशाह बरपा हो जाएगा
जो बड़ी क़ुव्वत से हुकूमत करेगा और जो
जी चाहे करेगा। 4लेकिन ज्योंही वह बरपा हो
जाए उस की सलतनत टुकड़े टुकड़े होकर एक
शिमाली, एक जुनूबी, एक मग़रिबी और एक
मशरिक़ी हिस्से में तक़सीम हो जाएगी। न यह
चार हिस्से पहली सलतनत जितने ताक़तवर होंगे,
न बादशाह की औलाद तख़्त पर बैठेगी, क्योंकि
उस की सलतनत जड़ से उखाड़कर दूसरों को दी
जाएगी। 5जुनूबी मुल्क का बादशाह तक़वियत
पाएगा, लेकिन उसका एक अफ़सर कहीं ज़्यादा
ताक़तवर हो जाएगा, उस की हुकूमत कहीं ज़्यादा
मज़बूत होगी।

6चंद साल के बाद दोनों सलतनतें मुत्तहिद हो
जाएँगी। अहद को मज़बूत करने के लिए जुनूबी

बादशाह की बेटी की शादी शिमाली बादशाह से
कराई जाएगी। लेकिन न बेटी कामयाब होगी,
न उसका शौहर और न उस की ताक़त क़ायम
रहेगी। उन दिनों में उसे उसके साथियों, बाप और
शौहर समेत दुश्मन के हवाले किया जाएगा। 7बेटी
की जगह उसका एक रिश्तेदार खड़ा हो जाएगा
जो शिमाली बादशाह की फ़ौज पर हमला करके
उसके क़िले में घुस आएगा। वह उनसे निपटकर
फ़तह पाएगा 8और उनके ढाले हुए बुतों को सोने-
चाँदी की क़ीमती चीज़ों समेत छीनकर मिसर ले
जाएगा। वह कुछ साल तक शिमाली बादशाह
को नहीं छेड़ेगा। 9फिर शिमाली बादशाह जुनूबी
बादशाह के मुल्क में घुस आएगा, लेकिन उसे
अपने मुल्क में वापस जाना पड़ेगा। 10इसके बाद
उसके बेटे जंग की तैयारियाँ करके बड़ी बड़ी
फ़ौजें जमा करेंगे। उनमें से एक जुनूबी बादशाह
की तरफ़ बढ़कर सैलाब की तरह जुनूबी मुल्क
पर आएगी और लड़ते लड़ते उसके क़िले तक
पहुँचेगी।

11फिर जुनूबी बादशाह तैश में आकर शि-
माली बादशाह से लड़ने के लिए निकलेगा।
शिमाली बादशाह जवाब में बड़ी फ़ौज खड़ी
करेगा, लेकिन वह शिकस्त खा कर 12तबाह
हो जाएगी। तब जुनूबी बादशाह का दिल ग़ुरूर
से भर जाएगा, और वह बेशुमार अफ़राद को
मौत के घाट उतारेगा। तो भी वह ताक़तवर नहीं
रहेगा। 13क्योंकि शिमाली बादशाह एक और
फ़ौज जमा करेगा जो पहली की निसबत कहीं
ज़्यादा बड़ी होगी। चंद साल के बाद वह इस
बड़ी और हथियारों से लैस फ़ौज के साथ जुनूबी
बादशाह से लड़ने आएगा।

14उस वक़्त बहुत-से लोग जुनूबी बादशाह के
ख़िलाफ़ उठ खड़े होंगे। तेरी क़ौम के बेदीन लोग
भी उसके ख़िलाफ़ खड़े हो जाएंगे और यों रोया
को पूरा करेंगे। लेकिन वह ठोकर खाकर गिर
जाएंगे। 15फिर शिमाली बादशाह आकर एक
क़िलाबंद शहर का मुहासरा करेगा। वह पुश्ता
बनाकर शहर पर क़ब्ज़ा कर लेगा। जुनूब की
फ़ौजें उसे रोक नहीं सकेंगी, उनके बेहतरीन दस्ते
भी बेबस होकर उसका सामना नहीं कर सकेंगे।
16हमलाआवर बादशाह जो जी चाहे करेगा, और
कोई उसका सामना नहीं कर सकेगा।

उस वक़्त वह ख़ूबसूरत मुल्क इसराईल में
टिक जाएगा और उसे तबाह करने का इख़्तियार
रखेगा। 17तब वह अपनी पूरी सलतनत पर क़ाबू
पाने का मनसूबा बाँधेगा। इस ज़िम्न में वह जुनूबी
बादशाह के साथ अहद बाँधकर उससे अपनी
बेटी की शादी कराएगा ताकि जुनूबी मुल्क को
तबाह करे, लेकिन बेफ़ायदा। मनसूबा नाकाम हो
जाएगा।

18इसके बाद वह साहिली इलाक़ों की तरफ़
रुख़ करेगा। उनमें से वह बहुतों पर क़ब्ज़ा
भी करेगा, लेकिन आख़िरकार एक हुक्मरान
उसके गुस्ताखाना रवय्ये का ख़ातमा करेगा, और
उसे शरमिंदा होकर पीछे हटना पड़ेगा। 19फिर
शिमाली बादशाह अपने मुल्क के क़िलों के पास
वापस आएगा, लेकिन इतने में ठोकर खाकर
गिर जाएगा। तब उसका नामो-निशान तक नहीं
रहेगा।

20उस की जगह एक बादशाह बरपा हो जाएगा
जो अपने अफ़सर को शानदार मुल्क इसराईल में
भेजेगा ताकि वहाँ से गुज़रकर लोगों से टैक्स ले।
लेकिन थोड़े दिनों के बाद वह तबाह हो जाएगा।
न वह किसी झगड़े के सबब से हलाक होगा, न
किसी जंग में।

इसराईली क़ौम का बड़ा दुश्मन

21उस की जगह एक क़ाबिले-मज़म्मत आदमी
खड़ा हो जाएगा। वह तख़्त के लिए मुक़र्रर
नहीं हुआ होगा बल्कि ग़ैरमुतवक़्क़े तौर पर
आकर साज़िशों के वसीले से बादशाह बनेगा।
22मुख़ालिफ़ फ़ौजें उस पर टूट पड़ेंगी, लेकिन
वह सैलाब की तरह उन पर आकर उन्हें बहा ले
जाएगा। वह और अहद का एक रईस तबाह हो
जाएंगे। 23क्योंकि उसके साथ अहद बाँधने के
बाद वह उसे फ़रेब देगा और सिर्फ़ थोड़े ही अफ़राद

के ज़रीए इक़तिदार हासिल कर लेगा। 24वह ग़ैरमुतवक़्क़े तौर पर दौलतमंद सूबों में घुसकर वह कुछ करेगा जो न उसके बाप और न उसके बापदादा से कभी सरज़द हुआ होगा। लूटा हुआ माल और मिलकियत वह अपने लोगों में तक़सीम करेगा। वह क़िलाबंद शहरों पर क़ब्ज़ा करने के मनसूबे भी बाँधेगा, लेकिन सिर्फ़ महदूद अरसे के लिए।

25फिर वह हिम्मत बाँधकर और पूरा ज़ोर लगाकर बड़ी फ़ौज के साथ जुनूबी बादशाह से लड़ने जाएगा। जवाब में जुनूबी बादशाह एक बड़ी और निहायत ही ताक़तवर फ़ौज को लड़ने के लिए तैयार करेगा। तो भी वह शिमाली बादशाह का सामना नहीं कर पाएगा, इसलिए कि उसके ख़िलाफ़ साज़िशें कामयाब हो जाएँगी। 26उस की रोटी खानेवाले ही उसे तबाह करेंगे। तब उस की फ़ौज मुंतशिर हो जाएगी, और बहुत-से अफ़राद मैदाने-जंग में खेत आएँगे।

27दोनों बादशाह मुज़ाकरात के लिए एक ही मेज़ पर बैठ जाएंगे। वहाँ दोनों झूट बोलते हुए एक दूसरे को नुक़सान पहुँचाने के लिए कोशाँ रहेंगे। लेकिन किसी को कामयाबी हासिल नहीं होगी, क्योंकि मुक़र्ररा आख़िरी वक़्त अभी नहीं आना है। 28शिमाली बादशाह बड़ी दौलत के साथ अपने मुल्क में वापस चला जाएगा। रास्ते में वह मुक़द्दस अहद की क़ौम इसराईल पर ध्यान देकर उसे नुक़सान पहुँचाएगा, फिर अपने वतन वापस जाएगा।

29मुक़र्ररा वक़्त पर वह दुबारा जुनूबी मुल्क में घुस आएगा, लेकिन पहले की निसबत इस बार नतीजा फ़रक़ होगा। 30क्योंकि कित्तीम के बहरी जहाज़ उस की मुख़ालफ़त करेंगे, और वह हौसला हारेगा।

तब वह मुड़कर मुक़द्दस अहद की क़ौम पर अपना पूरा ग़ुस्सा उतारेगा। जो मुक़द्दस अहद को तर्क करेंगे उन पर वह मेहरबानी करेगा। 31उसके फ़ौजी आकर क़िलाबंद मक़दिस की बेहुरमती करेंगे। वह रोज़ाना की क़ुरबानियों का इंतज़ाम बंद करके तबाही का मकरूह बुत खड़ा करेंगे। 32जो यहूदी पहले से अहद की ख़िलाफ़वरज़ी कर रहे होंगे उन्हें वह चिकनी-चुपड़ी बातों से मुरतद हो जाने पर आमादा करेगा। लेकिन जो लोग अपने ख़ुदा को जानते हैं वह मज़बूत रहकर उस की मुख़ालफ़त करेंगे। 33क़ौम के समझदार बहुतों को सहीह राह की तालीम देंगे। लेकिन कुछ अरसे के लिए वह तलवार, आग, क़ैद और लूट-मार के बाइस डाँवाँडोल रहेंगे। 34उस वक़्त उन्हें थोड़ी-बहुत मदद हासिल तो होगी, लेकिन बहुत-से ऐसे लोग उनके साथ मिल जाएंगे जो मुख़लिस नहीं होंगे। 35समझदारों में से कुछ डाँवाँडोल हो जाएंगे ताकि लोगों को आज़माकर आख़िरी वक़्त तक ख़ालिस और पाक-साफ़ किया जाए। क्योंकि मुक़र्ररा वक़्त कुछ देर के बाद आएगा।

36बादशाह जो जी चाहे करेगा। वह सरफ़राज़ होकर अपने आपको तमाम माबूदों से अज़ीम क़रार देगा। ख़ुदाओं के ख़ुदा के ख़िलाफ़ वह नाक़ाबिले-बयान कुफ़र बकेगा। उसे कामयाबी भी हासिल होगी, लेकिन सिर्फ़ उस वक़्त तक जब तक इलाही ग़ज़ब ठंडा न हो जाए। क्योंकि जो कुछ मुक़र्रर हुआ है उसे पूरा होना है। 37बादशाह न अपने बापदादा के देवताओं की परवा करेगा, न औरतों के अज़ीज़ देवता की, न किसी और की। क्योंकि वह अपने आपको सब पर सरफ़राज़ करेगा। 38इन देवताओं के बजाए वह क़िलों के देवता की पूजा करेगा जिससे उसके बापदादा वाक़िफ़ ही नहीं थे। वह सोने-चाँदी, जवाहिरात और क़ीमती तोहफ़ों से देवता का एहतराम करेगा। 39चुनाँचे वह अजनबी माबूद की मदद से मज़बूत क़िलों पर हमला करेगा। जो उस की हुकूमत मानें उनकी वह बड़ी इज़्ज़त करेगा, इन्हें बहुतों पर मुक़र्रर करेगा और उनमें अज्र के तौर पर ज़मीन तक़सीम करेगा।

40लेकिन फिर आख़िरी वक़्त आएगा। जुनूबी बादशाह जंग में उससे टकराएगा, तो जवाब में शिमाली बादशाह रथ, घुड़सवार और मुतअद्दिद बहरी जहाज़ लेकर उस पर टूट पड़ेगा। तब

वह बहुत-से मुल्कों में घुस आएगा और सैलाब
की तरह सब कुछ ग़रक़ करके आगे बढ़ेगा।
41इस दौरान वह ख़ूबसूरत मुल्क इसराईल में भी
घुस आएगा। बहुत-से ममालिक शिकस्त खाएँगे,
लेकिन अदोम और मोआब अम्मोन के मरकज़ी
हिस्से समेत बच जाएंगे। 42उस वक़्त उसका
इक़तिदार बहुत-से ममालिक पर छा जाएगा,
मिसर भी नहीं बचेगा। 43शिमाली बादशाह मिसर
की सोने-चाँदी और बाक़ी दौलत पर क़ब्ज़ा
करेगा, और लिबिया और एथोपिया भी उसके
नक़्शे-क़दम पर चलेंगे। 44लेकिन फिर मशरिक़
और शिमाल की तरफ़ से अफ़वाहें उसे सदमा
पहुँचाएँगी, और वह बड़े तैश में आकर बहुतों
को तबाह और हलाक करने के लिए निकलेगा।
45रास्ते में वह समुंदर और ख़ूबसूरत मुक़द्दस
पहाड़ के दरमियान अपने शाही ख़ैमे लगा लेगा।
लेकिन फिर उसका अंजाम आएगा, और कोई
उस की मदद नहीं करेगा।

मुरदे जी उठते हैं

12 उस वक़्त फ़रिश्तों का अज़ीम
सरदार मीकाएल उठ खड़ा हो-
गा, वह जो तेरी क़ौम की शफ़ाअत करता है।
मुसीबत का ऐसा वक़्त होगा कि क़ौमों के पैदा
होने से लेकर उस वक़्त तक नहीं हुआ होगा।
लेकिन साथ साथ तेरी क़ौम को नजात मिलेगी।
जिसका भी नाम अल्लाह की किताब में दर्ज है वह
नजात पाएगा। 2तब ख़ाक में सोए हुए मुतअद्दिद
लोग जाग उठेंगे, कुछ अबदी ज़िंदगी पाने के लिए
और कुछ अबदी रुसवाई और घिन का निशाना
बनने के लिए। 3जो समझदार हैं वह आसमान
की आबो-ताब की मानिंद चमकेंगे, और जो बहुतों
को रास्त राह पर लाए हैं वह हमेशा तक सितारों
की तरह जगमगाएँगे।

4लेकिन तू, ऐ दानियाल, इन बातों को छुपाए
रख! इस किताब पर आख़िरी वक़्त तक मुहर
लगा दे! बहुत लोग इधर-उधर घूमते फिरेंगे, और
इल्म में इज़ाफ़ा होता जाएगा।”

आख़िरी वक़्त

5फिर मैं, दानियाल ने दरिया के पास दो
आदमियों को देखा। एक इस किनारे पर खड़ा
था जबकि दूसरा दूसरे किनारे पर। 6कतान से
मुलब्बस आदमी बहते हुए पानी के ऊपर था।
किनारों पर खड़े आदमियों में से एक ने उससे
पूछा, “इन हैरतअंगेज़ बातों की तकमील तक
मज़ीद कितनी देर लगेगी?”

7कतान से मुलब्बस आदमी ने दोनों हाथ
आसमान की तरफ़ उठाए और अबद तक ज़िंदा
ख़ुदा की क़सम खाकर बोला, “पहले एक अरसा,
फिर दो अरसे, फिर आधा अरसा गुज़रेगा। पहले
मुक़द्दस क़ौम की ताक़त को पाश पाश करने का
सिलसिला इख़्तिताम पर पहुँचना है। इसके बाद
ही यह तमाम बातें तकमील तक पहुँचेंगी।”

8गो मैंने उस की यह बात सुनी, लेकिन वह मेरी
समझ में न आई। चुनाँचे मैंने पूछा, “मेरे आक़ा,
इन तमाम बातों का क्या अंजाम होगा?”

9वह बोला, “ऐ दानियाल, अब चला जा!
क्योंकि इन बातों को आख़िरी वक़्त तक छुपाए
रखना है। उस वक़्त तक इन पर मुहर लगी रहेगी।
10बहुतों को आज़माकर पाक-साफ़ और ख़ालिस
किया जाएगा। लेकिन बेदीन बेदीन ही रहेंगे। कोई
भी बेदीन यह नहीं समझेगा, लेकिन समझदारों
को समझ आएगी। 11जिस वक़्त से रोज़ाना
की क़ुरबानी का इंतज़ाम बंद किया जाएगा और
तबाही के मकरूह बुत को मक़दिस में खड़ा
किया जाएगा उस वक़्त से 1,290 दिन गुज़रेंगे।
12जो सब्र करके 1,335 दिनों के इख़्तिताम तक
क़ायम रहे वह मुबारक है!

13जहाँ तक तेरा ताल्लुक़ है, आख़िरी वक़्त की
तरफ़ बढ़ता चला जा! तू आराम करेगा और फिर
दिनों के इख़्तिताम पर जी उठकर अपनी मीरास
पाएगा।”

होसेअ

नबी का ख़ानदान इसराईल की अलामत है

1 ज़ैल में रब का वह कलाम दर्ज है
जो उन दिनों में होसेअ बिन बैरी
पर नाज़िल हुआ जब उज़्ज़ियाह, यूताम,
आख़ज़ और हिज़क़ियाह यहूदाह के बाद-
शाह और यरुबियाम बिन युआस इसराईल का
बादशाह था।
2जब रब पहली बार होसेअ से हमकलाम हुआ
तो उसने हुक्म दिया, “जा, ज़िनाकार औरत से
शादी कर और ज़िनाकार बच्चे पैदा कर, क्योंकि
मुल्क रब की पैरवी छोड़कर मुसलसल ज़िना
करता रहता है।” 3चुनाँचे होसेअ की जुमर बिंत
दिबलायम से शादी हुई। उसका पाँव भारी हुआ,
और बेटा पैदा हुआ। 4तब रब ने होसेअ से कहा,
“उसका नाम यज्रएल रखना। क्योंकि जल्द ही मैं
याहू के ख़ानदान को यज्रएल में उस क़त्लो-ग़ारत
की सज़ा दूँगा जो उससे सरज़द हुई। साथ साथ मैं
इसराईली बादशाही को भी ख़त्म करूँगा। 5उस
दिन मैं मैदाने-यज्रएल में इसराईल की कमान को
तोड़ डालूँगा।”
6इसके बाद जुमर दुबारा उम्मीद से हुई। इस
बार बेटी पैदा हुई। रब ने होसेअ से कहा, “इसका
नाम लोरुहामा यानी ‘जिस पर रहम न हुआ हो’
रखना, क्योंकि आइंदा मैं इसराईलियों पर रहम
नहीं करूँगा बल्कि वह मेरे रहम से सरासर महरूम
रहेंगे।
7लेकिन यहूदाह के बाशिंदों पर मैं रहम
करके उन्हें छुटकारा दूँगा। मैं उन्हें कमान,
तलवार, जंग के हथियारों, घोड़ों या घुड़-
सवारों की मारिफ़त छुटकारा नहीं दूँगा बल्कि मैं
जो रब उनका ख़ुदा हूँ ख़ुद ही उन्हें नजात दूँगा।”
8लोरुहामा का दूध छुड़ाने पर जुमर फिर
हामिला हुई। इस मरतबा बेटा पैदा हुआ। 9तब रब
ने फ़रमाया, “इसका नाम लोअम्मी यानी ‘मेरी
क़ौम नहीं’ रखना। क्योंकि तुम मेरी क़ौम नहीं,
और मैं तुम्हारा ख़ुदा नहीं हूँगा।
10लेकिन वह वक़्त आएगा जब इसराईली
समुंदर की रेत जैसे बेशुमार होंगे। न उनकी
पैमाइश की जा सकेगी, न उन्हें गिना जा सकेगा।
तब जहाँ उनसे कहा गया कि ‘तुम मेरी क़ौम
नहीं’ वहाँ वह ‘ज़िंदा ख़ुदा के फ़रज़ंद’ कहलाएँगे।
11तब यहूदाह और इसराईल के लोग मुत्तहिद हो
जाएंगे और मिलकर एक राहनुमा मुक़र्रर करेंगे।
फिर वह मुल्क में से निकल आएँगे, क्योंकि
यज्रएल[a] का दिन अज़ीम होगा!

[a]यानी अल्लाह बीज बोता है।

2 उस वक़्त अपने भाइयों का नाम अम्मी
यानी 'मेरी क़ौम' और अपनी बहनों का
नाम रुहामा यानी 'जिस पर रहम किया गया हो'
रखो।

इसराईल बेवफ़ा जुमर की मानिंद है

2अपनी माँ इसराईल पर इलज़ाम लगाओ, हाँ
उस पर इलज़ाम लगाओ! क्योंकि न वह मेरी
बीवी है, न मैं उसका शौहर हूँ। वह अपने चेहरे से
और अपनी छातियों के दरमियान से ज़िनाकारी के
निशान दूर करे, 3वरना मैं उसके कपड़े उतारकर
उसे उस नंगी हालत में छोड़ूँगा जिसमें वह पैदा
हुई। मैं होने दूँगा कि वह रेगिस्तान और झुलसती
ज़मीन में तबदील हो जाए, कि वह प्यास के
मारे मर जाए। 4मैं उसके बच्चों पर भी रहम नहीं
करूँगा, क्योंकि वह ज़िनाकार बच्चे हैं। 5उनकी
माँ ने ज़िना किया, उन्हें जन्म देनेवाली ने शर्मनाक
हरकतें की हैं। वह बोली, 'मैं अपने आशिक़ों के
पीछे भाग जाऊँगी। आख़िर मेरी रोटी, पानी, ऊन,
कतान, तेल और पीने की चीज़ें वही मुहैया करते
हैं।'

6इसलिए जहाँ भी वह चलना चाहे वहाँ मैं उसे
काँटेदार झाड़ियों से रोक दूँगा, मैं ऐसी दीवार
खड़ी करूँगा कि उसे रास्ते का पता न चले। 7वह
अपने आशिक़ों का पीछा करते करते थक जाएगी
और कभी उन तक पहुँचेगी नहीं, वह उनका खोज
लगाती रहेगी लेकिन उन्हें पाएगी नहीं। फिर वह
बोलेगी, 'मैं अपने पहले शौहर के पास वापस
जाऊँ, क्योंकि उस वक़्त मेरा हाल आज की
निसबत कहीं बेहतर था।' 8लेकिन वह यह बात
जानने के लिए तैयार नहीं कि उसे अल्लाह ही
की तरफ़ से सब कुछ मुहैया हुआ है। मैं ही ने
उसे वह अनाज, मै, तेल और कसरत की सोना-
चाँदी दे दी जो लोगों ने बाल देवता को पेश की।
9इसलिए मैं अपने अनाज और अपने अंगूर को
फ़सल की कटाई से पहले पहले वापस लूँगा। जो
ऊन और कतान मैं उसे देता रहा ताकि उस की
बरहनगी नज़र न आए उसे मैं उससे छीन लूँगा।
10उसके आशिक़ों के देखते देखते मैं उसके सारे
कपड़े उतारूँगा, और कोई उसे मेरे हाथ से नहीं
बचाएगा। 11मैं उस की तमाम ख़ुशियाँ बंद कर
दूँगा। न कोई ईद, न नए चाँद का तहवार, न सबत
का दिन या बाक़ी कोई मुक़र्ररा जशन मनाया
जाएगा। 12मैं उसके अंगूर और अंजीर के बाग़ों
को तबाह करूँगा, उन चीज़ों को जिनके बारे में
उसने कहा, 'यह मुझे आशिक़ों की ख़िदमत करने
के एवज़ मिल गई हैं।' मैं यह बाग़ जंगल बनने
दूँगा, और जंगली जानवर उनका फल खाएँगे।

13रब फ़रमाता है कि मैं उसे उन दिनों की
सज़ा दूँगा जब उसने बाल के बुतों को बख़ूर की
क़ुरबानियाँ पेश कीं। उस वक़्त वह अपने आपको
बालियों और ज़ेवरात से सजाकर अपने आशिक़ों
के पीछे भाग गई। मुझे वह भूल गई।

अल्लाह वफ़ादार रहता है

14चुनाँचे अब मैं उसे मनाने की कोशिश
करूँगा, उसे रेगिस्तान में ले जाकर उससे नरमी से
बात करूँगा। 15फिर मैं उसे वहाँ से होकर उसके
अंगूर के बाग़ वापस करूँगा और वादीए-अकूर[a]
को उम्मीद के दरवाज़े में बदल दूँगा। उस वक़्त
वह ख़ुशी से मेरे पीछे होकर वहाँ चलेगी, बिलकुल
उसी तरह जिस तरह जवानी में करती थी जब मेरे
पीछे होकर मिसर से निकल आई।"

16रब फ़रमाता है, "उस दिन तू मुझे पुकारते
वक़्त 'ऐ मेरे बाल'[b] नहीं कहेगी बल्कि 'ऐ मेरे
ख़ाविंद।' 17मैं बाल देवताओं के नाम तेरे मुँह
से निकाल दूँगा, और तू आइंदा उनके नामों का
ज़िक्र तक नहीं करेगी। 18उस दिन मैं जंगली
जानवरों, परिंदों और रेंगनेवाले जानदारों के साथ
अहद बाँधूँगा ताकि वह इसराईल को नुक़सान न
पहुँचाएँ। कमान और तलवार को तोड़कर मैं जंग
का ख़तरा मुल्क से दूर कर दूँगा। सब आरामो-
सुकून से ज़िंदगी गुज़ारेंगे।

[a]यानी मुसीबत की वादी।

[b]बाल का मतलब 'मालिक' है।

19मैं तेरे साथ अबदी रिश्ता बाँधूँगा, ऐसा रिश्ता जो रास्ती, इनसाफ़, फ़ज़ल और रहम पर मबनी होगा। 20हाँ, जो रिश्ता मैं तेरे साथ बाँधूँगा उस की बुनियाद वफ़ादारी होगी। तब तू रब को जान लेगी।”

21रब फ़रमाता है, “उस दिन मैं सुनूँगा। मैं आसमान की सुनकर बादल पैदा करूँगा, आसमान ज़मीन की सुनकर बारिश बरसाएगा, 22ज़मीन अनाज, अंगूर और ज़ैतून की सुनकर उन्हें तक़वियत देगी, और यह चीज़ें मैदाने-यज्रएल[a] की सुनकर कसरत से पैदा हो जाएँगी। 23उस वक़्त मैं अपनी ख़ातिर इसराईल का बीज मुल्क में बो दूँगा। ‘लोरुहामा’[b] पर मैं रहम करूँगा, और ‘लोअम्मी’[c] से मैं कहूँगा, ‘तू मेरी क़ौम है।’ जवाब में वह बोलेगी, ‘तू मेरा ख़ुदा है’।”

ज़ुमर की तरह इसराईल को वापस ख़रीदा जाएगा

3 रब मुझसे हमकलाम हुआ, “जा, अपनी बीवी को दुबारा प्यार कर, हालाँकि उसका आशिक़ है जिससे उसने ज़िना किया है। उसे यों प्यार कर जिस तरह रब इसराईलियों को प्यार करता है, हालाँकि उनका रुख़ दीगर माबूदों की तरफ़ है और उन्हें उन्हीं की अंगूर की टिक्कियाँ पसंद हैं।”

2तब मैंने चाँदी के 15 सिक्के और जौ के 195 किलोग्राम देकर उसे वापस ख़रीद लिया। 3मैंने उससे कहा, “अब तुझे बड़े अरसे तक मेरे साथ रहना है। इतने में न ज़िना कर, न किसी आदमी से सोहबत रख। मैं भी बड़ी देर तक तुझसे हमबिसतर नहीं हूँगा।”

4इसराईल का यही हाल होगा। बड़ी देर तक न उनका बादशाह होगा, न राहनुमा, न क़ुरबानी का इंतज़ाम, न यादगार पत्थर, न इमाम का बालापोश। उनके पास बुत तक भी नहीं होंगे। 5इसके बाद इसराईली वापस आकर रब अपने ख़ुदा और दाऊद अपने बादशाह को तलाश करेंगे। आख़िरी दिनों में वह लरज़ते हुए रब और उस की भलाई की तरफ़ रुजू करेंगे।

इमामों पर रब का इलज़ाम

4 ऐ इसराईलियो, रब का कलाम सुनो! क्योंकि रब का मुल्क के बाशिंदों से मुक़दमा है। “इलज़ाम यह है कि मुल्क में न वफ़ादारी, न मेहरबानी और न अल्लाह का इरफ़ान है। 2कोसना, झूट बोलना, चोरी और ज़िना करना आम हो गया है। रोज़ बरोज़ क़त्लो-ग़ारत की नई ख़बरें मिलती रहती हैं। 3इसी लिए मुल्क में काल है और उसके तमाम बाशिंदे पज़मुरदा हो गए हैं। जंगली जानवर, परिंदे और मछलियाँ भी फ़ना हो रही हैं।

4लेकिन बिलावजह किसी पर इलज़ाम मत लगाना, न ख़ाहमख़ाह किसी की तंबीह करो! ऐ इमामो, मैं तुम्हीं पर इलज़ाम लगाता हूँ। 5ऐ इमाम, दिन के वक़्त तू ठोकर खाकर गिरेगा, और रात के वक़्त नबी गिरकर तेरे साथ पड़ा रहेगा। मैं तेरी माँ को भी तबाह करूँगा। 6अफ़सोस, मेरी क़ौम इसलिए तबाह हो रही है कि वह सहीह इल्म नहीं रखती। और क्या अजब जब तुम इमामों ने यह इल्म रद्द कर दिया है। अब मैं तुम्हें भी रद्द करता हूँ। आइंदा तुम इमाम की ख़िदमत अदा नहीं करोगे। चूँकि तुम अपने ख़ुदा की शरीअत भूल गए हो इसलिए मैं तुम्हारी औलाद को भी भूल जाऊँगा।

7इमामों की तादाद जितनी बढ़ती गई उतना ही वह मेरा गुनाह करते गए। उन्होंने अपनी इज़्ज़त ऐसी चीज़ के एवज़ छोड़ दी जो रुसवाई का बाइस है। 8मेरी क़ौम के गुनाह उनकी ख़ुराक हैं, और वह इस लालच में रहते हैं कि लोगों का क़ुसूर मज़ीद बढ़ जाए। 9चुनाँचे इमामों और क़ौम के साथ एक जैसा सुलूक किया जाएगा। दोनों को

[a]अल्लाह बीज बोता है।
[b]जिस पर रहम न हुआ हो।
[c]मेरी क़ौम नहीं।

मैं उनके चाल-चलन की सज़ा दूँगा, दोनों को
उनकी हरकतों का अज्र दूँगा। 10खाना तो वह
खाएँगे लेकिन सेर नहीं होंगे। ज़िना भी करते
रहेंगे, लेकिन बेफ़ायदा। इससे उनकी तादाद नहीं
बढ़ेगी। क्योंकि उन्होंने रब का ख़याल करना छोड़
दिया है।

11ज़िना करने और नई और पुरानी मै पीने
से लोगों की अक़्ल जाती रहती है। 12मेरी क़ौम
लकड़ी से दरियाफ़्त करती है कि क्या करना है,
और उस की लाठी उसे हिदायत देती है। क्योंकि
ज़िनाकारी की रूह ने उन्हें भटका दिया है, ज़िना
करते करते वह अपने ख़ुदा से कहीं दूर हो गए
हैं। 13वह पहाड़ों की चोटियों पर अपने जानवरों
को क़ुरबान करते हैं और पहाड़ियों पर चढ़कर
बलूत, सफ़ेदा या किसी और दरख़्त के ख़ुशगवार
साये में बख़ूर की क़ुरबानियाँ पेश करते हैं। इसी
लिए तुम्हारी बेटियाँ इसमतफ़रोश बन गई हैं, और
तुम्हारी बहुएँ ज़िना करती हैं। 14लेकिन मैं उन्हें
उनकी इसमतफ़रोशी और ज़िनाकारी की सज़ा
क्यों दूँ जबकि तुम मर्द कसबियों से सोहबत
रखते और देवताओं की ख़िदमत में इसमतफ़रोशी
करनेवाली औरतों के साथ क़ुरबानियाँ चढ़ाते हो?
ऐसी हरकतों से नासमझ क़ौम तबाह हो रही है।

15ऐ इसराईल, तू इसमतफ़रोश है, लेकिन
यहूदाह ख़बरदार रहे कि वह इस जुर्म में मुलव्वस
न हो जाए। इसराईल के शहरों जिलजाल और
बैत-आवन[a] की क़ुरबानगाहों के पास मत जाना।
ऐसी जगहों पर रब का नाम लेकर उस की हयात
की क़सम खाना मना है। 16इसराईल तो ज़िद्दी
गाय की तरह अड़ गया है। तो फिर रब उन्हें किस
तरह सब्ज़ाज़ार में भेड़ के बच्चों की तरह चरा
सकता है?

17इसराईल[b] तो बुतों का इत्तहादी है, उसे छोड़
दे! 18यह लोग शराब की महफ़िल से फ़ारिग़
होकर ज़िनाकारी में लग जाते हैं। वह नाजायज़
मुहब्बत करते करते कभी नहीं थकते। लेकिन
इसका अज्र उनकी अपनी बेइज़्ज़ती है। 19आँधी
उन्हें अपनी लपेट में लेकर उड़ा ले जाएगी, और
वह अपनी क़ुरबानियों के बाइस शरमिंदा हो
जाएंगे।

इसराईल और यहूदाह दोनों क़ुसूरवार हैं

5 ऐ इमामो, सुनो मेरी बात! ऐ इसराईल के
घराने, तवज्जुह दे! ऐ शाही ख़ानदान, मेरे
पैग़ाम पर ग़ौर कर!

तुम पर फ़ैसला है, क्योंकि अपनी बुत-
परस्ती से तुमने मिसफ़ाह में फंदा लगा दिया,
तबूर पहाड़ पर जाल बिछा दिया 2और शित्तीम
में गढ़ा खुदवा लिया है। ख़बरदार! मैं तुम सबको
सज़ा दूँगा।

3मैं तो इसराईल को ख़ूब जानता हूँ, वह मुझसे
छुपा नहीं रह सकता। इसराईल अब इसमतफ़रोश
बन गया है, वह नापाक है। 4उनकी बुरी हरकतें
उन्हें उनके ख़ुदा के पास वापस आने नहीं देतीं।
क्योंकि उनके अंदर ज़िनाकारी की रूह है, और वह
रब को नहीं जानते। 5इसराईल का तकब्बुर उसके
ख़िलाफ़ गवाही देता है, और वह अपने क़ुसूर के
बाइस गिर जाएगा। यहूदाह भी उसके साथ गिर
जाएगा।

6तब वह अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों
को लेकर रब को तलाश करेंगे, लेकिन बेफ़ायदा।
वह उसे पा नहीं सकेंगे, क्योंकि वह उन्हें छोड़कर
चला गया है। 7उन्होंने रब से बेवफ़ा होकर
नाजायज़ औलाद पैदा की है। अब नया चाँद उन्हें
उनकी मौरूसी ज़मीनों समेत हड़प कर लेगा।

अपनी क़ौम पर अल्लाह का इलज़ाम

8जिबिया में नरसिंगा फूँको, रामा में तुरम
बजाओ! बैत-आवन में जंग के नारे बुलंद करो।
ऐ बिनयमीन, दुश्मन तेरे पीछे पड़ गया है! 9जिस

[a] बैत-आवन यानी 'गुनाह का घर' से मुराद बैतेल है।

[b] होसेअ के इबरानी मतन में यहाँ और मुतअद्दिद दीगर आयात में 'इफ़राईम' मुस्तामल है जिससे मुराद शिमाली मुल्के-इसराईल है।

दिन मैं सज़ा दूँगा उस दिन इसराईल वीरानो-सुनसान हो जाएगा। ध्यान दो कि मैंने इसराईली क़बीलों के बारे में क़ाबिले-एतमाद बातें बताई हैं।

10यहूदाह के राहनुमा उन जैसे बन गए हैं जो नाजायज़ तौर पर अपनी ज़मीन की हुदूद बढ़ा देते हैं। जवाब में मैं अपना ग़ज़ब मूसलाधार बारिश की तरह उन पर नाज़िल करूँगा। 11इसराईल पर इसलिए ज़ुल्म हो रहा है और उसका हक़ मारा जा रहा है कि वह बेमानी बुतों के पीछे भागने पर तुला हुआ है। 12मैं इसराईल के लिए पीप और यहूदाह के लिए सड़ाहट का बाइस बनूँगा।

13इसराईल ने अपनी बीमारी देखी और यहूदाह ने अपने नासूर पर ग़ौर किया। तब इसराईल ने असूर की तरफ़ रुजू किया और असूर के अज़ीम बादशाह को पैग़ाम भेजकर उससे मदद माँगी। लेकिन वह तुम्हें शफ़ा नहीं दे सकता, वह तुम्हारे नासूर का इलाज नहीं कर सकता।

14क्योंकि मैं शेरबबर की तरह इसराईल पर टूट पड़ूँगा और जवान शेरबबर की तरह यहूदाह पर झपट पड़ूँगा। मैं उन्हें फाड़कर अपने साथ घसीट ले जाऊँगा, और कोई उन्हें नहीं बचाएगा। 15फिर मैं अपने घर वापस जाकर उस वक़्त तक उनसे दूर रहूँगा जब तक वह अपना क़ुसूर तसलीम करके मेरे चेहरे को तलाश न करें। क्योंकि जब वह मुसीबत में फँस जाएंगे तब ही मुझे तलाश

6 करेंगे।” 1उस वक़्त वह कहेंगे, “आओ, हम रब के पास वापस चलें। क्योंकि उसी ने हमें फाड़ा, और वही हमें शफ़ा भी देगा। उसी ने हमारी पिटाई की, और वही हमारी मरहम-पट्टी भी करेगा। 2दो दिन के बाद वह हमें नए सिरे से ज़िंदा करेगा और तीसरे दिन हमें दुबारा उठा खड़ा करेगा ताकि हम उसके हुज़ूर ज़िंदगी गुज़ारें। 3आओ, हम उसे जान लें, हम पूरी जिद्दो-जहद के साथ रब को जानने के लिए कोशाँ रहें। वह ज़रूर हम पर ज़ाहिर होगा। यह उतना यक़ीनी है जितना सूरज का रोज़ाना तुलू होना यक़ीनी है। जिस तरह मौसमे-बहार की तेज़ बारिश ज़मीन को सेराब करती है उसी तरह अल्लाह भी हमारे पास आएगा।”

4“ऐ इसराईल, मैं तेरे साथ क्या करूँ? ऐ यहूदाह, मैं तेरे साथ क्या करूँ? तुम्हारी मुहब्बत सुबह की धुंध जैसी आरिज़ी है। धूप में ओस की तरह वह जल्द ही काफ़ूर हो जाती है। 5इसी लिए मैंने अपने नबियों की मारिफ़त तुम्हें पटख़ दिया, अपने मुँह के अलफ़ाज़ से तुम्हें मार डाला है। मेरे इनसाफ़ का नूर सूरज की तरह ही तुलू होता है। 6क्योंकि मैं क़ुरबानी नहीं बल्कि रहम पसंद करता हूँ, भस्म होनेवाली क़ुरबानियों की निसबत मुझे यह पसंद है कि तुम अल्लाह को जान लो।

अदालत की फ़सल पक गई है

7वह आदम शहर में अहद तोड़कर मुझसे बेवफ़ा हो गए। 8जिलियाद शहर मुजरिमों से भर गया है, हर तरफ़ ख़ून के दाग़ हैं। 9इमामों के जत्थे डाकुओं की मानिंद बन गए हैं। क्योंकि वह सिकम को पहुँचानेवाले रास्ते पर मुसाफ़िरों की ताक लगाकर उन्हें क़त्ल करते हैं। हाँ, वह शर्मनाक हरकतों से गुरेज़ नहीं करते। 10मैंने इसराईल में ऐसी बातें देखी हैं जिनसे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। क्योंकि इसराईल ज़िना करता है, वह अपने आपको नापाक करता है। 11लेकिन यहूदाह पर भी अदालत की फ़सल पकनेवाली है।

जब कभी मैं अपनी क़ौम को बहाल करके

7 इसराईल को शफ़ा देना चाहता हूँ तो इसराईल का क़ुसूर और सामरिया की बुराई साफ़ ज़ाहिर हो जाती है। क्योंकि फ़रेब देना उनका पेशा ही बन गया है। चोर घरों में नक़ब लगाते जबकि बाहर गली में डाकुओं के जत्थे लोगों को लूट लेते हैं। 2लेकिन वह ख़याल नहीं करते कि मुझे उनकी तमाम बुरी हरकतों की याद रहती है। वह नहीं समझते कि अब वह अपने ग़लत कामों से घिरे रहते हैं, कि यह गुनाह हर वक़्त मुझे नज़र आते हैं। 3अपनी बुराई से वह बादशाह को ख़ुश रखते हैं, उनके झूट से बुज़ुर्ग लुत्फ़अंदोज़ होते हैं। 4सबके सब ज़िनाकार हैं। वह उस तपते

तनूर की मानिंद हैं जो इतना गरम है कि नानबाई
को उसे मज़ीद छेड़ने की ज़रूरत नहीं। अगर वह
आटा गूँधकर उसके ख़मीर होने तक इंतज़ार भी
करे तो भी तनूर इतना गरम रहता है कि रोटी पक
जाएगी। 5हमारे बादशाह के जशन पर राहनुमा
मै पी पीकर मस्त हो जाते हैं, और वह कुफ़र
बकनेवालों से हाथ मिलाता है। 6यह लोग क़रीब
आकर ताक में बैठ जाते हैं जबकि उनके दिल
तनूर की तरह तपते हैं। पूरी रात को उनका ग़ुस्सा
सोया रहता है, लेकिन सुबह के वक़्त वह बेदार
होकर शोलाज़न आग की तरह दहकने लगता है।
7सब तनूर की तरह तपते तपते अपने राहनुमाओं
को हड़प कर लेते हैं। उनके तमाम बादशाह गिर
जाते हैं, और एक भी मुझे नहीं पुकारता।

8इसराईल दीगर अक़वाम के साथ मिल-
कर एक हो गया है। अब वह उस रोटी की मानिंद
है जो तवे पर सिर्फ़ एक तरफ़ से पक गई है, दूसरी
तरफ़ से कच्ची ही है। 9ग़ैरमुल्की उस की ताक़त
खा खाकर उसे कमज़ोर कर रहे हैं, लेकिन अभी
तक उसे पता नहीं चला। उसके बाल सफ़ेद हो
गए हैं, लेकिन अभी तक उसे मालूम नहीं हुआ।
10इसराईल का तकब्बुर उसके ख़िलाफ़ गवाही
देता है। तो भी न वह रब अपने ख़ुदा के पास
वापस आ जाता, न उसे तलाश करता है।

11इसराईल नासमझ कबूतर की मानिंद है
जिसे आसानी से वरग़लाया जा सकता है। पहले
वह मिसर को मदद के लिए बुलाता, फिर असूर
के पास भाग जाता है। 12लेकिन ज्योंही वह
कभी इधर कभी इधर दौड़ेंगे तो मैं उन पर अपना
जाल डालूँगा, उन्हें उड़ते हुए परिंदों की तरह नीचे
उतारूँगा। मैं उनकी यों तादीब करूँगा जिस तरह
उनकी जमात को आगाह किया गया है।

13उन पर अफ़सोस, क्योंकि वह मुझसे भाग
गए हैं। उन पर तबाही आए, क्योंकि वह मुझसे
सरकश हो गए हैं। मैं फ़िद्या देकर उन्हें छुड़ाना
चाहता था, लेकिन जवाब में वह मेरे बारे में झूट
बोलते हैं। 14वह ख़ुलूसदिली से मुझसे इल्तिजा
नहीं करते। वह बिस्तर पर लेटे लेटे ‘हाय हाय’
करते और ग़ल्ला और अंगूर को हासिल करने
के लिए अपने आपको ज़ख़मी करते हैं। लेकिन
मुझसे वह दूर रहते हैं।

15मैं ही ने उन्हें तरबियत दी, मैं ही ने उन्हें
तक़वियत दी, लेकिन वह मेरे ख़िलाफ़ बुरे मनसूबे
बाँधते हैं। 16वह तौबा करके वापस आ जाते हैं,
लेकिन मेरे पास नहीं, लिहाज़ा वह ढीली कमान
जैसे बेकार हो गए हैं। चुनाँचे उनके राहनुमा कुफ़र
बकने के सबब से तलवार की ज़द में आकर
हलाक हो जाएंगे। इस बात के बाइस वह मिसर
में मज़ाक़ का निशाना बन जाएंगे।

अल्लाह की बेवफ़ा क़ौम पर अदालत

8 नरसिंगा बजाओ! दुश्मन उक़ाब की तरह
रब के घर पर झपट्टा मारने को है। क्योंकि
लोगों ने मेरे अहद को तोड़कर मेरी शरीअत की
ख़िलाफ़वरज़ी की है। 2बेशक वह मदद के लिए
चीख़ते-चिल्लाते हैं, ‘ऐ हमारे ख़ुदा, हम तो तुझे
जानते हैं, हम तो इसराईल हैं।’ 3लेकिन हक़ीक़त
में इसराईल ने वह कुछ मुस्तरद कर दिया है जो
अच्छा है। चुनाँचे दुश्मन उसका ताक़्क़ुब करे!
4उन्होंने मेरी मरज़ी पूछे बग़ैर अपने बादशाह
मुक़र्रर किए, मेरी मंज़ूरी के बग़ैर अपने राहनुमाओं
को चुन लिया है। अपने सोने-चाँदी से अपने लिए
बुत बनाकर वह अपनी तबाही अपने सर पर लाए
हैं।

5ऐ सामरिया, मैंने तेरे बछड़े को रद्द कर दिया
है! मेरा ग़ज़ब तेरे बाशिंदों पर नाज़िल होनेवाला
है, क्योंकि वह पाक-साफ़ हो जाने के क़ाबिल
ही नहीं! यह हालत कब तक जारी रहेगी? 6ऐ
इसराईल, जिस बछड़े की पूजा तू करता है उसे
दस्तकार ही ने बनाया है। सामरिया का बछड़ा
ख़ुदा नहीं है बल्कि पाश पाश हो जाएगा।

7वह हवा का बीज बो रहे हैं और आँधी
की फ़सल काटेंगे। अनाज की फ़सल तैयार है,
लेकिन बालियाँ कहीं नज़र नहीं आतीं। इससे
आटा मिलने का इमकान ही नहीं। और अगर

थोड़ा-बहुत गंदुम मिले भी तो ग़ैरमुल्की उसे हड़प कर लेंगे।

8हाँ, तमाम इसराईल को हड़प कर लिया गया है। अब वह क़ौमों में ऐसा बरतन बन गया है जो कोई पसंद नहीं करता। 9क्योंकि उसके लोग असूर के पास चले गए हैं। जंगली गधा तो अकेला रहता है, लेकिन इसराईल अपने आशिक़ को तोह्फ़े देकर ख़ुश रखने पर तुला रहता है। 10लेकिन ख़ाह वह दीगर क़ौमों में कितने तोह्फ़े क्यों न तक़सीम करें अब मैं उन्हें सज़ा देने के लिए जमा करूँगा। जल्द ही वह शहनशाह के बोझ तले पेचो-ताब खाने लगेंगे। 11गो इसराईल ने गुनाहों को दूर करने के लिए मुतअद्दिद क़ुरबानगाहें तामीर कीं, लेकिन वह उसके लिए गुनाह का बाइस बन गई हैं। 12ख़ाह मैं अपने अहकाम को इसराईलियों के लिए हज़ारों दफ़ा क्यों न क़लमबंद करता, तो भी फ़रक़ न पड़ता, वह समझते कि यह अहकाम अजनबी हैं, यह हम पर लागू नहीं होते। 13गो वह मुझे क़ुरबानियाँ पेश करके उनका गोश्त खाते हैं, लेकिन मैं, रब इनसे ख़ुश नहीं होता बल्कि उनके गुनाहों को याद करके उन्हें सज़ा दूँगा। तब उन्हें दुबारा मिसर जाना पड़ेगा। 14इसराईल ने अपने ख़ालिक़ को भूलकर बड़े महल बना लिए हैं, और यहूदाह ने मुतअद्दिद शहरों को क़िलाबंद बना लिया है। लेकिन मैं उनके शहरों पर आग नाज़िल करके उनके महलों को भस्म कर दूँगा।”

इसराईल का अंजाम

9 ऐ इसराईल, ख़ुशी न मना, दीगर अक़वाम की तरह शादियाना मत बजा। क्योंकि तू ज़िना करते करते अपने ख़ुदा से दूर होता जा रहा है। जहाँ भी लोग गंदुम गाहते हैं वहाँ तू जाकर अपनी इसमतफ़रोशी के पैसे जमा करता है, यही कुछ तुझे प्यारा है। 2इसलिए आइंदा गंदुम गाहने और अंगूर का रस निकालने की जगहें उन्हें ख़ुराक मुहैया नहीं करेंगी, और अंगूर की फ़सल उन्हें रस मुहैया नहीं करेगी।

3इसराईली रब के मुल्क में नहीं रहेंगे बल्कि उन्हें मिसर वापस जाना पड़ेगा, उन्हें असूर में नापाक चीज़ें खानी पड़ेंगी। 4वहाँ वह रब को न मै की और न ज़बह की क़ुरबानियाँ पेश कर सकेंगे। उनकी रोटी मातम करनेवालों की रोटी जैसी होगी यानी जो भी उसे खाए वह नापाक हो जाएगा। हाँ, उनका खाना सिर्फ़ उनकी अपनी भूक मिटाने के लिए होगा, और वह रब के घर में नहीं आएगा। 5उस वक़्त तुम ईदों पर क्या करोगे? रब के तहवारों को तुम कैसे मनाओगे? 6जो तबाहशुदा मुल्क से निकलेंगे उन्हें मिसर इकट्ठा करेगा, उन्हें मेंफ़िस दफ़नाएगा। ख़ुदरौ पौदे उनकी क़ीमती चाँदी पर क़ब्ज़ा करेंगे, काँटेदार झाड़ियाँ उनके घरों पर छा जाएँगी।

7सज़ा के दिन आ गए हैं, हिसाब-किताब के दिन पहुँच गए हैं। इसराईल यह बात जान ले। तुम कहते हो, “यह नबी अहमक़ है, रूह का यह बंदा पागल है।” क्योंकि जितना संगीन तुम्हारा गुनाह है उतने ही ज़ोर से तुम मेरी मुख़ालफ़त करते हो।

8नबी मेरे ख़ुदा की तरफ़ से इसराईल का पहरेदार बनाया गया है। लेकिन जहाँ भी वह जाए वहाँ उसे फँसाने के फंदे लगाए गए हैं, बल्कि उसे उसके ख़ुदा के घर में भी सताया जाता है। 9उनसे निहायत ही ख़राब काम सरज़द हुआ है, ऐसा शरीर काम जैसा जिबिया के बाशिंदों से हुआ था। अल्लाह उनका क़ुसूर याद करके उनके गुनाहों की मुनासिब सज़ा देगा।

इसराईल शुरू से ही शरीर है

10रब फ़रमाता है, “जब मेरा इसराईल से पहला वास्ता पड़ा तो रेगिस्तान में अंगूर जैसा लग रहा था। तुम्हारे बापदादा अंजीर के दरख़्त पर लगे पहले पकनेवाले फल जैसे नज़र आए। लेकिन बाल-फ़ग़ूर के पास पहुँचते ही उन्होंने अपने आपको उस शर्मनाक बुत के लिए मख़सूस कर लिया। तब वह अपने आशिक़ जैसे मकरूह हो गए। 11अब इसराईल की शानो-शौकत परिंदे की तरह उड़कर ग़ायब हो जाएगी। आइंदा न कोई

उम्मीद से होगी, न बच्चा जनेगी। 12अगर वह
अपने बच्चों को परवान चढ़ने तक पालें भी तो भी
मैं उन्हें बेऔलाद कर दूँगा। एक भी नहीं रहेगा।
उन पर अफ़सोस जब मैं उनसे दूर हो जाऊँगा।
13पहले जब मैंने इसराईल पर नज़र डाली तो वह
सूर की मानिंद शानदार था, उसे शादाब जगह पर
पौदे की तरह लगाया गया था। लेकिन अब उसे
अपनी औलाद को बाहर लाकर क़ातिल के हवाले
करना पड़ेगा।”

14ऐ रब, उन्हें दे! क्या दे? होने दे कि उनके
बच्चे पेट में ज़ाया हो जाएँ, कि औरतें दूध न पिला
सकें।

15रब फ़रमाता है, “जब उनकी तमाम बेदीनी
जिलजाल में ज़ाहिर हुई तो मैंने उनसे नफ़रत की।
उनकी बुरी हरकतों की वजह से मैं उन्हें अपने घर
से निकाल दूँगा। आइंदा मैं उन्हें प्यार नहीं करूँगा।
उनके तमाम राहनुमा सरकश हैं। 16इसराईल को
मारा गया, लोगों की जड़ सूख गई है, और वह
फल नहीं ला सकते। उनके बच्चे पैदा हो भी जाएँ
तो मैं उनकी क़ीमती औलाद को मार डालूँगा।”
17मेरा ख़ुदा उन्हें रद्द करेगा, इसलिए कि उन्होंने
उस की नहीं सुनी। चुनाँचे उन्हें दीगर अक़वाम में
मारे मारे फिरना पड़ेगा।

बुतपरस्ती के नतायज

10 इसराईल अंगूर की फलती-फूलती
बेल था जो काफ़ी फल लाती रही।
लेकिन जितना उसका फल बढ़ता गया उतना
ही वह बुतों के लिए क़ुरबानगाहें बनाता गया।
जितना उसका मुल्क तरक़्क़ी करता गया उतना
ही वह देवताओं के मख़सूस सतूनों को सजाता
गया। 2लोग दोदिले हैं, और अब उन्हें उनके क़ुसूर
का अज्र भुगतना पड़ेगा। रब उनकी क़ुरबानगाहों
को गिरा देगा, उनके सतूनों को मिसमार करेगा।
3जल्द ही वह कहेंगे, “हम इसलिए बादशाह से
महरूम हैं कि हमने रब का ख़ौफ़ न माना। लेकिन
अगर बादशाह होता भी तो वह हमारे लिए क्या
कर सकता?” 4वह बड़ी बातें करते, झूटी क़समें
खाते और ख़ाली अहद बाँधते हैं। उनका इनसाफ़
उन ज़हरीले ख़ुदरौ पौदों की मानिंद है जो बीज के
लिए तैयारशुदा ज़मीन से फूट निकलते हैं।

5सामरिया के बाशिंदे परेशान हैं कि बैत-
आवन[a] में बछड़े के बुत के साथ क्या किया
जाएगा। उसके परस्तार उस पर मातम करेंगे,
उसके पुजारी उस की शानो-शौकत याद करके
वावैला करेंगे, क्योंकि वह उनसे छिनकर परदेस
में ले जाया जाएगा। 6हाँ, बछड़े को मुल्के-असूर
में ले जाकर शहनशाह को ख़राज के तौर पर पेश
किया जाएगा। इसराईल की रुसवाई हो जाएगी,
वह अपने मनसूबे के बाइस शरमिंदा हो जाएगा।

7सामरिया नेस्तो-नाबूद, उसका बादशाह पानी
पर तैरती हुई टहनी की तरह बेबस होगा। 8बैत-
आवन[b] की वह ऊँची जगहें तबाह हो जाएँगी
जहाँ इसराईल गुनाह करता रहा है। उनकी
क़ुरबानगाहों पर काँटेदार झाड़ियाँ और ऊँटकटारे
छा जाएंगे। तब लोग पहाड़ों से कहेंगे, “हमें छुपा
लो!” और पहाड़ियों को “हम पर गिर पड़ो!”

9रब फ़रमाता है, “ऐ इसराईल, जिबिया के
वाक़िये से लेकर आज तक तू गुनाह करता आया
है, लोग वहीं के वहीं रह गए हैं। क्या मुनासिब
नहीं कि जिबिया में जंग उन पर टूट पड़े जो इतने
शरीर हैं? 10अब मैं अपनी मरज़ी से उनकी तादीब
करूँगा। अक़वाम उनके ख़िलाफ़ जमा हो जाएँगी
जब उन्हें उनके दुगने क़ुसूर के लिए ज़ंजीरों में
जकड़ लिया जाएगा।

11इसराईल जवान गाय था जिसे गंदुम गाहने
की तरबियत दी गई थी और जो शौक़ से यह
काम करती थी। तब मैंने उसके ख़ूबसूरत गले
पर जुआ रखकर उसे जोत लिया। यहूदाह को
हल खींचना और याक़ूब[c] को ज़मीन पर सुहागा
फेरना था। 12मैंने फ़रमाया, ‘इनसाफ़ का बीज
बोकर शफ़क़त की फ़सल काटो। जिस ज़मीन पर

[a]बैत-आवन यानी ‘गुनाह का घर’ से मुराद बैतेल है।
[b]बैत-आवन यानी ‘गुनाह का घर’ से मुराद बैतेल है।
[c]याक़ूब से मुराद इसराईल है।

हल कभी नहीं चलाया गया उस पर ठीक तरह हल
चलाओ! जब तक रब को तलाश करने का मौक़ा
है उसे तलाश करो, और जब तक वह आकर तुम
पर इनसाफ़ की बारिश न बरसाए उसे ढूँडो।’

13लेकिन जवाब में तुमने हल चलाकर बेदीनी
का बीज बोया, तुमने बुराई की फ़सल काटकर
फ़रेब का फल खाया है। चूँकि तूने अपनी राह
और अपने सूरमाओं की बड़ी तादाद पर भरोसा
रखा है 14इसलिए तेरी क़ौम में जंग का शोर
मचेगा, तेरे तमाम क़िले ख़ाक में मिलाए जाएंगे।
शलमन के बैत-अरबेल पर हमले के-से हालात
होंगे जिसने उस शहर को ज़मीनबोस करके माओं
को बच्चों समेत ज़मीन पर पटख़ दिया। 15ऐ
बैतेल के बाशिंदो, तुम्हारे साथ भी ऐसा ही किया
जाएगा, क्योंकि तुम्हारी बदकारी हद से ज़्यादा
है। पौ फटते ही इसराईल का बादशाह नेस्त हो
जाएगा।”

बेवफ़ाई के बावुजूद अल्लाह की शफ़क़त

11 रब फ़रमाता है, “इसराईल अभी
लड़का था जब मैंने उसे प्यार किया,
जब मैंने अपने बेटे को मिसर से बुलाया। 2लेकिन
बाद में जितना ही मैं उन्हें बुलाता रहा उतना ही वह
मुझसे दूर होते गए। वह बाल देवताओं के लिए
जानवर चढ़ाने, बुतों के लिए बख़ूर जलाने लगे।
3मैंने ख़ुद इसराईल को चलने की तरबियत दी,
बार बार उन्हें गोद में उठाकर लिए फिरा। लेकिन
वह न समझे कि मैं ही उन्हें शफ़ा देनेवाला हूँ। 4मैं
उन्हें खींचता रहा, लेकिन ऐसे रस्सों से नहीं जो
इनसान बरदाश्त न कर सके बल्कि शफ़क़त भरे
रस्सों से। मैंने उनके गले पर का जुआ हलका कर
दिया और नरमी से उन्हें ख़ुराक खिलाई।

5क्या उन्हें मुल्के-मिसर वापस नहीं जाना
पड़ेगा? बल्कि असूर ही उनका बादशाह बनेगा,
इसलिए कि वह मेरे पास वापस आने के लिए
तैयार नहीं। 6तलवार उनके शहरों में घूम घूमकर
ग़ैबदानों को हलाक करेगी और लोगों को उनके
ग़लत मशवरों के सबब से खाती जाएगी। 7लेकिन
मेरी क़ौम मुझे तर्क करने पर तुली हुई है। जब उसे
ऊपर अल्लाह की तरफ़ देखने को कहा जाए तो
उसमें से कोई भी उस तरफ़ रुजू नहीं करता।

8ऐ इसराईल, मैं तुझे किस तरह छोड़ सकता
हूँ? मैं तुझे किस तरह दुश्मन के हवाले कर
सकता, किस तरह अदमा की तरह दूसरों के
क़ब्ज़े में छोड़ सकता, किस तरह ज़बोईम की
तरह तबाह कर सकता हूँ? मेरा इरादा सरासर
बदल गया है, मैं तुझ पर शफ़क़त करने के
लिए बेचैन हूँ। 9न मैं अपना सख़्त ग़ज़ब नाज़िल
करूँगा, न दुबारा इसराईल को बरबाद करूँगा।
क्योंकि मैं इनसान नहीं बल्कि ख़ुदा हूँ, वह क़ुद्दूस
जो तेरे दरमियान सुकूनत करता है। मैं ग़ज़ब
में नहीं आऊँगा। 10उस वक़्त वह रब के पीछे
ही चलेंगे। तब वह शेरबबर की तरह दहाड़ेगा।
और जब दहाड़ेगा तो उसके फ़रज़ंद मग़रिब से
लरज़ते हुए वापस आएँगे। 11वह परिंदों की तरह
फड़फड़ाते हुए मिसर से आएँगे, थरथराते कबूतरों
की तरह असूर से लौटेंगे। फिर मैं उन्हें उनके घरों
में बसा दूँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।

12इसराईल ने मुझे झूट से घेर लिया, फ़रेब
से मेरा मुहासरा कर लिया है। लेकिन यहूदाह भी
मज़बूती से अल्लाह के साथ नहीं है बल्कि आवारा
फिरता है, हालाँकि क़ुद्दूस ख़ुदा वफ़ादार है।”

सरकशी की राम कहानी

12 इसराईल हवा चरने की कोशिश
कर रहा है, पूरा दिन वह मश-
रिक़ी लू के पीछे भागता रहता है। उसके झूट और
ज़ुल्म में इज़ाफ़ा होता जा रहा है। असूर से अहद
बाँधने के साथ साथ वह मिसर को भी ज़ैतून का
तेल भेज देता है।

2रब अदालत में यहूदाह से भी लड़ेगा। वह
याक़ूब[a] को उसके चाल-चलन की सज़ा, उसके
आमाल का मुनासिब अज्र देगा। 3क्योंकि माँ के
पेट में ही उसने अपने भाई की एड़ी पकड़कर उसे

[a]याक़ूब से मुराद इसराईल है।

धोका दिया। जब बालिग़ हुआ तो अल्लाह से लड़ा
4बल्कि फ़रिश्ते से लड़ते लड़ते उस पर ग़ालिब
आया। फिर उसने रोते रोते उससे इल्तिजा की कि
मुझ पर रहम कर। बाद में याक़ूब ने अल्लाह को
बैतेल में पाया, और वहाँ ख़ुदा उससे हमकलाम
हुआ। 5रब जो लशकरों का ख़ुदा है और जिसका
नाम रब ही है, उसने फ़रमाया, 6“अपने ख़ुदा
के पास वापस आकर रहम और इनसाफ़ क़ायम
रख! कभी अपने ख़ुदा पर उम्मीद रखने से बाज़
न आ।”

7इसराईल ताजिर है जिसके हाथ में ग़लत
तराज़ू है और जिसे लोगों से नाजायज़ फ़ायदा
उठाने का बड़ा शौक़ है। 8वह कहता है, “मैं अमीर
हो गया हूँ, मैंने कसरत की दौलत पाई है। कोई
साबित नहीं कर सकेगा कि मुझसे यह तमाम
मिलकियत हासिल करने में कोई क़ुसूर या गुनाह
सरज़द हुआ है।”

9“लेकिन मैं, रब जो मिसर से तुझे निकालते
वक़्त आज तक तेरा ख़ुदा हूँ मैं यह नज़रंदाज़
नहीं करूँगा। मैं तुझे दुबारा ख़ैमों में बसने दूँगा।
यों होगा जिस तरह उन पहले दिनों में हुआ जब
इसराईली मेरी परस्तिश करने के लिए रेगिस्तान
में जमा होते थे। 10मैं बार बार नबियों की मारिफ़त
तुमसे हमकलाम हुआ, मैंने उन्हें मुतअद्दिद रोयाएँ
दिखाईं और उनके ज़रीए तुम्हें तमसीलें सुनाईं।”

बुतपरस्ती का अज्र ज़वाल है

11क्या जिलियाद बेदीन है? उसके लोग
नाकारा ही हैं! जिलजाल में लोगों ने साँड क़ुरबान
किए हैं, इसलिए उनकी क़ुरबानगाहें मलबे के ढेर
बन जाएँगी। वह बीज बोने के लिए तैयारशुदा खेत
के किनारे पर लगे पत्थर के ढेर जैसी बनेंगी।

12याक़ूब को भागकर मुल्के-अराम में पनाह
लेनी पड़ी। वहाँ वह बीवी मिलने के लिए मुलाज़िम
बन गया, औरत के बाइस उसने भेड़-बकरियों की
गल्लाबानी की। 13लेकिन बाद में रब नबी की
मारिफ़त इसराईल को मिसर से निकाल लाया
और नबी के ज़रीए उस की गल्लाबानी की।
14तो भी इसराईल ने उसे बड़ा तैश दिलाया। अब
उन्हें उनकी क़त्लो-ग़ारत का अज्र भुगतना पड़ेगा।
उन्होंने अपने आक़ा की तौहीन की है, और अब
वह उन्हें मुनासिब सज़ा देगा।

अल्लाह की तरफ़ से इसराईल की अदालत

13 पहले जब इसराईल ने बात की
तो लोग काँप उठे, क्योंकि मुल्के-
इसराईल में वह सरफ़राज़ था। लेकिन फिर वह
बाल की बुतपरस्ती में मुलव्वस होकर हलाक
हुआ। 2अब वह अपने गुनाहों में बहुत इज़ाफ़ा
कर रहे हैं। वह अपनी चाँदी लेकर महारत से बुत
ढाल लेते हैं। फिर दस्तकारों के हाथ से बने इन
बुतों के बारे में कहा जाता है, “जो बछड़े के बुतों
को चूमना चाहे वह किसी इनसान को क़ुरबान
करे!” 3इसलिए वह सुबह-सवेरे की धुंध जैसे
आरिज़ी और धूप में जल्द ही ख़त्म होनेवाली ओस
की मानिंद होंगे। वह गाहते वक़्त गंदुम से अलग
होनेवाले भूसे की मानिंद हवा में उड़ जाएंगे, घर
में से निकलनेवाले धुएँ की तरह ज़ाया हो जाएंगे।

4“लेकिन मैं, रब तुझे मिसर से निकालते वक़्त
से लेकर आज तक तेरा ख़ुदा हूँ। तुझे मेरे सिवा
किसी और को ख़ुदा नहीं जानना है। मेरे सिवा
और कोई नजातदहिंदा नहीं है। 5रेगिस्तान में
मैंने तेरी देख-भाल की, वहाँ जहाँ तपती गरमी
थी। 6वहाँ उन्हें अच्छी ख़ुराक मिली। लेकिन जब
वह जी भरकर खा सके और सेर हुए तो मग़रूर
होकर मुझे भूल गए। 7यह देखकर मैं उनके लिए
शेरबबर बन गया हूँ। अब मैं चीते की तरह रास्ते
के किनारे उनकी ताक में बैठूँगा। 8उस रीछनी
की तरह जिसके बच्चों को छीन लिया गया हो मैं
उन पर झपट्टा मारकर उनकी अंतड़ियों को फाड़
निकालूँगा। मैं उन्हें शेरबबर की तरह हड़प कर
लूँगा, और जंगली जानवर उन्हें टुकड़े टुकड़े कर
देंगे।

9ऐ इसराईल, तू इसलिए तबाह हो गया है कि
तू मेरे ख़िलाफ़ है, उसके ख़िलाफ़ जो तेरी मदद
कर सकता है। 10अब तेरा बादशाह कहाँ है कि

वह तेरे तमाम शहरों में आकर तुझे छुटकारा दे?
अब तेरे राहनुमा किधर हैं जिनसे तूने कहा था,
‘मुझे बादशाह और राहनुमा दे दे।’ 11मैंने ग़ुस्से
में तुझे बादशाह दे दिया और ग़ुस्से में उसे तुझसे
छीन भी लिया।

12इसराईल का क़ुसूर लपेटकर गोदाम में रखा
गया है, उसके गुनाह हिसाब-किताब के लिए
महफ़ूज़ रखे गए हैं। 13दर्दे-ज़ह शुरू हो गया है,
लेकिन वह नासमझ बच्चा है। वह माँ के पेट से
निकलना नहीं चाहता।

14मैं फ़िद्या देकर उन्हें पाताल से क्यों रिहा
करूँ? मैं उन्हें मौत की गिरिफ़्त से क्यों छुड़ाऊँ?
ऐ मौत, तेरे काँटे कहाँ रहे? ऐ पाताल, तेरा डंक
कहाँ रहा? उसे काम में ला, क्योंकि मैं तरस नहीं
खाऊँगा। 15ख़ाह वह अपने भाइयों के दरमियान
फलता-फूलता क्यों न हो तो भी रब की तरफ़ से
मशरिक़ी लू उस पर चलेगी। और जब रेगिस्तान
से आएगी तो इसराईल के कुएँ और चश्मे ख़ुश्क
हो जाएंगे। हर ख़ज़ाना, हर क़ीमती चीज़ लूट का
माल बन जाएगी। 16सामरिया के बाशिंदों को
उनके क़ुसूर की सज़ा भुगतनी पड़ेगी, क्योंकि
वह अपने ख़ुदा से सरकश हो गए हैं। दुश्मन उन्हें
तलवार से मारकर उनके बच्चों को ज़मीन पर
पटख़ देगा और उनकी हामिला औरतों के पेट चीर
डालेगा।”

रब के पास वापस आओ!

14 ऐ इसराईल, तौबा करके रब अपने
ख़ुदा के पास वापस आ! क्योंकि
तेरा क़ुसूर तेरे ज़वाल का सबब बन गया है।
2अपने गुनाहों का इक़रार करते हुए रब के पास
वापस आओ। उससे कहो, “हमारे तमाम गुनाहों
को मुआफ़ करके हमें मेहरबानी से क़बूल फ़रमा
ताकि हम अपने होंटों से तेरी तारीफ़ करके तुझे
मुनासिब क़ुरबानी अदा कर सकें। 3असूर हमें न
बचाए। आइंदा न हम घोड़ों पर सवार हो जाएंगे,
न कहेंगे कि हमारे हाथों की चीज़ें हमारा ख़ुदा हैं।
क्योंकि तू ही यतीम पर रहम करता है।”

4तब रब फ़रमाएगा, “मैं उनकी बेवफ़ाई के
असरात ख़त्म करके उन्हें शफ़ा दूँगा, हाँ मैं उन्हें
खुले दिल से प्यार करूँगा, क्योंकि मेरा उन पर
ग़ज़ब ठंडा हो गया है। 5इसराईल के लिए मैं
शबनम की मानिंद हूँगा। तब वह सोसन की
मानिंद फूल निकालेगा, लुबनान के देवदार के
दरख़्त की तरह जड़ पकड़ेगा, 6उस की कोंपलें
फूट निकलेंगी, और शाख़ें बनकर फैलती जाएँगी।
उस की शान ज़ैतून के दरख़्त की मानिंद होगी,
उस की ख़ुशबू लुबनान के देवदार के दरख़्त की
ख़ुशबू की तरह फैल जाएगी।

7लोग दुबारा उसके साये में जा बसेंगे। वहाँ वह
अनाज की तरह फलें-फूलेंगे, अंगूर के-से फूल
निकालेंगे। दूसरे उनकी यों तारीफ़ करेंगे जिस
तरह लुबनान की उम्दा मै की। 8तब इसराईल
कहेगा, ‘मेरा बुतों से क्या वास्ता?’ मैं ही
तेरी सुनकर तेरी देख-भाल करूँगा। मैं जूनीपर
का सायादार दरख़्त हूँ, और तू मुझसे ही फल
पाएगा।”

9कौन दानिशमंद है? वह समझ ले। कौन
साहबे-फ़हम है? वह मतलब जान ले। क्योंकि
रब की राहें दुरुस्त हैं। रास्तबाज़ उन पर चलते
रहेंगे, लेकिन सरकश उन पर चलते वक़्त ठोकर
खाकर गिर जाएंगे।

योएल

1 ज़ैल में रब का वह कलाम है जो योएल
बिन फ़तुएल पर नाज़िल हुआ।
2ऐ बुज़ुर्गो, सुनो! ऐ मुल्क के तमाम बाशिंदो,
तवज्जुह दो! जो कुछ इन दिनों में तुम्हें पेश आया
है क्या वह पहले कभी तुम्हें या तुम्हारे बापदादा
को पेश आया? 3अपने बच्चों को इसके बारे में
बताओ, जो कुछ पेश आया है उस की याद नसल-
दर-नसल ताज़ा रहे।
4जो कुछ टिड्डी के लार्वे ने छोड़ दिया उसे
बालिग़ टिड्डी खा गई, जो बालिग़ टिड्डी छोड़ गई
उसे टिड्डी का बच्चा खा गया, और जो टिड्डी का
बच्चा छोड़ गया उसे जवान टिड्डी खा गई। 5ऐ
नशे में धुत लोगो, जाग उठो और रो पड़ो! ऐ मै
पीनेवालो, वावैला करो! क्योंकि नई मै तुम्हारे
मुँह से छीन ली गई है। 6टिड्डियों की ज़बरदस्त
और अनगिनत क़ौम मेरे मुल्क पर टूट पड़ी है।
उनके शेर के-से दाँत और शेरनी का-सा जबड़ा है।
7नतीजे में मेरे अंगूर की बेलें तबाह, मेरे अंजीर के
दरख़्त ज़ाया हो गए हैं। टिड्डियों ने छाल को भी
उतार लिया, अब शाख़ें सफ़ेद सफ़ेद नज़र आती
हैं।
8आहो-ज़ारी करो, टाट से मुलब्बस उस कुँवारी
की तरह गिर्या करो जिसका मंगेतर इंतक़ाल कर
गया हो। 9रब के घर में ग़ल्ला और मै की नज़रें
बंद हो गई हैं। इमाम जो रब के ख़ादिम हैं मातम
कर रहे हैं। 10खेत तबाह हुए, ज़मीन झुलस गई
है। अनाज ख़त्म, अंगूर ख़त्म, ज़ैतून ख़त्म।
11ऐ काश्तकारो, शर्मसार हो जाओ! ऐ अंगूर
के बाग़बानो, आहो-बुका करो! क्योंकि खेत की
फ़सल बरबाद हो गई है, गंदुम और जौ की फ़सल
ख़त्म ही है। 12अंगूर की बेल सूख गई, अंजीर का
दरख़्त मुरझा गया है। अनार, खजूर, सेब बल्कि
फल लानेवाले तमाम दरख़्त पज़मुरदा हो गए हैं।
इनसान की तमाम ख़ुशी ख़ाक में मिलाई गई है।
13ऐ इमामो, टाट का लिबास ओढ़कर मातम
करो! ऐ क़ुरबानगाह के ख़ादिमो, वावैला करो!
ऐ मेरे ख़ुदा के ख़ादिमो, आओ, रात को भी टाट
ओढ़कर गुज़ारो! क्योंकि तुम्हारे ख़ुदा का घर
ग़ल्ला और मै की नज़रों से महरूम हो गया है।
14मुक़द्दस रोज़े का एलान करो। लोगों को ख़ास
इजतिमा के लिए बुलाओ। बुज़ुर्गों और मुल्क के
तमाम बाशिंदों को रब अपने ख़ुदा के घर में जमा
करके बुलंद आवाज़ से रब से इल्तिजा करो।
15उस दिन पर अफ़सोस! क्योंकि रब का
वह दिन क़रीब ही है जब क़ादिरे-मुतलक़ हम पर
तबाही नाज़िल करेगा। 16क्या ऐसा नहीं हुआ कि
हमारे देखते देखते हमसे ख़ुराक छीन ली गई,
कि अल्लाह के घर में ख़ुशी-ओ-शादमानी बंद
हो गई है? 17ढेलों में छुपे बीज झुलस गए हैं,
इसलिए ख़ाली गोदाम ख़स्ताहाल और अनाज को
महफ़ूज़ रखने के मकान टूट फूट गए हैं। उनकी

ज़रूरत नहीं रही, क्योंकि ग़ल्ला सूख गया है।
18हाय, मवेशी कैसी दर्दनाक आवाज़ निकाल
रहे हैं! गाय-बैल परेशानी से इधर-उधर फिर रहे
हैं, क्योंकि कहीं भी चरागाह नहीं मिलती। भेड़-
बकरियों को भी तकलीफ़ है।

19ऐ रब, मैं तुझे पुकारता हूँ, क्योंकि खुले
मैदान की चरागाहें नज़रे-आतिश हो गई हैं, तमाम
दरख़्त भस्म हो गए हैं। 20जंगली जानवर भी
हाँपते हाँपते तेरे इंतज़ार में हैं, क्योंकि नदियाँ सूख
गई हैं, और खुले मैदान की चरागाहें नज़रे-आतिश
हो गई हैं।

रब का अदालती दिन

2 कोहे-सिय्यून पर नरसिंगा फूँको, मेरे
मुक़द्दस पहाड़ पर जंग का नारा लगाओ।
मुल्क के तमाम बाशिंदे लरज़ उठें, क्योंकि रब का
दिन आनेवाला है बल्कि क़रीब ही है। 2ज़ुल्मत
और तारीकी का दिन, घने बादलों और घुप अंधेरे
का दिन होगा। जिस तरह पौ फटते ही रौशनी
पहाड़ों पर फैल जाती है उसी तरह एक बड़ी और
ताक़तवर क़ौम आ रही है, ऐसी क़ौम जैसी न
माज़ी में कभी थी, न मुस्तक़बिल में कभी होगी।
3उसके आगे आगे आतिश सब कुछ भस्म करती
है, उसके पीछे पीछे झुलसानेवाला शोला चलता
है। जहाँ भी वह पहुँचे वहाँ मुल्क वीरानो-सुनसान
हो जाता है, ख़ाह वह बाग़े-अदन क्यों न होता।
उससे कुछ नहीं बचता। 4देखने में वह घोड़े जैसे
लगते हैं, फ़ौजी घोड़ों की तरह सरपट दौड़ते हैं।
5रथों का-सा शोर मचाते हुए वह उछल उछलकर
पहाड़ की चोटियों पर से गुज़रते हैं। भूसे को भस्म
करनेवाली आग की चटख़्ती आवाज़ सुनाई देती
है जब वह जंग के लिए तैयार बड़ी बड़ी फ़ौज की
तरह आगे बढ़ते हैं। 6उन्हें देखकर क़ौमें डर के
मारे पेचो-ताब खाने लगती हैं, हर चेहरा माँद पड़
जाता है।

7वह सूरमाओं की तरह हमला करते, फ़ौजियों
की तरह दीवारों पर छलाँग लगाते हैं। सब सफ़
बाँधकर आगे बढ़ते हैं, एक भी मुक़र्ररा रास्ते से
नहीं हटता। 8वह एक दूसरे को धक्का नहीं देते
बल्कि हर एक सीधा अपनी राह पर आगे बढ़ता
है। यों सफ़बस्ता होकर वह दुश्मन की दिफ़ाई
सफ़ों में से गुज़र जाते हैं 9और शहर पर झपट्टा
मारकर फ़सील पर छलाँग लगाते हैं, घरों की
दीवारों पर चढ़कर चोर की तरह खिड़कियों में से
घुस आते हैं।

10उनके आगे आगे ज़मीन काँप उठती,
आसमान थरथराता, सूरज और चाँद तारीक हो
जाते और सितारों की चमक-दमक जाती रहती
है। 11रब ख़ुद अपनी फ़ौज के आगे आगे गरजता
रहता है। उसका लशकर निहायत बड़ा है, और
जो फ़ौजी उसके हुक्म पर चलते हैं वह ताक़तवर
हैं। क्योंकि रब का दिन अज़ीम और निहायत
हौलनाक है, कौन उसे बरदाश्त कर सकता है?

तौबा करके वापस आओ

12रब फ़रमाता है, "अब भी तुम तौबा कर
सकते हो। पूरे दिल से मेरे पास वापस आओ!
रोज़ा रखो, आहो-ज़ारी करो, मातम करो!
13रंजिश का इज़हार करने के लिए अपने कपड़ों
को मत फाड़ो बल्कि अपने दिल को।"

रब अपने ख़ुदा के पास वापस आओ, क्योंकि
वह मेहरबान और रहीम है। वह तहम्मुल और
शफ़क़त से भरपूर है और जल्द ही सज़ा देने से
पछताता है। 14कौन जाने, शायद वह इस बार भी
पछताकर अपने पीछे बरकत छोड़ जाए और तुम
नए सिरे से रब अपने ख़ुदा को ग़ल्ला और मै की
नज़रें पेश कर सको।

15कोहे-सिय्यून पर नरसिंगा फूँको, मु-
क़द्दस रोज़े का एलान करो, लोगों को ख़ास
इजतिमा के लिए बुलाओ! 16लोगों को
जमा करो, फिर जमात को मख़सूसो-मुक़द्दस
करो। न सिर्फ़ बुज़ुर्गों को बल्कि बच्चों को भी
शीरख़ारों समेत इकट्ठा करो। दूल्हा और दुलहन
भी अपने अपने उरूसी कमरों से निकलकर आएँ।
17लाज़िम है कि इमाम जो अल्लाह के ख़ादिम
हैं रब के घर के बरामदे और क़ुरबानगाह के

दरमियान खड़े होकर आहो-ज़ारी करें। वह इक़रार
करें, “ऐ रब, अपनी क़ौम पर तरस की निगाह
डाल! अपनी मौरूसी मिलकियत को लान-तान
का निशाना बनने न दे। ऐसा न हो कि दीगर
अक़्वाम उसका मज़ाक़ उड़ाकर कहें, ‘उनका
ख़ुदा कहाँ है’?”

रब अपनी क़ौम पर रहम करता है

18तब रब अपने मुल्क के लिए ग़ैरत खाकर
अपनी क़ौम पर तरस खाएगा। 19वह अपनी क़ौम
से वादा करेगा, “मैं तुम्हें इतना अनाज, अंगूर और
ज़ैतून भेज देता हूँ कि तुम सेर हो जाओगे। आइंदा
मैं तुम्हें दीगर अक़्वाम के मज़ाक़ का निशाना नहीं
बनाऊँगा। 20मैं शिमाल से आए हुए दुश्मन को
तुमसे दूर करके वीरानो-सुनसान मुल्क में भगा
दूँगा। वहाँ उसके अगले दस्ते मशरिक़ी समुंदर में
और उसके पिछले दस्ते मग़रिबी समुंदर में डूब
जाएंगे। तब उनकी गली-सड़ी नाशों की बदबू चारों
तरफ़ फैल जाएगी।” क्योंकि उस[a] ने अज़ीम
काम किए हैं।

21ऐ मुल्क, मत डरना बल्कि शादियाना
बजाकर ख़ुशी मना! क्योंकि रब ने अज़ीम काम
किए हैं।

22ऐ जंगली जानवरो, मत डरना, क्योंकि खुले
मैदान की हरियाली दुबारा उगने लगी है। दरख़्त
नए सिरे से फल ला रहे हैं, अंजीर और अंगूर की
बड़ी फ़सल पक रही है।

23ऐ सिय्यून के बाशिंदो, तुम भी शादि-
याना बजाकर रब अपने ख़ुदा की ख़ुशी मनाओ।
क्योंकि वह अपनी रास्ती के मुताबिक़ तुम पर
मेंह बरसाता, पहले की तरह ख़िज़ाँ और बहार
की बारिशें बख़्श देता है। 24अनाज की कसरत
से गाहने की जगहें भर जाएँगी, अंगूर और ज़ैतून
की कसरत से हौज़ छलक उठेंगे।

25रब फ़रमाता है, “मैं तुम्हें सब कुछ वापस
कर दूँगा जो टिड्डियों की बड़ी फ़ौज ने खा लिया
है। तुम्हें सब कुछ वापस मिल जाएगा जो बालिग़
टिड्डी, टिड्डी के बच्चे, जवान टिड्डी और टिड्डियों के
लार्वों ने खा लिया जब मैंने उन्हें तुम्हारे ख़िलाफ़
भेजा था। 26तुम दुबारा जी भरकर खा सकोगे।
तब तुम रब अपने ख़ुदा के नाम की सताइश करोगे
जिसने तुम्हारी ख़ातिर इतने बड़े मोजिज़े किए हैं।
आइंदा मेरी क़ौम कभी शरमिंदा न होगी। 27तब
तुम जान लोगे कि मैं इसराईल के दरमियान
मौजूद हूँ, कि मैं, रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ और मेरे
सिवा और कोई नहीं है। आइंदा मेरी क़ौम कभी
भी शर्मसार नहीं होगी।

अल्लाह अपने रूह का वादा करता है

28इसके बाद मैं अपने रूह को तमाम इनसानों
पर उंडेल दूँगा। तुम्हारे बेटे-बेटियाँ नबुव्वत करेंगे,
तुम्हारे बुज़ुर्ग ख़ाब और तुम्हारे नौजवान रोयाएँ
देखेंगे। 29उन दिनों में मैं अपने रूह को ख़ादिमों
और ख़ादिमाओं पर भी उंडेल दूँगा। 30मैं
आसमान पर मोजिज़े दिखाऊँगा और ज़मीन पर
इलाही निशान ज़ाहिर करूँगा, ख़ून, आग और धुएँ
के बादल। 31सूरज तारीक हो जाएगा, चाँद का
रंग ख़ून-सा हो जाएगा, और फिर रब का अज़ीम
और जलाली दिन आएगा। 32उस वक़्त जो भी
रब का नाम लेगा नजात पाएगा। क्योंकि कोहे-
सिय्यून पर और यरूशलम में नजात मिलेगी,
बिलकुल उसी तरह जिस तरह रब ने फ़रमाया
है। जिन बचे हुओं को रब ने बुलाया है उन्हीं में
नजात पाई जाएगी।

दुश्मन की सज़ा

3 उन दिनों में, हाँ उस वक़्त जब मैं
यहूदाह और यरूशलम को बहाल करूँगा
2मैं तमाम दीगर अक़्वाम को जमा करके
वादीए-यहूसफ़त[b] में ले जाऊँगा। वहाँ मैं अपनी
क़ौम और मौरूसी मिलकियत की ख़ातिर उनसे
मुक़दमा लड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने मेरी क़ौम को

[a]ग़ालिबन ‘उस’ से मुराद ख़ुदा है, लेकिन दुश्मन भी हो सकता है।

[b]यहूसफ़त का मतलब : ‘रब अदालत करता है।’

दीगर अक़वाम में मुंतशिर करके मेरे मुल्क को
आपस में तक़सीम कर लिया, 3क़ुरा डालकर
मेरी क़ौम को आपस में बाँट लिया है। उन्होंने
इसराईली लड़कों को कसबियों के बदले में दे
दिया और इसराईली लड़कियों को फ़रोख़्त किया
ताकि मै ख़रीदकर पी सकें।

4ऐ सूर, सैदा और तमाम फ़िलिस्ती इलाक़ो,
मेरा तुमसे क्या वास्ता? क्या तुम मुझसे इंतक़ाम
लेना या मुझे सज़ा देना चाहते हो? जल्द ही मैं
तेज़ी से तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो तुमने
दूसरों के साथ किया है। 5क्योंकि तुमने मेरी
सोना-चाँदी और मेरे बेशक़ीमत ख़ज़ाने लूटकर
अपने मंदिरों में रख लिए हैं। 6यहूदाह और
यरूशलम के बाशिंदों को तुमने यूनानियों के हाथ
बेच डाला ताकि वह अपने वतन से दूर रहें।

7लेकिन मैं उन्हें जगाकर उन मक़ामों से वापस
लाऊँगा जहाँ तुमने उन्हें फ़रोख़्त कर दिया था।
साथ साथ मैं तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो
तुमने उनके साथ किया था। 8रब फ़रमाता है कि
मैं तुम्हारे बेटे-बेटियों को यहूदाह के बाशिंदों के
हाथ बेच डालूँगा, और वह उन्हें दूर-दराज़ क़ौम
सबा के हवाले करके फ़रोख़्त करेंगे।

9बुलंद आवाज़ से दीगर अक़वाम में एलान
करो कि जंग की तैयारियाँ करो। अपने बेहतरीन
फ़ौजियों को खड़ा करो। लड़ने के क़ाबिल तमाम
मर्द आकर हमला करें। 10अपने हल की फालियों
को कूट कूटकर तलवारें बना लो, काँट-छाँट
के औज़ारों को नेज़ों में तबदील करो। कमज़ोर
आदमी भी कहे, 'मैं सूरमा हूँ!' 11ऐ तमाम
अक़वाम, चारों तरफ़ से आकर वादी में जमा हो
जाओ! जल्दी करो।"

ऐ रब, अपने सूरमाओं को वहाँ उतरने दे!

12"दीगर अक़वाम हरकत में आकर वादीए-
यहूसफ़त में आ जाएँ। क्योंकि वहाँ मैं तख़्त पर
बैठकर इर्दगिर्द की तमाम अक़वाम का फ़ैसला
करूँगा। 13आओ, दराँती चलाओ, क्योंकि फ़सल
पक गई है। आओ, अंगूर को कुचल दो, क्योंकि
उसका रस निकालने का हौज़ भरा हुआ है, और
तमाम बरतन रस से छलकने लगे हैं। क्योंकि
उनकी बुराई बहुत है।"

14फ़ैसले की वादी में हंगामा ही हंगामा है,
क्योंकि फ़ैसले की वादी में रब का दिन क़रीब
आ गया है। 15सूरज और चाँद तारीक हो जाएंगे,
सितारों की चमक-दमक जाती रहेगी। 16रब
कोहे-सिय्यून पर से दहाड़ेगा, यरूशलम से उस
की गरजती आवाज़ यों सुनाई देगी कि आसमानो-
ज़मीन लरज़ उठेंगे।

इसराईल का जलाली मुस्तक़बिल

लेकिन रब अपनी क़ौम की पनाहगाह और
इसराईलियों का क़िला होगा। 17"तब तुम जान
लोगे कि मैं, रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ और अपने मुक़द्दस
पहाड़ सिय्यून पर सुकूनत करता हूँ। यरूशलम
मुक़द्दस होगा, और आइंदा परदेसी उसमें से नहीं
गुज़रेंगे।

18उस दिन हर चीज़ कसरत से दस्तयाब होगी।
पहाड़ों से अंगूर का रस टपकेगा, पहाड़ियों से दूध
की नदियाँ बहेंगी, और यहूदाह के तमाम नदी-
नाले पानी से भरे रहेंगे। नीज़, रब के घर में से
एक चश्मा फूट निकलेगा और बहता हुआ वादीए-
शित्तीम की आबपाशी करेगा। 19लेकिन मिसर
तबाह और अदोम वीरानो-सुनसान हो जाएगा,
क्योंकि उन्होंने यहूदाह के बाशिंदों पर ज़ुल्मो-
तशद्दुद किया, उनके अपने ही मुल्क में बेक़ुसूर
लोगों को क़त्ल किया है। 20लेकिन यहूदाह
हमेशा तक आबाद रहेगा, यरूशलम नसल-दर-
नसल क़ायम रहेगा। 21जो क़त्लो-ग़ारत उनके
दरमियान हुई है उस की सज़ा मैं ज़रूर दूँगा।"

रब कोहे-सिय्यून पर सुकूनत करता है।!

आमूस

इसराईल के पड़ोसियों की अदालत

1 ज़ैल में आमूस के पैग़ामात क़लमबंद हैं।
आमूस तक़ुअ शहर का गल्लाबान था।
ज़लज़ले से दो साल पहले उसने इसराईल के बारे
में रोया में यह कुछ देखा। उस वक़्त उज़्ज़ियाह
यहूदाह का और यरुबियाम बिन युआस इसराईल
का बादशाह था।
2आमूस बोला, "रब कोहे-सिय्यून पर से
दहाड़ता है, उस की गरजती आवाज़ यरूशलम से
सुनाई देती है। तब गल्लाबानों की चरागाहें सूख
जाती हैं और करमिल की चोटी पर जंगल मुरझा
जाता है।"
3रब फ़रमाता है, "दमिश्क़ के बाशिंदों ने
बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा
दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने जिलियाद
को गाहने के आहनी औज़ार से ख़ूब कूटकर
गाह लिया है। 4चुनाँचे मैं हज़ाएल के घराने पर
आग नाज़िल करूँगा, और बिन-हदद के महल
नज़रे-आतिश हो जाएंगे। 5मैं दमिश्क़ के कुंडे
को तोड़कर बिक़अत-आवन और बैत-अदन के
हुक्मरानों को मौत के घाट उतारूँगा। अराम की
क़ौम जिलावतन होकर क़ीर में जा बसेगी।" यह
रब का फ़रमान है।
6रब फ़रमाता है, "ग़ज़्ज़ा के बाशिंदों ने बार
बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा दिए
बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने पूरी आबादियों
को जिलावतन करके अदोम के हवाले कर दिया
है। 7चुनाँचे मैं ग़ज़्ज़ा की फ़सील पर आग
नाज़िल करूँगा, और उसके महल नज़रे-आतिश
हो जाएंगे। 8अशदूद और अस्क़लून के हुक्मरानों
को मैं मार डालूँगा, अक़रून पर भी हमला करूँगा।
तब बचे-खुचे फ़िलिस्ती भी हलाक हो जाएंगे।"
यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।
9रब फ़रमाता है, "सूर के बाशिंदों ने बार
बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा
दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने बरादराना
अहद का लिहाज़ न किया बल्कि पूरी आबादियों
को जिलावतन करके अदोम के हवाले कर
दिया। 10चुनाँचे मैं सूर की फ़सील पर आग
नाज़िल करूँगा, और उसके महल नज़रे-आतिश
हो जाएंगे।"
11रब फ़रमाता है, "अदोम के बाशिंदों ने
बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा
दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने अपने
इसराईली भाइयों को तलवार से मार मारकर
उनका ताक़्क़ुब किया और सख़्ती से उन पर रहम
करने से इनकार किया। उनका क़हर भड़कता
रहा, उनका तैश कभी ठंडा न हुआ। 12चुनाँचे
मैं तेमान पर आग नाज़िल करूँगा, और बुसरा के
महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे।"
13रब फ़रमाता है, "अम्मोन के बाशिंदों ने
बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा
दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि अपनी सरहद्दों
को बढ़ाने के लिए उन्होंने जिलियाद की हामिला

औरतों के पेट चीर डाले। 14चुनाँचे मैं रब्बा की
फ़सील को आग लगा दूँगा, और उसके महल
नज़रे-आतिश हो जाएंगे। जंग के उस दिन हर
तरफ़ फ़ौजियों के नारे बुलंद हो जाएंगे, तूफ़ान के
उस दिन उन पर सख़्त आँधी टूट पड़ेगी। 15उनका
बादशाह[a] अपने अफ़सरों समेत क़ैदी बनकर
जिलावतन हो जाएगा।” यह रब का फ़रमान है।

2 रब फ़रमाता है, “मोआब के बाशिंदों ने बार
बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा
दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने अदोम के
बादशाह की हड्डियों को जलाकर राख कर दिया
है। 2चुनाँचे मैं मुल्के-मोआब पर आग नाज़िल
करूँगा, और क़रियोत के महल नज़रे-आतिश हो
जाएंगे। जंग का शोर-शराबा मचेगा, फ़ौजियों के
नारे बुलंद हो जाएंगे, नरसिंगा फूँका जाएगा। तब
मोआब हलाक हो जाएगा। 3मैं उसके हुक्मरान
को उसके तमाम अफ़सरों समेत हलाक कर
दूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

यहूदाह की अदालत

4रब फ़रमाता है, “यहूदाह के बाशिंदों ने बार
बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा दिए
बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने रब की शरीअत
को रद्द करके उसके अहकाम पर अमल नहीं
किया। उनके झूटे देवता उन्हें ग़लत राह पर ले
गए हैं, वह देवता जिनकी पैरवी उनके बापदादा
भी करते रहे। 5चुनाँचे मैं यहूदाह पर आग नाज़िल
करूँगा, और यरूशलम के महल नज़रे-आतिश हो
जाएंगे।”

इसराईल की अदालत

6रब फ़रमाता है, “इसराईल के बाशिंदों ने बार
बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा दिए
बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि वह शरीफ़ लोगों को
पैसे के लिए बेचते और ज़रूरतमंदों को फ़रोख़्त
करते हैं ताकि एक जोड़ी जूता मिल जाए।
7वह ग़रीबों के सर को ज़मीन पर कुचल देते,
मुसीबतज़दों को इनसाफ़ मिलने से रोकते हैं।
बाप और बेटा दोनों एक ही कसबी के पास जाकर
मेरे नाम की बेहुरमती करते हैं। 8जब कभी किसी
क़ुरबानगाह के पास पूजा करने जाते हैं तो ऐसे
कपड़ों पर आराम करते हैं जो क़र्ज़दारों ने ज़मानत
के तौर पर दिए थे। जब कभी अपने देवता के
मंदिर में जाते तो ऐसे पैसों से मै ख़रीदकर पीते हैं
जो जुरमाना के तौर पर ज़रूरतमंदों से मिल गए
थे।

9यह कैसी बात है? मैं ही ने अमोरियों को
उनके आगे आगे नेस्त कर दिया था, हालाँकि
वह देवदार के दरख़्तों जैसे लंबे और बलूत के
दरख़्तों जैसे ताक़तवर थे। मैं ही ने अमोरियों को
जड़ों और फल समेत मिटा दिया था। 10इससे
पहले मैं ही तुम्हें मिसर से निकाल लाया, मैं
ही ने चालीस साल तक रेगिस्तान में तुम्हारी
राहनुमाई करते करते तुम्हें अमोरियों के मुल्क तक
पहुँचाया ताकि उस पर क़ब्ज़ा करो। 11मैं ही ने
तुम्हारे बेटों में से नबी बरपा किए, और मैं ही ने
तुम्हारे नौजवानों में से कुछ चुन लिए ताकि अपनी
ख़िदमत के लिए मख़सूस करूँ।” रब फ़रमाता है,
“ऐ इसराईलियो, क्या ऐसा नहीं था? 12लेकिन
तुमने मेरे लिए मख़सूस आदमियों को मै पिलाई
और नबियों को हुक्म दिया कि नबुव्वत मत करो।

13अब मैं होने दूँगा कि तुम अनाज से ख़ूब लदी
हुई बैलगाड़ी की तरह झूलने लगोगे। 14न तेज़रौ
शख़्स भागकर बचेगा, न ताक़तवर आदमी कुछ
कर पाएगा। न सूरमा अपनी जान बचाएगा, 15न
तीर चलानेवाला क़ायम रहेगा। कोई नहीं बचेगा,
ख़ाह पैदल दौड़नेवाला हो या घोड़े पर सवार।
16उस दिन सबसे बहादुर सूरमा भी हथियार
डालकर नंगी हालत में भाग जाएगा।” यह रब
का फ़रमान है।

3 ऐ इसराईलियो, वह कलाम सुनो जो रब
तुम्हारे ख़िलाफ़ फ़रमाता है, उस पूरी क़ौम
के ख़िलाफ़ जिसे मैं मिसर से निकाल लाया था।

[a]या मलिक देवता।

2“दुनिया की तमाम क़ौमों में से मैंने सिर्फ़ तुम्हीं को जान लिया, इसलिए मैं तुम्हीं को तुम्हारे तमाम गुनाहों की सज़ा दूँगा।”

नबी की ज़िम्मेदारी

3क्या दो अफ़राद मिलकर सफ़र कर सकते हैं अगर वह मुत्तफ़िक़ न हों? 4क्या शेरबबर दहाड़ता है अगर उसे शिकार न मिला हो? क्या जवान शेर अपनी माँद में गरजता है अगर उसने कुछ पकड़ा न हो? 5क्या परिंदा फंदे में फँस जाता है अगर फंदे को लगाया न गया हो? या फंदा कुछ फँसा सकता है अगर शिकार न हो? 6जब शहर में नरसिंगा फूँका जाता है ताकि लोगों को किसी ख़तरे से आगाह करे तो क्या वह नहीं घबराते? जब आफ़त शहर पर आती है तो क्या रब की तरफ़ से नहीं होती?

7यक़ीनन जो भी मनसूबा रब क़ादिरे-मुतलक़ बाँधे उस पर अमल करने से पहले वह उसे अपने ख़ादिमों यानी नबियों पर ज़ाहिर करता है।

8शेरबबर दहाड़ उठा है तो कौन है जो डर न जाए? रब क़ादिरे-मुतलक़ बोल उठा है तो कौन है जो नबुव्वत न करे?

सामरिया को रिहाई नहीं मिलेगी

9अशदूद और मिसर के महलों को इत्तला दो, “सामरिया के पहाड़ों पर जमा होकर उस पर नज़र डालो जो कुछ शहर में हो रहा है। कितनी बड़ी हलचल मच गई है, कितना ज़ुल्म हो रहा है।” 10रब फ़रमाता है, “यह लोग सहीह काम करना जानते ही नहीं बल्कि ज़ालिम और तबाहकुन तरीक़ों से अपने महलों में ख़ज़ाने जमा करते हैं।”

11चुनाँचे रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “दुश्मन मुल्क को घेरकर तेरी क़िलाबंदियों को ढा देगा और तेरे महलों को लूट लेगा।” 12रब फ़रमाता है, “अगर चरवाहा अपनी भेड़ को शेरबबर के मुँह से निकालने की कोशिश करे तो शायद दो पिंडलियाँ या कान का टुकड़ा बच जाए। सामरिया के इसराईली भी इसी तरह ही बच जाएंगे, ख़ाह वह इस वक़्त अपने शानदार सोफ़ों और ख़ूबसूरत गद्दियों पर आराम क्यों न करें।”

13रब क़ादिरे-मुतलक़ जो आसमानी लशकरों का ख़ुदा है फ़रमाता है, “सुनो, याक़ूब के घराने के ख़िलाफ़ गवाही दो! 14जिस दिन मैं इसराईल को उसके गुनाहों की सज़ा दूँगा उस दिन मैं बैतेल की क़ुरबानगाहों को मिसमार करूँगा। तब क़ुरबानगाह के कोनों पर लगे सींग टूटकर ज़मीन पर गिर जाएंगे। 15मैं सर्दियों और गरमियों के मौसम के लिए तामीर किए गए घरों को ढा दूँगा। हाथीदाँत से आरास्ता इमारतें ख़ाक में मिलाई जाएँगी, और जहाँ इस वक़्त मुतअद्दिद मकान नज़र आते हैं वहाँ कुछ नहीं रहेगा।” यह रब का फ़रमान है।

सामरिया की ज़ालिम औरतें

4 ऐ कोहे-सामरिया की मोटी-ताज़ी गायो,[a] सुनो मेरी बात! तुम ग़रीबों पर ज़ुल्म करती और ज़रूरतमंदों को कुचल देती, तुम अपने शौहरों को कहती हो, “जाकर मै ले आओ, हम और पीना चाहती हैं।” 2रब ने अपनी क़ुद्दूसियत की क़सम खाकर फ़रमाया है, “वह दिन आनेवाला है जब दुश्मन तुम्हें काँटों के ज़रीए घसीटकर अपने साथ ले जाएगा। जो बचेगा उसे मछली के काँटे से पकड़ा जाएगा। 3हर एक को फ़सील के रख़नों में से सीधा निकलना पड़ेगा, हर एक को हरमून पहाड़ की तरफ़ भगा दिया जाएगा।” यह रब का फ़रमान है।

इसराईल को समझाया नहीं जा सकता

4“चलो, बैतेल जाकर गुनाह करो, जिलजाल जाकर अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा करो! सुबह के वक़्त अपनी क़ुरबानियों को चढ़ाओ,

---

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : ‘बसन की गायो।’ बसन एक पहाड़ी इलाक़ा था जिसके मवेशी मशहूर थे।

तीसरे दिन आमदनी का दसवाँ हिस्सा पेश करो।
5ख़मीरी रोटी जलाकर अपनी शुक्रगुज़ारी का इज़हार करो, बुलंद आवाज़ से उन क़ुरबानियों का एलान करो जो तुम अपनी ख़ुशी से अदा कर रहे हो। क्योंकि ऐसी हरकतें तुम इसराईलियों को बहुत पसंद हैं।” यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

6रब फ़रमाता है, “मैंने काल पड़ने दिया। हर शहर और आबादी में रोटी ख़त्म हुई। तो भी तुम मेरे पास वापस नहीं आए!
7अभी फ़सल के पकने तक तीन माह बाक़ी थे कि मैंने तुम्हारे मुल्क में बारिशों को रोक दिया। मैंने होने दिया कि एक शहर में बारिश हुई जबकि साथवाला शहर उससे महरूम रहा, एक खेत बारिश से सेराब हुआ जबकि दूसरा झुलस गया।
8जिस शहर में थोड़ा-बहुत पानी बाक़ी था वहाँ दीगर कई शहरों के बाशिंदे लड़खड़ाते हुए पहुँचे, लेकिन उनके लिए काफ़ी नहीं था। तो भी तुम मेरे पास वापस न आए!” यह रब का फ़रमान है।

9रब फ़रमाता है, “मैंने तुम्हारी फ़सलों को पतरोग और फफूँदी से तबाह कर दिया। जो भी तुम्हारे मुतअद्दिद अंगूर, अंजीर, ज़ैतून और बाक़ी फल के बाग़ों में उगता था उसे टिड्डियाँ खा गईं। तो भी तुम मेरे पास वापस न आए!”

10रब फ़रमाता है, “मैंने तुम्हारे दरमियान ऐसी मोहलक बीमारी फैला दी जैसी क़दीम ज़माने में मिसर में फैल गई थी। तुम्हारे नौजवानों को मैंने तलवार से मार डाला, तुम्हारे घोड़े तुमसे छीन लिए गए। तुम्हारी लशकरगाहों में लाशों का ताफ़्फ़ुन इतना फैल गया कि तुम बहुत तंग हुए। तो भी तुम मेरे पास वापस न आए।”

11रब फ़रमाता है, “मैंने तुम्हारे दरमियान ऐसी तबाही मचाई जैसी उस दिन हुई जब मैंने सदूम और अमूरा को तबाह किया।

तुम्हारी हालत बिलकुल उस लकड़ी की मानिंद थी जो आग से निकालकर बचाई तो गई लेकिन फिर भी काफ़ी झुलस गई थी। तो भी तुम वापस न आए।
12चुनाँचे ऐ इसराईल, अब मैं आइंदा भी तेरे साथ ऐसा ही करूँगा। और चूँकि मैं तेरे साथ ऐसा करूँगा, इसलिए अपने ख़ुदा से मिलने के लिए तैयार हो जा, ऐ इसराईल!”

13क्योंकि अल्लाह ही पहाड़ों को तश्कील देता, हवा को ख़लक़ करता और अपने ख़यालात को इनसान पर ज़ाहिर करता है। वही तड़का और अंधेरा पैदा करता और वही ज़मीन की बुलंदियों पर चलता है। उसका नाम ‘रब, लशकरों का ख़ुदा’ है।

मेरे पास लौट आओ!

5 ऐ इसराईली क़ौम, मेरी बात सुनो, तुम्हारे बारे में मेरे नोहा पर ध्यान दो!
2“कुँवारी इसराईल गिर गई है और आइंदा कभी नहीं उठेगी। उसे उस की अपनी ज़मीन पर पटख़ दिया गया है, और कोई उसे दुबारा खड़ा नहीं करेगा।”

3रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “इस-राईल के जिस शहर से 1,000 मर्द लड़ने के लिए निकलेंगे उसके सिर्फ़ 100 अफ़राद वापस आएँगे। और जिस शहर से 100 निकलेंगे, उसके सिर्फ़ 10 मर्द वापस आएँगे।”
4क्योंकि रब इसराईली क़ौम से फ़रमाता है, “मुझे तलाश करो तो तुम जीते रहोगे।
5न बैतेल के तालिब हो, न जिलजाल के पास जाओ, और न बैर-सबा के लिए रवाना हो जाओ! क्योंकि जिलजाल के बाशिंदे यक़ीनन जिलावतन हो जाएंगे, और बैतेल नेस्तो-नाबूद हो जाएगा।”

6रब को तलाश करो तो तुम जीते रहोगे। वरना वह आग की तरह यूसुफ़ के घराने में से गुज़रकर बैतेल को भस्म करेगा, और उसे कोई नहीं बुझा सकेगा।

हर तरफ़ नाइनसाफ़ी

7उन पर अफ़सोस जो इनसाफ़ को उलट-कर ज़हर में बदल देते, जो रास्ती को ज़मीन पर पटख़ देते हैं!

8अल्लाह सात सहेलियों के झुमके और जौज़े
का ख़ालिक़ है। अंधेरे को वह सुबह की रौशनी
में और दिन को रात में बदल देता है। जो समुंदर
के पानी को बुलाकर रूए-ज़मीन पर उंडेल देता है
उसका नाम रब है! 9अचानक ही वह ज़ोरावरों पर
आफ़त लाता है, और उसके कहने पर क़िलाबंद
शहर तबाह हो जाता है।

10तुम उससे नफ़रत करते हो जो अदालत में
इनसाफ़ करे, तुम्हें उससे घिन आती है जो सच
बोले। 11तुम ग़रीबों को कुचलकर उनके अनाज
पर हद से ज़्यादा टैक्स लगाते हो। इसलिए गो
तुमने तराशे हुए पत्थरों से शानदार घर बनाए
हैं तो भी उनमें नहीं रहोगे, गो तुमने अंगूर के
फलते-फूलते बाग़ लगाए हैं तो भी उनकी मै
से महज़ूज़ नहीं होगे। 12मैं तो तुम्हारे मुतअद्दिद
जरायम और संगीन गुनाहों से ख़ूब वाक़िफ़
हूँ। तुम रास्तबाज़ों पर ज़ुल्म करते और रिश्वत
लेकर ग़रीबों को अदालत में इनसाफ़ से महरूम
रखते हो। 13इसलिए समझदार शख़्स इस वक़्त
ख़ामोश रहता है, वक़्त इतना ही बुरा है।

14बुराई को तलाश न करो बल्कि अच्छाई को,
तब ही जीते रहोगे। तब ही तुम्हारा दावा दुरुस्त
होगा कि रब जो लशकरों का ख़ुदा है हमारे साथ
है। 15बुराई से नफ़रत करो और जो कुछ अच्छा
है उसे प्यार करो। अदालतों में इनसाफ़ क़ायम
रखो, शायद रब जो लशकरों का ख़ुदा है यूसुफ़
के बचे-खुचे हिस्से पर रहम करे।

16चुनाँचे रब जो लशकरों का ख़ुदा और हमारा
आक़ा है फ़रमाता है, “तमाम चौकों में आहो-बुका
होगी, तमाम गलियों में लोग ‘हाय, हाय’ करेंगे।
खेतीबाड़ी करनेवालों को भी बुलाया जाएगा
ताकि पेशावराना तौर पर सोग मनानेवालों के
साथ गिर्याओ-ज़ारी करें। 17अंगूर के तमाम बाग़ों
में वावैला मचेगा, क्योंकि मैं ख़ुद तुम्हारे दरमियान
से गुज़रूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

रब का दिन हौलनाक है

18उन पर अफ़सोस जो कहते हैं, “काश रब
का दिन आ जाए!” तुम्हारे लिए रब के दिन का
क्या फ़ायदा होगा? वह तो तुम्हारे लिए रौशनी
का नहीं बल्कि तारीकी का बाइस होगा। 19तब
तुम उस आदमी की मानिंद होगे जो शेरबबर से
भागकर रीछ से टकरा जाता है। जब घर में पनाह
लेकर हाथ से दीवार का सहारा लेता है तो साँप
उसे डस लेता है।

20हाँ, रब का दिन तुम्हारे लिए रौशनी का नहीं
बल्कि तारीकी का बाइस होगा। ऐसा अंधेरा होगा
कि उम्मीद की किरण तक नज़र नहीं आएगी।

21रब फ़रमाता है, “मुझे तुम्हारे मज़हबी
तहवारों से नफ़रत है, मैं उन्हें हक़ीर जानता हूँ।
तुम्हारे इजतिमाओं से मुझे घिन आती है। 22जो
भस्म होनेवाली और ग़ल्ला की क़ुरबानियाँ तुम
मुझे पेश करते हो उन्हें मैं पसंद नहीं करता, जो
मोटे-ताज़े बैल तुम मुझे सलामती की क़ुरबानी के
तौर पर चढ़ाते हो उन पर मैं नज़र भी नहीं डालना
चाहता। 23दफ़ा करो अपने गीतों का शोर! मैं
तुम्हारे सितारों की मौसीक़ी सुनना नहीं चाहता।
24इन चीज़ों की बजाए इनसाफ़ का चश्मा फूट
निकले और रास्ती की कभी बंद न होनेवाली नहर
बह निकले।

25ऐ इसराईल के घराने, जब तुम रेगिस्तान में
घुमते-फिरते थे तो क्या तुमने उन 40 सालों के
दौरान कभी मुझे ज़बह और ग़ल्ला की क़ुरबानियाँ
पेश कीं? 26नहीं, उस वक़्त भी तुम अपने
बादशाह सक्कूत देवता और अपने सितारे कीवान
देवता को उठाए फिरते थे, गो तुमने अपने हाथों
से यह बुत अपने लिए बना लिए थे। 27इसलिए
रब जिसका नाम लशकरों का ख़ुदा है फ़रमाता
है कि मैं तुम्हें जिलावतन करके दमिश्क़ के पार
बसा दूँगा।”

राहनुमाओं की ख़ुदएतमादी और ऐयाशी

6 कोहे-सिय्यून के बेपरवा बाशिंदों पर
अफ़सोस! कोहे-सामरिया के बा-

शिंदों पर अफ़सोस जो अपने आपको महफ़ूज़ समझते हैं। हाँ, सबसे आला क़ौम के उन शुरफ़ा पर अफ़सोस जिनके पास इसराईली क़ौम मदद के लिए आती है। 2कलना शहर के पास जाकर उस पर ग़ौर करो, वहाँ से अज़ीम शहर हमात के पास पहुँचो, फिर फ़िलिस्ती मुल्क के शहर जात के पास उतरो। क्या तुम इन ममालिक से बेहतर हो? क्या तुम्हारा इलाक़ा इनकी निसबत बड़ा है?

3तुम अपने आपको आफ़त के दिन से दूर समझकर अपनी ज़ालिम हुकूमत दूसरों पर जताते हो। 4तुम हाथीदाँत से आरास्ता पलंगों पर सोते और अपने शानदार सोफ़ों पर पाँव फैलाते हो। खाने के लिए तुम अपने रेवड़ों से अच्छे अच्छे भेड़ के बच्चे और मोटे-ताज़े बछड़े चुन लेते हो। 5तुम अपने सितारों को बजा बजाकर दाऊद की तरह मुख़्तलिफ़ क़िस्म के गीत तैयार करते हो। 6मै को तुम बड़े बड़े प्यालों से पी लेते, बेहतरीन क़िस्म के तेल अपने जिस्म पर मिलते हो। अफ़सोस, तुम परवा ही नहीं करते कि यूसुफ़ का घराना तबाह होनेवाला है।

7इसलिए तुम उन लोगों में से होगे जो पहले क़ैदी बनकर जिलावतन हो जाएंगे। तब तुम्हारी रंगरलियाँ बंद हो जाएँगी, तुम्हारी आवारागर्द और काहिल ज़िंदगी ख़त्म हो जाएगी।

8रब जो लशकरों का ख़ुदा है फ़रमाता है, "मुझे याक़ूब का ग़ुरूर देखकर घिन आती है, उसके महलों से मैं मुतनफ़्फ़िर हूँ। मैं शहर और जो कुछ उसमें है दुश्मन के हवाले कर दूँगा। मेरे नाम की क़सम, यह मेरा, रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।" 9उस वक़्त अगर एक घर में दस आदमी रह जाएँ तो वह भी मर जाएंगे। 10फिर जब कोई रिश्तेदार आए ताकि लाशों को उठाकर दफ़नाने जाए और देखे कि घर के किसी कोने में अभी कोई छुपकर बच गया है तो वह उससे पूछेगा, "क्या आपके अलावा कोई और भी बचा है?" तो वह जवाब देगा, "नहीं, एक भी नहीं।" तब रिश्तेदार कहेगा, "चुप! रब के नाम का ज़िक्र मत करना, ऐसा न हो कि वह तुझे भी मौत के घाट उतारे।"[a]

11क्योंकि रब ने हुक्म दिया है कि शानदार घरों को टुकड़े टुकड़े और छोटे घरों को रेज़ा रेज़ा किया जाए।

12क्या घोड़े चट्टानों पर सरपट दौड़ते हैं? क्या इनसान बैल लेकर उन पर हल चलाता है? लेकिन तुम इतनी ही ग़ैरफ़ितरी हरकतें करते हो। क्योंकि तुम इनसाफ़ को ज़हर में और रास्ती का मीठा फल कड़वाहट में बदल देते हो। 13तुम लो-दिबार की फ़तह पर शादियाना बजा बजाकर फ़ख़र करते हो, "हमने अपनी ही ताक़त से क़रनैम पर क़ब्ज़ा कर लिया!" 14चुनाँचे रब जो लशकरों का ख़ुदा है फ़रमाता है, "ऐ इसराईली क़ौम, मैं तेरे ख़िलाफ़ एक क़ौम को तहरीक दूँगा जो तुझे शिमाल के शहर लबो-हमात से लेकर जुनूब की वादी अराबा तक अज़ियत पहुँचाएगी।"

टिड्डियों की रोया

7 रब क़ादिरे-मुतलक़ ने मुझे रोया दिखाई। मैंने देखा कि अल्लाह टिड्डियों के ग़ोल पैदा कर रहा है। उस वक़्त पहली घास की कटाई हो चुकी थी, वह घास जो बादशाह के लिए मुक़र्रर थी। अब घास दुबारा उगने लगी थी। 2तब टिड्डियाँ मुल्क की पूरी हरियाली पर टूट पड़ीं और सब कुछ खा गईं। मैं चिल्ला उठा, "ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, मेहरबानी करके मुआफ़ कर, वरना याक़ूब किस तरह क़ायम रहेगा? वह पहले से इतनी छोटी क़ौम है।" 3तब रब पछताया और फ़रमाया, "जो कुछ तूने देखा वह पेश नहीं आएगा।"

आग की रोया

4फिर रब क़ादिरे-मुतलक़ ने मुझे एक और रोया दिखाई। मैंने देखा कि रब क़ादिरे-मुतलक़

[a]'ऐसा न हो कि वह . . . घाट उतारे' इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो।

आग की बारिश बुला रहा है ताकि मुल्क पर
बरसे। आग ने समुंदर की गहराइयों को ख़ुश्क कर
दिया, फिर मुल्क में फैलने लगी। 5तब मैं चिल्ला
उठा, “ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, मेहरबानी करके
इससे बाज़ आ, वरना याक़ूब किस तरह क़ायम
रहेगा? वह पहले से इतनी छोटी क़ौम है।” 6तब
रब दुबारा पछताया और फ़रमाया, “यह भी पेश
नहीं आएगा।”

साहूल की रोया

7इसके बाद रब ने मुझे एक तीसरी रोया
दिखाई। मैंने देखा कि क़ादिरे-मुतलक़ एक ऐसी
दीवार पर खड़ा है जो साहूल से नाप नापकर
तामीर की गई है। उसके हाथ में साहूल था। 8रब
ने मुझसे पूछा, “ऐ आमूस, तुझे क्या नज़र आता
है?” मैंने जवाब दिया, “साहूल।” तब रब ने
फ़रमाया, “मैं अपनी क़ौम इसराईल के दरमियान
साहूल लगानेवाला हूँ। आइंदा मैं उनके गुनाहों
को नज़रंदाज़ नहीं करूँगा बल्कि नाप नापकर
उनको सज़ा दूँगा। 9उन बुलंदियों की क़ुरबानगाहें
तबाह हो जाएँगी जहाँ इसहाक़ की औलाद अपनी
क़ुरबानियाँ पेश करती है। इसराईल के मक़दिस
ख़ाक में मिलाए जाएंगे, और मैं अपनी तलवार को
पकड़कर यरुबियाम के ख़ानदान पर टूट पड़ूँगा।”

आमूस को इसराईल से निकलने का हुक्म दिया जाता है

10यह सुनकर बैतेल के इमाम अमसियाह
ने इसराईल के बादशाह यरुबियाम को इत्तला
दी, “आमूस इसराईल के दरमियान ही आपके
ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहा है! मुल्क उसके
पैग़ाम बरदाश्त नहीं कर सकता, 11क्योंकि वह
कहता है, ‘यरुबियाम तलवार की ज़द में आकर
मर जाएगा, और इसराईली क़ौम यक़ीनन क़ैदी
बनकर जिलावतन हो जाएगी’।”

12अमसियाह ने आमूस से कहा, “ऐ रोया
देखनेवाले, यहाँ से निकल जा! मुल्के-यहूदाह
में भागकर वहीं रोज़ी कमा, वहीं नबुव्वत कर।
13आइंदा बैतेल में नबुव्वत मत करना, क्योंकि
यह बादशाह का मक़दिस और बादशाही की
मरकज़ी इबादतगाह है।”

14आमूस ने जवाब दिया, “पेशा के लिहाज़
से न मैं नबी हूँ, न किसी नबी का शागिर्द बल्कि
गल्लाबान और अंजीर-तूत का बाग़बान। 15तो
भी रब ने मुझे भेड़-बकरियों की गल्लाबानी करने
से हटाकर हुक्म दिया कि मेरी क़ौम इसराईल
के पास जा और नबुव्वत करके उसे मेरा कलाम
पेश कर। 16अब रब का कलाम सुन! तू कहता
है, ‘इसराईल के ख़िलाफ़ नबुव्वत मत करना,
इसहाक़ की क़ौम के ख़िलाफ़ बात मत करना।’
17जवाब में रब फ़रमाता है, ‘तेरी बीवी शहर
में कसबी बनेगी, तेरे बेटे-बेटियाँ सब तलवार से
क़त्ल हो जाएंगे, तेरी ज़मीन नापकर दूसरों में
तक़सीम की जाएगी, और तू ख़ुद एक नापाक
मुल्क में वफ़ात पाएगा। यक़ीनन इसराईली क़ौम
क़ैदी बनकर जिलावतन हो जाएगी’।”

पके फल से भरी टोकरी

8 एक बार फिर रब क़ादिरे-मुतलक़ ने मुझे
रोया दिखाई। मैंने पके हुए फल से भरी
हुई टोकरी देखी। 2रब ने पूछा, “ऐ आमूस, तुझे
क्या नज़र आता है?” मैंने जवाब दिया, “पके
हुए फल से भरी हुई टोकरी।” तब रब ने मुझसे
फ़रमाया, “मेरी क़ौम का अंजाम पक गया है।
अब से मैं उन्हें सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। 3रब
क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि उस दिन महल
में गीत सुनाई नहीं देंगे बल्कि आहो-ज़ारी। चारों
तरफ़ नाशें नज़र आएँगी, क्योंकि दुश्मन उन्हें हर
जगह फेंकेगा। ख़ामोश!”

अवाम का इस्तेह्साल

4ऐ ग़रीबों को कुचलनेवालो, ऐ ज़रू-
रतमंदों को तबाह करनेवालो, सुनो! 5-6तुम
कहते हो, “नए चाँद की ईद कब गुज़र जाएगी,
सबत का दिन कब ख़त्म है ताकि हम अनाज
के गोदाम खोलकर ग़ल्ला बेच सकें? तब हम

पैमाइश के बरतन छोटे और तराज़ू के बाट हलके बनाएँगे, साथ साथ सौदे का भाव बढ़ाएँगे। हम फ़रोख़्त करते वक़्त अनाज के साथ उसका भूसा भी मिलाएँगे।” अपने नाजायज़ तरीक़ों से तुम थोड़े पैसों में बल्कि एक जोड़ी जूतों के एवज़ ग़रीबों को ख़रीदते हो।

7रब ने याक़ूब के फ़ख़र की क़सम खाकर वादा किया है, “जो कुछ उनसे सरज़द हुआ है उसे मैं कभी नहीं भूलूँगा। 8उन्हीं की वजह से ज़मीन लरज़ उठेगी और उसके तमाम बाशिंदे मातम करेंगे। जिस तरह मिसर में दरियाए-नील बरसात के मौसम में सैलाबी सूरत इख़्तियार कर लेता है उसी तरह पूरी ज़मीन उठेगी। वह नील की तरह जोश में आएगी, फिर दुबारा उतर जाएगी।”

9रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “उस दिन मैं होने दूँगा कि सूरज दोपहर के वक़्त ग़ुरूब हो जाए। दिन उरूज पर ही होगा तो ज़मीन पर अंधेरा छा जाएगा। 10मैं तुम्हारे तहवारों को मातम में और तुम्हारे गीतों को आहो-बुका में बदल दूँगा। मैं सबको टाट के मातमी लिबास पहनाकर हर एक का सर मुँडवाऊँगा। लोग यों मातम करेंगे जैसा उनका वाहिद बेटा कूच कर गया हो। अंजाम का वह दिन कितना तलख़ होगा।”

अल्लाह आइंदा जवाब नहीं देगा

11क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “ऐसे दिन आनेवाले हैं जब मैं मुल्क में काल भेजूँगा। लेकिन लोग न रोटी और न पानी से बल्कि अल्लाह का कलाम सुनने से महरूम रहेंगे। 12लोग लड़खड़ाते हुए एक समुंदर से दूसरे तक और शिमाल से मशरिक़ तक फिरेंगे ताकि रब का कलाम मिल जाए, लेकिन बेसूद।

13उस दिन ख़ूबसूरत कुँवारियाँ और जवान मर्द प्यास के मारे बेहोश हो जाएंगे। 14जो इस वक़्त सामरिया के मकरूह बुत की क़सम खाते और कहते हैं, ‘ऐ दान, तेरे देवता की हयात की क़सम’ या ‘ऐ बैर-सबा, तेरे देवता की क़सम!’ वह उस वक़्त गिर जाएंगे और दुबारा कभी नहीं उठेंगे।”

आख़िरी रोया : इसराईल की तबाही

9 मैंने रब को क़ुरबानगाह के पास खड़ा देखा। उसने फ़रमाया, “मक़दिस के सतूनों के बालाई हिस्सों को इतने ज़ोर से मार कि दहलीज़ें लरज़ उठें और उनके टुकड़े हाज़िरीन के सरों पर गिर जाएँ। उनमें से जितने ज़िंदा रहें उन्हें मैं तलवार से मार डालूँगा। एक भी भाग जाने में कामयाब नहीं होगा, एक भी नहीं बचेगा। 2ख़ाह वह ज़मीन में खोद खोदकर पाताल तक क्यों न पहुँचें तो भी मेरा हाथ उन्हें पकड़कर वहाँ से वापस लाएगा। और ख़ाह वह आसमान तक क्यों न चढ़ जाएँ तो भी मैं उन्हें वहाँ से उतारूँगा। 3ख़ाह वह करमिल की चोटी पर क्यों न छुप जाएँ तो भी मैं उनका खोज लगाकर उन्हें छीन लूँगा। गो वह समुंदर की तह तक उतरकर मुझसे पोशीदा होने की कोशिश क्यों न करें तो भी बेफ़ायदा होगा, क्योंकि मैं समुंदरी साँप को उन्हें डसने का हुक्म दूँगा। 4अगर उनके दुश्मन उन्हें भगाकर जिलावतन करें तो मैं तलवार को उन्हें क़त्ल करने का हुक्म दूँगा। मैं ध्यान से उनको तकता रहूँगा, लेकिन बरकत देने के लिए नहीं बल्कि नुक़सान पहुँचाने के लिए।”

5क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज है। जब वह ज़मीन को छू देता है तो वह लरज़ उठती और उसके तमाम बाशिंदे मातम करने लगते हैं। तब जिस तरह मिसर में दरियाए-नील बरसात के मौसम में सैलाब की सूरत इख़्तियार कर लेता है उसी तरह पूरी ज़मीन उठती, फिर दुबारा उतर जाती है।

6वह आसमान पर अपना बालाखाना तामीर करता और ज़मीन पर अपने तहख़ाने की बुनियाद डालता है। वह समुंदर का पानी बुलाकर रूए-ज़मीन पर उंडेल देता है। उसी का नाम रब है!

तुम दूसरों से बेहतर नहीं

7रब फ़रमाता है, “ऐ इसराईलियो, यह मत समझना कि मेरे नज़दीक तुम एथोपिया के बाशिंदों से बेहतर हो। बेशक मैं इसराईल को

मिसर से निकाल लाया, लेकिन बिलकुल इसी तरह मैं फ़िलिस्तियों को क्रेते[a] से और अरामियों को क़ीर से निकाल लाया।
8मैं, रब क़ादिरे-मुतलक़ ध्यान से इसराईल की गुनाहआलूदा बादशाही पर ग़ौर कर रहा हूँ। यक़ीनन मैं उसे रूए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा।”

ताहम रब फ़रमाता है, “मैं याक़ूब के घराने को सरासर तबाह नहीं करूँगा।
9मेरे हुक्म पर इसराईली क़ौम को तमाम अक़वाम के दरमियान ही यों हिलाया जाएगा जिस तरह अनाज को छलनी में हिला हिलाकर पाक-साफ़ किया जाता है। आख़िर में एक भी पत्थर अनाज में बाक़ी नहीं रहेगा।
10मेरी क़ौम के तमाम गुनाहगार तलवार की ज़द में आकर मर जाएंगे, गो वह इस वक़्त कहते हैं कि न हम पर आफ़त आएगी, न हम उस की ज़द में आएँगे।

इसराईल के लिए नई उम्मीद

11उस दिन मैं दाऊद के गिरे हुए घर को नए सिरे से खड़ा करूँगा। मैं उसके रख़नों को बंद और उसके खंडरात को बहाल करूँगा। मैं सब कुछ यों तामीर करूँगा जिस तरह क़दीम ज़माने में था।
12तब इसराईली अदोम के बचे-खुचे हिस्से और उन तमाम क़ौमों पर क़ब्ज़ा करेंगे जिन पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है।” यह रब का फ़रमान है, और वह यह करेगा भी।

13रब फ़रमाता है, “ऐसे दिन आनेवाले हैं जब फ़सलें बहुत ही ज़्यादा होंगी। फ़सल की कटाई के लिए इतना वक़्त दरकार होगा कि आख़िरकार हल चलानेवाला कटाई करनेवालों के पीछे पीछे खेत को अगली फ़सल के लिए तैयार करता जाएगा। अंगूर की फ़सल भी ऐसी ही होगी। अंगूर की कसरत के बाइस उनसे रस निकालने के लिए इतना वक़्त लगेगा कि आख़िरकार बीज बोनेवाला साथ साथ बीज बोने का काम शुरू करेगा। कसरत के बाइस नई मै पहाड़ों से टपकेगी और तमाम पहाड़ियों से बहेगी।

14उस वक़्त मैं अपनी क़ौम इसराईल को बहाल करूँगा। तब वह तबाहशुदा शहरों को नए सिरे से तामीर करके उनमें आबाद हो जाएंगे। वह अंगूर के बाग़ लगाकर उनकी मै पिएँगे, दीगर फलों के बाग़ लगाकर उनका फल खाएँगे।
15मैं उन्हें पनीरी की तरह उनके अपने मुल्क में लगा दूँगा। तब वह आइंदा उस मुल्क से कभी जड़ से नहीं उखाड़े जाएंगे जो मैंने उन्हें अता किया है।” यह रब तेरे ख़ुदा का फ़रमान है।

[a]क्रेते : इबरानी कफ़्तूर।

अबदियाह

रब अदोम की अदालत करेगा

1 ज़ैल में वह रोया क़लमबंद है जो अबदि-
याह ने देखी। उसमें वह कुछ बयान किया गया
है जो रब क़ादिरे-मुतलक़ ने अदोम के बारे में
फ़रमाया।

हमने रब की तरफ़ से पैग़ाम सुना है, एक
क़ासिद को अक़वाम के पास भेजा गया है जो
उन्हें हुक्म दे, “उठो! आओ, हम अदोम से लड़ने
के लिए तैयार हो जाएँ।”

2 रब अदोम से फ़रमाता है, “मैं तुझे क़ौमों
में छोटा बना दूँगा, और तुझे बहुत हक़ीर जाना
जाएगा। 3 तेरे दिल के ग़ुरूर ने तुझे फ़रेब दिया
है। चूँकि तू चट्टानों की दराड़ों में और बुलंदियों पर
रहता है इसलिए तू दिल में सोचता है, ‘कौन मुझे
यहाँ से उतार देगा’?” 4 लेकिन रब फ़रमाता है,
“ख़ाह तू अपना घोंसला उक़ाब की तरह बुलंदी
पर क्यों न बनाए बल्कि उसे सितारों के दरमियान
लगा ले, तो भी मैं तुझे वहाँ से उतारकर ख़ाक में
मिला दूँगा।

5 अगर डाकू रात के वक़्त तुझे लूट लेते तो
वह सिर्फ़ उतना ही छीन लेते जितना उठाकर
ले जा सकते हैं। अगर तू अंगूर का बाग़ होता
और मज़दूर फ़सल चुनने के लिए आते तो थोड़ा-
बहुत उनके पीछे रह जाता। लेकिन तेरा अंजाम
इससे कहीं ज़्यादा बुरा होगा। 6 दुश्मन एसौ[a] के
कोने कोने का खोज लगा लगाकर उसके तमाम
पोशीदा ख़ज़ाने लूट लेगा। 7 तेरे तमाम इत्तहादी
तुझे मुल्क की सरहद तक भगा देंगे, तेरे दोस्त
तुझे फ़रेब देकर तुझ पर ग़ालिब आएँगे। बल्कि
तेरी रोटी खानेवाले ही तेरे लिए फंदा लगाएँगे,
और तुझे पता नहीं चलेगा।” 8 रब फ़रमाता है,
“उस दिन मैं अदोम के दानिशमंदों को तबाह कर
दूँगा। तब एसौ के पहाड़ी इलाक़े में समझ और
अक़्ल का नामो-निशान नहीं रहेगा। 9 ऐ तेमान,
तेरे सूरमे भी सख़्त दहशत खाएँगे, क्योंकि उस
वक़्त एसौ के पहाड़ी इलाक़े में क़त्लो-ग़ारत आम
होगी, कोई नहीं बचेगा।

10 तूने अपने भाई याक़ूब[b] पर ज़ुल्मो-तशद्दुद
किया, इसलिए तेरी ख़ूब रुसवाई हो जाएगी, तुझे
यों मिटाया जाएगा कि आइंदा तेरा नामो-निशान
तक नहीं रहेगा। 11 जब अजनबी फ़ौजी यरूशलम
के दरवाज़ों में घुस आए तो तू फ़ासले पर खड़ा
होकर उन जैसा था। जब उन्होंने तमाम मालो-
दौलत छीन लिया, जब उन्होंने क़ुरा डालकर
आपस में यरूशलम को बाँट लिया तो तूने उनका
ही रवैया अपना लिया। 12 तुझे तेरे भाई की
बदक़िस्मती पर ख़ुशी नहीं मनानी चाहिए थी।
मुनासिब नहीं था कि तू यहूदाह के बाशिंदों की
तबाही पर शादियाना बजाता। उनकी मुसीबत
देखकर तुझे शेख़ी नहीं मारनी चाहिए थी। 13 यह

[a] एसौ से मुराद अदोम है।

[b] याक़ूब से मुराद इसराईल है।

ठीक नहीं था कि तू उस दिन तबाहशुदा शहर में घुस आया ताकि यरूशलम की मुसीबत से लुत्फ़ उठाए और उनका बचा-खुचा माल लूट ले। 14 कितनी बुरी बात थी कि तू शहर से निकलनेवाले रास्तों पर ताक में बैठ गया ताकि वहाँ से भागनेवालों को तबाह करे और बचे हुओं को दुश्मन के हवाले करे। 15 क्योंकि रब का दिन तमाम अक़वाम के लिए क़रीब आ गया है। जो सुलूक तूने दूसरों के साथ किया वही सुलूक तेरे साथ किया जाएगा। तेरा ग़लत काम तेरे अपने ही सर पर आएगा।

अल्लाह की क़ौम नजात पाएगी

16 पहले तुम्हें मेरे मुक़द्दस पहाड़ पर मेरे ग़ज़ब का प्याला पीना पड़ा, लेकिन अब तमाम दीगर अक़वाम उसे पीती रहेंगी। बल्कि वह उसे पी पीकर ख़ाली करेंगी, उन्हें उसके आख़िरी क़तरे भी चाटने पड़ेंगे। फिर उनका नामो-निशान नहीं रहेगा, ऐसा लगेगा कि वह कभी थीं नहीं।

17 लेकिन कोहे-सिय्यून पर नजात होगी, यरूशलम मुक़द्दस होगा।

तब याक़ूब का घराना[a] दुबारा अपनी मौरूसी ज़मीन पर क़ब्ज़ा करेगा, 18 और इसराईली क़ौम[b] भड़कती आग बनकर अदोम को भूसे की तरह भस्म करेगी। अदोम का एक शख़्स भी नहीं बचेगा। क्योंकि रब ने यह फ़रमाया है।

19 तब नजब यानी जुनूब के बाशिंदे अदोम के पहाड़ी इलाक़े पर क़ब्ज़ा करेंगे, और मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े के बाशिंदे फ़िलिस्तियों का इलाक़ा अपना लेंगे। वह इफ़राईम और सामरिया के इलाक़ों पर भी क़ब्ज़ा करेंगे। जिलियाद का इलाक़ा बिनयमीन के क़बीले की मिलकियत बनेगा। 20 इसराईल के जिलावतनों को कनानियों का मुल्क शिमाली शहर सारपत तक हासिल होगा जबकि यरूशलम के जो बाशिंदे जिलावतन होकर सिफ़ाराद में जा बसे वह जुनूबी इलाक़े नजब पर क़ब्ज़ा करेंगे। 21 नजात देनेवाले कोहे-सिय्यून पर आकर अदोम के पहाड़ी इलाक़े पर हुकूमत करेंगे। तब रब ही बादशाह होगा!”

[a] याक़ूब का घराना से मुराद इसराईल है।

[b] लफ़्ज़ी तरजुमा : याक़ूब और यूसुफ़ के घराने।

यूनुस

यूनुस अल्लाह से फ़रार हो जाता है

1 रब यूनुस बिन अमित्ती से हमकलाम हुआ,
2 “बड़े शहर नीनवा जाकर उस पर मेरी
अदालत का एलान कर, क्योंकि उनकी बुराई मेरे
हुज़ूर तक पहुँच गई है।”
3 यूनुस रवाना हुआ, लेकिन मशरिक़ी शहर
नीनवा के लिए नहीं बल्कि मग़रिबी शहर तरसीस
के लिए। रब के हुज़ूर से फ़रार होने के लिए वह
याफ़ा शहर पहुँच गया जहाँ एक बहरी जहाज़
तरसीस को जानेवाला था। सफ़र का किराया
अदा करके यूनुस जहाज़ में बैठ गया ताकि रब
के हुज़ूर से भाग निकले।
4 लेकिन रब ने समुंदर पर ज़बरदस्त आँधी
भेजी। तूफ़ान इतना शदीद था कि जहाज़ के टुकड़े
टुकड़े होने का ख़तरा था। 5 मल्लाह सहम गए,
और हर एक चीख़ता-चिल्लाता अपने देवता से
इल्तिजा करने लगा। जहाज़ को हलका करने के
लिए उन्होंने सामान को समुंदर में फेंक दिया।
लेकिन यूनुस जहाज़ के निचले हिस्से में लेट
गया था। अब वह गहरी नींद सो रहा था। 6 फिर
कप्तान उसके पास आया और कहने लगा, “आप
किस तरह सो सकते हैं? उठें, अपने देवता से
इल्तिजा करें! शायद वह हम पर ध्यान दे और
हम हलाक न हों।”
7 मल्लाह आपस में कहने लगे, “आओ, हम
क़ुरा डालकर मालूम करें कि कौन हमारी मुसीबत
का बाइस है।” उन्होंने क़ुरा डाला तो यूनुस का
नाम निकला। 8 तब उन्होंने उससे पूछा, “हमें
बताएँ कि यह आफ़त किसके क़ुसूर के बाइस
हम पर नाज़िल हुई है? आप क्या करते हैं, कहाँ
से आए हैं, किस मुल्क और किस क़ौम से हैं?”
9 यूनुस ने जवाब दिया, “मैं इबरानी हूँ, और रब
का परस्तार हूँ जो आसमान का ख़ुदा है। समुंदर
और ख़ुश्की दोनों उसी ने बनाए हैं।” 10 यूनुस ने
उन्हें यह भी बताया कि मैं रब के हुज़ूर से फ़रार
हो रहा हूँ। यह सब कुछ सुनकर दीगर मुसाफ़िरों
पर शदीद दहशत तारी हुई। उन्होंने कहा, “यह
आपने क्या किया है?” 11 इतने में समुंदर मज़ीद
मुतलातिम होता जा रहा था। चुनाँचे उन्होंने पूछा,
“अब हम आपके साथ क्या करें ताकि समुंदर
थम जाए और हमारा पीछा छोड़ दे?” 12 यूनुस
ने जवाब दिया, “मुझे उठाकर समुंदर में फेंक दें
तो वह थम जाएगा। क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह
बड़ा तूफ़ान मेरी ही वजह से आप पर टूट पड़ा
है।”
13 पहले मल्लाहों ने उसका मशवरा न माना
बल्कि चप्पू मार मारकर साहिल पर पहुँचने की
सिर-तोड़ कोशिश करते रहे। लेकिन बेफ़ायदा,
समुंदर पहले की निसबत कहीं ज़्यादा मुतलातिम
हो गया। 14 तब वह बुलंद आवाज़ से रब से
इल्तिजा करने लगे, “ऐ रब, ऐसा न हो कि हम
इस आदमी की ज़िंदगी के सबब से हलाक हो
जाएँ। और जब हम उसे समुंदर में फेंकेंगे तो
हमें बेगुनाह आदमी की जान लेने के ज़िम्मेदार

न ठहरा। क्योंकि जो कुछ हो रहा है वह तेरी ही
मरज़ी से हो रहा है।” 15 यह कहकर उन्होंने यूनुस
को उठाकर समुंदर में फेंक दिया। पानी में गिरते
ही समुंदर ठाठें मारने से बाज़ आकर थम गया।
16 यह देखकर मुसाफ़िरों पर सख़्त दहशत छा
गई, और उन्होंने रब को ज़बह की क़ुरबानी पेश
की और मन्नतें मानीं।
17 लेकिन रब ने एक बड़ी मछली को यूनुस के
पास भेजा जिसने उसे निगल लिया। यूनुस तीन
दिन और तीन रात मछली के पेट में रहा।

यूनुस की दुआ

2 मछली के पेट में यूनुस ने रब अपने ख़ुदा
से ज़ैल की दुआ की,
2 “मैंने बड़ी मुसीबत में आकर रब से इल्तिजा
की, और उसने मुझे जवाब दिया। मैंने पाताल की
गहराइयों से चीख़कर फ़रियाद की तो तूने मेरी
सुनी।
3 तूने मुझे गहरे पानी बल्कि समुंदर के बीच
में ही फेंक दिया। पानी के ज़ोरदार बहाव ने मुझे
घेर लिया, तेरी तमाम लहरें और मौजें मुझ पर से
गुज़र गईं।
4 तब मैं बोला, ‘मुझे तेरे हुज़ूर से ख़ारिज कर
दिया गया है, लेकिन मैं तेरे मुक़द्दस घर की तरफ़
तकता रहूँगा।’
5 पानी मेरे गले तक पहुँच गया, समुंदर की
गहराइयों ने मुझे छुपा लिया। मेरे सर से समुंदरी
पौदे लिपट गए।
6 पानी में उतरते उतरते मैं पहाड़ों की बुनियादों
तक पहुँच गया। मैं ज़मीन में धँसकर एक ऐसे
मुल्क में आ गया जिसके दरवाज़े हमेशा के लिए
मेरे पीछे बंद हो गए। लेकिन ऐ रब, मेरे ख़ुदा, तू
ही मेरी जान को गढ़े से निकाल लाया!
7 जब मेरी जान निकलने लगी तो तू, ऐ रब मुझे
याद आया, और मेरी दुआ तेरे मुक़द्दस घर में तेरे
हुज़ूर पहुँची।
8 जो बुतों की पूजा करते हैं उन्होंने अल्लाह से
वफ़ादार रहने का वादा तोड़ दिया है।
9 लेकिन मैं शुक्रगुज़ारी के गीत गाते हुए तुझे
क़ुरबानी पेश करूँगा। जो मन्नत मैंने मानी उसे
पूरा करूँगा। रब ही नजात देता है।”

10 तब रब ने मछली को हुक्म दिया कि वह
यूनुस को ख़ुश्की पर उगल दे।

यूनुस नीनवा में

3 रब एक बार फिर यूनुस से हमकलाम हुआ,
2 “बड़े शहर नीनवा जाकर उसे वह पैग़ाम
सुना दे जो मैं तुझे दूँगा।”
3 इस मरतबा यूनुस रब की सुनकर नीनवा के
लिए रवाना हुआ। रब के नज़दीक नीनवा अहम
शहर था। उसमें से गुज़रने के लिए तीन दिन
दरकार थे। 4 पहले दिन यूनुस शहर में दाख़िल
हुआ और चलते चलते लोगों को पैग़ाम सुनाने
लगा, “ऐन 40 दिन के बाद नीनवा तबाह हो
जाएगा।”
5 यह सुनकर नीनवा के बाशिंदे अल्लाह पर
ईमान लाए। उन्होंने रोज़े का एलान किया, और
छोटे से लेकर बड़े तक सब टाट ओढ़कर मातम
करने लगे।
6 जब यूनुस का पैग़ाम नीनवा के बादशाह
तक पहुँचा तो उसने तख़्त पर से उतरकर अपने
शाही कपड़ों को उतार दिया और टाट ओढ़कर
ख़ाक में बैठ गया। 7 उसने शहर में एलान किया,
“बादशाह और उसके शुरफ़ा का फ़रमान सुनो!
किसी को भी खाने या पीने की इजाज़त नहीं।
गाय-बैल और भेड़-बकरियों समेत तमाम जानवर
भी इसमें शामिल हैं। न उन्हें चरने दो, न पानी
पीने दो। 8 लाज़िम है कि सब लोग जानवरों
समेत टाट ओढ़ लें। हर एक पूरे ज़ोर से अल्लाह
से इल्तिजा करे, हर एक अपनी बुरी राहों और
अपने ज़ुल्मो-तशद्दुद से बाज़ आए। 9 क्या मालूम,
शायद अल्लाह पछताए। शायद उसका शदीद
ग़ज़ब टल जाए और हम हलाक न हों।”
10 जब अल्लाह ने उनका यह रवैया देखा, कि
वह वाक़ई अपनी बुरी राहों से बाज़ आए तो वह

पछताया और उन पर वह आफ़त न लाया जिसका एलान उसने किया था।

यूनुस अल्लाह की मेहरबानी देख कर नाराज़ हो जाता है

4 यह बात यूनुस को निहायत बुरी लगी, और
वह ग़ुस्से हुआ। 2 उसने रब से दुआ की,
"ऐ रब, क्या यह वही बात नहीं जो मैंने उस वक़्त की जब अभी अपने वतन में था? इसी लिए मैं इतनी तेज़ी से भागकर तरसीस के लिए रवाना हुआ था। मैं जानता था कि तू मेहरबान और रहीम ख़ुदा है। तू तहम्मुल और शफ़क़त से भरपूर है और
जल्द ही सज़ा देने से पछताता है। 3 ऐ रब, अब
मुझे जान से मार दे! जीने से बेहतर यही है कि मैं कूच कर जाऊँ।"

4 लेकिन रब ने जवाब दिया, "क्या तू ग़ुस्से होने में हक़-बजानिब है?"

5 यूनुस शहर से निकलकर उसके मशरिक़ में रुक गया। वहाँ वह अपने लिए झोंपड़ी बनाकर उसके साये में बैठ गया। क्योंकि वह देखना चाहता था कि शहर के साथ क्या कुछ हो जाएगा।

6 तब रब ख़ुदा ने एक बेल को फूटने दिया जो बढ़ते बढ़ते यूनुस के ऊपर फैल गई ताकि साया देकर उस की नाराज़ी दूर करे। यह देखकर यूनुस
बहुत ख़ुश हुआ। 7 लेकिन अगले दिन जब पौ
फटने लगी तो अल्लाह ने एक कीड़ा भेजा जिसने बेल पर हमला किया। बेल जल्द ही मुरझा गई।

8 जब सूरज तुलू हुआ तो अल्लाह ने मशरिक़ से झुलसती लू भेजी। धूप इतनी शदीद थी कि यूनुस ग़श खाने लगा। आख़िरकार वह मरना ही चाहता था। वह बोला, "जीने से बेहतर यही है कि मैं कूच कर जाऊँ।"

9 तब अल्लाह ने उससे पूछा, "क्या तू बेल के सबब से ग़ुस्से होने में हक़-बजानिब है?" यूनुस ने जवाब दिया, "जी हाँ, मैं मरने तक ग़ुस्से हूँ, और इसमें मैं हक़-बजानिब भी हूँ।"

10 रब ने जवाब दिया, "तू इस बेल पर ग़म खाता है, हालाँकि तूने उसके फलने-फूलने के लिए एक उँगली भी नहीं हिलाई। यह बेल एक रात में पैदा हुई और अगली रात ख़त्म
हुई 11 जबकि नीनवा बहुत बड़ा शहर है, उसमें
1,20,000 अफ़राद और मुतअद्दिद जानवर बसते हैं। और यह लोग इतने जाहिल हैं कि अपने दाएँ और बाएँ हाथ में इम्तियाज़ नहीं कर पाते। क्या मुझे इस बड़े शहर पर ग़म नहीं खाना चाहिए?"

मीकाह

सामरिया की तबाही

1 ज़ैल में रब का वह कलाम दर्ज है जो
मीकाह मोरश्ती पर यहूदाह के बादशाहों
यूताम, आख़ज़ और हिज़क़ियाह के दौरे-हुकूमत
में नाज़िल हुआ। उसने सामरिया और यरूशलम
के बारे में यह बातें रोया में देखीं।
2 ऐ तमाम अक़्वाम, सुनो! ऐ ज़मीन और
जो कुछ उस पर है, ध्यान दो! रब क़ादिरे-
मुतलक़ तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही दे, क़ादिरे-
मुतलक़ अपने मुक़द्दस घर की तरफ़ से गवाही
दे। 3 क्योंकि देखो, रब अपनी सुकूनतगाह से
निकल रहा है ताकि उतरकर ज़मीन की बुलंदियों
पर चले। 4 उसके पाँवों तले पहाड़ पिघल जाएंगे
और वादियाँ फट जाएँगी, वह आग के सामने
पिघलनेवाले मोम या ढलान पर उंडेले गए पानी
की मानिंद होंगे।
5 यह सब कुछ याक़ूब के जुर्म, इसराईली क़ौम
के गुनाहों के सबब से हो रहा है। कौन याक़ूब के
जुर्म का ज़िम्मेदार है? सामरिया! किसने यहूदाह
को बुलंद जगहों पर बुतपरस्ती करने की तहरीक
दी? यरूशलम ने!
6 इसलिए रब फ़रमाता है, "मैं सामरिया को
खुले मैदान में मलबे का ढेर बना दूँगा, इतनी
ख़ाली जगह कि लोग वहाँ अंगूर के बाग़ लगाएँगे।
मैं उसके पत्थर वादी में फेंक दूँगा, उसे इतने
धड़ाम से गिरा दूँगा कि उस की बुनियादें ही
नज़र आएँगी। 7 उसके तमाम बुत टुकड़े टुकड़े
हो जाएंगे, उस की इसमतफ़रोशी का पूरा अज्र
नज़रे-आतिश हो जाएगा। मैं उसके देवताओं के
तमाम मुजस्समों को तबाह कर दूँगा। क्योंकि
सामरिया ने यह तमाम चीज़ें अपनी इसमतफ़रोशी
से हासिल की हैं, और अब यह सब उससे छीन
ली जाएँगी और दीगर इसमतफ़रोशों को मुआवज़े
के तौर पर दी जाएँगी।"

अपनी क़ौम पर मातम

8 इसलिए मैं आहो-ज़ारी करूँगा, नंगे पाँव और
बरहना फिरूँगा, गीदड़ों की तरह वावैला करूँगा,
उक़ाबी उल्लू की तरह आहें भरूँगा। 9 क्योंकि
सामरिया का ज़ख़म लाइलाज है, और वह मुल्के-
यहूदाह में भी फैल गया है, वह मेरी क़ौम के
दरवाज़े यानी यरूशलम तक पहुँच गया है।
10 फ़िलिस्ती शहर जात में यह बात न बताओ,
उन्हें अपने आँसू न दिखाओ। बैत-लाफ़रा[a] में
ख़ाक में लोट-पोट हो जाओ। 11 ऐ सफ़ीर[b] के
रहनेवालो, बरहना और शर्मसार होकर यहाँ से
गुज़र जाओ। ज़ानान[c] के बाशिंदे निकलेंगे नहीं।
बैत-एज़ल[d] मातम करेगा जब तुमसे हर सहारा

[a]बैत-लाफ़रा = ख़ाक का घर।
[b]सफ़ीर = ख़ूबसूरत।
[c]ज़ानान = निकलनेवाला।
[d]बैत-एज़ल = साथवाला यानी सहारा देनेवाला घर।

छीन लिया जाएगा। 12 मारोत[a] के बसनेवाले
अपने माल के लिए पेचो-ताब खा रहे हैं, क्योंकि
रब की तरफ़ से आफ़त नाज़िल होकर यरूशलम
के दरवाज़े तक पहुँच गई है।

13 ऐ लकीस[b] के बाशिंदो, घोड़ों को रथ में
जोतकर भाग जाओ। क्योंकि इब्तिदा में तुम
ही सिय्यून बेटी के लिए गुनाह का बाइस बन
गए, तुम्हीं में वह जरायम मौजूद थे जो इसराईल
से सरज़द हो रहे हैं। 14 इसलिए तुम्हें तोह्फ़े
देकर मोरशत-जात[c] को रुख़सत करनी पड़ेगी।
अकज़ीब[d] के घर इसराईल के बादशाहों के लिए
फ़रेबदेह साबित होंगे।

15 ऐ मरेसा[e] के लोगो, मैं होने दूँगा कि एक
क़ब्ज़ा करनेवाला तुम पर हमला करेगा। तब
इसराईल का जलाल अदुल्लाम तक पहुँचेगा।
16 ऐ सिय्यून बेटी, अपने बाल कटवाकर गिद्ध
जैसी गंजी हो जा। अपने लाडले बच्चों पर मातम
कर, क्योंकि वह क़ैदी बनकर तुझसे दूर हो
जाएंगे।

क़ौम पर ज़ुल्म करनेवालों पर अफ़सोस

2 उन पर अफ़सोस जो दूसरों को नुक़सान
पहुँचाने के मनसूबे बाँधते और अपने
बिस्तर पर ही साज़िशें करते हैं। पौ फटते ही वह
उठकर उन्हें पूरा करते हैं, क्योंकि वह यह करने
का इख़्तियार रखते हैं। 2 जब वह किसी खेत या
मकान के लालच में आ जाते हैं तो उसे छीन
लेते हैं। वह लोगों पर ज़ुल्म करके उनके घर और
मौरूसी मिलकियत उनसे लूट लेते हैं।

3 चुनाँचे रब फ़रमाता है, “मैं इस क़ौम पर
आफ़त का मनसूबा बाँध रहा हूँ, ऐसा फंदा जिसमें
से तुम अपनी गरदनों को निकाल नहीं सकोगे।
तब तुम सर उठाकर नहीं फिरोगे, क्योंकि वक़्त
बुरा ही होगा। 4 उस दिन लोग अपने गीतों में
तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाएँगे, वह मातम का तलख़ गीत
गाकर तुम्हें लान-तान करेंगे,

‘हाय, हम सरासर तबाह हो गए हैं! मेरी क़ौम
की मौरूसी ज़मीन दूसरों के हाथ में आ गई है।
वह किस तरह मुझसे छीन ली गई है! हमारे काम
के जवाब में हमारे खेत दूसरों में तक़सीम हो रहे
हैं’।”

5 चुनाँचे आइंदा तुममें से कोई नहीं होगा जो
रब की जमात में क़ुरा डालकर मौरूसी ज़मीन
तक़सीम करे।

6 वह नबुव्वत करते हैं, “नबुव्वत मत करो!
नबुव्वत करते वक़्त इनसान को इस क़िस्म की
बातें नहीं सुनानी चाहिएँ। यह सहीह नहीं कि
हमारी रुसवाई हो जाएगी।” 7 ऐ याक़ूब के घराने,
क्या तुझे इस तरह की बातें करनी चाहिएँ, “क्या
रब नाराज़ है? क्या वह ऐसा काम करेगा?”

रब फ़रमाता है, “यह बात दुरुस्त है कि मैं
उससे मेहरबान बातें करता हूँ जो सहीह राह पर
चले। 8 लेकिन काफ़ी देर से मेरी क़ौम दुश्मन
बनकर उठ खड़ी हुई है। जिन लोगों का जंग
करने से ताल्लुक़ ही नहीं उनसे तुम चादर तक
सब कुछ छीन लेते हो जब वह अपने आपको
महफ़ूज़ समझकर तुम्हारे पास से गुज़रते हैं।
9 मेरी क़ौम की औरतों को तुम उनके ख़ुशनुमा
घरों से भगाकर उनके बच्चों को हमेशा के लिए
मेरी शानदार बरकतों से महरूम कर देते हो।
10 अब उठकर चले जाओ! आइंदा तुम्हें यहाँ
सुकून हासिल नहीं होगा। क्योंकि नापाकी के
सबब से यह मक़ाम अज़ियतनाक तरीक़े से
तबाह हो जाएगा। 11 हक़ीक़त में यह क़ौम ऐसा

[a] मारोत = तलख़ी।
[b] लकीस के क़िलाबंद शहर में जंगी रथ रखे जाते थे।
[c] ‘मोरशत’ तोह्फ़े और जहेज़ के लिए मुस्तामल इबरानी लफ़्ज़ से मिलता-जुलता है।
[d] अकज़ीब = फ़रेब है।
[e] ‘मरेसा’ फ़ातेह और क़ाबिज़ के लिए मुस्तामल इबरानी लफ़्ज़ से मिलता-जुलता है।

फ़रेबदेह नबी चाहती है जो ख़ाली हाथ आकर[a] उससे कहे, 'तुम्हें कसरत की मै और शराब हासिल होगी!'

अल्लाह क़ौम को वापस लाएगा

12 ऐ याक़ूब की औलाद, एक दिन मैं तुम सबको यक़ीनन जमा करूँगा। तब मैं इसराईल का बचा हुआ हिस्सा यों इकट्ठा करूँगा जिस तरह भेड़-बकरियों को बाड़े में या रेवड़ को चरागाह में। मुल्क में चारों तरफ़ हुजूमों का शोर मचेगा।
13 एक राहनुमा उनके आगे आगे चलेगा जो उनके लिए रास्ता खोलेगा। तब वह शहर के दरवाज़े को तोड़कर उसमें से निकलेंगे। उनका बादशाह उनके आगे आगे चलेगा, रब ख़ुद उनकी राहनुमाई करेगा।"

राहनुमाओं और झूटे नबियों पर इलाही फ़ैसला

3 मैं बोला, "ऐ याक़ूब के राहनुमाओ, ऐ इसराईल के बुज़ुर्गो, सुनो! तुम्हें इनसाफ़ को जानना चाहिए। 2 लेकिन जो अच्छा है उससे तुम नफ़रत करते और जो ग़लत है उसे प्यार करते हो। तुम मेरी क़ौम की खाल उतारकर उसका गोश्त हड्डियों से जुदा कर लेते हो। 3 क्योंकि तुम मेरी क़ौम का गोश्त खा लेते हो। उनकी खाल उतारकर तुम उनकी हड्डियों और गोश्त को टुकड़े टुकड़े करके देग में फेंक देते हो।" 4 तब वह चिल्लाकर रब से इल्तिजा करेंगे, लेकिन वह उनकी नहीं सुनेगा। उनके ग़लत कामों के सबब से वह अपना चेहरा उनसे छुपा लेगा।

5 रब फ़रमाता है, "ऐ नबियो, तुम मेरी क़ौम को भटका रहे हो। अगर तुम्हें कुछ खिलाया जाए तो तुम एलान करते हो कि अमनो-अमान होगा। लेकिन जो तुम्हें कुछ न खिलाए उस पर तुम जिहाद का फ़तवा देते हो। 6 चुनाँचे तुम पर ऐसी रात छा जाएगी जिसमें तुम रोया नहीं देखोगे, ऐसी तारीकी जिसमें तुम्हें मुस्तक़बिल के बारे में कोई भी बात नहीं मिलेगी। नबियों पर सूरज डूब जाएगा, उनके चारों तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा छा जाएगा। 7 तब रोया देखनेवाले शर्मसार और क़िस्मत का हाल बतानेवाले शरमिंदा हो जाएंगे। शर्म के मारे वह अपने मुँह को छुपा लेंगे,[b] क्योंकि अल्लाह से कोई भी जवाब नहीं मिलेगा।"

8 लेकिन मैं ख़ुद क़ुव्वत से, रब के रूह से और इनसाफ़ और ताक़त से भरा हुआ हूँ ताकि याक़ूब की औलाद को उसके जरायम और इसराईल को उसके गुनाह सुना सकूँ।

9 ऐ याक़ूब के राहनुमाओ, ऐ इसराईल के बुज़ुर्गो, सुनो! तुम इनसाफ़ से घिन खाकर हर सीधी बात को टेढ़ी बना लेते हो। 10 तुम सिय्यून को ख़ूनरेज़ी से और यरूशलम को नाइनसाफ़ी से तामीर कर रहे हो। 11 यरूशलम के बुज़ुर्ग अदालत करते वक़्त रिश्वत लेते हैं। उसके इमाम तालीम देते हैं लेकिन सिर्फ़ कुछ मिलने के लिए। उसके नबी पेशगोई सुना देते हैं लेकिन सिर्फ़ पैसों के मुआवज़े में। ताहम यह लोग रब पर इनहिसार करके कहते हैं, "हम पर आफ़त आ ही नहीं सकती, क्योंकि रब हमारे दरमियान है।"

12 तुम्हारी वजह से सिय्यून पर हल चलाया जाएगा और यरूशलम मलबे का ढेर बन जाएगा। जिस पहाड़ पर रब का घर है उस पर जंगल छा जाएगा।

यरूशलम एक नई बादशाही का मरकज़ बन जाएगा

4 आख़िरी ऐयाम में रब के घर का पहाड़ मज़बूती से क़ायम होगा। सबसे बड़ा यह पहाड़ दीगर तमाम बुलंदियों से कहीं ज़्यादा सरफ़राज़ होगा। तब उम्मतें जौक़-दर-जौक़ उसके पास पहुँचेंगी, 2 और बेशुमार क़ौमें आकर कहेंगी, "आओ, हम रब के पहाड़ पर चढ़कर याक़ूब के ख़ुदा के घर के पास जाएँ ताकि वह

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : जो हवा यानी कुछ नहीं अपने साथ लेकर आए।

[b] मुँह का लफ़्ज़ी तरजुमा 'मूँछें' है।

हमें अपनी मरज़ी की तालीम दे और हम उस की
राहों पर चलें।”
क्योंकि सिय्यून पहाड़ से रब की हिदायत
निकलेगी, और यरूशलम से उसका कलाम
सादिर होगा। 3 रब बैनुल-अक़वामी झगड़ों को
निपटाएगा और दूर तक की ज़ोरावर क़ौमों का
इनसाफ़ करेगा। तब वह अपनी तलवारों को
कूटकर फाले बनाएँगी और अपने नेज़ों को काँट-
छाँट के औज़ार में तबदील करेंगी। अब से न एक
क़ौम दूसरी पर हमला करेगी, न लोग जंग करने
की तरबियत हासिल करेंगे। 4 हर एक अपनी
अंगूर की बेल और अपने अंजीर के दरख़्त के
साये में बैठकर आराम करेगा। कोई नहीं रहेगा जो
उन्हें अचानक दहशतज़दा करे। क्योंकि रब्बुल-
अफ़वाज ने यह कुछ फ़रमाया है।
5 हर दूसरी क़ौम अपने देवता का नाम लेकर
फिरती है, लेकिन हम हमेशा तक रब अपने ख़ुदा
का नाम लेकर फिरेंगे।
6 रब फ़रमाता है, “उस दिन मैं लँगड़ों को जमा
करूँगा और उन्हें इकट्ठा करूँगा जिन्हें मैंने मुंतशिर
करके दुख पहुँचाया था। 7 मैं लँगड़ों को क़ौम का
बचा हुआ हिस्सा बना दूँगा और जो दूर तक भटक
गए थे उन्हें ताक़तवर उम्मत में तबदील करूँगा।
तब रब उनका बादशाह बनकर अबद तक सिय्यून
पहाड़ पर उन पर हुकूमत करेगा। 8 जहाँ तक तेरा
ताल्लुक़ है, ऐ रेवड़ के बुर्ज, ऐ सिय्यून बेटी के
पहाड़, तुझे पहले की-सी सलतनत हासिल होगी।
यरूशलम बेटी को दुबारा बादशाहत मिलेगी।”

यरूशलम अभी तक ख़तरे में है

9 ऐ यरूशलम बेटी, इस वक़्त तू इतने ज़ोर से
क्यों चीख़ रही है? क्या तेरा कोई बादशाह नहीं?
क्या तेरे मुशीर सब ख़त्म हो गए हैं कि तू दर्दे-ज़ह
में मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खा रही है?
10 ऐ सिय्यून बेटी, जन्म देनेवाली औरत की
तरह तड़पती और चीख़ती जा! क्योंकि अब तुझे
शहर से निकलकर खुले मैदान में रहना पड़ेगा,
आख़िर में तू बाबल तक पहुँचेगी। लेकिन वहाँ रब
तुझे बचाएगा, वहाँ वह एवज़ाना देकर तुझे दुश्मन
के हाथ से छुड़ाएगा।
11 इस वक़्त तो मुतअद्दिद क़ौमें तेरे ख़िलाफ़
जमा हो गई हैं। आपस में वह कह रही हैं, “आओ,
यरूशलम की बेहुरमती हो जाए, हम सिय्यून की
हालत देखकर लुत्फ़अंदोज़ हो जाएँ।” 12 लेकिन
वह रब के ख़यालात को नहीं जानते, उसका
मनसूबा नहीं समझते। उन्हें मालूम नहीं कि वह
उन्हें गंदुम के पूलों की तरह इकट्ठा कर रहा है
ताकि उन्हें गाह ले।
13 “ऐ सिय्यून बेटी, उठकर गाह ले! क्योंकि मैं
तुझे लोहे के सींगों और पीतल के खुरों से नवाज़ूँगा
ताकि तू बहुत-सी क़ौमों को चूर चूर कर सके। तब
मैं उनका लूटा हुआ माल रब के लिए मख़सूस
करूँगा, उनकी दौलत पूरी दुनिया के मालिक के
हवाले करूँगा।”

नजातदहिंदा की उम्मीद

5 ऐ शहर जिस पर हमला हो रहा है, अब
अपने आपको छुरी से ज़ख़मी कर, क्योंकि
हमारा मुहासरा हो रहा है। दुश्मन लाठी से
इसराईल के हुक्मरान के गाल पर मारेगा।
2 लेकिन तू, ऐ बैत-लहम इफ़राता, जो यहूदाह
के दीगर ख़ानदानों की निसबत छोटा है, तुझमें
से वह निकलेगा जो इसराईल का हुक्मरान होगा
और जो क़दीम ज़माने बल्कि अज़ल से सादिर
हुआ है। 3 लेकिन जब तक हामिला औरत उसे
जन्म न दे, उस वक़्त तक रब अपनी क़ौम को
दुश्मन के हवाले छोड़ेगा। लेकिन फिर उसके
भाइयों का बचा हुआ हिस्सा इसराईलियों के पास
वापस आएगा।
4 यह हुक्मरान खड़े होकर रब की क़ुव्वत के
साथ अपने रेवड़ की गल्लाबानी करेगा। उसे रब
अपने ख़ुदा के नाम का अज़ीम इख़्तियार हासिल
होगा। तब क़ौम सलामती से बसेगी, क्योंकि उस
की अज़मत दुनिया की इंतहा तक फैलेगी। 5 वही
सलामती का मंबा होगा। जब असूर की फ़ौज
हमारे मुल्क में दाख़िल होकर हमारे महलों में घुस

आए तो हम उसके ख़िलाफ़ सात चरवाहे और
आठ रईस खड़े करेंगे 6 जो तलवार से मुल्के-असूर
की गल्लाबानी करेंगे, हाँ तलवार को मियान से
खींचकर नमरूद के मुल्क पर हुकूमत करेंगे। यों
हुक्मरान हमें असूर से बचाएगा जब यह हमारे
मुल्क और हमारी सरहद में घुस आएगा।

7 तब याक़ूब के जितने लोग बचकर मुतअद्दिद
अक़वाम के बीच में रहेंगे वह रब की भेजी हुई
ओस या हरियाली पर पड़नेवाली बारिश की
मानिंद होंगे यानी ऐसी चीज़ों की मानिंद जो न
किसी इनसान के इंतज़ार में रहती, न किसी
इनसान के हुक्म पर पड़ती हैं। 8 याक़ूब के जितने
लोग बचकर मुतअद्दिद अक़वाम के बीच में रहेंगे
वह जंगली जानवरों के दरमियान शेरबबर और
भेड़-बकरियों के बीच में जवान शेर की मानिंद
होंगे यानी ऐसे जानवर की मानिंद जो जहाँ से भी
गुज़रे जानवरों को रौंदकर फाड़ लेता है। उसके
हाथ से कोई बचा नहीं सकता। 9 तेरा हाथ तेरे
तमाम मुख़ालिफ़ों पर फ़तह पाएगा, तेरे तमाम
दुश्मन नेस्तो-नाबूद हो जाएंगे।

रब इसराईल के बुतों को ख़त्म करेगा

10 रब फ़रमाता है, "उस दिन मैं तेरे घोड़ों को
नेस्त और तेरे रथों को नाबूद करूँगा। 11 मैं तेरे
मुल्क के शहरों को ख़ाक में मिलाकर तेरे तमाम
क़िलों को गिरा दूँगा। 12 तेरी जादूगरी को मैं मिटा
डालूँगा, क़िस्मत का हाल बतानेवाले तेरे बीच में
नहीं रहेंगे। 13 तेरे बुत और तेरे मख़सूस सतूनों
को मैं यों तबाह करूँगा कि तू आइंदा अपने हाथ
की बनाई हुई चीज़ों की पूजा नहीं करेगा। 14 तेरे
असीरत देवी के खंबे मैं उखाड़कर तेरे शहरों को
मिसमार करूँगा। 15 उस वक़्त मैं बड़े ग़ुस्से से उन
क़ौमों से इंतक़ाम लूँगा जिन्होंने मेरी नहीं सुनी।"

अल्लाह इसराईल पर इलज़ाम लगाता है

6 ऐ इसराईल, रब का फ़रमान सुन,
"अदालत में खड़े होकर अपना मामला
बयान कर! पहाड़ और पहाड़ियाँ तेरे गवाह हों,
उन्हें अपनी बात सुना दे।"

2 ऐ पहाड़ो, अब रब का अपनी क़ौम पर
इलज़ाम सुनो! ऐ दुनिया की क़दीम बुनियादो,
तवज्जुह दो! क्योंकि रब अदालत में अपनी क़ौम
पर इलज़ाम लगा रहा है, वह इसराईल से मुक़दमा
उठा रहा है।

3 वह सवाल करता है, "ऐ मेरी क़ौम, मैंने
तेरे साथ क्या ग़लत सुलूक किया? मैंने क्या
किया कि तू इतनी थक गई है? बता तो सही!
4 हक़ीक़त तो यह है कि मैं तुझे मुल्के-मिसर से
निकाल लाया, मैंने फ़िद्या देकर तुझे ग़ुलामी से
रिहा कर दिया। साथ साथ मैंने मूसा, हारून और
मरियम को भेजा ताकि तेरे आगे चलकर तेरी
राहनुमाई करें। 5 ऐ मेरी क़ौम, वह वक़्त याद कर
जब मोआब के बादशाह बलक़ ने बिलाम बिन
बओर को बुलाया ताकि तुझ पर लानत भेजे।
लानत की बजाए उसने तुझे बरकत दी! वह
सफ़र भी याद कर जब तू शित्तीम से रवाना होकर
जिलजाल पहुँची। अगर तू इन तमाम बातों पर
ग़ौर करे तो जान लेगी कि रब ने कितनी वफ़ादारी
और इनसाफ़ से तेरे साथ सुलूक किया है।"

6 जब हम रब के हुज़ूर आते हैं ताकि अल्लाह
तआला को सिजदा करें तो हमें अपने साथ क्या
लाना चाहिए? क्या हमें यकसाला बछड़े उसके
हुज़ूर लाकर भस्म करने चाहिएँ? 7 क्या रब
हज़ारों मेंढों या तेल की बेशुमार नदियों से ख़ुश
हो जाएगा? क्या मुझे अपने पहलौठे को अपने
जरायम के एवज़ चढ़ाना चाहिए, अपने जिस्म के
फल को अपने गुनाहों को मिटाने के लिए पेश
करना चाहिए? हरगिज़ नहीं!

8 ऐ इनसान, उसने तुझे साफ़ बताया है कि
क्या कुछ अच्छा है। रब तुझसे चाहता है कि तू
इनसाफ़ क़ायम रखे, मेहरबानी करने में लगा रहे
और फ़रोतनी से अपने ख़ुदा के हुज़ूर चलता रहे।

यरूशलम को भी सामरिया की सी सज़ा मिलेगी

9 सुनो! रब यरूशलम को आवाज़ दे रहा है।
तवज्जुह दो, क्योंकि दानिशमंद उसके नाम का
ख़ौफ़ मानता है। ऐ क़बीले, ध्यान दो कि किसने
यह मुक़र्रर किया है,

10 “अब तक नाजायज़ नफ़ा की दौलत बेदीन
आदमी के घर में जमा हो रही है, अब तक लोग
गंदुम बेचते वक़्त पूरा तोल नहीं तोलते, उनकी
ग़लत पैमाइश पर लानत! 11 क्या मैं उस आदमी
को बरी क़रार दूँ जो ग़लत तराज़ू इस्तेमाल करता
है और जिसकी थैली में हलके बाट पड़े रहते हैं?
हरगिज़ नहीं! 12 यरूशलम के अमीर बड़े ज़ालिम
हैं, लेकिन बाक़ी बाशिंदे भी झूट बोलते हैं, उनकी
हर बात धोका ही धोका है!

13 इसलिए मैं तुझे मार मारकर ज़ख़मी करूँगा।
मैं तुझे तेरे गुनाहों के बदले में तबाह करूँगा। 14 तू
खाना खाएगा लेकिन सेर नहीं होगा बल्कि पेट
ख़ाली रहेगा। तू माल महफ़ूज़ रखने की कोशिश
करेगा, लेकिन कुछ नहीं बचेगा। क्योंकि जो
कुछ तू बचाने की कोशिश करेगा उसे मैं तलवार
के हवाले करूँगा। 15 तू बीज बोएगा लेकिन
फ़सल नहीं काटेगा, ज़ैतून का तेल निकालेगा
लेकिन उसे इस्तेमाल नहीं करेगा, अंगूर का
रस निकालेगा लेकिन उसे नहीं पिएगा। 16 तू
इसराईल के बादशाहों उमरी और अख़ियब के
नमूने पर चल पड़ा है, आज तक उन्हीं के मनसूबों
की पैरवी करता आया है। इसलिए मैं तुझे तबाही
के हवाले कर दूँगा, तेरे लोगों को मज़ाक़ का
निशाना बनाऊँगा। तुझे दीगर अक़वाम की लान-
तान बरदाश्त करनी पड़ेगी।”

अपनी क़ौम पर अफ़सोस

7 हाय, मुझ पर अफ़सोस! मैं उस शख़्स
की मानिंद हूँ जो फ़सल के जमा होने पर
अंगूर के बाग़ में से गुज़र जाता है ताकि बचा हुआ
थोड़ा-बहुत फल मिल जाए, लेकिन एक गुच्छा
तक बाक़ी नहीं। मैं उस आदमी की मानिंद हूँ जो
अंजीर का पहला फल मिलने की उम्मीद रखता
है लेकिन एक भी नहीं मिलता। 2 मुल्क में से
दियानतदार मिट गए हैं, एक भी ईमानदार नहीं
रहा। सब ताक में बैठे हैं ताकि एक दूसरे को क़त्ल
करें, हर एक अपना जाल बिछाकर अपने भाई को
पकड़ने की कोशिश करता है। 3 दोनों हाथ ग़लत
काम करने में एक जैसे माहिर हैं। हुक्मरान और
क़ाज़ी रिश्वत खाते, बड़े लोग मुतलव्विनमिज़ाजी
से कभी यह, कभी वह तलब करते हैं। सब
मिलकर साज़िशें करने में मसरूफ़ रहते हैं। 4 उनमें
से सबसे शरीफ़ शख़्स ख़ारदार झाड़ी की मानिंद
है, सबसे ईमानदार आदमी काँटेदार बाड़ से अच्छा
नहीं।

लेकिन वह दिन आनेवाला है जिसका एलान
तुम्हारे पहरेदारों ने किया है। तब अल्लाह तुझसे
निपट लेगा, सब कुछ उलट-पलट हो जाएगा।

5 किसी पर भी भरोसा मत रखना, न अपने
पड़ोसी पर, न अपने दोस्त पर। अपनी बीवी से
भी बात करने से मुहतात रहो। 6 क्योंकि बेटा
अपने बाप की हैसियत नहीं मानता, बेटी अपनी
माँ के ख़िलाफ़ खड़ी हो जाती और बहू अपनी
सास की मुख़ालफ़त करती है। तुम्हारे अपने ही
घरवाले तुम्हारे दुश्मन हैं।

7 लेकिन मैं ख़ुद रब की राह देखूँगा, अपनी
नजात के ख़ुदा के इंतज़ार में रहूँगा। क्योंकि मेरा
ख़ुदा मेरी सुनेगा।

रब हमें रिहा करेगा

8 ऐ मेरे दुश्मन, मुझे देखकर शादियाना मत
बजा! गो मैं गिर गया हूँ ताहम दुबारा खड़ा हो
जाऊँगा, गो अंधेरे में बैठा हूँ ताहम रब मेरी रौशनी
है। 9 मैंने रब का ही गुनाह किया है, इसलिए
मुझे उसका ग़ज़ब भुगतना पड़ेगा। क्योंकि जब
तक वह मेरे हक़ में मुक़दमा लड़कर मेरा इनसाफ़
न करे उस वक़्त तक मैं उसका क़हर बरदाश्त
करूँगा। तब वह मुझे तारीकी से निकालकर
रौशनी में लाएगा, और मैं अपनी आँखों से उसके
इनसाफ़ और वफ़ादारी का मुशाहदा करूँगा।

10 मेरा दुश्मन यह देखकर सरासर शर-
मिंदा हो जाएगा, हालाँकि इस वक़्त वह कह रहा
है, “रब तेरा ख़ुदा कहाँ है?” मेरी अपनी आँखें
उस की शरमिंदगी देखेंगी, क्योंकि उस वक़्त उसे
गली में कचरे की तरह पाँवों तले रौंदा जाएगा।

11 ऐ इसराईल, वह दिन आनेवाला है जब
तेरी दीवारें नए सिरे से तामीर हो जाएँगी।
उस दिन तेरी सरहद्दें वसी हो जाएँगी। 12 लोग
चारों तरफ़ से तेरे पास आएँगे। वह असूर से,
मिसर के शहरों से, दरियाए-फ़ुरात के इलाक़े से
बल्कि दूर-दराज़ साहिली और पहाड़ी इलाक़ों से
भी आएँगे। 13 ज़मीन अपने बाशिंदों के बाइस
वीरानो-सुनसान हो जाएगी, आख़िरकार उनकी
हरकतों का कड़वा फल निकल आएगा।

14 ऐ रब, अपनी लाठी से अपनी क़ौम की
गल्लाबानी कर! क्योंकि तेरी मीरास का यह
रेवड़ इस वक़्त जंगल में तनहा रहता है, हालाँकि
गिर्दो-नवाह की ज़मीन ज़रख़ेज़ है। क़दीम ज़माने
की तरह उन्हें बसन और जिलियाद की शादाब
चरागाहों में चरने दे! 15 रब फ़रमाता है, “मिसर
से निकलते वक़्त की तरह मैं तुझे मोजिज़ात
दिखा दूँगा।” 16 यह देखकर अक़वाम शरमिंदा
हो जाएँगी और अपनी तमाम ताक़त के बावुजूद
कुछ नहीं कर पाएँगी। वह घबराकर मुँह पर हाथ
रखेंगी, उनके कान बहरे हो जाएंगे। 17 साँप और
रेंगनेवाले जानवरों की तरह वह ख़ाक चाटेंगी और
थरथराते हुए अपने क़िलों से निकल आएँगी। वह
डर के मारे रब हमारे ख़ुदा की तरफ़ रुजू करेंगी,
हाँ तुझसे दहशत खाएँगी।

18 ऐ रब, तुझ जैसा ख़ुदा कहाँ है? तू ही
गुनाहों को मुआफ़ कर देता, तू ही अपनी मीरास
के बचे हुओं के जरायम से दरगुज़र करता है। तू
हमेशा तक ग़ुस्से नहीं रहता बल्कि शफ़क़त पसंद
करता है। 19 तू दुबारा हम पर रहम करेगा, दुबारा
हमारे गुनाहों को पाँवों तले कुचलकर समुंदर
की गहराइयों में फेंक देगा। 20 तू याक़ूब और
इब्राहीम की औलाद पर अपनी वफ़ा और शफ़क़त
दिखाकर वह वादा पूरा करेगा जो तूने क़सम
खाकर क़दीम ज़माने में हमारे बापदादा से किया
था।

नाहूम

अल्लाह के ग़ज़ब का इज़हार

1 ज़ैल में नीनवा के बारे में वह कलाम क़लमबंद है जो अल्लाह ने रोया में नाहूम इलक़ूशी को दिखाया।

2 रब ग़ैरतमंद और इंतक़ाम लेनेवाला ख़ुदा है। इंतक़ाम लेते वक़्त रब अपना पूरा ग़ुस्सा उतारता है। रब अपने मुख़ालिफ़ों से बदला लेता और अपने दुश्मनों से नाराज़ रहता है।

3 रब तहम्मुल से भरपूर है, और उस की क़ुदरत अज़ीम है। वह क़ुसूरवार को कभी भी सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ता।

वह आँधी और तूफ़ान से घिरा हुआ चलता है, और बादल उसके पाँवों तले की गर्द होते हैं।

4 वह समुंदर को डाँटता तो वह सूख जाता, उसके हुक्म पर तमाम दरिया ख़ुश्क हो जाते हैं। तब बसन और करमिल की शादाब हरियाली मुरझा जाती और लुबनान के फूल कुमला जाते हैं।

5 उसके सामने पहाड़ लरज़ उठते, पहाड़ियाँ पिघल जाती हैं। उसके हुज़ूर पूरी ज़मीन अपने बाशिंदों समेत लरज़ उठती है।

6 कौन उस की नाराज़ी और उसके शदीद क़हर का सामना कर सकता है? उसका ग़ज़ब आग की तरह भड़ककर ज़मीन पर नाज़िल होता है, उसके आने पर पत्थर फटकर टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं।

7 रब मेहरबान है। मुसीबत के दिन वह मज़बूत क़िला है, और जो उसमें पनाह लेते हैं उन्हें वह जानता है।

8 लेकिन अपने दुश्मनों पर वह सैलाब लाएगा जो उनके मक़ाम को ग़रक़ करेगा। जहाँ भी दुश्मन भाग जाए वहाँ उस पर तारीकी छा जाने देगा।

9 रब के ख़िलाफ़ मनसूबा बाँधने का क्या फ़ायदा? वह तो तुम्हें एकदम तबाह कर देगा, दूसरी बार तुम पर आफ़त लाने की ज़रूरत ही नहीं होगी।

10 क्योंकि गो दुश्मन घनी और ख़ारदार झाड़ियों और नशे में धुत शराबी की मानिंद हैं, लेकिन वह जल्द ही ख़ुश्क भूसे की तरह भस्म हो जाएंगे।

11 ऐ नीनवा, तुझसे वह निकल आया जिसने रब के ख़िलाफ़ बुरे मनसूबे बाँधे, जिसने शैतानी मशवरे दिए।

12 लेकिन अपनी क़ौम से रब फ़रमाता है, “गो दुश्मन ताक़तवर और बेशुमार क्यों न हों तो भी उन्हें मिटाया जाएगा और वह ग़ायब हो जाएंगे। बेशक मैंने तुझे पस्त कर दिया, लेकिन
आइंदा ऐसा नहीं करूँगा। 13 अब मैं वह जुआ तोड़
डालूँगा जो उन्होंने तेरी गरदन पर रख दिया था, मैं तेरी ज़ंजीरों को फाड़ डालूँगा।”

14 लेकिन नीनवा से रब फ़रमाता है, “आइंदा तेरी कोई औलाद क़ायम नहीं रहेगी जो तेरा नाम

रखे। जितने भी बुत और मुजस्समे तेरे मंदिर में पड़े हैं उन सबको मैं नेस्तो-नाबूद कर दूँगा। मैं तेरी क़ब्र तैयार कर रहा हूँ, क्योंकि तू कुछ भी नहीं है।”

नीनवा की शिकस्त

15 वह देखो, पहाड़ों पर उसके क़दम चल रहे हैं जो अमनो-अमान की ख़ुशख़बरी सुनाता है। ऐ यहूदाह, अब अपनी ईदें मना, अपनी मन्नतें पूरी कर! क्योंकि आइंदा शैतानी आदमी तुझमें नहीं घुसेगा, वह सरासर मिट गया है।

2 ऐ नीनवा, सब कुछ मुंतशिर करने-वाला तुझ पर हमला करने आ रहा है, चुनाँचे क़िले की पहरादारी कर! रास्ते पर ध्यान दे, कमरबस्ता हो जा, जहाँ तक मुमकिन है दिफ़ा की तैयारियाँ कर!

2 गो याक़ूब तबाह और उसके अंगूरों के बाग़ नाबूद हो गए हैं, लेकिन अब रब इसराईल की शानो-शौकत बहाल करेगा।

3 वह देखो, नीनवा पर हमला करनेवाले सूरमाओं की ढालें सुर्ख़ हैं, फ़ौजी क़िरमिज़ी रंग की वरदियाँ पहने हुए हैं। दुश्मन ने अपने रथों को तैयार कर रखा है, और वह भड़कती मशालों की तरह चमक रहे हैं। साथ साथ सिपाही अपने नेज़े
लहरा रहे हैं। 4 अब रथ गलियों में से अंधा-धुंध
गुज़र रहे हैं। चौकों में वह इधर-उधर भाग रहे हैं। यों लग रहा है कि भड़कती मशालें या बादल की बिजलियाँ इधर-उधर चमक रही हैं।

5 हुक्मरान अपने चीदा अफ़सरों को बुला लेता है, और वह ठोकर खा खाकर आगे बढ़ते हैं। वह दौड़कर फ़सील के पास पहुँच जाते, जल्दी
से हिफ़ाज़ती ढाल खड़ी करते हैं। 6 फिर दरिया
के दरवाज़े खुल जाते और शाही महल लड़खड़ाने
लगता है। 7 तब दुश्मन मलिका के कपड़े उतारकर
उसे ले जाते हैं। उस की लौंडियाँ छाती पीट
पीटकर कबूतरों की तरह ग़ूँ ग़ूँ करती हैं। 8 नीनवा
बड़ी देर से अच्छे-ख़ासे तालाब की मानिंद था, लेकिन अब लोग उससे भाग रहे हैं। लोगों को कहा जाता है, “रुक जाओ, रुको तो सही!” लेकिन कोई नहीं रुकता। सब सर पर पाँव रखकर शहर से भाग रहे हैं, और कोई नहीं मुड़ता।

9 आओ, नीनवा की चाँदी लूट लो, उसका सोना छीन लो! क्योंकि ज़ख़ीरे की इंतहा
नहीं, उसके ख़ज़ानों की दौलत ला-महदूद है।
10 लूटनेवाले कुछ नहीं छोड़ते। जल्द ही शहर
ख़ाली और वीरानो-सुनसान हो जाता है। हर दिल हौसला हार जाता, हर घुटना काँप उठता, हर कमर थरथराने लगती और हर चेहरे का रंग माँद पड़ जाता है।

11 अब नीनवा बेटी की क्या हैसियत रही? पहले वह शेरबबर की माँद थी, ऐसी जगह जहाँ जवान शेरों को गोश्त खिलाया जाता, जहाँ शेर और शेरनी अपने बच्चों समेत टहलते थे। कोई
उन्हें डराकर भगा नहीं सकता था। 12 उस वक़्त
शेर अपने बच्चों के लिए बहुत कुछ फाड़ लेता और अपनी शेरनियों के लिए भी गला घूँटकर मार डालता था। उस की माँदें और छुपने की जगहें फाड़े हुए शिकार से भरी रहती थीं।

13 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “ऐ नीन-वा, अब मैं तुझसे निपट लेता हूँ। मैं तेरे रथों को नज़रे-आतिश कर दूँगा, और तेरे जवान शेर तलवार की ज़द में आकर मर जाएंगे। मैं होने दूँगा कि आइंदा तुझे ज़मीन पर कुछ न मिले जिसे फाड़कर खा सके। आइंदा तेरे क़ासिदों की आवाज़ कभी सुनाई नहीं देगी।”

नीनवा की रुसवाई

3 उस क़ातिल शहर पर अफ़सोस जो झूट और लूटे हुए माल से भरा हुआ है। वह लूट-मार से कभी बाज़ नहीं आता।

2 सुनो! चाबुक की आवाज़, चलते हुए रथों का शोर! घोड़े सरपट दौड़ रहे, रथ भाग भागकर
उछल रहे हैं। 3 घुड़सवार आगे बढ़ रहे, शोलाज़न
तलवारें और चमकते नेज़े नज़र आ रहे हैं। हर तरफ़ मक़तूल ही मक़तूल, बेशुमार लाशों के ढेर पड़े हैं। इतनी हैं कि लोग ठोकर खा खाकर उन

पर से गुज़रते हैं। 4 यह होगा नीनवा का अंजाम,
उस दिलफ़रेब कसबी और जादूगरनी का जिसने
अपनी जादूगरी और इसमतफ़रोशी से अक़्वाम
और उम्मतों को ग़ुलामी में बेच डाला।

5 रब्बुल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "ऐ नीनवा बेटी,
अब मैं तुझसे निपट लेता हूँ। मैं तेरा लिबास तेरे
सर के ऊपर उठाऊँगा कि तेरा नंगापन अक़्वाम
को नज़र आए और तेरा मुँह दीगर ममालिक के
सामने काला हो जाए। 6 मैं तुझ पर कूड़ा-करकट
फेंककर तेरी तहक़ीर करूँगा। तू दूसरों के लिए
तमाशा बन जाएगी। 7 तब सब तुझे देखकर भाग
जाएंगे। वह कहेंगे, 'नीनवा तबाह हो गई है!' अब
उस पर अफ़सोस करनेवाला कौन रहा? अब मुझे
कहाँ से लोग मिलेंगे जो तुझे तसल्ली दें?"

8 क्या तू थीबस[a] शहर से बेहतर है, जो
दरियाए-नील पर वाक़े था? वह तो पानी से
घिरा हुआ था, और पानी ही उसे हमलों से
महफ़ूज़ रखता था। 9 एथोपिया और मिसर के
फ़ौजी उसके लिए ला-महदूद ताक़त का बाइस
थे, फ़ूत और लिबिया उसके इत्तहादी थे। 10 तो
भी वह क़ैदी बनकर जिलावतन हुआ। हर गली
के कोने में उसके शीरख़ार बच्चों को ज़मीन पर
पटख़ दिया गया। उसके शुरफ़ा क़ुरा-अंदाज़ी के
ज़रीए तक़सीम हुए, उसके तमाम बुज़ुर्ग ज़ंजीरों
में जकड़े गए।

11 ऐ नीनवा बेटी, तू भी नशे में धुत हो जाएगी।
तू भी हवासबाख़्ता होकर दुश्मन से पनाह लेने की
कोशिश करेगी। 12 तेरे तमाम क़िले पके फल से
लदे हुए अंजीर के दरख़्त हैं। जब उन्हें हिलाया
जाए तो अंजीर फ़ौरन खानेवाले के मुँह में गिर
जाते हैं। 13 लो, तेरे तमाम दस्ते औरतें बन गए
हैं। तेरे मुल्क के दरवाज़े दुश्मन के लिए पूरे तौर
पर खोले गए, तेरे कुंडे नज़रे-आतिश हो गए हैं।

14 ख़ूब पानी जमा कर ताकि मुहासरे के
दौरान काफ़ी हो। अपनी क़िलाबंदी मज़ीद
मज़बूत कर! गारे को पाँवों से लताड़ लताड़-
कर ईंटें बना ले! 15 ताहम आग तुझे भस्म करेगी,
तलवार तुझे मार डालेगी, हाँ वह तुझे टिड्डियों
की तरह खा जाएगी। बचने का कोई इमकान
नहीं होगा, ख़ाह तू टिड्डियों की तरह बेशुमार
क्यों न हो जाए। 16 बेशक तेरे ताजिर सितारों
जितने लातादाद हो गए हैं, लेकिन अचानक वह
टिड्डियों के बच्चों की तरह अपनी केंचली को
उतार लेंगे और उड़कर ग़ायब हो जाएंगे। 17 तेरे
दरबारी टिड्डियों जैसे और तेरे अफ़सर टिड्डी दलों
की मानिंद हैं जो सर्दियों के मौसम में दीवारों के
साथ चिपक जाती लेकिन धूप निकलते ही उड़कर
ओझल हो जाती हैं। किसी को भी पता नहीं कि
वह कहाँ चली गई हैं।

18 ऐ असूर के बादशाह, तेरे चरवाहे गहरी
नींद सो रहे, तेरे शुरफ़ा आराम कर रहे हैं। तेरी
क़ौम पहाड़ों पर मुंतशिर हो गई है, और कोई
नहीं जो उन्हें दुबारा जमा करे। 19 तेरी चोट
भर ही नहीं सकती, तेरा ज़ख़म लाइलाज है।
जिसे भी तेरे अंजाम की ख़बर मिले वह ताली
बजाएगा। क्योंकि सबको तेरा मुसलसल ज़ुल्मो-
तशद्दुद बरदाश्त करना पड़ा।

---

[a] Thebes। इबरानी में नो-आमून।

हबक़्क़ूक़

नबी की शिकायत : हर तरफ़ नाइनसाफ़ी

1 ज़ैल में वह कलाम क़लमबंद है जो
हबक़्क़ूक़ नबी को रोया देखकर मिला।
2 ऐ रब, मैं मज़ीद कब तक मदद के लिए
पुकारूँ? अब तक तूने मेरी नहीं सुनी। मैं मज़ीद
कब तक चीख़ें मार मारकर कहूँ कि फ़साद हो रहा
है? अब तक तूने हमें छुटकारा नहीं दिया। 3 तू
क्यों होने देता है कि मुझे इतनी नाइनसाफ़ी देखनी
पड़े? लोगों को इतना नुक़सान पहुँचाया जा रहा
है, लेकिन तू ख़ामोशी से सब कुछ देखता रहता
है। जहाँ भी मैं नज़र डालूँ, वहाँ ज़ुल्मो-तशद्दुद
ही नज़र आता है, मुक़दमाबाज़ी और झगड़े सर
उठाते हैं। 4 नतीजे में शरीअत बेअसर हो गई है,
और बा-इनसाफ़ फ़ैसले कभी जारी नहीं होते।
बेदीनों ने रास्तबाज़ों को घेर लिया है, इसलिए
अदालत में बेहूदा फ़ैसले किए जाते हैं।

अल्लाह का जवाब

5 “दीगर अक़वाम पर निगाह डालो, हाँ उन पर
ध्यान दो तो हक्का-बक्का रह जाओगे। क्योंकि मैं
तुम्हारे जीते-जी एक ऐसा काम करूँगा जिसकी
जब ख़बर सुनोगे तो तुम्हें यक़ीन नहीं आएगा।
6 मैं बाबलियों को खड़ा करूँगा। यह ज़ालिम और
तलख़रू क़ौम पूरी दुनिया को उबूर करके दूसरे
ममालिक पर क़ब्ज़ा करेगी। 7 लोग उससे सख़्त
दहशत खाएँगे, हर तरफ़ उसी के क़वानीन और
अज़मत माननी पड़ेगी। 8 उनके घोड़े चीतों से
तेज़ हैं, और शाम के वक़्त शिकार करनेवाले
भेड़ीए भी उन जैसे फुरतीले नहीं होते। वह सरपट
दौड़कर दूर दूर से आते हैं। जिस तरह उक़ाब लाश
पर झपट्टा मारता है उसी तरह वह अपने शिकार
पर हमला करते हैं। 9 सब इसी मक़सद से आते हैं
कि ज़ुल्मो-तशद्दुद करें। जहाँ भी जाएँ वहाँ आगे
बढ़ते जाते हैं। रेत जैसे बेशुमार क़ैदी उनके हाथ में
जमा होते हैं। 10 वह दीगर बादशाहों का मज़ाक़
उड़ाते हैं, और दूसरों के बुज़ुर्ग उनके तमस्ख़ुर का
निशाना बन जाते हैं। हर क़िले को देखकर वह
हँस उठते हैं। जल्द ही वह उनकी दीवारों के साथ
मिट्टी के ढेर लगाकर उन पर क़ब्ज़ा करते हैं।
11 फिर वह तेज़ हवा की तरह वहाँ से गुज़रकर
आगे बढ़ जाते हैं। लेकिन वह क़ुसूरवार ठहरेंगे,
क्योंकि उनकी अपनी ताक़त उनका ख़ुदा है।”

ऐ रब, तू क्यों ख़ामोश रहता है?

12 ऐ रब, क्या तू क़दीम ज़माने से ही मेरा
ख़ुदा, मेरा क़ुद्दूस नहीं है? हम नहीं मरेंगे। ऐ
रब, तूने उन्हें सज़ा देने के लिए मुक़र्रर किया है।
ऐ चट्टान, तेरी मरज़ी है कि वह हमारी तरबियत
करें। 13 तेरी आँखें बिलकुल पाक हैं, इसलिए तू
बुरा काम बरदाश्त नहीं कर सकता, तू ख़ामोशी
से ज़ुल्मो-तशद्दुद पर नज़र नहीं डाल सकता। तो
फिर तू इन बेवफ़ाओं की हरकतों को किस तरह
बरदाश्त करता है? जब बेदीन उसे हड़प कर लेता
जो उससे कहीं ज़्यादा रास्तबाज़ है तो तू ख़ामोश

क्यों रहता है? 14 तूने होने दिया है कि इनसान से
मछलियों का-सा सुलूक किया जाए, कि उसे उन
समुंदरी जानवरों की तरह पकड़ा जाए, जिनका
कोई मालिक नहीं। 15 दुश्मन उन सबको काँटे
के ज़रीए पानी से निकाल लेता है, अपना जाल
डालकर उन्हें पकड़ लेता है। जब उनका बड़ा ढेर
जमा हो जाता है तो वह ख़ुश होकर शादियाना
बजाता है। 16 तब वह अपने जाल के सामने बख़ूर
जलाकर उसे जानवर क़ुरबान करता है। क्योंकि
उसी के वसीले से वह ऐशो-इशरत की ज़िंदगी
गुज़ार सकता है। 17 क्या वह मुसलसल अपना
जाल डालता और क़ौमों को बेरहमी से मौत के
घाट उतारता रहे?

2 अब मैं पहरा देने के लिए अपनी बुर्जी पर
चढ़ जाऊँगा, क़िले की ऊँची जगह पर
खड़ा होकर चारों तरफ़ देखता रहूँगा। क्योंकि
मैं जानना चाहता हूँ कि अल्लाह मुझे क्या कुछ
बताएगा, कि वह मेरी शिकायत का क्या जवाब
देगा।

रब का जवाब

2 रब ने मुझे जवाब दिया, "जो कुछ तूने रोया
में देखा है उसे तख़्तों पर यों लिख दे कि हर
गुज़रनेवाला उसे रवानी से पढ़ सके। 3 क्योंकि वह
फ़ौरन पूरी नहीं हो जाएगी बल्कि मुक़र्ररा वक़्त पर
आख़िरकार ज़ाहिर होगी, वह झूटी साबित नहीं
होगी। गो देर भी लगे तो भी सब्र कर। क्योंकि
आनेवाला पहुँचेगा, वह देर नहीं करेगा।

4 मग़रूर आदमी फूला हुआ है और अंदर से
सीधी राह पर नहीं चलता। लेकिन रास्तबाज़
ईमान ही से जीता रहेगा। 5 यक़ीनन मै एक बेवफ़ा
साथी है। मग़रूर शख़्स जीता नहीं रहेगा, गो वह
अपने मुँह को पाताल की तरह खुला रखता और
उस की भूक मौत की तरह कभी नहीं मिटती,
वह तमाम अक़्वाम और उम्मतें अपने पास जमा
करता है।

बेदीनों का अंजाम

6 लेकिन यह सब उसका मज़ाक़ उड़ाकर उसे
लान-तान करेंगी। वह कहेंगी, 'उस पर अफ़सोस
जो दूसरों की चीज़ें छीनकर अपनी मिलकियत
में इज़ाफ़ा करता है, जो क़र्ज़दारों की ज़मानत
पर क़ब्ज़ा करने से दौलतमंद हो गया है। यह
काररवाई कब तक जारी रहेगी?' 7 क्योंकि
अचानक ही ऐसे लोग उठेंगे जो तुझे काटेंगे,
ऐसे लोग जाग उठेंगे जिनके सामने तू थरथराने
लगेगा। तब तू ख़ुद उनका शिकार बन जाएगा।
8 चूँकि तूने दीगर मुतअद्दिद अक़्वाम को लूट
लिया है इसलिए अब बची हुई उम्मतें तुझे ही
लूट लेंगी। क्योंकि तुझसे क़त्लो-ग़ारत सरज़द हुई
है, तूने देहात और शहर पर उनके बाशिंदों समेत
शदीद ज़ुल्म किया है।

9 उस पर अफ़सोस जो नाजायज़ नफ़ा
कमाकर अपने घर पर आफ़त लाता है, हालाँकि
वह आफ़त से बचने के लिए अपना घोंसला
बुलंदियों पर बना लेता है। 10 तेरे मनसूबों से
मुतअद्दिद क़ौमें तबाह हुई हैं, लेकिन यह तेरे ही
घराने के लिए शर्म का बाइस बन गया है। इस
गुनाह से तू अपने आप पर मौत की सज़ा लाया है।
11 यक़ीनन दीवारों के पत्थर चीख़कर इल्तिजा
करेंगे और लकड़ी के शहतीर जवाब में आहो-ज़ारी
करेंगे।

12 उस पर अफ़सोस जो शहर को क़त्लो-
ग़ारत के ज़रीए तामीर करता, जो आबादी को
नाइनसाफ़ी की बुनियाद पर क़ायम करता है।
13 रब्बुल-अफ़वाज ने मुक़र्रर किया है कि जो कुछ
क़ौमों ने बड़ी मेहनत-मशक़्क़त से हासिल किया
उसे नज़रे-आतिश होना है, जो कुछ पाने के लिए
उम्मतें थक जाती हैं वह बेकार ही है। 14 क्योंकि
जिस तरह समुंदर पानी से भरा हुआ है, उसी तरह
दुनिया एक दिन रब के जलाल के इरफ़ान से भर
जाएगी।

15 उस पर अफ़सोस जो अपना प्याला
ज़हरीली शराब से भरकर उसे अपने पड़ो-

सियों को पिला देता है ताकि उन्हें नशे में
लाकर उनकी बरहनगी से लुत्फ़अंदोज़ हो जाए।
16 लेकिन अब तेरी बारी भी आ गई है! तेरी
शानो-शौकत ख़त्म हो जाएगी, और तेरा मुँह
काला हो जाएगा। अब ख़ुद पी ले! नशे में आकर
अपने कपड़े उतार ले। ग़ज़ब का जो प्याला रब
के दहने हाथ में है वह तेरे पास भी पहुँचेगा। तब
तेरी इतनी रुसवाई हो जाएगी कि तेरी शान का
नामो-निशान तक नहीं रहेगा।

17 जो ज़ुल्म तूने लुबनान पर किया वह तुझ
पर ही ग़ालिब आएगा, जिन जानवरों को तूने
वहाँ तबाह किया उनकी दहशत तुझी पर तारी
हो जाएगी। क्योंकि तुझसे क़त्लो-ग़ारत सरज़द
हुई है, तूने देहात और शहरों पर उनके बाशिंदों
समेत शदीद ज़ुल्म किया है।

18 बुत का क्या फ़ायदा? आख़िर किसी माहिर
कारीगर ने उसे तराशा या ढाल लिया है, और वह
झूट ही झूट की हिदायात देता है। कारीगर अपने
हाथों के बुत पर भरोसा रखता है, हालाँकि वह
बोल भी नहीं सकता!

19 उस पर अफ़सोस जो लकड़ी से कहता है,
'जाग उठ!' और ख़ामोश पत्थर से, 'खड़ा हो
जा!' क्या यह चीज़ें हिदायत दे सकती हैं?
हरगिज़ नहीं! उनमें जान ही नहीं, ख़ाह उन पर
सोना या चाँदी क्यों न चढ़ाई गई हो। 20 लेकिन
रब अपने मुक़द्दस घर में मौजूद है। उसके हुज़ूर
पूरी दुनिया ख़ामोश रहे।"

हबक़्क़ूक़ की दुआ

3 ज़ैल में हबक़्क़ूक़ नबी की दुआ है। इसे
'शिगियूनोत' के तर्ज़ पर गाना है।

2 ऐ रब, मैंने तेरा पैग़ाम सुना है। ऐ रब, तेरा
काम देखकर मैं डर गया हूँ। हमारे जीते-जी उसे
वुजूद में ला, जल्द ही उसे हम पर ज़ाहिर कर।
जब तुझे हम पर ग़ुस्सा आए तो अपना रहम याद
कर।

3 अल्लाह तेमान से आ रहा है, क़ुद्दूस फ़ारान के
पहाड़ी इलाक़े से पहुँच रहा है। (सिलाह)[a] उसका
जलाल पूरे आसमान पर छा गया है, ज़मीन उस
की हम्दो-सना से भरी हुई है।

4 तब उस की शान सूरज की तरह चमकती,
उसके हाथ से तेज़ किरणें निकलती हैं जिनमें उस
की क़ुदरत पिनहाँ होती है।

5 मोहलक बीमारी उसके आगे आगे फैल-
ती, वबाई मरज़ उसके नक़्शे-क़दम पर चलता है।

6 जहाँ भी क़दम उठाए, वहाँ ज़मीन हिल जाती,
जहाँ भी नज़र डाले वहाँ अक़वाम लरज़ उठती
हैं। तब क़दीम पहाड़ फट जाते, पुरानी पहाड़ियाँ
दबक जाती हैं। उस की राहें अज़ल से ऐसी ही
रही हैं।

7 मैंने कूशान के ख़ैमों को मुसीबत में देखा,
मिदियान के तंबू काँप रहे थे।

8 ऐ रब, क्या तू दरियाओं और नदियों से ग़ुस्से
था? क्या तेरा ग़ज़ब समुंदर पर नाज़िल हुआ जब
तू अपने घोड़ों और फ़तहमंद रथों पर सवार होकर
निकला?

9 तूने अपनी कमान को निकाल लिया, तेरी
लानतें तीरों की तरह बरसने लगी हैं। (सिलाह)
तू ज़मीन को फाड़कर उन जगहों पर दरिया बहने
देता है।

10 तुझे देखकर पहाड़ काँप उठते, मूस-
लाधार बारिश बरसने लगती और पानी की
गहराइयाँ गरजती हुई अपने हाथ आसमान की
तरफ़ उठाती हैं।

11 सूरज और चाँद अपनी बुलंद रिहाइश-
गाह में रुक जाते हैं। तेरे चमकते तीरों के सामने

[a] सिलाह ग़ालिबन गाने बजाने के बारे में कोई हिदायत है। मुफ़स्सिरीन में इसके मतलब के बारे में इत्तफ़ाक़े-राय नहीं होती।

वह माँद पड़ जाते, तेरे नेज़ों की झिलमिलाती रौशनी में ओझल हो जाते हैं।

12 तू ग़ुस्से में दुनिया में से गुज़रता, तैश से दीगर अक़वाम को मारकर गाह लेता है।
13 तू अपनी क़ौम को रिहा करने के लिए निकला, अपने मसह किए हुए ख़ादिम की मदद करने आया है। तूने बेदीन का घर छत से लेकर बुनियाद तक गिरा दिया, अब कुछ नज़र नहीं आता। (सिलाह)
14 उसके अपने नेज़ों से तूने उसके सर को छेद डाला। पहले उसके दस्ते कितनी ख़ुशी से हम पर टूट पड़े ताकि हमें मुंतशिर करके मुसीबतज़दा को पोशीदगी में खा सकें! लेकिन अब वह ख़ुद भूसे की तरह हवा में उड़ गए हैं।
15 तूने अपने घोड़ों से समुंदर को यों कुचल दिया कि गहरा पानी झाग निकालने लगा।

अल्लाह मुझे तक़वियत देता है

16 यह सब कुछ सुनकर मेरा जिस्म लरज़ उठा। इतना शोर था कि मेरे दाँत बजने लगे,[a] मेरी हड्डियाँ सड़ने लगीं, मेरे घुटने काँप उठे। अब मैं उस दिन के इंतज़ार में रहूँगा जब आफ़त उस क़ौम पर आएगी जो हम पर हमला कर रही है।

17 अभी तक कोंपलें अंजीर के दरख़्त पर नज़र नहीं आतीं, अंगूर की बेलें बेफल हैं। अभी तक ज़ैतून के दरख़्त फल से महरूम हैं और खेतों में फ़सलें नहीं उगतीं। बाड़ों में न भेड़-बकरियाँ, न मवेशी हैं।
18 ताहम मैं रब की ख़ुशी मनाऊँगा, अपने नजातदहिंदा अल्लाह के बाइस शादियाना बजाऊँगा।
19 रब क़ादिरे-मुतलक़ मेरी क़ुव्वत है। वही मुझे हिरनों के-से तेज़रौ पाँव मुहैया करता है, वही मुझे बुलंदियों पर से गुज़रने देता है।

दर्जे-बाला गीत मौसीक़ी के राहनुमा के लिए है। इसे मेरे तर्ज़ के तारदार साज़ों के साथ गाना है।

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : होंट हिलने लगे।

सफ़नियाह

1 ज़ैल में रब का वह कलाम क़लमबंद है
जो सफ़नियाह बिन कूशी बिन जिदलियाह
बिन अमरियाह बिन हिज़क़ियाह पर नाज़िल
हुआ। उस वक़्त यूसियाह बिन अमून यहूदाह का
बादशाह था।
2 रब फ़रमाता है, "मैं रूए-ज़मीन पर से सब
कुछ मिटा डालूँगा, 3 इनसानो-हैवान, परिंदों,
मछलियों, ठोकर खिलानेवाली चीज़ों और बेदीनों
को। तब ज़मीन पर इनसान का नामो-निशान तक
नहीं रहेगा।" यह रब का फ़रमान है।
4 "यहूदाह और यरूशलम के तमाम बाशिंदों पर
मेरी सज़ा नाज़िल होगी। बाल देवता की जितनी
भी बुतपरस्ती अब तक रह गई है उसे नेस्तो-नाबूद
कर दूँगा। न बुतपरस्त पुजारियों का नामो-निशान
रहेगा, 5 न उनका जो छतों पर सूरज, चाँद बल्कि
आसमान के पूरे लशकर को सिजदा करते हैं, जो
रब की क़सम खाने के साथ साथ मिलकूम देवता
की भी क़सम खाते हैं। 6 जो रब की पैरवी छोड़कर
न उसे तलाश करते, न उस की मरज़ी दरियाफ़्त
करते हैं वह सबके सब तबाह हो जाएंगे।
7 अब रब क़ादिरे-मुतलक़ के सामने ख़ा-
मोश हो जाओ, क्योंकि रब का दिन क़रीब ही है।
रब ने इसके लिए ज़बह की क़ुरबानी तैयार करके
अपने मेहमानों को मख़सूसो-मुक़द्दस कर दिया
है।" 8 रब फ़रमाता है, "जिस दिन मैं यह क़ुरबानी
चढ़ाऊँगा उस दिन बुज़ुर्गों, शहज़ादों और अजनबी
लिबास पहननेवालों को सज़ा दूँगा। 9 उस दिन मैं
उन पर सज़ा नाज़िल करूँगा जो तवह्हुमपरस्ती
के बाइस दहलीज़ पर क़दम रखने से गुरेज़ करते
हैं, जो अपने मालिक के घर को ज़ुल्म और फ़रेब
से भर देते हैं।"
10 रब फ़रमाता है, "उस दिन मछली के
दरवाज़े से ज़ोर की चीख़ें, नए शहर से आहो-ज़ारी
और पहाड़ियों से कड़कती आवाज़ें सुनाई देंगी।
11 ऐ मकतीस मुहल्ले के बाशिंदो, वावैला करो,
क्योंकि तुम्हारे तमाम ताजिर हलाक हो जाएंगे।
वहाँ के जितने भी सौदागर चाँदी तोलते हैं वह
नेस्तो-नाबूद हो जाएंगे।
12 तब मैं चराग़ लेकर यरूशलम के कोने कोने
में उनका खोज लगाऊँगा जो इस वक़्त बड़े आराम
से बैठे हैं, ख़ाह हालात कितने बुरे क्यों न हों।
मैं उनसे निपट लूँगा जो सोचते हैं, 'रब कुछ नहीं
करेगा, न अच्छा काम और न बुरा।' 13 ऐसे लोगों
का माल लूट लिया जाएगा, उनके घर मिसमार
हो जाएंगे। वह नए मकान तामीर तो करेंगे लेकिन
उनमें रहेंगे नहीं, अंगूर के बाग़ लगाएँगे लेकिन
उनकी मै पिएँगे नहीं।"
14 रब का अज़ीम दिन क़रीब ही है, वह बड़ी
तेज़ी से हम पर नाज़िल हो रहा है। सुनो! वह
दिन तलख़ होगा। हालात ऐसे होंगे कि बहादुर
फ़ौजी भी चीख़कर मदद के लिए पुकारेंगे। 15 रब
का पूरा ग़ज़ब नाज़िल होगा, और लोग परेशानी

और मुसीबत में मुब्तला रहेंगे। हर तरफ़ तबाही-
ओ-बरबादी, हर तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा, हर तरफ़
घने बादल छाए रहेंगे। 16 उस दिन दुश्मन नरसिंगा
फूँककर और जंग के नारे लगाकर क़िलाबंद शहरों
और बुर्जों पर टूट पड़ेगा। 17 रब फ़रमाता है,
"चूँकि लोगों ने मेरा गुनाह किया है इसलिए मैं
उनको बड़ी मुसीबत में उलझा दूँगा। वह अंधों की
तरह टटोल टटोलकर इधर-उधर फिरेंगे, उनका
ख़ून ख़ाक की तरह गिराया जाएगा और उनकी
नाशें गोबर की तरह ज़मीन पर फेंकी जाएँगी।"
18 जब रब का ग़ज़ब नाज़िल होगा तो न उनका
सोना, न चाँदी उन्हें बचा सकेगी। उस की ग़ैरत
पूरे मुल्क को आग की तरह भस्म कर देगी। वह
मुल्क के तमाम बाशिंदों को हलाक करेगा, हाँ
उनका अंजाम हौलनाक होगा।

होश में आओ!

2 ऐ बेहया क़ौम, जमा होकर हाज़िरी के लिए
खड़ी हो जा, 2 इससे पहले कि मुक़र्ररा दिन
आकर तुझे भूसे की तरह उड़ा ले जाए। ऐसा न
हो कि तुम रब के सख़्त ग़ुस्से का निशाना बन
जाओ, कि रब का ग़ज़बनाक दिन तुम पर नाज़िल
हो जाए।

3 ऐ मुल्क के तमाम फ़रोतनो, ऐ उसके
अहकाम पर अमल करनेवालो, रब को तलाश
करो! रास्तबाज़ी के तालिब हो, हलीमी ढूँडो।
शायद तुम उस दिन रब के ग़ज़ब से बच जाओ।[a]

इसराईल के दुश्मनों का अंजाम

4 ग़ज़्ज़ा को छोड़ दिया जाएगा, अस्क़लून
वीरानो-सुनसान हो जाएगा। दोपहर के वक़्त ही
अशदूद के बाशिंदों को निकाला जाएगा, अक़रून
को जड़ से उखाड़ा जाएगा। 5 क्रेते से आई
हुई क़ौम पर अफ़सोस जो साहिली इलाक़े में
रहती है। क्योंकि रब तुम्हारे बारे में फ़रमाता
है, "ऐ फ़िलिस्तियों की सरज़मीन, ऐ मुल्के-
कनान, मैं तुझे तबाह करूँगा, एक भी बाक़ी नहीं
रहेगा।" 6 तब यह साहिली इलाक़ा चराने के लिए
इस्तेमाल होगा, और चरवाहे उसमें अपनी भेड़-
बकरियों के लिए बाड़े बना लेंगे। 7 मुल्क यहूदाह
के घराने के बचे हुओं के क़ब्ज़े में आएगा, और
वही वहाँ चरेंगे, वही शाम के वक़्त अस्क़लून के
घरों में आराम करेंगे। क्योंकि रब उनका ख़ुदा
उनकी देख-भाल करेगा, वही उन्हें बहाल करेगा।

8 "मैंने मोआबियों की लान-तान और
अम्मोनियों की इहानत पर ग़ौर किया है। उन्होंने
मेरी क़ौम की रुसवाई और उसके मुल्क के
ख़िलाफ़ बड़ी बड़ी बातें की हैं।" 9 इसलिए
रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, "मेरी हयात की क़सम, मोआब और
अम्मोन के इलाक़े सदूम और अमूरा की मानिंद
बन जाएंगे। उनमें ख़ुदरौ पौदे और नमक के गढ़े ही
पाए जाएंगे, और वह अबद तक वीरानो-सुनसान
रहेंगे। तब मेरी क़ौम का बचा हुआ हिस्सा उन्हें
लूटकर उनकी ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लेगा।"

10 यही उनके तकब्बुर का अज्र होगा। क्योंकि
उन्होंने रब्बुल-अफ़वाज की क़ौम को लान-तान
करके क़ौम के ख़िलाफ़ बड़ी बड़ी बातें की हैं।
11 जब रब मुल्क के तमाम देवताओं को तबाह
करेगा तो उनके रोंगटे खड़े हो जाएंगे। तमाम
साहिली इलाक़ों की अक़वाम उसके सामने झुक
जाएँगी, हर एक अपने अपने मक़ाम पर उसे
सिजदा करेगा।

12 रब फ़रमाता है, "ऐ एथोपिया के बाशिंदो,
मेरी तलवार तुम्हें भी मार डालेगी।"

13 वह अपना हाथ शिमाल की तरफ़ भी
बढ़ाकर असूर को तबाह करेगा। नीनवा वी-
रानो-सुनसान होकर रेगिस्तान जैसा ख़ुश्क हो
जाएगा। 14 शहर के बीच में रेवड़ और दीगर
कई क़िस्म के जानवर आराम करेंगे। दश्ती उल्लू
और ख़ारपुश्त उसके टूटे-फूटे सतूनों में बसेरा
करेंगे, और जंगली जानवरों की चीख़ें खिड़कियों
में से गूँजेंगी। घरों की दहलीज़ें मलबे के ढेरों

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : छुपे रह सको।

में छुपी रहेंगी जबकि उनकी देवदार की लकड़ी
हर गुज़रनेवाले को दिखाई देगी। 15 यही उस
ख़ुशबाश शहर का अंजाम होगा जो पहले इतनी
हिफ़ाज़त से बसता था और जो दिल में कहता था,
"मैं ही हूँ, मेरे सिवा कोई और है ही नहीं।" आइंदा
वह रेगिस्तान होगा, ऐसी जगह जहाँ जानवर ही
आराम करेंगे। हर मुसाफ़िर "तौबा तौबा" कहकर
वहाँ से गुज़रेगा।

यरूशलम का अंजाम

3 उस सरकश, नापाक और ज़ालिम शहर
पर अफ़सोस जो यरूशलम कहलाता है।
2 न वह सुनता, न तरबियत क़बूल करता है।
न वह रब पर भरोसा रखता, न अपने ख़ुदा के
क़रीब आता है। 3 जो बुज़ुर्ग उसके बीच में हैं
वह दहाड़ते हुए शेरबबर हैं। उसके क़ाज़ी शाम
के वक़्त भूके फिरनेवाले भेड़ीए हैं जो तुलूए-
सुबह तक शिकार की एक हड्डी तक नहीं छोड़ते।
4 उसके नबी गुस्ताख़ और ग़द्दार हैं। उसके इमाम
मक़दिस की बेहुरमती और शरीअत से ज़्यादती
करते हैं।

5 लेकिन रब भी शहर के बीच में है, और वह
रास्त है, वह बेइनसाफ़ी नहीं करता। सुबह बसुबह
वह अपना इनसाफ़ क़ायम रखता है, हम कभी
उससे महरूम नहीं रहते। लेकिन बेदीन शर्म से
वाक़िफ़ ही नहीं होता।

6 रब फ़रमाता है, "मैंने क़ौमों को नेस्तो-नाबूद
कर दिया है। उनके क़िले तबाह, उनकी गलियाँ
सुनसान हैं। अब उनमें से कोई नहीं गुज़रता।
उनके शहर इतने बरबाद हैं कि कोई भी उनमें नहीं
रहता। 7 मैं बोला, 'बेशक यरूशलम मेरा ख़ौफ़
मानकर मेरी तरबियत क़बूल करेगा। क्योंकि क्या
ज़रूरत है कि उस की रिहाइशगाह मिट जाए और
मेरी तमाम सज़ाएँ उस पर नाज़िल हो जाएँ।'
लेकिन उसके बाशिंदे मज़ीद जोश के साथ अपनी
बुरी हरकतों में लग गए।" 8 चुनाँचे रब फ़रमाता
है, "अब मेरे इंतज़ार में रहो, उस दिन के इंतज़ार
में जब मैं शिकार करने के लिए उठूँगा।[a] क्योंकि
मैंने अक़वाम को जमा करने का फ़ैसला किया
है। मैं ममालिक को इकट्ठा करके उन पर अपना
ग़ज़ब नाज़िल करूँगा। तब वह मेरे सख़्त क़हर
का निशाना बन जाएंगे, पूरी दुनिया मेरी ग़ैरत की
आग से भस्म हो जाएगी।

इसराईल के लिए नई उम्मीद

9 लेकिन इसके बाद मैं अक़वाम के होंटों को
पाक-साफ़ करूँगा ताकि वह आइंदा रब का
नाम लेकर इबादत करें, कि वह शाना बशाना
खड़ी होकर मेरी ख़िदमत करें। 10 उस वक़्त मेरे
परस्तार, मेरी मुंतशिर हुई क़ौम एथोपिया के
दरियाओं के पार से भी आकर मुझे क़ुरबानियाँ
पेश करेगी।

11 ऐ सिय्यून बेटी, उस दिन तुझे शर्मसार
नहीं होना पड़ेगा हालाँकि तूने मुझसे बेवफ़ा
होकर निहायत बुरे काम किए हैं। क्योंकि मैं
तेरे दरमियान से तेरे मुतकब्बिर शेख़ीबाज़ों को
निकालूँगा। आइंदा तू मेरे मुक़द्दस पहाड़ पर
मग़रूर नहीं होगी। 12 मैं तुझमें सिर्फ़ क़ौम के
ग़रीबों और ज़रूरतमंदों को छोड़ूँगा, उन सबको
जो रब के नाम में पनाह लेंगे। 13 इसराईल का
यह बचा हुआ हिस्सा न ग़लत काम करेगा, न झूट
बोलेगा। उनकी ज़बान पर फ़रेब नहीं होगा। तब
वह भेड़ों की तरह चरागाह में चरेंगे और आराम
करेंगे। उन्हें डरानेवाला कोई नहीं होगा।"

14 ऐ सिय्यून बेटी, ख़ुशी के नारे लगा! ऐ
इसराईल, ख़ुशी मना! ऐ यरूशलम बेटी,
शादमान हो, पूरे दिल से शादियाना बजा।
15 क्योंकि रब ने तेरी सज़ा मिटाकर तेरे दुश्मन
को भगा दिया है। रब जो इसराईल का बादशाह
है तेरे दरमियान ही है। आइंदा तुझे किसी नुक़सान
से डरने की ज़रूरत नहीं होगी।

16 उस दिन लोग यरूशलम से कहेंगे, "ऐ
सिय्यून, मत डरना! हौसला न हार, तेरे हाथ
ढीले न हों। 17 रब तेरा ख़ुदा तेरे दरमियान है, तेरा

[a] एक और मुमकिना तरजुमा : गवाही देने के लिए।

पहलवान तुझे नजात देगा। वह शादमान होकर
तेरी ख़ुशी मनाएगा। उस की मुहब्बत तेरे क़ुसूर
का ज़िक्र ही नहीं करेगी बल्कि वह तुझसे इंतहाई
ख़ुश होकर शादियाना बजाएगा।”
18 रब फ़रमाता है, “मैं ईद को तर्क करनेवालों
को तुझसे दूर कर दूँगा, क्योंकि वह तेरी रुसवाई
का बाइस थे। **19** मैं उनसे भी निपट लूँगा जो तुझे
कुचल रहे हैं। जो लँगड़ाता है उसे मैं बचाऊँगा,
जो मुंतशिर हैं उन्हें जमा करूँगा। जिस मुल्क
में भी उनकी रुसवाई हुई वहाँ मैं उनकी तारीफ़
और एहतराम कराऊँगा। **20** उस वक़्त मैं तुम्हें
जमा करके वतन में वापस लाऊँगा। मैं तुम्हारे
देखते देखते तुम्हें बहाल करूँगा और दुनिया की
तमाम अक़वाम में तुम्हारी तारीफ़ और एहतराम
कराऊँगा।” यह रब का फ़रमान है।

हज्जी

रब के घर को दुबारा बनाने का हुक्म

1 फ़ारस के बादशाह दारा की हुकूमत के
दूसरे साल में हज्जी नबी पर रब का कलाम
नाज़िल हुआ। छटे महीने का पहला दिन[a] था।
कलाम में अल्लाह यहूदाह के गवर्नर ज़रुब्बाबल
बिन सियालतियेल और इमामे-आज़म यशुअ बिन
यहूसदक़ से मुख़ातिब हुआ।
2-3 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "यह क़ौम
कहती है, 'अभी रब के घर को दुबारा तामीर करने
का वक़्त नहीं आया।' 4 क्या यह ठीक है कि तुम
ख़ुद लकड़ी से सजे हुए घरों में रहते हो जबकि
मेरा घर अब तक मलबे का ढेर है?" 5 रब्बुल-
अफ़वाज फ़रमाता है, "अपने हाल पर ग़ौर करो।
6 तुमने बहुत बीज बोया लेकिन कम फ़सल काटी
है। तुम खाना तो खाते हो लेकिन भूके रहते हो,
पानी तो पीते हो लेकिन प्यासे रहते हो, कपड़े
तो पहनते हो लेकिन सर्दी लगती है। और जब
कोई पैसे कमाकर उन्हें अपने बटवे में डालता है
तो उसमें सूराख़ हैं।"
7 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "अपने हाल
पर ध्यान देकर उसका सहीह नतीजा निकालो!
8 पहाड़ों पर चढ़कर लकड़ी ले आओ और रब
के घर की तामीर शुरू करो। ऐसा ही रवैया मुझे
पसंद होगा, और इस तरह ही तुम मुझे जलाल
दोगे।" यह रब का फ़रमान है। 9 "देखो, तुमने
बहुत बरकत पाने की तवक़्क़ो की, लेकिन क्या
हुआ? कम ही हासिल हुआ। और जो कुछ तुम
अपने घर वापस लाए उसे मैंने हवा में उड़ा दिया।
क्यों? मैं, रब्बुल-अफ़वाज तुम्हें इसकी असल
वजह बताता हूँ। मेरा घर अब तक मलबे का ढेर है
जबकि तुममें से हर एक अपना अपना घर मज़बूत
करने के लिए भाग-दौड़ कर रहा है। 10 इसी लिए
आसमान ने तुम्हें ओस से और ज़मीन ने तुम्हें
फ़सलों से महरूम कर रखा है। 11 इसी लिए मैंने
हुक्म दिया कि खेतों में और पहाड़ों पर काल
पड़े, कि मुल्क का अनाज, अंगूर, ज़ैतून बल्कि
ज़मीन की हर पैदावार उस की लपेट में आ जाए।
इनसानो-हैवान उस की ज़द में आ गए हैं, और
तुम्हारी मेहनत-मशक़्क़त ज़ाया हो रही है।"
12 तब ज़रुब्बाबल बिन सियालतियेल, इमामे-
आज़म यशुअ बिन यहूसदक़ और क़ौम के पूरे बचे
हुए हिस्से ने रब अपने ख़ुदा की सुनी। जो भी बात
रब उनके ख़ुदा ने हज्जी नबी को सुनाने को कहा
था उसे उन्होंने मान लिया। रब का ख़ौफ़ पूरी क़ौम
पर तारी हुआ। 13 तब रब ने अपने पैग़ंबर हज्जी
की मारिफ़त उन्हें यह पैग़ाम दिया, "रब फ़रमाता
है, मैं तुम्हारे साथ हूँ।"
14-15 यों रब ने यहूदाह के गवर्नर ज़-
रुब्बाबल बिन सियालतियेल, इमामे-आज़म
यशुअ बिन यहूसदक़ और क़ौम के बचे हुए हिस्से

[a] 29 अगस्त।

को रब के घर की तामीर करने की तहरीक दी। दारा बादशाह की हुकूमत के दूसरे साल में वह आकर रब्बुल-अफ़वाज अपने ख़ुदा के घर पर काम करने लगे। छटे महीने का 24वाँ दिन[a] था।

रब का नया घर शानदार होगा

2 उसी साल के सातवें महीने के 21वें
दिन[b] हज्जी नबी पर रब का कलाम
नाज़िल हुआ, 2 "यहूदाह के गवर्नर ज़-
रुब्बाबल बिन सियालतियेल, इमामे-आज़म
यशुअ बिन यहूसदक़ और क़ौम के बचे हुए हिस्से
को बता देना,
3 'तुममें से किस को याद है कि रब का घर
तबाह होने से पहले कितना शानदार था? जो
इस वक़्त उस की जगह तामीर हो रहा है वह तुम्हें
कैसा लगता है? रब के पहले घर की निसबत
यह कुछ भी नहीं लगता। 4 लेकिन रब फ़रमाता है
कि ऐ ज़रुब्बाबल, हौसला रख! ऐ इमामे-आज़म
यशुअ बिन यहूसदक़ हौसला रख! ऐ मुल्क के
तमाम बाशिंदो, हौसला रखकर अपना काम जारी
रखो। क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि मैं
तुम्हारे साथ हूँ। 5 जो अहद मैंने मिसर से निकलते
वक़्त तुमसे बाँधा था वह क़ायम रहेगा। मेरा रूह
तुम्हारे दरमियान ही रहेगा। डरो मत!
6 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि थोड़ी देर
के बाद मैं एक बार फिर आसमानो-ज़मीन और
बहरो-बर्र को हिला दूँगा। 7 तब तमाम अक़्वाम
लरज़ उठेंगी, उनके बेशक़ीमत ख़ज़ाने इधर लाए
जाएंगे, और मैं इस घर को अपने जलाल से भर
दूँगा। 8 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि चाँदी मेरी
है और सोना मेरा है। 9 नया घर पुराने घर से
कहीं ज़्यादा शानदार होगा, और मैं इस जगह को
सलामती अता करूँगा।' यह रब्बुल-अफ़वाज का
फ़रमान है।"

मैं तुम्हें दुबारा बरकत दूँगा

10 दारा बादशाह की हुकूमत के दूसरे साल में
हज्जी पर रब का एक और कलाम नाज़िल हुआ।
नवें महीने का 24वाँ दिन[c] था।
11 "रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, 'इमामों से
सवाल कर कि शरीअत ज़ैल के मामले के बारे में
क्या फ़रमाती है, 12 अगर कोई शख़्स मख़सूसो-
मुक़द्दस गोश्त अपनी झोली में डालकर कहीं ले
जाए और रास्ते में झोली मै, ज़ैतून के तेल, रोटी
या मज़ीद किसी खानेवाली चीज़ से लग जाए
तो क्या खानेवाली यह चीज़ गोश्त से मख़सूसो-
मुक़द्दस हो जाती है'?"
हज्जी ने इमामों को यह सवाल पेश किया तो
उन्होंने जवाब दिया, "नहीं।"
13 तब उसने मज़ीद पूछा, "अगर कोई किसी
लाश को छूने से नापाक होकर इन खानेवाली
चीज़ों में से कुछ छुए तो क्या खानेवाली चीज़
उससे नापाक हो जाती है?"
इमामों ने जवाब दिया, "जी हाँ।"
14 फिर हज्जी ने कहा, "रब फ़रमाता है कि
मेरी नज़र में इस क़ौम का यही हाल है। जो कुछ
भी यह करते और क़ुरबान करते हैं वह नापाक है।
15 लेकिन अब इस बात पर ध्यान दो कि आज
से हालात कैसे होंगे। रब के घर की नए सिरे से
बुनियाद रखने से पहले हालात कैसे थे? 16 जहाँ
तुम फ़सल की 20 बोरियों की उम्मीद रखते थे
वहाँ सिर्फ़ 10 हासिल हुईं। जहाँ तुम अंगूरों को
कुचलकर रस के 100 लिटर की तवक़्क़ो रखते
थे वहाँ सिर्फ़ 40 लिटर निकले।" 17 रब फ़रमाता
है, "तेरी मेहनत-मशक़्क़त ज़ाया हुई, क्योंकि मैंने
पतरोग, फफूँदी और ओलों से तुम्हारी पैदावार
को नुक़सान पहुँचाया। तो भी तुमने तौबा करके
मेरी तरफ़ रुजू न किया। 18 लेकिन अब तवज्जुह
दो कि तुम्हारा हाल आज यानी नवें महीने के
24वें दिन से कैसा होगा। इस दिन रब के घर
की बुनियाद रखी गई, इसलिए ग़ौर करो 19 कि

[a] 21 सितंबर।
[b] 17 अक्तूबर।
[c] 18 दिसंबर।

क्या आइंदा भी गोदाम में जमाशुदा बीज ज़ाया हो जाएगा, कि क्या आइंदा भी अंगूर, अंजीर, अनार और ज़ैतून का फल न होने के बराबर होगा। क्योंकि आज से मैं तुम्हें बरकत दूँगा।”

ज़रुब्बाबल से अल्लाह का वादा

20 उसी दिन हज्जी पर रब का एक और कलाम
नाज़िल हुआ, 21 “यहूदाह के गवर्नर ज़रुब्बाबल
को बता दे कि मैं आसमानो-ज़मीन को हिला
दूँगा। 22 मैं शाही तख़्तों को उलटकर अजनबी
सलतनतों की ताक़त तबाह कर दूँगा। मैं रथों को उनके रथबानों समेत उलट दूँगा, और घोड़े अपने सवारों समेत गिर जाएंगे। हर एक अपने भाई की
तलवार से मरेगा।” 23 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता
है, “उस दिन मैं तुझे, अपने ख़ादिम ज़रुब्बाबल बिन सियालतियेल को लेकर मुहर की अंगूठी की मानिंद बना दूँगा, क्योंकि मैंने तुझे चुन लिया है।” यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।

ज़करियाह

तौबा करो!

1 फ़ारस के बादशाह दारा की हुकूमत के
दूसरे साल और आठवें महीने[a] में रब का
कलाम नबी ज़करियाह बिन बरकियाह बिन इद्दू
पर नाज़िल हुआ,

2-3 “लोगों से कह कि रब तुम्हारे बापदादा
से निहायत ही नाराज़ था। अब रब्बुल-अफ़वाज
फ़रमाता है कि मेरे पास वापस आओ तो मैं भी
तुम्हारे पास वापस आऊँगा। 4 अपने बापदादा
की मानिंद न हो जिन्होंने न मेरी सुनी, न मेरी
तरफ़ तवज्जुह दी, गो मैंने उस वक़्त के नबियों
की मारिफ़त उन्हें आगाह किया था कि अपनी
बुरी राहों और शरीर हरकतों से बाज़ आओ।
5 अब तुम्हारे बापदादा कहाँ हैं? और क्या नबी
अबद तक ज़िंदा रहते हैं? दोनों बहुत देर हुई
वफ़ात पा चुके हैं।[b] 6 लेकिन तुम्हारे बापदादा के
बारे में जितनी भी बातें और फ़ैसले मैंने अपने
ख़ादिमों यानी नबियों की मारिफ़त फ़रमाए वह
सब पूरे हुए। तब उन्होंने तौबा करके इक़रार
किया, ‘रब्बुल-अफ़वाज ने हमारी बुरी राहों और
हरकतों के सबब से वह कुछ किया है जो उसने
करने को कहा था’।”

ज़करियाह रोया देखता है

7 तीन माह के बाद रब ने नबी ज़करियाह बिन
बरकियाह बिन इद्दू पर एक और कलाम नाज़िल
किया। सबात यानी 11वें महीने का 24वाँ दिन[c]
था।

पहली रोया : घुड़सवार

8 उस रात मैंने रोया में एक आदमी को सुर्ख़ रंग
के घोड़े पर सवार देखा। वह घाटी के दरमियान
उगनेवाली मेहँदी की झाड़ियों के बीच में रुका
हुआ था। उसके पीछे सुर्ख़, भूरे और सफ़ेद रंग
के घोड़े खड़े थे। उन पर भी आदमी बैठे थे।[d]
9 जो फ़रिश्ता मुझसे बात कर रहा था उससे मैंने
पूछा, “मेरे आक़ा, इन घुड़सवारों से क्या मुराद
है?” उसने जवाब दिया, “मैं तुझे उनका मतलब
दिखाता हूँ।” 10 तब मेहँदी की झाड़ियों में रुके
हुए आदमी ने जवाब दिया, “यह वह हैं जिन्हें
रब ने पूरी दुनिया की गश्त करने के लिए भेजा
है।” 11 अब दीगर घुड़सवार रब के उस फ़रिश्ते
के पास आए जो मेहँदी की झाड़ियों के दरमियान
रुका हुआ था। उन्होंने इत्तला दी, “हमने दुनिया
की गश्त लगाई तो मालूम हुआ कि पूरी दुनिया
में अमनो-अमान है।” 12 तब रब का फ़रिश्ता
बोला, “ऐ रब्बुल-अफ़वाज, अब तू 70 सालों से

[a] अक्तूबर ता नवंबर।
[b] ‘दोनों . . . चुके हैं’ इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो।
[c] 15 फ़रवरी।
[d] ‘उन . . . बैठे थे’ इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो।

यरूशलम और यहूदाह की आबादियों से नाराज़ रहा है। तू कब तक उन पर रहम न करेगा?”

13 जवाब में रब ने मेरे साथ गुफ़्तगू करनेवाले फ़रिश्ते से नरम और तसल्ली देनेवाली बातें कीं। 14 फ़रिश्ता दुबारा मुझसे मुख़ातिब हुआ, “एलान कर कि रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, ‘मैं बड़ी ग़ैरत से यरूशलम और कोहे-सिय्यून के लिए लड़ूँगा। 15 मैं उन दीगर अक़वाम से निहायत नाराज़ हूँ जो इस वक़्त अपने आपको महफ़ूज़ समझती हैं। बेशक मैं अपनी क़ौम से कुछ नाराज़ था, लेकिन इन दीगर क़ौमों ने उसे हद से ज़्यादा तबाह कर दिया है। यह कभी भी मेरा मक़सद नहीं था।’ 16 रब फ़रमाता है, ‘अब मैं दुबारा यरूशलम की तरफ़ मायल होकर उस पर रहम करूँगा। मेरा घर नए सिरे से उसमें तामीर हो जाएगा बल्कि पूरे शहर की पैमाइश की जाएगी ताकि उसे दुबारा तामीर किया जाए।’ यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।

17 मज़ीद एलान कर कि रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, ‘मेरे शहरों में दुबारा कसरत का माल पाया जाएगा। रब दुबारा कोहे-सिय्यून को तसल्ली देगा, दुबारा यरूशलम को चुन लेगा’।”

दूसरी रोया : सींग और कारीगर

18 मैंने अपनी निगाह उठाई तो क्या देखता हूँ कि चार सींग मेरे सामने हैं। 19 जो फ़रिश्ता मुझसे बात कर रहा था उससे मैंने पूछा, “इनका क्या मतलब है?” उसने जवाब दिया, “यह वह सींग हैं जिन्होंने यहूदाह और इसराईल को यरूशलम समेत मुंतशिर कर दिया था।”

20 फिर रब ने मुझे चार कारीगर दिखाए। 21 मैंने सवाल किया, “यह क्या करने आ रहे हैं?” उसने जवाब दिया, “मज़कूरा सींगों ने यहूदाह को इतने ज़ोर से मुंतशिर कर दिया कि आख़िरकार एक भी अपना सर नहीं उठा सका। लेकिन अब यह कारीगर उनमें दहशत फैलाने आए हैं। यह उन क़ौमों के सींगों को ख़ाक में मिला देंगे जिन्होंने उनसे यहूदाह के बाशिंदों को मुंतशिर कर दिया था।”

तीसरी रोया : आदमी यरूशलम की पैमाइश करता है

2 मैंने अपनी नज़र दुबारा उठाई तो एक आदमी को देखा जिसके हाथ में फ़ीता था। 2 मैंने पूछा, “आप कहाँ जा रहे हैं?” उसने जवाब दिया, “यरूशलम की पैमाइश करने जा रहा हूँ। मैं मालूम करना चाहता हूँ कि शहर की लंबाई और चौड़ाई कितनी होनी चाहिए।” 3 तब वह फ़रिश्ता रवाना हुआ जो अब तक मुझसे बात कर रहा था। लेकिन रास्ते में एक और फ़रिश्ता उससे मिलने आया। 4 इस दूसरे फ़रिश्ते ने कहा, “भागकर पैमाइश करनेवाले नौजवान को बता दे, ‘इनसानो-हैवान की इतनी बड़ी तादाद होगी कि आइंदा यरूशलम की फ़सील नहीं होगी। 5 रब फ़रमाता है कि उस वक़्त मैं आग की चारदीवारी बनकर उस की हिफ़ाज़त करूँगा, मैं उसके दरमियान रहकर उस की इज़्ज़तो-जलाल का बाइस हूँगा’।”

6 रब फ़रमाता है, “उठो, उठो! शिमाली मुल्क से भाग आओ। क्योंकि मैंने ख़ुद तुम्हें चारों तरफ़ मुंतशिर कर दिया था। 7 लेकिन अब मैं फ़रमाता हूँ कि वहाँ से निकल आओ। सिय्यून के जितने लोग बाबल[a] में रहते हैं वहाँ से बच निकलें!” 8 क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जिसने मुझे भेजा वह उन क़ौमों के बारे में जिन्होंने तुम्हें लूट लिया फ़रमाता है, “जो तुम्हें छेड़े वह मेरी आँख की पुतली को छेड़ेगा। 9 इसलिए यक़ीन करो कि मैं अपना हाथ उनके ख़िलाफ़ उठाऊँगा। उनके अपने ग़ुलाम उन्हें लूट लेंगे।”

तब तुम जान लोगे कि रब्बुल-अफ़वाज ने मुझे भेजा है। 10 रब फ़रमाता है, “ऐ सिय्यून बेटी, ख़ुशी के नारे लगा! क्योंकि मैं आ रहा हूँ, मैं तेरे दरमियान सुकूनत करूँगा। 11 उस दिन बहुत-सी अक़वाम मेरे साथ पैवस्त होकर मेरी क़ौम का

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : बाबल बेटी।

हिस्सा बन जाएँगी। मैं ख़ुद तेरे दरमियान सुकूनत करूँगा।”

तब तू जान लेगी कि रब्बुल-अफ़वाज ने मुझे तेरे पास भेजा है।

12 मुक़द्दस मुल्क में यहूदाह रब की मौरूसी ज़मीन बनेगा, और वह यरूशलम को दुबारा चुन
लेगा। 13 तमाम इनसान रब के सामने ख़ामोश हो जाएँ, क्योंकि वह उठकर अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह से निकल आया है।

चौथी रोया : इमामे-आज़म यशुअ

3 इसके बाद रब ने मुझे रोया में इमामे-आज़म यशुअ को दिखाया। वह रब के फ़रिश्ते के सामने खड़ा था, और इबलीस उस पर इलज़ाम लगाने के लिए उसके दाएँ हाथ खड़ा
हो गया था। 2 रब ने इबलीस से फ़रमाया, “ऐ इबलीस, रब तुझे मलामत करता है! रब जिसने यरूशलम को चुन लिया वह तुझे डाँटता है! यह आदमी तो बाल बाल बच गया है, उस लकड़ी की तरह जो भड़कती आग में से छीन ली गई है।”

3 यशुअ गंदे कपड़े पहने हुए फ़रिश्ते के सामने
खड़ा था। 4 जो अफ़राद साथ खड़े थे उन्हें फ़रिश्ते ने हुक्म दिया, “उसके मैले कपड़े उतार दो।” फिर यशुअ से मुख़ातिब हुआ, “देख, मैंने तेरा क़ुसूर तुझसे दूर कर दिया है, और अब मैं तुझे
शानदार सफ़ेद कपड़े पहना देता हूँ।” 5 मैंने कहा,
“वह उसके सर पर पाक-साफ़ पगड़ी बाँधें!” चुनाँचे उन्होंने यशुअ के सर पर पाक-साफ़ पगड़ी बाँधकर उसे नए कपड़े पहनाए। रब का फ़रिश्ता
साथ खड़ा रहा। 6 यशुअ से उसने बड़ी संजीदगी
से कहा,

7 “रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, ‘मेरी राहों पर चलकर मेरे अहकाम पर अमल कर तो तू मेरे घर की राहनुमाई और उस की बारगाहों की देख-भाल करेगा। फिर मैं तेरे लिए यहाँ आने और हाज़िरीन में खड़े होने का रास्ता क़ायम रखूँगा।

8 ऐ इमामे-आज़म यशुअ, सुन! तू और तेरे सामने बैठे तेरे इमाम भाई मिलकर उस वक़्त की तरफ़ इशारा हैं जब मैं अपने ख़ादिम को
जो कोंपल कहलाता है आने दूँगा। 9 देखो वह
जौहर जो मैंने यशुअ के सामने रखा है। उस एक ही पत्थर पर सात आँखें हैं।’ रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, ‘मैं उस पर कतबा कंदा करके एक
ही दिन में इस मुल्क का गुनाह मिटा दूँगा। 10 उस
दिन तुम एक दूसरे को अपनी अंगूर की बेल और अपने अंजीर के दरख़्त के साये में बैठने की दावत दोगे।’ यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।”

पाँचवीं रोया : सोने का शमादान और ज़ैतून के दरख़्त

4 जिस फ़रिश्ते ने मुझसे बात की थी वह अब मेरे पास वापस आया। उसने मुझे यों जगा दिया जिस तरह गहरी नींद सोनेवाले को
जगाया जाता है। 2 उसने पूछा, “तुझे क्या नज़र आता है?” मैंने जवाब दिया, “ख़ालिस सोने का शमादान जिस पर तेल का प्याला और सात
चराग़ हैं। हर चराग़ के सात मुँह हैं। 3 ज़ैतून के दो दरख़्त भी दिखाई देते हैं। एक दरख़्त तेल के प्याले के दाईं तरफ़ और दूसरा उसके बाईं तरफ़
है। 4 लेकिन मेरे आक़ा, इन चीज़ों का मतलब क्या है?”

5 फ़रिश्ता बोला, “क्या यह तुझे मालूम नहीं?” मैंने जवाब दिया, “नहीं, मेरे आक़ा।”

6 फ़रिश्ते ने मुझसे कहा, “ज़रुब्बाबल के लिए रब का यह पैग़ाम है,

‘रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि तू न अपनी ताक़त, न अपनी क़ुव्वत से बल्कि मेरे रूह से
ही कामयाब होगा।’ 7 क्या रास्ते में बड़ा पहाड़ हायल है? ज़रुब्बाबल के सामने वह हमवार मैदान बन जाएगा। और जब ज़रुब्बाबल रब के घर का आख़िरी पत्थर लगाएगा तो हाज़िरीन पुकार उठेंगे, ‘मुबारक हो! मुबारक हो’!”

8 रब का कलाम एक बार फिर मुझ पर नाज़िल
हुआ, 9 “ज़रुब्बाबल के हाथों ने इस घर की बुनियाद डाली, और उसी के हाथ उसे तकमील तक पहुँचाएँगे। तब तू जान लेगा कि रब्बुल-

अफ़वाज ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। 10 गो
तामीर के आग़ाज़ में बहुत कम नज़र आता है तो
भी उस पर हिक़ारत की निगाह न डालो। क्योंकि
लोग ख़ुशी मनाएँगे जब ज़रुब्बाबल के हाथ में
साहूल देखेंगे। (मज़कूरा सात चराग़ रब की आँखें
हैं जो पूरी दुनिया की गश्त लगाती रहती हैं)।"

11 मैंने मज़ीद पूछा, "शमादान के दाएँ-बाएँ के
ज़ैतून के दो दरख़्तों से क्या मुराद है? 12 यहाँ
सोने के दो पायप भी नज़र आते हैं जिनसे ज़ैतून
का सुनहरा तेल बह निकलता है। ज़ैतून की जो दो
टहनियाँ उनके साथ हैं उनका मतलब क्या है?"

13 फ़रिश्ते ने कहा, "क्या तू यह नहीं
जानता?" मैं बोला, "नहीं, मेरे आक़ा।" 14 तब
उसने फ़रमाया, "यह वह दो मसह किए हुए
आदमी हैं जो पूरी दुनिया के मालिक के हुज़ूर खड़े
होते हैं।"

छटी रोया : उड़नेवाला तूमार

5 मैंने एक बार फिर अपनी नज़र उठाई तो
एक उड़ता हुआ तूमार देखा। 2 फ़रिश्ते ने
पूछा, "तुझे क्या नज़र आता है?" मैंने जवाब
दिया, "एक उड़ता हुआ तूमार जो 30 फ़ुट लंबा
और 15 फ़ुट चौड़ा है।" 3 वह बोला, "इससे
मुराद एक लानत है जो पूरे मुल्क पर भेजी
जाएगी। इस तूमार के एक तरफ़ लिखा है कि हर
चोर को मिटा दिया जाएगा और दूसरी तरफ़ यह
कि झूटी क़सम खानेवाले को नेस्त किया जाएगा।
4 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, 'मैं यह भेजूँगा तो
चोर और मेरे नाम की झूटी क़सम खानेवाले के
घर में लानत दाख़िल होगी और उसके बीच में
रहकर उसे लकड़ी और पत्थर समेत तबाह कर
देगी'।"

सातवीं रोया : टोकरी में औरत

5 जो फ़रिश्ता मुझसे बात कर रहा था उसने
आकर मुझसे कहा, "अपनी निगाह उठाकर वह
देख जो निकलकर आ रहा है।" 6 मैंने पूछा, "यह
क्या है?" उसने जवाब दिया, "यह अनाज की
पैमाइश करने की टोकरी है। यह पूरे मुल्क में नज़र
आती है।" 7 टोकरी पर सीसे का ढकना था। अब
वह खुल गया, और टोकरी में बैठी हुई एक औरत
दिखाई दी। 8 फ़रिश्ता बोला, "इस औरत से मुराद
बेदीनी है।" उसने औरत को धक्का देकर टोकरी
में वापस कर दिया और सीसे का ढकना ज़ोर से
बंद कर दिया।

9 मैंने दुबारा अपनी नज़र उठाई तो दो औरतों
को देखा। उनके लक़लक़ के-से पर थे, और
उड़ते वक़्त हवा उनके साथ थी। टोकरी के पास
पहुँचकर वह उसे उठाकर आसमानो-ज़मीन के
दरमियान ले गईं। 10 जो फ़रिश्ता मुझसे गुफ़्तगू
कर रहा था उससे मैंने पूछा, "औरतें टोकरी को
किधर ले जा रही हैं?" 11 उसने जवाब दिया,
"मुल्के-बाबल में। वहाँ वह उसके लिए घर बना
देंगी। जब घर तैयार होगा तो टोकरी वहाँ उस की
अपनी जगह पर रखी जाएगी।"

चार रथ

6 मैंने फिर अपनी निगाह उठाई तो क्या
देखता हूँ कि चार रथ पीतल के दो पहाड़ों
के बीच में से निकल रहे हैं। 2 पहले रथ के घोड़े
सुर्ख़, दूसरे के स्याह, 3 तीसरे के सफ़ेद और चौथे
के धब्बेदार थे। सब ताक़तवर थे।

4 जो फ़रिश्ता मुझसे बात कर रहा था उससे
मैंने सवाल किया, "मेरे आक़ा, इनका क्या
मतलब है?" 5 उसने जवाब दिया, "यह
आसमान की चार रूहें[a] हैं। पहले यह पूरी दुनिया
के मालिक के हुज़ूर खड़ी थीं, लेकिन अब वहाँ
से निकल रही हैं। 6 स्याह घोड़ों का रथ शिमाली
मुल्क की तरफ़ जा रहा है, सफ़ेद घोड़ों का
मग़रिब की तरफ़, और धब्बेदार घोड़ों का जुनूब
की तरफ़।"

7 यह ताक़तवर घोड़े बड़ी बेताबी से इस इंतज़ार
में थे कि दुनिया की गश्त करें। फिर उसने हुक्म
दिया, "चलो, दुनिया की गश्त करो।" वह फ़ौरन

[a] या हवाएँ।

निकलकर दुनिया की गश्त करने लगे। 8 फ़रिश्ते
ने मुझे आवाज़ देकर कहा, "उन घोड़ों पर ख़ास
ध्यान दो जो शिमाली मुल्क की तरफ़ बढ़ रहे हैं।
यह उस मुल्क पर मेरा ग़ुस्सा उतारेंगे।"

इसराईल का आनेवाला बादशाह

9 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,
10 "आज ही यूसियाह बिन सफ़नियाह के घर
में जा! वहाँ तेरी मुलाक़ात बाबल में जिलावतन
किए हुए इसराईलियों ख़लदी, तूबियाह और
यदायाह से होगी जो इस वक़्त वहाँ पहुँच चुके हैं।
जो हदिये वह अपने साथ लाए हैं उन्हें क़बूल कर।
11 उनकी यह सोना-चाँदी लेकर ताज बना ले,
फिर ताज को इमामे-आज़म यशुअ बिन यहूसदक़
के सर पर रखकर 12 उसे बता, 'रब्बुल-अफ़वाज
फ़रमाता है कि एक आदमी आनेवाला है जिसका
नाम कोंपल है। उसके साये में बहुत कोंपलें फूट
निकलेंगी, और वह रब का घर तामीर करेगा।
13 हाँ, वही रब का घर बनाएगा और शानो-शौकत
के साथ तख़्त पर बैठकर हुकूमत करेगा। वह
इमाम की हैसियत से भी तख़्त पर बैठेगा, और
दोनों ओहदों में इत्तफ़ाक़ और सलामती होगी।'
14 ताज को हीलम, तूबियाह, यदायाह और हेन
बिन सफ़नियाह की याद में रब के घर में महफ़ूज़
रखा जाए। 15 लोग दूर-दराज़ इलाक़ों से आकर
रब का घर तामीर करने में मदद करेंगे।"

तब तुम जान लोगे कि रब्बुल-अफ़वाज ने मुझे
तुम्हारे पास भेजा है। अगर तुम ध्यान से रब अपने
ख़ुदा की सुनो तो यह सब कुछ पूरा हो जाएगा।

तुम मेरी सुनने से इनकार करते हो

7 दारा बादशाह की हुकूमत के चौथे साल
में रब ज़करियाह से हमकलाम हुआ।
किसलेव यानी नवें महीने का चौथा दिन[a] था।
2 उस वक़्त बैतेल शहर ने सराज़र और रजम-
मलिक को उसके आदमियों समेत यरूशलम
भेजा था ताकि रब से इलतमास करें। 3 साथ साथ
उन्हें रब्बुल-अफ़वाज के घर के इमामों को यह
सवाल पेश करना था, "अब हम कई साल से
पाँचवें महीने में रोज़ा रखकर रब के घर की तबाही
पर मातम करते आए हैं। क्या लाज़िम है कि हम
यह दस्तूर आइंदा भी जारी रखें?"

4 तब मुझे रब्बुल-अफ़वाज से जवाब मिला,
5 "मुल्क के तमाम बाशिंदों और इमामों से कह,
'बेशक तुम 70 साल से पाँचवें और सातवें महीने
में रोज़ा रखकर मातम करते आए हो। लेकिन क्या
तुमने यह दस्तूर वाक़ई मेरी ख़ातिर अदा किया?
हरगिज़ नहीं! 6 ईदों पर भी तुम खाते-पीते वक़्त
सिर्फ़ अपनी ही ख़ातिर ख़ुशी मनाते हो। 7 यह वही
बात है जो मैंने माज़ी में भी नबियों की मारिफ़त
तुम्हें बताई, उस वक़्त जब यरूशलम में आबादी
और सुकून था, जब गिर्दो-नवाह के शहर दश्ते-
नजब और मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े तक
आबाद थे'।"

8 इस नाते से ज़करियाह पर रब का एक
और कलाम नाज़िल हुआ, 9 "रब्बुल-अफ़-
वाज फ़रमाता है, 'अदालत में मुंसिफ़ाना फ़ैसले
करो, एक दूसरे पर मेहरबानी और रहम करो!
10 बेवाओं, यतीमों, अजनबियों और ग़रीबों पर
ज़ुल्म मत करना। अपने दिल में एक दूसरे के
ख़िलाफ़ बुरे मनसूबे न बान्धो।' 11 जब तुम्हारे
बापदादा ने यह कुछ सुना तो वह इस पर ध्यान
देने के लिए तैयार नहीं थे बल्कि अकड़ गए।
उन्होंने अपना मुँह दूसरी तरफ़ फेरकर अपने कानों
को बंद किए रखा। 12 उन्होंने अपने दिलों को
हीरे की तरह सख़्त कर लिया ताकि शरीअत
और वह बातें उन पर असरअंदाज़ न हो सकें
जो रब्बुल-अफ़वाज ने अपने रूह के वसीले से
गुज़शता नबियों को बताने को कहा था। तब
रब्बुल-अफ़वाज का शदीद ग़ज़ब उन पर नाज़िल
हुआ। 13 वह फ़रमाता है, 'चूँकि उन्होंने मेरी न
सुनी इसलिए मैंने फ़ैसला किया कि जब वह मदद
के लिए मुझसे इल्तिजा करें तो मैं भी उनकी

[a] 4 दिसंबर।

नहीं सुनूँगा। 14 मैंने उन्हें आँधी से उड़ाकर तमाम
दीगर अक़वाम में मुंतशिर कर दिया, ऐसी क़ौमों
में जिनसे वह नावाक़िफ़ थे। उनके जाने पर वतन
इतना वीरानो-सुनसान हुआ कि कोई न रहा जो
उसमें आए या वहाँ से जाए। यों उन्होंने उस
ख़ुशगवार मुल्क को तबाह कर दिया'।"

एक नया आग़ाज़

8 एक बार फिर रब्बुल-अफ़वाज का
कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 2 "रब्बुल-
अफ़वाज फ़रमाता है कि मैं बड़ी ग़ैरत से सिय्यून
के लिए लड़ रहा हूँ, बड़े ग़ुस्से में उसके लिए
जिद्दो-जहद कर रहा हूँ। 3 रब फ़रमाता है कि
मैं सिय्यून के पास वापस आऊँगा, दुबारा
यरूशलम के बीच में सुकूनत करूँगा। तब
यरूशलम 'वफ़ादारी का शहर' और रब्बुल-
अफ़वाज का पहाड़ 'कोहे-मुक़द्दस' कहलाएगा।
4 क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, 'बुज़ुर्ग
मर्दो-ख़वातीन दुबारा यरूशलम के चौकों में बैठेंगे,
और हर एक इतना उम्ररसीदा होगा कि उसे छड़ी
का सहारा लेना पड़ेगा। 5 साथ साथ चौक खेल-
कूद में मसरूफ़ लड़के-लड़कियों से भरे रहेंगे।'

6 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, 'शायद यह उस
वक़्त बचे हुए इसराईलियों को नामुमकिन लगे।
लेकिन क्या ऐसा काम मेरे लिए जो रब्बुल-
अफ़वाज हूँ नामुमकिन है? हरगिज़ नहीं!'
7 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, 'मैं अपनी क़ौम
को मशरिक़ और मग़रिब के ममालिक से बचाकर
8 वापस लाऊँगा, और वह यरूशलम में बसेंगे।
वहाँ वह मेरी क़ौम होंगे और मैं वफ़ादारी और
इनसाफ़ के साथ उनका ख़ुदा हूँगा।'

9 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, 'हौसला
रखकर तामीरी काम तकमील तक पहुँ-
चाओ! आज भी तुम उन बातों पर एतमाद कर
सकते हो जो नबियों ने रब्बुल-अफ़वाज के घर की
बुनियाद डालते वक़्त सुनाई थीं। 10 याद रहे कि
उस वक़्त से पहले न इनसान और न हैवान को
मेहनत की मज़दूरी मिलती थी। आने जानेवाले
कहीं भी दुश्मन के हमलों से महफ़ूज़ नहीं थे,
क्योंकि मैंने हर आदमी को उसके हमसाये का
दुश्मन बना दिया था।' 11 लेकिन रब्बुल-अफ़वाज
फ़रमाता है, 'अब से मैं तुमसे जो बचे हुए हो
ऐसा सुलूक नहीं करूँगा। 12 लोग सलामती से
बीज बोएँगे, अंगूर की बेल वक़्त पर अपना फल
लाएगी, खेतों में फ़सलें पकेंगी और आसमान
ओस पड़ने देगा। यह तमाम चीज़ें मैं यहूदाह के
बचे हुओं को मीरास में दूँगा। 13 ऐ यहूदाह और
इसराईल, पहले तुम दीगर अक़वाम में लानत का
निशाना बन गए थे, लेकिन अब जब मैं तुम्हें रिहा
करूँगा तो तुम बरकत का बाइस होगे। डरो मत!
हौसला रखो!'

14 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, 'पहले जब
तुम्हारे बापदादा ने मुझे तैश दिलाया तो मैंने तुम
पर आफ़त लाने का मुसम्मम इरादा कर लिया
था और कभी न पछताया। 15 लेकिन अब मैं
यरूशलम और यहूदाह को बरकत देना चाहता
हूँ। इसमें मेरा इरादा उतना ही पक्का है जितना
पहले तुम्हें नुक़सान पहुँचाने में पक्का था। चुनाँचे
डरो मत! 16 लेकिन इन बातों पर ध्यान दो,
एक दूसरे से सच बात करो, अदालत में सच्चाई
और सलामती पर मबनी फ़ैसले करो, 17 अपने
पड़ोसी के ख़िलाफ़ बुरे मनसूबे मत बान्धो और
झूटी क़सम खाने के शौक़ से बाज़ आओ। इन
तमाम चीज़ों से मैं नफ़रत करता हूँ।' यह रब का
फ़रमान है।"

18 एक बार फिर रब्बुल-अफ़वाज का कलाम
मुझ पर नाज़िल हुआ, 19 "रब्बुल-अफ़वाज
फ़रमाता है कि आज तक यहूदाह के लोग चौथे,
पाँचवें, सातवें और दसवें महीने में रोज़ा रखकर
मातम करते आए हैं। लेकिन अब से यह औक़ात
ख़ुशी-ओ-शादमानी के मौक़े होंगे जिन पर जशन
मनाओगे। लेकिन सच्चाई और सलामती को प्यार
करो!

20 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि ऐसा वक़्त
आएगा जब दीगर अक़वाम और मुतअद्दिद शहरों
के लोग यहाँ आएँगे। 21 एक शहर के बाशिंदे

दूसरे शहर में जाकर कहेंगे, 'आओ, हम यरूशलम जाकर रब से इलतमास करें, रब्बुल-अफ़वाज की मरज़ी दरियाफ़्त करें। हम भी जाएंगे।'
22 हाँ, मुतअद्दिद अक़वाम और ताक़तवर उम्मतें यरूशलम आएँगी ताकि रब्बुल-अफ़वाज की मरज़ी मालूम करें और उससे इलतमास करें।

23 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि उन दिनों में मुख़्तलिफ़ अक़वाम और अहले-ज़बान के दस आदमी एक यहूदी के दामन को पकड़कर कहेंगे, 'हमें अपने साथ चलने दें, क्योंकि हमने सुना है कि अल्लाह आपके साथ है'।"

इसराईल के दुश्मनों की अदालत

9 रब का कलाम मुल्के-हद्राक के ख़िलाफ़ है, और वह दमिश्क़ पर नाज़िल होगा। क्योंकि इनसान और इसराईल के तमाम क़बीलों की आँखें रब की तरफ़ देखती हैं।
2 दमिश्क़ की सरहद पर वाक़े हमात बल्कि सूर और सैदा भी इस कलाम से मुतअस्सिर हो जाएंगे, ख़ाह वह कितने दानिशमंद क्यों न हों।
3 बेशक सूर ने अपने लिए मज़बूत क़िला बना लिया है, बेशक उसने सोने-चाँदी के ऐसे ढेर लगाए हैं जैसे आम तौर पर गलियों में रेत या कचरे के ढेर लगा लिए जाते हैं।
4 लेकिन रब उस पर क़ब्ज़ा करके उस की फ़ौज को समुंदर में फेंक देगा। तब शहर नज़रे-आतिश हो जाएगा।
5 यह देखकर अस्क़लून घबरा जाएगा और ग़ज़्ज़ा तड़प उठेगा। अक़रून भी लरज़ उठेगा, क्योंकि उस की उम्मीद जाती रहेगी। ग़ज़्ज़ा का बादशाह हलाक और अस्क़लून ग़ैरआबाद हो जाएगा।
6 अशदूद में दो नसलों के लोग बसेंगे। रब फ़रमाता है, "जो कुछ फ़िलिस्तियों के लिए फ़ख़र का बाइस है उसे मैं मिटा दूँगा।
7 मैं उनकी बुतपरस्ती ख़त्म करूँगा। आइंदा वह गोश्त को ख़ून के साथ और अपनी घिनौनी क़ुरबानियाँ नहीं खाएँगे। तब जो बच जाएंगे मेरे परस्तार होंगे और यहूदाह के ख़ानदानों में शामिल हो जाएंगे। अक़रून के फ़िलिस्ती यों मेरी क़ौम में शामिल हो जाएंगे जिस तरह क़दीम ज़माने में यबूसी मेरी क़ौम में शामिल हो गए।
8 मैं ख़ुद अपने घर की पहरादारी करूँगा ताकि आइंदा जो भी आते या जाते वक़्त वहाँ से गुज़रे उस पर हमला न करे, कोई भी ज़ालिम मेरी क़ौम को तंग न करे। अब से मैं ख़ुद उस की देख-भाल करूँगा।

नया बादशाह आनेवाला है

9 ऐ सिय्यून बेटी, शादियाना बजा! ऐ यरूशलम बेटी, शादमानी के नारे लगा! देख, तेरा बादशाह तेरे पास आ रहा है। वह रास्तबाज़ और फ़तहमंद है, वह हलीम है और गधे पर, हाँ गधी के बच्चे पर सवार है।

10 मैं इफ़राईम से रथ और यरूशलम से घोड़े दूर कर दूँगा। जंग की कमान टूट जाएगी। मौऊदा बादशाह[a] के कहने पर तमाम अक़वाम में सलामती क़ायम हो जाएगी। उस की हुकूमत एक समुंदर से दूसरे तक और दरियाए-फ़ुरात से दुनिया की इंतहा तक मानी जाएगी।

रब अपनी क़ौम की हिफ़ाज़त करेगा

11 ऐ मेरी क़ौम, मैंने तेरे साथ एक अहद बाँधा जिसकी तसदीक़ क़ुरबानियों के ख़ून से हुई, इसलिए मैं तेरे क़ैदियों को पानी से महरूम गढ़े से रिहा करूँगा।
12 ऐ पुरउम्मीद क़ैदियो, क़िले के पास वापस आओ! क्योंकि आज ही मैं एलान करता हूँ कि तुम्हारी हर तकलीफ़ के एवज़ मैं तुम्हें दो बरकतें बख़्श दूँगा।

13 यहूदाह मेरी कमान है और इसराईल मेरे तीर जो मैं दुश्मन के ख़िलाफ़ चलाऊँगा। ऐ सिय्यून बेटी, मैं तेरे बेटों को यूनान के फ़ौजियों से लड़ने के लिए भेजूँगा, मैं तुझे सूरमे की तलवार की मानिंद बना दूँगा।"

14 तब रब उन पर ज़ाहिर होकर बिजली की तरह अपना तीर चलाएगा। रब क़ादिरे-मुतलक़ नरसिंगा फूँककर जुनूबी आँधियों में आएगा।
15 रब्बुल-अफ़वाज ख़ुद इसराई-

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : उसके कहने पर।

लियों को पनाह देगा। तब वह दुश्मन को खा
खाकर उसके फेंके हुए पत्थरों को ख़ाक में मिला
देंगे और ख़ून को मै की तरह पी पीकर शोर
मचाएँगे। वह क़ुरबानी के ख़ून से भरे कटोरे
की तरह भर जाएंगे, क़ुरबानगाह के कोनों जैसे
ख़ूनआलूदा हो जाएंगे।
16 उस दिन रब उनका ख़ुदा उन्हें जो उस की
क़ौम का रेवड़ हैं छुटकारा देगा। तब वह उसके
मुल्क में ताज के जवाहिर की मानिंद चमक उठेंगे।
17 वह कितने दिलकश और ख़ूबसूरत लगेंगे!
अनाज और मै की कसरत से कुँवारे-कुँवारियाँ
फलने-फूलने लगेंगे।

रब ही मदद कर सकता है

10 बहार के मौसम में रब से बारिश
माँगो। क्योंकि वही घने बादल बनाता
है, वही बारिश बरसाकर हर एक को खेत की
हरियाली मुहैया करता है। 2 तुम्हारे घरों के बुत
फ़रेब देते, तुम्हारे ग़ैबदान झूटी रोया देखते और
फ़रेबदेह ख़ाब सुनाते हैं। उनकी तसल्ली अबस है।
इसी लिए क़ौम को भेड़-बकरियों की तरह यहाँ
से चला जाना पड़ा। गल्लाबान नहीं है, इसलिए
वह मुसीबत में उलझे रहते हैं।

रब अपनी क़ौम को वापस लाएगा

3 रब फ़रमाता है, “मेरी क़ौम के गल्ला-
बानों पर मेरा ग़ज़ब भड़क उठा है, और जो बकरे
उस की राहनुमाई कर रहे हैं उन्हें मैं सज़ा दूँगा।
क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज अपने रेवड़ यहूदाह के
घराने की देख-भाल करेगा, उसे जंगी घोड़े जैसा
शानदार बना देगा। 4 यहूदाह से कोने का बुनियादी
पत्थर, मेख़, जंग की कमान और तमाम हुक्मरान
निकल आएँगे। 5 सब सूरमे की मानिंद होंगे जो
लड़ते वक़्त दुश्मन को गली के कचरे में कुचल
देंगे। रब्बुल-अफ़वाज उनके साथ होगा, इसलिए
वह लड़कर ग़ालिब आएँगे। मुख़ालिफ़ घुड़सवारों
की बड़ी रुसवाई होगी।
6 मैं यहूदाह के घराने को तक़वियत दूँगा,
यूसुफ़ के घराने को छुटकारा दूँगा, हाँ उन पर
रहम करके उन्हें दुबारा वतन में बसा दूँगा। तब
उनकी हालत से पता नहीं चलेगा कि मैंने कभी
उन्हें रद्द किया था। क्योंकि मैं रब उनका ख़ुदा हूँ,
मैं ही उनकी सुनूँगा। 7 इफ़राईम के अफ़राद सूरमे
से बन जाएंगे, वह यों ख़ुश हो जाएंगे जिस तरह
दिल मै पीने से ख़ुश हो जाता है। उनके बच्चे यह
देखकर बाग़ बाग़ हो जाएंगे, उनके दिल रब की
ख़ुशी मनाएँगे।
8 मैं सीटी बजाकर उन्हें जमा करूँगा, क्योंकि
मैंने फ़िद्या देकर उन्हें आज़ाद कर दिया है। तब
वह पहले की तरह बेशुमार हो जाएंगे। 9 मैं उन्हें
बीज की तरह मुख़्तलिफ़ क़ौमों में बोकर मुंतशिर
कर दूँगा, लेकिन दूर-दराज़ इलाक़ों में वह मुझे
याद करेंगे। और एक दिन वह अपनी औलाद
समेत बचकर वापस आएँगे। 10 मैं उन्हें मिसर से
वापस लाऊँगा, असूर से इकट्ठा करूँगा। मैं उन्हें
जिलियाद और लुबनान में लाऊँगा, तो भी उनके
लिए जगह काफ़ी नहीं होगी। 11 जब वह मुसीबत
के समुंदर में से गुज़रेंगे तो रब मौजों को यों मारेगा
कि सब कुछ पानी की गहराइयों तक ख़ुश्क हो
जाएगा। असूर का फ़ख़र ख़ाक में मिल जाएगा,
और मिसर का शाही असा दूर हो जाएगा। 12 मैं
अपनी क़ौम को रब में तक़वियत दूँगा, और वह
उसका ही नाम लेकर ज़िंदगी गुज़ारेंगे।” यह रब
का फ़रमान है।

बड़ों को नीचा किया जाएगा

11 ऐ लुबनान, अपने दरवाज़ों को खोल
दे ताकि तेरे देवदार के दरख़्त नज़रे-
आतिश हो जाएँ।
2 ऐ जूनीपर के दरख़तो, वावैला करो! क्योंकि
देवदार के दरख़्त गिर गए हैं, यह ज़बरदस्त दरख़्त
तबाह हो गए हैं। ऐ बसन के बलूतो, आहो-ज़ारी
करो! जो जंगल इतना घना था कि कोई उसमें से
गुज़र न सकता था उसे काटा गया है।

3 सुनो, चरवाहे रो रहे हैं, क्योंकि उनकी शानदार चरागाहें बरबाद हो गई हैं। सुनो, जवान शेरबबर दहाड़ रहे हैं, क्योंकि वादीए-यरदन का गुंजान जंगल ख़त्म हो गया है।

दो क़िस्म के गल्लाबान

4 रब मेरा ख़ुदा मुझसे हमकलाम हुआ, "ज़बह होनेवाली भेड़-बकरियों की गल्ला-
बानी कर! 5 जो उन्हें ख़रीद लेते वह उन्हें ज़बह करते हैं और क़ुसूरवार नहीं ठहरते। और जो उन्हें बेचते वह कहते हैं, 'अल्लाह की हम्द हो, मैं अमीर हो गया हूँ!' उनके अपने चरवाहे उन पर तरस नहीं खाते।

6 इसलिए रब फ़रमाता है कि मैं भी मुल्क के बाशिंदों पर तरस नहीं खाऊँगा। मैं हर एक को उसके पड़ोसी और उसके बादशाह के हवाले करूँगा। वह मुल्क को टुकड़े टुकड़े करेंगे, और मैं उन्हें उनके हाथ से नहीं छुड़ाऊँगा।"

7 चुनाँचे मैं, ज़करियाह ने सौदागरों के लिए ज़बह होनेवाली भेड़-बकरियों की गल्लाबानी की। मैंने उस काम के लिए दो लाठियाँ लीं। एक का नाम 'मेहरबानी' और दूसरी का नाम 'यगांगत' था। उनके साथ मैंने रेवड़ की गल्लाबानी की।
8 एक ही महीने में मैंने तीन गल्लाबानों को मिटा दिया। लेकिन जल्द ही मैं भेड़-बकरियों से तंग आ गया, और उन्होंने मुझे भी हक़ीर जाना।

9 तब मैं बोला, "आइंदा मैं तुम्हारी गल्ला-बानी नहीं करूँगा। जिसे मरना है वह मरे, जिसे ज़ाया होना है वह ज़ाया हो जाए। और जो बच जाएँ वह एक दूसरे का गोश्त खाएँ। मैं ज़िम्मेदार नहीं हूँगा!"[a]
10 मैंने लाठी बनाम 'मेहरबानी' को तोड़कर ज़ाहिर किया कि जो अहद मैंने तमाम अक़वाम के साथ बाँधा था वह मनसूख़ है।
11 उसी दिन वह मनसूख़ हुआ।

तब भेड़-बकरियों के जो सौदागर मुझ पर ध्यान दे रहे थे उन्होंने जान लिया कि यह पैग़ाम रब की तरफ़ से है।
12 फिर मैंने उनसे कहा, "अगर यह आपको मुनासिब लगे तो मुझे मज़दूरी के पैसे दे दें, वरना रहने दें।" उन्होंने मज़दूरी के लिए मुझे चाँदी के 30 सिक्के दे दिए।

13 तब रब ने मुझे हुक्म दिया, "अब यह रक़म कुम्हार[b] के सामने फेंक दे। कितनी शानदार रक़म है! यह मेरी इतनी ही क़दर करते हैं।" मैंने चाँदी के 30 सिक्के लेकर रब के घर में कुम्हार के सामने फेंक दिए।
14 इसके बाद मैंने दूसरी लाठी बनाम 'यगांगत' को तोड़कर ज़ाहिर किया कि यहूदाह और इसराईल की अख़ुव्वत मनसूख़ हो गई है।

15 फिर रब ने मुझे बताया, "अब दुबारा गल्लाबान का सामान ले ले। लेकिन इस बार अहमक़ चरवाहे का-सा रवैया अपना ले।
16 क्योंकि मैं मुल्क पर ऐसा गल्लाबान मुक़र्रर करूँगा जो न हलाक होनेवालों की देख-भाल करेगा, न छोटों को तलाश करेगा, न ज़ख़मियों को शफ़ा देगा, न सेहतमंदों को ख़ुराक मुहैया करेगा। इसके बजाए वह बेहतरीन जानवरों का गोश्त खा लेगा बल्कि इतना ज़ालिम होगा कि उनके खुरों को फाड़कर तोड़ेगा।
17 उस बेकार चरवाहे पर अफ़सोस जो अपने रेवड़ को छोड़ देता है। तलवार उसके बाज़ू और दहनी आँख को ज़ख़मी करे। उसका बाज़ू सूख जाए और उस की दहनी आँख अंधी हो जाए।"

अल्लाह यरूशलम की हिफ़ाज़त करेगा

12 ज़ैल में रब का इसराईल के लिए कलाम है। रब जिसने आसमान को ख़ैमे की तरह तानकर ज़मीन की बुनियादें रखीं और इनसान के अंदर उस की रूह को तश्कील दिया वह फ़रमाता है,

2 "मैं यरूशलम को गिर्दो-नवाह की क़ौमों के लिए शराब का प्याला बना दूँगा जिसे वह पीकर लड़खड़ाने लगेंगी। यहूदाह भी मुसीबत में आएगा जब यरूशलम का मुहासरा किया जाएगा।
3 उस

[a] 'मैं ज़िम्मेदार नहीं हूँगा' इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो।

[b] या धात ढालनेवाले।

दिन दुनिया की तमाम अक़वाम यरूशलम के
ख़िलाफ़ जमा हो जाएँगी। तब मैं यरूशलम को
एक ऐसा पत्थर बनाऊँगा जो कोई नहीं उठा
सकेगा। जो भी उसे उठाकर ले जाना चाहे वह
ज़ख़मी हो जाएगा।” 4 रब फ़रमाता है, “उस दिन
मैं तमाम घोड़ों में अबतरी और उनके सवारों में
दीवानगी पैदा करूँगा। मैं दीगर अक़वाम के तमाम
घोड़ों को अंधा कर दूँगा।

साथ साथ मैं खुली आँखों से यहूदाह के घराने
की देख-भाल करूँगा। 5 तब यहूदाह के ख़ानदान
दिल में कहेंगे, ‘यरूशलम के बाशिंदे इसलिए
हमारे लिए क़ुव्वत का बाइस हैं कि रब्बुल-
अफ़वाज उनका ख़ुदा है।’ 6 उस दिन मैं यहूदाह
के ख़ानदानों को जलते हुए कोयले बना दूँगा
जो दुश्मन की सूखी लकड़ी को जला देंगे। वह
भड़कती हुई मशाल होंगे जो दुश्मन की पूलों को
भस्म करेंगी। उनके दाईं और बाईं तरफ़ जितनी
भी क़ौमें गिर्दो-नवाह में रहती हैं वह सब नज़रे-
आतिश हो जाएँगी। लेकिन यरूशलम अपनी ही
जगह महफ़ूज़ रहेगा।

7 पहले रब यहूदाह के घरों को बचाएगा ताकि
दाऊद के घराने और यरूशलम के बाशिंदों की
शानो-शौकत यहूदाह से बड़ी न हो। 8 लेकिन रब
यरूशलम के बाशिंदों को भी पनाह देगा। तब
उनमें से कमज़ोर आदमी दाऊद जैसा सूरमा होगा
जबकि दाऊद का घराना ख़ुदा की मानिंद, उनके
आगे चलनेवाले रब के फ़रिश्ते की मानिंद होगा।
9 उस दिन मैं यरूशलम पर हमलाआवर तमाम
अक़वाम को तबाह करने के लिए निकलूँगा।

यरूशलम का मातम

10 मैं दाऊद के घराने और यरूशलम के बाशिंदों
पर मेहरबानी और इलतमास का रूह उंडेलूँगा।
तब वह मुझ पर नज़र डालेंगे जिसे उन्होंने छेदा है,
और वह उसके लिए ऐसा मातम करेंगे जैसे अपने
इकलौते बेटे के लिए, उसके लिए ऐसा शदीद
ग़म खाएँगे जिस तरह अपने पहलौठे के लिए।
11 उस दिन लोग यरूशलम में शिद्दत से मातम
करेंगे। ऐसा मातम होगा जैसा मैदाने-मजिद्दो में
हदद-रिम्मोन पर किया जाता था। 12-14 पूरे का
पूरा मुल्क वावैला करेगा। तमाम ख़ानदान एक
दूसरे से अलग और तमाम औरतें दूसरों से अलग
आहो-बुका करेंगी। दाऊद का ख़ानदान, नातन
का ख़ानदान, लावी का ख़ानदान, सिमई का
ख़ानदान और मुल्क के बाक़ी तमाम ख़ानदान
अलग अलग मातम करेंगे।

बुतपरस्ती और झूटी नबुव्वत का ख़ातमा

13 उस दिन दाऊद के घराने और
यरूशलम के बाशिंदों के लिए चश्मा
खोला जाएगा जिसके ज़रीए वह अपने गुनाहों
और नापाकी को दूर कर सकेंगे।”

2 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “उस दिन मैं
तमाम बुतों को मुल्क में से मिटा दूँगा। उनका
नामो-निशान तक नहीं रहेगा, और वह किसी को
याद नहीं रहेंगे।

नबियों और नापाकी की रूह को भी मैं मुल्क
से दूर करूँगा। 3 इसके बाद अगर कोई नबुव्वत
करे तो उसके अपने माँ-बाप उससे कहेंगे, ‘तू
ज़िंदा नहीं रह सकता, क्योंकि तूने रब का नाम
लेकर झूट बोला है।’ जब वह पेशगोइयाँ सुनाएगा
तो उसके अपने वालिदैन उसे छेद डालेंगे। 4 उस
वक़्त हर नबी को अपनी रोया पर शर्म आएगी जब
नबुव्वत करेगा। वह नबी का बालों से बना लिबास
नहीं पहनेगा ताकि फ़रेब दे 5 बल्कि कहेगा, ‘मैं
नबी नहीं बल्कि काश्तकार हूँ। जवानी से ही मेरा
पेशा खेतीबाड़ी रहा है।’ 6 अगर कोई पूछे, ‘तो
फिर तेरे सीने पर ज़ख़मों के निशान किस तरह
लगे? तो जवाब देगा, मैं अपने दोस्तों के घर में
ज़ख़मी हुआ’।”

लोगों की जाँच-पड़ताल

7 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “ऐ तल-
वार, जाग उठ! मेरे गल्लाबान पर हमला कर,
उस पर जो मेरे क़रीब है। गल्लाबान को मार डाल
ताकि भेड़-बकरियाँ तित्तर-बित्तर हो जाएँ। मैं ख़ुद

अपने हाथ को छोटों के ख़िलाफ़ उठाऊँगा।” 8 रब
फ़रमाता है, “पूरे मुल्क में लोगों के तीन हिस्सों
में से दो हिस्सों को मिटाया जाएगा। दो हिस्से
हलाक हो जाएंगे और सिर्फ़ एक ही हिस्सा बचा
रहेगा। 9 इस बचे हुए हिस्से को मैं आग में डालकर
चाँदी या सोने की तरह पाक-साफ़ करूँगा। तब
वह मेरा नाम पुकारेंगे, और मैं उनकी सुनूँगा। मैं
कहूँगा, ‘यह मेरी क़ौम है,’ और वह कहेंगे, ‘रब
हमारा ख़ुदा है’।”

रब ख़ुद यरूशलम में बादशाह होगा

14 ऐ यरूशलम, रब का वह दिन
आनेवाला है जब दुश्मन तेरा माल
लूटकर तेरे दरमियान ही उसे आपस में तक़सीम
करेगा। 2 क्योंकि मैं तमाम अक़वाम को यरूशलम
से लड़ने के लिए जमा करूँगा। शहर दुश्मन के
क़ब्ज़े में आएगा, घरों को लूट लिया जाएगा
और औरतों की इसमतदरी की जाएगी। शहर के
आधे बाशिंदे जिलावतन हो जाएंगे, लेकिन बाक़ी
हिस्सा उसमें ज़िंदा छोड़ा जाएगा।

3 लेकिन फिर रब ख़ुद निकलकर इन अक़वाम
से यों लड़ेगा जिस तरह तब लड़ता है जब कभी
मैदाने-जंग में आ जाता है। 4 उस दिन उसके
पाँव यरूशलम के मशरिक़ में ज़ैतून के पहाड़
पर खड़े होंगे। तब पहाड़ फट जाएगा। उसका
एक हिस्सा शिमाल की तरफ़ और दूसरा जुनूब
की तरफ़ खिसक जाएगा। बीच में मशरिक़ से
मग़रिब की तरफ़ एक बड़ी वादी पैदा हो जाएगी।
5 तुम मेरे पहाड़ों की इस वादी में भागकर पनाह
लोगे, क्योंकि यह आज़ल तक पहुँचाएगी। जिस
तरह तुम यहूदाह के बादशाह उज़्ज़ियाह के ऐयाम
में अपने आपको ज़लज़ले से बचाने के लिए
यरूशलम से भाग निकले थे उसी तरह तुम
मज़कूरा वादी में दौड़ आओगे। तब रब मेरा ख़ुदा
आएगा, और तमाम मुक़द्दसीन उसके साथ होंगे।

6 उस दिन न तपती गरमी होगी, न सर्दी या
पाला। 7 वह एक मुन्फ़रिद दिन होगा जो रब ही
को मालूम होगा। न दिन होगा और न रात बल्कि
शाम को भी रौशनी होगी। 8 उस दिन यरूशलम
से ज़िंदगी का पानी बह निकलेगा। उस की एक
शाख़ मशरिक़ के बहीराए-मुरदार की तरफ़ और
दूसरी शाख़ मग़रिब के समुंदर की तरफ़ बहेगी।
इस पानी में न गरमियों में, न सर्दियों में कभी
कमी होगी।

9 रब पूरी दुनिया का बादशाह होगा। उस दिन
रब वाहिद ख़ुदा होगा, लोग सिर्फ़ उसी के नाम
की परस्तिश करेंगे। 10 पूरा मुल्क शिमाली शहर
जिबा से लेकर यरूशलम के जुनूब में वाक़े शहर
रिम्मोन तक खुला मैदान बन जाएगा। सिर्फ़
यरूशलम अपनी ही ऊँची जगह पर रहेगा। उस
की पुरानी हुदूद भी क़ायम रहेंगी यानी बिनयमीन
के दरवाज़े से लेकर पुराने दरवाज़े और कोने के
दरवाज़े तक, फिर हननेल के बुर्ज से लेकर उस
जगह तक जहाँ शाही मै बनाई जाती है। 11 लोग
उसमें बसेंगे, और आइंदा उसे कभी पूरी तबाही
के लिए मख़सूस नहीं किया जाएगा। यरूशलम
महफ़ूज़ जगह रहेगी।

12 लेकिन जो क़ौमें यरूशलम से लड़ने निकलें
उन पर रब एक हौलनाक बीमारी लाएगा। लोग
अभी खड़े हो सकेंगे कि उनके जिस्म सड़ जाएंगे।
आँखें अपने ख़ानों में और ज़बान मुँह में गल
जाएगी। 13 उस दिन रब उनमें बड़ी अबतरी पैदा
करेगा। हर एक अपने साथी का हाथ पकड़कर
उस पर हमला करेगा। 14 यहूदाह भी यरूशलम
से[a] लड़ेगा। तमाम पड़ोसी अक़वाम की दौलत
वहाँ जमा हो जाएगी यानी कसरत का सोना,
चाँदी और कपड़े। 15 न सिर्फ़ इनसान मोहलक
बीमारी की ज़द में आएगा बल्कि जानवर भी।
घोड़े, ख़च्चर, ऊँट, गधे और बाक़ी जितने जानवर
उन लशकरगाहों में होंगे उन सब पर यही आफ़त
आएगी।

[a]या में।

तमाम अक़्वाम यरूशलम में ईद मनाएँगी

16 तो भी उन तमाम अक़्वाम के कुछ लोग बच
जाएंगे जिन्होंने यरूशलम पर हमला किया था।
अब वह साल बसाल यरूशलम आते रहेंगे ताकि
हमारे बादशाह रब्बुल-अफ़वाज की परस्तिश करें
और झोंपड़ियों की ईद मनाएँ। 17 जब कभी
दुनिया की तमाम अक़्वाम में से कोई हमारे
बादशाह रब्बुल-अफ़वाज को सिजदा करने के
लिए यरूशलम न आए तो उसका मुल्क बारिश
से महरूम रहेगा। 18 अगर मिसरी क़ौम यरूशलम
न आए और हिस्सा न ले तो वह बारिश से
महरूम रहेगी। यों रब उन क़ौमों को सज़ा देगा
जो झोंपड़ियों की ईद मनाने के लिए यरूशलम
नहीं आएँगी। 19 जितनी भी क़ौमें झोंपड़ियों की
ईद मनाने के लिए यरूशलम न आएँ उन्हें यही
सज़ा मिलेगी, ख़ाह मिसर हो या कोई और क़ौम।

20 उस दिन घोड़ों की घंटियों पर लिखा होगा,
"रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस।" और रब के घर
की देगें उन मुक़द्दस कटोरों के बराबर होंगी जो
क़ुरबानगाह के सामने इस्तेमाल होते हैं। 21 हाँ,
यरूशलम और यहूदाह में मौजूद हर देग रब्बुल-
अफ़वाज के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस होगी। जो भी
क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए यरूशलम आए वह
उन्हें अपनी क़ुरबानियाँ पकाने के लिए इस्तेमाल
करेगा। उस दिन से रब्बुल-अफ़वाज के घर में
कोई भी सौदागर पाया नहीं जाएगा।

मलाकी

1 ज़ैल में इसराईल के लिए रब का वह
कलाम है जो उसने मलाकी पर नाज़िल
किया।
2 रब फ़रमाता है, “तुम मुझे प्यारे हो।” लेकिन
तुम कहते हो, “किस तरह? तेरी हमसे मुहब्बत
कहाँ ज़ाहिर हुई है?”
सुनो रब का जवाब! “क्या एसौ और याक़ूब
सगे भाई नहीं थे? तो भी सिर्फ़ याक़ूब मुझे प्यारा
था 3 जबकि एसौ से मैं मुतनफ़्फ़िर रहा। उसके
पहाड़ी इलाक़े अदोम को मैंने वीरानो-सुनसान कर
दिया, उस की मौरूसी ज़मीन को रेगिस्तान के
गीदड़ों के हवाले कर दिया है।” 4 अदोमी कहते
हैं, “गो हम चकनाचूर हो गए हैं तो भी खंडरात की
जगह नए घर बना लेंगे।” लेकिन रब्बुल-अफ़वाज
फ़रमाता है, “बेशक तामीर का काम करते जाओ,
लेकिन मैं सब कुछ दुबारा ढा दूँगा। उनका मुल्क
‘बेदीनी का मुल्क’ और उनकी क़ौम ‘वह क़ौम
जिस पर रब की अबदी लानत है’ कहलाएगी।
5 तुम इसराईली अपनी आँखों से यह देखोगे। तब
तुम कहोगे, ‘रब अपनी अज़मत इसराईल की
सरहद्दों से बाहर भी ज़ाहिर करता है’।”

इमामों पर इलज़ाम

6 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “ऐ इमामो,
बेटा अपने बाप का और नौकर अपने मालिक का
एहतराम करता है। लेकिन मेरा एहतराम कौन
करता है, गो मैं तुम्हारा बाप हूँ? मेरा ख़ौफ़ कौन
मानता है, गो मैं तुम्हारा मालिक हूँ? हक़ीक़त
यह है कि तुम मेरे नाम को हक़ीर जानते हो।
लेकिन तुम एतराज़ करते हो, ‘हम किस तरह
तेरे नाम को हक़ीर जानते हैं?’ 7 इसमें कि तुम
मेरी क़ुरबानगाह पर नापाक ख़ुराक रख देते हो।
तुम पूछते हो, ‘हमने तुझे किस बात में नापाक
किया है?’ इसमें कि तुम रब की मेज़ को क़ाबिले-
तहक़ीर क़रार देते हो। 8 क्योंकि गो अंधे जानवरों
को क़ुरबान करना सख़्त मना है, तो भी तुम यह
बात नज़रंदाज़ करके ऐसे जानवरों को क़ुरबान
करते हो। लँगड़े या बीमार जानवर चढ़ाना भी
ममनू है, तो भी तुम कहते हो, ‘कोई बात नहीं’
और ऐसे ही जानवरों को पेश करते हो।” रब्बुल-
अफ़वाज फ़रमाता है, “अगर वाक़ई इसकी कोई
बात नहीं तो अपने मुल्क के गवर्नर को ऐसे
जानवरों को पेश करो। क्या वह तुमसे ख़ुश होगा?
क्या वह तुम्हें क़बूल करेगा? हरगिज़ नहीं!
9 चुनाँचे अब अल्लाह से इलतमास करो कि हम
पर मेहरबानी कर।” रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता
है, “ख़ुद सोच लो, क्या हमारे हाथों से ऐसी
क़ुरबानियाँ मिलने पर अल्लाह हमें क़बूल करेगा?
10 काश तुममें से कोई मेरे घर के दरवाज़ों को
बंद करे ताकि मेरी क़ुरबानगाह पर बेफ़ायदा आग
न लगा सको! मैं तुमसे ख़ुश नहीं, और तुम्हारे
हाथों से क़ुरबानियाँ मुझे बिलकुल पसंद नहीं।”
यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।

11 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “पूरी दुनिया
में मशरिक़ से मग़रिब तक मेरा नाम अज़ीम है।
हर जगह मेरे नाम को बख़ूर और पाक क़ुरबानियाँ
पेश की जाती हैं। क्योंकि दीगर अक़वाम में मेरा
नाम अज़ीम है। 12 लेकिन तुम अपनी हरकतों
से मेरे नाम की बेहुरमती करते हो। तुम कहते
हो, ‘रब की मेज़ को नापाक किया जा सकता
है, उस की क़ुरबानियों को हक़ीर जाना जा
सकता है।’ 13 तुम शिकायत करते हो, ‘हाय, यह
ख़िदमत कितनी तकलीफ़देह है!’ और क़ुरबानी
की आग को हिक़ारत की नज़रों से देखते हुए
तेज़ करते हो। हर क़िस्म का जानवर पेश किया
जाता है, ख़ाह वह ज़ख़मी, लँगड़ा या बीमार
क्यों न हो।” रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “क्या
मैं तुम्हारे हाथों से ऐसी क़ुरबानियाँ क़बूल कर
सकता हूँ? हरगिज़ नहीं! 14 उस धोकेबाज़ पर
लानत जो मन्नत मानकर कहे, ‘मैं रब को अपने
रेवड़ का अच्छा मेंढा क़ुरबान करूँगा’ लेकिन
इसके बजाए नाक़िस जानवर पेश करे।” क्योंकि
रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “मैं अज़ीम बादशाह
हूँ, और अक़वाम में मेरे नाम का ख़ौफ़ माना जाता
है।

2 ऐ इमामो, अब मेरे फ़ैसले पर ध्यान
दो!” 2 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है,
“मेरी सुनो, पूरे दिल से मेरे नाम का एहतराम
करो, वरना मैं तुम पर लानत भेजूँगा, मैं तुम्हारी
बरकतों को लानतों में तबदील कर दूँगा। बल्कि
मैं यह कर भी चुका हूँ, क्योंकि तुमने पूरे दिल से
मेरे नाम का एहतराम नहीं किया। 3 तुम्हारे चाल-
चलन के सबब से मैं तुम्हारी औलाद को डाँटूँगा।
मैं तुम्हारी ईद की क़ुरबानियों का गोबर तुम्हारे मुँह
पर फेंक दूँगा, और तुम्हें उसके समेत बाहर फेंका
जाएगा।”

4 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “तब तुम जान
लोगे कि मैंने तुम पर यह फ़ैसला किया है ताकि
मेरा लावी के क़बीले के साथ अहद क़ायम रहे।
5 क्योंकि मैंने अहद बाँधकर लावियों से ज़िंदगी
और सलामती का वादा किया था, और मैंने
वादे को पूरा भी किया। उस वक़्त लावी मेरा
ख़ौफ़ मानते बल्कि मेरे नाम से दहशत खाते थे।
6 वह क़ाबिले-एतमाद तालीम देते थे, और उनकी
ज़बान पर झूट नहीं होता था। वह सलामती से
और सीधी राह पर मेरे साथ चलते थे, और बहुत-
से लोग उनके बाइस गुनाह से दूर हो गए।

7 इमामों का फ़र्ज़ है कि वह सहीह तालीम
महफ़ूज़ रखें, और लोगों को उनसे हिदायत
हासिल करनी चाहिए। क्योंकि इमाम रब्बुल-
अफ़वाज का पैग़ंबर है। 8 लेकिन तुम सहीह राह
से हट गए हो। तुम्हारी तालीम बहुतों के लिए
ठोकर का बाइस बन गई है।” रब्बुल-अफ़वाज
फ़रमाता है, “तुमने लावियों के साथ मेरे अहद को
ख़ाक में मिला दिया है। 9 इसलिए मैंने तुम्हें तमाम
क़ौम के सामने ज़लील कर दिया है, सब तुम्हें
हक़ीर जानते हैं। क्योंकि तुम मेरी राहों पर नहीं
रहते बल्कि तालीम देते वक़्त जानिबदारी दिखाते
हो।”

नाजायज़ शादियाँ और तलाक़ पर मलामत

10 क्या हम सबका एक ही बाप नहीं? एक ही
ख़ुदा ने हमें ख़लक़ किया है। तो फिर हम एक
दूसरे से बेवफ़ाई करके अपने बापदादा के अहद
की बेहुरमती क्यों कर रहे हैं?

11 यहूदाह बेवफ़ा हो गया है। इसराईल और
यरूशलम में मकरूह हरकतें सरज़द हुई हैं,
क्योंकि यहूदाह के आदमियों ने रब के घर की
बेहुरमती की है, उस मक़दिस की जो रब को
प्यारा है। किस तरह? उन्होंने दीगर अक़वाम

की बुतपरस्त औरतों से शादी की है।[a] **12** लेकिन
जिसने भी ऐसा किया है उसे रब जड़ से याक़ूब
के ख़ैमों से निकाल फेंकेगा, ख़ाह वह रब्बुल-
अफ़वाज को कितनी क़ुरबानियाँ पेश क्यों न करे।
13 तुमसे एक और ख़ता भी सरज़द होती है।
बेशक रब की क़ुरबानगाह को अपने आँसुओं से
तर करो, बेशक रोते और कराहते रहो कि रब
न हमारी क़ुरबानियों पर तवज्जुह देता, न उन्हें
ख़ुशी से हमारे हाथ से क़बूल करता है। लेकिन यह
करने से कोई फ़रक़ नहीं पड़ेगा। **14** तुम पूछते हो,
“क्यों?” इसलिए कि शादी करते वक़्त रब ख़ुद
गवाह होता है। और अब तू अपनी बीवी से बेवफ़ा
हो गया है, गो वह तेरी जीवनसाथी है जिससे तूने
शादी का अहद बाँधा था। **15** क्या रब ने शौहर
और बीवी को एक नहीं बनाया, एक जिस्म जिसमें
रूह है? और यह एक जिस्म क्या चाहता है?
अल्लाह की तरफ़ से औलाद। चुनाँचे अपनी रूह
में ख़बरदार रहो! अपनी बीवी से बेवफ़ा न हो
जा! **16** क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है, “मैं तलाक़ से नफ़रत
करता हूँ और उससे मुतनफ़्फ़िर हूँ जो ज़ुल्म से
मुलब्बस होता है। चुनाँचे अपनी रूह में ख़बरदार
रहकर इस तरह का बेवफ़ा रवैया इख़्तियार न
करो!”

रब लोगों की अदालत करेगा

17 तुम्हारी बातों को सुन सुनकर रब थक गया
है। तुम पूछते हो, “हमने उसे किस तरह थका
दिया है?” इसमें कि तुम दावा करते हो, “बदी
करनेवाला रब की नज़र में ठीक है, वह ऐसे
लोगों को पसंद करता है।” तुम यह भी कहते
हो, “अल्लाह कहाँ है? वह इनसाफ़ क्यों नहीं
करता?”

3 रब्बुल-अफ़वाज जवाब में फ़रमाता है,
“देख, मैं अपने पैग़ंबर को भेज देता हूँ जो
मेरे आगे आगे चलकर मेरा रास्ता तैयार करेगा।
तब जिस रब को तुम तलाश कर रहे हो वह
अचानक अपने घर में आ मौजूद होगा। हाँ, अहद
का पैग़ंबर जिसकी तुम शिद्दत से आरज़ू करते हो
वह आनेवाला है!”
2 लेकिन जब वह आए तो कौन यह बरदाश्त
कर सकेगा? कौन क़ायम रह सकेगा जब वह हम
पर ज़ाहिर हो जाएगा? वह तो धात ढालनेवाले
की आग या धोबी के तेज़ साबुन की मानिंद होगा।
3 वह बैठकर चाँदी को पिघलाकर पाक-साफ़
करेगा। जिस तरह सोने-चाँदी को पिघलाकर
पाक-साफ़ किया जाता है उसी तरह वह लावी
के क़बीले को पाक-साफ़ करेगा। तब वह रब को
रास्त क़ुरबानियाँ पेश करेंगे। **4** फिर यहूदाह और
यरूशलम की क़ुरबानियाँ क़दीम ज़माने की तरह
दुबारा रब को क़बूल होंगी।
5 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “मैं तुम्हारी
अदालत करने के लिए तुम्हारे पास आऊँगा। जल्द
ही मैं उनके ख़िलाफ़ गवाही दूँगा जो मेरा ख़ौफ़
नहीं मानते, जो जादूगर और ज़िनाकार हैं, जो
झूटी क़सम खाते, मज़दूरों का हक़ मारते, बेवाओं
और यतीमों पर ज़ुल्म करते और अजनबियों का
हक़ मारते हैं।

तुम अल्लाह को धोका देते हो

6 मैं, रब तबदील नहीं होता, लेकिन तुम अब
तक याक़ूब की औलाद रहे हो। **7** अपने बापदादा
के ज़माने से लेकर आज तक तुमने मेरे अहकाम
से दूर रहकर उन पर ध्यान नहीं दिया। रब्बुल-
अफ़वाज फ़रमाता है कि मेरे पास वापस आओ!
तब मैं भी तुम्हारे पास वापस आऊँगा।
लेकिन तुम एतराज़ करते हो, ‘हम क्यों वापस
आएँ, हमसे क्या सरज़द हुआ है?’ **8** क्या
मुनासिब है कि इनसान अल्लाह को ठगे?

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : यहूदाह ने अजनबी माबूदों की बेटियों से शादी की है।

हरगिज़ नहीं! लेकिन तुम लोग यही कुछ कर रहे हो। तुम पूछते हो, 'हम किस तरह तुझे ठगते हैं?' इसमें कि तुम मुझे अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा नहीं देते। नीज़, तुम इमामों को क़ुरबानियों का वह हिस्सा नहीं देते जो उनका हक़ बनता है।
9 पूरी क़ौम मुझे ठगती रहती है, इसलिए मैंने तुम पर लानत भेजी है।"

10 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "मेरे घर के गोदाम में अपनी पैदावार का पूरा दसवाँ हिस्सा जमा करो ताकि इसमें ख़ुराक दस्तयाब हो। मुझे इसमें आज़माकर देखो कि मैं अपने वादे को पूरा करता हूँ कि नहीं। क्योंकि मैं तुमसे वादा करता हूँ कि जवाब में मैं आसमान के दरीचे खोलकर तुम पर हद से ज़्यादा बरकत बरसा दूँगा।"
11 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "मैं कीड़ों को तुम्हारी फ़सलों से दूर रखूँगा ताकि तुम्हारे खेतों की पैदावार और तुम्हारे अंगूर ख़राब न हो जाएँ बल्कि पक जाएँ।
12 तब तुम्हारा मुल्क इतना राहतबख़्श होगा कि तमाम अक़वाम तुम्हें मुबारक कहेंगी।" यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।

जिस दिन अल्लाह फ़ैसला करेगा

13 रब फ़रमाता है, "तुम मेरे बारे में कुफ़र बकते हो। तुम कहते हो, 'हम क्योंकर कुफ़र बकते हैं?'
14 इसमें कि तुम कहते हो, 'अल्लाह की ख़िदमत करना अबस है। क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज की हिदायात पर ध्यान देने और मुँह लटकाकर उसके हुज़ूर फिरने से हमें क्या फ़ायदा हुआ है?
15 चुनाँचे गुस्ताख़ लोगों को मुबारक हो, क्योंकि बेदीन फलते-फूलते और अल्लाह को आज़मानेवाले ही बचे रहते हैं'।"

16 लेकिन फिर रब का ख़ौफ़ माननेवाले आपस में बात करने लगे, और रब ने ग़ौर से उनकी सुनी। उसके हुज़ूर यादगारी की किताब लिखी गई जिसमें उनके नाम दर्ज हैं जो रब का ख़ौफ़ मानते और उसके नाम का एहतराम करते हैं।
17 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "जिस दिन मैं हरकत में आऊँगा उस दिन वह मेरी ख़ास मिलकियत होंगे। मैं उन पर यों रहम करूँगा, जिस तरह बाप अपने उस बेटे पर तरस खाता है जो उस की ख़िदमत करता है।
18 उस वक़्त तुम्हें रास्तबाज़ और बेदीन का फ़रक़ दुबारा नज़र आएगा। साफ़ ज़ाहिर हो जाएगा कि अल्लाह की ख़िदमत करनेवालों और दूसरों में क्या फ़रक़ है।"

4 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, "यक़ीनन वह दिन आनेवाला है जब मेरा ग़ज़ब भड़कती भट्टी की तरह नाज़िल होकर हर गुस्ताख़ और बेदीन शख़्स को भूसे की तरह भस्म कर देगा। वह जड़ से लेकर शाख़ तक मिट जाएंगे।

2 लेकिन तुम पर जो मेरे नाम का ख़ौफ़ मानते हो रास्ती का सूरज तुलू होगा, और उसके परों तले शफ़ा होगी। तब तुम बाहर निकलकर खुले छोड़े हुए बछड़ों की तरह ख़ुशी से कूदते फाँदते फिरोगे।
3 जिस दिन मैं यह कुछ करूँगा उस दिन तुम बेदीनों को यों कुचल डालोगे कि वह पाँवों तले की ख़ाक बन जाएंगे।" यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।

4 "मेरे ख़ादिम मूसा की शरीअत को याद रखो यानी वह तमाम अहकाम और हिदायात जो मैंने उसे होरिब यानी सीना पहाड़ पर इसराईली क़ौम के लिए दी थीं।
5 रब के उस अज़ीम और हौलनाक दिन से पहले मैं तुम्हारे पास इलियास नबी को भेजूँगा।
6 जब वह आएगा तो बाप का दिल बेटे और बेटे का दिल बाप की तरफ़ मायल करेगा ताकि मैं आकर मुल्क को अपने लिए मख़सूस करके नेस्तो-नाबूद न करूँ।"